यूनानी चिकित्सासार

[यूनानीमतेन आशिरःपाद सर्व रोग-निदान-चिकित्सादि सम्वलित]

लेखक

वैद्यराज-हकीम दलजीत सिंह

प्रकाशक

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता : पटना : झाँसी : नागपुर

प्रथम संस्करण] संवत् २०१० [मूल्य ४।।)

प्रकाशक :
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड,
१, गुप्ता लेन, कलकत्ता – ६

मुद्रक :
पं० हजारीलाल शर्मा, जनवाणी प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स लिमिटेड,
३६, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता – ७

प्रकाशकीय वक्तव्य

कुछ ही वर्ष पहले हमने प्रस्तुत ग्रंथ के लेखक ठाकुर दलजीतसिंहजी द्वारा लिखित "यूनानी सिद्धयोगसंग्रह" नामक ग्रंथ का प्रकाशन किया था, जिसका आशातीत समादर वैद्य-समाज तथा सर्वसाधारण पाठकों के बीच हुआ। किन्तु, इस प्रकाशन के बाद भी हम यह बराबर अनुभव करते रहे कि यदि यूनानी चिकित्सा पर राष्ट्रभाषा में कोई योजनाबद्ध, सुन्दर, सरल एवं अधिकृत ग्रंथ भी प्रकाशित किया जाय तो हमारे वैद्यसमाज का अपने देश में ही प्रचलित, परिवर्द्धित एक अन्य चिकित्सा-पद्धति की जानकारी से बड़ा हित-साधन हो। अतएव आज इस ग्रंथ को हिन्दी भाषाभाषी पाठकों तथा वैद्य-समाज के सम्मुख लेकर उपस्थित होते हुए हम में अपार हर्ष का संचार हो रहा है।

ठाकुर दलजीतसिंहजी अरबी-फारसी के बड़े अच्छे पंडित और इन भाषाओं में लिखित यूनानी चिकित्सा-शास्त्र के सुविज्ञ यशस्वी वैद्य हैं। इसके अतिरिक्त आप संस्कृत के भी पण्डित हैं और आयुर्वेद-शास्त्र के ज्ञाता निपुण वैद्य भी। अतः इस विषय पर विचार करने और लिखने का आपको पूरा अधिकार है; और चूंकि चिकित्सा-शास्त्र एक ऐसा विषय है, जिस पर अनभिज्ञ, पल्लवग्राही लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों से सर्वसाधारण एवं अन्य चिकित्सक महानुभावों के बीच भ्रम का संचार हो सकता है, ऐसे ग्रन्थों के प्रकाशन में बहुत सतर्कता की आवश्यकता है। हमें विश्वास है कि ठाकुर दलजीत सिंहजी द्वारा प्रणीत ग्रन्थों में वैसी किसी अनधिकृत बातों का समावेश नहीं होगा।

आज हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा के आसन पर आसीन है। अतः यह हमारी वर्तमान पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा का माध्यम भी होने जा रही है। इसलिये आवश्यक है कि हिन्दी में ऐसे सभी प्रमुख विषयों पर ग्रंथ प्रकाशित हों जो किसी समय जनसाधारण के बीच समादृत थे और जिनसे लोकोपकार के कार्य होते रहे हों। कहना नहीं होगा कि यूनानी चिकित्सा-पद्धति का प्रचार इस देश में कभी आधुनिक एलोपैथी की तरह ही व्यापक एवं लाभदायक था। आज भी इस देश के एक बड़े जनसमुदाय की चिकित्सा का यह प्रमुख अंग बना हुआ है और इसमें इतने अच्छे हकीम मौजूद हैं जो इस पद्धति से निदान करके भी रोगों को दूर करने में चमत्कार दिखलाते हैं।

इसी विचार से प्रेरित होकर हमने इस ग्रन्थ का प्रकाशन किया है। आशा है, इससे हमारे वैद्यबन्धु और साधारण जन उचित लाभ उठा कर हमारे श्रम की सार्थकता सिद्ध करेंगे।

कलकत्ता
१५-१२-५३

व्यवस्थापक
श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि०

लेखक को प्रस्तावना

यूनानी वैद्यक संबंधी प्रामाणिक, तुलनात्मक एवं यूनानी विद्यालयों के पाठ्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुये राष्ट्रभाषा हिन्दी में ग्रन्थनिर्माण का जो संकल्प आज से कुछ वर्ष पूर्व मैंने किया था, उसी के अभिपूर्ति स्वरूप यूनानी ग्रन्थमाला के एक पुष्प के रूप में प्रस्तुत ग्रन्थ का अवतरण हुआ है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प **यूनानी द्रव्यगुणविज्ञान** से प्रारंभ होकर प्रस्तुत ग्रन्थ तक पहुँचा है। इसके बीच के पुष्प जो अद्यावधि प्रसिद्ध हो चुके हैं, निम्न हैं--**यूनानी सिद्धयोग-संग्रह, यूनानी वैद्यक के आधारभूत सिद्धान्त (कुल्लियात)** पूर्वार्ध और **यूनानी चिकित्सा विज्ञान पूर्वार्ध**। यूनानी चिकित्सा विज्ञान पूर्वार्ध (प्रथम भाग) के अब तक प्रकाशित इस अंतिम पुष्प में निदान-चिकित्सा के आधार भूत सिद्धान्तों का समावेश हुआ है। अस्तु, यूनानी चिकित्सासार से पूर्व इसका अवलोकन वा अध्ययन अनिवार्य है। इसके तीन भाग और होंगे। इसका दूसरा भाग ज्वरविषयक होगा।

ज्वरविषय का यूनानी में सर्वाधिक प्रामाणिक एवं प्रसिद्ध ग्रन्थ विद्वद्वर **शैखुर्रईस बू अलीसीना** लिखित **हुम्मयात कानून** है, जो उनके सुप्रसिद्ध **अल्क़ानून** ग्रन्थ का ज्वर पर लिखा गया, एक सुविस्तृत भाग (ज्वराध्याय) है और अधुना यह प्रायः भारतीय सभी यूनानी विद्यालयों के पाठ्यक्रम में मौलिक अरबी भाषा के रूप में अथवा उर्दू अनुवादरूप में समाविष्ट हैं। इसी का मैंने सरल हिंदी भाषान्तर किया है। इसे यूनानी-चिकित्सा-विज्ञान उत्तरार्ध प्रथम खण्ड के रूप में प्रकाशित करने का मेरा विचार है। इस उत्तरार्ध भाग के अगले दो खण्ड शेष अन्य सर्व रोग निदान-चिकित्सादि विषय सम्बलित होंगे, जिनमें यूनानी मत से, स्थान-स्थान पर आयुर्वेदीय एवं एलोपैथी मत से भी तुलना करते हुये आशिरः पाद समस्त रोगों का निदान-चिकित्सा आदि सविस्तर वा विशद रूपेण वर्णित होगी। पुनश्च इस बात का पूरा ध्यान रखा जायगा कि यह यूनानी विद्यालयों के पाठ्यक्रम को पूरा कर सके तथा यूनानी वैद्यक विषयक कोई आवश्यक बातें छूटने भी न पाएँ।

इस ग्रन्थ के उत्तरार्ध प्रथम खंड अर्थात् **'हुम्मयात कानून'** के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशनार्थ जब मैंने **श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन** लि० के अध्यक्ष **श्रीमान् पं० रामनारायण जी वैद्य शास्त्री महोदय** को पत्र लिखा, तब आपने उसे स्वयं देखने की इच्छा प्रगट की। सुतरां इसकी पांडुलिपि आपके अवलोकनार्थ सेवा में प्रेषित की गई। स्वयं अवलोकनोपरांत आपने उसे **श्रीमान् यादवजी त्रिकमजी**

आचार्य महोदय के पास भेज दिया। इसे अवलोकनोपरांत श्री महाराज का यह विचार हुआ कि यह एक विषय (ज्वर) पर लिखा हुआ ग्रन्थ अति विस्तृत है। अस्तु, इसे कभी फिर प्रकाशित किया जाय। आपके मत से इस समय एक ऐसे यूनानी-चिकित्सा ग्रन्थ की आवश्यकता है जिसमें अति संक्षेप में यूनानी मत से आशिर: पाद समस्त रोगों का निदान-चिकित्सा आदि सरल हिंदी में वर्णित हो। अत: श्रीमान् पं० रामनारायण जी ने मुझे श्री महाराज के सुझाव एवं निर्देशानुसार एक ऐसे स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखने का शुभादेश दिया। उस आदेश को सहर्ष शिरोधार्य कर उसी के अनुसार मैंने इस **यूनानी चिकित्सासार** ग्रन्थ का प्रणयन किया, जिसमें यूनानी मत से आशिर:पाद समस्त रोगों का अति संक्षेप एवं सरल हिन्दी में निदान-चिकित्सा आदि वर्णित है।

यह ग्रन्थ आगे लिखे जाने वाले और प्रकाशित होने वाले विस्तृत यूनानी चिकित्साविज्ञान ग्रन्थ के उत्तरार्ध भाग १, २ और ३ का सुसार संग्रह है, यदि ऐसा कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं। अस्तु, उन ग्रंथों के प्रकाशित होने पर भी इस ग्रंथ की उपादेयता एवं महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं होगा, अपितु बढ़ेगा ही। कारण यह उनसे सर्वथा भिन्न एवं स्वतंत्र रचना है।

ग्रन्थ के अन्त में **'ज्वराधिकार'** और **'यूनानी चिकित्सा-सार के योगपाठादि'** ऐसे दो परिशिष्ट इसलिये लगाये गये हैं, जिसमें ग्रंथ सभी दृष्टियों से सर्वांगपूर्ण हो। इसी दृष्टि से ग्रंथ के अन्त में इस ग्रंथ में आये विषयों की विस्तृत हिन्दी एवं अंगरेजी वर्णानुक्रमणिका दी गई है।

ग्रन्थ कैसा है, इस संबंध में मैं स्वयं कुछ न कहकर पाठकों के ऊपर छोड़ता हूँ। फिर भी इतना कहना आवश्यक समझता हूँ कि इस प्रकार का ग्रन्थ अभी तक हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुआ है अर्थात् इस विषय में अब तक प्रकाशित ग्रन्थों में यह अपने ढंग का प्रथम ग्रन्थ है।

इस पुस्तक की प्रसिद्धि का सर्वाधिक श्रेय परम आदरणीय आचार्य प्रवर आयुर्वेद मार्तण्ड, आयुर्वेद वाचस्पति श्रीमान् यादवजी त्रिकमजी आचार्य महोदय को है जिनकी सत्प्रेरणा एवं सत्परामर्श से मैं इस ग्रन्थ को इतना शीघ्र एवं इतने सुन्दर रूप में आपके समक्ष रखने में समर्थ हुआ। श्री महाराज की मुझ पर बड़ी कृपा रहती है। यह आप ही के कृपा कटाक्ष का फल है कि मुझ अकिंचन के द्वारा यूनानी ग्रन्थमाला के रूप में यूनानी वैद्यकीय साहित्य विषयक वैद्य समाज की अभूत पूर्व सेवा हो रही है। यदि श्री महाराज की मेरे ऊपर ऐसी ही कृपा भविष्य में भी बनी रही तो आशा है कि थोड़े समय में ही मैं यूनानी वैद्यक विषयक प्रत्येक साहित्य का अवतरण राष्ट्रभाषा हिन्दी में करने में सफल मनोरथ होऊंगा।

इसके बाद इस ग्रन्थ के प्रकाशन का अधिकाधिक श्रेय **श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संचालक श्रीमान् पं० रामनारायण जी वैद्य शास्त्री को है,** जिन्होंने मेरे द्वारा प्रणीत साहित्य को समय-समय पर निःसंकोचभाव से एवं इतने सुंदर रूप में प्रकाशन का मानो व्रत ही ले रखा है। यदि आपकी ऐसी ही प्रवृत्ति आगे भी बनी रही तो आशा है कि यूनानी वैद्यक विषयक अनेकानेक और नवीन एवं उत्तम साहित्य वैद्य समाज के समक्ष अवतीर्ण होते रहेंगे।

इस ग्रन्थ की प्रेस लिपि, विषय सूची एवं विषयों की वर्णानुक्रमणिका आदि तैयार करने में मेरे कनिष्ठ भ्राता कविराज रामसुशील सिंह शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य ए० एम० एस०, रिसर्च स्कॉलर (हिं० वि० वि०), भूतपूर्व प्रिंसिपल श्री बलदेव आयुर्वेद विद्यालय बड़ागाँव, लेखक **'पाश्चात्य द्रव्यगुणविज्ञान'** (एलोपैथिक मेटीरिया मेडिका हिन्दी), वात्स्यायन काम सूत्र के हिन्दी टीकाकार तथा कतिपय अन्य ग्रन्थों के सहायक लेखक ने मेरी बड़ी सहायता की है। इसके लिये मैं उनका भी आभार मानता हूँ। आप आयुर्वेद-जगत् के एक उदीयमान सिद्धहस्त लेखक एवं अनुभवी चिकित्सक हैं। आपने आयुर्वेद के अतिरिक्त संस्कृत में शास्त्री, अंग्रेजी में बी० ए०, अरबी में मौलवी और फारसी की अंतिम परीक्षा 'कामिल' और हिन्दी में 'विशारद' आदि परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की हैं।

इस ग्रंथ के लिखने में मुझे अनेक अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, हिन्दी तथा अंगरेजी आदि ग्रन्थों से बहुमूल्य सहायता मिली है। अतः उन ग्रन्थकारों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। सचित्र आयुर्वेद के सहायक संपादक श्री मान् पं० सभाकान्त जी झा वैद्य शास्त्री मेरे कम धन्यवाद के पात्र नहीं हैं, जिन्होंने इस ग्रन्थ के इतना सुन्दर प्रकाशन का प्रबंध किया और आद्योपान्त इसका प्रूफ संशोधन किया। आप ही के परिश्रम का यह फल है कि यह ग्रन्थ इतना सुन्दर प्रकाशित हुआ है।

ग्रन्थ के संकलन करने, भाषानुवाद करने तथा पुस्तक के क्रियात्मक रूप देने आदि कार्यों में मैंने यावच्छक्य यत्न किया है। तथापि अनावधानता, प्रमाद आदि के कारण अनेक त्रुटियाँ रहनी संभव है। अतएव विद्वान् चिकित्सकों (वैद्य, हकीम तथा डाक्टरों) और सहृदय पाठक वृंद से विनम्र निवेदन है कि वे केवल त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर, गुणों की ओर ध्यान देवें और लेखक के उत्साह को बढ़ावें। अपरंच यदि कोई आवश्यक त्रुटि इस ग्रंथ में दृष्टिगत हो, तो उसे मुझे अवश्य सूचित करें, जिसमें अगले संस्करण में उसका संशोधन कर दिया जाय।

श्री चुनार आयुर्वेदीय औषधालय
तथा
आयुर्वेदानुसंधान कार्यालय, चुनार।

निवेदक—
दलजीत सिंह

यूनानी चिकित्सासार की

अध्यायानुक्रमणिका

परिशिष्ट--१

परिशिष्ट--२

संकेताक्षरोंका विवरण

अ०	अरबी
फा०	फारसी
यू०	यूनानी
उ०	उर्दू
हिं०	हिन्दी
सं०	संस्कृत
अं०	अंगरेजी
रो०	रोमन
ले०	लेटिन

टिप्पणी--सहायक वा प्रमाण ग्रन्थों की सूची यूनानी चिकित्सा-विज्ञान पूर्वार्ध खण्ड में अवलोकन करें।

।। श्री धन्वन्तरये नमः ।।

यूनानी चिकित्सा-सार

ऊर्ध्वजत्रु रोगाधिकार १

मस्तिष्क–शिरोरोगाध्याय १

(शिरोरोग)

(अम्राजुर्रास या अम्राज़ेसर)

नाम--(अ०) अम्राज़े दिमाग़ ; (सं०) शिरो रोग ; (हिं०) सिरके रोग ; (अं०) डिजीजेज ऑफ दि ब्रेन (Diseases of the Brain)।

वक्तव्य--यहाँ मस्तिष्क रोग (शिर के रोग) विषयक कतिपय सामान्य चिकित्सा सूत्र संक्षेप में लिख दिये जाते हैं, जिसमें प्रत्येक मस्तिष्क रोग में यथास्थान काम आयें।

शिरोरोग विषयक सामान्य चिकित्सासूत्र--शिर (मस्तिष्क) बाह्याभ्यन्तर ज्ञानेन्द्रियों तथा ज्ञान एवं कर्म का उद्गमस्थान है तथा मस्तिष्क-शक्तियों के द्वारा ही मनुष्य रुच्यरुचिकर, हिताहितकर तथा उत्कृष्ट एवं निकृष्ट वस्तुओं एवं कर्मों में विवेक कर सकता है। इसीलिये इसकी गणना आज़ाए रईसा व शरीफा (उत्तम एवं श्रेष्ठाङ्ग) में की जाती है। अस्तु, यदि कोई रोग मस्तिष्क में प्रगट हो तो उसकी चिकित्सा की ओर पूरा ध्यान देना चाहिये। उदाहरणतः यदि गर्मी, सर्दी, खुश्की और तरी इन चतुर्गुणों में से किसी गुण के प्रकोप से कोई रोग उत्पन्न हो तो केवल किसी अनुकूल जलवायु एवं आहारसेवन तथा प्रकृतिपरिवर्तन (शमन) का यत्न करना चाहिये। यदि रोग का कारण दोष हो, तो रक्तजमें कीफाल (सरारू) नाम्नी सिरावेधनोपरांत प्रकृति परिवर्तन (दोषसंशमन) करें। परन्तु दोषत्रय (अखलात सलासा) के प्रकुपित होने की दशा में या किसी एक दोष के प्रकोप के समय सम्यक् दोषपाचनोपरांत निःशेष शुद्धि करें। पुनः दोषशमन का यत्न करें। यदि किसी दोष के प्रकोप के साथ ही रक्तप्रकोप के लक्षण भी पाये जायें, तो प्रथम कीफाल नाम्नी सिरा का वेध करायें; पुनः यथावत् शोधन करें। यदि दोष का प्रकोप सम्पूर्ण शरीर

में हो तो सर्वप्रथम सम्पूर्ण देह को दोष से शुद्ध करें। पुनः अंगविशेष का शोधन करें। जबकि रोग का चरमारोहकाल बहुत दूर हो, तब मालिश के तेल (अभ्यंग) परिषेक और प्रलेप के द्वारा दोष का पाचन करें। जबकि उरोफुफ्फुस पर किसी तीव्र दोष के गिरने की आशंका न हो और न फुफ्फुस में किसी रोग के उत्पन्न होने का भय हो, तो गण्डूष के द्वारा मस्तिष्क का शोधन कराना उचित है तथा प्रमाथी आघ्राण ओषधि, प्रसेक और नस्य ओषधि का उपयोग कराएँ, जिसमें दोष नीचे उतर आएँ। शिरकी ओर चढ़नेवाले दोषों को नीचे की ओर आकृष्ट करने के लिये बस्तियों एवं फलवर्तियों का उपयोग तथा पांव आदि का बाँधना पर्याप्त होता है। आनुषंगिक अंग के शोधनार्थ उक्त अंग की विशिष्ट ओषधियों का उपयोग करें। यदि मस्तिष्क के आवरणों में कोई व्याधि प्रगट हो, तो शीतल जल पीना या उससे कुल्ली करना अतीव अहितकर है।

१—सुदाअ—शिरःशूल

नाम—(अ०) सुदाअ; (फा०) दर्दे सर; (सं०) शिरः शूल; (हिं०) सिर का दर्द, सिरदर्द; (अं०) केफालॅल्जिया (Cephalalgia), हेडेक (Headache)।

टि०—अरबी सुदाअ शब्द का धात्वर्थ भेदन करना या फाड़ना है। सिरदर्द में सिर फटता हुआ प्रतीत होता है। इसलिये इसे सुदाअ नाम से अभिधानित कर दिया गया और अधुना यूनानी वैद्यक में 'सुदाअ' संज्ञा विशेषतया सिरदर्द के अर्थ में प्रयुक्त होती है।

हेतु और भेद—प्रत्येक दर्द (वेदना) चाहे सिर में हो या शरीर के किसी अन्य भाग में, सूए मिज़ाज मुख्तलिफ या तफर्रुक इत्तिसाल (विश्लेष) के उपस्थित होने अथवा दोनों के एक ही समय में प्रकट होने से उत्पन्न होता है। सूएमिजाज (विप्रकृति) के सोलह प्रसिद्ध भेद हैं, जिनमें से आठ मुफरद व मुरक्कब साज़िज (अमिश्र और सम्मिश्र सादा अर्थात् अदोषज) और आठ मुफरद व मुरक्कब माद्दी (अमिश्र और संमिश्र दोषज) हैं। प्राचीनों के मत से चतुर्गुणों (कैफिय्यात अरबआ) में से प्रत्येक गुण की दो अवस्थायें होती हैं—साज़िज (सादा वा अदोषज) और माद्दी (दोषज)। जब कोई गुण (कैफिय्यत) माद्दा वा दोषविरहित अर्थात् केवल वाह्य प्रभाव से अथवा उष्ण वा शीत औषधाहार आदि के प्रयोग से प्रगट होता है तब उसे यूनानी वैद्यक की परिभाषा में साज़िज कहते हैं। जब उसके साथ विकारी अंग के भीतर चतुर्दोष याने अख्लात अरबआ में से कोई दोष विद्यमान होता है; तब उसको माद्दी के नाम से अभिहित करते हैं। जब सिरदर्द का हेतु मस्तिष्क के भीतर

होता है तब उसको सुदाअ दिमागी या असली कहते हैं। जब सिरदर्द किसी अन्य अंग के अनुबंध से हो; तब सुदाअ शिरकी कहलाता है।

हेतु भेद से शिरःशूल के कुल निम्न अट्ठाइस भेद होते हैं—(१) सुदाअ हार साजिज, (२) सुदाअ बारिद साजिज, (३) सुदाअ दम्वी, (४) सुदाअ सफरावी, (५) सुदाअ बल्गमी, (६) सुदाअ सौदावी, (७) सुदाअ रीही, (८) सुदाअ शिर्की, (९) सुदाअ सुद्दी, (१०) सुदाअ वरमी, (११) सु० जर्बानी, (१२) सु० जोफ दिमागी, (१३) सु० हिस्स दिमागी (१४) सुदाअ युबसी, (१५) सु० जिमाई, (१६) सु० खमारी, (१७) सु० शम्मी, (१८) सु० जरबी व सकती, (१९) सु० तफर्रुक इत्तिसाली, (२०) सु० तजअ्जुई, (२१) सु० नौमी, (२२) सु० सहरी, (२३) सु० दूदी, (२४) सु० नजली, (२५) सु० अरजी, (२६) सु० बोहरानी, (२७) शकीका (आधा शीशी) और (२८) असाबा (अनंतवात)।

आगे इनमें से प्रत्येक का क्रमशः संक्षिप्त निदान-चिकित्सादि दिया गया है। यहाँ पर शिरःशूल के इन समस्त भेदों में प्रत्येक चिकित्सक को जिस सामान्य चिकित्सोपदेश को दृष्टिगत रखना चाहिये, उसका संक्षेप में विवरण किया जाता है।

(१) शिरःशूल के अनेक भेदों में आराम करना, चेष्टा और संभाषण से परहेज करना, कम खाना, जल कम पीना, मद्य का सर्वथा परित्याग कर देना, दोनों हाथ-पांवों को अत्यंत उष्ण जल में रखना तथा उनको मलना, कब्ज (विबंध) को दूर करना, सर्वोत्तम उपाय हैं। (२) गरम पानी का परिषेक (तरेडा) करना भी शिरःशूल के अनेक भेदों में गुणकारी है। (३) दोषज शिरः शूल में यथासंभव दोष को शरीर के निम्न भागों की ओर आकृष्ट करना उत्तम उपाय है। इसके लिये हाथ-पाँव को बाँधना, मलना या धोना या पिंडलियों पर सींगी खिचवाना पर्याप्त है। सिर को दबाना ठीक नहीं। (४) शिरःशूलरोगी को वमन कराना अतीव अहितकर है। किन्तु आमाशय के अनुबंध से होनेवाले शिरःशूल में यह अहितकारक नहीं है। (५) इसी प्रकार शिरःशूलरोगी को विशेषतः खांसी की दशा में अम्ल पदार्थों का बाह्यांतरिक उपयोग हानिकारक होता है। पर यदि आमाशय के अनुबंध से शिरःशूल उत्पन्न हुआ हो, तो कोई हर्ज नहीं। (६) इसी प्रकार शिरःशूल की दशा में बाष्प या आध्मान (अफारा) उत्पन्न करनेवाले औषध या आहार का कदापि उपयोग न करायें। (७) शिर के पिछले भाग पर शीतल ओषधियों का प्रयोग या शिर के किसी भाग पर स्वापजनन द्रव्यों का उपयोग सर्वथा वर्जित है। पर यदि उनके विना चारा न हो तो निवारण द्रव्यों के साथ उनका उपयोग विहित है। (८) शिरः

शूल की दशा में या ऐसे समय जबकि मस्तिष्क में वेदना की अनुकूलता हो, मैथुन एवं चिन्ता आदि उत्तेजनाओं से बचना आवश्यक है। (९) यदि शिरः शूल के साथ प्रसेक (नजला) भी हो तो शिर के ऊपर तैल आदि नहीं लगाना चाहिये। प्रत्युत प्रकृति-मार्दवकरण, प्रकृतिपरिवर्तन एवं शिरः (मस्तिष्क) बलवर्धन का ध्यान रखना चाहिये। (१०) अन्य रोग के कारण होनेवाले शिरःशूल में प्रथम उस रोग का उपाय करें। (११) हकीमों ने सिर की पीड़ा में अफीम आदि का लेप लगाने की मनाही की है। अत्यन्त आवश्यकता होने पर केसर या बाबूना के साथ इसका प्रयोग कर सकते हैं। (१२) सिर की पीड़ा में यदि सिर के ऊपर अर्कगुलाब डालना हो तो इतना डालें कि सिर भीगा रहे, नहीं तो हानि करेगा। (१३) सिर की पीड़ावाले को नकसीर फूटना अच्छा है; अस्तु, उसे बन्द नहीं करना चाहिये। पर यदि अधिक रक्त निकलने से कमजोरी की आशंका हो, तो उसे अवश्य बन्द करना चाहिये। सिर के रोगों में नाक या कान से मवाद (दोष) का निकलना बहुत अच्छा है।

चिकित्सासूत्र—अदोषज या सादा सिरदर्द में केवल प्रकृति को साम्यावस्था पर ले आने की आवश्यकता होती है और इसी से सिर दर्द जाता रहता है। दोषज वा माद्दी के दो स्वरूप होते हैं—(१) या तो वह केवल मस्तिष्क में होता है या (२) संपूर्ण शरीर में। प्रथम अवस्था में केवल मस्तिष्क की शुद्धि के उपरांत प्रकृति को साम्यावस्था पर (प्रकृतिस्थ) लाया जाता है। दूसरी अवस्था में प्रथम शरीर का, पुनः मस्तिष्क का शोधन करके प्रकृति परिवर्तित की जाती है।

जब सिरदर्द असली होता है अर्थात् उसका हेतु मस्तिष्क से संबंध रखता है, तब केवल मस्तिष्क के सुधार की आवश्यकता होती है। परंतु जब दर्द शिरकी (अनुबंधजनित) होता है, तब जिस रोग के कारण यह दर्द होता है, उसकी चिकित्सा की जाती है। उसके नष्ट होने पर सिरदर्द नष्ट हो जाता है। पर यदि सिर दर्द अति उग्र हो, तो उसकी शांति का उपाय भी करना चाहिये।

अदोषज शिरः शूल

सुदाअ हार साज़िज (अदोषज उष्ण शिर:शूल)

टिप्पणी—इस प्रकार के केवल सर्दी वा केवल गर्मी आदि से होनेवाले सिरदर्द को पाश्चात्य वैद्यक में न्युरॉल्जिक हेडेक (Neuralgic Headache) कहते हैं।

हेतु—अधिक गर्मी, देर तक धूप में या अग्नि के समीप रहना, अधिक दौड़ना या चलना, कोलाहल, उष्ण पदार्थों का सूंघना, उष्ण औषध या आहार का सेवन आदि इसके हेतु होते हैं।

लक्षण—शिर की त्वचा का उष्ण स्पर्श, कण्ठ और नासिका की रूक्षता, तृष्णाधिक्य, शीतल पदार्थों के सेवन या शीतल वायु के स्पर्श से रोग शांति इसके लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) नीबू का रस ५ तोला या (२) शर्बत नीबू २ तोला या (३) जल में भिगोये हुए १५ दाने आलूबोखारे का निथरा हुआ पानी या (४) जल में भिगोये हुये २ तोले इमली का निथरा हुआ पानी या (५) शर्बत अनार २ तोला, १० तोला अर्क गावज़बान या ७ तोला अर्क कासनी या ५ तोला अर्क गुलाब या ५ तोला अर्क केवड़ा में मिलाकर पीने से इस रोग में उपकार होता है। (६) १० माशा सूखे धनिया को सम भाग चीनी के साथ चूर्ण बनाकर जल के साथ खाने से लाभ होता है। (७) ६ माशे सफेद चंदन को हरे धनिया के रस या खाली पानीमें घिसकर मस्तक पर लेप करने या (८) २ माशे कपूर को १ तोले सफेद चंदन के साथ अर्क गुलाब या हरे धनिया के रस में घिसकर गुलाब का इत्र मिलाकर सूंघने से बहुत लाभ होता है। (९) १ तोला सफेद पोस्ते के दाना को तीक्ष्ण सिरका में पीसकर मस्तक पर लेप करने या सूंघने से शीघ्र लाभ होता है। (१०) ५ तोले हरी मेंहदी के पत्ते को सिरका में पीसकर लेप करने से भी लाभ होता है। (११) बकरी के दूध में कपड़ा तर करके सिरके ऊपर रखने या नाक या कान में डालने से इस रोग में उपकार होता है। (१२) मीठे कद्दू का तेल या (१३) बनफ्शाका तैल नाक या कान में डालने अथवा सिर के ऊपर अभ्यङ्ग करने से भी इसमें लाभ होता हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला, अर्क गावजबान १० तोला के साथ खिलाने या (२) अतरीफल उस्तूखूद्दूस ९ माशा अर्क गुलाब १० तोला के साथ देने से अद्भुत लाभ होता है। या (३) अनोशदारू बारिद ६ माशा, अर्क नीलूफर या अर्क बादियान प्रत्येक १० तोला के साथ खिलाने से गरम सिर दर्द आराम होता है तथा मस्तिष्क बलवान् होता है। या (४) कुर्स मुसल्लस २ नग आँवला या पोस्ते के रस में घिसकर मस्तक पर लेप करने से लाभ होता है। यदि कब्ज भी हो तो (५) अतरीफल जमानी ९ माशा (६) अतरीफल मुलय्यिन ७ माशा या (७) गुलकंद आफताबी ४ तोला रात्रि में सोते समय १० तोला कोष्ण अर्क गावज़बान के साथ खिलाने से सिरदर्द आराम होता और कब्ज (विबंध) दूर हो जाता है।

सिद्ध योग—अतरीफल कश्नीजी १ तोला खिलाकर ऊपर से ६ माशे खीरा-ककड़ी के बीजों का शीरा, १० तोला अर्क शाहतरा में निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें।

सुदाअ वारिद साज़िज (अदोषज शीत शिर:शूल)

हेतु—अधिक शीत लगना, शीतल वायु में भ्रमण करना या शीत जल में अवगाह स्नान करना, अत्यंत शीतल पदार्थों का सेवन आदि ऐसे सिरदर्द के निदान-कारण होते हैं।

लक्षण——सिर और मस्तक की त्वचा शीतल प्रतीत होती है। उष्ण वायु या अग्नि के पास या धूप में बैठने से सुखानुभव होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) चाय या (२) कहवा पीना लाभकारी है। अथवा (३) गेहूँ की भूसी ३ तोला जल में पकाकर ६ माशा मिश्री मिलाकर पीने से बड़ा उपकार होता है। (४) गुलबनफ्शा ६ माशा या (५) सौंफ ७ माशा जल या अर्क मकोय १५ तोला में उबालकर २ तोला शर्बत उस्तूखुद्दूस मिलाकर पिलाने से बहुत लाभ होता है। (६) राई या (७) लौंग ३ माशा या (८) दालचीनी ५ माशा गरम पानी में पीसकर मस्तक और कनपटियों पर पतला लेप करने से बहुत लाभ होता है। (९) केसर १ माशा या (१०) सोंठ ३ माशा बारीक पीसकर गोघृत में मिलाकर नस्य लेने से शीघ्र लाभ होता है। (११) कस्तूरी या (१२) अंबर का सूंघना भी लाभकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) बनारसी आमले का मुरब्बा १ नग ७ तोला अर्क गावजबान के साथ खिलाने या (२) इयारज लूगाज़िया ९ माशा, १० तोला अर्क गावजबान या १० तोला अर्क सुदाब के साथ खिलाने से उपकार होता है। या (३) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (४) अतरीफल सनाई ९ माशा १० तोला अर्क गावजबान के साथ या (५) अतरीफल कबीर ७ माशा, ७ तोला अर्क गावज़बान के साथ खिलाना गुणकारी है। (६) कुर्स मुसल्लस २ नग मेंहदी के रस में घिसकर मस्तक पर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

सिद्ध प्रयोग—(१) गुल बनफ्शा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, हंसराज ४ माशा, अंजीर विलायती ३ नग, अर्क गावज़बान १५ तोला में क्वाथ करके छानकर २ तोला शर्बत उस्तूखुद्दूस मिलाकर पिलायें। (२) ऊष्मस्वेद्—गुलबाबूना, गुलबनफ्शा, उस्तूखुद्दूस, सूखी हुई सुदाब की पत्ती, सौंफ की जड़, अफसंतीन प्रत्येक १-१ तोला। सब ओषधियोंको जल में उबालकर चादर ओढ़कर निर्वात (बंद) गृह में बफारा लेवें। इससे सर्दी का सिरदर्द जिसमें तीव्र प्रसेक (नज़ला) होता है, शीघ्र लाभ होता है। (३) केसर १ माशा, जुंदबेदस्तर १ माशा को गरम पानी में पीसकर नस्य लेने से सर्दी का सिरदर्द विशेषरूप से आराम हो जाता है। (४) लौंग ३ माशा, राई ६ माशा, दालचीनी ३ माशा,

सूखी सुदाब की पत्ती १ तोला, उस्तूखुद्दूस १ तोला, हींग के पानी (घोल) में पीसकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से उपकार होता है।

दोषज शिरः शूल

सुदाअ दम्वी

नाम--(अ०) सुदाअ दम्वी; (फा०) दर्दसर खूनी; (उ०, हिं०) खूनी (खूनका) दर्दसर; (सं०) रक्तज शिरः शूल; (अं०) कन्जेस्टिव्ह हेडेक (Congestive Headache), हाइपर्मिक हेडेक (Hypermic Headache)।

वक्तव्य—दोषज शिरः शूल (सुदाअ माद्दी) के ये पांच भेद होते हैं—(१) सुदाअ दम्वी, (२) सुदाअ सफरावी. (३) सुदाअ बल्गमी, (४) सुदाअ सौदावी और (५) सुदाअ रीही। यहाँ पर इनमें से प्रत्येक का क्रमशः वर्णन किया जाता है।

हेतु—जलवायुजन्य रक्त दुष्टि (रक्तोद्वेग), अर्शोजात रक्त, आर्तवावरोध, मांस-अंडा प्रभृति रक्तवर्द्धक आहार का अधिक सेवन आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—शिरोगौरव, सर्वांग वेदना, चेहरे एवं नेत्र का लाल होना, मुख का स्वाद मीठा होना, इसके प्रमुख लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि शारीरिक शक्ति एवं अवस्था अनुकूल हो तो सर्वप्रथम सरारू सिराका वेधन (फस्द) करें या पिंडलियों पर पछने लगवाकर सींगी खिचवायें या सिर के पीछे सींगी लगवाये और थोड़ा ही रुधिर निकालें। इसके बाद प्रकृतिपरिवर्तन (संशमन) का उपाय करें। अस्तु, (१) उन्नाब ६ दाना या (२) आलूबोखारा १५ दाना या (३) बर्ग शाहतरा ६ माशा जल में क्वाथ करके २ तोला शर्बत उन्नाब या २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (४) २ तोला इमली को १५ तोला अर्क गावजबान में भिगोकर २ तोला शर्बत आलूबोखारा मिलाकर पीना लाभकारी है। (५) सफेद चंदन १ तोला या (६) सूखा धनियां १ तोला अर्क गुलाब और सिरका में पीसकर पतला लेप करना गुणकारी है। (७) हरे कुलफे का रस १० तोला में गुलरोगन ६ माशा और स्त्री का दूध ६ माशा मिलाकर नस्य लेने से बहुत लाभ होता है। (८) ५ तोला हरा धनियां के रसमें गुलरोगन १ तोला और सिरका ३ माशा मिलाकर सूंघने से भी उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार - (१) माजून चोपचीनी ६ माशा अर्कमुण्डी १० तोला के साथ खिलाना लाभकारी है।

वक्तव्य—यदि शोधनोपरांत भी रक्तदोष की इतनी प्रगल्भता हो कि उससे

सरसाम उत्पन्न होने का भय हो और सिरदर्द की अत्यंत तीव्रता हो, तो निम्न-लिखित तिला या लेप का प्रयोग बहुत गुणकारी होता है ।

तिला का योग—हरे धनियाँ की पत्तीका रस १ तोला, हरे काहू की पत्ती का रस १ तोला में सफेदचंदन १ तोला पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर मस्तक पर पतला लेप करने से लाभ होता है । परीक्षित है ।

प्रलेप योग—गुलबनफ्शा १ तोला, गुल नीलूफर १ तोला, शियाफ मामीसा ६ माशा, जौ का आटा और मूँग का आटा प्रत्येक एक-एक तोला, गुल बाबूना, गुलसुर्ख, रसवत मक्की, सफेद चंदन प्रत्येक ६-६ माशा, मीठे कद्दू का गूदा १ तोला--समस्त ओषधियों को हरे धनिये के रस में पीसकर गुलरोगन , अंगूरी सिरका और अर्क गुलाब मिलाकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से रक्तज शिरःशूल आराम होता है । परीक्षित है ।

सिद्ध योग—हिम जो रक्तज शिरःशूल में परीक्षित है तथा शोधनोपरांत प्रयुक्त किया जाता है । उन्नाब विलायती ५ दाना, पित्तपापड़ा ५ माशा, गुल-नीलूफर ५ माशा, सफेद चंदन ५ माशा--समस्त ओषधियों को १२ तोला अर्क शाहतरा में रात्रि में भिगो देवें । प्रातः काल छानकर २ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिला देवें । यदि रक्त में पित्त मिला हो, तो निम्न योग को प्रयोग में लेवें ।

शीतजनन (तबरीद) योग—गुल नीलूफर ६ माशा, चंदन का बुरादा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना अर्क शाहतरा में मलकर, ६ माशा खीरा-ककड़ी के बीज का शीरा, ६ माशा छिले हुए काहू के बीज का शीरा योजित करके २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाना अतीव गुणकारी है ।

हिमका योग जो रक्तज शिरःशूल में अतीव गुणकारी है, सिरावेध और सींगी के पश्चात् उपयोग किया जाता है । ५ दाने उन्नाब का शीरा १० तोले अर्क नीलूफर में निकाल कर खट्टे-मीठे उभय अनार का २ तोला शर्बत, १ तोला चंदन का शर्बत मिलाकर पिलावें । परीक्षित है । यदि कब्ज हो तो इन शर्बतों की जगह शर्बत तुरंजबीन मिलाकर पिलाने से उसका निवारण होता है ।

हिम जो ऐसे शिरःशूल में लाभकारी है जिसके साथ भ्रम (दौराने सर) एवं हृत्स्पंदन भी हो । हड़का मुरब्बा एक नग चाँदी के वर्क के साथ प्रथम खिला कर ऊपर से ५ तोला अर्क केवड़ा और १० तोला अर्क गावज़बान में ७ माशा सूखे धनियां का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत अनार, १ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर ४ माशा तुख्मबालंगू (तूतमलंगा) का प्रक्षेप देकर पिलाने से उपकार होता है ।

सुदाअ सफरावी

नाम--(अ०) सुदाअ सफरावी ; (फा०) दर्देसर सफरावी ; (उ०) सफरावी दर्दसर ; (सं०) पित्तज शिरःशूल ; (अं०) बिलिअस हेडेक (Bilious Headache) ।

हेतु--कभी उष्ण एवं मधुर पदार्थों के पुष्कल सेवनसे या ऋतुजन्य उष्णता के कारण पुष्कल पित्तोत्पन्न होकर उसका कुछ भाग आमाशय में टपकता है और आमाशय से तीक्ष्ण वाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर प्रवृत्त होते हैं, जिससे सिरदर्द उत्पन्न हो जाता है ।

लक्षण--चेहरा, जिह्वा और नेत्र का वर्ण पीला होता है । मुख तिक्त एवं कण्ठ शुष्क होता है । प्यास अधिक लगती है । नाड़ी द्रुतगामिनी होती है । मूत्र उष्ण और उस का रंग पीला होता है । कभी-कभी मूत्र आने में किंचिद् दाह भी होता है । निद्रा नहीं आती है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--आवश्यक शोधन के उपरांत संशमन (प्रकृति परिवर्तन) करें । अस्तु, (१) २ माशा मीठे बिहीदाने का लुआब या (२) १० तोला अर्क नीलूफर में ६ माशा काहू के बीज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें । या (३) शर्बत आलूबोखारा २ तोला या (४) शर्बत इमली २ तोला या (५) खट्टे अनार का शर्बत २ तोला या (६) कागजी नीबू का शर्बत २ तोला अर्क कासनी १० तोला या अर्क गावजबान १० तोला में मिलाकर देने से उपकार होता है । या (७) सिरका १ तोला, गुलरोगन ५ तोला, अर्क गुलाब १५ तोला, तीनों को मिलाकर उसमें कपड़ा तर करके चँदिया (सिर) पर रखने से लाभ होता है । अथवा (८) चंदन ६ माशा, कपूर ३ माशा या हरा या सूखा धनियां २ तोला अर्क गुलाब में पीसकर सिर के ऊपर लेप करना या मस्तक और कनपटियों पर पतला लेप करना गुणकारक है । (९) कद्दू या खीरा का तैल या (१०) बनफ्शाका तैल या (११) नीलूफर का तैल चँदिया (सिर) पर मलना या नाक और कान में टपकाना लाभकारी है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) जुवारिश आमला ७ माशा अर्क गावजबान १२ तोला के साथ खिलाना या (२) जुवारिश तमर्रहिंदी १ तोला अर्क नीलूफर १० तोला के साथ खिलाना या (३) जुवारिश तमर्रहिंदी १ तोला अर्क नीलूफर १० तोला के साथ खिलाना आशु प्रभावकारी है । (४) खमीरा गावजबान सादा या अंबरी १ तोला अर्क बहार १२ तोला के साथ खिलाना या (५) दवाउल्मिस्क बारिद ५ माशा, अर्क गावजबान १२ तोला के साथ देना भी लाभकारी हुआ करता है । (६) जब कब्ज के लक्षण प्रगट हों तो सफूफ

बनफशा ६ माशा या (७) शर्बत अनार ३ तोला कोष्ण अर्क मकोय १० तोला के साथ प्रातः-सायंकाल पीना पित्तज और रक्तज शिरःशूल में भी लाभकारी है। (८) मुफर्रेह कश्नीजी ६ माशा, अर्क नीलूफर ७ तोला के साथ खिलाने से बाष्प-जनित पित्तज शिरः शूल में आशातीत लाभ होता है। (६) आमले का मुरब्बा एक नग, चाँदी का वर्क १ नग में लपेटकर प्रातः काल खिलाने और रात्रि में सोते समय बड़े हड़का मुरब्बा १ नग पानी से धोकर १ नग चांदी का वर्क लपेटकर खिलाना भी गुणकारी है।

सिद्ध योग—(१) पैत्तिक दोष के बाष्प तथा आमाशय के अनुबन्ध से होने वाले शिरः शूल में निम्न योग गुणकारी है—५ माशा जरिश्क बेदाना का शीरा, ५ माशा सूखे धनियेका शीरा, अर्क कासनी ७ तोला, अर्क नीलूफर ८ तोला में निकाल कर शर्बत तमर्रहिंदी ३ तोला और अर्क गुलाब ३ तोला योजित करके पिलावें। (२) प्रलेप—हरे कुलफे के पत्र १ तोला, शियाफ मामीसा १ तोला, दोनों चन्दन (सफेद और लाल) १ तोला, गुलाब का फूल १ तोला, सुपारी १ तोला, शुद्ध अफीम ६ माशा—समस्त द्रव्यों को सिरका में पीसकर गुलरोगन मिलाकर मस्तक और कनपटी पर लेप करने से इस प्रकार के शिरः शूल में अतीव लाभ होता है।

अपथ्य—गरम और मीठे पदार्थ से परहेज करें। लाल मिर्च, मांस, चाय, लहसुन, प्याज, अंडा, मछली आदि और तैल की पकी हुई वस्तुयें नहीं खावें।

पथ्य—दर्द की दशा में आहार न देवें। दर्द शान्त होनेपर हरी तरकारियों में से पालक, कुलफा, तोरई, शलगम, चुकंदर, कद्दू, टिंडे आदि के रसा के साथ चपाती खिलावें। मूंग की दाल, पाव रोटी, दूध, दही, मक्खन, मलाई, सेब, अनार, संतरा, आड़ू आदि खिला सकते हैं। भोजन के साथ नीबू और इमली की खटाई गुणकारी है।

सुदाअ बल्गमी

नाम—(अ०) सुदाअ बलग़मी ; (फा०, उ०) दर्दसर वल्गमी ; (सं०) कफज शिरः शूल ; (अं०) क्रॉनिक हेडेक (Chronic Headache) कटारल हेडेक (Catarrhal Headache)।

कभी आमाशय में श्लैष्मिक द्रव संचित होकर पाचन विकार उत्पन्न कर देते तथा वायु उठकर मस्तिष्क की ओर जाते और शिरः शूल का कारण होते हैं।

हेतु—वादी, गुरु, विष्टंभी और दीर्घपाकी पदार्थों का सेवन, चिरकारी कब्ज, कम चलना-फिरना और जल या बर्फ का अत्यधिक सेवन आदि इसके कारण हैं।

लक्षण—इन्द्रियाँ शिथिल एवं अस्थिर होती हैं। तबीअत बोझल रहती है

शिर में बोझ अधिक प्रतीत होता है। मुंह और नथुनों से पुष्कल द्रव स्रावित होता है। नाड़ी की गति मंद हो जाती है। मूत्र श्वेत एवं सांद्र (गाढ़ा) होता है। भूख-प्यास कम मालूम होती है। गरमी पहुँचने से दर्द में आराम मालूम होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम यह देखना चाहिये कि रोगजनक दोष संपूर्ण शरीर में प्रगल्भ है या केवल मस्तिष्क (शिर) में, उसका यथेष्ट—यथा प्रमाण शोधन करने के उपरांत दोष-शमन का यत्न करें। दर्द की दशा में रोगी को निर्वात उष्ण गृह में आराम से लिटायें और (१) गेहूँ की भूसी एवं नमक कपड़े की पोटली में बाँध कर टकोर(सेंक) करें। (२) उस्तूखुद्दूस ६ माशा या १ तोला अर्क बादियान ११ तोला में क्वाथ करके २ तोला मिश्री मिलाकर चाय की भांति पीने से उपकार होता है। (३) दारचीनी ३ माशा या (४) लौंग ३ माशा या (५) काली मिर्च ३ माशा जल में पीसकर मस्तक और कनपटियों पर लेप करने से शिरः शल आराम होता है। (६) केसर १ माशा और जुन्दबेदस्तर २ माशा पीसकर हुलास (नस्य) की भाँति प्रयोग करने अथवा (७) नकछिकनी ३ माशा या (८) मग्ज रीठा ३ माशा और जुंदबेदस्तर १ माशा के साथ नसवार लेने या २ तोला अर्क सुदाब में पीसकर नस्य लेने से कफज शिरःशूल आराम होता है। (९) तमाकू का नसवार लेने से मस्तिष्क सांद्र द्रव्यों से शुद्ध हो जाता है। (१०) कस्तूरी या (११) अंबर या (१२) चमेली का फूल सूंघने और (१३) चमेली या (१४) बाबूना का तेल सिर पर मलने से कफज सिरदर्द जाता रहता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) हब्ब इयारज १ माशा या (२) हब्ब शबयार १ माशा, अर्क बादियान ७ तोला के साथ रात्रि में सोते समय सेवन करने से मस्तिष्क की शुद्धि होती है और कफज शिरः शूल आराम होता है। (३) अतरीफल सनाई ९ माशा या (४) अतरीफल मुलय्यिन ७ माशा रात्रि में सोते समय सेवन करने से चिरकारी कफज शिरःशूल जाता रहता है। (५) माजून दबीदुल्वर्द १ तोला अर्क बादियान ७ तोला के साथ खिलाने से रोग का नाश होता है।

सिद्ध योग—प्रसेकयुक्त सर्दी के सिरदर्द में लाभकारी क्वाथ—अतरीफल कश्नीजी १ तोला प्रथम खिलाकर ऊपर से उन्नाब ५ दाना, मुलेठी ४ माशा, गुलबनफशा ६ माशा, १५ तोला अर्क गावजबानमें क्वाथ करके मिश्री मिलाकर पिलायें अथवा निम्न क्वाथ पिलायें—बर्ग शाहतरा (पित्तपापड़ा) ४ माशा, उन्नाब ५ दाना, छिली हुई मुलेठी ४ माशा, तुख्म खतमी ६ माशा, सबको जलमें क्वाथ करके २ तोला शर्बतनीलफर मिलाकर पिलायें। (२) कफज शिरः शूल,

कास, प्रसेक और ज्वर के लिये परीक्षित क्वाथ योग--गुल बनफ्शा ६ माशा, सौंफ ४ माशा, खतमी के बीज ६ माशा, पित्तपापड़ा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोड़ा १० दाना, छिली हुई मुलेठी ४ माशा, सब द्रव्यों को १५ तोला अर्क गावजबान में क्वाथ बनाकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाने से बहुत लाभ होता है। (३) अवरुद्ध नजलाहर लेप—बबूलका गोंद ३ माशा, कतीरा ३ माशा, काहूके बीज ६ माशा, पोस्ता का दाना ६ माशा, दम्मुल अख्वैन ६ माशा, गुलाब का फूल ६ माशा, शुद्ध अफीम २ माशा, केसर २ माशा, समस्त द्रव्यों को कूटकर अंडे की सफेदी में मिलाकर एक गोल छिद्रयुक्त कागज पर चिपका कर कनपटी पर लगाएँ। इससे कठिन कफज शिरः शूल आराम होता है।

वक्तव्य—इस प्रकार का दर्द बहुधा प्रसेक एवं प्रतिश्याय के साथ हुआ करता है। अतएव चिकित्सा में इसका ध्यान विशेष रूप से रखना चाहिये तथा प्रसेक और प्रतिश्याय जैसी चिकित्सा जिसका आगे वर्णन होगा, की जाय।

अपथ्य—यथासंभव जल कम पिएँ। बर्फ का सेवन न करें। आलू, अरवी, उड़द की दाल, दूध, दही, मक्खन आदि कफकारक पदार्थों से परहेज करें। जब तक भली भांति उदर शुद्धि न हो जाय, भोजन न करें (उपवास करें), भूख से कम खायें और भोजन करने के बाद तुरत ही न सो जाया करें।

पथ्य—बकरी या मुर्गी के बच्चे का मांसरस (शोरबा) चपाती से खिलायें। मूंग की दाल, अरहर की भुनी हुई खिचड़ी, पाव रोटी, यखनी, अंडा आदि खायें और भोजनोत्तर दश-पन्द्रह मिनट तक लघु भ्रमण करें।

सुदाअ सौदावी

नाम—(अ०) सुदाअ सौदावी ; (फा०) दर्दसर सौदावी ; (उ०) सौदावी दर्दसर ; (सं०) वातजन्य शिरः शूल ; (अं०) क्रॉनिक हेडेक (Chronic Headache)।

लक्षण—जिह्वा, चेहरा और नेत्र श्यावयुक्त होता है। नींद नहीं आती। नाड़ी बारीक (क्षीण) चलती है। मुख, नथुना और मस्तिष्क रूक्ष होता है। आरंभ में मूत्र श्वेत वर्ण का होता है। रक्तज और पित्तज शिरःशूल के समान इसमें तीव्र वेदना नहीं होती।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम संपूर्ण शरीर का शोधन करके पुनः खास मस्तिष्क का शोधन करना चाहिये। तदुपरान्त मस्तिष्क के शमन (साम्यानुवर्तन) और बलवर्धन का उपाय करना चाहिये। अस्तु, (१) उस्तूखुद्दूस १ तोला पानी या अर्क गावजबान में क्वाथ करके २ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें। इसी प्रकार (२) गावज़बान पत्र, (३) बिल्लीलोटन की पत्ती, (४) शाहतरा

पत्र (पित्तपापड़ा), (५) बस्फाइज फ़ुस्तुकी, (६) अफतीमून विलायती, (७) उन्नाब विलायती और (८) अंजीर विलायती आदि का यथाप्रमाण यथाविधि क्वाथ करके पिलाने से भी सौदावी सिरदर्द आराम होता है। (९) कस्तूरी या (१०) अम्बर सूंघने अथवा कस्तूरी को जल में घिसकर नस्य लेने से भी लाभ होता है। (११) रोगन बनफ्शा या (१२) रोगन बाबूना सिर पर मलने या उसमें कपड़ा भिगो कर सिर पर रखने से उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला, १० तोला अर्क मकोय के साथ या (२) अतरीफल सनाई ३ माशा १० तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से लाभ होता है। (३) हब्ब शिफा १ माशा ताजे जल के साथ सेवन करने या जल में घिसकर मस्तक पर पतला लेप करने से बहुत लाभ होता है। शिरःशूल के समस्त भेदों में लाभकारी एवं परीक्षित है।

सुदाअ रीही

नाम—(अ०) सुदाअ रीही या असबी; (फा०) दर्दसर रीही; (उ०) रीही दर्दसर; (अं०) न्युराल्जिक या नर्वस हेडेक (Neuralgic or Nervous Headache)।

लक्षण—दर्द एक स्थान में सीमित नहीं होता, प्रत्युत जिधर रीह (वायु) गति करती हुई जाती है, सिर के उसी भाग में पीड़ा होने लगती है। सिर में बोझ नहीं होता, अपितु तनाव मालूम होता है। कान बोलते और सनसनाते हैं। गरमी लगने से दर्द शान्त होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) तुख्म करफ्स, (२) बिरंजासिफ, (३) सातर फारसी, (४) सोआ, (५) अजवायन और (६) सौंफ—इनमें से प्रत्येक का यथाप्रमाण यथाविधि शीरा, क्वाथ या चूर्ण कल्पना करके देने से उपकार होता है। इसी प्रकार (७) मर्जञ्जोश, (८) सुदाब के पत्र, (९) इक्लीलुल्मलिक—इनमें से प्रत्येक के यथाप्रमाण और यथाविधि बनाये हुये क्वाथ का परिषेक शिर के ऊपर करना भी लाभकारी है। (१०) ताजे सुदाब का रस या (११) सौंफ के ताजे पत्र का रस या (१२) नकछिकनी ३ माशा या (१३) कस्तूरी आदि सूंघने या नस्य लेने से रीही सिरदर्द आराम होता है। (१४) केसर १ माशा या (१५) सफेद मिर्च ३ माशा के साथ केवल जल या हरी नकछिकनी के रस में पीसकर नस्य लेने से वायु का उत्सर्ग होता है। (१६) जुंदबेदस्तर १ माशा, काली मिर्च २ माशा के साथ पीसकर (नस्य) नसवार की भाँति उपयोग करने से शीघ्र लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) जुवारिश कमूनी १ तोला, १० तोला अर्क बादियान के साथ खिलाने अथवा (२) जुवारिश पुदीना २ तोला या (३) जुवारिश दारचीनी ९ माशा १० तोला अर्क सौंफ के साथ देने से बहुत लाभ होता है।

सिद्ध योग--वायुजन्य शिरःशूल के लिये परीक्षित क्वाथ योग--जीरा ३ माशा, साजिज हिन्दी ३ माशा, सातर २ माशा, कड़ के बीज २ माशा--इनका १५ तोला अर्क बादियान में क्वाथ करके ४ तोला गुलकंद मिलाकर खिलाने से कब्ज दूर होता है और शिरः शूल आराम हो जाता है। (२) नस्य जो वातज शिरः शूल के लिये परीक्षित है--एलुआ २ माशा, नकछिकनी २ माशा, केसर २ माशा, सफेद मिर्च २ माशा, कस्तूरी १ माशा--इन सब द्रव्यों को मर्जञ्जोश या सौंफ के रस में घोंटकर नस्य लेने से बहुत उपकार होता है। (३) नस्य --जुंदबेदस्तर १ माशा, कस्तूरी १ माशा, सफेद मिर्च १ माशा, समस्त द्रव्योंको चमेली के तैल में मिलाकर नस्य लेने से वायु का उत्सर्ग होता है।

सुदाअ शिर्की

नाम--(अ०) सुदाअ शिर्की ; (फा०, उ०) दर्दसर शिर्की ; (अं०) रिफ्लेक्स हेडेक (Reflex Headache)।

वक्तव्य--इस प्रकार का दर्द अन्यान्य दूषित (विकृत) अंगों के अनुबन्ध से हुआ करता है। इसके अनेक भेदोपभेद हैं। पर अधिकतया यह निम्न दश प्रकार का होता है--

(१) शिर्की मेदी जो मेदा वा आमाशय के अनुबन्ध से हो, (२) शिर्की कबिदी जो कबिद याने यकृत् के अनुबन्ध से हो, (३) शिर्की तिहाली जो तिहाल याने प्लीहा के अनुबन्ध से हो, (४) शिर्की मिअ्रवी जो मिअ्राऽ याने अन्त्रके अनुबन्ध से हो, (५) शिर्की रहमी जो रहम याने गर्भाशय के अनुबन्ध से हो, (६) शिर्की हाजिज़ी जो (हजाब हाजिज) के अनुबन्ध से हो, (७) शिर्की सुलबी जो पृष्ठ वा रीढ़ के अनुबन्ध से हो, (८) शिर्की मराकी जो मराक (उदर की त्वचा और उसके नीचे की झिल्ली एवं पेशी आदि) के अनुबन्ध से हो, (९) शिर्की कुलवी जो कुलिया याने वृक्क के अनुबन्ध से हो और (१०) शिर्की साकी या अतराफी जो पिंडलियों या हस्त-पांद के अनुबन्ध से हो।

सुदाअ शिर्की मेदी

नाम--(अ०) सुदाअ शिर्की मेदी ; (फा०, उ०) दर्दसर शिर्की मेदी ; (अं०) गैस्ट्रिक हेडेक (Gastric Headache)।

वक्तव्य—इसके भी यद्यपि अनेक भेद होते हैं, तथापि प्रायः यह निम्न (सात) प्रकार का होता है। (अ) शिर्की मेदी सादा जो आमाशय के अदोषज विप्रकृति (सूएमिज़ाज सादा) से उत्पन्न होता है। इसके यह दो अवांतर भेद होते हैं—(१) दर्दसर शिर्की मेदी हार्र साज़िज जो केवल आमाशयगत उष्णता से हो और (२) शिर्की मेदी बारिद साज़िज जो केवल आमाशयगत शीत से हो। (ब) शिर्की मेदी माद्दी जो आमाशय के दोषज विप्रकृति से उत्पन्न होता है। दोषोल्वणता के विचार से इसके यह तीन अवांतर भेद होते हैं—(३) शिर्की मेदी सफरावी, (४) शिर्की मेदी बल्गमी और (५) शिर्की मेदी सौदावी। (स) शिर्की मेदी रीही जो आमाशयगत वायु (रियाह) से उत्पन्न होता है। (द) शिर्की ज़ोफ मेदी या शिर्कीमिदी ज़ोफफ़मी याने जो आमाशयिकद्वार के दौर्बल्य से उत्पन्न होता है।

लक्षण—सुदाअ शिर्की मेदी सादा में आमाशय खाली हो तो सिरदर्द मामूली होता है। किन्तु भोजन के उपरांत जब आमाशय परिपूर्ण एवं गौरवयुक्त (बोझल) हो जाता है, तब दर्द बढ़ जाता है। सुदाअ शिर्की मेदी माद्दी में दोष की प्रगल्भता के विचारानुसार जिस दोष की उल्वणता होती है, उसके विशिष्ट लक्षण पाये जाते हैं। सुतरां पित्तज में मिचली आती है, नेत्र पीला होता और आमाशय में मरोड़ रहता है। मुख का स्वाद तिक्त प्रतीत होता है और प्यास अधिक लगती है तथा पैत्तिक वमन के पश्चात् वेदना शान्त हो जाती है। कफज में शिरःशूल से पूर्व अजीर्ण एवं कुपचन दोष होता है। अम्लोद्गार आते, आध्मान होता, उत्क्लेशाधिक्य एवं पुष्कल लालास्राव होता है। श्लैष्मिक वमन के उपरांत वेदना हलकी हो जाती है। सौदावी में आमाशय के अन्दर दाह एवं जलन होती हैं। क्षुधा अधिक लगती है। तीक्ष्ण सौदावी वमन से दर्द हलका हो जाता है। सुदाअ मेदी रीही में सिरदर्द से पूर्व आमाशय में भी दर्द होता है। दर्द सिरकी चोटी में हुआ करता है। जब आमाशयगत दर्द जाता रहता है, तब सिरदर्द भी जाता रहता है। वादी पदार्थों के सेवन से दर्द में वृद्धि हो जाती है। सुदाअ ज़ोफ मेदी में प्रातः काल निहारमुंह और खाली पेट के समय दर्द में विशेष रूप से वृद्धि हो जाती है।

उपचार वा चिकित्सा

दर्दसर शिर्की मेदी में ३ तोला सिकंजबीन और ६ माशा लवण को आध सेर गरम पानी में मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन करायें। तदुपरांत निम्न योग उसे सेवन करायें।

(१) सात माशा जुवारिश जालीनूस में १ रत्ती मण्डूर भस्म मिलाकर

रोगी को प्रातः सायंकाल खिलायें और ऊपर से १२ तोला अर्क सौंफ में ५ माशा सौंफ, ५ माशा अनीसून और ३ माशा कुसूस के बीज का शीरा निकालकर और २ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें।

(२) अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ६ माशा या अतरीफल कश्नीजी २ तोला सोते समय रात्रि में खिलायें। जब आमाशय का सुधार हो जाय, तब मेधाजननार्थ (मस्तिष्क को बलवान् बनाने के अर्थ) प्रातःकाल ५ माशा खमीरा गावज़बान अंबरी और सायंकाल जुवारिश मस्तगी या अनोशदारू प्रत्येक ५ माशा खिलायें।

यदि आमाशयविकार के साथ वातनाड़ीदौर्बल्य भी हो, तो जदवार १ माशा, ऊदसलीब १ माशा खमीरा गावज़बान १ तोला में मिलाकर खिलायें और ऊपर से १२ तोला अर्कसौंफ में कुसूस के बीज और सौंफ प्रत्येक ५ माशा तथा गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाने का शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें।

वक्तव्य—अन्यान्य अंगोंके अनुबन्धसे होनेवाले शिरःशूल (दर्दसर शिर्की) के अन्य भेदों के विस्तारपूर्वक विवरण करने के लिये इस संक्षिप्त सुसारसंग्रह-ग्रंथ में स्थान निकालना तो कठिन है, फिर भी संक्षेप में इतना लिख देना आवश्यक है कि उनके उपचारक्रम में उन्हीं सिद्धांतों और नियमों को दृष्टिगत रखना चाहिये, जिनके आधार पर आमाशयानुबंधी शिरःशूल (दर्दसर शिर्की मेदी) का उपचार किया गया। अर्थात् प्रधान अवयव में जिस दोष की प्रगल्भता हो, प्रथम उस दोष का यथाविधि शोधन करें। पुनः प्रधान अवयव के प्रकृति परिवर्तन (साम्यानुवर्तन) वा प्रकृतिस्थ करने का यत्न करें। परन्तु इसके साथ ही अनुबन्धी (संबंधित) अवयव को बलवान् बनाने का ध्यान रखें। सुतरां प्रधान अवयव मस्तिष्क के जिस भाग के सम्मुख स्थित होगा, उसी भाग में वेदना होगी। अस्तु, यदि गर्भाशय के अनुबंध से शिरःशूल उत्पन्न हो, तो दर्द सिर के पूर्व भाग बल्कि मूर्धा वा ब्रह्मरंध्र (याफूख) के मध्य में होगा। यदि वृक्क के अनुबंध से हो तो सिर के पश्चाद् भाग में दर्द होगा। यदि प्लीहा के अनुबंध से हो तो सिर के वाम भाग में वेदना होगी। यदि यकृत् के अनुबंध से हो तो सिरके दक्षिण भाग में वेदना होगी। यदि हजाब हाजिज व मराक के अनुबंध से हो तो सिर के अग्र भाग में मस्तक के पास वेदना होगी। इसी प्रकार यदि दोनों पिंडलियों या दोनों हस्तपादों के अनुबंध से हो तो रोगी को ऐसा प्रतीत होगा, मानो कोई वस्तु च्यूंटी की भाँति गति करती हुई सिर की ओर चढ़ती हैं।

सुदाअ जोफे दिमागी

नाम--(अ०) सुदाअ जोफे दिमागी ; (उ०) दर्दसर जोफे दिमागी ; (सं०) मस्तिष्क दौर्बल्यजनित शिरःशूल ; (अं०) ॲनीमिक हेडेक (Anaemic Headache)।

हेतु---इस प्रकार का सिरदर्द मस्तिष्क की दुर्बलता अथवा उसमें रक्त की न्यूनता के कारण हुआ करता है। मानसिक श्रमकी अधिकता, अधिक स्त्री-सहवास और सदा बना रहनेवाला प्रसेक (नजला) आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण--ज्ञानेन्द्रियों की मलिनता, मानसिक क्रियाओं का ह्रास, जरासी आवाज सुनने या किसी सुगंध के सूँघने से सिर दर्द हो जाना आदि इस प्रकार के सिर दर्द के लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार---ताजे फल विशेषकर (१) ताजा सेव या (२) ताजा अंगूर या (३) नासपाती या (४) अनार आदि का सेवन अथवा इनका ताजा रस निकाल कर देना लाभकारी है। (५) बनारसी आमले का मुरब्बा, (६) सेवका मुरब्बा चाँदी या सोने के वर्क के साथ खिलाकर ऊपर से शर्बत सेव या शर्बत अनन्नास और अर्क गावजबान पिलाना गुणकारी है। (७) सात दाना छिले हुये बादाम को समतोल मिश्री के साथ रात्रि में सोते समय खिलाना भी गुणकारक है। (८) मुफर्रेहात एवं मुकव्वियात। यथा---अंबर, इत्र-हिना और सेव आदि सूँघना भी लाभकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--अनोशदारू लूलुइ ५ माशा, अर्क सौंफ और अर्क गावज़बान प्रत्येक पाँच तोला के साथ सेवन करें। या (२) दो चावल जवाहर मोहरा खमीरा गावज़बान अंबरी जवाहर वाला या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाला के साथ देवें। या (३) २ चावल लोह भस्म खमीरा संदल और अनार के रस के साथ देवें। (४) खमीरा गावज़बान अंबरी जवाहर वाला ५ माशा या (५) खमीरा अबरेशम हकीम ईर्शदवाला ३ माशा या (६) खमीरा मर्वारीद ५ माशा या (७) खमीरा संदल जवाहर वाला ५ माशा अर्क गावजबान या अर्क अंबर के साथ देने से ऐसे सिरदर्द में बहुत लाभ होता है। (८) रोगन लबूब सबआ सिर पर लगायें।

पथ्यापथ्य--शारीरिक और मानसिक कार्यों की अधिकता से बचें। यथा प्रमाण शीघ्रपाकी आहार का सेवन करें। अम्ल और तीक्ष्ण पदार्थों के सेवन से परहेज करें।

सुदाअ (कुव्वत) हिस्स दिमागी

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का शिरःशूल मस्तिष्ककी संवेदना बढ़ जाने से

प्रगट होता है। अतएव मस्तिष्क दौर्बल्य जनित सिरदर्द की भाँति सामान्य कारण से भी मस्तिष्क को कष्ट प्रतीत होता है और वह शिरःशूल पीड़ित हो जाता है। किन्तु मस्तिष्क की समस्त क्रियायें यथावत् होती हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) गुरु और सांद्र आहार, जैसे--बासी रोटी पानी में भिगोकर खाने अथवा (२) बकरे का (कल्ला व पायचा) सेवन करने से मस्तिष्क की संवेदना कम हो जाती है, विशेषकर उस समय जबकि पाचन शक्ति निर्बल न हो। पाचन-शक्ति दुर्बल होने पर शीतल शाक (तरकारियाँ), जैसे (३) हरा काहू या (४) हरा कुलफा या (५) हरा धनिया सेवन करायें तथा स्वापजनन पदार्थ --जैसे (६) अफीम, (७) लुफाह (८) धनिया और काहू का लेप करायें। ऐसे ही (९) रोगन खशखाश या (१०) रोगन काहू का सिर पर लगाना लाभकारी है। (११) शर्बत खशखाश पिलाना भी गुणकारी है।

सुदाअ युब्सी (खफा)

नाम--(अ०) सुदाअ युब्सी ; (उ०) दर्दसर खुश्की ; (सं०) रूक्षता-जन्य वा वातज शिरः शूल ; (अं०) इण्ड्योरेटिव्ह हेडेक (Indurative Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का शिरःशूल रूक्षता से उत्पन्न होता है। रूक्षता से प्रकृति का विगड़ना (सूए मिजाज याबिस), बाह्य रूक्षता उत्पन्न करने वाले (असूरात) अर्थात् गरम वायु और लू आदि तथा उष्ण लेपों का प्रयोग, आर्तवशोणित एवं प्रसवशोणित का अधिक स्रावित होना या जल कम पीना या जल का परित्याग कर देना तथा रूक्ष आहार का सेवन आदि इसके हेतु हैं। तीव्र संशोधन अर्थात् शारीरिक द्रवों की प्रचुरता से उत्सर्गित हो जाने के पश्चात् अथवा जागने और मस्तिष्क से नजला एवं नकसीर के पश्चात् सिर दर्द होना तथा शिरका शून्य एवं खाली मालूम होना तथा मुख का शुष्क होना आदि इसके लक्षण हैं।

उपचार--मस्तिष्क दौर्बल्य की भाँति उपचार करें। रोगन बादाम या लबूब सब्आ का शिरोऽभ्यंग करें तथा नाक और कान में भी टपकायें।

सुदाअ जिमाई

नाम--(अ०) सुदाअ जिमाई ; (उ०) दर्दसर जिमाई ; (सं०) मैथुनज शिरःशूल ; (अं०) क्वायटस हेडेक (Coitus Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का शिरःशूल अति मैथुन के कारण होता है। अति शुक्रस्राव से रूक्षता उत्पन्न होना या मस्तिष्क की ओर बाष्प का

प्रकोप (हैजान) या वातनाड़ी-दौर्बल्य आदि इसके कारण हैं। इसके पूर्व अतिमैथुन का होना अर्थात् यह अतिमैथुन के पश्चात् होता है तथा रोगी के शरीर का रूक्ष एवं दुर्बल होना आदि इसक लक्षण हैं। यह भी वस्तुतः सुदाअ खफा की तरह होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार---इसमें मैथुन का सर्वथा परित्याग करा देवें। इसके उपाय प्रायः वही हैं जिनका उल्लेख सुदाअ युब्सी में किया गया है। अंतर केवल यह है कि इसमें (मुरत्तिबात) का उष्णता लिये हुए होना मुनासिब है तथा इनमें मस्तिष्क बलवर्धन का अधिक ध्यान रखना चाहिये, जैसे--(१) दूध, (२) ताजा मक्खन और घी का उपयोग लाभदायक है। (३) तीतर या चकोर या (४) चिड़ा (चटक) आदि के मांस का आहार रूपेण उपयोग सात्म्य है। (५) एक नग मुर्गी के अंडे की अधभुनी जर्दी मीठा मिलाकर खाना तथा (६) मीठे बादाम का मग्ज १ तोला या (७) चिलगोजे का मग्ज ७ माशा या (८) अखरोट का मग्ज २ तोला इनमें से प्रत्येक का उपयोग गुणकारी है। इसी प्रकार (९) बकरे आदि पशुओं के मस्तिष्क अलग-अलग अतीव गुणकारी हैं। (१०) सालममिश्री ३ माशा, घिसकर २ तोला बिही के मुरब्बा में मिलाकर एक नग चाँदी का वर्क लपेट कर खाना और ऊपर से ९ तोला माउल्लहम (मांसार्क) में २ तोला मीठे अनारका शर्बत या २ तोला सेब का शर्बत मिलाकर पीना परीक्षित है। इसी प्रकार (११) जहर-मोहरा खताई ४ जौ या (१२) नीले रंग का वंशलोचन २ माशा पीसकर २ तोले बनारसी आमले के मुरब्बा में मिलाकर खाने और ऊपर से ७ तोला अर्क गुलाब या ७ नग मीठे बादाम के मग्ज का शीरा में २ तोला शर्बत अनार मिलाकर ७ माशा तुख्म शर्बती का प्रक्षेप देकर पीने से शीघ्र लाभ होता है। तथा (१३) गाय के ताजे दूध का सेवन गुणकारी है। (१४) रोगन बनफशा कान में डालना और (१५) गुलरोगन वृक्क एवं वृषणों पर मर्दन करने से भी उपकार होता है तथा (१६) उष्ण जल का स्नान भी गुणकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) मुरब्बाये सालममिश्री १ तोला या (२) मुरब्बा गजर २ तोला या (३) मुरब्बा शलजम २ तोला--इनमेंसे अलग-अलग प्रत्येक को ७ तोला माउल्लहम (मांसार्क) या ९ तोला अर्क बेदमुश्क के साथ खाने से शीघ्र लाभ होता है। (४) लबूब कबीर ९ माशा या (५) लबूब सगीर १ तोला, एक तोला शीरा बादियान के साथ देने से लाभ होता है। परीक्षित है।

सुदाअ खुमारी

नाम--(अ०) सुदाअ खुमारी ; (उ०) दर्देसर खुमारी ; (सं०) मद्य-

पान जनित (मद्यज) शिरःशूल ; (अं० एलको हॉलिक हेडेक (Alcoholic Headache) ।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का शिरःशूल सदा मद्यसेवनोपरांत हुआ करता है, विशेषकर नूतन, (नाकिस) या शुद्ध एवं तीक्ष्ण मद्य के पीने से प्रगट हो जाता है। मद्यसेवनोत्तर शिरःशूल उत्पन्न होने तथा कभी-कभी उत्क्लेश या हृल्लास अर्थात् मिचली आना इसके लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--सर्व प्रथम आमाशय की शुद्धि के लिये (१) तीन तोले सिकंजबीन सादा में गरम पानी मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन करा देना चाहिये। तदुपरांत बलवर्धन के लिये (२) शर्बत अनार ३ तोला या (३) शर्बत बेह ३ तोला या (४) सिकंजबीन ३ तोला में ४ तोला अर्क गुलाब और शीतल जल मिलाकर पिलाना लाभकारी है। इसके बाद भी यदि उबकाई और मिचली कष्ट देवें तो किसी कदर नरम आहार खिलाकर एक घड़ी के पश्चात् वमन करा देने से अवशिष्ट दोष उत्सर्गित होकर आमाशय शुद्ध हो जायगा तथा सिर दर्द भी जाता रहेगा। यदि वमन या विरेचन के लिये कोई निषेधक हो तो (५) शर्बत हुम्माज ३ तोला या (६) शर्बत लीमूँ २ तोला; ५ तोला अनार या अंगूर के रस या ठंढे पानी में मिलाकर पिलाना मद्य को हज्म करता है तथा शिरकी ओर बाष्प चढ़ने को रोकता है। इसके अतिरिक्त (७) सूखा धनिया और सम भाग चीनी इन दोनों को कूटकर चूर्ण बनाकर ठंढे पानी से खिलाना बाष्पोत्पत्ति रोकने के लिये परीक्षित है। (८) गुल बाबूना ५ तोला, गुल बनफ्शा ३ तोला, नमक १ तोला--सबको जल में उबालकर उक्त जल में पैर रखना और ऊपर से नीचे की ओर मलना शिर से बाष्प को आकृष्ट करता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला या (२) मुफर्रेह कश्नीज ७ माशा खिलाकर ऊपर से २ तोला शर्बत लीमूँ पानी में मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (३) मुफर्रेह बारिद ६ माशा (खुमार) नष्ट करने के लिये गुणकारी है।

सुदाअ शम्मी

नाम--(अ०) सुदाए शम्मी ; (उ०) दर्देसर शम्मी ; (सं०) दुर्गंधजन्य शिरःशूल, (अं०) ऑल्फैक्टरी हेडेक (Olfactory Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का सिर दर्द तीक्ष्ण दुर्गंध या सुगन्ध या उष्ण द्रव्य, जैसे कस्तूरी और फर्फ्यून आदि के सूँघने से हुआ करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--यदि उष्ण द्रव्यों के सूँघने से सिर दर्द उत्पन्न हुआ हो तो (१) कपूर या (२) गुलबनफ्शा या (३) गुलनीलूफर का केवल

सूँघना पर्याप्त होगा । यदि उष्णता के साथ रूक्षता भी रोग का कारण हुई हो तो (४) रोगन बनफ्शा या (५) रोगन नीलूफर का नस्य लाभकारी होगा । (६) चंदन सूंघने से भी लाभ होता है । इसके अतिरिक्त सिर के ऊपर (७) कोष्ण जल का परिषेक और (८) सिरका सूँघना तथा उसमें वर्ति तर करके नासिकामें रखने से भी उपकार होता है ।

सुदाअ किर्मी

नाम--(अ०) सुदाअ दूदी ; (उ०) दर्देसर किर्मी ; (सं०) क्रिमिज शिरःशूल ; (अं०) वर्मिनल हेडेक (Verminal Headache) ।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का सिर दर्द मस्तिष्क के प्रान्तों में सान्द्र एवं दूषित दोष के संचय और नाथुनों एवं मस्तक के अन्दर अस्थ्यवकाश में क्रिमियों के उत्पन्न हो जाने से होता है । दर्द सदा मस्तक में नथुनों के अंतिम आसन्नवर्ती भाग में होता है । दर्द के साथ उस स्थान में अत्यन्त खुजली भी होती है । नासिका से दुर्गन्ध आती है । सिर हिलाने, चलने-फिरने या चेष्टा करने से दर्द में तीव्रता एवं वृद्धि होती है । पूर्ण विश्रान्ति की दशा में दर्द कम या बिल्कुल नहीं होता ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--मस्तिष्क को दुष्ट दोषों से शुद्ध करने के उपरान्त (१) आड़ू की पत्ती का रस या (२) एलुवा या (३) अफसंतीन में से किसी एक को जल में पीस कर नाक में टपकायें (नस्य देवें) । इसके अतिरिक्त (४) हींग और कपूर को गुलरोगन या तारपीन के तेल में घिसकर नस्य देने से नासागत क्रिमि मरते और निकलते हैं । इसके लिये यह सफल औषध है । (५) रीठा को जल में घिसकर दो-तीन बूंद नाक में टपकाने से भी लाभ होता है । यदि रोग नष्ट हो जाने के उपरान्त नासिका से दुर्गन्ध आना शेष रहे तो (६) छडीला को बिना पानी के हुक्का में तमाकू की तरह पीना और धूम्र नथुनों से निकालना चाहिये । इसमें (७) तीन माशा मुलीम को नीम के ताजे पत्तों के रस में पीस कर या शरीफा के पत्तों के रस का नस्य देने से क्रिमि निःसरित हो जाते हैं । रोगी के सामान्य स्वास्थ्य के सुधारने का भी यत्न करना चाहिये । यदि वह दुर्बल हो तो उसे बल्य औषधियों का उपयोग कराना चाहिये ।

संसृष्ट द्रव्योपचार--नस्य जो क्रिमिज शिरःशूल को नष्ट करने के लिये परीक्षित है--पीला एलुआ २ माशा, रसवत पीत २ माशा और इयारज फैकरा २ माशा सबको हरे नीम के पत्तों के रस में घिस कर और ३ माशा मुलीम मिलाकर नस्य देने से मस्तिष्कगत क्रिमि नष्ट होते और निःसरित हो जाते हैं । बड़ा ही गुणकारी योग है ।

वक्तव्य--इस रोग में थका देनेवाले व्यायाम, गुरु और गरिष्ट भोजन कम करना, गरम और मीठे पानी से स्नान करना और इसे देर तक सिर के ऊपर डालते रहना परमोपकारी उपाय है।

सुदाअ ज़रबी व सक्ती

नाम--(अ०) सुदाअ जर्बी (व सक्ती व तफर्रुक इत्तिसाली) ; (उ०) दर्दसर जर्बी (सक्ती) ; (सं०) अभिघातज शिरःशूल; (अं०) ट्रॉमटिक-हेडेक (Traumatic Headache)।

हेतु और लक्षण--इस प्रकार का सिर दर्द सिर के ऊपर आघात लगने या गिर पड़ने से अथवा खोपड़ी की हड्डी टूट जाने से या मस्तिष्क को आघात पहुँचने से हुआ करता है। यदि आघात-प्रतीघात (जर्बा व सक्ता) तीव्र हो तो रोगी मूर्च्छित हो जाया करता है। जर्बा व सक्ता का अन्तर--मारने से लगे चोट को जर्बा और गिरने से लगे को सक्ता कहते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--यदि कोई बात निषेधक न हो तो सबसे पूर्व (१) सरारू सिरा का वेधन करें और (२) गुलरोगन सिरका में मिलाकर सिर पर लगायें। आंतरिक रूप से (३) उन्नाब १८ दाना और अमलतास ५ तोला का काढ़ा पिलाकर प्रकृति को मृदु करना उक्त अवस्था में अतीव गुणकारी है।

सिद्ध योग (१) प्रलेप--गिल अरमनी १ तोला, एलुआ २ तोला, मूंग का आटा १ तोला, मैदा लकड़ी २ तोला, गुलाब का फूल २ तोला, हरी मेंदी के पत्र ५ तोला, बाबूना ४ माशा, चिरायता ४ माशा--समस्त द्रव्यों को कूटकर हरे बेदसादा के पत्र के रस में गूंध कर लेप करने से बहुत उपकार होता है। (२) यदि चोट लगने या गिर पड़ने से मस्तिष्क में शोथ आ गया हो, तो उसके लिये निम्न-लिखित क्वाथ अनुभूत है--उस्तूखुद्दूस ९ माशा को १ तोला अर्क मकोय में उबाल-कर मधु मिलाकर पिलाने और उपरिलिखित प्रलेपयोग में गुलनार और गुलाब-पुष्प प्रभृति जैसे संग्राही द्रव्य मिलाकर लेप करने से सिर दर्द आराम होता और मस्तिष्क में शोथोत्पत्ति रुक जाती है।

सुदाअ तज़अज़ुई

नाम--(अ०) सुदाअ तजअ्जुई ; (उ०) दर्दसर जुंबिशी ; (अं०) कन्कस्सिह्व हेडेक (Concussive Headache)।

हेतु और लक्षण--इस रोग का कारण सिर के ऊपर आघात लगने या धमक पहुंचने से (जौहर दिमाग) का हिल जाना है। विस्मृति नेत्र के तले अंधेरा आ जाना और कभी-कभी समस्त प्रकार की सुगंधियों को एक ही अनुभव करना आदि इसके लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--इसमें रोगी को बिल्कुल आराम से लिटाये रखें। सर्व प्रथम यदि कोई निषेधक न हो तो दोष को प्रतिलोम (इमाला) करने के लिये (१) बासलीक या हफ्त अंदाम का सिरावेध करायें। तदुपरांत (२) ४ तोला अमलतास को कासनी के फाड़े हुये १० तोला रस में मिलाकर प्रकृति मार्दव के लिये मिलायें। पुनः (३) चंदन या (४) सुपारी या (५) गिल अरमनी या (६) काई या (७) जौका आटा पानी में पीसकर लेप करने से बहुत लाभ होता है। यदि ज्वर और शोथ भी हो तो (८) गुल रोगन या (९) रोगन बनफ्शा या (१०) स्त्री दुग्ध में किंचित् रसवत घोलकर कर्ण और नासिका में टपकायें तथा संपूर्ण शिर पर अभ्यङ्ग करें। रोग निवृत होने के उपरान्त मस्तिष्क को बल प्रदान करें।

सिद्ध योग (१) प्रलेप--जो इस प्रकार के दर्दसिर को नष्ट करता है--सफेद चंदन १ तोला, लाल चंदन १ तोला, सुपारी १ तोला, गिल अरमनी १ तोला, रेवंदचीनी १ माशा, जौका आटा २ तोला, बाकला का आटा २ तोला--सबको कूटकर हरी काई में मिलाकर लेप करें। (२) गुल बनफ्शा, गुल नीलूफर, गल खतमी, गुलाबपुष्प प्रत्येक एक तोला के क्वाथ से पाशोया करें। जब मस्तिष्क में शोथ हो गया हो और ज्वर न हो उस अवस्था में निम्न प्रलेप योग लाभ करता है--(३) गुलनार फारसी १ तोला, समूचा मसूर २ तोला, गुलाब का फूल १ तोला, अनार का छिलका १ तोला, मेंहदी के हरे पत्र ५ तोला, चिरायता १ तोला, फिटकिरी १ तोला--सबको कूटकर अनार के हरे पत्र के रस में गूंधकर लेप करने से शोथ और सिरदर्द आराम होता है। परीक्षित है।

सुदाअ बैज़ी व खौजी

नाम--(अ०) सुदाअ बैज़ी, सुदाअ खौजी; (उ० हि०) सारे सिरका दर्द, खोपड़ी का दर्द; (अं०) ऑर्गेनिक हेडेक (Organic Headache) हेल्मेट हेडेक (Helmet Headache)।

हेतु--मस्तिष्क की तीनों झिल्लियों (बहिराभ्यंतरिक) में से किसी एक झिल्ली के नीचे दुष्ट दोष या सांद्र बाष्प अवरुद्ध हो जाया करते हैं जो गौरव एवं उद्वेष्टन के कारण अपने दूषित गुणों के द्वारा वेदना उत्पन्न करते हैं। दोष के विचार से कभी ये बाष्प रक्तज, कभी कफज, पित्तज या सौदावी होते हैं।

लक्षण--रोगजनक दोष के लक्षण के अतिरिक्त इसमें निम्न लक्षण साधारण तया पाये जाते है। साधारण वा मामूली कारण से दर्द बढ़ जाता है, जिसके दौरे तीव्र होते हैं। मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण रोगी जोर के शब्द, प्रत्युत सामान्य बातों के श्रवण से कष्ट पाता है। तीव्र प्रकाश से भी उसे कष्ट होता

है। उसे सदैव नीरवांधकार और एकांतप्रिय होता है। वह विश्राम और शांति चाहता हैं। दौरे के समय रोगी अपने नेत्र नहीं खोल सकता। रोगी सदा यह अनुभव करता है, मानो कोई उसके सिर पर हथौड़े मार रहा है या किसी चीज से सिर को फाड़ रहा हैं। रोगी दर्द की तीव्रता के कारण नेत्र खोलने में असमर्थ होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम रोगजनक दोष का निर्णय करने के पश्चात् प्रगल्भ दोष का यथावत् शोधन करें याने दोष-पाचन और विरेचन से शरीर को शुद्ध करें। पुनः विशिष्ट अंग की शुद्धि करके प्रकृतिपरिवर्तन (संशमन) और मस्तिष्क बलवर्धन का यत्न करें। अस्तु, यदि रोगजनक दोष उष्ण हो तो साहब खुलासा के मतानुसार (१) पीली हड़का बक्कल ७ माशा, (२) गुलबनफ्शा ६ माशा, गुलकंदशकरी २ तोला में मिलाकर कुछ काल पर्यन्त खिलानेसे बहुत लाभ होता है। (३) अफीम ४ रत्ती (४) एक माशा केसर के साथ सिरका में पीसकर मस्तक पर लेप करने अथवा (५) कपूर १ माशा (६) सफेद चंदन ४ माशा अर्क गुलाब में पीस कर मस्तक पर लेप करने से भी इस प्रकार का दर्द अवश्य आराम हो जाता हैं। इसी प्रकार (७) मग्ज रीठा ३ माशा एक माशा केसर के साथ पीसकर हुलास की भांति उपयोग करने से लाभ होता है। (८) गुलबाबूना ७ तोला, (९) गुलनीलूफर १० तोला छः सेर पानी में उबालकर सिर के ऊपर परिषेक करने से लाभ होता है। (१०) दम्मुल अख्वैन ६ माशा, बबूल का गोंद ४ माशा, अफीम ४ रत्ती--सबको गरम पानी या सिरका में पीसकर गोल छिद्र युक्त कागज पर लगाकर कनपुटियों पर चिपकाने से शीघ्र लाभ होता है।

यदि रोगजनक दोष शीतल हो तो साहब खुलासा के मतानुसार (११) काबुली हड़ ९ माशा; उस्तूखुदूस ६ माशा के साथ १५ तोला अर्क गुलाबमें क्वाथ बनाकर गुलकंद असली मिलाकर पीना आशुलाभकारी है। इसी प्रकार (१२) मुरमक्की ३ माशा, केसर १ माशा और अफीम ४ रत्ती--इनको नमक के पानी में पीसकर मस्तक और कनपुटियों पर लेप करना या (१३) चुकंदर के रस के कुछ बूंद नाक या कान में टपकाना भी गुणकारी है। इसी प्रकार (१४) कस्तूरी का सूंघना शिर को शक्ति प्रदान करता है। यदि तीव्र वेदना के कारण आवाज बन्द हो जाय तो (१५) शिर पर गरम पानी का परिषेक गुणकारी होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) हब्ब हिंदी १ गोली प्रातः-सायं काल ताजे पानी ले खिलाने से दर्दसर बैजा व खौजा दूर होता है।

सिद्धयोग--(१) रक्तज दर्दसर बैजा व खौजा के उपयोगी प्रलेप--शियाफ मामीसा ५ माशा, जौका आटा १ तोला, मटर का आटा १ तोला, गुलबनफ्शा

१ तोला, सबको हरी कासनी के रस में पीसकर लेप करने और घंटे-घंटे पर बदलते रहने से इस प्रकार का दर्द आराम होता है। (२) बलगमी बैजा के लिये चमत्कारी प्रलेप योग--मटर का आटा ३ तोला, जौका आटा ३ तोला, एलुआ १ तोला मुरमक्की १ तोला--सबको महीन पीसकर सिरका में गूंधकर चमेली के तेल में मिलाकर सिर के ऊपर लेप करें। (३) अंजरूत १ तोला, सफेद चन्दन ४ तोला, अफीम ४ माशा--सबको हरे काहू के रस में पीसकर पतला लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

वक्तव्य--दर्दसर बैजी व खौजी बहुधा सर्द ही हुआ करता है। प्रारम्भ में यदि उष्ण भी हो, तो यदि शीघ्र उपचार न किया जाय तो अंत में सर्दी के दर्द में परिवर्तित हो जाता है। अतएव इसका उपचार कफज शिरःशूल के सिद्धान्तानुसार करना चाहिये।

सुदाअ निस्फी, शकीका

नाम--(अ०) सुदाअ निस्फी, सुदाअ शकीका, शकीका ; (उ०, हिं०) आधासीसी, आधे सिरका दर्द ; (सं०) अर्धावभेदक ; (अं०) हेमिक्रेनिया (Hemicrania), माइग्रेन (Mygraine)।

यह आवेग या दौरे से होने वाला सिर दर्द है जो साधारणतः आधे सिर मे और कभी समस्त सिर में होता है।

हेतु--संपूर्ण शरीर या शरीर के किसी एक अंग से बाष्प उठकर सिर के दुर्बल भाग में स्थान ग्रहण करते हैं अथवा विकृत दुष्ट दोष या सांद्र वायु संचित हो जाते हैं। रोगजनक दोष प्रायः धमनियों में होता है।

लक्षण--जो दोष प्रगल्भ होता है उसके लक्षण पाये जाते हैं। यदि वायु इस रोग का कारण हो तो सिर हलका होता है। किसी प्रकार का बोझ प्रतीत नहीं होता। पर विकारी दिशा की ओर अधिक उद्वेष्टन प्रतीत होता है। कान बोलते और सनसनाते हैं। उष्ण एवं वायुजनक पदार्थ के सेवन से दर्द बढ़ जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रोगजनक दोषका निर्णय हो जाने के पश्चात् प्रगल्भ दोष का शोधन करें और मस्तिष्क को बलवान् बनाने का अधिक यत्न करें। पर रक्तज और पित्तज में यदि अवस्था अनुकूल हो तो सरारू या मस्तक अथवा नासिका की अन्य सिराओं का वेधन बहुत गुणकारी है। (१) आलूबोखारा १५ दाना या (२) इमली ३ तोला; १५ तोला जल या अर्कनीलूफर में भिगोकर ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्बत गुलाब मिलाकर पिलाने से असीम लाभ होता है। (३) सिरका ३ माशा या (४) गुलरोगन १ तोला में (५) एक माशा

अफीम मिलाकर मस्तक पर लेप करना या (६) कपूर १ माशा या (७) सफेद चंदन ६ माशा हरे धनिये या कुलफा के रस में पीसकर पतला लेप करने और सूंघने से शीघ्र लाभ होता है। यदि नींद न आती हो तो (८) सफेद पोस्ता का दाना १ तोला; अर्क गुलाब में घोटकर सिर के ऊपर लेप करने से नींद आती और सिर दर्द जाता रहता है। (९) स्त्री के दूध में रोगन बनफ्शा मिलाकर नाक में टपकाने से बहुत उपकार होता है। (१०) कासनी के बीज १ तोला या (११) सूखा धनिया २ तोला जल में पीसकर ६ माशा सिरका और ५ तोला रोगन नीलूफर मिलाकर कपड़ा तर करके चंदियाँ पर रखना और सूखने न देना उष्ण अर्धावभेदक को नष्ट करता है।

अर्धावभेदक का उत्पादक दोष यदि शीतल कफात्मक या सौदावी हो, तो सामान्य और विशेष शुद्धि के उपरान्त जालीनूस के मतानुसार (१२) कबूतर की बीट किंचित् जल में पीसकर मस्तक पर लेप करने से सर्दी से होने वाला अर्धावभेदक तुरत आराम हो जाता है। (१३) कबाब चीनी ४ माशा या (१४) नकछिकनी ४ माशा जल में पीसकर नस्य लेने से लाभ होता है। (१५) मग्ज रीठा को जल में घिसकर नाक में टपकाने से बड़ा लाभ होता है। इसी प्रकार (१६) ६ माशा कलमी शोरा अकेले या (१७) तीन माशा पीपल के साथ पीसकर दर्द के विपरीत दिशावाली नासिका में नस्य देने से भी अतीव लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला; १० तोला अर्क सौंफ के साथ खाने से वायुजन्य अर्धावभेदक आराम होता है। (२) हब्ब शिफा१ माशा; ७ तोला अर्क सौंफ के साथ खाने से वायु जन्य एवं उष्ण अर्धावभेदक नष्ट होता है। (३) गुलकंद आफताबी २ तोला में २ माशा रूमी मस्तगी मिलाकर प्रातः काल सेवन करने से शीतल अर्धावभेदक अवश्य नष्ट होता है। (४) कुर्स मुसल्लस १ माशा, मेंहदी के रस में घिसकर मस्तक पर पतला लेप करने से शीतल अर्धावभेदक दूर हो जाता है।

सिद्ध योग—हिम वा फांट जो उष्ण अर्धावभेदक में प्रयुक्त किया जाता है गुलबनफ्शा ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोड़ा १० दाना, खतमी के फूल ४ माशा, शाहतरा (पित्तपापड़ा) ६ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, बिहीदाना ३ माशा—समस्त द्रव्यों को २० तोला अर्क कासनी में भिगोयें और प्रातः काल थोड़ा उबाल कर ३ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें। (२) अर्धावभेदकहर नस्य (सऊत)—अफीम १ माशा, जुंदबेदस्तर २ माशा, कालीमिर्च ३ माशा, केसर २ माशा समस्त द्रव्यों को गाय के मक्खन में पीस कर नस्य लेवें। (३) अर्धावभेदक के लिए परीक्षित—हरी मेंहदी के पत्र, मुरमक्की, ऐलुआ, रसवत मक्की

रसवत् हिंदी, बबूल का गोंद, निशास्ता, सफेद अंजरूत, सुक्कुल्मिस्क, कतीरा, सुपारी, पोस्त कुंदुर, गुलनार फारसी, अकाकिया, दम्मुल् अख्वैन, शियाफ मामीसा प्रत्येक ३ माशा, अफीम ६ माशा, केसर २ माशा समस्त द्रव्यों को कूट कर हरी मेंहदी की पत्ती के रस में गूंध कर टिकिया बना लेवें। आवश्यकता पड़ने पर एक टिकिया अंडे की सफेदी में मिलाकर गोल छिद्रयुक्त कागज पर लगाकर कनपुटी की धमनियों पर चिपकायें, आधा सीसी का दर्द तुरत जाता रहेगा।

इसाबा—दर्दे अबरू

नाम—(अ०) इसाबः ; (उ०) दर्द अबरू, भौंका दर्द ; (सं०) अनन्त वात, भ्रूपीड़ा ; (अं०) टिक् डोलरो (Tic Doucoureuse)।

हेतु—यह दर्द कभी दोनों भौंओं और कभी एक भौंमें प्रगट हुआ करता है। उष्ण दोषों के बाष्पों का चढ़ना या दर्द के स्थान में किसी दोष का आवृत या अवरुद्ध हो जाना या दोषविरहित उष्णता की उपस्थिति आदि इसके हेतु हैं।

इसाबा और शकीका में यह अन्तर है कि इसाबाजन्य कष्ट सूरज डूबने के बाद बहुत कम तो हो जाता है, पर सम्यक् नष्ट नहीं होता तथा रात्रि में सिर बोझिल रहता है। परन्तु दोपहर के बाद प्रातः काल तक रोगी को शकीका का कोई प्रभाव ज्ञात नहीं होता। जालीनूस ने एक और अन्तर का उल्लेख किया है कि शकीका सिर की लम्बाई में होता है और इसाबा चौड़ाई में। रोगी को नेत्र खोलने में कठिनाई और बोझ प्रतीत होना और पट्टी बांधने के स्थान अर्थात भौंओं में प्रगट होना आदि इसके लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—कब्ज (विष्टब्धता) की दशा में प्रकृतिमार्दव (मृदु-विरेचन) के उपरान्त रोग यदि गर्मी से हो तो (१) यवमंड या (२) माउल ज़ुब्न पिलाने और (३) कपूर गुलरोगन में घोलकर नस्य देने से बहुत लाभ होता है। यदि प्रतिश्याय के अवरुद्ध होने से वेदना प्रगट हुई हो तो (४) ८ माशा सनाय मक्की को ७ तोला अर्क गुलाब में क्वाथ कर पिलाने तथा (५) छिली हुई मुलेठी ७ माशे का काढ़ा अकेले या ५ माशा कासनी के योग से पिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार (६) बाबूना का उबाल कर गाढ़ा-गाढ़ा मस्तक पर लेप करने से असीम उपकार होता है। इसके अतिरिक्त (७) करफ्स के फूल सुखा कर पीस लेवें और कपड़े में बांध कर सुंघायें। छींकें आकर लाभ होगा। यदि अधिक उपचार अपेक्षित हो तो उष्ण शिरःशूलवत् चिकित्सा करें। अम्ल औषधियाँ जिनमें अनारदाना, आलूबोखारा या इमली या सिरका आदि डालकर बनाये हों तथा यवमंड एवं (माउल्जुब्न) आदि इस रोग में लाभकारी होते हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उष्ण शिरःशूलवत्।।

वक्तव्य—यदि छींक अधिक आये तो गुलाब के फूल का जीरा पीसकर नस्य लेने से बन्द हो जाती है।

हिस्स दिमाग

नाम--(अ०) हिस्स दिमाग ; (उ०) खारिश दिमाग ;
(अं०) इरिटेबिलिटी ऑफ दि ब्रेन (Irritability of the Brain)।

इस रोग में सिर में दर्द नहीं होता, अपितु रोगी अपने मस्तिष्क में खुजली अनुभव करता है। जब तक उसके मस्तिष्क को मलते रहें या उष्ण जल से परिषेक करें और सिर को धोयें या खुजलाते रहें, तब तक रोगी को सुखानुभव होता है।

हेतु--संपूर्ण शरीर वा शरीर के किसी विशिष्ट अंग में से किसी तीक्ष्ण कण्डूजनक दोष के बाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर चढ़ते हैं, जो न्यून प्रमाण में होने के कारण सिर दर्द तो नहीं उत्पन्न करते, प्रत्युत उनकी तीक्ष्णता एवं उष्णता से यह अवस्था उत्पन्न हो जाती हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम संपूर्ण शरीर अथवा विशिष्ट अंग से रोगजनक दोष का शोधन करके मस्तिष्क की ओर वाष्प चढ़ने से रोकना चाहिए। अस्तु, (१) १ तोला मीठे बीहीदाना का लुआब या (२) ६ माशा छिले हुए काहू के बीजों का शीरा, १० तोला अर्क सौंफ में निकाल कर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। या १० तोला अर्क नीलूफर या पानी में निकाला हुआ (३) ६ माशे ईसबगोल का लुआब या (४) ६ माशा कनौचा के बीज का लुआब १ तोला शर्बत बनफ्शा या २ तोला शर्बत खशखाश मिलाकर पीने से शीघ्र लाभ होता है। इसी प्रकार (५) तरबूज का रस १५ तोले में १ तोला मिलाकर पीने से उपकार होता है। (६) सिरका या (७) गुलरोगन में कपड़ा तर करके सिर पर रखने या (८) १० तोला गुलबनफ्शा या (६) १० तोला गुलनीलूफर या (१०) १० तोला गुलबाबूना जल में उबाल कर सिर के ऊपर परिषेक करना लाभकारी उपाय है। इसी प्रकार (११) रोगन बनफ्शा या (१२) बकरी का दूध सिर के ऊपर मलना लाभकारी है। (१३) जौका आटा या (१४) गुलाब का फूल या (१५) सुदाब के पत्र इनमें से प्रत्येक को अलग-अलग पीसकर पोटली में बाँधकर सिर के ऊपर सेक करने से शीघ्र लाभ होता है।

सिद्ध योग (१) सेक--जो मस्तिष्क के कण्डू को दूर करता है--जौ का आटा १ तोला, सफेद चंदन १ तोला, सफेद खतमी १ तोला और गुलाब के फूल, १ तोला--सबको सिरका में पकायें और कुनकुना से टकोर करें। (२) चूर्ण

जो मस्तिष्क की खुजली के लिये लाभकारी एवं परीक्षित है—नीले रंग का वंशलोचन १ तोला, सूखा धनिया २ तोला, पित्तपापड़ा के बीज २ तोला—समस्त द्रव्यों को कूटकर सबके बराबर चीनी मिलाकर उसमें से ६ माशा प्रति दिन १० तोला अर्क शाहतरा के साथ पीने से मस्तिष्क की खुजली अवश्य दूर होती है।

दूसरा प्रकरण

सरसाम

नाम—(अ०) सरसाम; (उ०) सरसाम, वर्म दिमाग; (अं०) सेरिब्राइटिस (Cerebritis), मेनिन्जाइटिस (Meningitis)।

वक्तव्य—सरसाम का धात्वर्थ (सर—शिर, मस्तिष्क; साम—शोथ, सूजन) मस्तिष्क की सूजन है। इस रोग में मस्तिष्क के आवरण (झिल्लियाँ) या केवल मस्तिष्क और कभी दोनों शोथयुक्त हो जाते हैं। सशोथ और अशोथ भेद से यह रोग दो प्रकार का होता है—(१) **सरसाम हकीकी** जिसमें मस्तिष्क और उसके आवरण शोथयुक्त होते हैं और (२) **सरसाम गैर हकीकी** जिसमें वे शोथयुक्त नहीं; अपितु मस्तिष्क की ओर दूषित वाष्प चढ़कर सान्निपातिक अवस्था उत्पन्न कर देते हैं जिसमें रोगी प्रलाप करता और बड़बड़ाता है। शोथजनक दोष के विचार से यद्यपि सरसाम हकीकी के यह चार अवान्तर भेद होते हैं—(१) सारसाम दम्वी या करानीतुस (शुद्ध फ़्रानीतुस), (२) सरसाम सफरावी या करानीतुस खालिस, (३) सरसाम बलगमी या लीसर्गुस और (४) सरसाम सौदावी या लीसार्गुस; तथापि इनमें से प्रथम दो भेदों को कोई **सरसाम हार** और अंतिम दोनों को **सरसाम वारिद** भी कहते हैं। सरसाम का आयुर्वेदोक्त सन्निपात ज्वरों में अन्तर्भाव हो सकता है। पाश्चात्य वैद्यक में मस्तिष्क शोथ तथा मस्तिष्कावरणशोथ उभय परस्पर भिन्न रोग माने जाते हैं। अतः मस्तिष्क शोथ को सेरिब्राइटिस या या फ्रीनाइटिस (अ० फ़्रानीतुस) और मस्तिष्कावरण शोथ को मेनिन्जाइटिस तथा दोनों की सूजन को सेरिब्रोमेनिन्जाइटिस और सरसाम गैर हकीकी को डेलीरियम् (प्रलाप) कहते हैं।

सरसाम हार (उष्ण सरसाम)

नाम—(अ०) सरसाम दम्बी, फ़्रानीतुस; (उ०) वरम दिमाग गर्म, खूनी सरसाम; (हिं०) रक्तज सरसाम; (अँ०) ॲक्यूट सेरीब्राइटिस (Acute cerebritis)।

(अ०) सरसाम सफरावी, फ़्रानीतुस खालिस; (उ०) शदीद सरसाम;

(हिं०) पित्तज सरसाम ; (अं०) अॅक्यूट मेनिन्जाइटिस (Acute Meningitis)।

हेतु और लक्षण--यह रोग प्रायः रक्तज या पित्तज हुआ करता है। इनमें से रक्तज सरसाम (सरसाम दम्वी) में निरंतर ज्वर एवं शिरोगौरव होता है। चेहरे, जिह्वा एवं नेत्र का लाल (सुर्ख) होना, हंसना तथा अश्रुस्राव आदि इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। पित्त के सरसाम (सरसाम सफरावी) में ज्वराधिक्य एवं रक्तज सरसाम की अपेक्षया इसमें शिर का हलका रहना, अनिद्रा, नासिकाशोष एवं कण्ठशोष, चेहरा, जिह्वा तथा नेत्र का पीला होना एवं क्रोध आदि इसके प्रधान लक्षण हैं। परन्तु; विवेक एवं बुद्धिभ्रंश, अविराम ज्वर, हृदय की धड़कन, श्वास एवं नाड़ी की गति त्वरित होना प्रभृति दोनों में मिलने वाले संमिश्र लक्षण हैं।

चिकित्सा सूत्र--सरसाम रोग में जब बुद्धि में विकार आने लगे तथा कोई बात निषेधक न हो तो कीफाल या अकहल अथवा बासलीक में से किसी का सिरा-वेध कराना या पिंडलियों पर पछने लगाकर सींगी लगवाना तथा हाथ-पाँव बाँधना और मलना, पादस्नान (पाशोया) करना और बस्ति देना जीवन रक्षा के उत्तम उपाय हैं। गर्म या शीतल पदार्थ सुंघाना तथा सिर को शक्ति देने का ध्यान रखना जरूरी है। अनिद्रा एवं ज्वर इस रोग के प्रधान लक्षण हैं। अतएव; ज्वर का ध्यान रखते हुये रोगीको नींद लाने का यत्न करना चाहिए। कभी-कभी सरसाम के रोगी में नींद की प्रगल्भता होती है। अतएव; मूत्र जारी करने का उपाय करना चाहिए। सरसाम रोगी का मुँह टेढ़ा हो जाना तथा नेत्रों से अश्रु बहना विशेषतः एक नेत्र से या जलवत् मूत्र आना असाध्यतासूचक लक्षण हैं। सरसामरोग में जंगारवत् हरे रंग का वमन होना, आक्षेप उत्पन्न हो जाना मरण-सूचक चिह्न हैं। नेत्र का भीतर धंस जाना, कृच्छ्रश्वास वा अविच्छिन्न श्वास और विड्मूत्रता भी मरणसूचक लक्षण हैं। यदि शोथ मस्तिष्क के भीतर उत्पन्न हो जाय तो सामान्यतः चार दिन के भीतर रोगी मर जाता है। यदि इससे बच निकले तो जीवन की आशा हो सकती है। सभी प्रकार के सरसाम में असम्बद्ध भाषण और संताप की विद्यमानता, समान रूप से पाये जाने वाले (संमिश्र) लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--इन उभय भेदों की चिकित्सा में केवल इतना ही अन्तर है कि रक्तज में दोषविलयन और शमन की अधिक आवश्यकता होती है तथा बहुत शीतल पदार्थों से परहेज आवश्यक होता है। इसके विपरीत पित्तज में संताप और पित्त की तीक्ष्णता के शमन का अधिक प्रयास करना चाहिए। यदि कोई बात निषेधक न हो तो रक्तज में कीफाल एवं बाहलीक का सिरावेध करना

और पित्तज में दोषपाचन औषधि आदि मिलाकर विरेचन देना आवश्यक हुआ करता है। चिकित्साकाल में रोग एवं रोगी की अवस्था तथा रोग के उपद्रवों को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। अस्तु।

(१) ताजे तरबूज के एक पाव स्वरस में मिश्री मिलाकर पिलाना बहुत गुणकारी है। (२) १० तोले अर्क नीलूफर या अर्क कासनी में १ तोला इसबगोल का लबाब निकाल कर २ तोला शर्बत खशखाश या उतना ही शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाना भी गुणकारक है। (३) आलूबोखारा १० दाना या (४) इमली ३ तोला, अर्क गावजबान १५ तोला या अर्क गुलाब १५ तोला में भिगोकर बिना मले उसके ऊपर का निथरा हुआ पानी छानकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (५) ६ माशा कुलफा के बीज का शीरा या (६) १ तोला मीठे कद्दू के बीज की गिरी का शीरा या (७) १ तोला खीरा-ककड़ी के बीज की गिरी का शीरा या (८) २ तोला तरबूज के बीज की गिरी का शीरा, इनमें से किसी एक पर ६ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पीने से अतीव लाभ होता है। (९) हरे काहू के पत्र दो छटाँक या (१०) हरे सोआ के पत्र दो छटाँक या (११) पोस्ते की डोड़ी पांच तोला या (१२) कद्दू एवं खीरा-ककड़ी का कतरा हुआ गूदा आदि जल में उबालकर गुलरोगन मिलाकर शिर के ऊपर धरने से शीघ्र उपकार होता है। (१३) गुलबनफ्शा या (१४) गुलनीलूफर या (१५) गुल बाबूना, इनको जल में उबालकर उस जल में पैर रखने तथा उनको मलने से भी उपकार होता है। इसी प्रकार (१६) इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) या (१७) गेहूँ की भूसी या (१८) बेर की हरी पत्ती के साथ जल में उबाल कर पांच तोला गुलरोगन या रोगन बनफ्शा मिलाकर शिर एवं ग्रीवा के ऊपर धरने (परिषेक करने) तथा पाशोया (पादस्नान) करने से भी बड़ा लाभ होता है। (१९) पाँच तोला गुलरोगन को दो तोला सिरका, ऽ। अर्क गुलाब या हरी कासनी अथवा हरे कुलफा के स्वरस में मिलाकर उसमें कपड़ा भिगोकर चंदिया पर रखने तथा उसे शुष्क न होने देने (निरंतर तर रखने) से बड़ा लाभ होता है। (२०) रोगन बनफ्शा या (२१) रोगन नीलूफर या (२२) रोगन कद्दू या (२३) स्त्री का दूध शिरके उपर मर्दन करने या नाक में टपकाने से शीघ्र लाभ होता है। (२४) शुद्ध कपूर २ माशा या (२५) सफेद चन्दन ६ माशा अर्क बेदमुश्क में घिसकर गुलाब का इत्र या चमेली का इत्र अथवा खस का इत्र १ माशा मिलाकर संघाने से असीम उपकार होता है।

सिद्ध उपाय—मूंग का आटा ऽ।, शुद्ध गोदुग्ध ऽ। दोनों को गूंधकर तवे पर छोड़ें। जब एक ओर से पक जाय, तब दूसरे कच्चे ओर गुलरोगन लगा लेवें।

पुनः शिरको भी गुलरोगन से तर करके उक्त रोटी को उसके ऊपर बाँधें । कई बार यह प्रयोग करने से सरसाम आराम हो जाता है । उसके लिये यह सिद्ध भेषज हैं । इसके अतिरिक्त बनफ़्शा, भूसी दूर किया हुआ जौ और इक्लीलुल्-मलिक के क्वाथ से परिषेक करना तथा शर्बत बनफ्शा पिलाना सुवैदी के सिद्ध प्रयोगों के अंतर्भूत हैं ।

संसृष्ट द्रव्योपचार (योग चिकित्सा)--(१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला को अर्क गावजबान १० तोला के साथ खिलाना सरसाम गैर हकीकी के लिये सिद्ध औषधि हैं । (२) अतरीफल कबीर ६ माशा को १० तोला अर्कगुलाब के साथ खिलाना सरसाम बलगमी को नष्ट करने के लिये परीक्षित एवं गुणकारी है । (३) इयारज फैकरा ३ माशा या इयारज लूगाजिया ३ माशा को ७ तोला अर्क सौंफ के साथ खिलाने से सरसाम बल्गमी के दोष का निर्हरण करता हैं । (५) हब्ब अफतीमून १ माशा को प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क बादियान १२ तोला में ३ तोला शर्बत बादरंजबूया मिला करके मिलाना सरसाम सौदावी के लिये साहब रुमूज का परीक्षित है । यदि सरसाम हारं मे विरेक हो रहे हों, तो (६) कुर्स तबाशीर काबिज १ माशा, ५ तोला अर्क कासनी, ५ तोला अर्क बादियान के साथ उपयोग करने से उपकार होता हैं ।

उष्ण सरसामोपयोगी सिद्ध योग

(१) अर्क नीलूफर, अर्क मकोय और अर्क केवड़ा प्रत्येक ५ तोला, इनमें ३ माशा बिहदाना शीरी का लबाब तथा ४ माशा कुलफा के बीज, ४ माशा काहू, ६माशा मीठे कद्दू के बीज की गिरी इनका शीरा निकालकर शर्बत नीलूफर मिलाकर और ४ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलाने से सरसाम सफरावी में उपकार होता हैं । (२) अर्क गावजबान मुरक्कब ५ तोला और अर्क नीलूफर १० तोला, इनमें ६ माशा तरबूज के बीज का शीरा और १ तोला इसबगोल का लबाब निकालकर उसमें ४ माशा तुख्म बालंगू (तूतमलंगा) का प्रक्षेप देकर पिलाने से पैत्तिक सरसाम आराम होता है । (३) मीठे कद्दू के बीज का मग्ज ३ तोला, खीरा-ककड़ी के बीज का मग्ज ३ तोला, तरबूज के बीज का मग्ज ३ तोला, कुलफा के काले बीज ३ तोला ; सब द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण बनावें । इसमें से १ तोला प्रति दिन यवमंड के साथ खिलावें । यह उष्ण (रक्तज एवं पित्तज) सरसाम के लिये सिद्ध औषध है । (४) खीरा का ताजा छिलका ५ तोला, कद्दू का ताजा छिलका, मकोय की हरी पत्ती, बेदमुश्क की हरी पत्ती, सफेदचंदन, नीलूफर, काहू के बीज, तरबूज के बीज का मग्ज । समस्त द्रव्यों को सिरका

और अर्क गुलाब में पीसकर गुलरोगन एवं शुद्ध कपूर मिलाकर शिरके ऊपर लेप करने से खालिस पैत्तिक सरसाम में उपकार होता है। (५) रक्तज एवं पित्तज सरसाम नाशक आघ्राण औषध (लखलखा): —सफेद और रक्तचंदन १ तोला को अर्कगुलाब में घिसकर शुद्ध कपूर मिलाकर तथा ताजा खीरा का स्वरस, हरे धनिये का स्वरस, रोगन बनफ्शा, रोगन नीलूफर और गुलरोगन मिलाकर आघ्राण औषध (लखलखा) की भाँति उपयोग करने तथा इसी को नाक में सुड़कने से उक्त रोग में उपकार होता है। यह परीक्षित है।

सरसाम बारिद (शीत सरसाम)

नाम—कफज सरसाम ; (अ०) सरसाम बलग़मी, लीसुर्गुस ; (उ०) वरम दिमाग सर्द ; (अं०) क्रॉनिक सेरीब्राइटिस (Chronic Cerebritis)।

सरसाम सौदावी : (अ०) सरसाम सौदावी, लीसार्गुस ; (उ०) खफीफ सरसाम ; (अं०) क्रॉनिक मेनिन्जाइटिस (Chronic Meningitis)।

हेतु और लक्षण—इस प्रकार का सरसाम श्लैष्मीय या सौदावी दोष की उल्वणता से होता है। सौदाकी उल्वणता से होने वाले सरसाम में रोगी घबड़ाता, बहकता, बड़बड़ाता, व्याकुल एवं चिंतित रहता और रोता है। जिह्वा, कण्ठ और मस्तिष्क ही नहीं, अपितु उसके समस्त शरीर में रूक्षता रहती है। नेत्र भीतर की ओर धँस जाते हैं। ज्वर हलका, किन्तु चौथे दिन बारीके दिन तीव्र होता है। नाड़ी कठिन, कसीर एवं मुतफावुत होती है। कफज सरसाम में ज्वर मृदु किन्तु अविसर्गी होता है। तन्द्रा और विस्मृति का प्रावल्य होता है। मुख से अधिक लालास्राव होता है। नाड़ी अजीम और मुतफावुत होती है।

चिकित्सासूत्र—यदि रोगी को नींद नहीं आवे तथा ज्वरमोक्ष के लक्षण (बोहरानी अलामात) भी न पाये जायँ, तो यथासंभव ऐसे उपाय करने चाहिए, जिसमें रोगी को निद्रा आ जाय और वह सो जाय। अतएव; शर्बत खशखाश या श्वेत खशखाश के बीज का शीरा अथवा पोस्ते की समूची डोडी का काढ़ा पिलाने से रोगी को निद्रा आ जाती है। इसी प्रकार रोगन खशखाश या रोगन काहू का शिरोऽभ्यङ्ग या नाक में सुड़कना उष्ण सरसाम में गुणकारी है तथा निद्रा उत्पन्न करता है। पोस्ते की डोडी के क्वाथ का शिर के ऊपर परिषेक भी निद्राकारक है।

कभी प्रकृति के दुर्बल होने से तथा शीतल बाष्प मस्तिष्क की ओर चढ़ने से गंभीर निद्रा का जोर होता है। यदि मोक्ष (बोहरान) के लक्षण नहीं पाये जायँ, तो रोगी के जगाने के आवश्यक उपाय काम में लाये जायँ। यदि रोग

अवरोह काल (घटने की दशा) में हो और प्रलाप शेष हो, तो उक्त अवस्था में स्त्री के दूध या बकरी के दूध का शिरोऽभ्यङ्ग तथा सूखने पर उष्ण जल एवं अन्यान्य उपयोगी औषधियों के काढ़े का परिषेक गुणकारी है। इस प्रयोग का बारंबार उपयोग करने से सम्यक् लाभ हो जायगा।

कभी ऐसा होता है कि सरसाम दम्वी सरसाम बलग़मी की ओर स्थानान्तरित हो जाता है और इस दशा में कुछ दोष कण्ठ एवं जिह्वा के ऊपर गिरता है, जिससे रोगी किसी प्रकार का शब्दोच्चार नहीं कर सकता है। वाणी सर्वथा बन्द हो जाती है। उक्त अवस्था में गुल बाबूना, इक्लीलुल्मलिक, गुलबनफशा, गेहूं की भूसी आदि से क्वाथ कल्पना करके शिर एवं ग्रीवा के ऊपर उससे परिषेक करना तथा बाष्प स्वेद लेना, रोगन बाबूना जैसे दोष-विलयन कोष्ण किये हुए तेलों का अभ्यङ्ग करना बहुत गुणकारी है।

सरसाम में देहशुद्धि तथा मलावरोध निवारण के लिये विरेचन देने की अपेक्षया वस्ति का उपयोग कहीं अधिक श्रेयष्कर एवं समीचीन है। मस्तिष्कगत दोषों को शरीर के निम्न भाग की ओर आकृष्ट करने के लिये पिंडलियों पर पछने लगाकर सींगी लगाना, लवण के महीन चूर्ण वा कोष्ण वालुका (रेत) से तलुवों को मलना या पाशोया करना अथवा हस्त-पाद बाँधना उत्तम उपाय हैं।

उपचार-चिकित्सा

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि कोई निषेधक न हो तो सौदावी सरसाम में प्रथम सिरावेध उचित है। तदुपरांत सौदापाचन और विरेचन के पश्चात् मस्तिष्क में शीत एवं तरावट पहुँचाने तथा प्रकृति परिवर्त्तन (शमन) का उपाय करना चाहिए। इस हेतु (१) १० तोला यवमंड में जो बहुत अम्ल न हो ऐसा २ तोला सिकंजबीन मिलाकर मिलाना उचित है। इसी प्रकार (२) १० तोला छेने के पानी में ३ तोला शर्बत आलूबोखारा मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। इनके अतिरिक्त (३) मुर्गी या (४) कबूतर का वध करके उसका ताजा गरम-गरम रक्त रोगी के शिर पर डालना और (५) उसका उदर विदीर्ण करके तथा उसे अन्त्र आदि से शुद्ध करके गरम-गरम रोगी के शिर पर बांधना और शीतल होने तक बाँधे रखना तथा आवश्यकतानुसार बारंबार इसका प्रयोग करना, इनमें से प्रत्येक पृथक्-पृथक् उत्तम उपाय है। (६) ५ तोला गुलरोगन को २ तोला सिरका और पाव भर अर्कगुलाब में मिलाकर उसमें स्वच्छ वस्त्र का टुकड़ा या स्पंज का टुकड़ा तर करके शिर के ऊपर धारण करने से शीघ्र उपकार होता है। इसी प्रकार (७) रोगन बनफ्शा ३ तोला या (८) रोगन बाबूना ३ तोला में सिरका और खतमीका लुआब मिलाकर शिर के ऊपर उसमें भिगोई हुई रूई या

वस्त्रखंड धारण करना—फाहा रखना या (९) बकरी के दूध में कपड़ा तर करके शिर के ऊपर धारण करना लाभकारी एवं परीक्षित है।

सरसाम बलगमी में यदि कोई निषेधक न हो तो, सरारू नाम्नी सिराका वेध करना तथा दोषपाचन एवं विरेचन के उपरांत मस्तिष्क को बल प्रदान करना तथा प्रकृति परिवर्तन (संशमन) करना आवश्यक है। प्रति दिन प्रातः काल (१) रूमी मस्तगी २ माशा या (२) उस्तूखूदूस ४ माशा पीसकर २ तोला मधु-घटित गुलकंद में मिलाकर खिलाना गुणकारी है। इसी प्रकार (३) जुंदबेद-स्तर १ रत्ती या (४) लौंग १ माशा या (५) जदवार खताई १ माशा, इनमें से प्रत्येक को अलग-अलग पीसकर १ तोला खमीरा गावज़बान अंबरी में मिलाकर खिलाने से शीघ्र लाभ होता है। शोथ के प्रारंभ में (६) सिरका (७) गुल-रोगन में मिलाकर शिर पर लगाने से उपकार होता है। तीन दिन के बाद (८) वनपलाण्डुघटित शुक्त (सिरकाए अन्सल) में गुलरोगन और जुंदबेदस्तर मिलाकर शिर पर अभ्यंग करें और (९) १ तोला अक़रकरा को २ तोला सफेद मिर्च और १ तोला बूरए अर्मनी के साथ मैदा के समान महीन पीसकर जैतून के तेल में मिला कर संपूर्ण शरीर पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। (१०) सोआ के हरे पत्र ऽ। पाव भर या (११) मकोय के हरे पत्र ऽ। पाव भर या (१२) पोस्ते की डोडी १० तोला, इनमें से प्रत्येक को पृथक्-पृथक् लेकर जल में उबालकर गुलरोगन मिलाकर शिर के ऊपर परिषेक वा तरेड़ा करने एवं बाष्प-स्वेद करने से उक्त रोग में लाभ होता है तथा यह परीक्षित है। इस रोग में विस्मृति (भूल) का प्राधान्य होता है। अतएव; रोगी को मलमूत्र के लिये सचेत करते रहना चाहिए तथा बस्तिस्थान के ऊपर परिषेक करना आवश्यक है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अनीसून, तुख्म करफ्स और गुठली निकाला हुआ मुनक्का इनका काढ़ा करके इस काढ़े के साथ २ तोला इयारज लूगाजिया खिलाने से शीत, स्वाप (सुन्नता) एवं कम्प की दशा में बहुत उपकार होता है। (२) गुठली निकाले हुए मुनक्का के शीरा के साथ ७ माशा अतरीफल कबीर खिलाने से सरसाम बलग़मी में लाभ होता है। यह परीक्षित है। (३) मस्तिष्क संशोधनोपरांत मस्तिष्क को बल देने तथा हृदय को प्रफुल्लित करने के लिये १ तोला खमीरा गावज़बान अंबरी या सादा ७ तोला अर्क गावज़बान के साथ खिलाना अनुपम भेषज है। (४) १ तोला माजून फलासफा १० तोला अर्क गावज़बान के साथ देने से इस रोग में शीघ्र लाभ होता है। इसी प्रकार १ तोला माजून फलाफली का सेवन भी गुणकारी है।

शीत सरसामोपयोगी सिद्ध योग

(१) सौदावी और बलग़मी उभय प्रकार के सरसाम के लिये सिद्ध क्वाथ

योग--गुलबनफ्शा ६ माशा, गुल नीलूफर ६ माशा, विलायती अंजीर ३ दाना, बादरंजबूया ६ माशा, उस्तूखूदूस ६ माशा, खतमी के बीज ६ माशा, खुब्बाजी ६ माशा, लिसोढ़ा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ११ दाना, मुलेठी ६ माशा, इनका अर्क गावजबान १० तोला और अर्क सौंफ १० तोला में क्वाथ करके छान लेवें। पुनः इस क्वाथ में ३ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलावें। कफज सरसाम में परीक्षित सिद्ध प्रलेप योग--जुंदबेस्तर ३ माशा, अकरकरा १ तोला, पुदीना १ तोला, हाशा १ तोला, नमाम १ तोला, नतरून ५ तोला। समस्त द्रव्यों को उष्ण जल में पीसकर बनपलाण्डुघटित सिरका (सिर्कए अन्सल) और जैतून का तेल मिलाकर लेप करें। (३) सरसाम सौदावी तथा मस्तिष्क की रूक्षता के लिये लाभकारी प्रलेप योग–कद्दू के बीज का मग्ज १ तोला, तरबूज के बीज की गिरी १ तोला, नीलूफर १ तोला, बनफशा १ तोला, स्त्री वा बकरी के दूध में पीसकर लेप करें। (४) सरसाम बलगमी के लिये आशुफलदायक परिषेक योग--गुल बाबूना १ तोला, इक्लीलुल्मलिक १ तोला, मर्जञ्जोश १ तोला, हरे रैहाँपत्र ५ तोला, पुदीना के हरे पत्र ५ तोला, सोआ के हरे पत्र ५ तोला, गुल-बनफ्शा १ तोला, मुलेठी १ तोला और बादरंजबूया १ तोला। समस्त द्रव्यों को जल में उबालकर, इस कोष्ण काढ़े से शिरः परिषेक करें।

सरसाम मजाज़ी

नाम--(अ०) सरसाम मजाज़ी सरसाम गैर हकीकी; (उ०) झूठा सरसाम; (अं०) डेलीरियम (Delirium)।

हेतु और लक्षण—कभी ऐसा होता है कि इतर अंगों में तीव्र बलवती व्याधियाँ प्रगट होती हैं अथवा संतत (मोहरिका) एवं नियतकालिक (बारीके) ज्वर उत्पन्न होते हैं, जिनके कारण संपूर्ण शरीर अथवा विशिष्ट स्थान से बाष्प उठकर मस्तिष्क की ओर चढ़ते हैं तथा अपने दूषित गुण से प्रलाप एवं बुद्धिभ्रंश आदि जैसे सरसामी लक्षण उत्पन्न करते हैं। मस्तिष्क सर्वथा शोथरहित होता है। इसको 'सरसाम मजाज़ी' या 'गैर हकीकी' कहते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--कारण को दूर करना (निदान परिवर्जन) और जिस अंग के अनुबंध से ये उपद्रव उत्पन्न हुए हों, आवश्यकतानुसार उसकी शुद्धि एवं प्रकृति परिवर्तन करना तथा बलवर्धन एवं शीतजनन का यत्न करना जरूरी है। इस हेतु (१) उक्त अवस्था में १५ तोला अर्क नीलूफर में ३ तोला इमली भिगोकर १ तोला मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। या (२) १५ तोला अर्क गावजबान में १५ दाना आलूबोखारा भिगोकर ऊपर से निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से उपकार होता है।

या (३) १५ तोला अर्क सौंफ में ६ माशा छिले हुए काहू के बीजों का शीरा बना करके मीठे अनार का शर्वत २ तोला मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार (४) शुद्ध कपूर ३ माशा, अर्क बेदमुश्क या अर्क गुलाब में मिलाकर सूंघना गुणकारी है। (५) रोगन नीलूफर में सिरका और अर्क गुलाब मिलाकर उसमें कपड़ा भिगोकर शिर पर धारण करने से उत्तम फल होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार----(१) इस रोग में अर्क गुलाब १० तोला या अर्क गावजबान ७ तोला या अर्क बेदमुश्क ५ तोला के साथ प्रति दिन २ तोला अतरीफल कश्नीजी खिलाने से उपकार होता है। (२) पैत्तिक गैर हकीकी सरसाम में अर्क गावजबान ६ तोला के साथ १ तोला जुवारिश अनारैन खिलाने से उपकार होता है। (३) खमीरा गावजबान अंबरी १ तोला या खमीरा गावजबान सादा २ तोला अर्क गुलाब ५ तोला तथा अर्क बेदमुश्क २ तोला के साथ देने से संताप का नाश होता है तथा हृदय एवं मस्तिष्क को बल प्राप्त होता है। (४) मस्तिष्क को बल देने एवं हृदय को प्रफुल्लित करने के लिये दोषानुसार ७ तोला अर्कगावज़बान के साथ ५ माशा दवाउल्मिस्क हार्र या बारिद खिलाने से लाभ होता है।

तीसरा प्रकरण

माशिरा

नाम--(अ० या तिव्वी) माशिरा; (सं०) मुखगत विसर्प; (उ०) वरम चेहरा; (अं०) फेशियल इरिसिपेलस (Facial Erysipelas)।

हेतु--एक प्रकार का शोथ जो पित्तमिश्र रक्त से उत्पन्न होता है। इसी कारण इसमें अधिक तीक्ष्णता होती है। यह शोथ बहुधा चेहरे और मस्तक पर, परन्तु कभी शिर के बहिराभ्यंतरिक सभी भागों में उत्पन्न हो जाता है; प्रत्युत कभी इससे भी बढ़कर वक्ष (सीना) की ओर बढ़ता है।

लक्षण—पहली अवस्था में मुंह लाल हो जाता, नेत्र बाहर की ओर उभरे होते, जी मिचलाता, उकाइयाँ आतीं, तृष्णाधिक्य, बेचैनी, वेदना और संतापवृद्धि होती है। दूसरी अवस्था में रोगी को ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसके शिरकी अस्थियां फटकर भिन्न हुई जाती हैं। उपर्युक्त लक्षण तीव्ररूप में व्यक्त होते हैं।

असंसृष्टद्रव्योपचार—इसका उपचार भी रक्तज शिरःशूल एवं रक्तज सरसाम की भाँति करना चाहिए। यदि कोई बात निषेधक न हो तो सरारूसे अपेक्षाकृत कुछ अधिक प्रमाण में रक्त निकालें। तदुपरांत (१) खट्टे अनार का रस ५ तोला या (२) मीठे अनार का रस ७ तोला में ४ माशा वंशलोचन के

चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलायें। इसी प्रकार (३) ५ तोला अर्क गुलाब में १ तोला कुलफा के काले बीजों का शीरा निकालकर २ तोला सिकंजबीन सादा मिलाकर पिलाना भी गुणकारी है। इसी प्रकार (४) इमली ३ तोला या (५) आलूबोखारा १५ दाना १५ तोला अर्क गावजबान या जल में भिगोकर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर मीठे या खट्टे अनार का शर्बत २ तोला मिलाकर ३ माशा पिसे हुए वंशलोचन के चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलाना कृत प्रयोग है। तथा (६) लाल चंदन १ तोला या (७) सफेद चन्दन १तोला ७ तोला हरे धनिये के रस में घिसकर शिर तथा मस्तक पर पतला लेप करना अथवा (८) हरे कासनी का रस ६ तोला या (९) हरे कुलफा का रस ६ तोला या (१०) या हरे मकोयका रस ६ तोला या (११) अर्क गुलाब ऽ। पाव भर में शुद्ध सिरका ५ तोला और गुलरोगन १५ तोला या रोगन नीलूफर १५ तोला सब या इनमें से कुछ को मिलाकर शिर के ऊपर फाया (तूलपिचु) रखना तथा इसे शुष्क न होने देना आशुप्रभावकारी उपाय है। (१२) कपूर ३ माशा, अर्क गुलाब में घिसकर चेहरे और शिर पर मलना आशुफलप्रद है। यदि मलावरोध दूर करना तथा प्रकृति को मृदु करना अभीष्ट हो, तो फलों के रस में ४ तोला तरंजबीन मिलाकर देना भी गुणकारी है। परंतु; यह स्मरण रहे कि जब प्रकृतिमार्दवकर का उपयोग करें तो चंदनद्वय या सुपारी और अकाकिया या रसवत और गिल अरमनी आदि हरे धनिया या कुलफा या काहू और मकोय के स्वरस में पीसकर वक्ष (छाती) के ऊपर लेप कर देना चाहिए, जिसमें यहाँ पर दोष (माद्दा) न गिरे।

संसृष्टद्रव्योपचार—सम्यक् शुद्धि के उपरांत कुर्स तबाशीर मुलय्यिन ३ मा० प्रतिदिन ७ तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिकंजबीन सादा के साथ खिलाना चाहिए। यह परीक्षित है।

मुखगत विसर्पोपयोगी सिद्ध योग

(१) कपूर कैसूरी २ माशा, वंशलोचन ७ माशा, तर्बूज के बीज का मग्ज ७ माशा, कद्दू के बीज का मग्ज ७ माशा, गिल अरमनी ७ माशा, सफेद चंदन ७ माशा, सूखा धनिया ७ माशा—इनको कूट-पीसकर गोलियाँ बनायें। इसमें से प्रतिदिन २ माशा प्रथम खाकर कादू के छिले हुए बीजों का शीरा, खीरा-ककड़ी के बीजों का शीरा, छिले हुए जौ का शीरा, इसबगोल का लुआब प्रत्येक ७ माशा ताजे जल में निकाल कर सादा सिकंजबीन मिलाकर पीना परम प्रयोगकृत है।

(२) अनुभूत प्रलेप—लाल चंदन ३ माशा, गिल अरमनी ४ माशा, शियाफ मामीसा ४ माशा, रसवत मक्की ४ माशा, खड़िया मिट्टी ४ माशा, कपूर कैसूरी १माशा—इनको हरी कासनी, मकोय और काहू की पत्तियों के स्वरस में पीसकर शुद्ध सिरका मिलाकर लेप करें।

चौथा प्रकरण

सदर व दवार

नाम—सदर (अ०) सदर; (सं०) संमोह, मोह; (हिं०, उ०) आँखों के सामने अंधेरा छा जाना। (अं०) गिड्डिनेस (Giddiness)।

दवार (अ०) द (दु) वार; (सं०) भ्रम, मोह; (हिं०) चक्कर, सिर घूमना (चकराना), चक्कर आना; (उ०) दौराने सर; (अं०) वर्टिगो (Vertigo)।

हेतु और लक्षण—जब अप्रकृत वा विकृत दोष या बाष्प और वायु (रियाह) स्वयं शिर वा मस्तिष्क में उद्भूत होकर अथवा अन्यान्य अंगों से मस्तिष्क की ओर चढ़कर अप्रकृतगति करते हैं, तब ओज (रूह) भी उनके विपरीत चेष्टा करता है। इन दोनों के संवर्ष से यह रोग उत्पन्न हो जाता है अथवा श्लैष्मिक दोषों के संचय से यह रोग उत्पन्न हुआ करता है। इस रोग को उत्पन्न करने वाला दोष कभी तो मस्तिष्क और कभी आमाशय में होता है। कफज रोग में नाड़ी की मंदता, शिरोगौरव, मुख में पानी आना, तृष्णा की न्यूनता, (हवास का मुकद्दर होना) तथा अतिनिद्रा आदि लक्षण होते हैं। इसका उत्पादक दोष तो बहुधा श्लेष्मा होता है; परंतु कभी अन्यान्य दोष भी इसके उत्पादक हुआ करते हैं। प्रत्येक दोष को उनके विशिष्ट लक्षणों के द्वारा जाना जा सकता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—जनक दोषों का शोधन करने के उपरांत यदि रोग का हेतु सौदावी बाध हों तो (२) नीबू चूसना या धनिये का माज १० तोला पीसकर यथावश्यक चीनी मिलाकर प्रतिदिन खिलाना या एक सप्ताह तक प्रति दिन (३) गुलाब का शर्बत २ तोला जल में घोलकर पीना लाभकारी उपाय है। इसी प्रकार (४) सूखे धनिये के मग्ज १ तोला को एक रात-दिन सिरका में भिगोकर सूखने के उपरांत पीसकर लगभग चीनी मिलाकर तीन-चार दिन तक शुद्ध जल के साथ सेवन करने से उपकार होता है। इसके अतिरिक्त (५) ७ माशा खशखाश के बीज का शीरा या (६) ३ माशा सूखे धनिये का शीरा मीठा मिलाकर पीने से अद्भुत लाभ होता है। गर्मी के सदर व दवार रोग में (७) ६ माशा सफेद चंदन अर्क गुलाब में पीसकर पीने से उपकार होता है। किन्तु; इसके साथ (८) रेंड की पत्तियों के काढ़े से हाथ पैर धोया करें। तीन दिन तक इसका प्रयोग चालू रखने से सम्यक् लाभ होगा। मस्तिष्क दौर्बल्य के कारण हो तो (९) आँवले का मुरब्बा एक नग (१०) सेव का-मुरब्बा (फलखण्ड) १ तोला सेवन कराएँ। (११) उक्त व्याधि के समस्त भेदों में सूखे धनिये का चबाना और आहारों में पुष्कल मिलाना असीम गुण करता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) भ्रम (दवार) रोग में १ तोला खशखाश के बीजों के शीरा के साथ ३ माशा अनोशदारु लूलुई का उपयोगी अनुभवपूत भेषज है। (२) पित्तदृष्टि के कारण उत्पन्न हुए भ्रम और संमोह (सदर व दवार) रोग में ७ तोला अर्क बादियान के साथ १ तोला जुवारिश तबाशीर का उपयोग गुणकारी एवं आमाशयबलदायक (दीपन) है। (३) माजून कश्नीज या (४) माजून दबीदुलवर्द या (५) मुफर्रेह कश्नीजी प्रत्येक ७ माशा अलग-अलग २ तोला शर्बत संदल एवं ८ तोला अर्क नीलूफर के साथ सेवन करने से भ्रम एवं संमोह रोग में बड़ा लाभ होता है।

भ्रम और संमोहोपयोगी सिद्ध योग

(१) हरीरा—मीठे बादाम की गिरी ११ दाना, बिनौले की गिरी ५ माशा, सफेद पोस्ते का दाना ५ माशा, छिला हुआ धनिया ३ माशा, गेहूँ की भूसी ३ तोला। सब द्रव्यों को अर्क सौंफ में पीसकर छान लेवें और अग्नि के ऊपर रखकर पकावें तथा २ तोला मिश्री, ६ माशा मीठे बादाम का तेल और ३ तोला गोघृत मिलाकर सुखोष्ण पीवें। यह मस्तिष्क बलदायक (मेध्य) तथा भ्रम और संमोहनाशक तथा सिद्ध औषधि है।

(२) चिरज भ्रमरोगनाशिनी गुटिका—लौंग ६ दाना, सनायमक्की १ तोला, जीरा ३ माशा, छोटी इलायची के बीज ३ माशा, नरकचूर ३ माशा, जटामांसी २ माशा, चीनी २ तोला—इन सबको कूट-छानकर २ तोला शुद्ध मधु में गूँधकर छोटी-छोटी गोलियाँ बनायें। इसमें से १ तोला रात्रि में सोते समय उष्ण जल से लेवें। परीक्षित है।

(३) सिद्ध गुटिका—हलीला काबुली का छिलका ३ माशा, निशोथ ५ माशा, गारीकून १ माशा, उस्तुखुदूस ३ माशा, लाहौरी नमक १ माशा—इन सबको कूट-पीसकर कुछ वटिकायें बनाकर खिलायें और प्रति दिन उक्त प्रमाण की औषधि की गोलियों के उपयोग से मस्तिष्क दुष्टभूत दोष से शुद्ध हो जाता है।

(४) आमाशयिक भ्रमरोगोपयोगी क्वाथ योग—प्रथम जुवारिश अनारैन १ तोला खाकर ऊपर से छोटी-बड़ी इलायचीका दाना ६-६ माशा, कासनी बीज ६ माशा, सूखा धनिया ४ माशा सबको अर्कमकोयमें क्वाथ करके २ तोला शर्बत अनार या शर्बत जरिश्क मिलाकर पीने से इस रोग में लाभ होता है।

(५) आमाशयिक भ्रम-संमोहरोगोपयोगी प्रलेप योग—जटामांसी १ तोला, रूमीमस्तगी १ तोला, एलुआ २ तोला, मुरमक्की ४ तोला, गुलाबके फूल ४ तोला—सब द्रव्योंका चूर्ण बनाकर रोगन मस्तगी में पिघलाये हुये पीले मोम

में मिलाकर प्रलेप बनायें। इसमें से यथावश्यक कपड़े के एक टुकड़ेपर लगाकर आमाशय के ऊपर चिपका दिया करें।

(६) भ्रम और संमोहनाशक चूर्ण—पोस्ता के दाने १ तोला, धनिया ५ तोला, छिले हुए काहू के बीज १ तोला, तरबूज के बीज १ तोला सबको बारीक कूटकर सबके बराबर या यथावश्यक मिश्रीका चूर्ण मिलाकर प्रति दिन ६ माशा चूर्ण; ५ तोला अर्क गुलाब के साथ सेवन करायें।

अपथ्य—इस रोग में निम्न पदार्थों से परहेज करें। इस्पंद, शैलम (गंदुम दीवाना) लोबिया, तरामिरा, लहसुन, प्याज, तिलका तेल, मधु, अखरोट तथा अन्य समस्त बाष्पोत्पादक वस्तुओं से तथा इनके अतिरिक्त सिरकी ऊंचाई से नीचेकी ओर देखना और घूमनेवाले पदार्थों की ओर दृष्टि करना भी अहितकारक हैं।

पाँचवाँ प्रकरण

सुबात

नाम—(अ०) सुबात, क़ूमा; (सं०) अतिनिद्रा; तामसी निद्रा, तमोभवा निद्रा, (सु०), सन्यास (च०); (उ०) ख्वाबे गफ़लत; (अं०) कोमा (Cooma)।

हेतु और लक्षण—इस रोग में रोगी इतनी गहरी नींद में सोता है कि उसको बड़े मुश्किल से जगाया जा सकता है। सादी या दोषज शीतल विप्रकृति, शीतल एवं स्वापजनन पदार्थों का अधिक सेवन आदि इसके हेतु हैं। नाड़ी काठिन्य एवं नाड़ी का मुत्फावुत एवं वक्फादार होना, शरीर एवं चेहरे के रंग का हरिताभ दृष्टिगत होना, शिर के अग्र भाग तथा पलकों में गौरव की प्रतीति होना, प्रायशः नथुनों से प्रगाढ़ द्रव का स्राव होना और जिह्वा का पिच्छिल द्रव से आलिप्त पाया जाना आदि इसके प्रधान लक्षण हैं।

साध्यासाध्यता—यदि रोगी के नेत्र की श्यामता अकस्मात् लुप्त हो जाय, श्वास कम आये और रोगी किसी प्रकार जगाया न जा सके, तो अति शीघ्र काल कवलित हो जाता है। कभी रोगी मृगी, सन्यास, पक्षवध या अर्दित से आक्रान्त हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—दोषज वा अदोषज शीतल विप्रकृति में रोगोत्पादक दोष का शोधन करने के उपरांत प्रकृति परिवर्तन (संशमन) एवं मस्तिष्कबलवर्धन (मेधाजनक) का यत्न करें। रोगी के सिर को ऊंचा रखें।

रक्तज में सिरावेध और कफज में वस्ति करें। प्र सेक आदि हो तो उसका उपचार करें।

चिकित्साक्रम--सिर के अदोषज शीतल विप्रकृति में उष्ण औषधियों से प्रकृति परिवर्तन (संशमन) करें। आंतरिक रूप से दावउल्मिस्क ७ माशा, १० तोला अर्क सौंफ के साथ देवें। सिर के ऊपर ५ तोले सुदाब के काढ़ा का परिषेक करें। रोगन बान, कुष्ठ तैल या जुंदबेदस्तर, जंगली प्याज, मवीजज, अकरकरा प्रत्येक एक माशा १० तोला सिरका में पीसकर सिर के ऊपर लगायें। यदि स्वापजनन ओषधियों के पुष्कल उपयोग से यह रोग हो तो उनका त्याग करके उनकी विशिष्ट चिकित्सा करें।

दोषज की दशा में दोषानुसार शोधन करें। अस्तु, रक्तज में सरारू या साफिन सिरा का वेधन करें। पिंडलियों पर पछने लगवायें या खाली सींगी लगवाएँ। कनपुटियों पर जोंक लगवायें और सरसाम तथा रक्तज शिरःशूल में लिखित ओषधियों का उपयोग करें। कफज की दशा में २ तोला साबुन आध सेर जल में घोलकर इससे अथवा निम्न योग से तुरत वस्ति करें---

गोखरू सोआ, बाबूना, सनाय मक्की प्रत्येक २ तोला, सौंफ और मुलेठी प्रत्येक १० माशा मेथी, तुख्म करफस प्रत्येक ७ माशा, उशक और गुग्गुल प्रत्येक १।।। माशा, सकबीनज २ रत्ती–सबको ऽ३ पानी में डालकर पकायें। जब एक सेर रह जाय, तब छानकर इसमें बूरए अरमनी और सेंधा नमक प्रत्येक १।।। माशा घोलकर जैतून का तेल ३ तोला मिलाकर यथाविधि बस्ति करें। कर्फ्युन और जुंदबेदस्तर प्रत्येक १ माशा, रोगन कुस्त या रोगन बलसां ६ माशा में मिलाकर शिरोऽभ्यङ्ग करें। अथवा सोआ, नमाम, मर्जञ्जोश, हाशा, बिरंजासफ, सातर, अकरकरा, बच, कलौंजी, हर्मल प्रत्येक सम भाग को जल में उबालकर इससे शिर के ऊपर पिरिषेक करें, या जुंदबेदस्तर, अकरकरा, मवीजज कोही, सफेद प्याज प्रत्येक ६ माशा को यथावश्यक सिरका में पीसकर सिरे के ऊपर लेप करें। गेहूं की भूसी और सेंधा नमक को पोटली में बांधकर गरम करके इससे टकोर करें जुंदबेदस्तर, कालीमिर्च, कलौंजी प्रत्येक १ माशा को महीन पीसकर नस्य देवें।

पीने के लिये निम्न योग देवें----

क्वाथ--जो कफज सन्यास में गुणकारी है--सौंफ ७ माशा, सौंफ की जड़, करफस की जड़, उस्तुखुदूस प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, पीला अंजीर ३ दाना रात्रि में उष्ण जलमें भिगोकर प्रातः मल-छानकर २ तोला शहद मिलाकर पिलायें। यदि कुछ दिन में लाभ न हो तो इसी योग में ७ माशा सनाय मक्की मिलारकर रात्रि में भिगो देवें। प्रातःकाल मल छानकर ५ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, खांड ४ तोला, तरंजबीन ४ तोला और गुलकंद

४ तोला मिला-छानकर ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलावें। यदि १० बजे तक विरेक न आयें तो शर्बत दीनार ४ तोला; १२ तोला अर्क सौंफ में मिलाकर कुनकुना पिलायें। दूसरे दिन खमीरा गावज़बान १ तोला चाँदी के एक वर्क में लपेटकर प्रथम खिलायें और ऊपर से ५ दाना उन्नाव १२ तोला अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत वनफशा मिलाकर और ५ माशा रेहाँ के बीज का प्रक्षेप देकर पिलायें। यदि इससे भी लाभ न हो तो हब्ब इयारज आदि खिलाकर विरेचन करावें।

शोधनोपरान्त दवाउल्मिस्क आदि से प्रकृति परिवर्तन (शमन) करें।

बाष्पीय एवं सरसाम की दशा में सरसाम के अनुसार २ तोला गुलरोगन, १० तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिरका में कपड़ा भिगोकर तालू पर रखें। पाशोया करायें और शर्बत उस्तूखुदुस २ तोला या अतरीफल कश्नीजी १ तोला सेवन करें। मस्तिष्क के अन्यान्य आंगि क व्याधियों की दशा में इनकी विशिष्ट चिकित्सा करें।

अपथ्य--चना, मसूर की दाल, कद्दू, ककड़ी, पालक, कुलफा, हिनवाना, बर्फ, अफीम, भांग, मद्य आदि अहितकर हैं।

पथ्य--मुर्गी का बच्चा, तीतर, बटेर, बकरी का मांस, मूंग और अरहरकी दाल, चाय, दूध, गाजर, चुकंदर, करेला, मीठा घुइयाँ, बादाम का मग्ज, अखरोट का मग्ज, छुहारा आदि।

छठा प्रकरण

सहर-बेख्वाबी

नाम--(अ०) सहर, अरक़, बेदारख्वाबी ; (सं०) अनिद्रा, निद्रानाश, वैकारिक प्रजागरण, प्रजागरणविकार ; (उ०) बेख्वाबी, मर्ज बेदारी, नींद न आना ; (अं०) इन्सॉम्निआ (Insomnia)', विजिलन्स (Vigilance)' एग्रिप्नीआ (Agrypnoea)। इसमें रोगी को नींद नहीं आती। यदि आती भी है तो व्यग्र स्वप्न आकर नींद खुल जाती है।

हेतु और लक्षण-- अनिद्रा रोग उष्णता एवं रूक्षता से उत्पन्न हुआ करता है। यह कभी अदोषज (सादा) होता है और कभी दोषज। पित्त या सौदा की उल्वणता इसके प्रधान हेतु हैं। नेत्र, नासिका और जिह्वा का खुश्क होना, सिर एवं इन्द्रियों में लाघव, गर्मी तथा खुश्की दोनों के एकत्र होने की दशा में शिर के भीतर दाह एवं पाक की प्रतीति होना और तृष्णा प्रभृति लक्षण व्यक्त होते हैं।

पित्तज में पित्त और सौदावी में सौदा की उल्वणता के लक्षण विद्यमान होते हैं। ज्वर, वेदना, अपचन और रक्तविषमयता आदि में इनकी उपस्थिति पाईजाती है।

साध्यासाध्यता--अनिद्रा रोग यदि दीर्घकाल तक बना रहे तो इसकी चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिये। कारण कभी-कभी लगातार जागते रहने से उन्माद, मालीखोलिया, हृत्स्फुरण, शुष्क कास और अन्यान्य घातक रोग उत्पन्न होने की आशंका होती है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--सर्व प्रथम रोग के मूलभूत कारण को मालूम करके दूर करें। इस रोग में परिषेक, नस्य, तैलाभ्यङ्ग और स्नान आदि से मस्तिष्क का स्नेहन करना इसके प्रायः भेदों में लाभ कारक है। किन्तु ज्वरावस्था या उष्णवाष्पजनित अनिद्रा में शिर के ऊपर तेल का अभ्यङ्ग नहीं करना चाहिये। प्रत्युत पाशोया और हाथ-पैर का संवाहन उक्त अवस्था में लाभकारी है। अदोषज (सादा) रूक्ष विप्रकृति या यदि दोषज हो तो रोगजनक दोष का यथाविधि-शोधन करके शमन (प्रकृति परिवर्तन) करें। अस्तु, कद्दू या कुलफा का साग अथवा काहू के पत्र पकाकर खाने से खूब नींद आती है। सफेद चंदन, सूखा धनिया और काहूके बीज प्रत्येक ६ माशा, ५ तोला अर्क गुलाबमें पीसकर १ तो० गुलगोरन मिलाकर इसमें कपड़ा तर करके शिर के ऊपर रखें। मस्तिष्क की रूक्षता दूर करने के लिये शिर के बाल मुंड़वाकर उसके ऊपर बकरी का दूध दुहवाना बहुत गुणकारी है। रोगन लबूब सबआ और काहूका तेल दोनों बराबर-बाराबर मिलाकर शिरोऽभ्यङ्ग करना और जिमाद ख्वाब आवर (निद्राकर लेप) या अलुमुनव्विम का मस्तक पर लेप करना भी गुणकारी है। ५ दाने मीठे बादाम का मग्ज, कद्दू के बीजकी गिरी, हिनवानाके बीजकी गिरी, छिले हुये काहूके बीज और निशास्ता प्रत्येक ३ माशा, मिश्री २ तोला, पावभर बकरी के दूध में पीसकर हरीरा बनाकर पिलाने से भी लाभ होता है। किसी सौदावी रोग के कारण अनिद्रा होने पर उस रोगकी चिकित्सा की ओर ध्यान देवें। सौदा की उल्वणता नष्ट करने के लिये बकरी का दूध ७ तोला शर्बत उन्नाब २ तोला मिलाकर प्रातः पी लिया करें। तीन दिन तक इतना ही पीकर दूध १ तोला और शर्बत १–१ माशा प्रति दिन बढ़ाते रहें। जब दूध की मात्रा ४१ तोला और शर्बत मात्रा ४ तोला तक पहुंच जाय, तब फिर उसीप्रकार १–१ तोला दूध और थोड़ा थोड़ा शर्बत घटाकर प्रथम मात्रा तक पहुंचायें और तीनदिनतक सेवन करके त्याग देवें। इस क्रम के संपूर्ण पालन से रोग अवश्य चला जाता है। दूसरे समय अपराह्न में खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा खाकर अर्कशीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला और शर्बत उन्नाब ४ तोला मिला

पी लिया करें। रोग आराम होने के पश्चात् मस्तिष्क को बल प्रदान करनेके लिये खमीरा गावज़बान जवाहर वाला ५ माशा रात्रि में सोते समय खा लिया करें। बकरी का दूध या बादाम का तेल पिंडलियों और पैरके तलुओंपर मर्दन करने से भी नींद आती है। तुलसी के ताजे पत्र सूँघने और सोये के पत्र सिरहाने रखने से भी इस रोगमें उपकार होता है। कब्ज के कारण हो तो कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि में सोते समय पाव भर दूध के साथ देवें। पाचनविकार हो तो उसका उचित उपाय करें: अनिद्रान्तक उपयोगी प्रलेप योग—(१) पोस्ता के दाने और विजयाबीज प्रत्येक १ तोला को ऽ। गोदुग्ध में पकायें। शीतल होने पर पैर के तलुओं पर मलें। (२) भांग के पत्र २ तोला यथावश्यक बकरी के दूध में पीसकर पैर के तलुवों पर मेंहदी की भांति लेप लगाना भी गुणकारी है। (३) खुरासानी अजवायन के बीज, पोस्ता के दाने, काहू के बीज, व कद्दू के बीज की गिरी प्रत्येक ३ माशा, तीन तोला गुलरोगन में पीसकर शिर के ऊपर लेप करें।

अनिद्राहर परिषेक—गुल बनफशा, गुल नीलूफर, खतमी के बीज खुब्बाजीके बीज, पोस्ते की डोडी, छिले हुये जौ प्रत्येक १ तोला, कद्दू और धनिये के पत्र २-२ तोला—सबको जल में पकाकर इससे शिर के ऊपर परिषेक करें।

पथ्य—लघु एवं शीघ्रपाकी खिचड़ी, शूरबा, यखनी, दूध, साबूदाना, हरीरा यवमंड, हरे शाक—कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई आदि का उपयोग करें। अनार अंगूर, सेव, अमरूद आदि भी लाभदायक होते हैं।

अपथ्य—उष्ण पदार्थ, जैसे—लाल मिर्च, बैंगन, सिरका आदि से परहेज करें। मछली, आलू, गोभी आदि बादी पदार्थ भी सेवन न करें। अति अध्ययन, धूप में चलने-फिरने और अधिक चिन्ता एवं ध्यान के कार्यों से परहेज करें। अति मैथुन से भी बचें।

सातवां प्रकरण

जुमूद व शुखुस

नाम (अ०) जुमूद, आखिज़:, मुद्रिक: ; (सं०) स्तब्धता, स्तंभता (उ०) हवास बाख्तगी, बेखुदी ; (अं०) एक्सटेसी (Ecstacy)।— (अ०) शुखूस, कातूखूस ; (सं०) नेत्रस्तब्धता ; (उ०) हक्का बक्का और बेखबर हो जाना ; (अं०) कॅटालेप्सी (Cootalapsy)।

परिचय—इस रोगमें रोगीकी संवेदना और चेष्टा शक्ति सहसा नष्ट हो

जाती है तथा वह जिस दशा में रहता है, स्तंभित होकर उसी दशा में रह जाता है अर्थात् यदि खड़ा हो तो खड़ा और बैठा हो तो बैठा ही रह जाता है।

सापेक्ष निदान--जुमूद और सुबात का अंतर--सुबात (अतिनिद्रा) रोग में रोगी के नेत्र ढंके रहते हैं तथा रोगी धीरे-धीरे अचेत होता है। परंतु जुमूद में रोगीके नेत्र साधारणतः खुले रहते हैं और वह सहसा स्तंभित होकर निश्चेष्ट एवं निःसंज्ञ हो जाता है।

जुमूद और सकता का अंतर--सक्ता (सन्यास) रोगी मृतकवत् चित्त पड़ा रहता है, परंतु उसके कंठसे कोई वस्तु नीचे उतर सकती है। इसके विपरीत जुमूद रोगी जिस दशा में हो उसी दशा में स्तब्ध हो जाता है तथा उसके कंठ से कोई वस्तु नीचे नहीं उतर सकती।

हेतु--इस रोग का कारण मस्तिष्क के पश्चात्कोष्ठ (बल सुवख्खर) में सांद्र सौदावी दोष की उल्वणता हुआ करती है जो शीतल एवं कच्चे फलोंके खानेसे तथा वर्फके पानीसे स्नान करने या उसके पीने या अवगाह-स्नान करने उत्पन्न हो जाता है। अर्थात् सौदात्मक या श्लैष्मिक दोष के कारण पश्चान्मस्तिष्क से अवरोध (सुद्दा) उत्पन्न हो जाता है जो रूह नफ्सानी को अंग प्रत्यंग की ओर जाने से रोकता है जिससे रोगी पर आत्मविस्मृति की-सी दशा व्याप्त हो जाती है। इसका प्रारंभ प्रायः शिर वा पृष्ठ पर आघात लगने, मादक द्रव्यों के पुष्कल उपयोग करने तथा तीव्र मानसिक आघात से हुआ करता है।

लक्षण--रोगी एक ही दशा में पड़ा रहता है। नेत्र यदि खुले हों तो खुले ही रहते हैं और यदि बन्द हों तो बन्द ही रहते हैं। दायें-बायें किसी प्रकार की चेष्टा नहीं कर सकता न तो बोल-चाल सकता है और न कुछ खा-पी सकता है।

साध्यासाध्यता--इस रोग का परिणाम क्वचित् ही सांघातिक होता है परन्तु कभी-कभी यह रोग मृगी में परिवर्तित हो जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रक्तज में सरारू सिरा का वेध करायें और पिंडलियों पर पछने लगवायें। गुदवर्तिके द्वारा कब्ज दूर करना लाभकारी है। कफ और सौदाजन्य रोगमें प्रथम शोधनार्थ वस्ति एवं गुद वर्त्तिका उपयोग समीचीन है। कुछ चैतन्य होने के उपरांत शमन (प्रकृति परिवर्तन) का यत्न करना चाहिये। अस्तु, (१) चाय या कहवा, (२) अफ्तीमून ९ माशा या (३) उस्तूखुदूस १ तोला घूंट-घुंट करके पिलाना लाभकारी है। (४) जुंदबेदस्तर ६ माशा ५ तोला रोगन सुदाब में मिलाकर सिर पर मलना, (५) फर्फ्यून ९ माशा को ५ तोला रोगन मर्जञ्जोश या ५ तोला रोगन चमेलीमें पीसकर सिरके ऊपर मलना भी गुणकारी है। (६) सोंठ ३ माशा या (७) कालीमिर्च ३ माशा

या (८) नकछिकनी या (९) केसर २ माशा कालीमिर्च के साथ पीसकर नस्य करना भी लाभदायक है

संसृष्ट द्रव्योपचार––(१) हब्ब इयारज १ माशा, अफ्तीमून के काढ़े के साथ देनेसे मस्तिष्ककी शुद्धि होती है। दोषशमनार्थ (२) खमीरा गावज़बान (३) खमीरा अबरेशम ६ माशा या (४) दवाउल्मिस्क हार्र ५ माशा या (५) मुफर्रेह कबीर ६ माशा या (६) मुफर्रेह मोतदिल ७ माशा अर्क गावज़बान या अर्क सौंफ १० तोला के साथ खिलाना पर्याप्त है।

पथ्य––लघु, शीघ्रपाकी आहार, जैसे पक्षियों का शूरवा आदि देवें। माउल् अस्ल, चने का यूष, चपाती, कलिया, चकोर और कबूतर का शूरबा, अरहर की पतली दाल गरम मसाला डालकर चपाती के साथ देवें।

अपथ्य––कद्दू, हिनवाना, खीरा-ककड़ी, तुरई, चावल, मसूर की दाल खट्टी और अधिक मीठी वस्तुयें, भंटा और गोमांस आदि से परहेज करें।

आठवां प्रकरण

निस्याँ––विस्मृति

नाम—(अ०) निस्याँ (धात्वर्थ भूल), फ़न्नदुज्ज़ाकिरः; (सं०) विस्मृति, विस्मरण; (उ०) फरामोशी, भूल; (अं०) ऐम्नेसिया (Amnesia) ऐम्नेस्टिया (Amnestia)।

परिचय––इस रोग में रोगी कोई नवीन बात याद नहीं रख सकता या जो बातें उसको पहले से स्मरण होती हैं, उनको भूल जाता है। अथवा पुनः समय पर संपूर्ण स्मरण करके क्रमवद्ध नहीं कर सकता अथवा उनसे यथावत् निष्कर्ष नहीं निकाल सकता।

हेतु––पश्चान्मस्तिष्कगत सर्दी एवं तरी या सर्दी एवं खुश्की अथवा मस्तिष्क के मध्य भाग में सर्दी एवं तरीकी उल्वणता या मस्तिष्क के अग्र भाग की पैत्तिक या अदोषज उष्ण विप्रकृति इस रोग के मूल हेतु हैं। कभी-कभी अभिघात, किसी विषय में अत्यधिक चिन्तना एवं तल्लीनता, सदा बना रहने वाला प्रसेक एवं प्रतिश्याय मस्तिष्क दौर्बल्य और मस्तिष्क के आवयविक विकार, जैसे––शोथ, लीसर्गुस आदि और एक विशेष प्रकार की रक्त विषमयता जो अस्वच्छ दुर्गंधित वायु में दीर्घ काल तक रहने से होती है। इत्यादि इसके हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण—रोगी किसी बात को स्मरण नहीं रख सकता। जो बातें उसको स्मरण होती हैं, वह भी भूल जाती हैं। अस्तु, श्रवण की हुई बातें और

देखे हुए स्वरूप समय पड़ने पर स्मृति पट पर नहीं आते। स्वप्न देखता है, पर सुबह तक भूल जाता है, सर्दी और तरीकी प्रगल्भता की दशा में रोगी का अधिक सोना, सिरके पश्चाद्भाग में गौरव एवं बोझ अनुभव करना, नासिकासे पुष्कल स्राव होना और बातों का बहुत थोड़ी देर स्मरण रहने के पश्चात्। सर्वथा या न्यूनाधिक भूल जाना इसके लक्षण हैं। सर्दी और खुश्की के प्रकोप की दशा में निद्राल्पता, कण्ठ और नासिकशोथ, कृच्छ्वाकता, कब्ज, कभी सिरका पीछे की ओर खिंचना और कण्ठावरोध आदि लक्षण पाये जाते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—प्रथम रोग के कारण भूत दोष का शोधन करें। तत्पश्चात् दोषशमन का यत्न करें। अस्तु, यदि सर्दी और तरी विस्मृति की कारण भूत हो तो (१) ८ माशा काबुली हड़का चूर्ण शहद में मिलाकर सेवन करें। (२) युवा दुम्बाका मांस पकाकर खायें। (३) गो घृत स्मरण शक्ति वर्धक है। यदि सर्दी और खुश्की विस्मृति का कारण भूत हो तो निदान परिवर्जनोपरांत (४) पुराने जैतून के तेल का सिरके पिछले भाग के ऊपर अभ्यङ्ग करें, विशेष कर (५) पपड़ी नमक के साथ असीम गुणकारी है। इसी प्रकार (६) रोगन पिश्ता में किंचित् (७) कस्तूरी मिलाकर या (८) रोग बाबूना का नस्य करना भी लाभ कारक है। (९) रोगन बादाम में गद्दियाँ तर करके सिरके पश्चाद्भाग के ऊपर रखना सर्वोत्तम उपाय है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) हब्ब जुंद बेदस्तर १ माशा; ७ तोला अर्क गावजबान के साथ या (३) सफूफ हिफ्ज १ तोला या (४) माजून बलादुर ३ माशा या (५) माजून फलासफा ५ माशा (६) माजून हिफ्ज १ तोला या (७) माजून वज ७ माशा,अर्क उस्तुखुदूस या अर्क मुंडी ७ तोला के साथ खिलाने से सर्दी एवं तरीजन्य विस्मृति रोग आराम होते हैं। सर्दी एवं खुश्कीजन्य विस्मृति रोग में निम्न योग गुणकारक हैं—(८) मुरब्बा जंजीबील २ तोला, मुरब्बा हलीला १ नग या (९) माजून लबूब १ तोलाँ या (१०) माजून हाफिजुल्अक्ल १ तोला ७ दाने मीठे बदाम के मग्ज के शीरा या २ तोला मीठे कद्दू के बीज की गिरीके शीरा के साथ खिलावें।

पथ्य—बकरी का मांस, चपाती, मुर्गी के बच्चे का शूरवा, दूध खसका, घी में भुना हुआ बकरी का भेजा, कुलफा, पालक, कद्दू, अखरोट, बादाम, चिलगोजा, मुनक्का आदि।

अपथ्य—शीतल जल का स्नान, शीतल वायु, धनिया, प्याज का अतिसेवन, अति स्त्रीसहवास, दिवास्वप्न आदि।

—:०:—

नौवां प्रकरण

मालीखोलिया और जुनून

नाम--मालीखोलिया (अ०) मालीखोलिया, मालिनख़ोलिया ; (उ०) मालीखोलिया, वहम, वसवास ; (अं०) मेलन्कोलिया (Melancholia)।

जुनून (अ०) जुनून ; (फा०) दीवानगी ; (उ०, हिं०) पागलपन ; (सं०) उन्माद ; (अं०) इन्सेनिटी (Insanity)।

वक्तव्य--मालीखोलिया जो शुद्ध मालिनख़ोलिया (मेलिन्खोलिया) है एक यूनानी भाषा का यौगिक शब्द (मालिन् या मेलन=श्याम=खोलिया या कोलिया=पित्त=कृष्ण पित्त) है। यह सौदा या विदग्ध पित्त से उत्पन्न होता है, अतएव उक्त संज्ञा से अभिहित किया गया है। मालीखोलिया का ही एक परिवर्द्धित स्वरूप जुनून है। अस्तु, प्राचीन यूनानी हकीमों ने जुनून को मालीखोलिया के ही विविध प्रकार माने हैं। मालीखोलिया का रोगी प्रायः शांत रहता है और जुनून का उद्दंड एवं उत्तेजित। इस रोग का रोगी मानवता की श्रेष्ठता को खोकर पशु बन जाता है। वह इहलोक और परलोक दोनों के काम का नहीं रहता। बुद्धि और विवेक से शून्य हो जाता है। प्रारंभ में यह चिकित्स्य होता है, किन्तु पुराना होने पर दुश्चिकित्स्य एवं असाध्य हो जाता है।

हेतु-- प्रकृति में सौदा की प्रगल्भता और उसकी ओर से बेपरवाही, अधिक चिंता, अर्श और आर्तव शोणित का अवरोध, अति मैथुन, शारीरिक श्रम की अधिकता ; उष्ण स्थान में दीर्घ काल पर्यन्त रहना, लवण, क्षार और तीक्ष्ण पदार्थों का सेवन, अम्ल पदार्थ का पुष्कल सेवन, संकीर्ण व अँधेरी जगह में निवास करना, काले पोशाक एवं कृष्ण पदार्थों को दृष्टि के सामने रखना और किसी दोष का विदग्ध होकर सौदा में परिणत हो जाना, इस रोग के उत्पादक कारण हैं।

लक्षण---रोगी की चिंता भय और दुष्टता में परिवर्तित हो जाती है अर्थात् वह वहमी हो जाता है। चेहरे पर पिलाई या कलाई अभिभूत हो जाती है। नेत्र मलिन और प्रभाहीन और त्वचा रूक्ष हो जाती है। रोगी व्याकुल और व्यग्र रहता और प्रत्येक वस्तु से भय खाता है। यकृत् और आमाशय के स्थान पर बोझ की शिकायत करता है। कब्ज हो जाता है। यदि रक्त में दाह होने के कारण उत्पन्न हुआ हो, तो रोगी विरागपूर्वक हँसमुख एवं प्रसन्न रहता है। पित्त में दाह (एहराक) होने से हुआ हो, तो सदा अशिष्ट, भयङ्कर, विवेकशून्य, आकुल और व्यग्र रहता है और अधिक बक-झक करता है। ऐसे रोगी को नींद कम आती है। यदि कफ के दाह के कारण उत्पन्न हुआ हो, तो रोगी सदैव

शिथिल, मन्द और आलस्ययुक्त होता तथा एक स्थान में बैठा रहना पसन्द करता है। यदि सौदा के दाह कारण उत्पन्न हुआ हो तो रोगी सदैव भयभीत रहता और डरता है तथा वह सदैव दुष्ट चिंतनाओं से अभिभूत रहता है। कभी-कभी रुदन करता और अनुनय-विनय करता (गिड़गिड़ाता) है।

जुनून मालीखोलिया का ही परिवर्द्धित स्वरूप होता हैं। इसलिये कि माली-खोलिया खिल्त (दोष) या प्रकृत सौदा के विदग्ध होने से और जुनून अप्रकृत सौदा के विदग्ध होने से उत्पन्न होता हैं। अस्तु, जुनून की चिकित्सा भी हेत्वनुसार मालीखोलिया के समान करनी चाहिये। परन्तु जुनून में मस्तिष्क की तरावट और शीतलता का ध्यान रखना चाहिये। चिकित्सा में सर्वप्रथम रोगी को नींद लाने का यत्न करें, अस्तु।

उपचार--रोगी को प्रवात एवं प्रकाशयुक्त खुले स्थान में रखें। खुशबू सुँघायें। प्रतिदिन भोजन से पूर्व स्नान करायें और हर सम्भव उपाय द्वारा उसको निश्चिन्त एवं प्रसन्न रखें। रोग के मूल कारण का पता लगाकर उसे दूर करने का यत्न करें। मस्तिष्क के स्नेह और अनिद्रा निवारण के लिये कद्दू और काहू का तेल बराबर-बराबर मिलाकर अथवा रोगन लबूब सबआ का शिरोऽभ्यङ्ग करें।

अत्यन्त आवश्यकता होने पर यदि रोगी बलवान् हो तथा पन्द्रह वर्ष से अधिक और पचास वर्ष से कम आयु का हो, तो रक्तज मालीखोलिया में बासलीक या हफ्त अंदाम सिरावेध के द्वारा यथाप्रमाण रक्तमोक्षण करें। अर्शोजात रक्त के अवरुद्ध हो जाने की दशा में भी सिरावेध लाभकारी है। यदि इसका कारण आर्तव शोणित का अवरोध हो, तो साफिन सिरा का वेधन लाभकारी होता है। सिरा-वेधनोत्तर तीन दिन निम्न तबरीद का योग देवें--(१) खमीरा गावजबान १ तोला चाँदी के एक वर्क में लपेट कर खिलायें और ऊपर से उन्नाव ५ दाना, १२ तोला अर्क गावजवान में पीसकर और शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला-कर तथा ७ माशा समूचे रेहाँ के बीजों के प्रक्षेप देकर पिलायें। तदुपरान्त कुछ दिन तक प्रातःकाल निम्न योग पिला दिया करें--(२) मुफर्रेह बारिद ५ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क कासनी में ३ माशा जरिश्क और ५ दाना आलूबोखारे का शीरा निकाल-छानकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलायें और सायंकाल आमले का एक मुरब्बा पानी से धोकर चाँदी का वर्क लपेटकर आलूबोखारा ५ दाना, सूखा धनिया ३ माशा, कुलफा के बीज ३ माशा पानी में पीस-छानकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें।

रोगनिवृत्ति न हो, तो यह मुन्जिश का योग ७-८ दिन पिलाकर विरेचन देवें--(४) अफ्तीमून विलायती ५ माशा, बसफाइज फुस्तुकी ५ माशा, वर्ग

गावजबान ५ माशा, गुल गावजबान ५ माशा, कैंची से कतरा हुआ आबरेशम ५ माशा, गुल बनफ्शा ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, पित्तपापड़ा ७ माशा, कासनी के बीज ७ माशा, गुल नीलूफर ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, आलूबोखारा ५ दाना, उस्तूखुदूस ५ माशा, बिल्लीलोटन ५ माशा, इन्हें रात्रि को गरम पानी में भिगो देवें। प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला गुलकन्द मिलाकर पिलायें। आठ दिन के बाद इसी योग में बर्ग सनाय मक्की ७ माशा, इमली ४ तोला मिलाकर रात्रि में भिगो देवें। प्रातः-काल यवासशर्करा ४ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, ५ दाना बादाम के मग्ज का शिरा मिलाकर देवें। एक-एक दिन के अन्तर से इसी प्रकार तीन विरेचन देवें और बीच के दिन सिरावेधोत्तर देने को लिखा हुआ तबरीद (शीतजनन) का योग देवें। यदि पित्तगत दाह के कारण हुआ हो, तो सिरावेध अनपेक्षित है। केवल उस्तूखूदूस और बादरंजबूया को छोड़कर शेष भिगोने के उपरिलिखित द्रव्य प्रातःकाल उपयोग करायें (बकरी के दूध का शिरो-ऽभ्यङ्ग करायें) और उपर्युक्त मुफर्रेह बारिदवाला या आमला मुरब्बावाला योग में से किसी एक को सायंकाल पिलायें। दोष शोधन की आवश्यकता हो, तो यही मुञ्जिज का योग सात-आठ दिन पिलाकर उसी में उपरिलिखित विरेचन ओषधियाँ मिलाकर आवश्यकतानुसार दो-तीन विरेचन देवें। संशोधनोपरान्त बलवर्धन के लिए खमीरा संदल तुर्श ७ माशा या खमीरा संदल सादा ७ माशा या खमीरा गावज़बान जवाहरवाला ५ माशा या मुफर्रेह बारिद ८ माशा या खमीरा मरवारीद ५ माशा या दवाउल्मिस्क बारिद जवाहरवाली ७ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा में से ही कोई एक ओषधि ४ रत्ती लाजवर्द मग्सूल मिलाकर खिलायें। यदि आवश्यकता पड़े, तो बकरी का दूध ७ तोला से आरम्भ कराकर एक तोला प्रतिदिन बढ़ाते जायें। जब ४१ तोला तक पहुँच जाय, तो इसी प्रकार एक-एक तोला दूध प्रतिदिन घटाकर प्रथम मात्रा पर आ जायें। फिर इसका भी परित्याग करा देवें। मिठास के लिए इस में २ तोला शर्बत उन्नाव आरम्भ से मिलाकर धीरे-धीरे बढ़ाकर ४ तोला तक सम्मिलित करें।

यदि एहतराक कफ के कारण हो तो निम्न योग देवें—कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, पित्तपापड़ा ७ माशा, चिरायता ७ माशा, करपस की जड़ ७ माशा, इजखिर की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा, हंसराज ५ माशा, उस्तूखुदूस ५ माशा, छिली हुई मुलेठी ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, अंजीर जर्द ३ दाना, गुलाब के फूल ५ माशा—सबको रात्रि में जल में भिगोकर प्रातःकाल उबाल-छानकर ४ तोला गुलकन्द मिलाकर साफ करके पिलायें। १५ दिन तक इसे पिलाकर इसी योग में सनाय मक्की ७ माशा

मिलाकर रात्रि में भिगोयें। प्रातःकाल मल-छानकर इसमें अमलतास का गूदा ५ तोला, खमीरा बनफशा ४ तोला, शकर सुर्ख ४ तोला, यवास शर्करा ४ तोला और ५ दाना मीठे बादाम के मग्ज का शीरा निकालकर पिलायें। दूसरे दिन तबरीद का नुसखा देवें। बाद में मुंजिज का नुस्खा ४-५ दिन पिलाकर दो विरेचन हब्ब इयारज के साथ बिना अमलतास के गूदा और मीठे बादाम के शीरा के देवें।

यदि केवल सौदा की उल्वणता ही इस रोग का कारण हो, तो ७ माशा पित्त-पापड़ा, ७ माशा चिरायता, ७ माशा मुंडी, ७ माशा सरफोका, ७ माशा काली हड़, उन्नाब ५ दाना, लाल चंदन ७ माशा या उशबा मगरबी ७ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगो देवें। प्रातःकाल छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें। २१ दिन तक लगातार यह योग सेवन कराके अर्क मत्बूख हफ्तरोजा ८ तोला सप्ताह पर्यन्त देवें। एक बोतल में यह अर्क ७ मात्रा होता है। एक मात्रा प्रतिदिन प्रातःकाल देना चाहिए। सम्यक् शुद्धि के पश्चात् हृदय को उल्लसित और मस्तिष्क को बल देने के लिये खमीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला ५ माशा या मुफर्रेह शैखुर्रईस ५ माशा या मुफर्रेह सूसंबरी या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला में ४ रत्ती लाजवर्द मग्सूल और ४ चावल भर पिसी हुई मोती मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

इसके प्रत्येक भेद में माउज्जुब्न लाभकारी होता है। अस्तु, इसका उपयोग चैती (फसल रबीअ) में कराया जाय, तो अत्युत्तम हो। वरन् आवश्यकता होने पर प्रत्येक ऋतु में विहित है।

माउज्जुब्न-कल्पना और सेवन की विधि——इसके लिये एकरंग लाल युवती बकरी सर्वोत्तम है। वरन् एकरंग श्याम, स्वस्थ निर्दोष, जो दो बच्चों से अधिक न जनी हो और चालीस दिन से कम और तीन-चार महीने से अधिक का बच्चा न रखती हो, लेवें। कुछ दिन पूर्व से ही इसको हरा मकोय या हरा पित्तपापड़ा या हरा धनिया या हरा सौंफ या हरी कासनी या हरा कुलफा आदि में से या शीतल शाकों में से जिसके हरे पत्र समय पर उपलब्ध हो सकें, उसको खिलाना प्रारम्भ करें। माउज्जुब्न के सेवनकाल में भी बकरी को इसी प्रकार के पत्ते खिलाते रहें। पुनः ताजा दूध दुहकर कलईदार देगची में डालकर मंद और हलकी अग्नि पर दो-तीन जोश देवें, पूरा जोश आते समय अंगूरी सिरका या कागजी नीबू या सिकंजबीन १-१ तोला डालें और अंजीर की ताजी लकड़ी लेकर उसके सिरे पर से चार टुकड़े करके इससे दूध को चलाते रहें। जब दूध फट जाय, तब चूल्हे पर से उतारकर तीन तह की हुई साफी से छान लेवें। अब वह वस्त्रपूत माउज्जुब्न ७ तोला, दो तोला शर्बत उन्नाब या शर्बत नीलूफर मिलाकर तीन दिन तक पिलायें। तदुपरान्त १-१ तोला माउज्जुब्न और थोड़ा

शर्बत प्रतिदिन बढ़ाते जायँ। जब माउज्जुब्न की मात्रा ४ तोला और थोड़ा उन्नाव या शर्बत नीलूफर की मात्रा ४ तोला तक पहुँच जाय, तब इसी प्रकार १-१ तोला माउज्जुब्न और थोड़ा-थोड़ा शर्बत प्रतिदिन कम करके प्रथम मात्रा पर पहुँच जायँ। फिर तीन दिन उक्त मात्रा अर्थात् ७-७ तोला सेवन करके इसका सेवन त्याग देवें। या अर्क शीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला, शर्बत उन्नाब ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलायें। कब्ज निवारण के लिये माजून उश्वा १ तोला रात्रि में सोते समय कुनकुना दूध के साथ खिलायें।

अफ्तीमून विलायती १ तोला कपड़े में पोटली बाँधकर पावभर गोदुग्ध में पकाकर २ तोला मिश्री मिलाकर कुछ दिन प्रातः काल पिलाने से भी बहुत उपकार होता है। उत्तेजना को शान्त और तृष्णा को बन्द करने के लिये शर्बत गुडहल ४ तोला, शर्बत अजीब ४ तोला, शराबुस्सालहीन ४ तोला, शर्बत रंगतरा ४ तोला, सिकंजबीन लीमूँ ४ तोला, शर्बत अनार ४ तोला, शर्बत संदल ४ तोला, प्रभृति में से कोई, शर्बत गावजबान ६ तोला, अर्क बेदमुश्क २ तोला और अर्क केवड़ा में मिलाकर पिलाना चाहिये।

मालीखोलिया और जुनून के लिये लाभकारी चूर्ण योग--सफेद चंदन ६ माशा, सूखा धनिया २ तोला, स्याह कुलफा के बीज ६ माशा, पिसी हुई जहर-मोहरा खताई ६ माशा, वंशलोचन ६ माशा, गावजबान ६ माशा, सबके बराबर मिश्री इनको कूट-छानकर चूर्ण बनावें। इसमें से १ तोला चूर्ण प्रातःकाल अर्क गावजबान के साथ फाँक लिया करें।

अपथ्य--स्त्रीसहवास से सर्वथा परहेज करें। वाष्पोत्पादक वस्तुयें लहसुन, प्याज, मसूर की दाल, बैंगन, बाकला, मटर, आदि न देवें और बादी एवं गुरु तथा विष्टम्भकारक पदार्थ ; जैसे--आलू, अरबी, गोभी आदि से परहेज करें। श्रम, आयास, संकीर्ण और अंधेरे स्थान में रहने तथा काले वस्त्र पहनने से परहेज करें। अधिक चाय पीने और नमकीन तथा खारी वस्तुओं के अति सेवन से बचें।

पथ्य--विरेचन के दिन तीसरे पहर केवल मूँग की नरम खिचड़ी देना चाहिए। इसके अतिरिक्त अन्य दिन हलके और शीघ्रपाकी आहार ; जैसे--बकरी का शोरवा चपाती के साथ देवें या खसका, खीर, मुर्गी के बच्चे का शोरवा पोलाव हरे शाक, कुलफा, कद्दू, पालक, तुरई, मूँग या अरहर की दाल आदि दे सकते हैं, या फलों में सेव, अंगूर, अनार, बादाम, शहतूत आदि देवें।

---:o:---

दसवां प्रकरण

काबूस

नाम--(अ०) काबूस, जागूत ; (हिं०) स्वप्न में डरना ; भयानक स्वप्न ; (सं०) कुस्वप्न ; (अं०) नाइटमेयर (Nightmare), इन्क्युबस (Incubus)।

यह एक स्वप्न की अवस्था है, जिसमें रोगी को भयानक और डरावने स्वरूप दृग्गोचर होते हैं और ऐसा मालूम होता है कि किसी ने ऊपर से गिरा दिया या कोई सीने पर चढ़ बैठा है। इस दशा में उसका साँस घुटकर रुक जाता है और न वह बोल सकता और न चेष्टा कर सकता है। इत्यादि।

हेतु--इस रोग का प्रधानतम कारण मस्तिष्क का दुर्बल होना है और उक्त अवस्था में सांद्र दोष (कफ, सौदा या रक्त) के वाष्प आमाशय की ओर से उठकर मस्तिष्क की ओर चढ़ते और उस पर दबाव डालते हैं। कभी वाह्य शीत, अत्यधिक चिंता और व्यग्रता, शारीरिक या मानसिक परिश्रम भी दुर्बल मन (वा मस्तिष्क) के पुरुषों में यह रोग उत्पन्न कर देते हैं।

लक्षण--रोगी नींद की दशा में आधी रात्रि वा अंतिम रात्रि के समय अत्यन्त भयानक स्वप्न देखता है और इस दशा में कठिनाई से साँस लेता है। न बोल सकता है न हिल सकता है और उसे ऐसा अनुभव होता है, मानो किसी भारी चीज ने सीना को दबा लिया है। रक्त की प्रगल्भता होने पर संपूर्ण शरीर या चेहरा जिह्वा और नेत्र लाल होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक दोष को उसके विशिष्ट लक्षण से पहचान सकते हैं।

उपचार--पाचन का सुधार करें। यदि कब्ज हो, तो कुर्स मुलय्यिन ५ अदद या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि में सोते समय खिला दिया करें और प्रातःकाल यह नुसखा पिलायें--जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज तीन माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, १२ तोला अर्क सौंफ में पीसकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर यदि उदर कठोर हो, तो ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर कुछ दिन पिलायें। भोजनोत्तर नमक सुलेमानी १ माशा या हब्ब पपीता ३ गोली या जुवारिश जालीनूस ७ माशा, कुर्स खुब्सुल्हदीद २ टिकिया मिलाकर खिला दिया करें।

रक्तज में यदि उचित हो, तो कीफाल, अकहल, सरारू, या हफ्त अंदाम सिरा का वेधन करायें और पिंडलियों पर सींगी और पछने लगायें। आहार कम देवें और मत्बूखफवा के या हलीला का विरेचन देवें या यह योग देवें--उन्नाव ५ दाना, गुल बनफ्शा ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, सनायमक्की ७

माशा, रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल काढ़ा बना, छानकर उसमें अमलतास का गूदा ३।। तोला, गुलकन्द २ तोला घोलकर, ६ माशा बादाम का तेल मिलाकर पिला देवें। तत्पश्चात् उन्नाव के शीरा और अर्क शाहतरा से तबरीद करें, सिर के ऊपर गुलरोगन और सिरका लगायें।

कफज में मुंजिज बलगम और सौदावी में मुंजिज सौदा कुछ दिन पिलाकर यथाविधि दो-तीन विरेचन देकर मस्तिष्क और आमाशय का शोधन करें। उदर कृमिजन्य में एक माशा कमीला २ तोला गुलकन्द में मिलाकर कुछ दिन खिलायें या ७ माशा अतरीफल दीदान खिलायें। यदि वातनाड़ियों के किसी कष्ट के कारण हो, तो नींद लाने के लिये रोगन लबूब सबआ या रोगन बनफ्शा का शिरोऽभ्यङ्ग करें। उस्तूखुद्दूस २ तोला और मिश्री २ तोला कूट-छान कर चूर्ण बनाकर ६ माशा प्रतिदिन रात्रि में सोते समय ताजे पानी से खिलाना भी गुणकारी है।

पथ्य--चपाती, बकरी का शूरबा, अरहर या मूँग की भूनी हुई दाल, मुर्गा, तीतर या बटेर का भूना हुआ मांस, तरकारियों में से शलगम, चुकंदर, पालक आदि चपाती के साथ खिलायें। अदरक का मुरब्बा या भोजनोपरान्त जीरा मिली हुई पुदीना की चटनी भी गुणकारी है।

अपथ्य--बादी, गुरु और विष्टंभी एवं दीर्घपाकी वस्तुएँ; जैसे--गोभी, मटर, आलू, अरवी, उड़द की दाल और वाष्पजनक पदार्थ; जैसे--प्याज, लहसुन और मसूर की दाल आदि से परहेज करें। चित्त न लेटकर किसी करवट से सोया करें।

वक्तव्य—यूनानी हकीमों के मत से यह रोग मृगी, सन्यास (सक्ता) और मालीखोलिया का पूर्वरूप है; किन्तु जनसाधारण इसे भूतावेश समझते हैं।

--:o:--

ग्यारहवां प्रकरण

सरअ

नाम--(अ०) सरअ; (उ० हिं०) मिर्गी, (सं०) अपस्मार; (अं०) एपिलेप्सी (Epilepsy)।

वक्तव्य--अरबी सरअ शब्द का अर्थ गिरना है।

यह एक प्रसिद्ध और भयंकर रोग है, जो दौरा के साथ (आवेगपूर्वक) हुआ करता है। इस रोग के दौरा में रोगी के कर्म और ज्ञानेन्द्रियाँ अनियन्त्रित हो जाती हैं और रोगी मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ता है। उसकी ऐच्छिक

मांसपेशियों में उद्वेष्टन होकर हस्त-पाद टेढ़े हो जाते हैं और उनमें अनियन्त्रित चेष्टाएँ होने लगती हैं, रोगी के मुख से आवेग की दशा में कफ याने झाग निकलते हैं।

भेद--स्थानसंश्रय एवं व्यक्ति भेद और हेतु के विचार से इसके विविध भेद होते हैं। अस्तु, यदि उसका माद्दा (दोष) मस्तिष्कगत हो, तो (१) सरअ दिमागी[1], यदि आमाशय में हो तो (२) सरअ मेदी[2] और यदि हस्त-पाद में हो, तो (३) सरअ अतराफी[3] कहते हैं। इसके अतिरिक्त इसके कई अन्य भेद भी हैं, किन्तु उक्त तीन भेद अधिक प्रसिद्ध हैं। इस रोग की उत्पत्ति कफज दोष से, प्रायः सौदावी से और कभी-कभी पित्तज दोष से होती है। शुद्ध रक्त भी क्वचित् इस रोग का कारणभूत होता है। परन्तु श्लैष्मिक और पैत्तिक रक्त से प्रायः इसकी उत्पत्ति देखी जाती है।

हेतु--मस्तिष्क के कोष्ठों और वातनाड़ी के स्रोत में किसी सांद्रीभूत दोष या वाष्प या विषमावस्था से अपूर्ण अवरोध प्रगट होकर रोग को उत्पन्न करता है। चिरकाल तक प्रसेक और प्रतिश्याय का बना रहना, स्निग्ध एवं शीतल आहारों का पुष्कल योग, अन्न से उदर के पूर्ण रहने की दशा में आयास करना, अधिक मानसिक श्रम, स्त्रियों में आर्तव विकार, युवाओं में अति स्त्रीसहवास, हस्तमैथुन का व्यसन, अति मद्यपान, मस्तिष्क शोथ, अत्यधिक शोक एवं चिंता, शिशुओं में उदर कृमि एवं दन्तोद्भेद, अकस्मात् भयभीत हो जाना, सौदावी रोग, आतशक, संधिशूल, वातरक्त प्रभृति रोग में से किसी की विद्यमानता इसके निदान-कारण हैं।

लक्षण--इस रोग में दो प्रकार के लक्षण पाये जाते हैं--(१) पूर्वरूप और (२) आवेगकालीन लक्षण। पूर्वरूप रोग से कुछ काल पूर्व प्रगट होते हैं। उनमें शिरःशूल, शिरोघूर्णन, कर्णक्ष्वेड, संमोह, बुद्धिविभ्रम, इन्द्रियों की मलिनता, सूक्ष्म ज्वर, दुर्गन्धानुभव, उद्वेष्टनपूर्वक शिर का स्कन्ध की ओर झुक जाना, शरीर के किसी भाग में सुरसुराहट प्रतीत होकर उसका मस्तिष्क तक पहुँच जाना, अवश्यमेव होनेवाले इसके पूर्वरूप हैं।

आवेगकालीन लक्षण--साधारणतया रोगी चिल्लाकर और मूर्छित होकर धाराशायी हो जाता है। उसके हस्त-पाद ऐंठ जाते और अँगुलियाँ टेढ़ी हो

१--पाश्चात्य वैद्यक में इसे इडिओपैथिक एपिलेप्सी (Idiopathic Epilepsy) कहते हैं।

२--सरअ मेदी को गॅस्ट्रिक ऐपिलेप्सी (Gastric Epilepsy) और

३--सरअ अत्राफी को रिफ्लेक्स (Reflex Epilepsy) कहते हैं।

जाती हैं। उनमें अनियमित चेष्टाएँ होने लगती हैं। नेत्रगोलक ऊपर चढ़ जाते हैं। चेहरा भयंकर नील, रक्त या पीला हो जाता है। हृदय धड़कने लगता है और साँस कठिनाई से आता है। मुख से झाग आने लगते हैं। साँस के साथ खर्राटे का शब्द होता है। कभी जिह्वा दांतों के मध्य आकर कट जाती है। कभी-कभी अचेतावस्था में ही मल-मूत्र और वीर्य का उत्सर्ग हो जाता है। पुनः एक ओर के हस्त-पाद में झटका-सा लगकर आक्षेप दूर हो जाता है। रोगी लम्बे साँस लेने लगता है और कुछ काल पर्यन्त अचेत पड़ा रहता है। जब चेतनावस्था में आता है, तब भी प्रायः इन्द्रियाँ पूर्णतया यथावत् नहीं होतीं। प्रत्युत क्लान्ति, शिरःशूल या शिरोभ्रम एवं दौर्बल्य अनुभव होता है। इस रोग में दौरा साधारणतः ५ या १० मिनट तक रहता है। क्वचित् इससे अधिक काल तक भी रह सकता है। किसी-किसी रोगी में इस प्रकार का आवेग (दौरा) नियतकालिक हुआ करता है। किन्तु प्रायः रोगियों में आवेग का कोई नियत काल या समय नहीं होता। आवेगों की न्यूनाधिकता रोगी के बल और दोषों की न्यूनाधिकता पर निर्भर होती है।

निदान--सरअ दिमागी में उपर्युक्त लक्षण के अतिरिक्त शिरोगौरव, संमोह एवं भ्रम, मस्तिष्क दौर्बल्य और बुद्धिभ्रम आदि मानसिक लक्षण अधिक पाये जाते हैं। सरअ मेदी में आमाशय में दाह एवं कम्प होता, गला घुटता और नथुने फूल जाते हैं। कभी रोगी चिल्लाने लगता है और विवशता की दशा में मल-मूत्र का उत्सर्ग हो जाता है। सरअ अतराफी में हस्त-पाद से शीतल वायु (रीह) मस्तिष्क की ओर जाती है। नेत्र में अश्रु आ जाते हैं। रोगी का वर्ण श्यामतायुक्त हो जाता है। जृम्भा और अङ्गमर्द होता, हस्त-पाद की अँगुलियाँ मुड़ जातीं और इच्छा न रहते हुए भी मूत्रोत्सर्ग हो जाता है।

दोषानुसार कफज में शरीर ढीला और श्वेत होता, मंदसंज्ञता होती और आवेग के समय झाग (फेन) अधिक पाये जाते हैं। सौदावी में हृत्स्पन्दन, कृशता, भ्रम एवं चिंता और फेन (झाग) की अल्पता पाई जाती है। रक्तज में आवेगकाल में चेहरा लाल होता है। ग्रैवेयी सिरायें फूल जाती हैं और प्रायः नकसीर फूट जाती है। पैत्तिक दोष से क्वचित् ही मृगी उत्पन्न होती है। उक्त अवस्था में चेहरा और नेत्र पीला हो जाता है। आवेग अल्पकालिक होता है; किन्तु बेचैनी और तिलमिलाहट अधिक होती है, इत्यादि।

उपचार--आवेग पूर्वकालीन चिकित्सा--जब रोग के आवेग का कोई पूर्वरूप प्रगट हो; यथा--जिस स्थान से सुरसुराहट उठकर मस्तिष्क तक पहुँचती है, उस स्थान पर सुरसुराहट आरम्भ हो जाय, तो उससे ऊपर एक रूमाल या कपड़ा आदि कसकर बाँध देवें। वहाँ तीव्र शैत्य या उष्णता पहुँचाएं या दग्ध

(दाग) कर देवें या जोर से चुटकी लेवें। दोनों हाथों को गरम पानी में रखना, उछलना, कूदना, उच्च शब्द से पढ़ना, वस्ति देना और वमन कराना आदि आवेग पूर्वकालिक उत्तम उपाय है। यदि आक्षेप आरम्भ हो गया हो, तो आक्षेपग्रस्त अवयव को बलपूर्वक खींचकर अपने पूर्व स्थान पर ले आवें। यदि चेहरा एक ओर फिर गया हो, तो उसको दोनों हाथों से पकड़कर सीधा करें। कब्ज हो, तो वस्ति करें। सरऋमेदी में वमन कराना भी गुणकारी है।

आवेगकालीन चिकित्सा--जब आवेग प्रारम्भ हो गया हो, तब रोगी को सुखपूर्वक चारपाई या भूमि पर लिटा देवें। किन्तु सिर को किञ्चित् ऊँचा रखें। गले, सीना और उदर के बंधन को ढीला कर देवें। जिह्वा के रक्षार्थ दाँतों के मध्य कागज या कपड़े आदि की गद्दी या कोई काग आदि रख देवें, जिसमें जिह्वा कटने से सुरक्षित रहे। सिर और चेहरे पर शीतल जल आदि के छींटें देवें। जब रोगी अचेत हो जाय, तो उसी प्रकार लेटा रहने देवें। चेतनावस्था में आने पर कभी रोगी पागलों की तरह चेष्टाएं करने लगता है। अतएव उसकी सुरक्षा का ध्यान रखें।

आवेग के समय जुंदबेदस्तर १ माशा, ऊदसलीब १ माशा, सुदाब के पत्र ३ माशा--इनको २ तोला प्याज के अर्क में पीसकर नाक में टपकायें। पलास-पापड़ा ३ माशा, या कड़वी तुरई के बीज ३ माशा या तितलौकी के बीज ३ माशा--इनमें से जो समय पर मिल सके उसे जल में पीसकर नस्य देवें। जुंदबेदस्तर और ऊदसलीब १-१ माशा, अर्क सौंफ ३ तोला में पीसकर कण्ठ में टपकायें। कलौंजी, सोंठ, मुरमक्की, जुंदबेदस्तर, काली मिर्च, इन्द्रायन का गूदा--इनमें से जो समय पर मिल सके, उसे पानी में पीसकर नस्य देने से भी दौरे की अवस्था दूर होती है। मनुष्य की खोपड़ी की हड्डी ४॥ माशा और चीनी ४॥ माशा बारीक चूर्ण बनाकर कुछ दिन निरन्तर खिलाने से प्रभावतः गुणकारी है। आक्षेप निवारण के लिये बाबूना का तेल, कुष्ठ का तेल, गुलरोगन में से कोई गरम तेल हाथ-पाँव पर मलकर अँगुलियों को सीधा करना चाहिये।

आवेगमध्यकालीन चिकित्सा--रोग का आवेग समाप्त होने के तुरत बाद रोगी को कुछ काल तक उसी प्रकार पड़ा रहने देवें। इसके उपरान्त भी कुछ घण्टे तक उसकी देख-भाल करें, जिसमें रोगी औन्मादिक चेष्टा न कर सके। तदुपरान्त शिरःशूल आदि आवेगजनित उपद्रव शमन करें। रोग के मूल कारण को मालूम करके और दृष्टि में रखकर चिकित्सा करें; यथा--यदि दन्तविकार, फिरंग, आमवात, अतिव्यवाय, हस्तमैथुन या अन्त्रकृमि आदि के कारण हो तो उन रोगों की विशिष्ट चिकित्सा करें।

रोगनिवृत्ति की दशा में प्रथम कुछ यह प्रयोग प्रातः-सायंकाल पिलाना चाहिये--जदवार १ माशा, ऊदसलीब १ माशा, महीन पीसकर खमीरा गावज़वान जदवार ऊदसलीबवाला ७ माशा में मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कुसूस के बीज ३ माशा अर्क सौंफ १२ तोला में पीस-छानकर शीरा निकालें और ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिलायें।

चिकित्सा-सूत्र—रोगजनक दोष को मालूम करके उसका यथाविधि पाचन करें और तदुपरान्त उसका शोधन करें। इसके साथ ही जिस अंग के अनुबन्ध से रोग उत्पन्न हुआ हो, उसका भी ध्यान रखें ; यथा--सरअ दिमागी में मस्तिष्क का, मेदी में आमाशय (मेदा) का, इसी प्रकार अतराफी (हस्त-पाद) आदि में उन-उन अंगों का ध्यान रखें।

चिकित्सा-क्रम--यदि श्लैष्मिक दोषों का संचय इस रोग का कारण हो, तो श्लेष्मा का शोधन करें। अस्तु, प्रथम इस श्लेष्मपाचन योग का सेवन प्रारम्भ करें। कफज मृगी के लिये श्लेष्मपाचन योग--गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, उस्तूखुदूस ५ दाना, बादरंजबूया ५ माशा, ऊदसलीब ५ माशा, अंजीर जर्द ३ दाना, सौंफ ७ माशा, जूफाए खुश्क ५ माशा, अनीसून ५ माशा, गावजवान ५ माशा, जदवार ३ माशा, सौंफ की जड़ ७ माशा, बेखकरफस ७ माशा, बेख इजखिर ७ माशा, हंसराज ७ माशा, छिली हुई मुलेठी ५ माशा, कासनी की जड़ ७ माशा--इनको रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला गुलकन्द मिलाकर पिलायें। सात-आठ दिन यही योग पिलाकर विरेचनार्थ आठवें या नवें दिन इसी में सनाय मक्की, छिली और बीच की हड्डी निकाली हुई सफेद निशोथ, गुलाब के फूल ७-७ माशा मिलाकर रात्रि में यथाविधि भिगोयें। प्रातःकाल अमलतास का गूदा ५ तोला, यवास शर्करा, लाल शक्कर, खमीरा बनफ्शा प्रत्येक ४ तोला, बादाम का तेल ६ माशा मिलाकर पिलायें।

विरेचन के दूसरे दिन तबरीह का यह योग देवें--जदवार १ माशा, ऊदसलीब १ माशा, महीन पीसकर खमीरा गावजबान १ तोला में मिलाकर चाँदी का एक वर्क लपेट कर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, सौंफ ६ तोला और अर्क मकोय ६ तोला में पीसकर शीरा निकालकर खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिलायें।

दो विरेचन इसी प्रकार देकर तीसरे विरेचन में हब्ब इयारज ९ माशा, बादाम के तेल में स्नेहाक्त करके रात्रि में सोते समय अर्क गावजबान के साथ खिलायें। प्रातःकाल विरेचन का योग अतिरिक्त अमलतास और रोगन बादाम के पिलायें।

विरेचन से खाली होने के उपरान्त शक्ति के लिये माजून फलासफा या माजून जबीब या अतरीफल उस्तूखुदूस या खमीरा गावज़बान, जदवार ऊदसलीबवाला या दवाउल्मिस्क, हार्र जवाहरवाला या जुवारिश जालीनूस प्रत्येक ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा में से कोई एक औषधि कुर्स खब्सुल हदीद १ टिकिया और कुर्स मर्जां जवाहरवाला १ टिकिया मिलाकर कुछ दिन प्रातःकाल खिलायें। सायंकाल हब्ब सरअ २ गोली ताजे जल के साथ खिलायें। जदवार, ऊदसलीब १-१ माशा महीन पीसकर खमीरा गावजबान सादा १ तोला या खमीरा गावजबान जदवार ऊदसलीववाला ७ माशा में मिलाकर निरंतर दीर्घकाल तक सेवन कराने से असीम लाभ होता है।

मस्तिष्क-शुद्धि के लिये यह वटी-योग भी गुणकारी है। मुंजिज के साथ हब्ब इयाजर के स्थान में देना या अकेला पानी के साथ देने से यह वटिका मस्तिष्क से श्लेष्मा और सांद्रीभूत सौदा का निर्हरण करती हैं।——पीला एलुआ ३।। माशा, गारीकून ३।। माशा, सफेद निशोथ ३।। माशा, कालादाना १।। माशा, सकमूनियाए मुशव्वी ४ रत्ती, इन्द्रायन का गूदा ७ माशा——कूट-छानकर शहद में मिलाकर चना बराबर गोलियाँ बना लें। इसमें से ६ माशा रात्रि में सोते समय अर्क सौंफ के साथ खिलायें या हब्ब इयारज की सेवन-विधि की तरह मुंजिज के योग के साथ देवें।

यदि शोक एवं चिंता के कारण सौदावी दोष की प्रगलभता होकर इस रोग की उत्पत्ति का कारणभूत हो, तो रोगी को प्रसन्न और प्रफुल्लित रखें। कोई ऐसा कार्य न होने दें, जिस से रोगी को आघात एवं दुःख पहुँचे। मुफर्रेहात का उपयोग करायें। दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाला ५ माशा या माजून चोबचीनी मुकव्वी ५ माशा, अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला, शर्बत उन्नाब ४ तोला के साथ कुछ दिन खिलायें। यदि आवश्यकता पड़े, तो निम्न योग पिलायें—— कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, पित्तपापड़ा ७ माशा, चिरायता ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, हंसराज ५ माशा, मुलेठी ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, उस्तूखुदूस ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगो देवें। प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला गुलकन्द मिलाकर पिलायें। पन्द्रह दिन तक यही योग पिलाकर कफज अपस्मार (सरअ बलगमी) में लिखे विरेचन योग का उपयोग करायें। दो विरेचन के उपरान्त तीसरा विरेचन हब्ब इयारज का बिना अमलतास और बादाम के तेल मिलाये देवें और बीच में तबरीद का योग देते रहें। विरेचन से खाली होने के बाद दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा, अर्क मुरक्कब मुसफ्फीखून १२ तोला, शर्बत उन्नाब ४ तोला के साथ देवें।

रक्तज और पित्तज में यह योग देवें--गुलबनपशा, गुलाब का फूल, नीलूफर का फूल, पित्तपापड़ा पत्र, गावजवान, चिरायता, ऊदसलीब, बिल्लीलोटन, फरंजमुश्क के बीज प्रत्येक ७ माशा, पोट्टलिका बद्ध कुसूस के बीज ५ माशा, सौंफ ६ माशा, रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला खमीर बनफ्शा घोलकर पिलायें। दोषपाचनोपरान्त आवश्यकतानुसार एक या दो सप्ताह के पश्चात् यथोक्त विधि से विरेचन आदि करायें।

वक्तव्य—कृमिज अपस्मार में इस योग में १ माशा कमीला मिलाकर सेवन करें।

विरेचन से खाली होने के पश्चात् सरअ दिमागी (मानसिक अपस्मार) में जदवार और ऊदसलीब प्रत्येक १ माशा, खमीरा गावजवान ऊदसलीबवाला ५ माशा में मिलाकर प्रातःकाल खिलाया करें। रात्रि में अतरीफल उस्तखुस या अफ्तीमून या माजून नजाह ६ माशा सेवन करायें। सरअ मेदी (आमाशय विकारज अपस्मार) में आमाशय का सुधार करें। मण्डूर भस्म १ रत्ती, जवाहरवाला प्रवाल भस्म (कुश्ता मर्जा जवाहरवाला) १ रत्ती, दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा में मिलाकर प्रातःकाल खिला दिया करें और रात्रि में जुवारिश कमूनी सुसहिल या जुवारिश ऊद तुर्श या मुलय्यिन ७ माशा या माजूनकलकलानज का उपयोग करा दिया करें। कब्ज होने पर मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि में सोते समय जल के साथ खिला दिया करें।

सरअ अत्राफी में माजून जबीब १ से १॥ तोला या निम्न माजून सेवन करायें---केसर ४ माशा, हब्बुलगार ६ माशा, नागरमोथा ६माशा, तज ६ माशा, इक्लीलुल्मलिक ६ माशा, जटामांसी ४ तोला, इजखिर मक्की ४ तोला, चिरायता ३ तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ८ तोला, इल्कुल् बुत्म ८ तोला---समस्त द्रव्यों को कूटकर तिगुने मधु में मिलाकर यथाविधि माजून बनायें। इसमें से ४ माशा प्रतिदिन खिलाया करें।

स्त्रियों को यदि गर्भाशय विकार और आर्तवदोष के कारण हो, तो उसका समीचीन उपाय करें। रोगन सोसन या रोगन बनफ्सा का शिरोऽभ्यङ्ग करें।

साध्यासाध्यता---यह रोग बहुधा सांघातिक होता हैं। क्वचित् ही कोई रोगी अच्छा होता है। किन्तु मृत्यु कभी-कभी बहुत देर में होती हैं। विशेषकर जब कि रोग का आवेग बहुत लम्बे अन्तर के बाद होता है। फिर भी क्वचित ही कोई रोगी जरावस्था तक पहुँचता है।

अपथ्य---इस में अधिक शीतल और अधिक उष्ण वस्तुओं का सेवन अहितकर है। तीव्र वायु में बैठना, ऊँचे स्थान एवं चंद्रमा के प्रकाश में देर तक रहना, चर्खी या हिंडोले में झूलना, घूमती हुई चीजों पर दृष्टि स्थिर करने का यत्न करना

और उनको ध्यानपूर्वक देखना, बहते पानी को दृष्टि जमाकर देखना हानिकारक है। जवानों में अति व्यायाम या अधिक हस्तमैथुन भी अहितकर हैं। बादी, गुरु एवं विष्टंभी और आध्मानकारक वस्तुओं का सेवन न करें। क्रोध एवं शोकजनक कार्य से बचना अनिवार्य समझें। दुग्ध एवं कफकारक पदार्थों ; जैसे--उड़द की दाल, कचालू, गोभी आदि से परहेज करें। मछली, बैगन, कद्दू, चावल, शलगम, मूली, लहसुन, प्याज, मटर, मसूर की दाल, अमरूद--ये सब पदार्थ अहितकारी हैं।

पथ्य--शुद्ध वायु में रहना, प्रातः-सायंकाल वायु-सेवन के लिये भ्रमण करना, लघु-शीघ्रपाकी आहार का सेवन, चपाती, बकरी का शरवा, मुर्गा, तीतर और बटेर का भुना हुआ मांस, भूनी हुई अरहर और मूँग की दाल, कूर्मा या भुना हुआ कीमा गरम मसाला आदि मिलाकर देवें। पुदीना की चटनी आदि भी लाभकारी हैं।

--:०:--

बारहवां प्रकरण

सक्ता

नाम--(अ०) सक्तः ; (उ०) सक्ता, बेहोशी मिस्ल मुर्दा ; (सं०) संन्यास ; (अं०) ऐपोप्लेक्सी (Apoplexy)।

इस रोग में समस्त चेष्टायें और संवेदनायें अकस्मात् नष्ट हो जाती हैं और रोगी मृतक की भाँति अचेत पड़ा रहता है। केवल श्वासोच्छ्वास और हृदय की चेष्टायें शेष रहती हैं, किन्तु वह भी अति मंद होती हैं। रोगी देखने में सर्वथा मृतकवत् प्रतीत होता है।

हेतु--इस रोग में मस्तिष्क में सुद्दा ताम्मा पड़ जाने के कारण रूह (ओज) के आवागमन के मार्ग सर्वथा अवरुद्ध हो जाते हैं। कफ, रक्त या सौदा से मस्तिष्क की धमनियों में रक्त का संचय (इम्तिलाऽदिमाग) होकर मस्तिष्क के कोष्ठो में यह सुद्दा ताम्मा होता है। मस्तिष्क में अत्यन्त शीत या आघात लगने या सिर के बल गिर पड़ने या दूषित वाष्प या विषमयावस्था से मस्तिष्क का संकोच होकर उसमें अवरोध उत्पन्न हो जाता है। क्योंकि यह रोग अधिकतया कफ से होता है। किन्तु रक्त से भी अधिक होता है और सौदा से कम होता है। अतएव यहाँ केवल सक्ता बलगमी (कफज सन्यास Serous Apoplexy) और सक्ता दम्वी (रक्तज संन्यास---Sanguinous Apoplexy) का ही वर्णन किया जाता है।

पूर्वरूप--कभी मूल व्याधि से पूर्व निम्नलिखित पूर्वरूप प्रगट हुआ करते हैं--बार-बार शिरःशूल होना, भ्रम, कर्णनाद, दृष्टिदोष, नासागत रक्तपित्त (नकसीर), हृल्लास, स्वभाव का चिड़चिड़ापन, स्मृतिदोष और कभी अर्दित का होना, ये लक्षण देखने में आते हैं। रोगाक्रान्त होने से पूर्व रोगी आलस्य-युक्त होता है। शरीर की मांसपेशियाँ फड़कती हैं। रोगी निद्रावस्था में दाँत पीसता है।

रोग की घटना की रीति--यह तीन प्रकार से घटित होता है--(१) रोगी अकस्मात् अचेत होकर गिर पड़ता है। इसका चेहरा साधारणतया लाल या क्वचित् पीला होता है। साँस खर्राटे से लेता है; (२) अकस्मात् कठिन शिरःशूल होकर पक्षवध हो जाता है। उत्क्लेश, हृल्लास एवं मूर्च्छा होती, नाड़ी अत्यंत दुर्बल--मंद चलती, जो कठिनतापूर्वक अनुभव होती है, आदि और (३) अकस्मात् पक्षाघात हो जाता है और रोगी धीरे-धीरे सर्वथा अचेत हो जाता है।

लक्षण--रोगी मृतकवत् सर्वथा अचेत पड़ा रहता है, जगाने से बिल्कुल नहीं जागता। साँस कठिनतापूर्वक एवं खर्राटे से लेता है। मुख में फेन होता है। हाथ-पाँव शीतल होते हैं। नेत्र पथराये हुए, कभी दोनों पुतलियाँ विस्फारित एवं संज्ञाशून्य होती हैं। दाँती लगी होती है। अचेतावस्था में ही मल-मूत्र का उत्सर्ग हो जाता है। निगलने की शक्ति कम या नष्ट हो जाती है। उक्त अवस्था से कभी रोगी चेतनावस्था में आकर बुद्धिदोष या पक्षवध से आक्रांत हो जाता है और कभी इसी दशा में परलोक सिधार जाता है।

इस रोग का आवेग ५ मिनट से लेकर साधारणतया ७२ घण्टे तक रहता है। रोगी कभी कुछ ही क्षण में चल बसता है। यदि रोगी २४ घंटे तक जीवित रहे और श्वास में अधिक खर्राटा हो, तो रोग निवृत्ति की आशा कम रहती है। कफज सन्यास में शरीर शिथिल, चेहरा पिलाई लिये श्वेत होता है। मुख से पुष्कल झाग (फेन) आता है। रक्तज संन्यास में चेहरा श्यामता लिये लाल होता है। ग्रैवेयी शिरायें रक्त से पूर्ण होती हैं और ललाट पर स्वेद निकलता है।

सापेक्ष निदान—मृत और सन्यास—कभी-कभी श्वास की गति और नाड़ी की गति भी प्रतीत नहीं होती और मृत एवं सन्यास रोगी में अंतर नहीं रहता। ऐसी दशा में रोगनिर्णय की विधि यह है कि रोगी के नथुनों के समीप बारीक धुनी हुई रूई या कबूतर अथवा किसी और पक्षी का अत्यंत कोमल पर (पंख) इस प्रकार रखा जाय कि वायु एवं आसन्नवर्ती मनुष्यों का श्वास उसे गतिशील न कर सके, फिर ध्यान पूर्वक देखें। यदि रूई या पर के रोयें में गति प्रतीत होती हो तो अभी रोगी जीवित है। इसी प्रकार अँधेरे स्थान में संन्यास रोगी की पुतलियों को

खोलकर देखने से दीपक के प्रकाश एवं उजाले में देखनेवाले के रूप की परछाईं (प्रतिबिंब) मालूम होती है। परीक्षा की अन्य विधि यह भी है कि चाँदी या ताँबे का अत्यंत पतला एवं हलका कटोरा लेकर थोड़ा-सा पानी या पारा उसके अन्दर डालकर रोगी के उरःस्थल पर रखें। यदि पारा या पानी में गति प्रतीत हो, तो रोगी को जीवित समझें। मृगी और मूर्च्छासे तथा मादक द्रव्यजनित नशा से इसका निदान इस प्रकार करते हैं कि मृगी के रोगी के मुख से आवेग के समय झाग आता और हाथ-पाँव में आक्षेप होता है। मूर्च्छा साधारणतया युवती, कोमल प्रकृति और अपतन्त्रक पीड़ित ललनाओं को होती है, जो कुछ ही क्षणों में दूर हो जाती है। मद्यपान जनित नशा में मुख से मद्य की गंध आती है और दोनों नेत्रों की पुतलियाँ एक समान होती हैं। यदि रोगी बहुत बलपूर्वक जगाया जाय, तो हूँ-हाँ कर सकता है। अहिफेनजनित मूर्च्छा में रोगी जोर-जोर के खर्राटें से श्वास लेता है और जगाने से जाग पड़ता है।

उपचार—जब इस रोग के होने की आशंका हो, तब शारीरिक और मानसिक श्रम समप्रमाण में करें। स्त्रीसहवास से भी यावच्छक्य परहेज करें। मद्य-सेवन का सर्वथा परित्याग कर देवें। कब्ज नहीं होने देवें। मलत्याग बल-पूर्वक न करें। श्रम और शिरःशूल के लक्षण प्रगट होते ही रक्तमोक्षण और विरेचन के द्वारा शोधन करें।

रोगी की गर्दन और सीने का बन्धन खोलकर सिर को ऊँचा रखें। रोगी के रहने का स्थान शीतल रखें और वहाँ कोलाहल न होने देवें। रोगी अचेत हो तो—काश्मीरी पत्ता ३ माशा, कायफल ३ माशा, जुंदबेदस्तर १ माशा, कस्तूरी १ माशा—सबको महीन पीसकर नलकी के द्वारा नासिका में फूँकें। गेहूँ की भूसी और नमक दोनों को पोटली में बाँधकर गरम करके सिर को सेकें। अथवा बाबूना का फूल १ तोला, बिरंजासफ १ तोला, सातर फारसी १ तोला, सूखा पुदीना १ तोला, छड़ीला १ तोला, अकरकरा १ तोला—सब को जल में क्वाथ करके छानकर लोटे की टोंटियों से सिर के ऊपर डालें। यदि रोगी का मुख खुल सके, तो तिर्याक फारूक १ माशा एक तोला शहद में मिलाकर रोगी के तालू और जिह्वा पर मर्दन करें। रोगन शिफा का कोष्ण शिरोऽभ्यङ्ग करें। अथवा सिर के बाल कतरवाकर जुंदबेदस्तर ६ माशा, राई ६ माशा दो तोले सिरका में पीसकर कुनकुना गरम करके सिर के ऊपर लेप करें और नमदा की टोपी पहनाकर लोहे का टुकड़ा गरम करके सिर के ऊपर रखें। यदि संभव हो, तो दवाउल्मिस्क मोतदिल ३ माशा एक तोला अर्क सौंफ में घोलकर कण्ठ के भीतर टपकायें। यदि इन उपायों से रोगी चैतन्य न हो, तो निम्न बस्ति देवें—गारीकून ३ माशा, सफेद निशोथ ५ माशा, चुकंदर के पत्र ५ माशा, रेंडी की गुद्दी ५ माशा, कंतूरियून दकीक

५ माशा, सोम्रा के पत्र ५ माशा, सूरंजान ५ माशा, बस्फाइज फुस्तुकी ७ माशा, मक्की सनाय ६ माशा, कड़की गिरी ६ माशा, उन्नाब ६ दाना, लिसोड़ा ११ दाना—सबको ऽ१।। जल में क्वाथ करें। अर्धावशेष रहने पर छानकर २ तोला अमलतास की गुद्दी, खाँड २ तोला, रेंडी का तेल २ तोला, मीठे बादाम का तेल ३ माशा, जवाशीर २ रत्ती, गुग्गुल ४ रत्ती, बुरए अरमनी २ माशा मिलाकर बस्ति करें। यदि रोगी सचेत न हो जाय तो जुंदबेदस्तर १ माशा, अदरक १ माशा, जराबंद २ माशा महीन पीसकर २ तोला शहद मिलाकर दिन में दो-तीन बार चटायें। चार-पाँच दिन खाना-पीना सर्वथा बन्द रखें और उसके स्थान में शहद २ तोला अर्क सौंफ १० तोला में क्वाथ करें। जब अर्धावशेष रह जाय तब पिलायें। यदि अधिक दुर्बलता प्रतीत हो तो चौथे-पाँचवे दिन कबूतर के बच्चा का शूरबा देवें। पाँचवे दिन से यह मुंजिज पिलायें—सौंफ ७ माशा, सौंफ की जड़ ७ माशा, करफ्स की जड़ ७ माशा, इजखिर की जड़ ७ माशा, कबर की जड़ ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, हंसराज ५ माशा, उस्तूखुदूस ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, पीला अंजीर ५ दाना—रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः काल मल-छानकर ४ तोला शहद मिलाकर पिलायें और सायंकाल ३ माशा इन्कर्दियाए कबीर खिलायें। नौ दिन यही योग पिलाकर दसवें दिन प्रातःकालिक योग में विरेचनार्थ सनाय पक्की ५ माशा मिलाकर योग के द्रव्यों को रात्रि में भिगो देवें। प्रातःकाल क्वाथ करके छानकर अमलतास की गुद्दी ५ तोला, खांड़ ४ तोला, यवासशर्करा ४ तोला, गुलकंद ४ तोला मिलाकर छान लेवें और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें। नौ-दस बजे तक यदि विरेक न आये तो शर्बत दीनार ४ तोला, शर्बतवर्दमुकर्रर ४ तोला, अर्क सौंफ १५ तोला मिलारकर कुनकुना करके थोड़ा-थोड़ा पिलायें। अगले दिन तबरीद का योग बिना तुख्म रेहाँ के पिलायें। तीसरे दिन पुनः हब्ब इयारज ६ माशा चाँदी के एक वर्क में लपेटकर १२ तोला अर्क गावजबान के साथ चार घड़ी रात्रि शेष रहे, तब रोगी को उठाकर फँकाकर शयन करा देवें। प्रातः काल विरेचन का यही योग विना अमलतास और बादाम के मग्ज के शीरा के साथ देवें। यदि इससे भी कुछ दोष शेष रहे तो चार दिन मुंजिज का योग और पिलाकर एक और विरेचन देवें। सम्यक् शुद्धि के उपरांत बलवर्धनार्थ खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाब वाला ५ माशा चाँदी के एक वर्क में लपेट कर प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क शाहतरा ६ तोला, अर्क कासनी ६ तोला शर्बत बनफ्शा २ तोला के साथ कुछ दिन देवें या मर्जा जवाहर वाला एक टिकिया खमीरा गावजबान जवाहर वाला ५ माशा में मिलाकर प्रातःकाल देवें और सायंकाल खुब्सुल्हदीद (मण्डूर) एक टिकिया दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली ५ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा में मिलाकर खिलायें।

रक्तज सन्यास में दोनों बाहों पर कीफाल या सरारू सिरा का वेधन कराना या दोनों स्कंधों पर सींगी लगवाना या रोगी की दोनों पिंडलियों और बाहों पर कोई पटका या दुपट्टा इसलिये बांधना जिसमें सिर की ओर न्यूनतर रक्त जाय तथा उसकी हथेलियों और तलुओं पर खूब बलपूर्वक संवाहन करना एवं बस्ति देना लाभकारी उपाय हैं।

कफज सन्यास——में वमन कराना, नस्य देना, सिर के ऊपर परिषेक प्रलेप, और मालिश आदि करना और बल्य एवं उत्तेजक औषधियों का सेवन लाभकारी उपाय हैं।

जब बल्य आहारों के अति सेवन या मद्यपान और मांस के अतिसेवन से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तब अचेतावस्था में दोनों हाथों की सरारू सिरा का वेधन करने से और रोगी के बलानुसार रक्त ग्रहण करने और पिंडलियों पर सींगी लगाने तथा बाहु और पिंडलियों को रूमाल से कसकर बाँधने से, तलुओं और हथेलियों की मालिश करने से लाभ होता है।

अपथ्य——आवेगनिवृत्ति से और विरेचन से खाली होने तक यदि रोगी की शक्ति इतनी हो कि वह क्षुधा सहन कर सके तो कोई आहार न देवें, जल एवं आहार के स्थान में केवल मध्वाम्बु (माउल्असल) का देना ही पर्याप्त होता है। वरेचन के उपरांत कद्दू, हिनवाना, खीरा, ककड़ी, तुरई, चावल आदि शीतल पदार्थों से परहेज रखें।

पथ्य——आवेगनिवृत्ति के उपरांत पांच दिन तक मध्वाम्बु पर ही रखें अर्थात् २ तोला मधु; १२ तोला अर्क सौंफ में क्वाथकर अन्न और जल के स्थान में देवें। यदि रोगी क्षुधा के ऊपर धैर्य न रख सके तो कबूतर या बकरी का शूरबा गरम मसाला डालकर पिलायें। शाकाहारी को मूँग या मोठ की दाल पकाकर केवल उसका यूष पिलायें। विरेचनोपरांत बकरी के मांस का शूरबा, अरहर की पतली दाल गरम मसाला आदि डालकर चपाती के साथ खिलावें। तीतर-बटेर का शूरबा या यखनी देना और मांसार्क (माउल्लहम) पिलाना भी गुणकारी है। प्रथम क्षुधा से अत्यल्प भोजन देवें। ज्यूं-ज्यूं स्वास्थ्य लाभ होता जाय, भोजन का प्रमाण धीरे-धीरे बढ़ाते जाएँ।

———

तेरहवां प्रकरण

वातव्याधि

इस्तिर्खाऽ फालिज' लकवा और राअ्शा

इस्तिर्खाऽका धात्वर्थ ढीला होना या लटक पड़ना है। परन्तु यूनानी वैद्यक की परिभाषा में उस रोग को कहते हैं जिसमें शरीर वा शरीर का कोई मुख्य भाग या अंग, जैसे कोई हाथ या पैर शिथिल वा ढीला हो जाता है और चेष्टादायिनी शक्ति निर्बल वा नष्ट हो जाती है अर्थात् निश्चेष्टता एवं निःसंज्ञता का उक्त प्रभाव किसी मुख्य अंग तक ही सीमित होता है।

नाम––(अ०) इस्तिर्खाऽ, शलल ; (उ०) शल्ल होना, झूला मारना ; (सं०) एकांगवात, घात, वध ; (अं०) पैरेलिसिस (Paralysis), पाल्सी (Palsy)।

फालिज का धात्वर्थ दो टुकड़े करनेवाला है। यूनानी वैद्यक की परिभाषा में उस रोग को कहते हैं जिसमें स्वतंत्र हकीमों के विचार से सिर के सिवाय शरीर का आधा भाग (दाहिना या बायाँ) लंबाई में वा वातग्रस्त वा ढीला हो जाता और उसकी चेष्टा एवं संवेदना शक्ति विकृत वा नष्ट हो जाती है।

नाम—(अ०) फालिज ; (उ०, हिं०) अधरंग ; (सं०) अर्द्धाङ्ग, पक्षवध, पक्षाघात ; (अं०) हेमिप्लीजिया (Hemiplegia)

फालिज; इस्तिर्खाऽ और अबुबल्क़िया का अर्थान्तर—प्राचीन यूनानी हकीमों ने फालिज और इस्तिर्खाऽ में कोई भेद नहीं किया है ; परंतु उत्तरकालीन हकीमों ने इनमें यह भेद किया है कि वे इस्तिर्खाऽ को सामान्य और फालिज को विशेष मानते हैं अर्थात् फालिज को इस्तिर्खाऽका वह भेद मानते हैं जो शरीर के आधे भाग में लंबाई के रुख में हो। यदि सिर के सिवाय शरीर के दोनों ओर अर्थात् संपूर्ण शरीर में हो तो उसे अबुबल्क़िया (वा सकात) कहते हैं।

नाम—(अ०) अबुबल्क़िया, सकात ; (सं०) सर्वांगवात ; (अं०) जेनेरल पैरेलिसिस (General Paralysis) ।

इस्तिर्खाऽ जिस्म अस्फल में कटि के नीचे का आधा भाग वातग्रस्त हो जाता है और रोगी से चला-फिरा नहीं जाता।

नाम—(सं०) ऊरुस्तम्भ, पंगुत्व; (अं०) पैराप्लेजिया(Paraplegia)।

लक़वा का धात्वर्थ उक़ाब (एक पक्षी) है जिसका चेहरा टेढ़ा और बाछें विस्फारित होती हैं। यूनानी वैद्यक में उस रोग को कहते हैं जिसमें साधारण-

तथा चेहरा के एक ओर की पेशियाँ वातग्रस्त होकर (उकाब के सदृश) मुख टेढ़ा होकर एक ओर दाईं वा बाईं दिशा को झुक जाता है और रोगी एक ओर की आँख पूर्णतया बंद नहीं कर सकता और न मुख के दोनों होंठ पूर्णतया मिला सकता है।

नाम—(अ०) लकवा (उ०, हिं०) लकवा ; (सं०) अर्दित ; (अं०) फेशियल पैरेलिसिल (Facial Paralysis)।

राअ्शा किसी अंग के काँपने (कम्पन) को कहते हैं।

नाम—(अ०) राअ्शा ; (सं०) कम्पवात ; (अं०) कोरिया (Chorea)।

उपर्युक्त रोगों के हेतु एवं चिकित्सा सूत्र लगभग एकही से हैं। अतएव प्रायः यूनानी वैद्यकीय ग्रंथों में एक ही स्थान में इनका वर्णन किया गया है। अस्तु, मैं भी इनका नीचे एक ही स्थान में वर्णन करना उचित समझता हूँ।

हेतु—ये रोग शरद् ऋतु में अधिक हुआ करते हैं और शीत प्रकृति के लोग विशेषतः दुर्बल, वृद्ध और अधिक अवस्था के लोग जिनके शरीर में कफ की अधिकता होती है, इन रोगों से पीड़ित होते हैं। प्रायः शीतल वायु के लगने, शीतल जल अधिक पीने से या सन्यास वा मृगी रोग से आक्रान्त होने तथा स्त्रियों में अपतन्त्रक एवं गर्भधारण के पश्चात् ये रोग हो सकते हैं। कभी सुषुम्नाविकार से भी ये रोग हो जाते हैं। यदि युवाओं को पक्षवध हो जाय तो अधिक काल तक उपचार करने से कठिनतापूर्वक आराम होता है। सन्यास (सक्ता) होने के पश्चात् यदि पक्षवध हो तो भी आराम होने की कम आशा होती है। कम्पवात में ऐच्छिक और अनैच्छिक चेष्टायें अस्त-व्यस्त हो जाती हैं। यह मस्तिष्क और सुषुम्ना के दौर्बल्य से उत्पन्न होता है। अति तमाकू के सेवन, अति मैथुन, अति चाय और मद्य सेवन से भी किसी-किसी को कम्पवात हो जाता है। जराज (बृद्धावस्था) में कम्पवात असाध्य होता है।

लक्षण—यदि स्वास्थ्य की दशा में आधा शरीर या कोई विशेष अंग सुन्न पड़ जाय या कभी-कभी फड़कता रहे या जागने के पश्चात् शीतल प्रतीत हो तो पक्षाघात होने की संभावना होती है। विशेषकर शीतकाल में अथवा जिस समय उत्तरी वायु चलती हो या लक्षण व्यक्त हों तो इस रोग के प्रगट हो जाने का स्पष्ट प्रमाण है। कभी अकस्मात् सन्यास के साथ ही पक्षवध हो जाता है। कभी ऐसा होता है कि रोगी प्रातःकाल सोकर उठता है तो मंद-मंद सिरदर्द की शिकायत करता है। फिर एक-दो वमन होकर तुरत पक्षवध हो जाता है।

चेहरे पर भुरभुराहट प्रतीत होती है ; मूत्र श्वेत एवं सांद्र (गाढ़ा) हो जाता है ; मुख का आस्वाद फीका होता है। लकवा में चेहरा किसी भांति टेढ़ा हो जाता है। मुँह का कोना दाहिनी या बायीं ओर खिचकर टेढ़ा हो जाता है। विकृत दिशा के हस्त-पाद पक्षवध में निष्क्रिय हो जाते हैं। इस्तिर्खाऽ जिस्म अस्फल (ऊरुस्तम्भ) में कटि से नीचे का भाग निश्चेष्ट एवं संज्ञाशून्य हो जाता है। यदि विकारी हस्त-पाद को उठाकर छोड़ देवें तो स्वयम् गिर पड़ता है। रोगी की चेतना में अंतर पड़ जाता है। पाचनशक्ति विकृत हो जाती है तथा कब्ज होता है। बिना सहारा के चलना-फिरना, उठना-बैठना कठिन हो जाता है।

उपचार–फालिज, लकवा और इस्तिर्खाऽ (अंगघात) रोग के लक्षण व्यक्त होने पर रोगी को कोमल शय्या के ऊपर सुखपूर्वक किसी करवट अंधेरे कमरे में लिटाये रखें। रोगी के समीप जलती हुई अंगेठी रखें। शीतकाल में गरम कपड़े पहना-ओढ़ाकर निर्वात स्थान में रखें। कब्जनिवारण के लिये वस्ति देना, रोगी को आश्वस्त करना आदि लाभकारी उपाय हैं। प्रारंभ में तीव्र औषधि का उपयोग न करें। कब्जनिवारण के लिये केवल वस्ति करना और अन्न-जल के स्थान में कम से कम तीन दिन और अधिक से अधिक सप्ताह पर्यन्त केवल मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) देना और उसके साथ अर्क दालचीनी सम्मिलित करते रहना बहुत ही गुणकारी उपाय हैं। अस्तु, पहले सात दिन तक शहद २ तोला और अर्क गाबजबान १२ तोला पका कर पिलाते रहें। आठवें दिन यह मुंजिज देवें––

सौंफ, सौंफ की जड़, करफ्स की जड़ प्रत्येक ७ माशा, मुलेठी ५ माशा, हंसराज ७ माशा, उस्तूखुदूस ५ माशा, अंजीर ज़र्द ५ दाना, खतमी के बीज, ७ माशा, खुवाजी के बीज ७ माशा, गावजबान ५ माशा, रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः मल-छानकर खमीरा बनफशा ४ तोला, मिलाकर पिलायें। आठ नौ दिन तक उक्त योग सेवन कराकर दसवें दिन सनाय मक्की ७ माशा, सफेद निशोथ ७ माशा रात्रि में पूर्वोक्त योग में मिलाकर भिगो देवें और प्रातःकाल अमलतास की गुद्दी ५ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, यवासशर्करा ४ तोला, शकर सुर्ख ४ तोला और गुलकंद ४ तोला तथा ५ दाना मीठे बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर विरेचन देवें और अगले दिन तबरीद का योग देवें। पुनः पाँच दिन तक मुंजिज का योग पिलाने के बाद मग्ज बादाम और अमलतास का गूदा के बिना उपर्युक्त विरेचनीय योग के साथ ६ माशा हब्ब इयारज का विरेचन देवें। विरेचन का कार्य समाप्त होने के पश्चात् रोगन सुर्ख़ या रोगन कलाँ या रोगन सब्ज

की कोष्ण मालिश करायें। कुनकुना रोगन खफाश की मालिश भी पक्षवध में गुणकारी है।

विरेचन से खाली होने के उपरांत बलोत्पत्ति के लिये प्रातः काल मर्जां जवाहरवाला एक टिकिया, खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा में मिलाकर और सायंकाल अथवा प्रातः-सायं दोनों समय कुर्स खुब्सुल्हदीद १ टिकिया; अतरीफल उस्तूखुद्दूस ५ माशा में मिलाकर सेवन कराना और भोजनोत्तर दवाउल्मिस्क हार्र ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा सेवन कराना गुणकारी है। अथवा माजूनसीर उलवीखां वाली ५ माशा या माजून इजाराकी २ माशा या हब्ब इजाराकी २ गोली खिलाना या माजून फलासफा ७ माशा में १ माशा जुंदबेदस्तर पीस-मिलाकर खिलाना भी गुणकारी है।

हब्ब कुचला १ गोली भोजनोत्तर या शोधनोपरांत हब्ब सम्मुल्फार १–१ गोली प्रातः-सायं भोजनोत्तर सप्ताह पर्यंत खिलाएँ। गोली खाने के तीन दिन बाद खाँड या मिश्री का पानक (शर्बत) पिलाने से रोगी को खुलकर वमन और विरेचन होकर शरीर दोषों से शुद्ध हो जाता है। मांस से परहेज करें। भोजन अलोना (बिना नमक के) करते रहें।

लौंग का तेल और जायफल का तेल प्रत्येक ६ माशा परस्पर मिलाकर ५ बिन्दु नाक में टपकाने या पीला एलुआ १ माशा, बूरए अरमनी १ माशा और कलौंजी १ माशा कूट छानकर चुकंदर के रस में घोलकर नाक में टपकाने से भी पक्षवध एवं अर्दित में लाभ होता है। बीरबहूटी १ नग के सिर और पैर उखाड़कर पानके बीड़ा में रखकर कुछ दिन खिलाने या ५ तोला मध्वाम्बु के साथ १ माशा भांग खिलाने या चीते वा सिंहकी चर्बी विकारी अंग के ऊपर मलने से भी उपकार होता है। गोदंती भस्म १ टिकिया ५ माशा माजून योगराज गूगल में मिलाकर खिलाने से भी कुछ दिन में लाभ होता है। जुंदबेदस्तर, इयारज फैकरा प्रत्येक २ तोला कूट-छानकर चूर्ण बनाकर ३॥ माशा प्रति दिन रात्रि में सोते समय ताजे पानी के साथ खिलाने से भी लाभ होता है।

गोली का योग जो कफज पक्षवध, अर्दित, कम्पवात और एकांगवात आदि में गुणकारी है—अकरकरा, गोलमिर्च और पीपल प्रत्येक ३ माशा, पीपलामूल ६ माशा, सोंठ और शुद्ध बच्छनाग प्रत्येक १ तोला—सबको कूट-छानकर गुड़ और गोघृत में मिलाकर मूंग क बराबर गोलियाँ बना लेवें। इसमें से २ गोली प्रति दिन रात्रि में सोते समय ताजे पानी के साथ खिलायें। शोधनोपरांत इसका उपयोग करना चाहिये।

कम्पवात (राअ्शा) यदि शीतजन्य हो तो जुंदबेदस्तर, अकरकरा, हींग ३–३ माशा, ४ तोला जैतून के तेल में मिलाकर मर्दन करें। यदि कफाधिक्यजन्य

हो तो बपक्षवध के सदृश मुंजिज पिलाकर विरेचन देवें और तीव्र औषधियों के सेवन से बचें। शोधनोपरांत रोगन कुस्त (कुष्ठतैल) या रोगन सुर्ख या रोगन सीर या रोगन कुचला में से किसी एक तेल का कुछ दिन कुनकुना मर्दन करायें। शुद्धि के बाद माजून फलासफा, या माजून इजाराकी या माजून लना और दवाउल्मिस्क हार्र आदि गोदन्ती भस्म के साथ दोने से बड़ा उपकार होता है।

यदि मद्य, चाय और तमाकू के अति सेवन तथा अति व्यवाय से यह रोग हुआ हो तो रोग के मूलभूत हेतु का परित्याग करायें और मस्तिष्क एवं वातनाड़ियों को बल प्रदान करने वाले आहार-औषध, जैसे——हब्ब आसाव २ गोली या हब्ब खास १ गोली मक्खन में मिलाकर प्रातःकाल खिलायें और सायंकाल कुश्ता तिला जदीद १ टिकिया या कुश्ता तिला कलाँ २ चावल, लबूबकबीर ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा में मिलाकर खिलायें। रात्रि में कुर्स मर्जा जवाहर वाला एक टिकिया, खमीरा गावज़बान जवाहर वाला ७ माशा में मिलाकर खिलायें। इसमें माजून राअ्शा या हबूब राअ्शा का उपयोग भी गुणकारी है।

अपथ्य——इन रोगों में दीर्घपाकी, गुरु एवं आध्मानकारक पदार्थ, जैसे–गोभी उड़द की दाल, अरवी, कचालू आदि और शीतल पदार्थ, जैसे——कद्दू, हिनवाना, गन्ने का रस आदि अहितकारक हैं। शीतल जल-वायु से बचना चाहिये। सुगंध द्रव्यों का शिर के ऊपर मलना और सूंघना तथा खट्टी वस्तुओं का सेवन इन रोगों में अहितकर है। मानसिक श्रम से यथाशक्य बचें। जब तक पर्याप्त विरेचन होकर दोष शुद्ध न हो जाय, सिवाय माउल्अस्ल (मध्वाम्बु) के कोई आहार न खायें न पियें। अन्न और जल के स्थान में केवल उपर्युक्त मध्वाम्बु के योग का बारंबार सेवन पर्याप्त होता है।

पथ्य——सात दिन तक सिवाय माउल्अस्ल के अन्न-पान बिल्कुल न देवें। यदि दुर्बलता एवं क्षुधा अधिक मालूम हो तो जंगली कबूतर का शूरबा या मूंग का यूष गरम मसाला आदि डालकर पिलायें। मुंजिज के दिनों में भी यही आहार देवें। यदि दुर्बलता अधिक हो तो रोटी का छिलका (पपड़ा) निकालकर शूरबा या मूंग के यूष में भिगोकर खिलायें। विरेचनोपरांत बकरी का मांस, अरहर या मूंग की दाल, बकरी या मुर्गे का भुना हुआ मांस, मेथी का साग या करेला, अंडा, सूजी का बिसकुट, चाय और कहवा आदि सेवन करायें। रोग के आरम्भ में जितना सहन हो सके उतना अधिक उपवास कराने से रोगी को रोग से उतना ही शीघ्र आरोग्य लाभ हो जाया करता है। फलों में खजूर, खूवानी, अंजीर, बादाम आदि का सेवन भी गुणकारी है।

वक्तव्य——कफ कम्पवात के लिये भी उपर्युक्त उपाय लाभकारी है। परन्तु कम्पवात में इतना अनाहार रहना और उपवास करना अनिवार्य नहीं

हैं। अपितु शूरवा चपाती भूख से कम देते रहना चाहिये। अति चाय एवं मद्यसेवनजन्य और अति मैथुनजन्य कम्पवात में चाय और कहवा से परहेज करावें।

चौदहवां प्रकरण

तशन्नुज और तमद्दुद व कुज़ाज

नाम—(अ०) तशन्नुज (धात्वर्थ सिकुड़ना); (उ०, हिं०) ऐंठन; (सं०) आक्षेप, आक्षेपक; (अं०) कन्वल्शन (Convulsion)।

नाम—(अ०) तमद्दुद (धात्वर्थ खिंचाव या तनाव), कुज़ाज (धात्वर्थ सिकुड़ना या सूखना); (उ०, हिं०) धनुकबाय, चांदनी, (सं०) अपतानक, धनुर्वात, धनुस्तम्भ; (अं०) टेटनस (Tetanus)), ट्रिस्मस (Trismus)

तशन्नुज—का अर्थ खिंचावट है। यह रोग जब ग्रीवा, हँसली और कटिकी पेशियों में होता है तब इसे कुज़ाज कहते हैं। जब किसी अंग की वातनाड़ियाँ और पेशियाँ दोनों ओर से खिंचकर उस अंग को सीधा तान देती हैं तब इस रोग को तमद्दुद कहते हैं। तमद्दुद वस्तुतः एक प्रकार का तशन्नुज ही होता है जिसमें पेशियाँ एक ओर खिंचने के स्थान में दोनों ओर खिंच जाती हैं।

भेद—हेतु भेद से तशन्नुज चार प्रकर का होता है—(१) तशन्नुज इम्तिलाई (दोषसंचय जन्य), (२) तशन्नुज युब्सी (रूक्षता जन्य), (३) तशन्नुज रीही (वायुजन्य) और (४) तशन्नुज ईजाई (कष्ट जन्य)। व्यक्ति स्थान भेद से कुजाज के यह चार भेद होते हैं—(१) कुजाज कुद्दामी या अमामी (अन्तरायाम अपतानक—Emprosthotonos) जिसमें शरीर सामने की ओर झुक जाता है; (२) कुजाज खल्फी (बहिरायाम अपतानक कुब्ज—Opisthotonos) जिसमें शरीर पीछे की ओर अकड़ जाय; (३) कुजाज जानिबी (पार्श्वायाम अपतानक—Pleurothotonos) जिसमें शरीर अकड़कर एक पार्श्व की ओर झुक जाता है और (४) कुजाज मुस्तकीम (दण्डापतानक—Orthotonos) जिसमें शरीर अकड़कर बिल्कुल सीधा हो जाता है। परन्तु हेतु दृष्ट्यानुसार भी तशन्नुज की भाँति इसके यह चार भेद होते हैं—(१) कुज़ाज इम्तिलाई, (२) कुजाज युब्सी (३) कुज़ाज रीही और (४) कुज़ाज ईजाई या जरबी (अभिघातज) जो अपेक्षाकृत अधिक होता है।

हेतु--अभिघात, वातनाड़ीगत दबाव, वातनाड़ी शोथ, कतिपय रोग, जैसे मृगी, सन्यास और मस्तिष्क शोथ आदि, मूत्रविषमयता, अति मद्यसेवन जनित विषमयता, कुपीलुसेवनजनित विषमयता, बालकों में उदरकृमि और दन्तोद्भेद, भय, कब्ज और वस्त्यश्मरी आदि, पुरुषों में हस्तमैथुन, अति मैथुन आदि, स्त्रियों में आर्तवविकार और गर्भधारण का समय तथा विषधर जंतुओं के दंशजन्य विषप्रभाव, अतिशीत एवं खुनाक (कण्ठ-शोथ), या सरसाम, पार्श्वशूल और संशोधन आदि इसके हेतु होते हैं।

लक्षण--तशन्नुज में कुछ या समस्त ऐच्छिक अनैच्छिक पोशियां सत्वर एवं बारी बारी से ऐंठती हैं और अकस्मात हलकी मूर्च्छा होकर हाथ-पांव और शरीर की अन्य पेशियाँ सिकुड़कर शरीर कड़ा हो जाता है। नेत्रगोलक ऊपर को घूमजाते हैं। चेहरा लाल और कुछ देर बाद नीला हो जाता है और श्वास कठिनता-पूर्वक आता है। कुज़ाज में ग्रैवेयी पेशियाँ नीचे को खिचकर कठिन हो जाती हैं। रोगी ग्रीवा में वेदना एवं कठोरता अनुभव करता है और ग्रीवा को इधर-उधर नहीं फेर सकता। तदुपरांत सिर पीछे को खिच जाता है और जबड़े बन्द हो जाते हैं अर्थात् दांतीं लग जाती है। कभी-कभी शरीर तीर या धनुष की भांति अकड़ जाता है। परन्तु हाथ-पांव की हथेलियां, नेत्र और जिह्वा की पेशियाँ आक्षेपग्रस्त नहीं होतीं। भौंहें सिकुड़कर नेत्र उभर आते हैं और उनसे अश्रु जारी हो जाता है। मुख के किनारे खिचकर दांत निकल आते हैं। रोगी बोलने में असमर्थ होता है, किन्तु चेतना और संज्ञा ठीक होती है। निद्रा नहीं आती, कब्ज होता है। रोगी से वार्तालाप करने या उसे स्पर्श करने से या शय्या के घर्षण से या वायु के स्पर्श से रोग का दौरा होने लगता है। प्रथम दौरा शीघ्र होता और शीघ्र दूर हो जाता है। पर अंततः दौरे शीघ्र शीघ्र होते और आक्षेपमय अवस्था पेशियों में देर तक बनी रहती है। जब कुज़ाज के दौरे शीघ्र-शीघ्र पड़ें और देर में शांत हों तो परिणाम अशुभ होता है।

सापेक्ष निदान--तमद्दुद और तशन्नुज--तशन्नुज में अंग एक ओर को, पर तमद्दुद में वह दोनों ओर खिचकर तन जाता है। तमद्दुद और कुज़ाज--तमद्दुद सामान्य है और कुज़ाज विशेष अर्थात् तमद्दुदका वह विशिष्ट रूप जिसमें शरीर ऐंठ कर बिल्कुल सीधा हो जाता है, कुज़ाज कहलाता है।

उपचार--मूल कारण को ज्ञात कर दूर करने का यत्न करें। यदि किसी रोग के कारण हो तो उसकी चिकित्सा की ओर ध्यान देवें। यदि श्लैष्मिक द्रवों की अधिकता से हो तो कफ का मुंजिज (श्लेष्मपाचन) पिलाकर विधिवत् दो तीन विरेचन देवें। वे सभी उपाय जिनका उल्लेख फालिज और लकवा

के प्रकरण में हो चुका है, आवश्यकतानुसार काम में लावें। विरेचन द्वारा श्लेष्मा का शोधन करने के उपरांत निम्न गोलियां कुछ काल पर्यंत खिलाते रहें।

गोली का योग—अकरकरा, हींग, जवाशीर और मीठा कुट प्रत्येक ३ माशा, जुंदबेदस्तर १।। माशा, काली मिर्च १ माशा—सबको कूट-छानकर आवश्यकतानुसार मधु में गूंधकर चना प्रमाण की गोलियां बनायें। इसमें से ३-३ गोलियां प्रातः-सायंकाल जल के साथ खिलायें। कब्ज न होने देवें। कब्ज निवारण के लिये कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि में सोते समय दूसरे-तीसरे दिन खिलाते रहें।

जुंदबेदस्तर, फर्फ्यून और शिलारस प्रत्येक ४ माशा—सबको महीन पीसकर २ तोला सफेद मोम, ४ तोला रोगन सोसन या ४ तोला एरण्ड तैल में मिलाकर विकारी अंग के ऊपर मर्दन करें। रूक्षताजन्य तशन्नुज और तमद्दुद में स्निग्ध उपायों का उपयोग करें। माउज्जुब्न देवें अथवा बकरी का दूध बढ़ा-घटाकर जैसा कि जुनून के प्रकरण में लिखा जा चुका है, उपयोग करायें। स्निग्ध (तर) और पतले आहार, जैसे यवमंड आदि देवें।

आवेगकालिक उपचार—रोगी को पीठ के बल सीधा लिटायें। सिर और वस्ति किसी भांति ऊँचा रखें। ग्रीवा, कंठ और वक्ष के कपड़ों का बन्धन खोल देवें। यदि कोई संकीर्ण वस्त्र धारण किये हो तो उसे ढीला कर देवें। रोगी के समीप कोलाहल न होने देवें। आक्षेपग्रस्त अंग को धीरे-धीरे कोई गरम तेल मलकर सीधा करते जायँ। नौशादर ३ माशा, चूना १ तोला पानी में मिलाकर रोगी को सुंघायें। वस्ति में मूत्र संचित हो तो शलाका द्वारा उसका उत्सर्जन करें। हलके विरेचन या वस्ति के द्वारा कोष्ठ की शुद्धि करें।

वस्ति का योग—देशी साबुन १ तोला, नमक ३ माशा; साबुन बारीक कर और नमक पीसकर २ सेर गरम पानी में मिलाकर वस्तियन्त्र से यथाविधि वस्ति देवें। अनिवार्य आवश्यकता होने पर पाशोया करें। रोग का दौरा रुक जाने के पश्चात् विरेचन देवें। विरेचनोपरांत बल प्राप्ति के लिये कुर्श मर्जां जवाहरवाला १ टिकिया, खमीरा गावजबान जवाहरवाला ७ माशा में मिलाकर प्रातःकाल खिलावें और खमीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला ५ माशा, कुश्ता तिला जदीद १ टिकिया मिलाकर सायंकाल खिलायें अथवा माजून मुकव्वी व मुमसिक ४ रत्ती, माजून फलासफा ७ माशा में मिलाकर खिलाने या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा में खुब्सुल्हदीद १ टिकिया मर्जां (प्रवाल) १ टिकिया मिलाकर खिलाने और बाबूना का तेल, गुलरोगन, मस्तगी का तेल और कुष्ठ तैल आदि में से किसी तेल का विकारी अंग के ऊपर मर्दन करने से लाभ होता है।

अपथ्य--शीत और शीतल जल एवं वायु के उपयोग से तथा बादी एवं गुरु पदार्थ जैसे-गोभी, आलू, अरवी, उड़द की दाल, मटर आदि के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--रोग के लक्षण घटने और दौरा रुकने के पश्चात् आवश्यकतानुसार लघु एवं पतला आहार, जैसे--यखनी या अरहर-मूंग की दाल या मुर्गा वा बकरी का शूरबा अकेला या चपाती के साथ देवें। शाकों में करेला या मेथी वा पालक का साग और फलों मे से बादाम, अंजीर, खूबानी और खजूर आदि दे सकते हैं।

पन्द्रहवाँ प्रकरण

खदर या सुप्तता

नाम--(अ०) खदर; (उ०, हिं०) सुन्नबहरी, सुन्न हो जाना, (सं०); स्वाप, सुप्तता, स्पर्शाज्ञता; (अं०) अनस्थेशिया (Anaesthesia)।

एक वातव्याधि जिस में विकारी स्थल सुन्न हो जाता है अर्थात् उसकी संवेदना शक्ति विकृत वा नष्ट हो जाती है और रोगी को उक्त स्थल (वा अंग) में चीटियों के रेंगने और सूइयों के चुभने की-सी अवस्था अनुभूत होती है। यह रोग प्रायः फालिज और लकवा से पूर्व होता है। कभी उनके साथ और कभी उनके विना भी प्रगट होता है। वस्तुतः यह फालिज और इस्तिर्खाऽ का ही एक भेद है जिसमें केवल अंग की संवेदना नष्ट हो जाती है। जब चेष्टा भी नष्ट हो जाय तो उसे इस्तिर्खाऽ के नाम से अभिहित करते हैं।

हेतु--इनके हेतु भी वही होते हैं जिनका उल्लेख फालिज के प्रकरण में हो चुका है। पर कभी सौदावी दोष से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--जिस स्थान वा अंग में यह रोग होता है उसकी संवेदना नष्ट हो जाती है अर्थात् उक्त स्थान पर चुटकी लेवें या काटें तो कोई कष्ट अनुभव नहीं होता परंतु अंग चेष्टा करने में समर्थ होता है। कभी-कभी चेष्टा में भी विकार प्रगट हो जाता है। किन्तु चेष्टा सर्वथा नष्ट नहीं होती। दोषों के प्रकोप से होने पर इसमें अलग-अलग दोष के लक्षण भी देखे जाते हैं।

उपचार--कफज में फालिज (पक्षवध) के समान चिकित्सा करें। सर्दी से हो तो उष्ण तेलों की मालिश करें, और अंग को सेकें। उष्ण औषधियों को जल में क्वाथ करके उसका अंग के ऊपर परिषेक करें। रक्तज हो तो किसी स्थानीय चिकित्सक के निर्देश से सिरावेध करायें। सौदाजन्य होने पर सौदा का शोधन करें। शोधनोपरांत माउज्जुब्न और स्निग्ध औषधियों (मुरत्तिबात)

का उपयोग करायें। प्रारंभ में यह नुसखा देते हैं—माजून खद्र ७ माशा प्रातः-काल खिलाकर पित्तपापड़ा, चिरायता, सरफोका, मुंडी प्रत्येक ७ माशा, ,उन्नाब ५ दाना, काली हड़, उशबा मगरबी ७-७ माशा रात्रि में जल में भिगोकर प्रातः काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें। सायंकाल सफूफ खद्र ७ माशा खिलाकर निगंद बाबरी १ तोला, कालीमिर्च ५ दाना जल में पीस-छानकर पिलायें। विकारी अंग के ऊपर यथा प्रमाण कोष्ण जिमाद खद्र का मर्दन करें। यथावश्यक अकरकरा को मद्य में पीसकर किंचित् जैतून का तेल मिलाकर मर्दन करना भी गुणकारक है।

यह चूर्णयोग भी लाभकारक है—दरूनज अकरबी, नरकचूर, रूमीमस्तगी, कैंची से कतरे हुए अबरेशम का चूरा (गुब्बार), बूजीदान, बिल्लीलोटन के बीज, गावजबान, छोटी इलायची प्रत्येक ३ माशा, जदवार खताई, ऊदगर्की १-१ माशा, ऊदसलीब, तज, दालचीनी, फिरजमुश्क के पत्र, जटामांसी प्रत्येक २ माशा, मीठा सुरंजान ४ माशा, बहमन सुर्ख व सफेद प्रत्येक ६ माशा, सबके बराबर मिश्री कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमें से ७ माशा चूर्ण १२ तोले अर्क सौंफ के साथ प्रातःकाल फँका देना चाहिए।

अपथ्य—अम्ल, बादी, गुरु और आध्मानकारक पदार्थों से परहेज करना चाहिये। कफकारक वस्तुयें और आलू, अरवी, मटर, गोभी, मसूर की दाल आदि न खायें। जल में भीगने एवं शीतल जल के स्नान और शीतल वायु के झोंके से और जल पीने से, चावल और बर्फ के सेवन से, दही, छाछ, अचार आदि से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी, पतला, भूख से कुछ कम, बलानुसार आहार देवें। बकरी के मांस या मुर्गा का शूरवा चपाती के साथ या करेला की तरकारी या अरहर वा मूंग की दाल और घी जितना पच सके देना चाहिए।

नेत्ररोगाध्याय (अमराजुलऐन)—२

नाम—(अ०) अम्‌राजुल्‌ऐन; (फा०) अमराजे चश्म; (हिं०) आँख के रोग; (सं०) नेत्ररोग; (अं०) डिजीजेज ऑफ दि आई (Diseases of the eye) वैद्यक का सर्वप्रथम प्रयोजन स्वास्थ्यरक्षण है। अतएव प्रथम यहां नेत्र के स्वास्थ्यरक्षा का वर्णन किया जाता है।

नेत्रीय स्वास्थ्यरक्षण

नेत्र की स्वास्थ्यरक्षा का मूल भूत सिद्धान्त यह है कि नेत्राहितकरों से परहेज किया जाय और नेत्रहितकरों का ग्रहण किया जाय; जिसमें नेत्र का वर्तमान स्वास्थ्य स्थिर रहे और नेत्र के भावी रोग एवं उपद्रव से शांति रहे। नेत्र की वास्तविक रक्षा प्रथमतः इस बात पर निर्भर करती है कि प्रथम नेत्र की मूलभूत प्रकृति को मालूम करें। नेत्र की आधारभूत प्रकृति उष्ण-स्निग्ध (हार्र-रतब) है। पर वस्तुतः यह मानसिक प्रकृति (मिजाज दिमागी) के अधीन हुआ करती है। सुतरां नेत्रगत लालिमा, स्रोतोविस्फार, उष्णस्पर्श और सत्वर गतिशील होना नेत्रगत उष्णता के लक्षण हैं। नेत्र की नीलवर्णता, स्रोतोसंकोच, शीतस्पर्श, गति की मंदता, नेत्रगत शीतलता के लक्षण हैं। इसी प्रकार नेत्रों का उभार और मृदुस्पर्श नेत्रगत स्निग्धता और नेत्र की रूक्षता और उनका संकुचित एवं अन्दर को धँसा होना नेत्रगत रूक्षता के लक्षण हैं। यह भी स्मरण रहे कि प्रत्येक व्यक्ति के नेत्र की दशा उसकी वय, प्रकृति और बलानुसार भिन्न-भिन्न होती है। अस्तु, प्रकृति-वय और बलानुसार नेत्र के वर्तमान स्वास्थ्य का स्थिर रखना ही स्वास्थ्य-रक्षक का कर्तव्य-कर्म है। सुतरां इस प्रयोजन के लिये अहितकर पदार्थों से बचना और हितकर पदार्थों का ग्रहण करना आवश्यक है।

नेत्राहितकर

धूलि-कणादि, अधिक धूम्र, उष्ण या अधिक शीतल वायु, अति व्यवाय, मादक द्रव्यों का सेवन, आमाशय को सांद्रीभूत करने वाले और बाष्पोत्पादक पदार्थों का सेवन, प्रकाशमय एवं चमकीले पदार्थों का अधिक देखना, बारीक अक्षरों का अधिक अध्ययन, अधिक रोना, शोक एवं क्रोध, (अस्‌र व मगरिब) के मध्य मात्रा से अधिक लेखनकार्य करते रहना, आमाशय और मस्तिष्क के विकार, नेत्र में किसी औषधि का अनावश्यक प्रयोग आदि नेत्र के स्वास्थ्य के लिये अहितकर हैं।

नेत्रहितकर

स्वच्छ और निर्मल जल से नेत्र प्रक्षालन करना, हरियाली और बगीचों की सैर करना, चंद्रमा का दर्शन, बहता पानी देखना, लघु और अनुष्णाशीत आहार

का यथाप्रमाण सेवन, तैल का शिरोऽभ्यङ्ग करते रहना और सोते समय अंजन लगाकर सोना नेत्र की दृष्टि के लिये उपयुक्त एवं लाभकारी हैं।

नीचे नेत्र रोगों में से केवल उन प्रचुरता से होने वाले रोगों का वर्णन किया जाता है जिनकी चिकित्सा सहज और सुलभ है। कतिपय ऐसे रोग जो दुश्चिकित्स्य हैं अथवा जिनकी चिकित्सा असंभव है अथवा शल्यकर्म के बिना जिनका आराम होना असंभव है, ऐसे कठिन एवं असुविधाजनक नेत्र रोगों का वर्णन यहां नहीं किया गया है।

१—ज़ोफ़े बसर

नाम—(अ०) जोफुल् बसर; (उ०) जोफे बसारत; (सं०) दृष्टि-दौर्बल्य; (अं०) ऐस्थीनोपिया (Asthenopia)।

इस रोग में दृष्टि कमजोर हो जाती है जिससे बारीक अक्षर नहीं पढ़े जाते और साधारण दूरी की चीजें भली भाँति दिखाई नहीं देतीं।

हेतु—नेत्र की पेशी और वातनाड़ी तथा मस्तिष्क की दुर्बलता, मानसिक कार्यों तथा अध्ययन की अधिकता, बारीक वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखना, अति व्यवाय, तीव्र कब्ज, प्रसेक और प्रतिश्याय या मानसिक रोगों में चिरकाल तक फँसा रहना, शीतल एवं गलीज पदार्थों का पुष्कल उपयोग, तमाकू एवं अन्यान्य मादक द्रव्यों का अतिसेवन, शुक्र मेह और वृद्धावस्था आदि तथा शिरके ऊपर आघात लगना और शरीर से रक्त निकलकर अधिक दुर्बलता का होना आदि इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण—दूर की वस्तुयें भली भाँति नजर नहीं आतीं। बारीक अक्षर अच्छी तरह पढ़े नहीं जाते। थोड़ी देर लिखने-पढ़ने या कोई नजर का काम करने से नेत्र थक जाते हैं और उनके सामने अंधेरा आ जाता है। पुस्तक पढ़ते-पढ़ते अक्षरों पर दृष्टि नहीं जमती और उसके अक्षर मिले-जुले, गतिशील एवं नाचते हुए दिखलाई पड़ने लगते हैं। नेत्र से पानी बहने लगता है, शिर में हलका-सा दर्द होता है। कभी-कभी दृष्टि धुंधली हो जाती है।

चिकित्सा—मूल कारण को ज्ञातकर दूर करें। देरतक और बारीक वस्तुओं के देखने का काम त्याग देवें। नेत्र को आराम देवें। धूलि-कण तथा मैल-कुचैल से नेत्र को स्वच्छ रखें। अधिक रोने और अधिक सोने तथा चमकदार पदार्थों पर दृष्टि जमाने से तथा अधिक उष्ण एवं शीतल वायु से परहेज करें। यदि तमाकू, सिगरेट या मद्य प्रभृति अन्यान्य मादक द्रव्यों के अतिसेवन से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो इनका परित्याग कर देवें या सेवन कम कर देवें। प्रसेक और प्रतिश्यायजन्य हो तो इनकी चिकित्सा करें। गुरु एवं विष्टम्भी आहार के सेवन

से हो तो इनका सेवन त्याग देवें। कब्ज हो तो अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि में खिला दिया करें। यदि इसके साथ शिरःशूल, शिरोभ्रम और बादी हो तो अतरीफल कश्नीजी १ तोला रात्रि में सोते समय खिला दिया करें। प्रातःकाल मस्तिष्क को बल देने के लिए खमीरा गावज़बान जवाहरवाला ५ माशा, मजूं जवाहरवाला १ टिकिया मिलाकर खिलायें। मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा में बनारसी आमले का मुरब्बा १ नग, चांदी के एक वर्क में लपेटकर प्रथम खिलायें और ऊपर से ५ दाने मीठे बादाम का मग्ज, छिले हुए काहू के बीज ३ माशा, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज ३ माशा—इनको १२ तोला अर्क गावज़बान में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर या ८ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और कुहलुल् जवाहर या सुर्मा नूरुल्ऐन या कुहलसद्फ या कुहल रोशनाई में से कोई एक सुर्मा (अंजन) प्रातः-सायंकाल नेत्र में लगायें। मस्तिष्क की रूक्षता दूर करने के लिए ३ माशा विहीदाना और ३ माशा गावज़बान ६ तोला अर्क गावज़बान में भिगोकर लुआब निकालें और छिले हुए काहू के बीज ३ माशा, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज ३ माशा, १२ तोला अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रातः-सायंकाल पिलायें। रात्रि में सोते समय एक नग हड़का मुरब्बा धोकर खिला दिया करें। रोगन कद्दू, रोगन काहू या रोगन लबूब सब्आ में से किसी तेल का शिरोऽभ्यङ्ग करें। हरे सौंफ का रस निकालकर उसमें पीली हड़का छिलका घिसकर सलाई से लगाने से नेत्र को शक्ति प्राप्त होती है। ४ दाना मसीकृत समूचा अखरोट, १० दाना मसीकृत, पीली हड़ की गुठली, ५ दाना कालीमिर्च—इनको हरे सौंफ के रस में खरल करें। जब सुर्मा की भांति बारीक हो जाय तब सुखाकर रखें और प्रातः सायंकाल नेत्र में अंजन करें।

अन्य सुर्मा—बन्दूक से छूटी हुई सीसे की गोली १ तोला, काला सुर्मा १ तोला, मोती १ माशा हरे सौंफ के रस या अर्क सौंफ में खरल करके सुर्मा की भाँति बारीक करके रखें और प्रातः-सायंकाल नेत्र में अंजन करें।

हरीरा मग्ज बादामवाला—बादाम का मग्ज ५ दाना, मीठे कद्दू के बीज की गिरी ३ माशा, तरबूज के बीज की गिरी ३ माशा, निशास्ता ३ माशा, बबूल का गोंद ३ माशा, सफेद पोस्ते का दाना ३ माशा, काहू के छिले बीज ३ माशा, इनको जल में पीसकर २ तोला मिश्री मिलाकर अग्नि के ऊपर रखें। जब किसी भाँति गाढा हो जाय तब उतारकर पिलायें। यह नेत्र्य, नेत्रज्योतिवर्धक एवं मेधाजनक है।

अपथ्य—मानसिक परिश्रम, अम्ल, बादी एवं आध्मानकारक वस्तुओं, जैसे गोभी, उड़द की दाल, अरवी, मटर आदि, तेल के पके हुए पदार्थ, लहसुन,

प्याज, मछली, मसूर की दाल और बैंगन आदि से परहेज करें, लालमिर्च कम खायें। चमकीले पदार्थों की ओर ध्यान से न देखें और अति स्त्री-सहवास, मादक पदार्थ और साधारण नेत्राहितकर वस्तुओं से बचें।

पथ्य— लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, जैसे—चावलों का खसका, खिचड़ी, चपाती, बकरी का शूरबा, दूध, मक्खन, मलाई, शाकों में कद्दू, तुरई, अरहर, मूँग की दाल और फलों में अनार, मीठा अंगूर, बादाम, चिलगोजा आदि सेवन करायें। प्रातः सायंकाल हरियाली की ओर भ्रमण के लिये जाना, शीतल जलावगाह और शीतल जल में नेत्र खोल रखना इस रोग में गुणकारी उपाय हैं।

२—कुम्न:

नाम—(अ०) कुम्नः (धूम्रदर्शन); (उ०, हिं०) धुंध व गुब्बार, (सं०) धूम्रदर्शन; (अं०) एम्ब्लीओपिया (Amblyopia)।

वक्तव्य—कुम्नः संज्ञा से इन तीन रोगों का ग्रहण होता है—(१) धुंध (धूम्रदर्शन—जुलमतेबसर)—इसमें शुष्काक्षिपाक की भाँति नेत्र में ललाई एवं अस्वच्छता उत्पन्न हो जाती है। समस्त पदार्थ धुंधले एवं धूमिल दिखाई देते हैं। नेत्रकण्डू होता है और रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके नेत्र पहले से बड़े हो गये हैं। (२) पलक का भारीपन जिसमें पलक के अन्दर सांद्र वायु संचित होकर गौरव (भारीपन) उत्पन्न कर देती है। जागने पर रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसके नेत्र में बालू के कण (रेत) वा मिट्टी पड़ गई है। (३) कनीनिका पटल के पीछे पूयसंचित हो जाना (कमूलुल्मिद्दः)।

हेतु—प्रथम भेद का कारण सौदावी वाष्पका चढ़कर नेत्र की ओर आना और चाक्षुषी ओज (रूह) को मलिन कर देना है। द्वितीय भेद का कारण प्रायः सांद्र वाष्प होते हैं, जो नेत्र के पटलों के नीचे आवृत होते हैं। तृतीय भेद में कनीनिका में व्रण उत्पन्न होकर उसका विदीर्ण हो जाना या तीव्र नेत्राभिष्यंद या उग्र शिरः शूल का प्रगट होना इसके हेतु हैं।

लक्षण—उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त (१) धीरे-धीरे दृष्टि बहुत कम हो जाती है। यहाँ तक कि रोगी दैनिक कार्य, निकटवर्ती पदार्थों के दर्शन और विभिन्न वर्णों के पहचानने में विवश हो जाता है। प्रकाश से घबराता और शिरःशूल होता है, इत्यादि।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूलभूत कारण को दूर करें। यदि रोग का हेतु सौदावी वाष्प हो तो सौदावी नेत्राभिष्यन्द के उपाय काम में लेवें और दोषपाचन एवं (तरतीब) के उपरांत यथा विधि सौदा का सामान्य और विशेष शोधन करें। तदुपरांत—(१) हरी धनियां को यवकुट करके नेत्र के

ऊपर बाँधें, (२) ५ माशा सूखा धनिया को १२ तोला अर्क मकोय में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें। इसी प्रकार (३) छिले हुए जौ ३ तोला (४) समूचा पोस्ते की डोडी २ तोला, दोनों को क्वाथ कर उससे नेत्र को धोयें और बफारा देवें और सौदावी नेत्राभिष्यंद के उल्लिखित अन्य असंसृष्ट द्रव्य काम में लेवें।

संसृष्ट द्रव्योपचार--शोधनोपरांत (१) सोते समय नेत्र में बासलीकून कबीर सलाई से लगावें। इसी प्रकार (२) जरूर अस्फर या (३) शियाफ अहमर लय्यिन या (४) शियाफ गोरा यथा विधि सेवन करें और सौदावी नेत्राभिष्यंद में वर्णित अन्यान्य प्रलेप, पतले लेप और परिषेक आदि योगों का व्यवहार करें। लघु एवं बल्य आहार देवें। गुरु एवं आध्मानकारक पदार्थों से परहेज करें। कब्ज न होने देवें।

३--रमद।

नाम--(अ०) रमद; (फा०) आशोबचश्म; (उ०, हिं०) आँख दुखना, आँख आना; (सं०) नेत्राभिष्यन्द; (अं०) ऑफ्थैल्मिया (Ophthalmia) **कञ्जंक्टिवायटिज** (Conjunctivitis)।

इस रोग में नेत्रगोलक के ऊपर और पपोटों के अन्दर आवरण करनेवाली झिल्ली शोथयुक्त हो जाती है।

वक्तव्य—प्राचीन यूनानी हकीमों ने उष्ण नेत्राभिष्यंद को रमद और शीतल नेत्राभिष्यंद को 'तकद्दुर' या 'तखस्सुर' के नाम से अभिहित किया है। परन्तु; शैख बूअलीसीना एवं स्वतन्त्र यूनानी हकीमों ने नेत्रावरक झिल्ली के शोथ को चाहे वह उष्ण हो या शीतल, 'रमद हकीकी' (वास्तविक नेत्राभिष्यन्द) के नाम से अभिहित किया है और नेत्र की केवल लालिमा या मलिनता की जो नेत्रावरक झिल्ली के बिना शोथ के होती है, 'तकदुदुर' या 'तखस्सुर' लिखा है और इसे हकीकी नहीं अपितु, मजाजी रमद के नाम से अभिहित किया है। क्योंकि; इसमें नेत्र के अन्दर धूएँ या धूलिकणादि के क्षोभ से शोथरहित केवल ललाई उत्पन्न हो जाती है। हां, तकद्दुर कभी वास्तविक नेत्राभिष्यंद का पूर्वरूप होता है और जब यह बढ़ जाता है, तब रमद (नेत्राभिष्यंद) हो जाता है।

भेद--विभिन्न हेतु और लक्षण के विचार से रमद हकीकी के कई भेद होते हैं। परन्तु; यहाँ उनमें से कतिपय आवश्यक एवं प्रधान भेदों का वर्णन किया जाता है—

शैख बूअलीसीना **के मत से रमद के दो भेद होते हैं--(१) रमद हकीकी**

६

(नेत्रा-वरक शोथ) अर्थात् सशोथ नेत्राभिष्यंद और (२) रमद मजाजी अर्थात् अशोथ नेत्राभिष्यंद (तकद्दुर)। तकद्दुर को अंगरेजी में हाइप्रीमिया ऑफ, कञ्जंक्टाइवा (Hypremia of Conjunctiva) कहते हैं।

जर्जान और एलाकी के मत से रमद के तीन भेद होते हैं-(१) तकद्दुर (२) रमद जईफ और (३) रमद कवी (शदीद)।

जालीनूस ने दोषानुसार इसके चार भेद लिखे हैं--(१) रमद दम्वी (रक्तज नेत्राभिष्यंद--Purulent Conjunctivitis or Opthalmia), (२) रमद सफरावी (पित्तज नेत्राभिष्यंद--Mucopurulent Conjunctivitis)।

(३) रमद बल्गमी (कफज नेत्राभिष्यंद--Acute catarrhal Conjunctivitis) ।

और (४) रमद सौदावी (सौदावी नेत्राभिष्यंद—Follicular Conjunctivitis) ।

इनमें से प्रथम और द्वितीय को रमद हार्र (उष्ण नेत्राभिष्यंद) और तृतीय एवं चतुर्थ को रमद बारिद (शीतल नेत्राभिष्यंद) कहते हैं।

इनके अतिरिक्त इसके कतिपय निम्न भेद और भी हैं, जैसे--रमद नजली (प्रतिश्यायजन्य नेत्राभिष्यंद--Acute catarrhal Conjunctivitis), रमद शिर्की, वर्दीनज (रक्तजाधिमन्थ--Epidemic Conjunctivitis) रमद सूजाकी आदि।

हेतु--धूएँ या धूलिकणादिका नेत्र में क्षोभ उत्पन्न करना, तीव्र उष्ण एवं शीत, बालकों में दन्तोद्भेद, किसी उष्ण वा शीतल दोषका प्रकोप या वृद्धिगत होना, किसी कठोर वस्तु का नेत्र में पड़ना आदि इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण—रमद मजाजी (तकद्दुर, तखस्सुर) में नेत्र के अन्दर साधारण लालिमा और सूजन होती है तथा नेत्र से अश्रु भी बहते हैं। इसमें नेत्रावरक झिल्ली में सूजन नहीं होती। केवल नेत्र मलिन (अस्वच्छ) होता है। रमद हकीकी में रमद मजाजी की अपेक्षया सभी लक्षण तीव्र होते हैं। अस्तु, यदि रक्तदोष इसका हेतुभूत हो, तो शरीर में रक्त की प्रगल्भता के सामान्य लक्षण के साथ नेत्र में ललाई एवं शोथ अधिक होता है। नेत्र से अश्रु अधिक बहते हैं। कनपुटियों में दर्द की टीसें उठती हैं। प्रायः चैती (रबी) की ऋतु में युवाओं को यह रोग अधिक होता है। इसमें चाक्षुषी सिराएँ उभरी हुई और दोष से परिपूर्ण नजर आती हैं। रमद सफरावी में दम्वी (रक्तज) की अपेक्षया उग्र लक्षण होते हैं अर्थात् इसमें सूजन और खटक अधिक होती है। किन्तु; तनाव और स्राव आदि कम होते हैं। नेत्र में ललाई भी कम होती है। रोगी के मुख

का स्वाद तिक्त होता है और पित्तप्रकोप के अन्यान्य लक्षण विद्यमान होते हैं। रमद् बल्गमी में सूजन अधिक होने के कारण नेत्र में अत्यधिक भारीपन मालूम होता है और नेत्र से मल एवं जलस्राव अधिक होता है। ललाई बहुत कम होती है। प्रातःकाल नींद से उठने पर पलक चिपके हुए होते हैं। मुख का स्वाद फीका होता है और कफप्रकोप के अन्यान्य लक्षण पाये जाते हैं। इस प्रकार का नेत्राभिष्यंद प्रायः बालकों और वृद्धों को हुआ करता है। रमद् सौदावी इसमें नेत्र में, शुष्कता एवं गौरव होता है। नेत्र के सम्मुख अंधेरा-सा छाया रहता है। परन्तु; नेत्र लाल नहीं होते, अपितु पलक लाल होते हैं। सौदा-प्रकोप के अन्यान्य लक्षण विद्यमान होते हैं। प्रायः खरीफ की ऋतु में इस प्रकार का नेत्राभिष्यंद होता है। रमद् नजली में नला (प्रसेक) का कष्ट होता है। रमद् शिरकी में जिस अंग के अनुबन्ध से यह रोग होता है, उसमें कोई विकार पाया जाता हैं। वर्दीनज अत्युग्र प्रकार का नेत्राभिष्यंद है। इसमें शोथ की अधिकता से नेत्रगत कृष्णभाग ढँक जाता है और सभी लक्षण अत्युग्र होते हैं। रोगी नेत्र नहीं बन्द कर सकता। कभी शोथगत तनाव से चाक्षुषी सिराएँ फट जाती हैं, जिससे नेत्र से रक्त आने लग जाता है। नेत्र गहरा लाल हो जाता है। प्रायः यह रोग महामारी के रूप में फैलता है।

रात्रि के समय नेत्राभिष्यंद के सभी भेद उग्र एवं अत्यंत कष्टदायक होते हैं। जिस नेत्राभिष्यंद रोग में पुष्कल अश्रुस्राव हो, वह शीघ्र आराम होता है। पलकों का परस्पर चिपकने लगना दोषपाकारंभ और नेत्र से गाढ़े द्रव एवं मल का निस्सरित होना सम्यक् दोषपाक के लक्षण हैं।

चिकित्सासूत्र--नेत्राभिष्यंद में अधिक प्रकाश से परहेज करना चाहिए। यदि संभव हो तो अंधेरे स्थान में रहना चाहिए अथवा नेत्र के आगे या ऊपर हरा कपड़ा रखना चाहिए अथवा हरा ऐनक (चश्मा) लगाना चाहिए। धूलि-कण एवं धूम्र से भी नेत्र की रक्षा करनी चाहिये। उग्रावस्था में विरेचन से पूर्व कोई औषधि नेत्र में नहीं लगानी चाहिए। पर यदि हेतु साधारण 'अल्प हो तो दो-तीन दिन बीतने पर बिना शोधन के भी नेत्र में औषध का उपयोग कर सकते हैं। हेतु सबल होने की दशा में शोधन से पूर्व समस्त पिच्छिल (लुआबदार) द्रव्य, जैसे शियाफ अब्यज आदि का सेवन वर्ज्य है।

चिकित्सा में सदैव मार्दवकारक एवं वाष्प, प्रतिलोमकारक ओषधियां तथा दोषविलोमकारक उपाय ग्रहण करने चाहिए। गुरु एवं बादी आहार, अम्ल, एवं लवण पदार्थ और मांस सेवन नहीं करना चाहिए। अधिक मिष्ट पदार्थों का पुष्कल उपयोग भी वर्जित है। सिर या कान में कोई तेल भी नहीं डालना चाहिए। यथासंभव स्वापजनन द्रव्यों का उपयोग नहीं होना

चाहिए। किन्तु; उग्र वेदना होने पर इनका उपयोग करने में कोई हर्ज नहीं है।

चिकित्साक्रम—साधारण गर्मी से होनेवाले नेत्राभिष्यंद में निम्न शीतजनन (तबरीद) उपाय लाभकारी होते हैं। बिहीदाना ३ माशा जल में भिगोकर लवाब निकालें। उन्नाव ५ दाना और तरबूज के बीज की गिरी ३ माशा जल में पीस-छानकर उक्त लुआब और शर्बत नीलूफर २ तोला मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें और बकरी का दूध सिर के ऊपर मलें तथा यह लेप लगायें—रसवत, भुनी हुई फिटकिरी काली हड़, गिल अर्मनी, लाल चन्दन प्रत्येक ३ माशा, अफीम और केसर प्रत्येक ६ रत्ती जल में पीसकर बाहर नेत्र के पलकों के ऊपर या नेत्रमंडल चतुर्दिक लेप करें। लोधपठानी ३ माशा, कपूर १ माशा कूट-छानकर दो पोटलियाँ बाँधकर पोस्ते की डोंडी के पानी में तर करके नेत्र के ऊपर फेरें। यदि इन साधारण उपायों से लाभ न हो और नेत्राभिष्यंद का कारण कोई बलवान् उष्ण दोष हो तो किसी स्थानीय चिकित्सक के परामर्श से अनुकूल दिशा की सरारूसिराका वेधन करें अथवा दो दिन तक कान के पीछे और गुद्दी पर ७–७ जोंके लगायें। शोधन की अपेक्षा होने पर मुञ्जिज का निम्न योग सप्ताहपर्यंत पिलायें—गुलमुण्डी ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, गुलनीलूफर ५ माशा, गावजवानपत्र ५ माशा, गुलबनफ्शा ७ माशा, पित्तपापड़ा (पत्र) ७ माशा, सौंफ ७ माशा, इनको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें। आठवें दिन इसीमें मस्तिष्क-शिरोरोग में वर्णित विरेचन ओषधियां योजित कर विरेचन देवें। दूसरे-तीसरे विरेचन में पीली हड़का छिलका ७ माशा और काली हड़का छिलका ७ माशा भी मिलाकर देवें तथा हब्ब हलीला या हब्ब बनफ्शा से मस्तिष्क का शोधन करें। शोधनोपरांत यदि दोष शेष रहे, तो अतरीफल जमानी या अतरीफल कश्नीजी ७ माशा खिलाते रहें। बलप्राप्ति के लिये बनारसी आमले का मुरब्बा १ नग पानी से धोकर एक चाँदी का वर्क लपेटकर प्रातःकाल खिला दया करें या खमीरा गावजवान जवाहरवाला ५ माशा या मुफर्रेह बारिद २ माशा खिलाया करें। शियाफ अब्यज पानी में घिसकर नेत्र के अन्दर लगायें। हब्ब स्याह पानी में घिसकर नेत्र के बाहर पलकों पर लेप करें या चश्मी पानी में घिसकर लगायें। रात्रि में सोते समय ७ टिकिया कुर्स जमानी खिला दिया करें।

यदि सर्दी एवं प्रसेक (नजला) के कारण नेत्राभिष्यंद हो तो यह योग देवें—गुलबनफ्शा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिटोरा ९ दाना, मुंडी ७ माशा, इनको ऽ।। जल में क्वाथ करके छानकर ८ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रातःकाल पिलायें। रात्रि में सोते समय अतरीफल जमानी ७ माशा या अतरीफल कश्नीजी १ तोला खिलायें। कब्ज हो तो अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलायें या हड़का मुरब्बा

१ नग जल से धोकर रात्रि में सोते समय खिला दिया करें। नेत्र की चिपक एवं टीस के लिये हड़, बहेड़ा और आमला प्रत्येक ३ माशा रात्रि में जल में भिगोकर प्रातःकाल ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर उससे नेत्र धोयें। पठानी लोध और पीली हड़का छिलका प्रत्येक ६ माशा, भुनी हुई फिटकिरी ३ माशा और अफीम १ माशा महीन पीसकर मलमल के कपड़े में पोटली बाँधकर पानी में भिगोकर थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात् नेत्रों पर फेरते रहें। कुर्स मुसल्लस का कनपुटी पर लेप करें। हब्बस्याह या हब्बसुर्ख पानी में घिसकर नेत्र के पलकों के ऊपर लेप करें। पाह गुजराती, पठानी लोध, भुनी फिटकिरी और रसवत प्रत्येक ३ माशा, अफीम १ माशा बारीक पीसकर २ तोला गरम किये हुए गोघृत में मिलायें और नेत्र के बाहर पलकों के ऊपर लेप करें।

यदि कफ या सौदा दोष की उल्वणता से नेत्राभिष्यंद हो तो यह मुञ्जिज पिलाकर विरेचन देवें—उस्तूखुदूस ५ माशा, बिल्लीलोटन पत्र ५ माशा, मुंडी के फूल ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, पित्तपापड़ा के पत्र ७ माशा, बनफ्शा के फूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा रात्रिमें गरम पानीमें भिगोकर प्रातः मल छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर १०–१५ दिन पिलायें। विरेचन के दिन मस्तिष्क-शिरोरोग वर्णित विरेचन औषधियाँ योजित कर विरेचन देवें। दूसरे-तीसरे विरेचन में हड़ों की योजना करें। हब्ब इयारज या हब्ब शबयार से मस्तिष्क का शोधन करें। शोधन और रोग के आराम होने के बाद मेधाजननार्थ (मस्तिष्क बलवर्धनार्थ) अतरीफल बादियान ७ माशा या अतरीफल शाहतरा ७ माशा, या मुफर्रेह बारिद या खमीरा गावजवान जवाहर वाला ७ माशा या खमीरा गावजवान सादा १ तोला चाँदी के एक वर्क में लपेटकर अथवा एक नग आमले का मुरब्बा चाँदी के एक वर्क में लपेटकर कुछ दिन खिलायें। एक नग मुंडी का फूल समूचा निगलने से एक वर्ष पर्यंत और दो-चार निगलने से दो-चार वर्ष पर्यंत आँखें नहीं दुखने आतीं। इसी प्रकार अनार की बन्द कली सप्ताह या बुधवार को सूर्योदय से पूर्व अनार के वृक्ष के समीप जाकर दाँत से समूची कली कुतरकर निगल लेने से कई वर्ष तक नेत्राभिष्यंद रोग नहीं होता। जिन शिशुओं की आँखें आये दिन दुखने आती हैं, उनके लिये निम्न योग बहुत गुणकारी है—मुंडी के फूल सूखा धनिया, सौंफ, बड़ी इलायची प्रत्येक ५ तोला, सबको महीन पीसकर गोघृत में भून लेवें। पुनः २० तोला चीनी की चाशनी करके सबको मिलाकर हलुआ के सदृश बना लेवें। इसमें से ६ माशा से १ तोला तक प्रतिदिन खिलायें। यदि शोधन अपेक्षित हो, तो आठ-दस दिन मुंजिज मिलाकर विरेचन देवें।

रक्तजाधिमन्थ (वर्दीनज) की चिकित्सा उष्ण नेत्राभिष्यंद की भाँति करें। नेत्राभिष्यंद और रक्तजाधिमन्थ (वर्दीनज) एवं शुक्ल के लिये परमो-

पयोगी पोटली योग--पठानी लोध, फिटकिरी, मुरदासंग, हलदी, जीरा प्रत्येक ४।। माशा, अफीम, नीलाथोथा प्रत्येक २ रत्ती, कालीमिर्च ४ दाना, सबको पीसकर पोटली बाँधकर पोस्ते की डोडी के पानी में भिगो देवें और आँख के ऊपर फेरते रहें। कभी इसमें २ रत्ती कपूर भी योजित करते हैं।

पथ्य--किंचित् मिर्च युक्त वा बिना मिर्च के बकरी का शूरबा, टिंडे या तुरई का रसा, मूँग की दाल और प्रसेक एवं प्रतिश्याय न होने की दशा में घी और चीनी के साथ चपाती देवें।

अपथ्य--खट्टे, मीठे, गरम और अफारा उत्पन्न करनेवाले आहार तथा दूध, दही से परहेज करायें। चाय, मद्य, तमाकू आदि उत्तेजक द्रव्य उपयोग न करायें। लिखने-पढ़ने और मानसिक कार्यों से तथा शीतल वायु में चलने-फिरने और शीतल जल से स्नान करने से परहेज करायें।

वक्तव्य--नेत्राभिष्यंद में नेत्र के भीतर मल संचित न होने देवें। हाथ से नेत्र को बारंवार न मलें। बारीक मलमल का पुराना धुला हुआ कपड़ा हल्दी में रंग कर अथवा नीम के पत्तों को जल में पीस कर उसमें कपड़ा रंगकर हाथ म रखें। जब मल साफ करना हो, तब इस कपड़े से धीरे-धीरे साफ करें।

४--ज़ुसात मुल्तहिमा

नाम--(अ०) जुसात मुल्तहिमा; (उ०) आँख की खुश्की; (सं०) शुष्काक्षिपाक; (अं०) Zerosis of the conjunctiva

(अ०) रमद याबिल; (उ०) खुश्क आँख दुखना; (सं०) शुष्काक्षिपाक; (अं०) जीरॉफ्थल्मिया (Zerophthalmia)।

हेतु और लक्षण--नेत्रगत चिरज कण्डू के कारण पपोटों की श्लेष्मल ग्रंथियाँ विलीन होकर द्रवोद्रेक नहीं होता, जिससे नेत्र में शुष्कता एवं मलिनता होकर दृष्टि दुर्बल हो जाती है। रोगी नेत्र को यथावत् गति नहीं दे सकता और सोने के बाद नेत्र का खोलना कठिन हो जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) १ तोला इसबगोल के लबाब में गुलरोगन मिलाकर नेत्र में आश्चयोतन करना और उसमें रूई की गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर बाँधना शीघ्र प्रभावकारी है। इसी प्रकार (२) ३ माशा बिहीदाने के लबाब में रोगन बनफशा मिलाकर आश्च्योतन करना या (३) अलसी के लबाब में स्त्री का दूध मिलाकर नेत्र के भीतर बूँद बूँद टपकाना और (४) रोगन कद्दू का नस्य लेना भी गुणकारी है।

सिद्ध योग--दोषविलयन एवं मार्दवकरण परिषेक योग--मेथी, अलसी

और खतमी के बीज प्रत्येक १ तोला, इक्लीलुल्मलिक ३ तोला--सबको जल में पकाकर सिर और नेत्र के ऊपर परिषेक (तरेड़ा) करें। परीक्षित है।

५--जफरा--नाखूना

नाम--(अ०) ज (जु) फ़र:; (उ०, हिं०) नाखु (खू) ना ; (सं०) अर्म ; (अं०) टेरीजियम् (Pterygium)।

वर्णन और लक्षण--एक त्रिकोणाकार या अर्धचंद्राकार सुर्खीमायल मांसमय उभार (पर्दा वा झिल्ली) नेत्र के शुक्लास्तर पर प्रायः भीतरी और क्वचित् बाहरी नेत्रकोण में उत्पन्न हो जाता है। यह बढ़कर कभी कनीनिका को ढँक लेता हैं।

हेतु--रेतीले स्थान में जहाँ आँधी अधिक चलती है, नेत्र में धूलि-कण के पड़ने और नेत्राभिष्यंद रोग में असावधानी एवं अपथ्यपालन के कारण तथा मसूर की दाल, लहसुन, मछली, प्याज आदि वाष्पजनक पदार्थों के पुष्कल उपयोग से और नेत्राभिष्यंद एवं कनीनिकागत क्षत के उपरांत भी यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा--प्रथम निदान परिवर्जन करें। नेत्र में कुहल ब्याज या कुहल गुलकुंजद या वासलीकून कबीर रात्रि में सोते समय लगावें। भुना हुआ नीला थोथा सुर्मा की भाँति महीन पीसकर सलाई से केवल नाखूनों के ऊपर लगाने से भी लाभ होता है। हल्दी का पुटपाक कर (भुलभुलाकर) सम भाग भुनी फिटकिरी मिलाकर सुर्मा की भाँति पीस लेवें और रात्रि में सोते समय सलाई से लगावें। अथवा नौसादर २ माशा, कलमी शोरा १ तोला, सिरस के बीज २ दाना, कालीमिर्च १२ दाना, नीला थोथा ४ रत्ती--सबको पीसकर वर्ति बना लेवें और प्रतिदिन एक बर्त्ति पानी में घिसकर नाखूना के ऊपर लगायें। खाने के लिये प्रातः अतरीफल उस्तूखुद्दूस ७ माशा और सायंकाल अतरीफल जमानी ७ माशा अर्क बादियान के साथ देवें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो शस्त्र-कर्म (ऑपरेशन) करायें।

अपथ्य—हर प्रकार के वादी, आध्मानकारक, अम्ल और उष्ण पदार्थ आदि।

पथ्य—लघु एवं शीघ्रपाकी पदार्थ, जैसे--शूरबा, चपाती, कद्दू, पालक तुरई आदि हरे शाक, अरहर और मूँग की दाल के साथ खिलायें। फलों में अंगूर और खट्टा अनार दिया जा सकता है।

६--तर्फा--अर्जुन

नाम—(अ०) तर्फ: ; (उ०) आँख का खूनी नुक्ता (बिंदु) ; (सं०) अर्जुन ; (अं०) एकिमोसिस (Ecchimosis)।

हेतु, लक्षणादि—नेत्र के ऊपर आघात लगने या बलपूर्वक खाँसने, चिल्लाने या वमन करने से शुक्लास्तर के नीचे कोई बारीक सिरा फटकर किंचित् रक्त बह कर जम जाता है, जिससे रक्त या श्यामतायुक्त रक्त बिन्दु बन जाता है। नेत्र के शुक्ल भाग पर एक श्यामतायुक्त लाल रंग का धब्बा या बिंदु मालूम होता है।

चिकित्सा—इसकी चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देना जरूरी है। क्योंकि; कठोर हो जाने पर इसका निवारण दुश्तर हो जाता है। कभी-कभी इसमें कोथ उत्पन्न होकर व्रण बन जाता है, जिससे अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पहले निदान परिवर्जन करें। दो-तीन दिन में यह स्वयमेव शोषित होकर रोग जाता रहता है। यदि दो-तीन दिन में आराम न हो, तो गरम रूई से आँख के ऊपर सेक करें और पट्टी बाँध देवें। प्रारंभ में केवल कबूतर या बत्तख का ताजा गरम-गरम रक्त अकेले या गिल अरमनी के साथ अथवा स्त्री का दूध दिन में तीन बार उसके ऊपर टपकायें। अंत में कुंदुर, उशक, मुरमकी और केसर प्रत्येक १ माशा उक्त रक्त में पीस-मिलाकर नेत्र के भीतर डालें। यदि हेतु बलवान् हो तो किसी स्थानीय हकीम के परामर्श से सिरावेध (फस्द) आदि के द्वारा शोधन करें। नेत्र में डालने के लिये यह आश्च्योतन लाभकारी है—नौशादर, नमक लाहौरी, कुंदुर प्रत्येक १ माशा बारीक पीसकर जल में विलीन करके नेत्र के भीतर टपकायें। इससे चिरकारी अर्जुन आराम होता है।

सिद्ध प्रयोग—अर्जुनोपकारी धूपनयोग—लाल पत्थर के टुकड़े को अग्नि में खूब गरम करें। फिर निकालकर राख से साफ करके उसके ऊपर उत्तम मद्य छिड़कें और नेत्र को उसके सामने खुला रखें। इससे आँसू जारी हो जायेंगे और इसके एक-दो बार के प्रयोग से अर्जुन रोग का सर्वथा नाश हो जायगा।

अर्जुनहारी वर्ति—मैनसिल ५ माशा, अंजरूत, मामीरान, शादनज, एलुआ, चाँदी का मैल प्रत्येक १॥ माशा, चीनी ३ माशा—समस्त द्रव्यों को बारीक पीसकर अंडे की सफेदी में मिलाकर वर्ति बनायें। आवश्यकतानुसार इसमें से एक वर्ति थोड़ा जल में घिसकर एक-दो बूंद नेत्र के भीतर टपकायें।

पथ्य—बकरी का शूरबा, कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक, मूँग की दाल आदि।

अपथ्य—अम्ल, तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थ और लिखने-पढ़ने से परहेज करना चाहिए।

७—सबल—जाला

नाम—(अ०) सबल; (हिं०, उ०) जाला; (सं०) सिराजाल; (अं०) पैनस (Pannus)।

वर्णन--इस रोग में नेत्र की बाहरी सिराओं के फूलने और उनके मध्य बारीक शाखाओं के उत्पन्न होने से एक पर्दा-सा बन जाता है, जिससे दृष्टि मंद (धुंधली) हो जाती है।

हेतु--चिरज पोथकी (रोहे) या उपपक्ष्म (पड़वाल) से कनीनिका के ऊपर निरंतर घर्षण वा क्षोभ होना, दूषित एवं सांद्र रक्त से नेत्रगत सिराओं का परिपूर्ण होना, तीव्र अभिघात, आयास की अधिकता तथा फिरंग, सूजाक आदि रोग इसके हेतु हैं।

लक्षण--नेत्र लाल होता है। उसमें क्षोभ एवं वेदना प्रतीत होती है। दीपक एवं सूर्य के प्रकाश से उसे कष्ट होता है। अंत में कनीनिका के ऊपर एक जाला सा मालूम होता है।

भेद--इसके ये तीन भेद होते हैं--रतब (आर्द्र--Pannus Tenuis), याबिस (शुष्क-Pannus Siceus) और मुस्तहकम (दृढ़-P. crassus) इनके लक्षण--रतब में निरंतर छींकें आती हैं। नेत्र से आँसू जारी रहते हैं तथा वेदना एवं खर्जू होता रहता है। याबिस में नेत्र से आँसू नहीं आते। खर्जू कम होता है। कनीनिकापटल खुरदरा एवं धुंधला होता है। मुस्तहकम में पर्दा मोटा होकर नेत्र के कृष्ण भाग को ढँक लेता है। दृष्टि जाती रहती है।

चिकित्सा सूत्र--रोगी को स्वच्छ एवं अंधेरे कमरे में रखें। नेत्र के आगे काला ऐनक लगायें। यदि रोगी बलवान् हो तो प्रथम मस्तिष्क की शुद्धि के लिये सरारूसिरा का वेधन करें। पीछे मस्तक एवं नेत्रकोणीय सिरा का वेधन करें। अथवा कम से कम ग्रीवा और कर्ण के पीछे जोंकें लगवायें तथा ग्रीवा के पीछे गुद्दी पर सींगी लगायें। दोष पाचनोपरांत विरेचन देवें। दोष शुद्ध हो जाने के उपरांत नेत्रलेखनीय अंजन (सुर्मा) लगायें तथा छिक्काकारक नस्य लेवें। प्रत्येक मास में दोषपाचन एवं विरेचन का उपयोग करना चाहिये तथा सांद्र एवं आध्मानकारक आहार से परहेज करना चाहिये।

यह रोग बहुधा रोहों के कारण होता है। अतएव चिकित्सा में उनका भी ध्यान रखना चाहिये। सबल याबिस (शुष्क सिराजाल) में औषधि डालने से पूर्व एवं पश्चात् स्नान करना और नेत्र को गरम पानी से बफारा देना बहुत ही गुणकारक है। यदि सिराजाल के साथ नेत्राभिष्यंद भी हो तो अधिक उष्ण एवं अधिक शीतल औषधियों का उपयोग करना चाहिये।

चिकित्सा क्रम--कुछ दिन तक निम्नलिखित मुंजिज प्रातः सायंकाल देवें--हड़का छिलका, आमला, नीम की छाल, पित्तपापड़ा, चिरायता, मुंडी, खस, मेंहदी के पत्र, अफतीमून, गुर्च प्रत्येक ७ माशा। सबका काढ़ा बनाकर मल-छानकर २ तोला शहद मिलाकर पिलायें। दस दिन के बाद इसी योग में सनाय मक्की

७ माशा, गुलकंद ४ तोला और अमलतास ४ तोला मिलाकर विरेचन देवें। विरेचनोपरांत प्रातः मर्जा जवाहरवाला २ रत्ती, खमीरा गावज़बान जवाहरवाला ५ माशा में मिलाकर और सायंकाल अतरीफल कश्नीज या अतरीफल सगीर ७ माशा खिलाया करें। नेत्र में नीम का फूल १ तोला छाया में सुखाकर इसके बराबर कलमीशोरा मिलाकर बारीक पीसकर थोड़ा-थोड़ा लगायें।

दवाये खास––फिटकिरी और सुहागा सम भाग लेकर कूट-छान लेवें। पुनः पित्त से परिपूर्ण बकरे का पित्ताशय लेकर उसमें इसे भर देवें और बाहर से पित्ताशय को साफ करके उसका मुंह बन्द कर देवें और किसी स्थान में लटका देवें। थोड़ी देर बाद जो सत्त्व परिस्रुत होकर सूख गया हो, उसे ले लेवें और औषधियुक्त पित्ताशय को फेंक देवें। उक्त सत्त्व में से राई के दाने के बराबर एक बूंद जल में विलीन करके सलाई से नेत्र के भीतर अंजन करें। इससे अधिक प्रमाण में इस औषधि का प्रयोग न करें; क्योंकि उससे आँख लाल हो जायगी।

गुणकर्म तथा उपयोग––यह नेत्रशुक्ल एवं नेत्रार्म में भी गुणकारी है। सांद्र सिराजाल में इसका विशेष रूप से उपयोग करना चाहिये।

कुहल सबल––लौंग १४ दाना, सिरस के बीज, खिरनी के बीज प्रत्येक ७ दाना, कलमीशोरा ३॥ माशा, आँबाहलदी ७ माशा सबको महीन पीसकर नेत्र के भीतर अंजन करें। फूला एवं जाला के लिये परीक्षित है।

पथ्य––बकरी का शूरबा, मूंग की दाल, कद्दू, टिंडा, तुरई, चपाती आदि लघु एवं शीघ्रपाकी आहार दें।

अपथ्य––मसूर, लोबिया, अरहर, लहसुन, प्याज, पनीर, अम्ल, गुरु एवं उष्ण पदार्थ मानसिक श्रम, शीतल जलावगाह, धूप में भ्रमण करना और अग्निसेवा आदि से परहेज रखें।

८––बयाज़ुल्ऐन।

नाम––(अ०) बयाज़ुल्ऐन; (फा०) गुलेचश्म; (उ० हिं०) फूल, फूला, फूली; (सं०) नेत्रशुक्ल (शुक्र); (अं०) ओपेसिटी ऑफ कॉर्निया (Opacity of Cornea)।

वर्णन और लक्षण––नेत्र के कृष्ण भाग वा कनीनिका पटल में अभिघात, क्षत या पिड़का के पश्चात् अवशेष रहे हुये चिह्न (कनीनिका के अपारदर्शक दाग) के कारण नेत्र में शुक्लता उत्पन्न हो जाती है। इसमें नेत्र के कृष्ण भाग के ऊपर श्वेत बिन्दु या पर्दा दिखाई देता है। दृष्टि मंद होती वा बिल्कुल जाती रहती है। यदि शुक्ल कनीनिका के केन्द्र भाग पर न हो, तो इसका दृष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

भेद--(१) हलका या पतला शुक्ल--(अ०) सहाब, गमाम, असर ; (उ०) सफेदी ; (सं०) अव्रणशुक्ल ; (अं०) नीब्यूला (Nebula)। (२) गंभीरजात एवं घन शुक्ल--(अ०) बयाजुल्ऐन ; (फा०) गुले (बयाजे) चश्म ; (उ०, हिं०) फूल, फूला, फूली ; (सं०) सव्रण शुक्ल ; (अं०) मेक्युला (Macula) (३) गंभीरजात घन एवं उभरा हुआ शुक्ल--(अ०) बयाज समकिय्या ; (उ०, हिं०) गहरा उभारवाला फूला, टेंट ; (सं०) अजकाजात ; (अं०) ल्युकोमा (Leucoma)।

हेतु--चेचक एवं नेत्राभिष्यंद आदि में पिटिकायें या शोथ होकर क्षत हो जाता है, जिसका चिह्न फूली के रूप में शेष रह जाता है। रोहों और पड्बाल के क्षोभ से भी कभी कनीनिका में क्षत हो जाता है। कभी आधा शीशी आदि तीव्र शिरःशूल से भी कनीनिका में क्षत होकर शुक्ला उत्पन्न हो जाती है।

साध्यासाध्यता--बालकों में यह साधारणतया चिकित्स्य होता है; किन्तु युवा एवं अधेड़ अवस्था वालों में दुश्चिकित्स्य होता है। चेचक से होनेवाला शुक्ल कष्टसाध्य होता है। जब शुक्ल कनीनिका केन्द्र के आसन्नभूत होता है, तब दृष्टि कम हो जाती है और कभी द्विधादृष्टि दोष हो जाता है। बालकों के दोनों नेत्र में शुक्ल हो जाने की दशा में नेत्रगोलक में शोथ उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा सूत्र--यदि कनीनिकागत क्षत एवं पिटका या नेत्राभिष्यंद अथवा शिरःशूल वा पोथकी आदि शुक्लके मूलभूत हेतुओं मेंसेकोई हेतु इस रोग का कारण भूत हो तो प्रथम उसके निवारण या चिकित्सा का यत्न करें। इस रोग में सिरा-वेध एवं विरेचन की तनिक भी आवश्यकता नहीं होती। तथापि यदि जाले और फूले को लेखन करनेवाली तीक्ष्ण औषधियों के उपयोग के कारण प्रचुर दोष के अंतर्भरण की आशंका हो तो सर्वप्रथम पूर्वविधानता स्वरूप यथा प्रकृति सिरावेध एवं विरेचन के द्वारा सार्वाङ्गिक एवं स्थानिक (सामान्य एवं विशेष) शोधन कर्म करें। तदुपरांत यदि आवश्यकता प्रतीत हो तो मस्तिष्क की शुद्धि करें विशेषकर यदि रोगी शिरःशूल, प्रसेक या नेत्राभिष्यंद से आक्रांत होता रहता हो। पुनः लेखनीय औषधियाँ नेत्र में डालें। परंतु यह ध्यान में रखें कि जाले (अव्रणशुक्ल) में कम तीक्ष्ण एवं सव्रण शुक्ल में अधिक तीक्ष्ण औषधियाँ उपयोग करें।

चिकित्सा क्रम--अतरीफल कश्नीज सायं-प्रातः काल खिलायें। कुहल बयाज, कुहल गुलकुंजद बराबर-बराबर मिलाकर सलाई से नेत्र में लगायें। इसी प्रकार निरंतर दो-तीन महीने चिकित्सा करने से प्रायः लाभ हो जाता है। यदि नेत्र में क्षोभ एवं ललाई हो तो प्रथम उसे दूर करें। इस प्रयोजन के लिये शियाफ दीनारजून बकरी के दूध में घिसकर लगाने और अतरीफल कश्नीजी रात्रि में

खिलाने से उपकार होता हैं। जब क्षोभ दूर हो जाय, तब पुनः उक्त चिकित्सा-क्रम के अनुसार उपाय करते रहें। अथवा कलमीशोरा ५ माशा, मामीरान चीनी २ माशा, गेरू २ माशा, य: समुद्रफेन, श्वेत मरिच, भुनी फिटकिरी, सफेद काशगरी प्रत्येक ३ माशा पीसकर प्रातः-सायंकाल सुरमे की भांति नेत्र में एक-एक सलाई लगाया करें।

पथ्य––शूरबा, चपाती, तुरई, कुलफा, पालक आदि शीघ्रपाकी आहार लाभकारी हैं।

अपथ्य––शीतल वायु सेवन, मानसिक श्रम, शीतल जलावगाहन, अग्नि और धूप सेवा और अम्ल पदार्थ, जैसे दही, छाछ, इमली, नीबू आदि तथा बादी वस्तुओं से आरोग्य होने के पश्चात् कुछ काल तक परहेज करें।

९––अशा––शबकोरी

नाम––(अ०) अशा; (फा०) शबकोरी; (हिं०, उ०) रतौंधी, अँधराता; (सं०) नक्तान्ध्य; (अं०) निक्टेलोपिया (Nycta lopia) नाइट ब्लाइंडनेस (Night blindness)।

इस रोग में रोगी को रात्रि में और अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं देता।

हेतु––साधारण शारीरिक दौर्बल्य या नेत्र के ऊपर तीव्र सूर्यरश्मियों का पड़ना, स्निग्ध-शीतल पदार्थों का पुष्कल उपयोग, आमाशय एवं मस्तिष्क के अन्दर सांद्र दोष का संचय जिससे सांद्र बाष्प उठकर नेत्र में जाते और चाक्षुषी ओज को सांद्रीभूत कर देते हैं। परंतु दिन के समय सूर्य के प्रकाश एवं गरमी आदि के कारण इन बाष्पों के विलीन होने से ओज में मलिनता का अभाव रहता है, जिससे दिन में दिखाई देता है। इसके विपरीत रात्रि की वायु शीतलतर एवं सांद्र होती है तथा शांति एवं अंधकार हो जाता है जिससे ये बाष्प सांद्रीभूत होकर दृष्टि में बाधा उत्पन्न करते हैं। कभी दीर्घकाल तक प्रकाशमान, उज्ज्वल एवं चमकदार वस्तु को नेत्र के समक्ष रखने से भी नेत्रद्रव सांद्रीभूत हो जाते हैं और चाक्षुषी ओज की सूक्ष्मता (लताफत) कम होकर यह दोष उत्पन्न हो जाता है। कभी ऐसे लोग जो सदा शुष्क (रूक्ष) अन्न सेवन करते हैं और किसी प्रकार का स्नेह वा मांस सेवन नहीं करते, इस रोग के आखेट हो जाते हैं। दृष्टिपटल (Retina) का शोथ और उसके प्रकाश ग्रहण की न्यूनता, इस रोग के प्रधान हेतु होते हैं।

लक्षण––रोगी दिन में देख सकता है, किन्तु सायंकाल और रात्रि में नहीं देख सकता।

लक्षणों द्वारा हेतु निर्णय––यदि, आमाशयस्थ बाष्प इस रोग के हेतु हों, तो खाली पेट होने पर रोग में कमी और भोजनोत्तर अधिकता जान पड़ती

है। यदि मस्तिष्कगत बाष्प इसके कारण हों तो शिर में गौरव एवं शूल और ज्ञानेन्द्रियों की मलिनता पाई जाती है। नेत्र में दोष रहने से रोगी की दशा एकसमान रहती है। ग्रीष्म की अपेक्षया शरद् ऋतु में यह रोग अधिक होता है और उष्ण पदार्थों के सेवन से लाभ प्रतीत होता है।

साध्यासाध्यता—उष्ण स्थानों में ग्रीष्म और वर्षाकाल में यह रोग होता है। इस रोग की अवधि छः मास तक है। यदि इसके पश्चात् भी आराम न हो तो प्रायः यह रोग असाध्य होता है। कभी यह महामारी के रूप में भी फैल जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि रोगी बलवान् हो और उसमें रक्त की प्रगल्भता हो तो सरारू सिरा का वेधन करें। यदि रोग का कारण कफ हो तो कफ विरेचन और हब्ब इयारज से उसका शोधन करें। तदुपरांत द्रवाकर्षण और शोषण के लिये दोषशोधनीय गण्डूषों एवं नस्यों का उपयोग करें और सर्व प्रकार ओज में तारल्य एवं सूक्ष्मता उत्पन्न करें। यदि इस प्रकार लाभ न हो तो नेत्रकोणीय सिरा का वेधन करें और गुद्दी (पश्चान्मस्तिष्क) पर सींगी लगायें। दोष-विलयन ओषधियों के क्वाथ से बफारा देवें। तीक्ष्ण मसालायुक्त आहार सेवन करायें। बल्य औषधाहार का उपयोग करें। नेत्र में लेखनीय अंजन लगायें। और (१) नौसादर तथा भुनी हुई फिटकिरी दोनों बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर सुर्मा की भाँति अंजन करें या (२) सफेद प्याज या (३) आदी का रस २–३ बूंद नेत्र के भीतर आश्च्योतन करें। (४) देशी साबुन और काली मिर्च बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर प्रति दिन रात्रि में सोते समय नेत्र में लगाने से अद्भुत लाभ होता है। (५) कालीमिर्च रोहू मछली के पित्त में पीसकर सलाई से नेत्र में लगाने से सत्वर लाभ होता है। (६) शलगम का बाष्प लेना, (७) जुंदबेदस्तर या (८) कस्तूरी का सूंघना भी लाभकारी है। आंतरिक रूप से (९) अफसंतीन रूमी ७ माशा या (१०) सातर फारसी ७ माशा क्वाथकर ३ तोला सिकंजबीन मिलाकर पीना या (११) जूफाए खुश्क ५ माशा या (१२) सुदाब ५ माशा या (१३) सौंफ ७ माशा पीस-छानकर १ तोला शहद मिलाकर चाटना या (१४) दाल-चीनी का चूर्ण ५ माशा १२ तोला अर्क सौंफ के साथ सेवन करना लाभकारी उपाय हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार—शोधनोपरांत (१) अतरीफल सगीर ७ माशा या (२) अतरीफल कबीर ७ माशा अर्क गावजबान १२ तोला के साथ अथवा (३) शर्बत अफसंतीन ३ तोला या (४) शर्बत जूफा ३ तोला, अर्क अफसंतीन ६ तोला, अर्क सौंफ ६ तोला में मिलाकर पिलाना गुणकारक है। आमाशयोद्भूत बाष्प की दशा में (५) हड़का मुरब्बा १ नग या (६) आमला का मुरब्बा १ नग चाँदी

के वर्क में लपेटकर उपयोग करना लाभकारी है। बलवर्धनार्थ (७) लोहभस्म २ चावल दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या (८) खमीरा गावजम्बन अबारी जवाहरवाला ५ माशा में मिलाकर १२ तोला अर्क गावजबान के साथ उपयोग करें।

सिद्धयोग--(१) एक माशा गोलमिर्च को बकरी के पित्त में और १ माशा आँबाहलदी को नीबू के रस में भिगोकर सुखायें। तदुपरांत ७ माशा संगबसरी को चार बार अग्नि के ऊपर लाल करके नीबू के रस में बुझायें और खिरनी के बीज की गिरी तथा चमेली की कली प्रत्येक ७ माशा--सबको सौंफ के रस में खरल करके सुर्मा तैयार करें और यथाविधि-सेवन करें। रतौंधी और जाले के लिये लाभकारी है।

पथ्य--शीघ्रपाकी आहार और शाक, हींग, पुदीना और राई आदि मिलाकर सेवन करें।

अपथ्य--उड़द की दाल और बैंगन प्रभृति जैसी गरिष्ठ वस्तुओं से परहेज करें।

१०--जहर-रोजकोरी

नाम--(अ०) जहर; (फा०, उ०) रोजकोरी; (हिं०) दिनौंधी; (सं०) दिवान्ध्य; (अं०) हेमीरलोपिया (Hemeralopia), डे-ब्लाइंड्नेस (Day blindness)।

वर्णन एवं लक्षणादि--रतौंधी के विपरीत इसका रोगी दिन में कुछ देख नहीं सकता, किन्तु सायंकाल, रात्रि एवं बदली के अंधियारी में भली भाँति देख सकता है। रतौंधी के विपरीत इसमें चाक्षुषी ओज अत्यंत सूक्ष्म एवं तरलीभूत हो जाता है जो दिनके स्वाभाविक प्रकाश एवं उष्णता के प्रभाव से सूक्ष्म एवं तरल होकर दिनौंधी का कारण भूत होता है। परंतु रात्रि की अंधियारी एवं सर्दी से वह प्रगाढ़ी भूत हो जाता है, जिससे रात्रि में रोगी भली भांति देख सकता है।

हेतु--महीन अक्षरों का अध्ययन, ऊँची आवाज से पढ़ना, सूर्यरश्मि या ग्रहण लगे सूर्य की ओर देर तक देखना, मस्तिष्क दौर्बल्य और उष्ण विप्रकृति आदि इस रोग के हेतुभूत हैं। प्रायः वृद्ध एवं रूक्ष प्रकृति पुरुषों को यह रोग होता है। कंजी आंखोंवाले भी इस रोग से अधिक आक्रान्त होते हैं और असाध्य होते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रथम निदान परिवर्तन करें। यह रोग सहज हो तो वह असाध्य है। रूक्षता की दशा में स्नेहन का यत्न करें। यदि दोष का संचय हो तो सिरावेध एवं विरेचन द्वारा उसका शोधन करें। शमन और बल-

वर्धन के लिये उष्ण शिरःशूल की चिकित्सा को ध्यान में रखें। अस्तु, मस्तिष्क के स्नेहन और बलवर्धन के लिये (१) लड़की वाली स्त्री का दूध २ माशा, गुलरोगन २ माशा, कद्दू का तेल २ माशा मिलाकर नस्य देवें। (२) बादाम का तेल और मक्खन मिलाकर सिर के ऊपर अभ्यङ्ग करें। (३) शीतल जल में अवगाहन-स्नान करना और उसमें नेत्र खोल देने या (४) सफेद सुर्मा और वंशलोचन बराबर-बराबर लेकर महीन पीसकर रोगन खशखाश में मिलाकर नेत्र में लगाने से भी उपकार होता है। इसके अतिरिक्त आंतरिक रूप से नेत्र एवं मस्तिष्क के स्नेहन के लिये (५) ९ तोला अर्क गुलाब में ५ माशा कुलफा के बीजों का शीरा निकाल कर या (६) ६ माशा बिहीदाने का लुआब या (७) १ तोला इसबगोल का लुआब या (८) ७ माशा सफेद पोस्ता के दाने का शीरा या (९) ५ माशा छिले हुये काहू के बीजों का शीरा अर्क गाजर और अर्क गावजबान प्रत्येक ६ तोला में निकालकर शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। (१०) जितना पच सके उतना गाय के दूध का सेवन भी लाभकारी है। (११) चाक्षुषी ओज के प्रगाढी भवन के लिये २ चावल अफीम खिलाना भी गुणकारी है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—मस्तिष्क को बल प्रदान करने के लिये (१) खमीरा गावज़बान अंबरी जवाहरवाला ५ माशा या (२) खमीरा गावज़बान जवाहरवाला ५ माशा दो चावल प्रवाल भस्म मिलाकर अर्क गाजर ६ तोला, अर्क गावज़बान ६ तोला, शर्बत उन्नाब २ तोला मिलाकर उपयोग करें। (३) बरूद हस्रम या (४) शियाफ वर्दी यथोक्त विधि के अनुसार सेवन करें।

सिद्ध योग—(१) इन्किबाब—बाबूना, बनफ्शा, खतमी इनके क्वाथ करके बफारा लेवें। (२) बुरूद हस्रम जो दिनौंधी के अतिरिक्त नेत्रकण्डू, शुक्ल, सिराजाल, पक्ष्मशात, अर्जुन और नेत्रस्राव के लिये भी लाभकारी है—संगबसरी १ तोला, पीली हड़का छिलका, सोंठ, हलदी (जर्द चोब) प्रत्येक ६ माशा, पीपल, मामीरान चीनी प्रत्येक ४ माशा, नमक हिंदी १ माशा—सबको पीस-छानकर कच्चे अंगूर के रस की २० दिन तक भावना देवें। पुनः छाया में सुखाकर खब महीन खरल करके अंजन (सुर्मा) की भाँति नेत्र के भीतर लगायें।

पथ्य—मुर्गी के बच्चे का शूरबा, उड़द की दाल, अधभुना अंडा और धनिया, मक्खन, घी, दूध, मलाई आदि वल्य एवं रक्तसांद्रकर आहार तथा फलों में केला, अंजीर आदि दिये जा सकते हैं।

अपथ्य—लवण, अम्ल और तीक्ष्ण (कटुक) पदार्थों से परहेज करें। मद्यपान, अतिमैथुन, सूर्य की ओर ध्यानपूर्वक देखना हानिकर है। लाल मिर्च, गुड़ और गरम मसाला से भी परहेज जरूरी है।

—:o:—

११—क़ज़ा—नेत्रशल्य

नाम—(अ०) क़ज़ा, क़ज़ाउल्ऐन ; (उ०, हिं०) आँख में कुछ पड़ जाना ; (सं०) नेत्रशल्य ; (अं०) फॉरेन बॉडी इन् दी आई (Foreign body in the eye)।

वर्णन और हेतु—तीव्र वायु के चलन से कभी-कभी सूक्ष्म कीट-पतंग आदि जानवर आँख में पड़ जाते हैं। कभी रेत, कंकड़, शीशा का कण, कोयला, लोहा या तृण आदि के कण नेत्र के भीतर पड़कर पलकों में चिपक जाते हैं या कनीनिका के ऊपर जम जाते हैं।

लक्षण—नेत्र में अत्यंत क्षोभ, वेदना एवं खटक मालूम होती है। नेत्र लाल हो जाता है। नेत्र से आँसू बहता है। रोगी नेत्र खोलकर देख नहीं सकता। पलक को उलटकर देखने से पडी हुई वस्तु दिखाई देती है।

चिकित्सा—किसी पात्र में कुनकुना पानी भरकर उसमें चेहरा प्रविष्टकर नेत्र खोल देवें। यदि इस उपाय से पड़ी हुई वस्तु न निकले तो पलक उलटकर स्वच्छ रुई या किसी नरम और स्वच्छ कपड़े से उस वस्तु को निकाल देवें। या निशास्ता बारीक पीसकर सलाई से भली भांति नेत्र के भीतर लगायें। थोड़ी देर में नेत्रशल्य को मोचने या बारीक सलाई के द्वारा तुरत निकाल देवें। यदि सूई या लोहे का कण हो तो नेत्र के समीप चुंबक ले जावें। इससे वह स्वयमेव उससे चिपट जायगा। यदि मार्ग में चलते चलते नेत्र में कीट-पतंग आदि पड़ जायँ, तो तत्काल दो-चार पग पीछे हटें आगे न बढ़ें। इस उपाय से उसी समय वह कीड़ा बिनाप्रयास के निकल आयेगा। कब्ज हो तो उसे दूर करने के लिये अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि में खिलायें। यदि उसके कष्ट से नेत्र दुखने आ जाय तो तीन चार दिन अतरीफल शाहतरा ७ माशा अर्क मुण्डी १२ तोला और शर्बत उन्नाब ४ तोला के साथ खिलायें तथा नेत्र के भीतर स्त्री दुग्ध के कुछ बूंद टपकायें अथवा शियाफ अब्यज पानी में घिसकर लगायें। बरूदकाफूरी या कुहल काफूर अंजन की भाँति नेत्र में लगायें। यदि नेत्र में अनबुझा चूना पड़ जाय तो नेत्र को तत्काल धोकर रेंड़ी के तेल या जैतून के तेल के बूंद डालें तथा शीतल जल की गद्दी नेत्र के ऊपर रखें। इस दशा में १ तोला सिरका में १० तोला पानी मिलाकर नेत्र धोने से भी लाभ होता है। हकीम आजम खाँ के मत से कभी नेत्र में मकड़ी के जाले की तरह का एक द्रव उत्पन्न होकर खटकता है और ऐसा प्रतीत होता है मानो नेत्र में कोई वस्तु पड़ गई हो। उसके लिये निम्न योग परम गुणकारी है—समुद्रफेन, संगबसरी, हरा तूतिया, छिला हुआ चाकसू सम भाग बारीक पीसकर नेत्र के भीतर डालें।

अपथ्य--नेत्र के भीतर यदि कोई शल्य पड़ जाय तो उसे हाथ से नहीं मलना चाहिये और न रूमाल से उसे निकालने का यत्न करना चाहिये। यदि वह शल्य कठोर हो तो नेत्र मलने से भीतर क्षत पड़ जाने की आशंका होती है। दो-तीन दिन लहसुन, प्याज आदि उष्ण, तीक्ष्ण एवं बाष्पकारक पदार्थों से परहेज रखें।

पथ्य--अभ्यासानुकूल बकरी का शूरबा, चपाती, कद्दू, पालक, कुलफा, मूँग या अरहर की दाल, शलगम, आलू, चुकंदर, तुरई आदि देवें।

१२--ज़र्बुलऐन--नेत्राभिघात

नाम--(अ०) जर्बतुल् (ज़र्बुल्) ऐन ; (उ०, हिं०) आँख पर चोट लगना ; (सं०) नेत्राभिघात, नेत्रक्षत ; (अं०) कन्ट्युजन ऑफ दि आई (Contusion of the eye)।

हेतु और लक्षण--कभी नेत्र के ऊपर अभिघात लगने से भौं या पपोटे पर क्षत हो जाता है। कभी मस्तक, कनपुटी, नेत्र या भौं के ऊपर तीव्र आघात लगने से दृष्टि नष्ट हो जाती है या नेत्रगोलक बैठ जाता है। आघात लगने के पश्चात् कभी शोथ उत्पन्न हो जाता है, रक्त बहता है। कभी क्षत के बिना नेत्र लाल हो जाता या नीलाहट सी छा जाती है। पानी बहता है। नेत्र में तीव्र शूल होता है। रोगी नेत्र नहीं खोल सकता।

चिकित्सा--मस्तक, भौं या नेत्र के ऊपर तीव्र आघात लगे तो २ तोला सूजी के आटे का हलुआ लेकर ३ माशा पठानी लोध और ३ माशा आँबा हलदी बारीक पीसकर उसमें मिला लेवें और गरम करके स्वच्छ पोटली में बाँधकर नेत्र को पोटली से सेकने के पश्चात् यही हलुआ गरम करके तुरत नेत्र के ऊपर बांध देवें। यदि आघात के प्रभाव से भौं या नेत्र पर शोथ या लाली उत्पन्न होजाय तो मुर्गी के एक अंडे की सफेदी और जर्दी में १ तोला गुलरोगन मिलाकर रूई या दूसरे नरम कपड़े में लत करके नेत्र के ऊपर रखें। यदि नेत्र में तीव्र शूल हो तो शियाफ अब्यज स्त्री के दूध में घिसकर नेत्र में टपकायें और रसवत १ माशा, गिल अरमनी १ माशा, दम्मुल्अख्वैन १ माशा, केसर १ माशा, कपूर २ रत्ती, अफीम २ रत्ती--सबको बारीक पीसकर अंडे की सफेदी मिलाकर चोट के स्थान पर लेप कर देवें। यदि चोट के स्थान में रक्त जम जाय और वह स्थान काला पड़ जाय तो झाऊकी लकड़ी लेकर जलायें और जो पानी उससे निकले उसको चोट के स्थान पर मलें, यदि वेदना तीव्र हो और शोथ उत्पन्न हो जाय तो १ तोला पोस्ते की डोडी पानी में क्वाथ करके उसमें कपड़ा तर करके कोष्ण टकोर करें और कनपुटी पर जोंक लगायें। मलावरोध दूर करने के लिये अतरीफल जमानी ७ माशा या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा रात्रि में खिला दिया करें।

अपथ्य--लिखने-पढ़ने और सीने-पिरोने का काम न करें। धूप में और आँच के सामने बैठने से परहेज करें। अम्ल वस्तुयें सेवन न करें। अधिक मसालादार, उष्ण एवं तीक्ष्ण पदार्थों के सेवन से भी परहेज करें।

पथ्य--लघु शीघ्रपाकी आहार देवें। कद्दू, पालक, तुरई. बकरी के कलिये में डालकर चपाती के साथ देवें। अरहर, मूंग की दाल, खश्का, खिचड़ी, मक्खन, बिस्कुट, पावरोटी, सेव, अंगूर इत्यादि अभ्यासानुकूल खिलायें।

१३--दम्आ--नेत्रस्राव।

नाम--(अ०) दम्अः; (उ०) ढलकए चश्म, ढलका; (सं०) नेत्रस्राव; (अं०) एपिफोरा (Epiphora)।

इस रोग में रोगी के नेत्र से सदा अश्रु स्रावित होते रहते हैं और नेत्र हर समय तर (क्लिन्न) रहता है। कभी अनैच्छिक रूप से आँसू जारी हो जाते हैं।

हेतु--इस रोग का मूलभूत हेतु मस्तिष्क का द्रवों से परिपूर्ण होना है। कभी यह रोग नेत्राभिष्यंद पोथकी, उपपक्ष्म तथा अन्यान्य नेत्र रोगों का परिणाम होता है। वृद्ध पुरुषों में द्रवातिरेक के अतिरिक्त नेत्र शक्ति का दौर्बल्य भी इसका हेतु होता है।

लक्षण--जिन रोगों से यह व्याधि उत्पन्न होती है वे इससे पूर्व विद्यमान होते हैं। द्रवों की प्रगल्भता की दशा में यदि रक्त प्रकुपित हो तो नेत्र लाल होगा। अश्रु उष्ण एवं गाढ़े होंगे। यदि कफ की प्रगल्भता हो, तो अश्रु शीतल एवं मल की प्रचुरता होगी। यदि पित्त की प्रगल्भता हो तो अश्रु पतले और उष्ण होंगे।

चिकित्सा—यदि मस्तिष्क या नेत्र के ऊपर बाहरी गरमी या सर्दी का प्रभाव हुआ हो तो गरमी की दशा में काहू के बीज ६ माशा हरे धनिया के रस में पीसकर मस्तक और भौं के ऊपर लेप करें या पीला रसवत ३ माशा रोगन नीलूफर में घिसकर नेत्र के ऊपर लेप करें। सर्दी की दशा में पीला एलुआ, हरे मकोय के रस में पीसकर नेत्र के ऊपर लगायें। या शिब्ब यमानी १ माशा दो बार परिस्नुत किये हुए अर्क गुलाब में पीसकर नेत्र में लगायें। यदि भीतरी दोष इसके हेतु हों तो दोषानुसार शोधन करके काबुली हड़की गुठली ६ माशा, हरा माजू ३ माशा, नमक इंदरानी ३ माशा या हरा माजू ६ माशा, जटामांसी ६ माशा पीसकर नेत्र में लगायें।

यदि रोग जनक दोष कफ हो तो उसके शोधन के अनन्तर अतरीफल उस्तूखुदूस ७ माशा से १ तोला तक रात्रि में सोते समय १२ तोला अर्क गावजबान के

साथ खा लिया करें या अतरीफल कश्नीजी ७ माशा से १ तोला तक रात्रि में सोते समय १२ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करें। यदि प्रसेक एवं मस्तिष्क दौर्बल्य के कारण हो तो अतरीफल कबीर ७ माशा अर्क गावजबान १२ तोला के साथ सेवन करें। यदि पाचन दोष से हो तो मण्डूरभस्म २ रत्ती जुवारिश जालीनूंस ७ माशा में मिलाकर प्रातः और अतरीफल उस्तूखुदूस ७ माशा सोते समय उपयोग करायें।

नेत्रस्राव की प्रायशः दशाओं में नेत्र में कुहलुल्जवाहर का लगाना और हब्ब स्याह एवं हब्ब सुर्ख का लेप और सफूफ दमआ का आन्तरिक उपयोग बहुत गुणकारी होता है।

यदि इन उपायों से कुछ लाभ न हो तो यथावश्यक यथा प्रमाण अपेक्षित दोष का सिरामोक्षण करें या कुछ दिन मुंजिज पिलाकर विरेचन के द्वारा हब्ब इयारज आदि से मस्तिष्क का शोधन करें और शुद्धि के उपरांत अतरीफलों का सेवन करायें।

अपथ्य--अम्ल और बादी पदार्थों से परहेज करायें। नेत्र को धूलिकण आदि से सुरक्षित रखें। बादी, गुरु एवं दीर्घपाकी वस्तुयें जैसे उड़द की दाल, आलू, अरवी, मटर, गोभी इत्यादि सेवन न करें।

पथ्य--चपाती, बकरी का शूरबा, कम मिर्च की अरहर, मूंग की दाल और शीतल शाक, जैसे--टिंडा, तुरई, कद्दू आदि तथा पालक का साग भूख से थोड़ा कम खायें।

१४--वद्का

नाम--(अ०) वद्कः (उ०), हिं०) आँख की फुंसी; (सं०) पर्वणी अलजी ! (अं०) फिलक्टिन्यूल (Phlyctenule)।

(अ०) रमद बुस्री; (उ०) फुंसी दार आँख दुखना; (सं०) पर्वणीमय नेत्राभिष्यंद (अं०) फिलक्टिन्यूलर कञ्जङ्क्टिवाइटिज (conjunctivitis)।

नेत्र के शुक्लास्तर के ऊपर बड़े या छोटे कोया की ओर कभी नेत्र के कृष्ण भाग के चतुर्दिक् एक या कई छोटी-छोटी पिडिकायें निकल आती हैं जो प्रायः श्वेत पर यदि दोष रक्त हो तो ललाई लिये होती हैं।

वद्का मोरसरज और तर्फा का अन्तर--नेत्र के शुक्लास्तरगत पिटिका (फुंसी) साधारणतया श्वेत चर्बी के रंग की होती है, वद्का और जब कनीनिका पटल के फट जाने से अंगूरी पर्दा चीटी के सिर के बराबर बाहर निकल आती है,

तब उसे मोरसरज कहते हैं। नेत्रशुक्लास्तरगत कृष्णाभ रक्त विंदु को तर्फा कहते हैं।

हेतु--नेत्र की अस्वच्छता और स्वास्थ्य रक्षा के नियमों का उल्लंघन इसके हेतु हैं। बालकों को यह रोग अधिक होता है और प्रायः हुम्मयात हसबा के पश्चात् हो जाया करता है। पर कभी प्रतिश्याय में भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--नेत्र लाल एवं वेदनापूर्ण होता है। उससे आँसू बहते हैं। प्रकाशासह्यता एवं शिरःशूल होता है। नेत्र खोलकर देखने पर उसमें पिटिका या विस्फोट (फोला) दृष्टिगत होता है। रक्तज में नेत्र का रंग कालाई लिये लाल और कफज में सफेदी लिये होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--दोषोल्वणता की दशा में यथावत् शोधन करें और (१) पीला रसवत ४ रत्ती लड़कीवाली (कन्याप्रसूता) स्त्री के दूध में घिसकर प्रातः सायंकाल नेत्र के भीतर आश्च्योतन करें अथवा (२) केसर को अर्क गुलाब में घिसकर नेत्र के भीतर टपकायें। वद्का बल्गमी में (३) हलदी को पानी में घिसकर नेत्र के भीतर आश्च्योतन करने अथवा नेत्र के चतुर्दिक् लेप करने से उपकार होता है। वद्का दम्वी में (४) अंजरूत ४ रत्ती को अंडे की सफेदी में मिलाकर नेत्र के भीतर टपकाने अथवा उसपर लेप करने से लाभ होता है। शेष रक्तज या कफज नेत्राभिष्यंद की भाँति चिकित्सा करें।

१५--कुरूहुल्ऐन--नेत्रगतव्रण

नाम--(अ०) कुरूहुल्ऐन; (उ०) आँख का जख्म; (सं०) नेत्रव्रण; (अं०) अल्सर ऑफ दि कॉर्निया (Ulcer of the Cornea)।

नेत्र के कनीनिकापटल पर पिड़कायें उत्पन्न हो जाती हैं जिससे नेत्रशूल एवं नेत्रस्राव होता है। जब ये पिड़कायें पककर फट जाती हैं, तब उक्त स्थान पर व्रण बन जाते और पीव आती है।

हेतु--तीक्ष्ण एवं दाहक दोष, नेत्र के ऊपर आघात लगने या नेत्र में कुछ चुभ जाने से यह रोग होता है। चिरज नेत्राभिष्यंद, चेचक या तीक्ष्ण सुरमा वा औषधियों की उपयोग से भी नेत्र में पिड़कायें उत्पन्न होकर व्रण बन जाते हैं।

लक्षण--यदि पिड़का नेत्र के शुक्लास्तर पर हो तो नेत्र में तीव्र शूल होता और आंसू आते हैं। यदि वह अंगूरी पर्दे में हो तो नेत्र के शुक्लास्तर में रक्त विंदु प्रतीत होता है। यदि व्रण कनीनिका पटल में हो तो नेत्र के कृष्ण भाग में

रक्तबिंदु दृग्गोचर होता है। यदि व्रण निम्नस्थ पटलों में हो तो वह नेत्र से दिखाई नहीं देता, प्रत्युत नेत्रशूल आदि से उसके होने का प्रमाण मिलता है। अंततः जब वह फट जाता है, तब उससे पीव आने लगती है।

साध्यासाध्यता--यदि रोग उग्र हो अथवा उसकी उचित चिकित्सा न की जाय, तो दृष्टि नष्ट हो जाती है।

चिकित्सा--सर्वप्रथम शोधन और शमन करें। अस्तु, कीफाल की फस्द खुलवायें और प्रत्येक सप्ताह में एक बार खुलवाते रहें। दोष को विलोम करने के लिये साफिन की फस्द लेना और पिंडलियों पर सींगी लगाना लाभकारी है। फस्द के उपरांत संताप की दशा में इमली के फांट से कफप्रकोप की दशा में इयारिजात से उनका शोधन करें। यदि वेदना शांत न हो तो स्त्री का दूध नेत्र में टपकायें अथवा शियाफ अब्यज अफ्यूनी लड़कीवाली स्त्री के दूध में घिसकर आश्च्योतन करें और इसीमें रूई भिगो कर नेत्र के ऊपर रखें। जब वेदना शांत हो तो अलसी और मेथी का लबाब नेत्र में टपकायें और ऊपर से कपड़े की गद्दी रखकर बांध देवें या नेत्र के ऊपर अंडे की जर्दी और केसर का लेप करें। जब श्वेत रंग का पूय प्रगट हो तो बकरी का दूध और मेथी का लबाब मिला हुआ मध्वम्बु (माउल्असल) टपकायें तथा जरूर अंजरूत छिड़कें।

जरूर अंजरूत--निशास्ता ६ माशा, शोधित अंजरूत २ माशा, सफेद कलई २ माशा कूट-छानकर जरूर (अवचूर्णन) बनायें। इसके उपयोग से व्रण शुद्ध हो जाता है। पूय से व्रण शुद्ध हो जाने पर शियाफ कुंदुर का उपयोग करें जिसका योग निम्न है--अंजरूत, निशास्ता, बबूल का गोंद, कुंदुर, सफेदा काशगरी प्रत्येक ३ माशा बारीक पीसकर मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलाकर वर्ति (शियाफ) बनायें और नेत्र में लगायें। अथवा शंख सोख्ता, शादनज मग्सूल पीसकर छिड़कें। व्रणपूरण के उपरांत यदि व्रण का कोई चिह्न शेष रहे, तो पुरानी गली हुई अस्थि अर्क गुलाब में पीसकर लगायें।

अपथ्य--रोगी को उच्च स्वर, वमन, बलवती चेष्टा, छिक्काजनक द्रव्यों से तथा लिखने-पढ़ने के काम से बचना चाहिए। रोगी का सिरहाना नीचा नहीं होना चाहिये। इसके अतिरिक्त उष्ण एवं मधुर सांद्र आहार, अम्ल और अधिक मसालेदार आहार से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--लघु, शीघ्रपाकी और बल्य आहार सेवन करायें, जैसे--कद्दू, पालक, तुरई, अरहर, मूंग की दाल, खिचड़ी, पावरोटी, सेव, अंजीर आदि।

१६—हुज़ूजुल्ऐन

नाम—(अ०) हुज़ूजुल्ऐन; (उ०) आंख का उभर आना; (सं०) पुरःसृत नेत्रगोलक; (अं०) एक्सॉफ्थल्मॉस (Exophthalmos)।

इस रोग में नेत्रगोलक (आँख का ढेला) बाहर की ओर उभर आता है।

हेतु—रीही वा दोषिक माद्दा से नेत्र का परिपूर्ण हो जाना, भीतर की ओर से किसी रसौली (अर्बुद) आदि का दबाव पड़ना, नेत्र के ऊपर अभिघात लगना, नेत्र की पेशियों एवं बंधनियों का वातग्रस्त होना, या टूट जाना, तीव्र शिरःशूल या वमन होना, कब्ज की दशा में बलपूर्वक कुंथन करना, प्रसव के समय स्त्री का जोर लगाना, गला घुट जाना, सरसाम, फुफ्फुस शोथ, खुनाक आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—(१) नेत्र की पेशियों एवं बंधनियों के छिन्न हो जाने की दशा में दृष्टि सर्वथा नष्ट हो जाती है। (२) वायुसंचयजनित में नेत्र बिना बोझ के फूला हुआ होता है। (३) दोषसंचयज में नेत्र फूलने के साथ गौरव भी होता है। (४) इन्जेगाती में यद्यपि नेत्रगोलक बड़ा मालूम नहीं होता तथापि रोगी को नेत्र के भीतर से बाहर की ओर उद्वेष्टन एवं तनाव मालूम होता है और प्रगाढ़ अश्रु स्रावित होते हैं। (५) घातित (इस्तिर्खाऽ) में न नेत्रगोलक बड़ा होता है और न आँसू बहते हैं। किन्तु नेत्रमें अनैच्छिक चेष्टायें प्रारंभ हो जाती हैं।

चिकित्सा—यदि रोग साधारण हो तो प्रायः बाह्य उपचार ही पर्याप्त होता है। पर यदि रोग बलवान् हो तो दोषानुसार संपूर्ण शरीर का शोधन करना आवश्यक एवं उपकारी होता है। अस्तु, यदि नेत्रगोलकक्षय सामान्य और हेतु अल्प हो तो साधारणतया नेत्र के ऊपर पट्टी बांधना और सदैव उसको बन्द रखना पीठ के बल सोना और भोजन में कमी करना ही रोगनिर्मूलक (रामबाण) उपचार है। परन्तु यदि हेतु बलवान् हो और दोषसंचय अधिक हो तो दोषानुसार सरारू सिराका वेधन दोषानुसार शोधन वरन् कम से कम दोषहरण के लिये गुद्दी पर जोंक या सींगी लगवाना और नेत्र के ऊपर हर समय पट्टी बांधे रखना आवश्यक है। इसके उपरांत (१) शीतल जल या (२) पोस्त अनार के काढ़े से सिरके ऊपर परिषेक करना या (३) अर्क गुलाब में सिरका मिलाकर उसमें गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखना और उसको बांध देना अथवा इसी प्रकार (४) पोस्त अनार के क्वाथ से धारना और उसमें गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखना भी लाभकारी है। इन्जेगाती में निदानपरिवर्जन के बाद (५) सुर्मा या (६) सीसा का टुकड़ा गद्दी पर रखकर विकारी नेत्र पर बांधना और रोगी को पीठ के बल

सोने का आदेश करना तथा (७) गुलनार के क्वाथ से नेत्र के ऊपर धारना अथवा (८) हरे माजू को शीतल जल में पीसकर नेत्र के ऊपर लेप करना लाभकारी उपाय हैं। इस्तिखाई में हब्ब इयारिज द्वारा शोधन और अंगघात (इस्तिखाऽ) के उपायों को ध्यान में रखने के साथ (९) राई को बारीक पीसकर नस्य लेने से लाभ होता है। यदि यह रोग मस्तिष्क शोथ फुफ्फुसशोथ या कण्ठशोथ (खुनाक) आदि के कारण प्रगट हुआ हो तो मूल व्याधि की चिकित्सा करें। आवश्यकतानुसार समीचीन प्रकार के योग यथा शियाफ सुमाक आदि का उपयोग करें।

सिद्ध योग——पीला एलुआ, पीला रसवत, अकाकिया, बड़की दाढ़ी प्रत्येक ६ माशा——सबको हरे मकोय के रस में पीसकर लेप करें और उस पर रूई की गद्दी रखकर बांधें तथा रोगी को चित्त सुलायें। यह नेत्र के उभार एवं हुजूज को नष्ट करता है।

१७——नतूउल्कर्निया

नाम——(अ०) नतूउल्कर्नियः; (उ०) कॉर्निया का उभर आना, टेंट; (अं०) स्टैफिलोमा ऑफ दि कर्निया (Staphyloma of the cornea), केराटोकोनस (Keratoconus)।

इस रोग में तारकापटल मलिन (अस्वच्छ) होकर इतना ऊपर को उभर आता है कि पलकों के बाहर चला जाता है। यदि यह रोग शोथ के कारण हो तो पाश्चात्य वैद्यक में उसे 'स्टैफिलोमा' और यदि विना शोथ के हो तो 'केराटोकोनस' या 'कोनिकल कॉर्निया' कहते हैं।

हेतु——खिल्त रीही का तारका के नीचे संचित हो जाना आदि। तारका के मृदु या क्षतयुक्त होने या छिद जाने के कारण पीछे से अंगूरीपर्दे आदि का दबाव पड़ने से यह रोग हो जाया करता है।

लक्षण——तारका उभरी हुई एवं तनी हुई होती है। कभी तो संपूर्ण तारका बाहर को उभर आती है और कभी उसका मध्यभाग उभरकर शंक्वाकार (मखरूती) हो जाता है। क्षोभ होकर नेत्र साधारणतया शोथयुक्त एवं वेदनायुक्त हो जाता है। उभरी हुई तारका की नोक क्षतयुक्त होकर प्रायः फट जाती है और अंततः नेत्र नष्ट हो जाता है।

चिकित्सा——कफज नेत्राभिष्यंद की भांति सांद्र दोष का शोधन करके (१) रसवत या (२) हलदी आदि का उपयोग करें। या नेत्राभिष्यंद में लिखित (३) जरूर अस्फर या (४) शियाफ अहमर का उपयोग करें। (५) शलगम या (६) इक्लीलुल्मलिक के काढ़े से नेत्र में बफारा देवें या परिषेक करें और

(७) गुल वाबूना या (८) सुदाब के पत्र को अर्क सौंफ में पीसकर नेत्र के ऊपर लेप करें, कब्ज नहीं होने देवें।

अपथ्य—अम्ल, आध्मानकारकएवं गरिष्ठ पदार्थों से परहेज करें।

१८—बुसूरुल्कर्निया

नाम—(अ०) बसूरुल्कर्नियः; (उ०) आँख की फुंसियाँ; (सं०) अलजीमय तारकाशोथ; (अं०) फिलक्टिन्युलर करेटायटिस (Phlyctenular Keratitis)

इस रोग में नेत्र के तारकापटल पर एक वा अधिक पिड़कायें निकल आती हैं। नेत्र के शुक्लास्तर पर निकली हुई इस प्रकार की पिड़काओं को 'वद्का' कहते हैं।

हेतु—पित्तमय वा सौदामय रक्त का प्रकोप और कभी तीक्ष्ण पतले केवल पित्त का नेत्र के पटलों में अन्तर्भूत होना तथा वद्का रोग में वर्णित कारण इसके हेतुभूत हैं।

लक्षण—नेत्र लाल एवं तीव्र शूलयुक्त होता है। पुष्कल अश्रुस्राव होता है। प्रकाशासह्यता होती है। नेत्र को खोलकर देखने पर तारकापटलके ऊपर प्याजी रंग की घेरायुक्त पिड़का वा विस्फोट दृग्गोचर होता है।

अन्तर—पिड़का (बुसरः) और व्रण (कर्हा) में प्रारंभकालीन भेद यह है कि पिड़का प्रारंभ में लाल बिंदु के सदृश और व्रण रंग में सफेद, वेदनापूर्ण एवं भयपूर्ण होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि रोगी सहन कर सके तो प्रारंभ में बासलीक की फस्द खोलें या कम से कम भरी सींगी लगायें अथवा पित्त विरेचनीय औषध पिलाकर शोधन करें तथा संतापहरण के लिये शीतल औषधियां सेवन करायें। तदुपरांत (१) इसबगोल या (२) बिहीदाने का लबाब अर्क गुलाब या हरे धनिये के रस में मिलाकर नेत्र के भीतर आश्च्योतन करने या उसमें गद्दी तर करके नेत्र के ऊपर रखने से लाभ होता है और (३) लड़कीवाली स्त्री का दूध, अंडे की सफेदी या हरे मकोय के रस में मिलाकर इसमें से कुछ बूंदे नेत्र के भीतर टपकाने से प्रत्येक दशा में लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—प्रारंभ में (१) शियाफ अब्यज सादा या (२) शियाफ तुफाह लड़कीवाली स्त्री के दूध में घिसकर नेत्र के भीतर डालने से उपकार होता है। तदुपरांत दोष को शुद्ध करने और पिड़काओं के रोपण के लिये (३) शियाफ

अब्यज अफ्यूनी अथवा (४) शियाफ अब्यज कुंदुरी या (५) शियाफ कुंदुर लड़की वाली स्त्री के दूध में घिसकर नेत्र के भीतर कतिपय बार आश्च्योतन करने से उपकार होता है। इसके अतिरिक्त आंतरिक रूप से उपयुक्त प्रकार के अतरीफलों का उपयोग जारी रखना भी लाभकारी है।

१९--मोरसरज।

नाम--(अ०) मोरसरज, सुकूतुल्कज़्हिय्यः ; (उ०, हिं०) काली फूली, स्याह फूला; (सं०) तारकाभ्रंश; (अं०) आइरिडॉप्टोसिस (Iridoptosis) प्रोलॅप्स ऑफ दी आयरिस (Prolapse of the Iris)।

वक्तव्य--मोरसरज मोरसरः (फा० मोर=च्यूँटी, सरः=सिर) का अरबी कृत शब्द है। यह एक रोग हैं जिसमें कनीनिका के फट जाने से नेत्र का अंगूरी पर्दा च्यूंटी के सिरके बराबर बाहर निकल आता है इससे आगे अनुक्रम से वर्धमान तारकाभ्रंश रोग को क्रमशः रासुज़्ज़ुबाबी (मक्खी के सिरके बराबर), इनबी (अंगूर के बराबर), तुफाही (सेव के बराबर) और मिस्मारी या फलकी (तुफाही कुहना)।

हेतु और लक्षण--नेत्र के ऊपर अभिघात लगने या व्रण वा पिड़का उत्पन्न होने से तारकापटल फट जाता है और उसके नीचे से अंगूरी पर्दा बाहर उभर आता है, जिसको मोरसरज कहते हैं।

संसृष्टासंसृष्ट द्रव्योपचार--रोग के हेतुओं पर विचार करने के उपरांत तुरत कतिपय कर्कशतारहित संग्राही औषधियाँ, जैसे शादनः मग्सूल, रौप्यमाक्षिक (अक्लीमियाए नुक्रा) और मसीकृत किरमाला या (२) सफेदा कलई बारीक पीसकर अथवा (३) जरूर अक्सीरैन या (४) शियाफ आबार या (५) शियाफ अब्जर आदि का उपयोग करें। नेत्र के भीतर औषधि डालकर और नेत्रगुहा के बराबर स्वच्छ रूई की एक गद्दी नेत्र के ऊपर रखकर ऊपर से साफ पट्टी बांध देवें। यदि गद्दी के ऊपर रुपया के बराबर सीसा का एक गोल टुकड़ा या पिस हुआ सुर्मा एक रुपये के बराबर गोलीसी थैली में डालकर गद्दी के ऊपर बांध देवें तो अधिक लाभकारी होता है। इन उपायों से लाभ न होने पर शस्त्रकर्म ही इसका अंतिम उपाय है।

२०--हिवल--द्विधादृष्टि ।

नाम--(अ०) हिवल; (फा०) कजबीनी; (उ०) भेंगापन, भेंगा होना, (सं०) द्विधादृष्टि; (अं०) स्क्विन्ट (Squint), स्ट्रेबिस्मस (Strabismus) ।

यह नेत्र का एक प्रसिद्ध रोग है जिसमें नेत्र का कृष्ण भाग (हद्का) नासिका और दूसरी कनपुटी की ओर फिर जाती है तथा रोगी को एक-एक पदार्थ दो-दो दीखता है ।

हेतु और लक्षण--नेत्रगोलक की चेष्टादायिनी पेशियों में आर्द्र या शुष्क (रूक्ष) आक्षेप उत्पन्न हो जाता है या घात हो जाता है अथवा नेत्र द्रव वा पटल अपने स्थान से हिल जाते हैं। कभी करानीतुस, अपस्मार आदि उग्र व्याधियां भी इस रोग के हेतु होते हैं। बाल्यकाल, दृष्टिदौर्बल्य, दूर दृष्टि, ज्वर, दौर्बल्य अन्त्रकृमि और जलशीर्ष भी इसके हेतु होते हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--यदि रूक्ष आक्षेप या करानीतुस आदि तीव्र रोग इस रोग के निदान भूत हों तो निदान परिवर्जन के पश्चात् मस्तिष्क के स्नेहन एवं बलवर्धन का यत्नकरें । सुतरां (१) सात दाने मीठे बादाम के मग्ज का शीरा या (२) ३ माशा मीठे कद्दू के मग्ज का शीरा ७ तोला अर्क गावजबान में निकालकर ६ माशा मीठे बादाम का तेल मिलाकर पिलाने से उपकार होता है। (३) स्त्री का दूध या (४) गदही का दूध आँख, कान और नाक में टपकाना लाभकारी है। (५) १ तोला मीठे बिहीदाने के लबाब और (६) २ तोला इसबगोल के लबाब में १० तोला अर्क गुलाब और ५ तोला गुलरोगन मिलाकर उसमें गद्दी तर करके आँख के ऊपर रखना और कपड़ा या इस्पंज तर करके मस्तक, कनपुटी और सिरके ऊपर रखना अतीव लाभकारी उपाय है। (७) ७ तोला गुलबाबूना के काढ़े में तिल का तेल मिलाकर परिषेक करना; (८) रोगन बनफ्शा २ तोला सिर पर मलना या नाक में सुड़कना लाभकारी है। यदि तर आक्षेप अपस्मार या अंगघात रोग का कारण हो तो प्रत्येक कारण को यथाविधि निवारण करें।

२१--इत्तिसाअ

नाम--(अ०) इत्तिसाअ, इन्तिशार; (उ०, हिं०) पुतली फैल जाना; (अं०) मिड्रिएसिस (Mydriasis) ।

२२——ज़ीक

नाम——(अ०) ज़ीक़, ज़ीक़ सुक़्बा; (उ०, हिं) पुतली का तंग (संकुचित) हो जाना; (अं०) माइग्रोसिस (Myosis)।

वक्तव्य——इन उभय रोगों की निदान-चिकित्सा विस्तारभय से यहां नहीं लिखी गई।

२३——नज़ूलुल्माऽ

नाम——(अ०) नज़ूलुल्माऽ, कतरक्ता; (उ०, हिं०) मोतियाबिंद, पानी उतरना; (सं०) लिङ्गनाश; (अं०) कैटरैक्ट (Cataract)।

इस रोग में नेत्र का मोती (Crystaline lens) या उसको आवरण करनेवाली झिल्ली दोनों में मलिनता उत्पन्न हो जाने के कारण क्रमशः दृष्टि कम होकर अंततः सम्यक् दृष्टि नष्ट हो जाती है।

भेद——(१) अभ्रवत् (गमामी), (२) पारदीय (जैबकी), (३ गच या चूर्णवत् (जस्सी), (४) आकाशीय (आस्मान्जूनी), और (५) विकीर्ण (मुन्तशिर)। इसके अतिरिक्त सात अन्य भेद——काचवत् (जुजाजी), ओलावत् (अब्यज बर्दी), हरित, पीत, रक्त, सुनहला और काला।

हेतु——सिरके ऊपर अभिघात लगना, नेत्र में कठिन सर्दी लगना, अतिशय आयास, सूक्ष्म वस्तुओं के देखने का कार्य, अति मैथुन ; विशेषकर भोजन पचने के बीच में स्त्री सहवास करना, संपूर्ण शरीरगत द्रवों की वृद्धि, तीव्र शिरःशूल, अर्धावभेदक, तीव्र छर्दि आदि इसके हेतु हैं। यहरोग साधरणतया वृद्धों को हुआ करता है।

लक्षण——रोग के प्रारंभ में नेत्र के सामने कल्पित भुनगे, जैसे मच्छड़, मक्खी आदि उड़ते हुए दिखाई देते हैं। जो विशेष करके इस रोग का पूर्वरूप हुआ करता है। अस्तु, इस प्रकार के कल्पित पदार्थों का दिखाई देना और साथ ही दिन-ब-दिन दृष्टि में कमी और मलिनता उत्पन्न होना मोतियाबिंद का प्रारंभ और उसकी पूर्वभूमिका ही हुआ करती है। प्रकाश फटा हुआ एवं विकीर्ण दृग्गोचर होता है। इसके उपरांत प्रत्येक वस्तु दुगुनी दिखाई देती है और नेत्र के सामने हर समय जाला-सा प्रतीत होता है। दीपक बहुत बड़ा दिखाई देता है। चंद्रमा को देखने पर एक के स्थान में कई दिखाई देते हैं। दृष्टि क्रमशः कम होकर बिल्कुल जाती रहती है। अत्यन्त प्रकाशमय पदार्थों के सिवाय रोगी अन्य किसी वस्तु को देख नहीं सकता। अन्त में केवल धूप और छांह को पहिचान सकता है अथवा दिन-रात का भेद समझ सकता है।

कतिपय अन्वेषकों ने लिखा है कि जब कल्पित पदार्थों का दीखना

(ख्यालाते चश्म) निरंतर छः मास तक स्थिर रहें और दृष्टि क्रमशः न्यून होती जाय, तो समझ लेना चाहिये कि मोतियाबिंद अवश्य हो जायगा ।

रोग की प्रगति और परिणाम--यह रोग उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है और अंततः दृष्टि सर्वथा नष्ट हो जाती है। साधारणतया रोगारंभ से लेकर छः मास से एक वर्ष तक दृष्टि नष्ट हो जाती है। यदि बहुत पूर्व इस रोग का निदान हो जाय तो इसको थोड़ा-बहुत रोका जा सकता है। परन्तु जब यह बद्धमूल हो जाता है, तब इसका नाश करना दुश्तर होता है,और इसका अंतिम उपाय शस्त्रकर्म ही है।

चिकित्सासूत्र--प्रारंभ में जबकि दृष्टि सर्वथा नष्ट न हुई हो, अति शीघ्र सम्यक् दोषपाक के पश्चात् हब्ब इयारिज तथा अन्यान्य विरेचन से दोष का शोधन करें। यदि रोगी सहन कर लेवें और उसे सात्म्य हो जाय, तो निरंतर विरेचन देवें। वरन् सप्ताह में एक बार इयारिज फैकरा अन्याल्य मस्तिष्क संशोधक औषधियों के साथ अवश्य खिलायें। यदि संतापवृद्धि की आशंका हो, तो इयारिजात के साथ अतरीफल की योजना करें। संशोधनोपरांत अवशिष्ट रहे दोषों के शोधन करनेवाले गण्डूष और नस्य का उपयोग करें। कुहल बासलीकून और शियाफ मरारात का उपयोग करें और निरंतर अतरीफल, खमीरा और दवाउल्मिस्क आदि का सेवन करें। तथा प्रारंभ में कनपुटी की धमनी पर दहनकर्म करें (दाग देवें), जिसमें वह दग्ध हो जाय। दग्ध स्थल पर तीन दिन हराम मग्ज मर्दन करें । इसके बाद तिल के तेल में रूई भिगोकर लगावें। दाग से जितना अधिक द्रव स्रावित हो उतना ही उत्तम है। यह कर्म प्रायः लाभ पहुँचाता है। चिकित्साकाल में नेत्राहितकर उपाय और औषधियों से परहेज करें। कब्ज न होने देवें, रूक्ष आहार सेवन करायें। उदाहरणतः पक्षियों के मांस के कबाब, गरम मसालायुक्त भुना हुआ कलिया, सूखी रोटी आदि, सांद्र पदार्थ एवं मछली के मांस, दूध और उसके योग, तर फलों, सांद्र मांस, मद्य, सिरावेध, शृंग, अतिमैथुन और अन्यान्य मस्तिष्क दौर्बल्य कारक द्रव्यों और उपायों से परहेज करें। यदि जल के स्थान में मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) का अभ्यास डालें, तो अतीव हितकर है। जब रोग बद्धमूल हो जाय, दृष्टि नष्ट हो जाय, तो बिना शस्त्रकर्म के अन्य उपाय नहीं है। यह कर्म भी मस्तिष्क एवं शरीर शोधनोपरांत करना चाहिये और पूर्वोक्त पथ्य-पालन भी अनिवार्य है।

चिकित्साक्रम--प्रारंभ में मुंजिज देकर मुसहिल हब्ब इयारिज से मस्तिष्क का शोधन करें। मुंजिज का योग--उस्तूखुद्दूस ५ माशा, बिल्लीलोटन के पत्र ५ माशा, मुण्डी के फूल ९ माशा, गुलबनफ्शा ६ माशा, सौंफ और खतमी के

बीज प्रत्येक ६ माशा, उन्नाब ५ दाना, गावजबान ४ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल क्वाथकर छान लेवें और २ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलावें। दो सप्ताह के पश्चात् अमलतास का गूदा ६ तोला, तुरंजबीन ४ तोला, सनाय मक्की पत्र ६ माशा, ७ दाना बादाम की गिरी का शीरा मिलाकर विरेचन देवें। दूसरे और तीसरे विरेचन में हड़ों की भी योजना करें और यथाविधि रात्रि में ७ माशा हब्ब इयारिज खिलावें। तीन विरेचनों के उपरांत प्रातःकाल मर्जा जवाहरवाला २ रत्ती, १२ तोला खमीरा गावजबान के साथ सेवन करें, रात्रि में २ तोला अतरीफल कश्नीजी १२ तोला अर्क सौंफ के साथ सेवन करें। और नेत्र में कुहल साबून या दवाए नुजूलुल्माऽ लगाते रहें। इस प्रकार मोतियाबिंद के प्रारंभ में प्रायः लाभ होता है। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो शस्त्रकर्म करायें।

२४—सर्तानुलऐन

नाम—(अ०) सर्तानुलऐन, वर्मुल्कर्निया; (उ०) आँख का सर्तान, वरम कर्निया; (सं०) तारकागत अर्बुद; (अं०) कैन्सर ऑफ दी आई (Cancer of the eye) केराटाइटिस (Keratitis)।

वर्णन, हेतु आदि—यह एक प्रकार का शोथ है जो नेत्र के तारकापटल पर होता है और प्रायः इसकी उत्पत्ति का हेतु शिरः शूल हुआ करता है। इसका सादृश्य (सर्तान) के साथ होता है। यद्यपि यह शोथ साधारणतया दुश्चिकित्स्य समझा जाता है, तथापि वेदनाशमन और उपद्रव तथा लक्षण को कम करने का यत्न करना चाहिए।

चिकित्सा—(१) मुर्गी के अंडे की जर्दी कतीरा मिलाकर नेत्र के ऊपर रखना और (२) अंडे की सफेदी स्त्री के दूध में मिलाकर नेत्रमें टपकाना लाभकारी उपाय हैं। इसी प्रकार (३) असारून, (४) शीह (किरमाला), (५) कुंदुर, (६) बोल और (७) एलुआ इनमें से प्रत्येक पृथक्-पृथक् सुर्मा और लेपकी भाँति उपयोग करने से शोथ को विलीन करते हैं।

२५—गरब

नाम—(अ०) गरब, अफीलूस; (उ०) आँख के कोये का नासूर; (हिं०) अश्रुकोष का नासूर; (सं०) नेत्रनाड़ी; (अं०) फिस्च्युला लॅक्रिमॅलिस (Fistula lachrimalis)।

यह नेत्र के भीतरी कोण का नासूर है जिससे अनैच्छिक रूप से आंसू बहते रहते हैं। प्रथम भीतरी नेत्रकोण में एक छोटा-सा फोड़ा होता है जिसको यूनानी में अफीलूस कहते हैं। पुनः जब वह फूटकर नासूर बन जाता है तब उसको गरब कहते हैं।

हेतु—आर्द्र ऋतु में बालकों और आर्द्र (स्निग्ध) प्रकृति के मनुष्यों में यह रोग अधिक पाया जाता है। कभी नेत्रप्रणाली के रोग से भी यह हो जाता है।

लक्षण—यह नासूर विभिन्न प्रकार का होता है। अस्तु, कभी तो नेत्र के बाहरी भाग में और कभी पपोटा के नीचे होता है। कभी यह नाक के भीतर ओर और कभी नेत्र की ओर फूटता है। उक्त दशा में नाक या आँख से पूयमय द्रव उत्सर्जित होता रहता है। विशेष कर नेत्र को दबाने से यह द्रव भली भाँति प्रगट होता है। यदि यह रोग पुराना हो जाय तो उक्त दूषित द्रव से नाक की कुरी और कभी नेत्र विकृत एवं नष्ट हो जाता है।

चिकित्सा—प्रारंभ में सिरावेध एवं विरेचन द्वारा शोधन करें। अस्तु रक्त प्रकोप की दशा में कीफाल की फस्द खुलवायें, गुद्दी पर सींगी लगवायें, वरन् यथाप्रकृति विरेचन के द्वारा दोषों का शोधन करें। स्थानीय रूप से प्रथम दोष-विलोमकर औषधियों का उपयोग करें। यदि शोथ विलीन न हो, तो लड़की वाली स्त्री के दूध में केसर घिसकर लगायें, या मेथी का स्वरस नेत्र के भीतर आश्च्योतन करें या मेथी और अलसी पीसकर लगायें। जब व्रणशोथ पक जाय, तब उसको फोड़ने के लिये १ रत्ती कुंदुर को २ रत्ती कबूतर के बीट में गूंधकर लगायें या अंजीर को सिरकामें घिसकर लगायें। जब फोड़ा फूट जाय, तब घाव करने के लिये रूई को शहद में लत करके घाव के भीतर रखें और घाव को इस्पंज और मधुवारि (माउल्अस्ल) से स्वच्छ करके निम्न वर्तिका प्रयोग करें—२ तोला शहद को अग्नि के ऊपर रखें, जब गाढ़ा हो जाय, तब समुद्रफेन और माजू प्रत्येक १ माशा खूब बारीक पीसकर उसमें मिलायें और इसमें बत्ती तर करके नासूर के भीतर रखें। यदि नासूर का मुंह बन्द हो जाय और शोथ अधिक हो तो ६ माशा तुख्म मरो को २ तोला दूध में पकाकर ६ माशा केसर मिलाकर उस पर लगायें। जिसमें उसका मुंह खुल जाय।

सिद्धयोग— मरहम गरब—कुंदुर, बोल, शोधित अंजरूत, दम्मुल्अख्वैन, सफेदा काशगरी प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा, सबको महीन पीसकर ३ तोला गुलरोगन में १ तोला मोम पिघलाकर उक्त औषधियों के महीन चूर्ण को मिलायें। इसमें थोड़ी-सी रूई लत करके नासूर के ऊपर रखें। इससे नेत्रनाड़ी शुद्ध होकर भर जाती है।

पथ्यापथ्य—नेत्राभिष्यंदवत्।

नेत्रवर्त्मगत रोग (अम्राजुल् अज्फ़ान)

१—इस्तिर्खाउल् जफन ।

नाम—(अ०) इस्तिर्खाउल्जफन ; (हिं०, उ०) पपोटे (पलक) का ढीला हो जाना ; (अं०) टोसिस (Ptosis) ।

इस रोग में नेत्र का ऊपरी पलक ढीला होकर लटक जाता है और ऊपर की ओर कठिनाई से उठ सकता है ।

हेतु—पलक की वातनाड़ियों में द्रव का आ जाना, नेत्राभिष्यंद, अर्दित, या पक्षवध, पलक की पेशियों की कण्डराओं का छिन्न हो जाना आदि इसके हेतु हैं ।

लक्षण—द्रव की दशा में तर वस्तुओं का रोग से पूर्वसेवन और कण्डरा का छिन्न होना और अन्यान्य पूर्वोक्त व्याधियों के कारण भूत होने में प्रत्येक रोग के भिन्न-भिन्न लक्षणों का प्रगट होना निदान के साधनभूत होते हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—छिन्न कण्डरा को असाध्य समझें । यदि अर्दित और पक्षवध इस रोग का हेतु भूत हो तो मूल व्याधि की चिकित्सा करें । द्रवजन्य व्याधि में मुंजिज बल्गम देने के पश्चात् मुसहिल बल्गम से उसका शोधन करें । विशेष शुद्धि हेतु हब्ब इयारिज उपयोग करें । मस्तिष्क की शुद्धि के लिये उपयुक्त प्रकार के गण्डूष और नस्य का उपयोग करें । पलकों के ऊपर संग्राही एवं उपशोषण ओषधियों का उपयोग करें । अस्तु, इस दशा में संशोधन के उपरांत (१) पीला एलुआ, (२) अकाकिया, (३) रसवत, (४) मुरमकी (बोल), (५) हरा माजू इनमें हर एक अलग-अलग अथवा यथा प्रमाण एक साथ हरे मकोय के रस में पीसकर पलक और मस्तक के ऊपर लेप करें । इसी प्रकार (६) फिटकिरी २ रत्ती २॥ तोला अर्क गुलाब में घोलकर थोड़ी-थोड़ी देर बाद नेत्र में आश्च्योतन करते रहने से उपकार होता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार—रोगकाल में प्रति दिन (१) अतरीफल सगीर १ तोला या (२) अतरीफल कबील ९ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करना लाभकारी है । इसी प्रकार शोधनोपरांत उष्ण जुवारिशें, जैसे (३) जुवारिश जालीनूस ७ माशा या (४) जुवारिश जंजवील ७ माशा या (५) जुवारिश कमूनी ९ माशा अकेला या १२ तोला अर्क सौंफके साथ उपयोग करना तथा (६) माजून फलासफा ७ माशा अकेले या ६ तोला अर्क सौंफ और ६ तोला अर्क मकोय के साथ सेवन करना लाभकारी है ।

पथ्यापथ्य—तीतर, बटेर, गौरैया या मुर्गी का बच्चा आदि में से किसी एक का मांस गेहूं की फतीरी रोटी के साथ खिलायें, तर एवं स्निग्ध पदार्थों से परहेज करें ।

———

२—इल्तिसाकुल्अज्फ़ान

नाम—(अ०) इल्तिसाकुल् अज्फ़ान ; (उ०, हिं०) पलकों का चिपक जाना ; (सं०) अपरिक्लिन्नवर्त्म, पिल्स ; (अं०) एङ्किलोब्लेफेरॉना (Ankyloblepharona) ।

इस रोग में पलक कभी तो आपस में और कभी शुक्लास्तर एवं तारकापटल से चिपक जाते हैं ।

हेतु—नेत्राभिष्यंद, नेत्र और वर्त्मगत व्रण, पोथकी, सिराजाल या अर्जुन आदि के विधि विहीन शस्त्रकर्म या आमाशय से तीक्ष्ण दोष का आरोहण करना या मस्तिष्क से तीक्ष्ण दोष का अवरोहण करना और बालकों में द्रवातिरेक आदि इसके हेतुभूत हैं ।

लक्षण—उपर्युक्त हेतुओं का प्रगट होना और प्रसेक की दशा में मस्तिष्क में उद्वेष्टन और नेत्र में शूल आदि प्रतीत होना और बाष्पारोहण की दशा में उदर एवं उरः कोष्ठ में से किसी रोग से आक्रांत होना निदान का साधनभूत होता है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के असली कारण को दूर करें, यदि हेतु की तीव्रता की दशा में दोनों पलकों के अत्यंत रूक्ष हो जाने का भय हो तो रक्त के प्रकोप की दशा में सरारूकी फस्द खोलने और उपयुक्त प्रकार के शोधन एवं शमन करने के उपरांत (१) लड़की वाली माता का दूध या (२) इसबगोल का लवाब या (३) अर्क गुलाब के कुछ बिन्दु अकेले या सबको एक में मिलाकर नेत्र के भीतर टपकाने या उनमें नरम स्वच्छ धुनकी हुई रुई का फाहा तर करके पलकों के बीच में रखना अत्यंत गुणकारी होता है ।

संसृष्ट द्रव्योपचार—शोधन के बाद (१) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ उपयोग करने से उपकार होता है । इसी प्रकार व्रणरोपण के लिये (३) शियाफ अब्यज लड़कीवाली स्त्री के दूध में घिसकर नेत्र के भीतर डालने या (४) जरूर अब्यज पलकों पर छिड़कने से भी लाभ होता है । इसी प्रकार शियाफ सुमाक भी गुणकारी है । कब्जनिवारण का ध्यान रखें । हेतु के अनुसार पथ्यापथ्य का आदेश करें ।

३—शत्रा

नाम—(अ०) शत्रः ; (हिं०) पलकों का परस्पर न मिलना ; (सं०) शशकनेत्रत्व, शशकीय, नेत्रच्छद ; (अं०) लैग्ऑफ्थल्मास (Lagophthalmos) ।

इस रोग में पलक सिकुड़कर बाहर या भीतर की ओर मुड़कर इतने छोटे हो जाते हैं कि परस्पर मिल नहीं सकते और रोगी के नेत्र सोते-जागते शशक नेत्रवत् थोड़े-बहुत खुले रहते हैं। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक में ऐन अर्नबिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक में लैगॉफ्थल्मॉस कहते हैं। कभी ऐसा होता है कि ऊपर का पलक सिकुड़ जाता है और नीचे का बाहर की ओर उलट (बहिर्वलित हो) जाता है। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक में शत्रः खारजिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक में एक्ट्रोपिऑन (Ectropion) कहते हैं। कभी निचला पलक भीतर की ओर मुड़ (अन्तर्वलित हो) जाता है। इसको अरबी-यूनानी वैद्यक में शत्रः दाखिलिय्यः और पाश्चात्य वैद्यक में एन्ट्रोपिऑन (Entropion) कहते हैं।

हेतु--जन्म से ही पलकों का छोटा होना, उनका छिन्न हो जाना, नेत्र-वर्त्मोत्थापनी पेशी का आक्षेप, पलक के किसी भाग का त्रुटित होना या उसमें कठिन एवं अक्काल व्रण का उत्पन्न होना अथवा ग्रन्थिरोग या अर्वुद या मस्सा व अधिमांस का उत्पन्न हो जाना, व्रणरोपण होने पर उद्वेष्टन एवं आक्षेप उत्पन्न होना या आघात-प्रतिघात से अपेक्ष उत्पन्न होना आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण--सहज शशकीय नेत्रच्छद का जन्मतः प्रगट होना और शेष भेदों में पूर्वोक्त हेतुओं एवं रोगों की विद्यमानता, और दोषज आक्षेप एवं आक्लेदजनित अंगघात में रोग का सहसा प्रगट होना, पलकों का आक्लेद से परिपूर्ण होना और उनमें भारीपन एवं उद्वेष्टन की प्रतीत होना तथा रूक्ष द्रव्यों से लाभ प्रतीत होना प्रभृति लक्षणों की विद्यमानता, परंतु इसके विपरीत रूक्ष आक्षेप में रोग का क्रमशः होना, पलक का कृश एवं क्षीण प्रतीत होना आदि लक्षण निदानसाधक होते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रोग के मूल हेतु को दूर करें। अस्तु, यदि इस रोग का प्रकाश पलक को काटने एवं प्रमाण से अधिक सी देने या व्रणरोपण द्वारा पलक के संकुचित हो जाने से हुआ हो तो पलक की त्वचा को सीवन या अंगूर आने के स्थान से पुनः भेदन करके उसमें कोई मांसरोहण मलहर, जैसे--मरहम अब्यज या बासलीकून रखें। यहाँ तक कि खाली स्थान तक मांस उत्पन्न हो जाय। सहज शशकनेत्रत्व यद्यपि असाध्य माना गया है, तथापि उक्त उपाय लाभदायक हो सकता है। यदि रोग का हेतु अधिमांस या मसक या अर्बुद या सोलुल आदि हो तो उक्त अवस्था में उपयुक्त संशोधन के पश्चात् उनके विशिष्ट शस्त्रकर्म उपादेय होते हैं। अंगघात एवं आक्षेपजन्य शशकनेत्रत्व में आक्षेप एवं अंगघात की चिकित्सा लाभकारी होती है। दोषज शशकनेत्रत्व में शोधनोपरांत

(१) जंगारको किसी ठीकरीपर रखकर भून-पीसकर विकारी अंग पर लगायें। इसी प्रकार (२) गरम पानी की भाफ देवें या (३) गुलरोगन में रूई तर करके रखने से लाभ होता है। यदि रोग का हेतु पेशी का घातित होना हो तो (४) अकाकिया या (५) बोल को कूट-छानकर विलायती मेंहदी के पत्ते के रस में गुंधकर पलक पर लेप करते रहें। लाभदायक सिद्ध होगा।

संसृष्ट द्रव्योपचार—संशोधनोपरांत अंगघातज एवं दोषज शशकनेत्रत्व में (१) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ प्रतिदिन सेवन करते रहने से लाभ होता है। विशेष शोधन के लिये (३) हब्ब इयारिज या (४) हब्ब शबयार यथाप्रमाण यथाविधि सेवन करने से उपकार होता है।

४—शिर्नाक़

नाम—(अ०) शिर्नाक़; (अं०) कञ्जंक्टिओमा (Conjunctioma)।

हेतु और लक्षण—यह एक वसामय प्रवर्धन अर्थात् चर्बीला उभार है जो नेत्र के ऊपरी पलक में उभरा हुआ मालूम होता है और ग्रन्थि (ओकदा) या अर्बुद की भाँति हिलाने से अपने स्थान से हिलता नहीं, अपितु त्वचा के नीचे चिपका हुआ होता है। ऊपरी पलक भारी और मोटी हो जाती है। अतएव उसे खोलने एवं चेष्टा करने में कठिनाई होती है और नेत्र सदा क्लिन्न (तर) रहता है। प्रकाश की ओर देखने से अश्रु बहते और छींके आती हैं। इस रोग का हेतु सांद्र दोष होने से यह रोग प्रायः बालकों और स्निग्ध प्रकृतिवालों को और जिन्हें प्रायः प्रसेक एवं प्रतिश्याय विकार रहता हो, उनको हुआ करता है।

चिकित्सा—प्रथम कफज नेत्राभिष्यंद की भाँति शोधन करें तदुपरांत (१) पीला रसवत या (२) केसर हरे मकोय के रस में पीसकर कुनकुना गरम लेप करें या (३) मेथी ३ माशा पीसकर गुलरोगन में मिलाकर विकारी स्थान के ऊपर लेप करें। शोधनोपरांत प्रथम जरूर अस्फर फिर जरूर अस्वर और फिर बासलीकून अकबर नेत्र में लगायें। गाढ़े, गुरु एवं आध्मानकारक पदार्थों से परहेज करें।

५—ओक़दा

नाम—(अ०) ओक़्दः; (उ०) गिरह; (हिं०, सं०) ग्रन्थि; (अं०) मोलस्कम (Molluscum)।

हेतु और लक्षण—इस रोग में नेत्र के ऊपरी पलक में एक छोटी-सी श्वेत ग्रंथि या रसौली (अर्बुद)-सी बन जाती है और हिलाने से त्वचा के नीचे इधर-उधर गतिशील होती है। इसका हेतु भी सौदावी सांद्र दोष होता है जिसका तरल भाग विलीनीभूत होकर शेष भाग कठोर हो जाता है।

चिकित्सा—(१) गरम पानी से धारना और (२) मोम को गुलरोगन में पिघलाकर पतला लेप करना, इसी प्रकार (३) मेथी का लबाब या (४) अलसी का लबाब थोड़े गुलरोगन में मिलाकर लेप करना लाभकारी है। नरमी आ जाने के बाद सूजन उतारने के लिये मरहम दाखिलयून या किसी और सूजन उतारने-वाले मरहम का प्रयोग उचित है। यदि ग्रन्थि चिकित्सा साध्य न हो तो उक्त अवस्था में सौदा के शोधनार्थ माउज्जुब्न पिलायें। उसके बाद सौदाविलयन लेप और पतले लेप लगायें।

पथ्यापथ्य—सांद्र एवं सौदाकारक आहार से परहेज करें।

६—शारमुन्क़लिब व शारजाइद

नाम—(अ०) शारमुन्क़लिब ; (हिं०, उ०) पड़बाल, परवाल ; (सं०) (अं०) ट्रिकियासिस (Trichiasis)। (अ०) शारजाइद ; (हिं०) ; (सं०) उपपक्ष्म ; (अं०) डिस्टिकियासिस (Distichiasis)।

शारमुन्क़लिब में पलकों के बाल अन्तर्वलित और उनकी पंक्ति अनियमित होती है। शारजाइद में पूर्वसिद्ध पक्ष्मपंक्ति के समान एक और अंतर्मुखी पक्ष्म-पंक्ति भी होती है।

हेतु और लक्षण—इस रोग की उत्पत्ति के हेतु दूषित द्रवों से उत्पन्न होने-वाले दूषित बाष्प और ऐसे दूषित प्रकार के द्रवों की पलकों में विद्यमानता या किसी-किसी के मतसे स्रोतों के छिद्र का टेढ़ा स्थित होना आदि हैं और हर एक भेद अर्थात् जाइद या मुन्कलिब के लक्षण प्रगट हैं। पोथकी, चिरज यक्ष्मप्रांत शोथ आदि भी इसके हेतु हुआ करते हैं। इस रोग से दृष्टिदौर्बल्य, सिराजाल, नेत्रस्राव, नेत्रकण्डू और ललाई आदि उपद्रव भी उत्पन्न हो जाया करते हैं।

चिकित्सा—दूषित द्रवों के उत्सर्ग के लिये दोषपाचन और विरेचन (नेत्रा-भिष्यंद चिकित्सा में वर्णित) का उपयोग करायें। फिर प्रातः काल अतरीफल उस्तूखुद्दूस ७ माशा और रात्रि में बड़े हड़ का मुरब्बा एक नग खिलाते रहें। साव-धानीपूर्वक मोचने से बाल उखाड़कर उनकी जड़ में सोने की सूई से दाग देवें

(दहनकर्म करें) और विदग्ध (मसीकृत) ताम्र को सात बार गरम करके हर बार हरे धनिये के रस में बुझाकर महीन पीस लेवें और बाल उखाड़ने के उपरांत उनकी जड़ों में लगावें। अथवा नौशादर को बकरी के पित्त में मिलाकर बाल के स्थान में लगावें। कुहल गुलकुंजद या कुहल काफूर प्रातः सायंकाल नेत्र में लगाना भी लाभकारी है। इस रोग में अधिक काल तक औषधि का प्रयोग करना चाहिये।

पथ्य—कम मसाले का बकरी के मांस का शूरबा, मूंग की दाल चपाती के साथ खायें। मूंग की भुनी हुई खिचड़ी, फलों में अनार, अंगूर, सेब आदि भी खा सकते हैं।

अपथ्य—चटपटे, गरम और उत्तेजक आहार से परहेज करें। धूप में अधिक चलना-फिरना और लिखना-पढ़ना भी अहितकर हैं।

७—इन्तिशारुल् अहदाब।

नाम—(अ०) इन्तिशारुल् अहदाब; (उ०, हिं०) पलकों का झड़ जाना; (अं०) पाइलोसिस (Pilosis)। (अ०) सुकूतुल्अहदाब; (उ०, हिं०) पलकों का गिर जाना; (अं०) मैडेरोसिस (Madarosis)।

हेतु—सरसाम और हुम्मयात मोहरिका से पोषणीय तत्त्व का कम हो जाना, पलकों के स्रोतों का विस्तीर्ण वा संकुचित हो जाना, चेचक या क्षत अथवा जलने से स्रोतों का अवरुद्ध हो जाना, पलकों में शोथ, बालचर, व बादखोरा, पक्ष्मशात, सौदावी, पैत्तिक वा श्लैष्मिक दुष्ट दोष का पलकों में संचय, जलोदर अथवा रक्त का पतला हो जाना आदि इस रोग के हेतु होते हैं।

लक्षण—पलकों के बाल थोड़े या सारे झड़ जाते हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—रोग के मूल हेतु को ध्यान में रखकर चिकित्सा करें। अस्तु, (१) पौष्टिकता की कमी की दशा में रोगी को पौष्टिक आहार देवें और शोणितोत्क्लेशक औषधियों का स्थानिक प्रयोग करें। यदि आक्लेद की अधिकता रोग का हेतु हो तो (२) कफविरेचन और हब्ब इयारिज से मस्तिष्क और शरीर की शुद्धि करें। दोषाकर्षक गण्डूष एवं नस्य का प्रयोग करायें। (३) यदि बालों के पुष्टिदोष से यह रोग हुआ हो तो प्रथम शोधनकरें, तदुपरांत रोमसंजनन सुर्मों का उपयोग करें और संशमनार्थ रोगन बनफशा या रोगन कद्दू का शिरोऽभ्यङ्ग करें। (४) प्याज का रस लगाने से पलकों के बाल उग आते हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार--सरसाम और हुम्मयात मोहरिक के पश्चात् होनेवाले दौर्बल्य में (१) खमीरा मरवारीद ५ माशा या (२) खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला ५ माशा या (३) खमीरा अबरेशम हकीम इर्शद-वाला ५ माशा या (४) आमले का मुरब्बा १ नग धोकर चाँदी का वर्क लपेट कर खिलायें और ऊपर से अर्क गावजबान १२ तोला या अर्क मुंडी १२ तोला शर्बत उन्नाब २ तोला या शर्बत उस्तूखुद्दूस २ तोला या शर्बत सेव २ तोला मिलाकर पिलायें और कुहल माभीरान या कुहल लाजवर्द का उपयोग करायें। शेष दशाओं में कारणानुसार उपयुक्त योग का प्रयोग करायें।

८--जर्बुल्अज्फान और जर्बुल्ऐन

नाम--(अ०) जर्बुल् अज्फान, जर्बुल्ऐन, हिक्कतुल्ऐन, खुशूनतुल्अज्फान; (हिं०, उ०) कुकुरे, रोहे, कुथुआ; (सं०) पोथकी; (अं०) ट्रैकोमा (Trachoma)। ग्रेन्युलर लिड्स (Granular lid)।

वक्तव्य--किसी-किसी ने जर्बुल्ऐन (हिक्कतुल्ऐन,) जर्बुल्अज्फान और खुशूनतुल्अज्फान को एक दूसरे से पृथक् रोग लिखा है, पर वस्तुतः ये तीनों एक ही रोग के अलग-अलग नाम हैं। इस रोग में नेत्र के पलकों विशेषकर ऊपरी पलकों के भीतरी स्तर पर छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं, जिससे हर समय न्यूनाधिक खुजली होती रहती है और प्रायः आँसू भी जारी रहते हैं।

भेद--प्रायः इसके निम्न ३ भेद होते हैं--(१) जर्ब मुम्बसित (फैले हुये रोहे), इसमें दानों के सिवाय पलकों के अन्दर किसी प्रकार खुरदरापन, कठोरता एवं ललाई होती है। (२) जरब हसफी (राजिकावत्), इसमें दाने अत्यंत सूक्ष्म और सफेदी लिये अन्हौरियों के सदृश होते हैं। (३) जरब तीनी या सूक्रूसीस (अंजीर वत्), इसमें दाने अंजीर के दानों के समान परस्पर चिपके हुये होते हैं। इनके नीचे का भाग अर्थात् जड़ गोल और ऊपर के सिरे तीक्ष्ण एवं नोकदार होते हैं। स्व-रचित 'किताब फाखिर' नामक ग्रंथ में राजी ने तीनी के स्थान में तिब्नी (घास के सदृश) लिखा है। किसी-किसी ने इसका एक चतुर्थ भेद जर्ब अस्वद भी वर्णन किया है। इसमें दानों की रंगत स्याहीमाटाल होती है और उन पर खुरंड बंधे हुये होते हैं। यह अधमतम भेद है। किसी-किसी ने जर्ब अस्वद के स्थान में इसका चतुर्थ भेद 'बर्दी' लिखा है जिसमें दाने बर्द अर्थात् ओले के समान सफेद रंग के होते हैं। बर्दः को पाश्चात्य वैद्यक में कॅलाझिऑन (Chalazion) और संस्कृत में लगण कहते हैं।

हेतु--क्षारीय कफ या उष्ण बाष्प और कभी-कभी पतला पित्त या विदग्ध दूषित सौदामय रक्त भी इसका हेतु होता है।

लक्षण—पलकों में खुजली, दाह एवं सूजन होती है। अधिक मलने से जलस्राव होने लगता है। पलकों का रंग लाल हो जाता है और वे फूल जाती हैं। रोगी को प्रकाशासह्यता होती। प्रातःकाल सोकर उठने पर नेत्र चिपके हुये होते हैं।

परिणाम—यह रोग यदि पुराना हो जाय तो शीघ्र वा देर में दृष्टि को हानि पहुंचाता है। कभी-कभी नेत्रगोलक के ऊपर होनेवाले निरंतर क्षोभ के कारण रक्तसंचय हो जाता है जो बढ़कर तारका के ऊपर भी छा जाता है जिससे सिराजाल रोग उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—इस रोग में नेत्र की रक्षा आवश्यकीय है। अस्तु, धूलि-कण और तीव्र आँधी से नेत्र की रक्षा करें। इसी प्रकार तीव्र प्रकाश भी नेत्र के लिये अहितकर है। इससे बचते रहें। यदि आवश्यकता हो तो हरा या (गुब्बारी) ऐनक लगाकर तीव्र प्रकाश में आ सकते हैं।

आमाशय और मस्तिष्क की शुद्धि करें। रक्त के प्रकोप की दशा में सराल सिरा का वेधन करें और कनपुटियों पर जोंक लगवायें। शेष दोषों की प्रगल्भता की दशा में दोषपाचन औषध (मुंजिज) देकर शोधन करें। मलावरोध न होने देवें। नेत्र में लगाने के लिये दोषविलयन और नेत्र की विशिष्ट औषधियों का उपयोग करें।

चिकित्साक्रम—आमाशय और मस्तिष्क की शुद्धि के लिये रात्रि में सोते समय अतरीफल शाहतरा ७ माशा, अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला और शर्बत उन्नाब २ तोला के साथ खिलायें। नेत्र की शुद्धि के अर्थ अधकुटा त्रिफला १॥ तोला रात्रि में पाव भर जल में भिगोयें और प्रातः काल उस पानी से नेत्र को धोयें। पिड़काओं को नष्ट करने के लिये पलकों को उलटकर पिड़काओं (दानों) के ऊपर मिश्री की डली लेकर रगड़ दिया करें। नौसादर, सातर फारसी, बबूल का गोंद प्रत्येक एक माशा कूट-छानकर सिरका में पीसकर छाँह में सुखाकर सुर्मा की भाँति नेत्र में लगायें अथवा शियाफ तूतिया (नवीन) पलकों को उलटकर दानों पर लगायें। कुहल काफूर, सुर्मा जाफरानी, अक्सीरजरब, शियाफ जरब और बरूद काफूरी में से किसी एक का लगाना भी अतीव गुणकारी है।

पथ्य—लघु एवं शीघ्रपाकी आहार देवें, जैसे—बकरी का शूरबा, कद्दू, तुरई, चुकंदर और पालक आदि के शाक के साथ अथवा अरहर और मूँग की दाल के साथ गेहूँ की चपाती देवें। फलों में अंगूर और मीठा अनार दिया जा सकता है।

अपथ्य—आहारतः समस्त उष्ण, उत्तेजक एवं आध्मानकारक पदार्थ से परहेज

करें। दही, छाछ जैसे अम्ल आहार एवं पेय से भी परहेज करें। नेत्र को धोयें और उसे धूलि-कण एवं तीव्र प्रकाश से सुरक्षित रखें।

९--सुलाक़।

नाम--(अ०) सुलाक़, रमदजफ्नी; (उ०, हिं०) बाम्हनी; (सं०) पक्ष्मशात; (अं०) ब्लीफॅरायटीज (Blepharitis)।

इस रोग में पलकों के किनारे (प्रान्त) मोटे एवं लाल हो जाते हैं और उनमें खुजली हुआ करती है। फलतः धीरे-धीरे पलकों के बाल गिर जाते हैं और उनके किनारे क्षतयुक्त हो जाते हैं। इस रोग को बग़लगंद भी कहते हैं।

हेतु--एक प्रकार का नमकीन गाढ़ा दूषित एवं अक्काल दोष इसका हेतुभूत होता है जो नेत्राभिष्यंद और तीक्ष्ण रक्तमय बाष्प के कारण प्रकाश में आता है। अश्रुग्रन्थियों का शोथ, नासाप्रणाली का संकोच और धूएँ आदि से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--पलकों के किनारे लाल शोथयुक्त एवं व्रणयुक्त हो जाते हैं। नेत्र से स्राव होता रहता है। पलकों के बाल झड़ जाते हैं। दृष्टि विकृत हो जाती है। प्रातःकाल उठते समय पलक परस्पर चिपके होते हैं।

चिकित्सा--पलकों को प्रति दिन प्रातःकाल उष्ण जल से धोकर स्वच्छ कर लिया करें। सुमाक और पीली हड़का छिलका प्रत्येक १ तोला, अर्क गुलाब ६ तोला में रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल छानकर उसमें कपड़ा भिगोकर पलक के ऊपर रखवायें और पाँच बूंद नेत्र के भीतर आश्च्योतन करें (टपकायें)। कुलफा की हरी पत्ती ६ माशा पानी में पीसकर १ तोला, गुलरोगन मिलाकर सोते समय पलक के ऊपर लेप करें।

यदि रोग पुराना हो तो दोषशोधनोपरांत प्रातःकाल अतरीफल उस्तूखुद्दूस ५ माशा और सोते समय अतरीफल जमानी ७ माशा खिलायें और सफेदा जस्त १ माशा, कपूर १ माशा, नीम का हरा कोपल ७ नग, आमले का स्वरस ४ माशा—सबको पीसकर जल से २१ बार धोये हुए ६ माशा गोघृत को उसमें मिलाकर प्रातः सायंकाल नेत्र के भीतर और पलक के ऊपर लगायें।

पथ्य--बकरी के सालन, पालक, चुकंदर, शलगम आदि के शाक के साथ गेहूँ की चपाती खायें। मूंग और अरहर की दाल भी खा सकते हैं। अंगूर, सेव और नासपाती भी दी जा सकती है।

अपथ्य--नेत्र को तीव्र प्रकाश, धूयें और धूल-कण आदि से सुरक्षित रखें।

अधिक उष्ण और मसाले युक्त चटपटी वस्तुओं, आध्मानकारक और बादी आहारों से परहेज करें। दूध, दही और छाछ भी अहितकर है।

------

१० कमलुल्अज्फ़ान

नाम--(अ०) कमलुल्अज्फान; (उ०, हिं०) पलकों में जूएँ पड़ना; (अं०) ट्राइएसिस (Triasis)

हेतु--मलिनता, मुख और नेत्र न धोना, कफज दूषित द्रवों का पलकों में संचय आदि इसके हेतु हैं।

चिकित्सा--शुद्धता और स्वच्छता विशेषतः मुख और पलकों को धोकर स्वच्छ रखना और (१) नमक या (२) सोआ के बीज जल में उबालकर उससे पलकों को धोना, (३) एलुआ ३ माशा या (४) गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना पीसकर पलकों पर लेप करना लाभकारी है। (५) ३ माशा सफेद फिटकिरी बारीक पीसकर पलकों पर मलने से भी लाभ होता है।

११--शईर:

नाम--(अ०) शईरः (उ०,हिं०) बिलनी, अंजनहारी गुहांजनी, गुहेरी; (सं०) अञ्जननामिका; (अं०) हार्डिओलम् (Hardiolum), स्टाई (Stye)।

इस रोग में ऊपर या नीचे के पलक के किनारे पर जौ (शईर) के बराबर लंबोत्तर शोथ या फुंसी निकल आती है। अंगरेजी हार्डिओलम भी जौ (शईर) का पर्यायवाचक शब्द है।

हेतु--सौदाजन्य सांद्र रक्त इस रोग का प्रधान हेतु है जिसका कारण आहार-दोष, अजीर्ण वा कुपचन या रक्तदोष होता है।

लक्षण--पलक की जड़ में प्रथम खुजली एवं ललाई होती है। इसके बाद वहां पर फुंसी बन जाती है जिसमें साधारणतया पीव पड़ जाती है और जिसका मुंह पलक के किनारे पर होता है। यह संख्या में एक और कभी अधिक भी होती है। कभी एक के बाद दूसरी निकलती रहती है और इसकी संख्या प्रायः सात तक पहुँचती है। पलक में वेदना और शोथ होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रक्तकेप्रकोप की दशामेंसरारू सिराका वेधन करायें या प्रकृत्यनुसार विरेचन एवं हब्ब इयारिज से उसका शोधन करें और (१) हलदी

या (२) लौंग या (३) कालीमीर्च या (४) रसवत या (५) एलुआ को स्वच्छ जल या अर्क गुलाब या हरी कासनी, मकोय या धनिये के स्वरस में घिसकर गुहेरी पर लगायें। (६) खजूर की गुठली के चूर्ण को गुलरोगन के साथ लेप करने से भी उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--जब गुहेरी में पीव पड़ जाय तब शस्त्रकर्म द्वारा या जब वह पककर फट जाय तब उसको स्वच्छ करके उसपर यह औषधि लगायें--गुलनार, रसवत, दम्मुल्‌अख्वैन, सफेद सुर्मा, सफेदा समभाग लेकर खूब बारीक पीसकर रेशमी कपड़े में छानकर गुहेरी पर लगायें अथवा जरूर अस्फर या मरहम दाखिलयून लगायें। जब बार-बार गुहेरी निकले तो रोगी को विरेचन देकर कुछ दिन तक अर्क मुसफ्फा खून ७ तोला, शर्बत उन्नाव २ तोला मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलाया करें अथवा निम्न योग देवें--बनफ्शा, उस्तूखुद्दूस, मुण्डी, चिरायता, पित्तपापड़ा प्रत्येक ५ माशा--सबको भिगो और मल-छानकर २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलाया करें। सांद्र और बाष्पकारक आहार से परहेज करायें। यदि नेत्र में ललाई एवं वेदना उत्पन्न हो जाय, तो नेत्राभिष्यंदवत् चिकित्सा करें।

कर्णरोगाध्याय (अम्राजुल्उज्न) ३

नाम--(अ०) अम्राजुल्उज्न; (फा०) अम्राजे गोश; (उ०, हिं०) कान की बीमारियाँ (रोग); (सं०) कर्णरोग; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी ईयर (Diseases of the ear)।

कर्ण की स्वास्थ्यरक्षा

कर्ण में मलसंचय न होने पाये, इसका सदा ध्यान रखना चाहिये। इस हेतु आठवें-दसवें दिन कानोंका मैल साफ कराते रहना चाहिये। परन्तु मैल निकलवाने के लिये नुकीले एवं तीक्ष्ण शस्त्र का प्रयोग कदापि न करना चाहिए। कान को शीतल वायु के झोंकों से और बचाना चाहिये। स्नान करते समय इस बात की सावधानी रखनी चाहिये कि पानी कान के भीतर न चला जाय और उसके भीतर रह न जाय, इसलिये स्नान के बाद कान को रूई के फाहा से साफ कर लेना चाहिये। सप्ताह में एक बार कड़ए बादाम का तेल कान में डालने से भी उसकी रक्षा होती है। इसके अतिरिक्त कान में शोथ एवं पिड़काओं की उत्पत्ति से उसकी रक्षा करना आवश्यकीय है। यदि उनके होने की आशंका हो तो शियाफ मामीसा सिरका में घोलकर कान में टपकायें। कुपचन एवं इम्तिलाऽ से और विशेषतः ऐसी दशा में सोने से बचे। अधिक बोलना, बहुत ऊँचा शब्द सुनना, तीव्र चेष्टा करना, अधिक स्नान, नित्य मादक द्रव्य सेवन करना, ये सारे कर्णाहितकर उपाय हैं। कान में डालने वाली औषधि का उष्ण होना जरूरी है।

१--वज्उल्उज्न

नाम--(अ०) वज्उल्उज्न; (फा०) दर्दे गोश; (उ०, हिं०) कान का दर्द; (सं०) कर्णशूल; (अं०) ओटॅल्जिया (Otalgia)।

हेतु--(१) विप्रकृति (उष्ण या शीत दोष), (२) शोथ, (३) पिड़का, (४) कान में व्रण आदि हो जाना (तफर्रुक इत्तिसाल), (५) कर्णगत शल्य, (६) शीत, (७) किसी दाँत का सड़ा-गला हो जाना और (८) आमवात या संधिवात आदि रोग।

वक्तव्य—जैसा कि बारंबार बतलाया जा चुका है, विकृति के ये दो भेद होते हैं--(१) दोषज और (२) अदोषज। पुनः इनमें से प्रत्येक के ये चार

अवांतर भेद होते हैं अर्थात् अदोषज (साज़िज) उष्ण होती है या शीतल अथवा स्निग्ध वा रूक्ष । इसी प्रकार दोषज विप्रकृति भी रक्तज या पित्तज अथवा कफज वा सौदावी चार प्रकार की होती है । अस्तु, हेतु भेद से कर्णशूल अनेक प्रकार का होता है ।

लक्षण—कान में तीव्र वेदना होती है जिसके साथ टीसें होती हैं । यदि गर्मी से हो तो कान लाल होता है । यदि गर्मी अदोषज हो तो दर्द के साथ टीसें एवं भारीपन नहीं होता । दोषज होने पर यह दोनों लक्षण पाये जाते हैं । यदि सर्दी से हो तो सिर में भारीपन और दर्द होता है । यदि कफ दोष इसका हेतु हो तो अतिनिद्रा एवं नथुनों की तरी भी पाई जाती है । यदि शोथ, पिड़का या व्रण इसका हेतु हो, तो देखने पर ये दृष्टिगत होंगे और कान में ललाई एवं जलन होगी ।

चिकित्सा सूत्र—कर्णशूल के समस्त भेदों में गरम पानी का परिषेक (तरेडा) सेक और बफारा लाभकारी है । इस रोग में हर प्रकार के मांस से परहेज अनिवार्य है ; यथा संभव स्वापजनन द्रव्यों (अफीम) आदि सुन्नता उत्पन्न करनेवाली वस्तुओं से परहेज करें । आवश्यकता पड़ने पर यदि अफीम का प्रयोग अपेक्षित हो तो उसे दूध में घोलकर डालें । अफीम की अपेक्षया खाकस्तर अफीम अधिक गुण-कारी है । सर्वप्रथम दर्द कम करने का उपाय करें ।

चिकित्सा क्रम—यदि दर्द तीव्र हो तो प्रथम उसे कम करने का उपाय करें । दर्द कम करने के लिये निम्नलिखित दो योग गुणकारी हैं—(१) अफीम २ रत्ती, कपूर ४ रत्ती, दोनों को स्त्री, भेड़ या बकरी के दूध में घोलकर कान में टपकायें । (२) कड़वे बादाम का तेल ५ बूँद, नीमका तेल ५ बूँद, सुखदर्शन के पत्ते का रस ५ बूंद डालना भी लाभकारी होता है ।

जब दर्द कुछ कम हो जाय तब मूल हेतु का पता लगाकर उसकी चिकित्सा करें । अस्तु, यदि कान में फुंसी या घाव हो तो उसका उपचार करें (कर्णव्रण देखें) । यदि कर्णगूथ या कर्णशल्य इसका हेतु हो तो उसका उपचार (जिसका वर्णन यथास्थान किया गया है) करें । यदि सड़े-गले दाँत से हो तो उसे निकाल देवें । यदि कान में पानी पड़ने के कारण हो तो सलाई पर रूई लगाकर कान में फिरायें और उसके बाद कड़वे बादाम का तेल डालें । यदि कान में कीड़े पड़ने से दर्द हो तो कपूर १ माशा, स्पिरिट ६ माशा में विलीन करके दो-तीन बूंद कान में डालें और दूसरे दिन कान को साफ कर लेवें ।

यदि सादा गरमी से कान में दर्द हो तो यह लेप लगाने से लाभ होता है—लाल और सफेद चंदन, छिले हुए काहू के बीज प्रत्येक ३ माशा, सबको हरे धनिये

के रस और थोड़ा अर्क गुलाब में पीसकर कान के चारों ओर लेप करें। यदि गरमी अधिक हो तो १ माशा कपूर भी योजित करें। उक्त अवस्था में निम्न योग पिलाना लाभकारी है--३ माशा बिहीदाने का लबाब, ५ दाने उन्नाव का शीरा, ३ माशा तरबूज के बीज के मग्ज का शीरा जल में निकालकर २ तोला शर्बत बनफ़शा मिला कर पिलायें। गरम, खुश्क पदार्थों एवं अतिचेष्टा से परहेज करें। शीतल आहार देवें।

यदि रक्त पित्त के प्रकोप से कान में दर्द हो तो निम्नयोग देवें–इमली ३ तोला, आलूबुखारा ७ दाना, गुलबनफ़शा, नीलूफर, खतमी प्रत्येक ४ तोला, उन्नाव ५ दाना, लिसोड़ा ११ दाना सबको अर्क मकोय और अर्क गावजबान प्रत्येक १० तोला में भिगोकर शर्बत बनफ़शा या शर्बत नीलूफर २ तोला मिलाकर पिलायें।

हर प्रकार की गरमी के कर्णशूल में इस बफारे का प्रयोग करना चाहिए—गुलाब का फूल, खैरू के फूल, धनिया, काहू के बीज, पोस्ते की डोडी, हरा मकोय, छिला हुआ जौ प्रत्येक १ तोला, सबको जल में उबाल कर कान में बफारा लेवें तथा निम्न तेल कान में डालें--गुलरोगन ४ तोला और मीठे बादाम का तेल २ तोला पुराना तीक्ष्ण सिरका १४ तोला में मिलाकर पकायें। जब सिरका जलकर तेल शेष रह जाय, तब उतारकर रखें। यह तेल कान में डालें। आहार में यवमंड, कद्दू, कुलफा आदि अकेले या मुर्गी के बच्चे के साथ पकाकर उपयोग करें।

यदि सादा सर्दी से कान में दर्द हो तो निम्न औषधियों का उपयोग करें—शीतल एवं वायुजन्य कर्णशूल में लाभकारी क्वाथयोग--उस्तूखुद्दूस, गुलबनफशा, अनीसूँ प्रत्येक ५ माशा, सौंफ ७ माशा सबको उबालकर गुलकंद असली या मधु २ तोला मिलाकर पिलायें। वाष्पस्वेद (इन्किबाब) जो शीतल एवं वायुजन्य कर्णशूल में लाभकारी है--गुलबाबूना, अफसंतीन, इकलीलुल्मलिक प्रत्येक १ तोला आध सेर गोदुग्ध में उबालकर बफारा लेवें। प्रलेपयोग जो शीतल कर्णशूल में प्रयुक्त होता है--रेंड़ की जड़ और सोंठ प्रत्येक ३ माशा, अफीम १ माशा सबको जल में पीसकर कुनकुना गरम करके कान में चारों ओर लेप करें। सेक जो शीतल एवं वायुजन्य कर्णशूल में लाभकारी है--गेहूँ की भूसी और बाजरा प्रत्येक १ तोला, नमक ६ माशा पोटली में बांधकर और गरम करके कान के चतुर्दिक टकोर करें।

यदि सौदा या कफ के प्रकोप से कान में दर्द हो तो निम्न औषधियों का उपयोग करें-- वाष्पस्वेद (इन्किबाब) जो सौदा एवं कफज कर्णशूल में लाभकारी है—खतमी के फूल, बाबूना के फूल, इक्लीलुल्मलिक, अलसी, कनौचा के बीज, पुदीना, मर्जञ्जोश, हंसराज प्रत्येक ६ माशा, जूफाखुश्क ३ माशा, सबको जल में उबालकर यथाविधि बफारा लेवें। रोगन (तेल) जो दोषज शीतल कर्णशूल को नष्ट

करता है--हरी मूली का रस ४ तोला, तिल का तेल १० तोला मिलाकर पकावें। जब रस जलकर तेल शेष रह जाय, तब छानकर रखें और आवश्यकतानुसार कान में डालें। परिषेक (नतूळ) जो दोषज शीतल कर्ण-शूल में लाभकारी है--बाबूना, खतमी, पुदीना समभाग लेकर उबालकर कुनकुना गरम कानपर धारें। कतूर जो तीव्र कर्णशूल में गुणकारी है--जुंदबेदस्तर ४ चावल, अफीम की भस्म १ रत्ती, बाबूना के तेल में घोलकर कान में टपकायें।

पथ्य--मूँग या अरहर की दाल, कुलफा, तुरई, कद्दू, करेला, बकरी का शूरबा, चपाती आदि शीघ्रपाकी आहार सेवन करें।

अपथ्य--अधिक शीतल वायुसे परहेज करायें। आलू, कचालू, उड़द की दाल, लहसुन, प्याज आदि गरिष्ठ वस्तुयें नहीं खिलायें।

२--वस्खुल्उज्न

नाम--(अ०) वस्खुल्उज्न, सुद्दएवस्खी; (उ०, हिं०) कान का मैल, कान में मैल भर जाना; (सं०) कर्णवर्च, कर्णगूथ (क); (अं०) वैक्स इन दी ईयर (Wax in the ear)।

हेतु--धूलि-कण, कान की स्वच्छता का ध्यान न रखना, प्रसेक और प्रतिश्याय आदि।

लक्षण--कान में भारीपन एवं कण्डू प्रतीत होता है। विभिन्न प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं और ऊँचा सुनाई देने लगता है।

चिकित्सा--सुहाता गरम किये हुए कड़वे बादाम के तेल के कुछ बूंद प्रति दिन रात्रि में कुछ दिन तक कान में डालें और प्रातःकाल केवल उष्ण जल का बफारा देवें या उष्ण जल की पिचकारी करें। इस प्रकार जब मैल नरम हो जाय तब फिर किसी चतुर कानमैलिये से सावधानी पूर्वक मैल निकलवा देवें। गरम पानी में किंचित् सनलाइट साबुन घोलकर कान में उसकी पिचकारी कराने से भी मैल निकल जाती है। यदि प्रसेक एवं प्रतिश्याय हो तो उसकी चिकित्सा करें।

३--कजाउल्उज्न

नाम--(अ०) क़ज़ाउल्उज्न; (उ०, हिं०) कान में कुछ पड़ जाना; (सं०) कर्णशल्य; (अं०) फॉरेन बॉडी इन दी ईयर (Foreign body in the ear)।

कभी मच्छड़, च्यूंटी आदि जैसे सूक्ष्म जीव और कभी बालकों के खेल-कूद की दशा में कोई कंकड़, मटर या गेहूँ का दाना, रत्ती, छोटी कौड़ी या पेंसिल का टुकड़ा कान में पड़ जाता है या कान में पारा गिर जाता है। कभी कान में कीड़े पड़ जाने से भी इसी प्रकार का कष्ट अनुभव होता है।

लक्षण——कान में दर्द होता है। कान के भीतर कोई वस्तु प्रतीत होती है। कीड़े या किसी जीव के पड़ जाने के कारण हो तो कान के भीतर से दुर्गंध आती है। कभी-कभी स्वयमेव या पिचकारी करने से कीड़े निकलते हैं। कभी-कभी कान से पीप और रक्त मिला हुआ निकलता है।

चिकित्सा——यदि कान में प्रविष्ट हुई वस्तु दिखाई देती हो तो यथासंभव सलाई या मोचने से उसे धीरे-धीरे निकाल लेवें। यदि वह दिखाई न देती हो तो खाली पिचकारी कान के छिद्र में रखकर उस वस्तु को खींचें। यदि इस प्रकार सफलता नहीं मिले तो कुनकुना पानी की पिचकारी करें। इतने पर भी नहीं निकले तो कान में शहद के कुछ बिंदु डाल देवें। एक-दो दिन में वह वस्तु निकल आयेगी। यदि कान में पानी चला गया हो तो तिल का तेल कुनकुना करके कान में बूँद-बूँद करके डालें अथवा गेहूँ या सौंफ के डंठल का एक सिरा कान में डालकर दूसरे सिरेके द्वारा पानी को चूस लेवें या सलाई पर रूई लगाकर कान में डालें और फिर रूई को फेंक देवें। इसी प्रकार दो-तीन बार करें अथवा खाली पिचकारी से पानी को खींच लेवें।

यदि कंकड़ी कान में प्रविष्ट हुई हो तो दूध को कुनकुना गरम करके कान में डालें। यदि प्रविष्ट होने वाली वस्तु अनाज की किस्म से हो तो तिल का तेल या जैतून का तेल कुनकुना करके डालें। पुनः छींक लाने की औषधि सूंघें। जब छींक आने लगे तब मुख और नाक बन्द कर लेवें, जिसमें कान में छींक का जोर पड़कर वह वस्तु निकल पड़ें। यदि कान के भीतर गरम वायु प्रविष्ट हुई हो अथवा उसमें कृमि उत्पन्न हो गये हों तो करेला का रस अथवा एलुआ पानी में घोलकर कान के भीतर टपकायें। बाद में कुनकुना पानी से पिचकारी करें। कब्ज होने पर अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा सेवन करायें।

—:o:—

४——कर्हतुल्उज्न सैलानूल्उज्न

नाम——(अ०) कर्हतुल्उज्न, सैलानुल्उज्न; (फा०) कर्हा गोश; (उ०, हिं०) कान बहना; (सं०) कर्णपाक, कर्णस्राव; (अं०) ओटोरिया (Otorrhoe)। पुराना होने पर इसे 'नासूरुल्उज्न' और पाश्चात्य वैद्यक में

'क्रॉनिक ओटोरिया (Chronic otorrhoea), कहते हैं। इस रोग में कान की बाहरी नाली की झिल्ली में सूजन होकर पीव आती है।

हेतु—रक्त प्रकोप या रक्तदुष्टि के कारण प्रथम कान में सूजन होती है या कोई फुंसी उत्पन्न होती है। जब यह सूजन या फुन्सी दब नहीं जाती, प्रत्युत पककर फूट जाती है, तब इससे व्रण बन जाता है। कण्ठमाला, सर्दी और शिशुओं में दांत निकलने पर भी यह रोग हो जाता है। प्रायः यह रोग शिशुओं को होता है। कभी चेचक, कण्ठशोथ (खुनाक) लाल ज्वर आदि संक्रामक रोगों से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—कान से न्यूनाधिक पीव बहती रहती है। कान में साधारण दर्द, खुजली और भारीपन प्रतीत होता है। प्रारंभ में सूक्ष्म ज्वर भी हो जाता है। कान का छिद्र लाल एवं शोथयुक्त हो जाता है। कभी श्रवणविकार भी हो जाता है। यदि घाव कान के भीतरी भाग में बढ़ जाय तो दौरानेसर विकार अवश्य होता है। कभी पीप कान के पिछले अस्थिप्रवर्धन में प्रविष्ट हो जाती है जिससे भयानक प्रकार का शोथ या फोड़ा उत्पन्न हो जाता है। यदि मस्तिष्क में प्रविष्ट हो जाय तो उसका परिणाम सरसाम होता है। रोहिणी (खुनाक बबाई), चेचक, लाल ज्वर आदि से यह रोग होने पर इससे पूर्व ये रोग होते हैं।

चिकित्सा—पहले नीम के पत्ते २ तोला और शहद १ तोला पानी में उबालकर इससे कान में बफारा देवें। पुनः नीम के पत्ते १ तोला, सौंफ १ तोला, शहद २ तोला, जल १० तोला में उबाल-छानकर उससे कुनकुना गरम पिचकारी करें अथवा नीमकी पत्ती का रस १०तोला या नीम का तेल २ तोला, शहद २तोला में मिलाकर कान में पिचकारी करें और कान धोने के बाद अंजरूत ३ माशा २ तोला शहद में मिलाकर इसमें बत्ती लत करके कान में रखें। जब ३-४ दिन में इन उपायों से कान भली भाँति शुद्ध हो जाय, तब आक्लेद सुखाने के लिये कपड़े की बारीक बत्ती बनाकर शहद से आप्लुत करके बारीक पिसी हुई फिटकिरी या सुहागा उस पर छिड़ककर कान में रखें और प्रातः सायंकाल बदलते रहें। अथवा पीली कौड़ी जलाकर उसकी राख बारीक पीसकर नलकी के द्वारा कान में फूँकें। प्रातः सायंकाल अतरीफल उस्तूखुद्दूस ५ माशा या अतरीफल जमानी या कुर्स जमानी ७ टिकिया खिलाकर अर्क सौंफ १२ तोला में शर्बत बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिलायें। आराम होने के बाद रोगन बाबूना कुनकुना गरम करके कान में टपकायें। कब्ज हो तो कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि में सोते समय कुनकुना पानी से सप्ताह में दो बार देवें।

पथ्यापथ्य—कर्णशूलवत्।

———

५—वरमुल्उज़्न वरमगोश

नाम—(अ०) वरमुल्उज्न, वज्उल्उज्नहार्र वरमी, वज्उल्उज्न बुसूरी ; (फ़ा०) वरमगोश ; (उ० हिं०) कान की सूजन ; (सं०) कर्णशोथ ; (अं०)ओटायटिस) मीडिया (Otitis Media) । चिरकारी कर्णशोथ को (यूनानी वैद्यक में 'वज्उल्उज्न बारिद वरमी' और पाश्चात्य वैद्यक में क्रॉनिक ओटायटिस (Otitis) कहते हैं ।

वर्णन—इस रोग में मध्य एवं अन्तःकर्ण और कान की झिल्ली में शोथ हो जाता है । कभी कर्णगुहा में एक वा अनेक पिड़कायें उत्पन्न हो जाती हैं ।

हेतु—कानमें क्षोभ होना, शीत लगना, कान में जोर से पिचकारी करना, लाल ज्वर, आमवात, वातरक्त, कण्ठमाला, प्रकृतिविकार (दोषवैषम्य) आदि।

लक्षण—कान में भारीपन, जलन, दर्द एवं टीस होती है और उसके भीतर लाली एवं सूजन हो जाती है । रोगी विभिन्न प्रकार के शब्द सुनता हैं तथा ज्वर से आक्रांत हो जाता है । यदि दर्द तीव्र हो तो कभी आक्षेप या प्रलाप भी हो जाता है । नन्हें शिशु इस रोग से पीड़ित होने पर प्रायः रोते रहते और कान में ऊंगली डालते हैं ।

परिणाम और उपद्रव—प्रायः यह रोग अच्छा हो जाता है । पर कभी सरसाम में परिणत होकर भयंकर रूप ग्रहण कर लेता है । कभी इससे अर्दित रोग हो जाता है । शिशुओं में उग्ररूप धारण करने पर आक्षेप हो जाता है और प्रायः मृत्यु उपस्थित होती है ।

चिकित्सा—तीव्र रोग में कान के पीछे जोंक लगवायें और यह तबरीद का नुस्खा पिलायें—१० तोला अर्क मकोय में ३ माशा बिहीदाने का लवाव, ५ दाने उन्नाब का शीरा, ३ माशा काहू के बीज का शीरा और ५ माशे सूखे धनिये का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें । तीन दिन इसका उपयोग करके गुलबनफ्शा, गावजबान, उस्तूखुदूस, पित्तपापड़ा, मकोय प्रत्येक ६ माशा, उन्नाब ५ दाना रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें । चार-पाँच दिन पिलाकर इसीमें सनाय मक्की ७ माशा और पोस्त अमलतास ४ तोला मिलाकर विरेचन देवें और विरेचन के पश्चात् तबरीद का नुस्खा पिलायें तथा गुलरोगन या बादाम का तेल कुनकुना गरम करके कान में टपकायें, या मुर्गीके अंडे की सफेदी समभाग गुलरोगन मिलाकर दो-चार बिंदु कुनकुना गरम करके कान में टपकायें या शियाफ अब्यज को स्त्री के दूध या अंडे की सफेदी में घिसकर कुनकुना गरम करके कान में टपकायें ।

या मुर्गी के अण्डे की सफेदी में समभाग गुलरोगन मिलाकर दो-चार बिन्दु कुनकुना गरम करके कान में टपकायें या शियाफ अब्यज को स्त्री के दूध या अण्डे की सफेदी में घिसकर कुनकुना गरम करके कान में टपकायें।

प्रलेप—बनफ्शा, रसवत, खतमी के पत्र, मकोय, लाल चंदन, अमलतास का गूदा सबको बराबर-बराबर लेकर हरे मकोय के रस में पीसकर कान के चारों ओर कुनकुना लेप करें।

चिरज कर्णशोथ में दोषपाचनोपरांत हब्ब इयारिज से शोधन करें। पुरानी सूजन को उतारने के लिये उशक को गुलरोगन में घोलकर कुनकुना गरम करके कान में टपकायें या मुर्गी के अंडे की सफेदी को गुलरोगन में मिलाकर कुनकुना कान में टपकायें। दर्द कम करने और सूजन उतारने के लिये यह लेप गुणकारी एवं कृतप्रयोग है——खतमी के बीज, गुलबाबूना, गेरू प्रत्येक ६ माशा, अफीम, केसर, प्रत्येक १ माशा, हरे मकोय के रस में पीसकर कुनकुना (गरम) लेप करें। ओषधि जो सूजन न उतरने की दशा में कर्णशोफ को पकाने और उसे फाड़ने के लिये उपादेय एवं कृतप्रयोग है——सफेद प्याज का रस, मेथी का लबाब और अलसी का लबाब परस्पर मिलाकर कुनकुना गरम करके कान में टपकायें।

पथ्यापथ्य——कर्णशूलवत्।

६——हिक्कतुल्उज़्न, कुलाउल्उज़्न

नाम——(अ०) हिक्कतुल्उज़्न, कुलाउल् (बुसूरुल्) उज़्न; (उ०, हि०) कान की खुजली, कान की फुंसियाँ; (सं०) कर्णकण्डू, कर्णगत पामा; (अं०) प्रूराइटिस ऑरियम् (Pruritis Aurium), एक्जेमा ऑफ दी ईअर (Eczema of the ear)।

वर्णन एवं लक्षण—इस रोग में कान के भीतर या बाहर इतनी खुजली होती है कि रोगी का हाथ सदा कान ही की ओर रहता है और जितना अधिक खुजलाये, कष्ट उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। कभी-कभी कान के भीतर या बाहर छोटी-छोटी फुंसियाँ उत्पन्न होकर खुजली, जलन एवं दर्द उत्पन्न करती हैं।

हेतु——किसी तीक्ष्ण एवं क्षारीय तत्त्वका अन्तर्भरण वा प्रवृत्त होना, कान में मल का संचय होना, मकड़ी आदि का सोते समय कान के ऊपर फिर जाना।

चिकित्सा——प्रथम कान को मलादिसे शुद्ध करायें। पुनः यदि केवल खुजली हो तो ३ माशा अफसंतीन को १ तोला सिरका में उबाल-छानकर कुछ बूंद कान में टपकायें या कड़वे बादामका तेल ५ बूंद, पाँच बूंद सिरका में मिलाकर कान में डालें। यदि कान में फुंसियाँ भी हों तो २ तोला नीम के पत्तों को पाव भर पानी में उबालकर कुनकुना पिचकारी करें और मरहम काफूर में बत्ती लत करके कान

में रखें। पीने के लिये—अतरीफल शाहतरा ७ माशा, अर्क शाहतरा १२ तोला और शर्बत उन्नाब २ तोला के साथ देवें। यदि कब्ज हो तो अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या हब्ब कब्जकुशा २ गोली देवें। यदि कान पर मकड़ी मली गई हो और उसके कारण खुजली या फुंसी वा विस्फोट हो गये हों तो अमचूर को पानी में पीसकर कान के ऊपर लेप करने से लाभ होता है।

पथ्यापथ्य—कर्णशूलवत्।

७—दीदानुल्उज़्न

नाम—(अ०) दीदानुल्उज्न; (फा०) दीदान गोश; (उ०, हिं०) कान में कीड़े पड़ना; (सं०) क्रि (कृ) मिकर्ण (क); (अं०) वर्म्स (मैगॉट्स) इन दी ईअर (Worms maggots in the ear)।

हेतु और लक्षण—कभी व्रण आदि के कारण कान में क्रिमि उत्पन्न हो जाते हैं। उक्त अवस्था में कान में खुजली एवं गुदगुदी होती है। कभी क्रमि भी निकलते हैं।

चिकित्सा—(१) एलुआ और सकमूनिया गरम पानी या सिरका में घोलकर अथवा (२) नीम की हरी पत्ती का रस, मूली का रस और प्याज का रस प्रत्येक ७ माशा में ३ माशा सकमूनिया घोलकर दो-चार बूँद कान में टपकायें। इसी प्रकार (३) स्त्री के दूध में नौसादर घोलकर या (४) शरीफा की पत्ती का रस या (५) आड़ू की पत्तीका रस या (६) पुदीना का रस या (७) तारपीन का तेल या (८) मिट्टी का तेल कान में डालने से कीड़े निकल जाते हैं।

८—इन्फेजारुल्उज़्न

नाम—(अ०) इन्फ़ेजारुल्उज्न; (उ०, हिं०) कान से खून बहना; (सं०) कर्णगतरक्तस्राव; (अं०) ओटोर्‌हेजिया (Otorrhagia)।

हेतु—रक्तसंचय या अभिघात के कारण किसी रग का मुँह खुल जाना; इसका हेतु है। कभी बोहरान या प्रसेकाधिक्य के कारण भी कान से रक्त जारी हो जाता है।

चिकित्सा—बोहरानी में जब तक मूर्च्छा या शक्ति-ह्रास का भय न हो रक्तस्राव बंद नहीं करना चाहिये। अभिघात-प्रतिघात-जन्य कर्णगत रक्तस्राव बुकरात के मत से घातक है। इनके अतिरिक्त अन्यान्य प्रकार के रक्तस्राव में शीत संग्राही औषधियों के द्वारा उपचार करना चाहिये।

९—सिक़्लसमाअत

नाम—सहज वाधिर्य (अ०) समम; (फा०) मादरजाद करी; (उ०) पैदायशी बहिरापन; (अं०) कोफोसिस (Kophosis)।

जन्मोत्तर (अ०) इक्तिसाबी ;

बिल्कुल बहिरापन (अ०) वक़्र, करी ; (फा०) करीगोश; (उ०, हिं०) बहिरापन ; (सं०) बाधिर्य, बधिरत्व; (अं०) सर्डिटी (Sardity) डेफ्नेस (Deafness) ।

ऊँचा सुनना, कम सुनना (अ०) तरश, सिक्ल समाअ़त; (फा०) गिरानी गोश ; (अं०) पॅराकुसिस (Paracusis) ।

वर्णन—इस रोग में रोगी को कम या बिल्कुल सुनाई नहीं देता । इसके अस्थायी-स्थायी और सहज एवं जन्मोत्तर ऐसे दो भेद होते हैं । यह रोग बुढ़ापे में तो स्वयमेव बिना किसी वाह्य कारण के दौर्बल्य (शक्तिहीनता) एवं नाडीगत रूक्षता के कारण उत्पन्न हो जाता है ।

हेतु—कभी-कभी कान में मैल भर जाने या किसी तीव्र एवं उच्च शब्द से कान के पर्दे पर आघात पहुंचने, जैसे तोप का शब्द या बिजली की कड़क से, कड़ी सर्दी लगने या मस्तिष्क की दुर्बलता या किसी सांद्र दोष के कान में संचित होने से भी यह रोग हो जाता है । कभी पैत्तिक एवं तीव्र ज्वरों में भी यह रोग हो जाता है ।

लक्षण—तरश में रोगी को ऊँचा सुनाई देता है । कभी उसको विभिन्न प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं । वक़्र में श्रवणशक्ति त्रुटित या नष्ट हो जाती है । समम में तो रोगी सर्वथा बहिरा हो जाता है ।

चिकित्सा—सहज बाधिर्य असाध्य है । बूढ़ों का बहिरापन भी क्वचित् ही आराम होता है । जन्मोत्तर और इसके अतिरिक्त अन्य कारणों से हुआ बहिरापन यदि चिरकालिक न हो तो सरलता से आराम हो सकता है । दोषज बाधिर्य में यथावत् शोधन करें । अस्तु, कफज में कफ पाचन और शोधन देवें—

राई १ तोला, हाशा १ तोला, पुदीना १ तोला, पीसकर २ तोला शहद मिला कर उबालें और इससे गण्डूष करें । कुंदुश ३ माशा, एलुआ ३ माशा, कलौंजी ३ माशा पीसकर नाक में नस्य देकर छींक लावें और रोगन मुफीद कान में डालें । पित्तज में, जैसाकि पित्त ज्वरों के पश्चात् होता है, पित्तविरेचन औषधि पिलाकर पित्त का शोधन करें । शोधनोपरांत दवाउर्रुम्मान कुनकुना करके कान में डालें । यदि कान में मलसंचय (कर्णगूथ) होने से यह रोग हो तो वस्खुल्उज्न के प्रकरण में लिखित उपाय करें । यदि अभिघात के कारण नाड़ी फट गई हो तो यह असाध्य है । यदि केवल आघात पहुंचा हो तो रोगन अजीब कुनकुना करके कान में डालें और टकोर करें । यदि रक्त के जम जाने या पीप से हो तो कर्णशूल की भाँति उपचार करें । यदि कान में कोई घाव भर गया हो या मस्सा

उत्पन्न हो गया हो तो शस्त्र के द्वारा घाव को शुद्ध करें। मस्से पर दाहक औषधि लगाकर उसे काट डालें। यदि अन्य रोगों से हो तो उनकी चिकित्सा करें।

पथ्य—मुर्गी के बच्चे या बकरी का शूरबा, पालक, कद्दू, कुलफा, तुरई, डिंटा आदि लघु आहार देवें।

अपथ्य—आलू, अरबी, कचालू, गोभी, उड़द की दाल आदि बादी एवं गरिष्ठ आहार से परहेज करें।

१०—तनीन व दवी

नाम—(अ०) तनीन, दवी, सफ़ीर ; (उ०, हिं०) कान बजना ; (सं०) प्रणाद, कर्णनाद, क्ष्वेड ; (अं०) टिन्नायटिस (Tinnitis), टिन्नायटिस ऑरियम् (T. Aurium)।

वक्तव्य—दवी— वायु का शब्द या मक्खी की भनभनाहट ; तनीन—मच्छर या तम्बूरा का शब्द ; सफ़ीर—सीटी का शब्द। यदि शब्द बारीक एवं तीव्र सुनाई दे तो उसे तनीन मोटे और नरम शब्द को दवी और सीटी के समान शब्द को सफ़ीर कहते हैं।

वर्णन—इस रोग में मस्तिष्क के भीतर वायु एवं बाष्प की प्रगल्भता होने से वायु और बाष्प मस्तिष्क के भीतर घूमते हैं जिससे कान में विविध प्रकार के शब्द सुनाई देते हैं।

हेतु—अजीर्ण, रूक्षता, मस्तिष्क की दुर्बलता, एवं शक्ति हीनता, रक्ताल्पता, गरिष्ठ एवं बादी पदार्थ का अति सेवन किसी तीक्ष्ण दोष का संचय और उससे बाष्प उठकर मस्तिष्क में घूमना, कान में पीप या कीड़े पड़ जाना।

लक्षण—कान में विभिन्न प्रकार के बारीक या मोटे शब्द सुनाई देते हैं और श्रवणशक्ति में कुछ अंतर हो जाता है।

चिकित्सा—यदि मस्तिष्क में मलभूत दोष संचित हो और सिर में भारीपन हो तो उसका शोधन करें। उक्त प्रयोजन के लिये गुलबनफशा ७ माशा, हंसराज ५ माशा, सौंफ ५ माशा, सौंफ की जड़ ७ माशा, उस्तूखुदूस ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, गावजबान ५ माशा, सनाय मक्की ५ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः काल मल-छानकर खमीरा बनफशा १ तोला मिलाकर पिलायें। इसी प्रकार उक्त योग को प्रातः भिगोकर सायंकाल पियें। दस दिन के पश्चात् उक्त योग को भिगोकर गुलकंद ४ तोला, खमीरा बनफशा ४ तोला और मैग्नीशिया सल्फास ४ तोला मिलाकर पिलायें। इससे ६–७ विरेक हो जायंगे। तदुपरांत दूसरे दिन वरमगोश (कर्णशोथ) में लिखित तबरीद का योग देवें। इसके बाद प्रातः सायंकाल अतरीफल उस्तूखुदूस ७ माशा, अर्क

बादियान १२ तोला केसाथ दिया करें। यदि इससे भी अधिक शोधन की आवश्यकता हो तो सोते समय हब्ब इयारिज ७ माशा, १२ तोला अर्क गावजबान के साथ दिया करें। यदि रूक्षता के कारण हो तो रोगन लबूब सबआ, रोगन कद्दू, रोगन बादाम या बकरी का दूध कुछ बूँद कान में टपकायें। तथा मग्ज बादाम ५ दाने, मग्ज तरबूज ३ माशा, पोस्ता का दाना ३ माशा, मग्ज कद्दू, निशास्ता और बबूल का गोंद प्रत्येक २ माशा, काहू के छिले हुये बीज ३ माशा, मिश्री २ तोला, गोदुग्ध १० तोला में पीस-छानकर २ तोला गोघृत से बघारकर प्रातः पिला दिया करें। बादाम का तेल और कद्दू का तेल बराबर-बराबर मिलाकर सिर में लगायें तथा नाक में टपकायें। रोगोत्तर दौर्बल्य से यह रोग हो तो खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा १० तोले अर्क गावजबान के साथ प्रातः-सायंकाल खिला दिया करें। यदि पाचन-दोष एवं आमाशयस्थ बाष्प के कारण हो तो मण्डूरभस्म २ रत्ती ७ माशा, जुवारिश जालीनूस में मिलाकर १२ तोले अर्क बादियान के साथ प्रातः-सायंकाल खिलायें। गरिष्ठ एवं बादी पदार्थों से परहेज करायें। कब्ज हो तो हब्ब कब्जकुशा ३ गोली सोते समय रात्रि में पाव भर गोदुग्ध के साथ खिलायें। पाशोया करें। व्रण की चिकित्सा यथास्थान वर्णित की गई है।

पथ्य--विरेचन के दिन अपराह्न काल में मूंग की नरम खिचड़ी देवें। अन्य दिन में बकरी का मांस, मूँग-अरहर की दाल, चपाती, खशका बकरी के मांसके कवाब और पुदीना की चटनी आदि के साथ देवें। पालक, कद्दू, टिंडा, तुरई, कुलफा प्रभृति लघु एवं शीघ्र पाकी आहार भी दे सकते हैं।

अपथ्य--अधिक उष्ण तथा बादी एवं बाष्पकारक पदार्थों, जैसे—लहसुन, प्याज, आलू, गोभी, वैंगन, मसूर की दाल आदि से परहेज करें। आयास, स्त्री सहवास और अधिक भाषण, तमाकू और मद्य सेवन तथा धूप से भी परहेज करना चाहिये।

११--औराम अस्लुल्उज़्न

नाम—(अ०) बारीतूस, फूजिश्ला, नबातुल्उज़्न, औराम अस्लुल्उज्न ; (हिं०, उ०) कनपेड, कण्ठा, गलसूआ, कर्णमूल ; (सं०) कर्णमूलशोथ ; (अं०) पैरोटायटिस (Parotitis), मम्प्स (Mumps)।

वक्तव्य—किसी-किसी यूनानी वैद्यकीय ग्रन्थ में औराम मगाबिन में ही इसका वर्णन कर दिया गया हैं। मगाबिन के निम्न अर्थ होते हैं—(१) कर्णपश्चात्, (२) कक्ष, और (३) वंक्षण। अस्तु, इन स्थानों में होनेवाली सूजन को औराम मग़ाबिन कहना चाहिये।

वर्णन—बारीतूस कर्णमूलशोथ को कहते हैं। यह मूल व्याधि तो भयंकर होता है, परंतु बोहरानी या उपद्रव रूप होने पर भयंकर नहीं होता।

हेतु—अन्यान्य शोथों की भाँति यह भी रक्तज, पित्तज, कफज और सौदाजन्य ऐसे चार प्रकार का होता है और प्रायः शिशुओं को हुआ करता है।

लक्षण—रक्तज में कान के पीछे सूजन, ललाई, भारीपन, जलन एवं रगों में तनावट प्रतीत होती है : पित्तज में भारीपन अपेक्षाकृत कम, किन्तु जलन एवं गर्मी अधिक प्रतीत होती है, कफज में शोथ ढीला एवं पोला, भारीपन अधिक और रंग सफेदी लिये होता है। सौदाजन्य शोथ कठिन प्रतीत होता है।

वक्तव्य—अधुना यह संक्रामक माना जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—इन शोथोंमें अन्यान्य शोथों के विपरीत दोषविलोमकारी औषधियों का उपयोग अविहीत है। क्योंकि मस्तिष्क के सान्निध्य के कारण इस प्रकार के उपाय भय से खाली नहीं है। आवश्यकता होने पर इसमें (१) पछना या (२) जोंक लगवायें अथवा (३) अलसी को गुलरोगन के साथ पीसकर अथवा (४) जौ का आटा गरम पानी में पीसकर रोगन बनफ्शा मिलाकर लेप करने से सूजन उतरती है। यदि सूजन न बैठे तो (५) गेहूं के आटा को पीले अंजीर के काढ़े में पकाकर रोगन जैतून मिलाकर कुनकुना लेप करें। इससे वह पक जाता है। (६) शिशुओं के कनपेड में रसवत का लेप अत्यंत गुणकारी है। (७) कूटा हुआ इसबगोल सिरका और गुलरोगन के साथ लेप करने से इस प्रकार के शोथ में उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उचित संशोधन के पश्चात् (१) अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला या (२) अतरीफल कश्नीजी १ तोला ६ तोला अर्क शाहतरा ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून और २ तोला शर्बत तूत स्याह के साथ सेवन करते से सभी प्रकार का कनपेड आराम होता है। इसी प्रकार (३) अतरीफल शाहतरा ९ माशा, ६ तोला अर्क उशबा, ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून और २ तोला शर्बत उन्नाब के साथ सेवन करने से सौदाजन्य कनपेड में विशेष उपकार होता है। इसी प्रकार सम्यक् संशोधनोपरांत हृदय तथा मस्तिष्क को बलवान बनाने के लिये (४) खमीरा गावजबान, अंबरी जवाहरवाला ५ माशा या (५) खमीरा मरबारीद ५ माशा, अर्क गावजबान १२ तोला और मिश्री २ तोला मिलाकर सेवन करने से उक्त लाभ होता है। शिशुओं में वयानुसार औषध प्रमाण कम करके इन औषधियों का उपयोग करें।

नासारोगाध्याय (अम्‌राज़ुल्‌ अन्फ) ४

नाम--(अ०) अम्‌राज़ुल्‌अन्फ़, अम्‌राजेबीनी ; (उ०, हिं०) नाक की बीमारियाँ (रोग) ; (सं०) नासारोग ; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी नोज (Diseases of the Nose)।

१---नज़्ला व जुकाम।

नाम--(अ०) नज़्लः ; (फा०) रेज़िश ; (उ०) नजला ; (सं०) प्रसेक ; (अं०) कॅटार (Catarrh)।

(अ०) ज़ुक़ाम ; (फा०) चाइश ; (उ०, हिं०) जुकाम, ठंढ लगना, सर्दी होना ; (सं०) प्रतिश्याय ; (अं०) कोराइज़ा (Coryza) कोल्ड इन दी हेड (Cold in the head)।

वर्णन—इस रोग में मस्तिष्क के अगले दोनों कोष्ठों से मलभूत तीक्ष्ण एवं दाहकारी दोष खिचकर नथुनों या कंठ की ओर गिरता है। जब यह नाक में गिरता है, तब ज़ुक़ाम और जब कण्ठ में गिरता है तब नज़्ला कहलाता है। किसी-किसी ने इसका समावेश मस्तिष्क-शिरोरोग में और किसी ने नासारोग में किया है।

भेद—हेतु के विचार से इसके ये दो भेद होते हैं--(१) उष्ण (हार्र) एवं (२) शीत (बारिद)। दोष के विचार से इसके ये चार भेद किये गये हैं--(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदाजन्य। परंतु संताप के विचार से रक्तज एवं पित्तज जुकाम व नजला उष्णजुकाम व नजला के तुल्य होता है और दोनों की चिकित्सा समान है। शीत के विचार से कफज एवं सौदाजन्य जुकाम व नजला शीतल जुकाम व नजला के तुल्य है और इन दोनों की चिकित्सा समान है। तात्पर्य यह कि अंततः इसके पूर्वोक्त दो ही भेद हुये और चिकित्सा में इन्हीं दोनों का विचार किया जाता है।

हेतु—प्रायः यह रोग मस्तिष्क के दोषज या अदोषज शीत वा उष्ण विप्रकृति से उत्पन्न होता है। कभी चतुर्दोषों के सांद्र बाष्प मस्तिष्क में अवरुद्ध (बंद) होकर भी इस रोग को उत्पन्न करते हैं जो बाहरी सर्दी के लग जाने या गरम सर्द हो जाने से मस्तिष्क के भीतर अवरुद्ध हो जाते हैं। धूप में चलने-फिरने या किसी गरम मसालेदार आहार के खाने से, बड़े बाल सिर पर रखने और बोझ उठाने से पित्त अधिक होकर कफ में मिलकर जुकाम या नजला उत्पन्न करता है। कभी शीतल जल से स्नान करने तथा शीतल वायु में नग्न सिर करके सोने और बर्फ या

दही आदि शीतल पदार्थों के अति सेवन से मस्तिष्क में कफ की अधिकता होकर नजला व जुकाम हो जाता है। ग्रीष्म ऋतु के आरंभ में अर्थात् वसंत ऋतु में जबकि ऋतु परिवर्तन होता है, ये रोग अधिक होते हैं। मस्तिष्क दौर्बल्य विशेषतः अतिमैथुन वा मानसिक श्रम की अधिकताजन्य मस्तिष्क दौर्बल्य से दूसरे-तीसरे दिन मस्तिष्क में थोड़ी गर्मी या सर्दी लगने से इनका दौरा हो जाता है।

लक्षण—सर्दी आदि लग जाने के तुरत बाद शरीर आलस्ययुक्त हो जाता, अंगमर्द होता और काम करने को जी नहीं चाहता और नाक में क्षोभ प्रतीत होता है। हाथ-पांव, कनपुटी और मस्तक में जकड़न एवं सूक्ष्म बोझल प्रकार का दर्द होने लगता है। सिर गर्म होता है और सिर में हलका दर्द होता है। बारंबार छींकें आती हैं और कुछ कालोपरांत नाक से पानी सरीखा पतला क्षोभकारक द्रव बहने लगता है। यदि सर्दी के कारण हो तो द्रव श्वेत एवं गाढ़ा निकलेगा तथा क्षोभ एवं जलन कम होगी या नाक बंद होगी और संपूर्ण चेहरा में दर्द होगा। यदि गर्मी केकारण होतो द्रव पतला एवं नमकीन निकलेगा, चेहरा, और नेत्र लाल होंगे। कण्ठ में क्षोभ और नाक में जलन होगी। प्यास बारंबार लगेगी और नाक के नथुने लाल होंगे। मूत्र का रंग पीला होगा। साधारण दशाओं में जबकि रोग उपद्रवरहित हो, तीसरे या चौथे दिन रोग की तीव्रता कम हो जाती है और रोगी एक ही सप्ताह के भीतर बिल्कुल स्वस्थ हो जाता है। जब रोग-जनक दोष सम्यक्रूपेण नष्ट नहीं होता, तब बारंबार नजला और जुकाम का आक्रमण होता है तथा रोग चिरकारी रूप धारण कर लेता है। उस दशा में नाक की भीतरी झिल्ली शोथयुक्त होकर स्थूल हो जाती है। उसकी नाक प्रायः बहती रहती है और साधारणतया मस्तिष्क भी दुर्बल हो जाता है।

साक्षेप निदान—रोमान्तिका और मसूरिका के प्रारंभिक प्रतिश्याय या दुष्टप्रतिश्याय (नजला बबाइय्या—इन्फ्ल्युएन्जा) से इसका निदान करना जरूरी है। अस्तु, रोमान्तिका और मसूरिका के प्रारंभ में शीत एवं कम्पपूर्वक ज्वर होता है। परंतु नजला और जुकाम में ऐसा नहीं होता। इसके अतिरिक्त रोमान्तिका साधारणतया छोटे शिशुओं को निकलती है। दुष्टप्रतिश्याय में सामान्यतया प्रारंभ में ही तीव्र ज्वर हो जाता है। परंतु नजला और जुकाम में प्रायः ज्वर नहीं होता (तीव्रावस्था में सूक्ष्म ज्वरांश होता है)। यदि होता है तो कम और तीन दिन के पीछे दुष्टप्रतिश्याय में साधारणतया गले में तीव्र दर्द भी होता है।

चिकित्सासूत्र—प्रारंभ में जुकाम व नजला को बन्द नहीं करना चाहिये। प्रत्युत् यथा संभव दोषों (द्रवो) त्सर्ग में सहायता करके मस्तिष्क की शुद्धि होने

देना चाहिये तथा तीक्ष्ण बाष्पों के रोकने और आमाशय एवं, मस्तिष्क की बल-प्राप्ति का यत्न करना चाहिये। रोगी को आदेश करें कि वह जल एलं भोजन का सेवन कम करे तथा शीतल जलवायु से सुरक्षित रहे। सिर में तेल नहीं लगाये। दिन में विशेष कर भोजन करके नहीं सोये। दूध, घी और अम्ल पदार्थों का सेवन कम करे। प्रारंभ में स्नान और मांस सेवन से परहेज करे। पर अंत में इनके सेवन करने में कोई हर्ज नहीं है। नाक में अत्युष्ण जल डालने से लाभ होता है। नजला और जुकाम में यदि पतले दोष (द्रव) उत्सर्गित हों, तो उनको गाढ़ा और यदि गाढ़े दोष उत्सर्गित हों तो उन्हें पतला करके उत्सर्गित करना चाहिये।

जिसको प्रायः जुकाम व नजला हुआ करता है, उसका मस्तिष्क दुर्बल हो जाता है। अतएव मस्तिष्क के बलप्रदान करने का विशेषरूप से ध्यान रखना चाहिये। यदि कब्ज हो तो उसको दूर करना चाहिये।

प्रारंभिक प्रतिश्याय में अधिक छींक आना अहितकर है, परंतु दोषपाचनो-परांत दोषोत्सर्ग के लिये उपकारी है। इसी प्रकार प्रारंभ में स्नान भी हानिकर है; परंतु दोषपाचनोपरांत लाभकारी है। हाँ, ज्वरावस्था में अविहित है।

चिकित्साक्रम—साधारण जुकाम और नजला में तो चिकित्सा की कोई आवश्यकता नहीं, केवल साधारण सावधानी एवं परहेज से यदि तीन दिन में यह रोग दूर न हो तो चिकित्सा की ओर ध्यान देवें। सर्व प्रथम मूल कारण का पता लगाकर उसे दूर करें।

यदि सर्दी के कारण जुकाम व नजला बारिद (शीतल प्रसेक एवं प्रतिश्याय) हो तो सर्दी से बचना आवश्यक है। यथाशक्य पानी कम पीना चाहिये। रात्रि में कम्बल या खोल ओढ़कर सोना, सिर को स्वच्छ एवं गरम कन्टोप से ढांके रखना शीतल जल नहीं पीना और सोते समय गरम-गरम चाय पीना लाभकारी है। प्रारंभ में निम्न योग लाभकारी है—

गुलबनफशा ७ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, गेहूँ का चोकर ७ माशा, मिश्री २ तोला जल में पका-छानकर पिलायें। यदि कफज कास भी हो तो उसमें छिली हुई मुलेठी ५ माशा की योजना करें। यदि शुष्क हो तो ९ दाने लिसोढ़ा और मिला लेवें। यदि कफ अधिक हो तो रेशम का कोया ३ माशा, जूफाखुश्क ३ माशा योजित करें और मिश्री के स्थान में २ तोला शहद मिलायें। यदि बंद शीतल नजला (प्रसेक) हो तो ५ माशा उस्तूखुद्दूस मिलायें। यदि कफ के चिमटने के कारण हिचकी आती हो तो १ माशा जदवार पीसकर १ तोला खमीरा गावजबान में मिलाकर और चाँदी के वर्क से

आवेष्टित करके उक्त काढ़े के साथ देवें। यदि सिर दर्द हो तो कनपुटी और मस्तक पर कुर्स मुसल्लस जल में घिसकर लेप करें।

यदि गर्मी के कारण जुकाम व नजला हार (उष्ण प्रसेक एवं प्रतिश्याय) हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ६ दाना पानी में पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें। यदि सिर में दर्द हो तो उसमें ३ माशा छिले हुये काहू के बीजों या ३ माशा मीठे कद्दू के बीजों के मग्ज का शीरा मिलाकर सेवन करायें। यदि मस्तिष्क की दुर्बलता के कारण हो तो ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर देवें और इससे पूर्व खमीरा गावजबान जवाहर-वाला ७ माशा या खमीरा गावजबान अंबरी जवाहर वाला ५ माशा खिला दिया करें। दूसरे समय निम्नलिखित हरीरा मग्ज बादाम वाला पिलायें—

५ दाना मीठे बादाम के बीज का मग्ज, ३ माशा मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, ३ माशा तरबूज का मग्ज, ३ माशा निशास्ता, ३ माशा बबूल का गोंद, ३ माशा छिले हुये काहू के बीज, ३ माशा सफेद पोस्ते का दाना पानी में पीसकर २ तोला मिश्री मिलाकर अग्नि पर रखें। जब किंचित् गाढ़ा हो जाय तब २ तोला गोघृत से बघार कर पिला दिया करें। यदि गरम नजला सीना पर गिरता हो और खाँसी हो तो गोंद १ माशा, कतीरा १ माशा, सत मुलेठी १ माशा पीसकर १ तोला खमीरा गावजबान में मिलाकर और चाँदी का वर्क लपेट कर काढ़े के साथ देवें। यदि कण्ठ से रक्त आता हो तो गेरू १ माशा, संगजराहत १ माशा पीसकर, १ तोला खमीरा खशखाश में मिलाकर उपर्युक्त योग के साथ देवें। यदि नजला अत्यधिक उष्ण एवं तीक्ष्ण हो तो ३ माशा बिही दाने का लबाब, ५ दाने उन्नाब और ३ माशा कद्दू के मग्ज का पानी में निकाला हुआ शीरा २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें।

जब सर्दी और गर्मी दोनोंके लक्षण पाये जायं तो निम्न योग देवें—गुल-बनफ्शा ७ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी के बीज ७ माशा पानी में पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें। कभी शर्बत बनफ्शा के स्थान में २ तोला शहद मिलाते हैं।

चिरज प्रसेक (नजला मुज्मिन) में आमाशय और मस्तिष्क का सुधार करें और हब्ब जदवार २ गोली या बरशाशा ६ रत्ती, खमीरा गावजबान अंबरी ५ माशा या खमीरा गावजबान १ तोला मिलाकर गावजबान ५ माशा, गुलगावजबान ३ माशा, उन्नाब ५ दाना जल में काढ़ा करके २ तोला शहद मिलाकर खिलायें। सोते समय हब्ब इयारज ५ माशा या अतरीफल कश्नीजी ६ माशा दूध या अर्क गावज़बान के साथ सेवन करें। नाक में तेल लगायें तथा गरम नमकीन पानी कण्ठ और नाक में लगायें।

यदि मस्तिष्क अधिक दुर्बल हो तो प्रवाल भस्म १ रत्ती या कुश्ता मर्जां जवाहर वाला २ चावल, १ तोला खमीरा गावज़बान में मिलाकर देवें। यदि आमाशय और अन्त्र दुर्बल हो तो लोह भस्म १ चावल और मण्डूर भस्म १ रत्ती, ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर देवें।

यदि दुष्टप्रतिश्याय (नजला बबाइय्या—इन्फ्ल्युएन्जा) हो या क्षारीय कफ के कारण हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ९ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी के बीज ७ माशा सबको जल में पका-छानकर खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें।

पथ्य—तीन-चार दिन मूँग की दाल या पालक की तरकारी या बकरी के मांस के शूरबा के साथ चपाती खायें; परंतु साथ में घी कम हो।

अपथ्य—दूध, दही, घी, मक्खन, आलू, अरबी, भिंडी, बैंगन, टमाटर, उड़द की दाल और समस्त अम्ल, सांद्र एवं गरिष्ठ आहारों से तथा बर्फ और अधिक शीतल जल से परहेज करें। मानसिक श्रम और स्नान से भी बचें।

२—रुआफ़

नाम—(अ०) रुआफ़; (उ०, हिं०) नकसीर फूटना, नाक से खून आना, (सं०) नासागत रक्तपित्त; (अं०) एपिसटॉक्सिस (Epistaxis)।

वर्णन—नाक की सिराओं के रक्त से परिपूर्ण होकर फटने से नाक से जो रक्त बहने लगता है उसे 'रुआफ' कहते हैं।

हेतु—कभी-कभी यकृत् की ऊष्मा, संक्रामक ज्वर और शिशुओं में कुक्कुर-कास एवं उदरकृमि, सिर या नाक पर आघात लगना, सर्पदंश, रक्तज और पित्तज ज्वर, तीव्र रोगों का बोहरान, नासार्श, नासागत व्रण और पिड़का रक्तगत तीक्ष्णता, रक्तसंचय, स्त्रियों में आर्तवरोध आदि इस रोग के हेतु होते हैं। नवयुवती लड़कियों को मासिक धर्म प्रारंभ होने से पूर्व कभी-कभी नकसीर फूटती है। बोहरानी नकसीर प्रायः सरसाम, सन्यास, फुफ्फुसशोथ, पार्श्वशूल, शीतला आदि रोग की दशा में फूटा करती है।

लक्षण—कभी केवल नथुने से रक्त बहता है, विशेषतः यकृद्रोग में दाहिने से और प्लीहा के रोगों में बायें नथुने से आता है। यदि हेतु बलवान् हो तो दोनों नथुनों से धार बाँधकर रक्त बहता है और देर तक जारी रहता है। कारण बलवान् न होने पर थोड़ी देर जारी रहकर बंद हो जाता है।

निदान—यदि नकसीर में रक्त सहसा बड़े प्रमाण में निकल जाय और नकसीर फूटनेसे पूर्व सिर में अत्यंत दर्द हो तथा कोई तीव्र रोग विद्यमान हो अथवा सिर पर आघात लगा हो, तो समझ लेना चाहिये कि मस्तिष्कगत धमनियों के

फट जाने से नकसीर फूटी है जिसका कारण रक्त की प्रगल्भता या बोहरान अथवा अभिघात है। इस प्रकार की नकसीर में मानसिक क्रियाओं में भी न्यूनाधिक विकार उत्पन्न हो जाता है। फलतः सरसाम, भ्रम, सन्यास और बुद्धिविभ्रम भी कभी इससे उत्पन्न होता है तथा इस प्रकार की नकसीर दुश्चिकित्स्य होती है। रुआफ (नकसीर) बोहरानी सदा बोहरान के दिन उपस्थित होती है। नकसीर में कभी धमनी और कभी सिरा से रक्त निकलता है। इन दोनों में यह अंतर है कि धामनिक रक्त स्वच्छ-लाल एवं पतला होता है। इसके विपरीत सिराज रक्त अपेक्षाकृत गाढ़ा एवं स्याही मायल होता है। यह रोग कभी आवेग-पूर्वक भी होता है। विशेषकर ऐसी स्त्रियों में जिनका मासिक धर्म बन्द हो।

चिकित्सासूत्र—जो नकसीर तीव्र ज्वरों एवं मानसिक रोगों में बोहरान के दिन (बोहरान स्वरूप) उपस्थित हो, उसको कदापि बन्द न करें, क्योंकि यह आरोग्यसूचक है। परंतु जब इससे असाधारण दौर्बल्य एवं मूर्च्छा उत्पन्न हो जाय, तब उसका समीचीन उपाय करना चाहिये। नकसीर फूटने पर निम्नलिखित उपाय काम में लेवें—(१) रोगी का गरेबां ढीला करके उसे इस प्रकार बैठायें कि उसका सिर किंचित् पीछे को झुका हो। पुनः उसे कई बार लंबे-लंबे (ऊर्ध्व) सांस खींचने का आदेश करें। इससे प्रायः नकसीर रुक जाती है। यदि इससे लाभ न हो तो (२) सिर के ऊपर शीतल जल धारें। उसके पाँव में गरमी पहुंचायें और नथुनों को हाथ से बन्द रखें या १ रत्ती कपूर को थोड़े दूध में पीसकर और स्वच्छ रूई के ऊपर लगाकर उसे नाक के भीतर ठूंस देवें।

चिकित्साक्रम—(१) रक्त की प्रगल्भता की दशा में आवश्यकता होने पर सराल सिराका वेधन करें। (२) सिर और मस्तक पर ठंढा पानी डालें। (३) दम्मुल्अख़्वैन १ माशा, बारहसिंघा सोख़्ता महलूल १ माशा, वंशलोचन १ माशा महीन पीसकर १ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर चटायें। ऊपर से ४ माशा बीख अंजबार, ४ माशा विलायती मेंहदी के बीज, ४ माशा पोस्ते का दाना और ४ माशा तुख्म बारतंग पानी में इनका शीरा और ३ माशा बिहीदाने का लवाब निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलायें। (४) १ माशा कपूर और ६ माशा सफेद चंदन पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करें। (५) मुलतानी मिट्टी का नाक पर लेप करें। यदि इस पर भी बन्द न हो तो सिर के बाल कतरवाकर बकरी का दूध सिरके ऊपर डलवायें। (६) गेरू १ माशा, संगजराहत १ माशा, दम्मुल अख़्वैन १ माशा पीसकर अर्क कासनी १२ तोला और अर्क बेद सादा १२ तोला के साथ, २ तोला शर्बत अंजबार या २ तोला शर्बत केवड़ा मिलाकर पिलायें।

यदि गर्मी और खुश्की के कारण नकसीर हो तो बादाम का तेल और कद्दू के तेल का शिरोऽभ्यङ्ग करें तथा नाक में टपकायें। यह औषधि भी गुणकारी है—कपूर १ माशा, २ दाने बादाम का मग्ज पीसकर १ तोला गोघृत मिलाकर नस्य लेवें और निम्न औषधि पियें––तुख्म बारतंग, तुख्म खुर्फा स्याह, और तुख्म काहू प्रत्येक ६ माशा सबका पानी में शीरा निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर १ माशा बबूल के गोंद और १ माशा कतीरा के महीन चूर्ण का प्रक्षेप देकर प्रातः-सायंकाल पिलायें। सिर और मस्तक पर शीतल जल डाले और मस्तक पर बर्फ रखें।

यदि इन उपायों से लाभ न हो, तो कंधे, पिंडल और गुद्दी के ऊपर खाली सींगी लगवायें।। यदि दाहिने नथुने से रक्त जारी हो तो प्लीहा पर सींगी लगवायें।

यदि शिशुओं को उदरकृमि और स्त्रियों को आर्तवरोध आदि के कारण नकसीर फूटती हो तो उक्त उपायों से रक्त बन्द करके मूल व्याधि की चिकित्सा करें। कभी यकृत्, प्लीहा और वृक्क के रोगों इन अंगों से रक्त ऊपर चढ़कर नाग से जारी हो जाता है। उसके लिये भी प्रथम नकसीर बन्द करने के उपर्युक्त उपाय करें। पुनः मूल व्याधि की ओर ध्यान देवें।

नकसीर के लिये अहितकर––(१) रोगी का चित्त (उत्तान) लेटना, (२) लौंग के फूलों का निरंतन सूँघना, (३) नहरी पुदीना का अधिक सेवन या सूँघना, (४) वलपूर्वक सूँघना और (५) अम्ल तथा उष्ण पदार्थों का सेवन।

पथ्य––साबूदाना, यवमंड, खिचड़ी, कद्दू, तुरई, टिंडा, पासक, शलगम, रंगतरा नाशपाती, अनार, तरबूज इत्यादि शीतल आहार देवें।

अपथ्य––मांस, अंडा, लहसुन, प्याज, गुड़, तीक्ष्ण मसाला, तेल, लिखने-पढ़ने, धूप में चलने और अग्निसेवा आदि से परहेज करें।

३––खशम

नाम––(अ०) खशम, बुल्लानुश्शम्म; (हिं०) सूँघने की शक्ति जाती रहना; (सं०) घ्राणाज्ञान; (अं०) अनोज्मिया (Anosmia)।

वर्णन––इस रोग में रोगी की आघ्राणशक्ति त्रुटित वा नष्ट हो जाती है। तथा रोगी सुगन्ध और दुर्गन्ध में भेद नहीं कर सकता है।

हेतु––नासार्श, नासागत कैन्सर (सर्तान) या अन्यान्य शोथ इसके प्रधान हेतु हैं। कभी चिरज प्रसेक और प्रतिश्याय तथा अन्यान्य मानसिक रोगों में दीर्घकाल पर्यंत फँसे रहने के कारण आघ्राण नाड़ियों (पेशी-तंतुओं) के समीप पुष्कल कफसंचय से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--रोगी सुगंध और दुर्गन्ध में भेद नहीं कर सकता और कहता है कि उसे किसी प्रकार की गंध का ज्ञान नहीं होता। यदि नासार्श या नासाशोथ या नासागत कैन्सर हो तो प्रकाश में देखने से मालूम हो जाता है। चिरज प्रसेक की दशा में लिखें भारीपन नेत्र के पलकों में भुरभुराहट प्रतीत होती है।

चिकित्सा सूत्र--नासार्श, नासाशोथ और नासागत कैन्सर होने की दशा में उनकी चिकित्सा करनी चाहिये। यदि चिरज प्रसेक से हो तो प्रथम कफोत्सर्ग का उपाय करना चाहिये। जब कफोत्सर्ग हो जाय तब नाड़ी एवं मस्तिष्क को बलप्रदान करनेवाली औषधियों का उपयोग करें।

चिकित्सा क्रम--यदि चिरज प्रसेक एवं आक्लेदकी अधिकता के कारण यह रोग हुआ हो तो गुलबनफशा ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी के बीज ७ माशा, गावजबान ५ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर मल-छानकर २ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर प्रातः-सायंकाल सेवन करें। (२) रात्रि में सोते समय हब्ब इयराज ७ माशा सप्ताह में दोवार दिया करें। (३) सेंधा नमक २ माशा, बूरए अरमनी ३ माशा, मर्जञ्जोश ३ माशा पानी में उबाल कर छानकर पिचकारी से नाक धोवाएँ। आठ-दस दिनके प्रयोग से जब कफोत्सर्ग हो जाय तब लोह भस्म १ चावल, प्रवाल भस्म २ रत्ती, जुवारिश जालीनूस ७ माशा में मिलाकर १२ तोला अर्क बादियान के साथ और अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ शाम को उपयोग करें।

पथ्यापथ्य—बख्रुल्अन्फ (नासादौर्गन्ध्य) वत्।

४--बख्रुल्अन्फ।

नाम--(अ०) बख्रुल (नत्नुल) अन्फ; (उ०) फीनस; (हिं०) नाक से दुर्गन्ध आना; (सं०) अपीनस, पीनस, पूतिनस्य; (अं०) ओजीना (Ozaena)।

वर्णन--रोगी के नाक से अन्य लोगों को दुर्गन्ध मालूम होती है।

हेतु--प्रायः यह रोग प्रतिश्याय एवं प्रसेक के बिगड़ने (पीनस) से होता है। कभी नाक पर चोट लगने या नाक में घाव होने से यह रोग हो जाता है। कभी रक्तविकार के रोग, जैसे, फिरंग, कण्ठमाला, चेचक आदि में रक्तपुष्टि से यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। बालक और स्त्रियाँ इस रोग का आखेट अधिक हुआ करती हैं।

लक्षण--नाक से दुर्गन्धित और कभी रक्तमिश्र द्रव उत्सर्गित होता रहता है। प्रायः द्रव शुष्क होकर नाक से छिछड़े-से निकलते रहते हैं।

छिछड़ों के कारण नाक बंद रहती है; रोगी मुख से साँस लेता है और उसके साँस से दुर्गन्ध आती है। परंतु; स्वयं रोगी को दुर्गन्ध का ज्ञान नहीं होता ; क्योंकि उसकी आघ्राण शक्ति त्रुटित या नष्ट हो जाती है। रोग के पूर्व प्रतिश्याय एवं प्रसेक का होना और उसकी चिकित्सा की अनियमितता आदि इसके लक्षण हैं। जब रोग पुराना हो जाता है या फिरङ्ग जन्य होता है, तब कभी नाक की हड्डी गलकर नाक बैठ जाती है और कभी क्रिमि पड़ जाते हैं।

चिकित्सा——नाक को स्वच्छ रखें। गरम पानी में थोड़ा नमक मिलाकर इससे दिन में कई बार नाक को धो लिया करें और कद्दू के तेल, गुलरोगन या चमेली के तेल के कुछ बूंद नाक के भीतर टपका दिया करें। जीरा, सोंठ, काली मिर्च प्रत्येक १ तोला कूट-छानकर ४ तोला गुड़ में मिलाकर गोलियाँ बनायें और प्रातः सायंकाल २-२ माशा खिलायें। यदि हरी तितलौकी मिल सके, तो इसका रस उत्तम वरन् सूखे कद्दू को पानी में उबालकर उसके कुछ बिंदु नाक में टपकायें अथवा हरी तुलसी की पत्ती के रस में नमक मिलाकर कुछ बिंदु नाक में टपकायें। यदि इन उपायों से लाभ न हो, तो निम्नलिखित दोषपाचन (मुंजिज) योग कुछ दिन पिलाकर विरेचन देवें और हब्ब इयारज से भी मस्तिष्क का शोधन करें।

दोष-पाचन योग——गुलबनफ्शा ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड़, सौंफ, सौंफ की जड़, छिली हुई मुलेठी, खुब्बाजी के बीज प्रत्येक ७ माशा, हंसराज, गावजबान और उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५ माशा सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातःकाल पका-मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर ८–१० दिन पिलायें। नवें या ग्यारहवें दिन विरेचनीय औषधियाँ अर्थात् सनायमक्की के पत्र और सफेद निसोथ प्रत्येक ७ माशा और गुलकंद, तरंजबीन और (शकर सुर्ख) प्रत्येक ४ तोला और मिलाकर एक विरेचन सादा और दो विरेचन हब्ब इयारज के साथ देवें। प्रत्येक विरेचन के बीच वाले दिन तबरीद का योग देवें और नीम की पत्ती, कायफल, लौंग प्रत्येक ३ माशा, जुंदबेदस्तर ५ माशा, सबको बारीक पीसकर कपड़े में छानकर नस्य की भाँति सुंघाएं। यदि कब्ज हो तो १ तोला लऊक सपिस्तां खियार शंबरी १२ तोला कुनकुना अर्क बादियान के साथ रात्रि में सोते समय पिलायें या कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया ताजे पानी से खिला देवें। विरेचनोपरांत फौलाद भस्म १ टिकिया जुवारिश जालीनूस ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा के साथ

कुछ दिन तक खिलायें। नागरमोथा, सातर, जटामांसी, गुलाब का फूल और लौंग प्रत्येक ३ माशा आवश्यकतानुसार हरे पुदीना के रस में पीसकर बत्ती बनाकर उक्त ओषधि में लत करके प्रातः सायंकाल नाक में रखवायें। जब यह रोग पुराना हो जाय तब नीम की पत्ती, आड़ू की पत्ती और वायबिडंग प्रत्येक १ तोला सबका काढ़ा करके इससे रोगी को प्रातः सायंकाल गण्डूष करायें, जिसमें यदि कोई कृमि आदि पड़ गया हो तो निकल जाय। यदि नाक से क्रिमि निकलें तो १ तोला तारपीन का तेल पाव भर कुनकुना पानी में मिलाकर उससे चिपचकारी के द्वारा नाक को धोवायें। मेउड़ी की पत्ती १ तोला, कपूर ३ माशा, कलौंजी ३ माशा सबको बारीक पीसकर टिकिया बनाकर ५ तोला गुलरोगन में जला-छान-कर रखें। प्रथम नाक को स्वच्छ करके इसका नस्य देवें। यह पूति-नस्य एवं नासाकृमि में लाभकारी है।

वक्तव्य—भोजनोत्तर शीघ्र ही सो जाना, चित्त लेटना और बाल कतरवाकर शीतल तेलों का शिरोऽभ्यङ्ग करना इस रोग में अहितकर है।

पथ्य—लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, जैसे—अंडा, बिस्कुट, डबल रोटी, साबूदाना, बकरी का मांस, अरहर और मूँग की भुनी हुई दाल गरम मसाला डालकर देवें। चाय, रोटी, खिचड़ी, अंगूर आदि यथाभ्यास खिलायें।

अपथ्य—लहसुन, प्याज, गोभी, बैगन, मूली, उड़द की दाल प्रभृति गरिष्ठ एवं बादी पदार्थ और शीतल वायु एवं शीतल पदार्थों के खाने-पीने से परहेज करें।

५—दीदानुल् अन्फ़।

नाम—(अ०) दीनानुल्अन्फ़ ; (उ०, हिं०) नाक के कीड़े ; (सं०) नासाकृमि ; (अं०) वर्मीज नेजाइ (Wormes nasi)।

वर्णन और हेतु—अन्यान्य साधारण कृमियों की भांति मस्तिष्क वा नाक की जड़ में भी कृमि दूषित कफ से उत्पन्न हो जाते हैं। साधारणतः यह रोग स्निग्ध प्रकृति विशेषतः बालकों एवं वृद्धों तथा ऐसे मलिन व्यक्तियों में जो चिरज पूतिनस्य वा पीनस से आक्रांत होते हैं; हुआ करता है।

लक्षण—प्रथम रोगी की नाक से अत्यंत दुर्गन्ध एवं रक्तमिश्र द्रव उत्सर्गित होता है, तत्पश्चात् कृमि भी निकलते हैं। नाक बैठ जाती है। नेत्र से आँसू बहता है और उसमें घाव हो जाता है। ये कृमि

कभी नाक की ओर से छिद्र करके समीपवर्ती अंगों में चले जाते हैं। कभी ये मस्तिष्क में जाकर मृत्यु का कारण होते हैं।

चिकित्सा--नासादौर्गन्ध्य (बख्रुल्अन्फ) और इसकी चिकित्सा समान है। निम्नलिखित योग भी इस रोग में गुणकारी होते हैं:--

(१) एलुआ या अफसंतीन महीन पीसकर कड़वे बादाम के तेल या तितलौकी के तेल या कूठ के तेल में मिलाकर नाक में टपकाएँ।

(२) नासाक्रिमिहर धूनी—प्याज के बीज ४ माशा, गंदना के बीज ४ माशा, खुरासानी अजवायन के बीज ४ माशा पीसकर १ तोला मोम या बकरी की चर्बी मिलाकर अग्नि पर रखें और इसका धूआँ नाक में लेवें।

(३) नासाक्रिमिघ्न नस्य -- पीला एलुआ १ माशा, कपूर १ माशा और हींग १ माशा, हरे शरीफा के पत्ते का रस १ तोला और हरे आड़ू के पत्र का रस १ तोला में पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर नाक में टपकायें। गुलरोगन के स्थान में तारपीन का तेल मिलाने से अधिक लाभ होता है।

(४) नाशाक्रिमिनाशक गण्डूष—शरीफा की पत्ती, नीम की पत्ती, आड़ू की पत्ती, बायविडग प्रत्येक १ तोला, पानी में पका-छानकर उससे गण्डूष करें। यह नासाक्रिमिहर, शोथ एवं दंतशूलहर है तथा दोष का उत्सर्ग करता है।

(५) १० छटाँक गरम पानी में २॥ तोला तारपीन का तेल मिलाकर प्रातः सायंकाल नाक के भीतर पिचकारी करें।

वक्तव्य—इस रोग से छुटकारा मिलने पर यदि रोगी की नाक में घाव आदि शेष रह जाय, तो उक्त अवस्था में नासाव्रण की चिकित्सा करें।

पथ्यापथ्य--पूतिनस्य (बख़्रुल्अन्फ़) वत्।

६--उतास

नाम--(अ०) उतास; (उ०, हिं०) छींक आना; (सं०) छिक्का, क्षवथु; (अं०) स्नीजिंग (Sneezing)।

सामान्य रूप से कभी-कभी छींक आना स्वास्थ्य का लक्षण समझा जाता है। परंतु; जब यह सीमा का उल्लंघन कर जाता है, तब इससे लाभ के स्थान में हानि की संभावना अधिक होती है।

हेतु—कभी-कभी धूप में चलने या धूलि-कण या धूआँ अथवा तमाकू वा मिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थों की धाँस में चलेजाने से बारंबार छींक आती है। कभी उष्ण प्रसेक के कारण मस्तिष्क में गर्मी और खुश्की की प्रगल्भता होकर मस्तिष्क

के भीतर तीक्ष्ण द्रव संचित हो जाता है और क्षोभ उत्पन्न करता है, जिससे अनैच्छिकरूप से छींक आना आरंभ हो जाता है।

लक्षण—किसी तीक्ष्ण वस्तु की धाँस आदि से छींक आती हो, तो उस वस्तु को हटा देने से थोड़ी देर में स्वयं छींक बन्द हो जायगी। तीव्र धूप में चलने से हो तो नेत्र की ललाई, नाक की जलन और नथुनों में लाली होगी। प्यास अधिक होगी। प्रसेक के कारण हो तो नाक से गरम-गरम पिलाई लिये पतला द्रव निकलेगा।

वक्तव्य—शैख के मत से निम्नलिखित पाँच दशाओं में अधिक छींक आना विशेष रूप से अहितकर हैं—(१) प्रसेक और प्रतिश्याय के प्रारम्भ में, (२) ज्वरों के प्रारम्भ में, (३) फुफ्फुसशोथ और उरःस्थ रक्तसंचय में, (४) उष्ण प्रकृति एवं मस्तिष्क वालों में और (५) प्रायः नकसीर से पीड़ित होनेवालों में। निम्न लिखित चार दशाओं में छींक आना हितकर है—(१) जबकि मस्तिष्क के भीतर वायु, वाष्प या थोड़ा दोष हो, (२) जबकि मस्तिष्क में परिपक्व दोष हो, (३) प्रसवकाल में और (४) हिक्का (हिचकी) में। छींक आने की दशा में नकसीर फूटना बहुत ही भयंकर लक्षण है। छोटे शिशुओं को साधारणतया सर्दी लगने से छींक आया करती है। उक्त अवस्था में उसे सर्दी से बचाएँ; गरम टोपी पहनाएँ और पाँव में मोजा पहनाएँ। सिर को मलना और केसर या दालचीनी सुँघाना लाभकारी होता है :

चिकित्सासूत्र—नाक और मस्तिष्क के क्षोभ एवं कष्ट निवारण के लिये शामक ओषधियों का उपयोग करें। दोषसंचय की दशा में यथाप्रकृति दोष का शोधन करें। रोगी को चिन्तातुर कर देना या सहसा किसी काम में लगा देना। श्वास और छींक को प्रयत्नपूर्वक रोकना और सामान्य हेतु की दशा में नाक, कान और तालू को मलना या नाक को स्वच्छ कुनकुना पानी से धोना, अंगूठे और तर्जनी अँगुली के बीच नाक को बलपूर्वक दबाना तथा मुँह खोलकर साँस या डकार लेने से साधारणतया छींक आना बंद हो जाता है। इस रोग में छिक्का-कारक ओषधियों के सूँघने से परहेज करना चाहिये।

चिकित्साक्रम—जब बारंबार छींक आये तथा नाकमें जलन एवं कष्टानुभव हो तब नाक को भली भाँति स्वच्छ करके गुलरोगन या कद्दू के तेल के कुछ बिंदु नाक में टपकायें। यदि धूप में चलना इसका हेतु हो तो ठंढे पानी से स्नान करें। उष्ण प्रसेक के कारण हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ६ दाना पानी में पका-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा और ३ माशा मीठे कद्दू के बीजों के मग्ज का शीरा मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें और कद्दू का तेल ५ बिंदु नाकमें टपकायें तथा शिरोऽभ्यङ्ग करें। यदि नींद लाना आवश्यक हो

तो रोगन लबूब सब्ग्रा का सिर पर अभ्यङ्ग करें और सेंधानमक २ तोला तथा बूरएअरमनी २ माशा गरम पानी में मिलाकर दिन में तीन-चार बार इससे नाक धोवाया करें। गुलरोगन या बादाम का तेल नाक में टपकाना, सिर के ऊपर कुनकुना पानी का परिषेक करना, सेव या अफीम सुँघाना और उक्त तेलों में से कोई तेल कुनकुना करके ५ बिंदु कान में टपकाना भी गुणकारी है।

पथ्य—मामूली बकरी का शूरबा, चपाती, कद्दू, पालक, कुलफा. शलगम, टिंडा, तुरई आदि तरकारी देवें।

अपथ्य—धूलि-कण और धूप में चलने-फिरने तथा तमाकू और मिर्च प्रभृति तीक्ष्ण द्रव्यों की धाँस से बचें। प्रसेक हो तो ठंढे पानी से स्नान नहीं करें। मिर्च, लहसुन, प्याज, गरम मसाला, तीक्ष्ण एवं उष्ण द्रव्यों से तथा गुड़ एवं तेल आदि के उपयोग से परहेज करें। आलू, अरवी, कचालू आदि गरिष्ठ वस्तुएँ सेवन नहीं करें।

७—जफाफुल्अन्फ, हिक्कतुल्अन्फ

नाम—(अ०) जफ़ाफ़ुल्अन्फ़ ; (उ०, हिं०) नाक की खुश्की (रूक्षता) (सं०) नासाशोष ; (अ०) राइनाइटिस सिक्का (Rhinitis Sicca), ड्रायनेस ऑफ नोज (Dryness of nose)।

(अ०) हिक्कतुल्अन्फ़ ; (हिं०, उ०) नाक की खुजली ; (सं०) नासाकण्डू ; (अ०) प्रूराइटिस नेजाई (Pruritis Nasi)।

हेतु—मस्तिष्क की गर्मी और खुश्की से उष्ण व्याधियों एवं पैत्तिक ज्वरों की दशा में मस्तिष्कगत द्रव के विलीन हो जाने के कारण नासाशोष हो जाता है। मस्तिष्क या किसी अन्य अंग में तीक्ष्ण दोष के संचित हो जाने और उससे बाष्प उठकर नाक में आवृत होने से नासाकण्डु हो जाता है। कभी-कभी प्रतिश्याय एवं फुंसियाँ भी इसका हेतु होती हैं।

लक्षण—गरमी और खुश्की के लक्षण पाये जाएँगे। सिर हलका होगा, प्यास अधिक होगी। धूप में चलना या गर्मी में काम करना अधिक कष्ट-दायक होगा। नाक के भीतर (सोजिश) एवं खुजली मालूम होगी। ठंढा पानी चुल्लु में लेकर नाक में नस्य करने से सुखानुभव होगा।

चिकित्सा—स्नेहनार्थ ३ माशा बेदाना, ६ तोला अर्क गावजबान में भिगोकर लुआब निकालें और उन्नाब ५ दाना, मग्ज कद्दू, मग्ज तरबूज, छिले हुए काहू के बीज, तुख्म खुर्फा स्याह प्रत्येक ३ माशा, छः तोला अर्क गावजबान में पीस-छानकर लुआब, और २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रातः-सायं काल पिलायें और स्त्री के दूध

में २ रत्ती कपूर घिसकर दो-चार बिंदु नाक में टपका दिया करें या मग्ज कद्दू पानी में पीस-छानकर लुआब और २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलाएँ।

बलप्राप्ति के लिये आमले का एक मुरब्बा चाँदी के एक वर्क में लपेटकर प्रातः कालीन औषधि के साथ देवें तथा मुफर्रेह बारिद ५ माशा, १२ तोला अर्क गावजबान और २ तोला शर्बत उन्नाब के साथ देने से भी उपकार होता है।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, शलगम, चुकंदर, टिंडा, ककड़ी आदि की तरकारी देवें तथा अंगूर, सेब और सन्तरा आदि अभ्यासानुकूल देवें।

अपथ्य—भुने हुए चने, लालमिर्च, गरम मसाला और गरम-खुश्क पदार्थ, मछली, बैंगन, लहसुन, प्याज, उड़द और मसूर की दाल प्रभृति इस रोग में अहितकर हैं। मानसिक परिश्रम कम करें। धूप में चलने-फिरने से बचें।

८—बवासीरुल्अन्फ

नाम—(अ०) बवासीरुल्अन्फ़ ; (उ०, हिं०) नाक की बवासीर; (सं०) नासार्श ; (अं०) पॉलिपस नेजाई (Polypus Nasi)।

वर्णन—इस रोग में नाक के नथुनों के भीतर मस्से (अर्श) उत्पन्न हो जाते हैं।

भेद—(१) मस्सा श्वेत, कोमल और वेदनारहित होता है। इसमें द्रव बिल्कुल नहीं बहता। यह कफ से उत्पन्न होता और सुखसाध्य होता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे 'म्युकस पॉलिपस Mucous Polypus' कहते हैं। (२) जिसमें मस्सा (अंकुर) तंतुल एवं रक्तवर्ण का होता है। इसमें वेदना और किंचित् कठोरता होती है। यह कष्टसाध्य होता है। यह रक्तज होता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे फाइब्रस पॉलिपस (Fibrous Polypus) कहते हैं। (३) जिसमें मस्सा स्याही-मायल रंग का कठोर होता है। इसमें कठोरता के साथ कठिन दर्द भी होता है। यह सौदावी दोष से उत्पन्न होकर दुश्चिकित्स्य होता है, विशेषतः जबकि इसके साथ पीला द्रव नाक से बहे तो यह अधिक दुःसाध्य एवं भयावह होता है।

हेतु—प्रसेक एवं प्रतिश्याय का निरंतर बना रहना, पूतिनस्य का होना, नाक स्वच्छ न करना तथा मलिन रखना अर्थात् मलिन दोष इस रोग के हेतु हैं।

लक्षण—नाक के भीतर गुदार्शवत् अंकुर (मस्सा) उत्पन्न हो जाता है जिससे साँसलेने में रुकावट होती है। इससे प्रायः पानी और कभी रक्त बहता है और

रोगी को प्रायः प्रतिश्याय की शिकायत रहती है । मस्सा जितना बड़ा होता है, साँस लेने में उतना ही कष्ट होता है। कभी अकस्मात् मस्सा बढ़ जाने के कारण नाक का नथुना उभर कर चेहरा बेडौल हो जाता है और रोगी गुनगुना कर बोलता है। कभी यह बढ़ कर नाक का छिद्र बन्द कर देता है और कभी नाक और तालू से बाहर भी दृग्गोचर होने लगता है। जब इस का दबाव मस्तिष्क तक पहुँचता है। तब मानसिक क्रियाओं में विकार आ जाता है।

चिकित्सा—कफज और सौदावी में प्रथम यह दोषपाचन ओषधि (मुंजिज) पिलायें—गुलबनफ़्शा, पित्तपापड़ा पत्र, खतमी के बीज, सौंफ़ प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना, गावज़बान ८ माशा, सूखा मकोय ५ माशा। सबको रात्रि में गरम पानी में भिगो देवें और प्रातः मल-छान कर ४ तोला गुलकन्द मिला कर पिला देवें। नवें दिन उक्त योग में अमलतास का गुदा ४ तोला, तुरंजवीन ४ तोला, सनाय मक्की पत्र ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा और ७ दाने मग्ज बादाम का शीरा मिलाकर पिलावें। इसके दूसरे दिन तबरीद पिलायें। तीसरे दिन इसी योग में काली हड़, पीली हड़ और काबुली हड़ प्रत्येक ७ माशा और मिलाकर पिलाना आरम्भ करें और रात्रि में सोते समय हब्ब इयारज ७ माशा गोघृत से स्नेहाक्त करके १२ तोला अर्क गावजवान के साथ दिया करें। इसी प्रकार एक-एक सप्ताह के अंतर से दो और विरेचन देवें। विरेचनोपरान्त २ रत्ती प्रवाल ७ माशा अतरीफल उस्तूख़ुद्दूस में मिला कर १२ तोला अर्क बादियान के साथ दिया करें।

यदि रक्त की प्रगल्भता हो तथा रोगी बलवान हो तो सरारू सिरा का वेधन करें और गुद्दी पर जोंक लगवायें। तदुपरान्त निम्न तबरीद देवें—३ माशा बिहीदाने और ४ माशा गावज़बान का लबाब तथा ५ दाने उन्नाब का शीरा पानी में निकालकर २ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिला देवें।

उपर्युक्त संशोधन के उपरान्त १ तोला अतरीफल उस्तूख़ुद्दूस, १० तोला अर्क गावजबान के साथ प्रति दिन सेवन करें। या अतरीफल शाहतरा ४ माशा, अर्क मुसफ्फीखून बनुस्खा कलाँ के साथ २ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर दिया करें।

संशोधनोपरान्त निम्न ओषधियों स्थानिक प्रयोग करें—

(१) जंगार ३ माशा महीन पीसकर १ तोला शहद में मिला कर उसमें रूई लत करके नाक के भीतर रखें। इसके प्रयोग से जलन मालूम होती है। यदि जलन असह्य हो तो किंचित् घी लगा देवें। चार-पाँच दिन के प्रयोग से जलन भी प्रतीत नहीं होती। (२) जंगार १ माशा, फिटकिरी ४ माशा महीन पीस कर इसमें बत्ती लथेड़ कर नाक में रखें। (३) नासार्शहर मलहर—मोम १० तोला, गीला विरोजा १ तोला, १।। तोला गुलरोगन में गलाकर जंगार

नीला थोथा, बोल, पीला एलुआ, भुना हुआ सुहागा, भुनी हुई फिटकीरी और सेंदूर प्रत्येक २ माशा पीसकर मिला देवें और उपयोग करें।

यदि उक्त उपायों से कोई लाभ न हो तो सावधानीपूर्वक शस्त्रकर्म के द्वारा इस का छेदन करें और अवशिष्ट भागपर मूलोत्पाटन के लिये उपर्युक्त ओषधियों में से कोई ओषधि लगा देवें।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, खिचड़ी कद्दू, तुरई, कुलफा, टिंडा, पालक आदि की तरकारी देवें।

अपथ्य—गरिष्ट, बादी और वाष्पकारक पदार्थों से तथा गुड़ और तेल से परहेज करें।

६—एह्तिबासुश्शैफिल्अन्फ़

नाम—(अ०) एह्तिबासुश्शैफिल्अन्फ़; (उ० हि०) नाक में कुछ अटक जाना; (सं०) नासागतशल्य; (अ०) फॉरेन बॉडी इन दी नोज (Foreign body in the Nose)।

वर्णन—इस रोग में नाक के भीतर कोई शल्य (जैसे मटर, चना आदिके दाना) फँस जाता है।

हेतु—यह रोग प्रायः बालकों को होता है। कभी पतंग, मच्छड़ या जोंक आदि कीट भी अज्ञानावस्था में नाक के भीतर जाकर अटक जाते और महान कष्ट का कारण बनते हैं।

लक्षण—जिस ओर के नथुने में कोई शल्य होता है उसमें दर्द एवं कष्ट का अनुभव होता है तथा उस ओर से प्रायः द्रव बहता रहता है। कभी-कभी खाने-पीने के समय कोई वस्तु नाक में चली जाती है जो प्रायः उच्छू या छींक आकर निकल जाती है पर क्वचित् वहाँ अटककर कुथित हो जाती है और विराग, अनिद्रा, अरुचि, कृच्छ्र-श्वास, पीतवर्णता आदि उपद्रव की जनक होती है। इतना ही नहीं प्रत्युत उससे कभी व्रण बन जाता है, जिसके साथ ज्वर भी हो जाता है।

निदान—हेतुकी विद्यमानता और घटना से इस रोग का निदान सरलता से हो सकता है।

चिकित्सासूत्र—मुख और जिस ओर के नथुने में शल्य अटका हो उसके विपरीत ओर के नथुने में से बलपूर्वक साँस बाहर निकालें। ऐसा करने से प्रायः अटकी हुई वस्तु (शल्य) निकल जाती है अथवा छिक्काजनक ओषधियों के महीन चूर्ण का नस्य लेवें। दूसरे नथुने और मुंह को बन्द करके बलपूर्वक छींकें। बालकों में किसी मोचने आदि से शल्य निकालने का यत्न करें। यदि ऐसा करना

कठिन हो तो बालक को पीठ के बल लेटाकर ऊपरसे उसका मुँह बन्द करके प्रथम विकारी नथुने में और फिर विपरीत ओर के नथुने में जोरसे फूँक मार देवें। ऐसा करने से भी प्रायः शल्य निकल जाया करता है।

चिकित्साक्रम--छिक्काजनक ओषधियों, जैसे--कुंदूश, राई, कालीमिर्च, जुंदबेदस्तर या खर्बक आदि में से किसी एक या अधिक को महीन पीस कर नाक में फूँकें।

१०--सुद्दए खैशूम

नाम--(अ०) सुद्दए खैशूम, सुद्दतुल्अन्फ; (उ०) नथुने का बन्द हो जाना; (सं०) नासानाह, नासाप्रतिनाह; (अं०) राइनोक्लाइसिस (Rhinocliesis), नेजल ऑब्स्ट्रक्शन (Nasal Obstruction)।

हेतु और लक्षण--इस रोग का हेतु पिच्छिल दोष या अधिमांस अथवा (खुश्क रेशा) हुआ करता है, मिन्मिनत्व इसका लक्षण है।

चिकित्सा--आवश्यकतानुसार संशोधन के उपारान्त (१) जुंदबेदस्तर को बोल एवं केसर के साथ या अकेले १ रत्ती प्रमाण में पीसकर नस्य देने से उपकार होता है। इसी प्रकार (२) मरूवा के रसका नस्य भी लाभकारी है। इसी प्रकार (३) मवीज़ज, अकरकरा और राई के काढ़े का गण्डूष और (४) गरम पानी का नस्य भी लाभकारी उपाय है। अधिमांस के कारण हो तो नासार्श में वर्णित ओषधियाँ लाभकारी हो सकती हैं।

११--बुसूर व कुरूहुल्अन्फ

नाम--(अ०) बुसुरूल्अफ़, कुरूहुल् अन्फ़, (उ०) नाक की फुंसियाँ और जख्म; (सं०) नासागत पिड़का, नासापाक; (अ०) पस्च्युल्स ऑफ दी नोज (Pustules of the Nose); अल्सर्स ऑफ दी नोज (Ulcers of the Nose)।

वर्णन--इस रोग में नाक के भीतर फुंसियाँ और कभी व्रण (घाव) हो जाता है। नासापाक के ये तीन भेद होते हैं--(१) शुष्क, (२) आर्द्र और (३) दुर्गंधित वा दूषित।

हेतु--तीक्ष्ण एवं उष्ण दोष की प्रागल्भता, विश्लेष, बाष्पारोहण और प्रसेकका अंतर्भरण आदि। शुष्कपाक विदग्ध सौदावी की प्रगल्भता से हुआ करता है। आर्द्रपाक रक्त की प्रगल्भता एवं उष्ण नजला से हुआ करता है।

लक्षण एवं निदान--नाक के भीतर खुजली होती है । पिड़का की दशा में पिड़का और व्रण की दशा में व्रण पाये जाते हैं। न्यूनाधिक खिचावट, टीस और लाली भी विद्यमान होती हैं। शुष्क व्रण की दशा में उसके ऊपर कठिन खुरण्ड पाया जाता है जो रह-रह कर निकला करता है। दूषित व्रण में नाक से दुर्गंध आती है तथा नाक से पूयमिश्रित दुर्गन्धित द्रव निकलता है।

चिकित्सासूत्र--नाक की खुजली में चन्दन, कपूर, गुलाब आदि सूँघना और सिरका आदि नाक के भीतर लगाना लाभकारी है। पिड़का और व्रण में आवश्यकतानुसार प्रगल्भ दोष का शोधन करना और रसवत, मुरदासंग, सफेदा काश्गरी, गिल अरमनी आदि को हरे कुलफा के रस में पीस कर नाक के ऊपर लेप करना गुणकारी है।

चिकित्साक्रम--नासाकण्डु में ३ माशा पीला एलुआ पानी में पीस कर रोगी को पिलायें तथा उसमें बत्ती लत करके नाक के भीतर रखवायें। नासागत पिड़का एवं व्रण में अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला या हब्बा बनफ्शा या हब्ब इयारज ७ से ६ माशा तक रात्रि में सोते समय १२ तोला अर्क गावजबान के साथ दिया करें और गुलरोगन, रोगन कद्दू, रोगन नीलूफर या मीठे बादाम के तेलमें थोड़ा हरे धनिया का रस अर्क गुलाब मिलाकर नाकमें टपकायें।

१२--हुर्कतुल्अन्फ

नाम--(अ०) हुर्क़तुल्अन्फ़; (उ०) नाक की जलन; (सं०) नासागत संक्षोभ; (अं०) नेजल इरिटेशन (Nasal Irritation)।

हेतु और लक्षण--बाहरी तौर पर नाक में गरमी पहुँचकर या आन्तरिक रूप से तीक्ष्ण उष्ण बाष्प या तीक्ष्ण दोष गिरकर नाक की जलन का कारण होते हैं।

चिकित्सा--(१) अर्क गुलाब में चन्दन को घिस कर उसमें कपड़ा तर करके नाक के भीतर रखें, (२) अर्क गुलाब में गुलरोगन मिलाकर नाक के भीतर टपकायें और (३) कद्दू के तेल में लड़कीवाली स्त्री का दूध में मिलाकर नस्य देवें। (४) कपूर सूँघने से भी उपकार होता है। कभी-कभी गरम और क्षोभकारक बाष्प के मस्तिष्क में संचित हो कर नाक की ओर आने से इस प्रकार की जलन होती है, जिससे आँसू जारी हो जाते हैं। इसके लिये आहारके सुधार से दोष शमन की अपेक्षा हुआ करती है।

१३—औरामुल्अन्फ

नाम—(अ०) औरामुल्अन्फ़; (उ० हि०) नाक का वरम (सूजन); (सं०) नासा दाह, दीप्त, नासाशोथ; (अं०) अॅक्यूट राइनाइटिस (Acute Rhinitis) ।

(अं०)–बुसुरुल्अन्फ; (उ० हि०) नाक की फुंसियाँ; (सं०)नासागत पिड़का (अं०) पस्च्यूल्जनेजाई (Pustules Nasi) ।

हेतु—कभी सांद्र एवं उष्ण रक्त से नाक में उष्ण शोफ और फुंसियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। कभी सौदावी एवं कफ दोष से इसमें कठिन शोथ एवं कठिन फुंसियाँ उत्पन्न हो कर मस्सों के रूप में (सार्कोमा) दिखलाई दिया करती हैं और श्वास-प्रश्वास में न्यूनाधिक बाधक होती हैं।

लक्षण—उष्ण शोथ में उसके विशिष्ट लक्षण , यथा–उद्वेष्टन, टीस एवं लालिमा व्यक्त होती है। कठिन शोथ में ये लक्षण नहीं होते। किंतु प्रत्येक दशामें स्वर में अवश्य अन्तर हो जाया करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यथावश्यक शोधन के बाद(१) कद्दू का तेल या (२) नीलूफरका तेल सिरका या अर्क गुलाब में मिला कर टपकाने से लाभ होता है। नाक के भीतरी शोथ के लिये (३) तरबूजे के बीज के मग्ज को अर्क गुलाब में घिस कर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है। रोगी के बलबान होने की दशा में (४) सरारु सिरा का वेध करना भी लाभकारी है। (५) किंचित् लवरणमिश्रित पुराने सिरका में कपड़ा तरकर के तीन बार नाक में रखने से बहुत लाभ होता है। रोगजनक दोष के शीतल होने पर (६) गुलरोगन या अंगूरी सिरका में पीत एलुआ घिस कर नाक के भीतर लगाने से अच्छा लाभ होता है। नाक के घाव पर दिन में दो-तीन बार (७) मक्खन लगाने से उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उपयुक्त संशोधन के पश्चात् (१)अतरीफल उस्तूखुद्दूस १ तोला, १२ अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से उपकार होता है और विशेष शुद्धि की भाँति(२) हब्ब बनफ्शा या(३) हब्ब इयारज यथा प्रमाण यथा विधि उपयोग करना लाभकारी है। संतापशमन के लिये (४) सेवका मुरब्बा २ तोला या (५) गाजर का मुरब्बा २ तोला १२ तोला अर्क गावजबान के साथ २ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर उपयोग करने से अद्भुत लाभ होता है।

सिद्धयोग—जबकि नाक का बाहरी घाव विलीन न हो, तब उसको पकाने के लिये निम्न औषधि का प्रयोग करें—कनौचा के बीज, रेहाँ के बीज, अलसी, मेथी, विलायती अंजीर, सब बराबर-बराबर ले कर हरे मकोय के रस में पीस कर किंचित् मधु मिला कर पकायें और सूजन पर लेप करें। जब व्रण शोथ पक कर

फूट जाय, तब शहद के पानी से धोयें और व्रणरोपण के लिए मुरदासंग आदि मल-हर उपयोग करें। उष्ण शोथ में आहारस्वरूप धोई हुई मूँग की दाल, पालक और कुलफा का साग, गेहूँ की रोटी, यवमंड और शीतल शोथ में इसके विपरीत उष्ण पदार्थ सेवन करायें।

मुखरोगाध्याय (अमराजुल्फ़म) ५

नाम—(अ०) अम्राजुल्फ़म; (उ० हिं०) मुँहके रोग (बीमारियाँ); (सं०) मुखरोग; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी माउथ (Diseases of the mouth)।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यक में मुखरोगों में निम्न रोगों का अंतर्भाव होता हैं—(१) ओष्ठ रोग, (२) मुख रोग, (३) जिह्वा रोग, (४) मूर्धा रोग, (५) दन्त रोग और (६) दन्तवेष्टगत रोग। आगे इनमें से प्रत्येक का अलग-अलग अनुच्छेदों में क्रमशः वर्णन किया गया है।

१—ओष्ठरोगानुच्छेद (अम्राजुश्शफत)

नाम—(अ०) अम्राजुश्शफत; (उ० हि०) होंठों की बीमारियाँ (रोग); (सं०) ओष्ठरोग; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी लिप्स (Diseases of the Lips)।

१,२,३—वरमुश्शफत, बुसूरुश्शफत, कुरूहुश्शफत

नाम—(अ०) वरमुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठ की सूजन; (सं०) ओष्ठ-प्रकोप, ओष्ठशोथ; (अं०) इन्फ्लामेशन ऑफ दी लिप्स (Inflammation of the Lips)।

—(अं०) बुसूरुश्शफ़त; (उ०, हिं०) होंठ की फुन्सियाँ; (सं०) कफज, पित्तज और सन्निपातज ओष्ठप्रकोप, (अं०) हर्पीज लेबिएलिस (Herpes Labialis)।

—(अ०) कुरूहुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठका जख्म (घाव), (सं०) ओष्ठ-व्रण; (अं०) अल्सर ऑफ दी लिप्स (Ulcer of the Lips)।

वर्णन--दोनों होंठों पर और कभी एक ही होंठों पर विशेष कर नीचेके होंठों पर फुंसियाँ निकल आती हैं। कभी इन फुंसियों में पीप पड़ कर व्रण बन जाते हैं जिन्हें 'कुरूहुश्शफ़त' कहते हैं। कभी दोष की प्रगल्भता के कारण होंठों में शोथ हो जाता है और उसमें जलन एवं खुजली होती है। इसे 'वरमुश्शफ़त' कहते हैं।

हेतु-- रक्त वा पित्त की तीक्ष्णता, पाचन विकार, यकृत् की उष्ण विप्रकृति (यकृत् में गर्मी बढ़ जाना), होंठों का क्षोभ, सर्दी लगना या नजला गिरना अथवा मक्खी या च्यूँटी आदि का काटना इसके हेतु हैं। प्रत्येक दोष अपने विशिष्ट लक्षणों से पहिचाना जा सकता है।

लक्षण--विकारी होंठ पर दाने या फुंसियाँ निकल आती हैं, जो पीले रंग की एवं छोटी-छोटी होती हैं। इनके परस्पर मिलने से गुच्छा-सा बन जाता है, इनसे पीले रंग का द्रव बहता है जो कभी-कभी निर्यासवत् जम जाता है और खुरण्ड-सा बन जाता है। कभी-कभी होंठ पर केवल सूजन होती है। उक्त अवस्था में होंठ में दर्द एवं टीसें होती हैं और एक प्रकार की जलन मालूम होती है। कुरुहश्शफ़त में पीप होती है और वरमुश्शफ़त में होंठ सूजे हुए होते हैं।

चिकित्सा--यदि किसी दोष के प्रकोप से यह रोग हो तो अनुकूल दोष के तत्त्वका सिरोवेध एवं विरेचन द्वारा शोधन करें। यदि अन्य कारण से हो तो मूल हेतु को ज्ञात करके दूर करने का यत्न करें। पाचन विकार हो तो उसका सुधार करें। यकृत् में ऊष्मा बढ़ गई हो तो उसका समुचित प्रतीकार करें। कब्ज नहीं होने देवें। सुतरां कब्ज निवारण के लिये अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या कुर्श मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि में सोते समय पाव भर दूध के साथ खिला दिया करें। अफतीमून विलायती १ तोला रात्रि में गरम पानी में पोटली बांध कर भिगों देवें और प्रातः काल पका-छान कर २ तोला मिश्री मिला कर पिला दिया करें। सूजनके लिये यह लेप गुण कारक है--रसवत, गुलबाबूना और जौका आटा प्रत्येक ६ माशा, सब को आवश्यकतानुसार अर्क गुलाब और मकोय की पत्ती के रस में पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करें। फुंसियों पर मरहम काफूर लगायें या सफेदा काशगरी ३ माशा, कपूर १ माशा, गिले अरमनी ३ माशा महीन पीसकर १ तोला मक्खन में अथवा यथावश्यक इसबगोल के लबाब में मिला कर फुंसियों पर लगायें।

पथ्य--मूंग की खिचड़ी, दूध, डबल रोटी, कद्दू, तुरई, पालक, मूँग की दाल आदि।

अपथ्य--तेल, अम्ल, गुड़, मसालेदार तीक्ष्ण, नमकीन और बादी एवं गरिष्ठ पदार्थों से परहेज करें।

४,५,६,७,—अश्शोकाकुश्शफत व जफाफुश्शफत

नाम—(अ०) तशक्ककुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठ फटना; (सं०) वातज ओष्ठ प्रकोप; (अ०) क्रैक्ड लिप्स (Cracked lips)।

(अ०) तक़श्शरुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठ छिलना; (सं०) वातज वा मारुतज ओष्ठ प्रकोप; (अ०) चैप्ड लिप्स (Chapped lips)।

(अ०) जफ़ाफ़ुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठ की खुश्की (रूक्षता), (सं०) वातज ओष्ठ प्रकोप; ।

(अ०) बयाज़ुश्शफ़त; (उ० हिं०) होंठ सफेद हो जाना; (सं०) ओष्ठ शौक्ल्य, । (अ०) ल्युकोलेबियम (Leuco-labium)।

वर्णन और हेतु—प्रायः सर्दी के कारण होंठ फट जाते हैं और दरार पड़कर कभी उनसे रक्त भी बहने लगता है। कभी होंठों पर रूक्षता हो जाती है। कभी रूक्षता के प्रकोप एवं विदग्ध दोष के कारण भी होंठ फट जाते हैं। कभी इसके साथ होंठके छिलके भी उतरते हैं, जिससे 'तक़श्शरुश्शफ़ता' कहते हैं। कभी अग्निमान्द्य के कारण अपक्व श्लेष्मल द्रव रक्त में मिलकर होंठ को सफेद कर देते हैं, जिसे 'बयाजुश्शफ़ता' कहते हैं।

लक्षण—चारोंके लक्षण स्पष्ट है।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगाकर दूर करें। पाचन ठीक न हो तो उसको ठीक करें। यकृत् में ऊष्मा बढ़ गई हो तो उसका समीचीन प्रतीकार करें। फटे हुए या छिलका उतरे हुए होंठों पर इसबगोल या बिहीदाना अथवा रेशा खतमी इनके लबाब में कपड़ा तरकर के बारंबार रखें अथवा समूचे इसबगोल को पोटली में बाँध कर पानी में भिगोंकर बारंबार होंठ के ऊपर फरें। दिन में दो बार गाय का मक्खन लगायें या मरहम इस्फेदाज लगायें। सौदा का शोधन करें। रात्रि में अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलाएँ। बयाज (ओष्ठशौक्ल्य) में कफ का शोधन करें और प्रातः काल फौलाद भस्म २ चावल, ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर और रात्रि में अतरीफल उस्तूखुद्दूस ९ माशा खिलायें।

पथ्यापथ्य—तकश्शुर और तशक्कुक में ओष्ठगत पिडका-(बुसूर लब) की भाँति पथ्यापथ्य का पालन करें। बयाज़ लब (ओष्ठशौक्ल्य) में सब्जियों एवं जानवरों के कले पाचे से परहेज करें। और ऐसे आहार देवें जिनमें स्नेह एवं पिच्छिलता कम हो। यथा—एक साला भेड के बच्चे का मांस। मसालेदार आहार भी लाभकारी हैं।

८--बवासीरुश्शफ़त

नाम--(अ०) बवासीरुश्शफ़त, बवासीर लब; (उ० हिं०) होंठ का बवासीर; (अं०) एपिथेलिओमा ऑफ दी लिप (Epithelioma of the lip) (अ०) सर्तानुश्शफ़त; (उ०) होंठ का सर्तान; (अं०) कैन्सर ऑफ दी लिप (Cancer of the lip)।

वक्तव्य—यूनानी वैद्यों ने 'होंठके बवासीर' के विषय में यह विवरण किया है कि इसका संघटनकारी तत्त्व (माद्दा) सर्तान जैसा होता है। सुश्रुतोक्त रक्तज और मांसज ओष्ठ-प्रकोप तथा वाग्भट (अष्टांग संग्रह) का अर्बुद होंठका सर्तान वा बवासीर ही ज्ञात होता है।

वर्णन और लक्षण--साधारण तया निचले होंठ में अंगूर या तूत के बराबर तथा इनके सदृश नीले या काले रंग का उभार उत्पन्न हो जाता है। कभी होंठ फटकर मोटा हो जाता है और उसमें एक चट्ठा या घाव हो जाता है। कभी ऊपर का होंठ भी इस रोग से आक्रांत हो जाता है। कभी होंठ में गांठें-सी पड़ जाती हैं। ग्रीवा और निम्न हनुकी ग्रन्थियाँ फूल जाती है। कभी इन में घाव हो कर मृत्यु हो जाती हैं। प्रारम्भ में इसमें दर्द नहीं होता। पर अन्त में तीव्र दर्द एवं रक्तस्राव भी होता है।

हेतु--विदग्ध रक्त वा पैतिक दोष का होठों की ओर गिरना इसका हेतु होता है। जो पाइप या हुक्का की नै या खाने के तमाकू के निरंतर होनेवाले क्षोभ से होंठों की ओर गिरता और वहाँ इस रोग को उत्पन्न करता है।

चिकित्सा--सरारू और चहाररगकी फस्द खोलें। सौदा का शोधन करें। माउज्जुब्न का उपयोग करें और अतरीफल अफ्तीमून ६ माशा, १२ तोला अर्क सहतरा के साथ देवें। होंठ पर मरहम जदवार लगायें।

वक्तव्य—इस रोग में साधारणतः ओषधियों से लाभ नहीं होता। अतएव विकारी अंश का छेदन कर होंठ को सी देना चाहिये।

पथ्यापथ्य--बुसूरुश्शफत की भाँति।

९--इख्तिलाजुश्शफत

नाम--(अ०) इख़्तिलाजुश्शफत; (उ० हिं०) होंठ फड़कना; (सं०) ओष्ठस्फुरण; (अ०) लेबियोकोरिया (Labiochoria)।

हेतु और लक्षण—यह रोग प्रायः आमाशयिक द्वार के अनुबन्ध से प्रगट हुआ करता है और इसके साथ सिचली और हिचकी भी पाई जाती है। कभी-कभी

तीव्र व्याधियों में बोह्‌रान के अवसर पर यह प्रकट होता है और कभी मस्तिष्क के अनुबन्ध से। प्रथमोक्त में इस प्रकार का ओष्ठस्फुरण वमन का पूर्वरूप समझा जाता है और अंतिमोक्त दशा में अर्दित या अपस्मार की भूमिका (पूर्व-रूप)। होंठ के बारीक स्रोतसों में रक्तसंचय होने अथवा सांद्र वायु से भी प्रकट होता है। अस्तु, प्रथम भेद में मिचली और हिचकी तथा द्वितीय भेद में बोह्‌रान, तृतीय भेद में मानसिक विकार और चतुर्थ भेद में रक्त की प्रगल्भता तथा वायु के लक्षण पाये जाते हैं।

असंसृष्टद्रव्योपचार—यदि मिचली सम्मिलित हो तो निम्नलिखित असंसृष्ट वामक ओषधियों द्वारा वमन कराने से ओष्ठस्फुरण निवृत्त हो जाता है। अस्तु, (१) हर प्रकार का लवण ६ माशा की मात्रा में गरम पानी में घोल कर पेट भर पिलाना या (२) गन्ना चूसने के बाद गरम पानी पीना या (३) चार तोला सिकंजवीन गरम पानी में मिला कर पिलाने से वमन होता है। यदि मस्तिष्क विकार के कारण हो तो अर्दित और अपस्मार में लिखित ओषधियाँ उपयोग कराएँ। रक्त के प्रकोप की दशा में कीफाल की फस्द खोलें। यदि पुनः आवश्यकता हो तो पाँच-छः दिन के बाद चहार रग या जिह्वाधोगासिरा से भी रक्त मोक्षण करें। तदुपरान्त पित्तपापड़ा आदि का काढ़ा पिलायें। इसके अतिरिक्त अवरोधोद्‌घाटक ओषधियों विशेषतः उपयुक्त कैरूतियों और बलबर्द्धक तेलों के उपयोग से इस दशामें बहुत लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—उपयुक्त संशोधन के पश्चात् रक्तज ओष्ठस्फुरण में (१) अतरीफल शाहतरा ६ माशा, २ तोला शर्बत उन्नाब मिला कर १२ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फा खून के साथ सेवन करने से लाभ होता है। वायुजन्य ओष्ठस्फुरण तथा इख्तिलाज मेदी इम्तिलाई में उसको वमन और विरेचन से शुद्ध करने के पश्चात् बलप्रदान करने के लिये (२) जुवारिस अनारैन ७ माशा या (३) जुवारिश तमर्रहिंदी ६ माशा या (४) जुवारिश मस्तगी बनुस्खा कलाँ ६ माशा या (५) जुवारिश जालीनूस ५ माशा या (६) जुवारिश कमूनी १ तोला में से कोई एक अकेले या ६ तोला अर्क गावजवान या बादियान और अर्क मकोय के साथ उपयोग करने से लाभ होता है। (७) मस्तिष्क के अनुबन्ध से होनेवाले ओष्ठस्फुरण में अर्दित एवं अपस्मार की चिकित्सा को ध्यान में रखते हुये उपाय करें।

१०——तकल्लुसुश्शफतैन

नाम——(अ०) तक़ल्लुसुश्शफ़तैन ; (उ०, हिं०) होंठ सिकुड़ना ; (सं०) ओष्ठाक्षेप ; (अं०) लेबियोस्पैज़्म (Labiospasm) ।

इस रोग का कारण या तो कोई सहज दोष हुआ करता है अथवा दोष संचय या संशोधन जन्य आक्षेप। कभी-कभी यह अवस्था आसन्नमरण काल में उपस्थित होती हैं । रोगी से प्रश्न करना चाहिये कि उसे कितने दिन से यह रोग हुआ है । उसके उत्तर से यह ज्ञात हो जायगा कि सहज है या जन्मोत्तर । यदि आक्षेपजन्य सिद्ध हो तो यह देखना आवश्यक है कि दोषज अर्थात् दोषसंचय जनित है वा रूक्ष (संशोधन जनित) । इस प्रकार का भेद करने के लिये पूर्वगत हेतु का अध्ययन करना चाहिये। सहजरोग में यदि रोगी वर्धनकाल एवं शैशवावस्था में हो तो खींचकर सीधा करने, धीरे-धीरे मलने और बांधने से आराम होना संभव है । यदि दोषसंचयजनित आक्षेप के कारण हो तो कफ का शोधन और गरम तेलों की मालिश से लाभ होगा । किन्तु संशोधन जनित आक्षेप की चिकित्सा असंभवित है । सारांश इस रोग में आक्षेप के सभी उपाय एवं उपदेश को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये ।

११——तशक्ककुश्शद्कैन

नाम——(अ०) तशक़्क़ुकुश्शदकैन ; (उ०, हिं०) बाछ फट जाना ; (अं०) थ्रश (Thrush) ।

हेतु और लक्षण——यह एक संक्रामक रोग है जो एक से दूसरे को लग जाता है । इसमें बाछों का रंग श्वेत या सब्जीमायल (हरिताभ) हो जाता है और मुँह खोलने पर अधिक कष्ट अनुभव होता है । यह रोग साधारणतया बालकों को मस्तिष्कीय क्षारीय प्रसेक के कारण या दूध की खराबी से हो जाता है और अधिकतया इस रोग के रोगी के गिलास आदि में जल आदि पीना इस रोग का हेतु हुआ करता है ।

वक्तव्य— सामान्यतः यह रोग मुखकोण में होंठ के भीतर की ओर तथा जिह्वा के नीचे हुआ करता है, पर कभी-कभी यह कण्ठ, अन्नमार्ग तथा आमाशय तक भी फैल जाता है और उस समय निगलने, बोलने और साँस लेने में कष्ट हुआ करता है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार——(१) माजू को सिरका में पकाकर उससे गण्डूष (कुल्ली) करें । बालकों में (२) जोंक लगवाना और (३) ग्रीवा के पीछे

पछने लगाना सिरावेध (फस्द) का स्थानापन्न एवं लाभकारी है। (४) हजरुल् यहूद गुलरोगन में घिसकर लेप करने से भी लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--यथावश्यक उपयुक्त संशोधन के पश्चात् (१) अतरीफल उस्तूखुदुस १ तोला या (२) अतरीफल शाहतरा ६ माशा १२ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ उपयोग करने से मस्तिष्कीय प्रसेक एवं विदग्धदोष क्रमशः उत्सर्गित होते, आमाशय की शुद्धि होती, दोषों की तीक्ष्णता एवं उष्णता शमन होती है। इसी प्रकार आमाशय के अनुबंध में (३) जुवारिश जालीनूस ७ माशा अकेले या ६ तोला अर्क शाहतरा और ६ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करते रहने से बहुत उपकार होता है।

सिद्ध योग प्रलेप--(१) भारतीय सफेद कत्था और मुरदासंग प्रत्येक ३ माशा बारीक पीसकर मक्खन में मिलाकर बाछों पर लगायें। यह बाछों के फटने में कृतप्रयोग एवं लाभकारी है। (२) पीला रसवत और मुरदा संग सम भाग लेकर अर्क गुलाब में घिसकर बाछों पर लेप करें।

पथ्यापथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार देवें। गर्म, खुश्क एवं गरिष्ठ और मधुर पदार्थों से परहेज करें।

१२--औरामो अल्वज्हे व अल्हय्यत

नाम--(अ०) औरामो अल्वज्हे व अल्हय्यत; (उ०, हिं०) चेहरा और जबड़ों का वरम (सूजन); (सं०) मुख तथा हनुशोथ; (अं०) स्वेलिंग आफ दी फेस एण्ड जॉज (Swelling of the face and jaws)।

यदि चेहरे की सूजन के साथ यकृद्दौर्बल्य के लक्षण प्रगट हों तो उसी का उपद्रव समझें। यदि प्रसेक (नजला) के लक्षण पाये जाएँ तो नजला को ही इसका हेतु समझें। पर यदि सूजन के साथ खुजली और जलन भी हो तो इसे मुखगत विसर्प (माशिरा) समझें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आरजी शोफ के लिये (१) ६ माशा मकोय १० तोला अर्क कासनी में काढ़ा करके ४ तोला शर्बत बजूरी और ७ माशा खाकसी मिलाकर पिलायें। प्रसेकजनित शोथ में (२) प्रसेक (नजला) की चिकित्सा पर्याप्त होती है। मुखगतविसर्प में (३) सरारू की फस्द करायें। कपोलगत शोथ अधिकतया रक्तज और क्वचित् प्रसेकज होता है। रक्तज में सरारू की फस्द के पश्चात् (४) ६ माशा बिहीदाने का लुआब, ४ तोला शर्बत

उन्नाब के साथ पिलायें। (५) मकोय या (६) गुल खतमी या (७) अमलतास के गूदे का लेप करें। वायु शीतल हो तो पीने की औषधि काढ़ा के रूप में देवें और प्रलेप की भाँति कतिपय सूजन उतारने वाली औषधियों, जैसे (८) बाबूना और (९) इक्लीलुल्मलिक आदि का उपयोग करें।

संसृष्ट द्रव्योपचार--मुखगत विसर्प एवं प्रसेक रोग का हेतु होने की दशा में यथाप्रकृति शोधन करने के पश्चात् मूल व्याधि की चिकित्सा ध्यान में रखते हुये (१) अतरीफल कश्नीजी १ तोला या (२) अतरीफल शाहतरा ९ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ उपयोग करने के लाभ होता है। यकृद्दौर्बल्य के क्रम में (३) अनोशदारू सादा या लूलुवी ७ माशा ६ तोला अर्क बादियान और ४ तोला अर्क अंबर के साथ उपयोग करने से उपकार होता है। जलोदर की दशा में मूल व्याधि के उपचार को ध्यान में रखते हुये (४) ६-६ तोला अर्क सौंफ और बिरंजासिफ में ७ माशा सौंफ और ३ माशा कुसूस के बीजों के निकाले हुये शीरा के साथ माजून दबीदुलवर्द ७ माशा और शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर सेवन करने से बहुत लाभ होता है। इसी प्रकार (५) १२ तोला अर्क बिरंजासिफ में ३ माशा कुसूस के बीज और ७ माशा सौंफ के निकाले हुये शीरा के साथ माजून कलकलानज ७ माशा, शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर सेवन करने से इस रोग में बड़ा उपकार होता है।

सिद्ध योग--(१) प्रसेकज शोथोपयोगी प्रलेप--नीम की पत्ती, जदवार गेरू, रसवत और लालचंदन सबको बराबर-बराबर लेकर हरे मकोय क रस में पीसकर यथाविधि कुनकुना लेप करें। प्रसेकज शोथहरी गण्डूष--झाऊ अकरकरा, मकोय और पोस्ते की डोडी प्रत्येक ४ माशा यथाविधि क्वाथ कर के गण्डूष करायें। उष्ण शोथोपयोगी रक्तज शोथ (मुखगतविसर्प) हारी प्रलेप--सफेद और लाल चंदन, पीत रसवत, गिल अरमनी, छिला हुआ मसूर, सुपारी प्रत्येक ७ माशा सबको हरे मकोय, हरे कुलफा और हरे धनिया के रसमें पीसकर गुलरोगन और सिरका प्रत्येक १-१ तोला मिलाकर सूजन के ऊपर लेप करें।

पथ्यापथ्य--लघु, शीघ्रपाकी एवं शीतल आहार, कद्दू, पालक और यवमण्ड, शर्बत अनार मिलाकर उपयोग करें।

मुख-जिह्वा-मूर्धारोगानुच्छेद २

नाम--(अ०) अम्रज़ुल्फ़म वल्लिसान वल्हनक, (फा०) अम्राज़ दहन व जबान व काम, (हिं०) मुख, जिह्वा और तालू के रोग, (सं०) मुखजिह्वामूर्धारोग, (अं०) डिजीजेज ऑफ दी माउथ, टंग एण्ड पैलेट (Diseases of the mouth, Tongue and palate)।

मुखरोग

१—कुलाउल्फम व आकिलतुल्फम

नाम—(अ०) कुलाअ, क़ुलाउल्फ़म्; वरमुलफ़म; (फा०) जोशश दहन; (उ०, हिं०) मुँह आना, मुँह पकना, मुँह फूलना; (सं०) मुखपाक; (अं०) थ्रश (Thrush), स्टोमॉटायटीज (Stomatitis)।

(अ०) बुसूरुल्फ़म, बुसूर दहन; (उ०, हिं०) मुँहके दाने, छाले या फुंसियाँ, निनावा; (सं०) मुखपाक; (अं०) ऑथी (Apthi), अफ्थस स्टोमॉटायटीज (Aphthous Stomatitis)।

(अ०) क़ुरूहुल्फ़म; (उ०, हिं०) मुँह के जख्म (घाव); (सं०) मुखव्रण; (अं०) अल्सरेटिव्ह स्टोमॉटायटीज (Ulcerative Stomatitis)।

(अ०) आकिलतुल्फ़म, दब्बाबा; (फा०) खुरद दहन; (उ०, हिं०) मुँह की सड़न, मुँह सड़ना-गलना; (सं०) महाशौषिर; (अं०) कैन्क्रम ऑरिस (Cancrum Oris), गैन्ग्रीनस स्टोमाटायटीज (Gangrenous Stomatitis)।

वक्तव्य—उपर्युक्त सभी रोग एक ही जाति के (प्रकार के) हैं। अतएव इन सबका एक साथ एक ही स्थान में वर्णन किया गया है।

वर्णन—इन समस्त रोगों में रोगीके मुख के भीतर होंठ, जिह्वा, कपोल तालू और कण्ठ आदिमें विशेष प्रकार की पिड़कायें वा व्रण हो जाया करते हैं। यूनानी वैद्यक के मत से इन सभी रोगों में उष्ण एवं दूषित आमाशयस्थ बाष्प या ऐसी व्याधियों के प्रकोपसे जिनमें दोषके भीतर दूषित एवं दुर्गंधित पैत्तिक वातिक दोष (सफरावी मवाद्द) का संसर्ग हो जाता है, मुख एवं कण्ठ आदि की श्लैष्मिक कला में शोथ होकर पिडका एवं व्रण उत्पन्न हो जाते हैं।

कुलाअ में मुख और जिह्वा की झिल्ली के बाह्य स्तर में व्रण होते हैं जो सफेद-सफेद धब्बों की तरह प्रारंभ होकर फैलते जाते हैं। वरम फम में मुखके भीतर की झिल्ली शोययुक्त एवं लाल हो जाती हैं।

कुरूहुल्फ़म में जिह्वा के ऊपर, होंठों के भीतर की ओर और बहुतांश में मसूढ़ों के ऊपर गंभीर नीलवर्ण (अर्गवानी रंग) के व्रण हो जाते हैं, जिन पर मुलायम मटियाले रंग का मल लगा रहता है। इस मल को साफ करने पर रक्त निकलने लगता है।

बुसूरुल्फ़म में खाकस्तरी मायल या सफेद रंग की छोटी-छोटी पिड़कायें (फुंसियाँ) मसूढ़ों, जिह्वा, होंठों और कपोलों के भीतर की ओर उत्पन्न हो जाती हैं, जो बिन्दुवत् दिखाई देती हैं।

आकिलतुल्फ़म--जब कुलाअ उन्नति करके (बढ़कर) पुराना हो जाय और मुख में दुर्गन्ध एवं व्रण उत्पन्न हो जाय, तब उसको आकिलतुल्फ़म कहते हैं। यह एक प्रकार का तीव्र एवं सांघातिक व्रण है, जो साधारणतया कपोलों के भीतर की ओर उत्पन्न होकर अति शीघ्र फैल जाता तथा कपोल आदि को मृत कर देता है। प्राचीन-यूनानी हकीम कुलाअ (मुखपाक) के ही एक दुष्ट (खबीस) प्रकार में इसका अंतर्भाव करते हैं। अस्तु, जालीनूस इसको कुरूह खबीसा (दुष्ट व्रण) के नाम से अभिधानित करता है। कोई-कोई हकीम इसको 'दव्वाबा' भी कहते हैं।

भेद--हेतु के विचार से कुलाअ के कतिपय निम्न भेद होते हैं:--कुलाअ हार दम्वी व सफरावी (रक्तज और पित्तज मुखपाक), कुलाअ वलगमी (कफज मुखपाक), कुलाअ सौदावी (सौदाजन्य मुखपाक), कुलाअ आतशकी (फिरङ्गीय मुखपाक--(Syphilitic Stomatitis), कुलाअ सीमावी (पारदीय मुखपाक--Murcurial Stomatitis) कुलाए अतफ़ाल (शैशवीय मुखपाक--Infantile Stomatitis) इत्यादि।

हेतु--यह रोग शिशुओं को विशेषकर उन शिशुओं को अधिक होता है, जिनको निकृष्ट और दूषित या बाजारू दूध दिया जाता है। इसके साधारण भेदों की उत्पत्ति अधिक उष्ण वा तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थ अथवा पैत्तिक दूषित दोष आदि से होती है। तमाकू, सिगरेट आदि का अति सेवन, कब्ज, अजीर्ण, बालकों में दन्तोद्भेद, किसी सड़े-गले दाँत का मुख में क्षोभ उत्पन्न करना, नाक वा कण्ठ की सूजन का मुख की ओर बढ़ जाना और रक्तविकार भी इस रोग के हेतु होते हैं। कभी-कभी पारा, रसकपूर, भिलावां आदि विष द्रव्यों के उपयोग अथवा कतिपय प्रकार के तीव्र विषमय रोगों, जैसे आतशक एवं तीव्र ज्वर आदि से भी यह रोग हो जाया करता है।

लक्षण और निदान--सादे भेद में मुख के भीतर जलन एवं दर्द होता है। खाने-पीने और बोलने में कष्ट प्रतीत होता है। मुख से राल (लाला) बहती और दुर्गन्ध आती है। जिह्वा मल से आलिप्त होती है या उसपर सफेद रंग के कण (दाने) या लाल रंग के चट्टे पड़े हुए होते हैं, जिनको यदि साफ किया जाय तो लाल रंग का घाव प्रगट हो जाता है। कभी-कभी न्यूनाधिक रक्त भी निकल आता है। बुसूरुल्फ़म में तीव्र प्रकार का दर्द होता है। उष्ण मुखपाक (कुलाअ हारमें) मुख के भीतर कफज और सौदावी की अपेक्षया किंचित् अधिक उभरे हुए

धब्बे होते हैं। रक्तज में उनका वर्ण (रंगत) लाली लिये और पित्तज में पिलाई लिये होता है। कफज में घाव एवं दानों (फुंसियों) का रंग सफेद होता है और दर्द कम होता है; किन्तु मुख से राल अधिक बहती है। सौदावी में घाव की रंगत स्याही मायल (कालाई लिये) होती है तथा उनमें जलन एवं रूक्षता (खुश्की) होती है। फिरंगीय मुखपाक में घाव गोल लाली लिये ताम्रवर्ण के होते हैं और सदैव फिरंग की द्वितीय कक्षा में व्यक्त होते हैं और साधारणतया मुखकोण, तालू या जिह्वामूल के ऊपर कण्ठ में होते हैं। पारदीय मुखपाक में मुख का आस्वाद कषाय होता है और पुष्कल लाला स्राव होता है। मसूढ़े लाल एवं सूजे हुए होते हैं। दाँत ढीले एवं वेदनापूर्ण होते हैं तथा चबाने में अत्यन्त कष्ट प्रतीत होता है। तीव्र विषमयता में मसूढ़े गल जाते और दाँत गिर पड़ते हैं (महाशौषिर। आकिल-तुल्फम) में कोई एक कपोल शोथयुक्त होकर चमकीला-सा हो जाता है। उसके भीतर की ओर खाकस्तरी मायल दाग सा प्रगट होकर फैलता जाता है, जो क्रमशः गंभीर रक्तवर्ण होकर स्याही मायल (कालाई लिये) हो जाता है। मुँह से तीव्र एवं अप्रिय प्रकार की दुर्गन्ध आती है। पुष्कल लार बहती है, जिसके साथ तीव्र ज्वर भी हो जाता है, अंततः कपोल गलकर उसमें छिद्र हो जाता है। दाँत गिर जाते हैं। होंठ और हनु (जबड़ा) मृत हो जाते हैं। यदि सम्पूर्ण विकृत (दूषित) भाग का शीघ्र छेदन कर पृथक् न कर दिया जाय, तो थोड़े दिन में रोगी मर जाता है।

प्रगति और परिणाम—महाशौषिर बहुत करके सांघातिक होता है। कभी-कभी प्रसेकीय (नजलावी) एवं पैत्तिक-प्रकार का मुखपाक कण्ठ की ओर प्रसृत होकर अन्नमार्ग तथा आमाशय तक पहुंच जाता है। उक्त अवस्था में रोगी को खाने-पीने में बहुत कष्ट होता है तथा वह अत्यन्त दुर्बल हो जाता है। कभी-कभी उसको विरेक (दस्त) आने लगते हैं तथा रोग सांघातिक रूप ग्रहण कर लेता है। परन्तु; ऐसा प्रायः उस समय होता है जबकि चिकित्सा में असावधानी की जाय।

चिकित्सा—निदान परिवर्जन करें। अत्यन्त तमाकू या सिगरेट पीने तथा गरम मसालेदार आहार आदि के सेवन से यह रोग (मुखपाक) हुआ हो तो इनका परित्याग कर देवें। अजीर्ण हो तो उसका उचित उपचार करें। मलावरोध हो तो कुर्स मुलय्यिन ४ टिकिया रात्रि में सोते समय पाव भर कुनकुना गोदुग्ध के साथ सप्ताह में दो बार सेवन करायें। किसी सड़े-गले दाँत के कारण हो तो दाँत निकलवा देवें। बालकों में दन्तोद्भेद के कारण हो तो उसका उचित उपाय करें।

रक्त प्रकोप वा रक्त की अधिकता के कारण हो तो संरारू, कीफाल या हफ्त

अंदाम वा चहार रग आदि का सिरावेध (फस्द) करें या ठुड्ढी (चिबुक) के नीचे जोंक लगवायें। मुँह की लाली और गरमी एवं जलन आदि की अधिकता देखकर रक्तप्रकोप का ज्ञान करें और निम्न तबरीद (ठंढाई) का योग पिलायें—

बिहीदाना ३ माशा, अर्क गावजबान में भिगोकर लुआब निकालें और उन्नाब ५ दाना, कद्दू के बीज का मग्ज ३ माशा, तरबूज के बीज का मग्ज ३ माशा, काले कुलफा के बीज ३ माशा सबको अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर उक्त लुआब में मिलाकर ४ तोला शर्बत उन्नाब घोलकर प्रातः सायंकाल पिलायें। मेंहदी के पत्ते पानी में उबालकर उसमें १ माशा कपूर मिलाकर कुल्ली करायें। जहरमोहरा और कबाबचीनी १-१ माशा, वंशलोचन, सफेद कत्था, गुलाब का जीरा और छोटी इलायची १-१ माशा बारीक पीसकर मलमल के कपड़े में छान-कर दिन में दो-तीन वार मुँह में थोड़ा-थोड़ा छिड़कें।

यदि क्षारीय कफ की अधिकता से हो तो छिली हुई, मुलेठी हंसराज और गावज़बान प्रत्येक ५ माशा, छोटी इलायची ३ माशा जल में पका-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा मिलाकर पिलायें और मूली के बीज १ तोला, अकरकरा ६ माशा जल में उबालकर गण्डूष (कुल्ली) करायें।

यदि सौदा के प्रकोप से यह रोग अर्थात् कुलाअ सौदावी हो तो प्रथम कुछ दिन ठंढाई के उस योग का प्रयोग करें, जिसका उल्लेख प्रथम रक्तप्रकोप की चिकित्सा में हो चुका है। यदि उससे कुछ भी लाभ मालूम न हो तो निम्न फांट का प्रयोग करें—पित्तपापड़ा, चिरायता, सरफोंका, मुंडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, कालीहड़ ७ माशा, उशबा मगरबी ७ माशा (शीत ऋतु में) या लाल चंदन ७ माशा (उष्ण ऋतु में) और सूखा मकोय ५ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर दस-ग्यारह दिन तक पिलायें। इसके बाद इस योग में ५ माशा अफसंतीन पोटली में बांध-कर बसफाइज फुस्तुकी, काली हड़, पीलीहड़, काबुली हड़ प्रत्येक ५ माशा, सनाय मक्की ७ माशा बढ़ाकर शामको पहले की भाँति भिगो देवें और प्रातःकाल मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकंद ४ तोला, तुरंजबीन ४ तोला ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा योजित करके देवें। या केवल जोशाँदा अफ्तीमून कुछ दिन पिलाकर हब्ब अफ्तीमून से शोधन करें। माजू, गुलनार फारसी, सुमाक, सूखा धनिया प्रत्येक १ तोला पानी में काढ़ा करके उससे कुल्ली करायें। १ माशा भुना हुआ सुहागा बारीक पीसकर ४ माशा शहद में मिलाकर रूई के फुरेरी से मुँह में लगायें।

पित्तज मुखपाक (कुलाअ सफरावी) में मत्बूख हलीला (हड़ के काढ़े) से दोष का पाचन एवं शोधन करें तथा माजू ६ माशा, फिटकीरी ३ माशा, मेंहदी

की पत्ती २ माशा, कपूर ३ माशा, गुलाब का जीरा ७ माशा, सुमाक २ तोला, सूखा धनिया १ तोला, नीम की छाल ४ तोला सबको जल में पका-छानकर इससे गण्डूष करें। तदुपरांत वंशलोचन, सफेद कत्था, गुलाब का फूल, सेवती का फूल, छोटी इलायची के दाने प्रत्येक १ माशा, कपूर ४ रत्ती सबको महीन पीसकर मुँह के भीतर छिड़क दिया करें।

सूजाक या आतशक (फिरंग) में पारे के किसी योग के सेवन से यदि यह रोग (कुलाअ सीमाबी) हुआ हो तो उक्त योग का सेवन तुरन्त त्याग कर प्रथम मुख की चिकित्सा करें। अस्तु, चमेली के पत्र २ तोला, सहिजन की छाल १ तोला, बबूल की छाल १ तोला, नीला थोथा ४ रत्ती, जल में उबालकर दिन में चार बार इससे गण्डूष करें। २ दाने कंजे की गिरी, ५ दाने कालीमिर्च पानी में पीसकर २ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पियें। कुलाअ आतशकी (फिरङ्गीय मुखपाक) में फिरङ्ग की विशिष्ट चिकित्सा करें अर्थात् रक्तशोधन ओषधियों से दोषपाचन और मत्बूख हफ्तरोजा से शोधन करके जौहर मुनक्का का आंतरिक उपयोग करें। कचनार की छाल, उशबा, चोबचीनी, मुरदासंग आदि बारीक पीसकर उसका अवचूर्णन करें। विशेष विवरण आतशक के वर्णन में देखें।

महाशौषिर (आकिलतुल्फम) में व्रण को धोकर स्वच्छ करके तथा मृत भाग का छेदन करके सिरका, आबे सुमाक (सुमाक का रस), खट्टे अंगूर के रस से गण्डूष करायें और फिरङ्गरोग की भाँति उपचार करें।

मुखगत पिड़का एवं मुखशोथ की चिकित्सा मुखपाक के समान करें।

पथ्य—कद्दू, टिंडा, पालक, भिंडी, आदि शाक, बकरी का शूरबा, साबूदाना, खिचड़ी, चावल आदि।

अपथ्य—मछली, आलू, बैंगन, मसूर की दाल, मेथी, लाल मिर्च, अधिक नमक, गरम मसाला, अम्ल, गुड़, तेल आदि से परहेज करें।

२—कस्रत व किल्लत लुआब

नाम—(अ०) कसरते बुज़ाक़, कस्रते लुआब, सैलानुल्लुआब; (उ०, हिं०) बहुत थूक आना, बहुत थूकना; (सं०) मुखस्राव; (अं०) टायलिज्म (Ptyalism), सैलिवेशन (Salivation)।

(अ०) क़िल्लते बुज़ाक़, किल्लते लुआब; (उ०, हिं०) थूक की कमी, मुँह सूखना; (सं०) मुखशोष; (अं०) जीरोस्टोमिया (Xerostomia)।

वर्णन—कभी-कभी थूक (लाला) उत्पन्न करनेवाली ग्रन्थियों में स्वाभाविक उत्तेजना की न्यूनता या अधिकता के कारण थूक न्यून वा अधिक उत्पन्न होने लगता है। इनमें से प्रथमोक्त अवस्था को 'किल्लते बुज़ाक़' कहते हैं

जिसमें मुँह प्रायः सूखा रहता है और अन्तिमोक्त अवस्था को 'कस्रते बुज़ाक़' के नाम से अभिधानित करते हैं, जिसमें मुँह से प्रायः लार (लाला) बहती रहती है। यह रोग शिशुओं को प्रायः द्रव की अधिकता से होता है। पर कभी-कभी बड़ों को भी यह रोग हो जाता है।

हेतु—अन्त्र और आमाशय में दूषित द्रव का संचित हो जाना, या केचुये उत्पन्न हो जाना या पचनविकार, आमाशयस्थ संतापवृद्धि आदि मुखस्राव (कसरते बुज़ाक़) हेतु हैं। मुखपाक और महाशौषिर रोग में भी मुँह से पुष्कल लार बहती हैं। कभी खनिज या उद्भिज् ओषधियों के पुष्कल उपयोग से तथा पारद के योगों के सेवन से भी यह रोग हो जाता है।

मुखशोष (क़िल्लते बुज़ाक़) के हेतुओं में ज्वर विशेषतः आन्त्रिक सन्निपात ज्वर (टायफॉयड ज्वर), कतिपय प्रकार के विषद्रव्य, जैसे बेलाडोना और धतूर आदि के प्रभाव, किसी कारण से शारीरिक द्रवों का अतिनाश जैसा कि अति-सार एवं मधुमेह आदि में हुआ करता है। लालाजनक ग्रन्थियों के कतिपय जातीय रोग, जैसे कर्णमूलिक ग्रन्थिशोथ (कनपेड) अन्तर्भूत हैं।

लक्षण—मुखस्राव (कसरते बुज़ाक़) में मुँह से पुष्कल लार बहती है, रोगी के मुँह से प्रायः लार टपकती रहती है। यदि रोगी उसको बारंबार निगलता रहे, तो उसके साथ आमाशय में वायु पहुँचकर आमाशय और उदर में आध्मान हो जाता है। कभी-कभी इतनी लार बहती है कि रोगी के लिये बोलना और खाना-पीना तक कठिन हो जाता है। इसके साथ ही विविध हेतुओं में से वर्तमान हेतु और उसके विशिष्ट लक्षण भी न्यूनाधिक अवश्य पाये जाते हैं।

मुखशोष (क़िल्लते बुज़ाक़) में मुँह शुष्क होता है। आहारांश दाँतों के बीच लगे रह जाते हैं और उनमें दुर्गन्ध आने लगती है। जिह्वा के ऊपर मल बैठा हुआ होता है और मुँह का स्वाद बहुत बुरा हो जाता है। भूख मर जाती है। भोजन चबाना और निगलना कठिन हो जाता है। पाचन भी प्रायः बिगड़ जाता है। कभी-कभी मुँह इतना अधिक शुष्क होता है कि रोगी के लिये बात करना भी कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान हेतु के न्यूनाधिक लक्षण भी विद्यमान होते हैं।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उचित उपाय से उसके निवारण का यत्न करें। अस्तु, यदि आक्लेद वा द्रवातिरेक से मुखस्राव (कस्रते बुज़ाक़) हो तो श्लेष्मा का पाचन करके शोधन करें और संग्राही गण्डूष करायें। मुख और जिह्वा के विशेष रोग में उनकी विशिष्ट चिकित्सा करें। वातिक क्षोभ एवं प्रत्यावर्तन जनित उत्तेजन की दशा में संशमन ओषधियों का उपयोग गुण-कारी होता है।

मुखशोष (किल्लते बुज़ाक़) में उत्तेजक द्रव्यों का उपयोग करें। जब-जब भोजन करें दाँत और मुँह को स्वच्छ कर लिया करें।

चिकित्सा क्रम—यदि वातिक विकार (वातनाड़ी की विकृति) से मुखस्राव का रोग हो तो फिटकिरी २ माशा पाव भर पानी में उबालकर उससे गण्डूष करें और प्रातः काल माजून फलासफा ७ माशा १० तोले माउल्अस्ल (१० तोले अर्क सौंफ में २ तोले शहद मिलाकर पकायें और छान लेवें) के साथ सेवन करें। यदि क्षोभकारक विषों के कारण मुँह की श्लेष्मल कला में शोथ होने से लार अधिक आती हो अथवा मुखरोग के कारण मुख में क्षोभ होने से लार अधिक बहती हो तो बबूल की छाल १ तोला, फिटकिरी २ माशा, गुलनार ६ माशा, समूचा मसूर ६ माशा, पोस्ते की डोडी ४ नग, सूखा धनिया ६ माशा सबको तीन पाव जल में क्वाथ करें। जब चौथाई शेष रहे तब उतार कर छान लेवें और उससे गण्डूष करें। इससे मुख की सूजन (सोजिश दहन) दूर होने के पश्चात् मुखस्राव कम हो जायगा।

यदि पारा सेवन करने से मुँह आ गया हो और लार अधिक बह रही हो तो चमेली की पत्ती, बबूल की छाल, कचनार की छाल और हरा माजू प्रत्येक १ तोला लें, समस्त द्रव्यों को कूटकर आध सेर पानी में पकायें। जब चौथाई पानी रह जाय तब उतार कर उससे गण्डूष करें। यदि यह रोग श्लैष्मिक द्रव एवं आमाशय विकार से हो तो (१) गरम पानी में नमक और सिकंजबीन मिलाकर वमन करायें। तदुपरांत (२) प्रातः-सायंकाल फौलाद भस्म २ चावल जुवारिश वस्बासा ७ माशा में मिलाकर १० तोले अर्क बादियान के साथ खिलायें। (३) रात्रि में सोते समय १ तोला अतरीफल उस्तूखुद्दूस सेवन करने का आदेश करें। यदि इससे थोड़े दिन में लाभ न हो तो फिर यथाविधि कफ का शोधन करें जिसकी विधि चिकित्सासूत्र के प्रकरण में वर्णन की गई है। तदुपरांत पुनः ये औषधियां सेवन करायें। यदि अन्त्रस्थ कृमियों के कारण पुष्कल लार बहने का रोग हो, तो क्रिमिरोग के प्रकरण में लिखे अनुसार उनकी चिकित्सा करें। यदि अधिक लार बहने का रोग अन्य रोगों का परिणाम हो तो उनकी चिकित्सा करें।

मुखशोष (किल्लते लुआब) यदि द्रवों की अल्पता के कारण हो तो संतरा का रस ३ तोला, सेवका रस ३ तोला, नाशपाती का रस ३ तोला और माल्टा का रस ३ तोला मिलाकर पिला देवें। यदि बेलाडोना या धतूरा सेवन के कारण हो तो पुराना सिरका ४ तोले में सातर और अफसंतीन प्रत्येक ६ माशा पकाकर पिलायें। यदि लालावर्धक ग्रन्थियों के कारण हो तो सोंठ ५ रत्ती और राई पीसकर खिलायें।

पथ्यापथ्य—मुखस्राव में भृष्ट मांस, कबाब कोफ्ता, चाय, अण्डे, गेहूँ की

चपाती, अरहर और मसूर की दाल देवें। दूध, दही, शर्बत, फलों के रस और प्रवाही पदार्थों से परहेज करायें।

मुखशोष में इसके विपरीत करें अर्थात् दूध, दही, लेमन, लाइमजूस, यवमंड, कद्दू, तुरई, संतरा, मालटा आदि स्निग्ध तर पदार्थ अधिक देवें और भृष्ट मांस, कबाब, चाय, अंडे, मसूर की दाल से परहेज करायें।

३– बख़रुल्फम

नाम--(अ०) बख़रुल्फम, उफूनत फम, नतानतुल्फम ; (उ०, हिं०) मुंह से बदबू (दुर्गन्ध) आना, गंदा दहनी ; (सं०) मुखदौर्गन्ध्य ; (अं०) ओरल सेप्सिस (Oral Sepsis), फीटर ऑरिस (Foeter oris)।

वर्णन--इस रोग में मुँह से दुर्गन्ध आती है।

हेतु--दन्तनाड़ी और दन्तवेष्ट, उदरविकार, प्रसेक (नजला) दोष, गर्भाशय में दुष्ट दोष का संचय, लहसुन, प्याज आदि दुर्गन्धित वस्तुओं का उपयोग और उरःक्षत रोग इसके हेतु हैं।

लक्षण एवं निदान--मुँह से इतनी दुर्गन्ध आती है कि रोगी के समीप बैठना कठिन हो जाता है। यदि मसूढ़ा दबाने पर उससे पीप निकले तो इसका हेतु दन्तवेष्ट है। यदि अजीर्ण हो तो इसका हेतु उदरविकार है। इसी प्रकार दुर्गन्धित पदार्थों का उपयोग और उरःक्षत की विद्यमानता मुखदौर्गन्ध्य के हेतु को प्रगट कर देता है।

चिकित्सा--यदि दन्तवेष्ट (कुरूह लिस्सा) इसका हेतु हो, तो उसकी चिकित्सा करें। यदि पाचनविकार हो तो भोजनोत्तर फौलाद भस्म २ चावल ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर खिलायें और मस्तगी, इलायची तथा लौंग मुख में रखकर चबायें। रात्रि में अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलायें। यदि अन्यान्य हेतु हों तो उनकी चिकित्सा करें। प्रत्येक दशा में दाँतों की स्वच्छता दाँतून आदि से अवश्य करते रहें।

पथ्य--तुरई, कद्दू, टिंडा, शलगम, पालक, मेथी, मूँग की दाल, गेहूँ की दलिया, चपाती आदि। कभी-कभी सब्जी मांस खायें।

अपथ्य--अधिक मांस, मछली, अंडे, दही, लस्सी और गरिष्ठ, गरम और बादी (आध्मानकारक) वस्तुओं से परहेज करें।

जिह्वा रोग

१--बुत्लानुज्ज़ौक़ तथा नुक़्सानुज्ज़ौक़

नाम--(अ०) बुत्लानुज्ज़ौक़, नुक़सानुज्ज़ौक़ ; (हिं०) स्वाद का ज्ञान नहीं होना ; (सं०) स्वादाज्ञान, अस्वादता ; (अं०) एगूजिया (Ageusia), एगूस्टिया (Ageustia)।

वक्तव्य—इस (बुत्लानुज़्ज़ौक़) रोग में जिह्वा की स्वादग्रहण शक्ति नष्ट हो जाती है, जिससे उसे किसी वस्तु के स्वाद का ज्ञान नहीं होता। कभी-कभी स्वादेन्द्रिय की स्पर्शशक्ति भी नष्ट हो जाती है, जिससे वह शीत और उष्ण का अन्तर समझने में असमर्थ होता है। नुक़्सानुज़्ज़ौक़ में वस्तु के स्वाद का ज्ञान तो होता है, परन्तु जितना होना चाहिए, उससे कम होता है।

हेतु—जिह्वागत नाड़ियों में द्रवों का संचय इस रोग का हेतु है। अफीम, कोकीन, गुड़मार बूटी आदि स्वापजनन द्रव्यों का पुष्कल उपयोग, प्रसेक, उदर-विकार, किसी दोष की प्रगल्भता आदि।

लक्षण—बुत्लानुज्ज़ौक़ में यदि रोग साधारण हो तो वस्तुओं का स्वाद जितना मालूम होना चाहिये उससे कम मालूम होता है। नुक़्सानुज्ज़ौक में यदि रोग तीव्र हो तो किसी प्रकार की वस्तु के स्वाद का ज्ञान नहीं होता। प्रसेक से यह रोग हुआ हो तो प्रसेक विद्यमान होगा। उदरविकार से हुआ हो तो मलावरोध, अम्लोद्गार, लालास्राव प्रभृति लक्षण पाये जायेंगे। अफीम, कोकीन आदि से यह रोग हुआ हो तो रोगी इससे पूर्व इनका उपयोग किया होगा।

चिकित्सा—प्रायः यह प्रसेक (नजला), श्लैष्मिक द्रव या उदरविकार (आमाशयविकार) के कारण होता है। उक्त अवस्था में गुलबनफशा, सौंफ, सौंफ की जड़, हंसराज, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाने सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला ख़मीरा बनफशा मिलाकर पिलायें। आठ-दस दिन के बाद विरेचक घटक (सनाय मक्की ७ माशा, गुलकंद, तुरंजबीन और अमलतास प्रत्येक ४ तोले) की योजना कर विरेचन देवें। तदुपरांत ठंढाई का योग पिलायें। इसी प्रकार तीन विरेचन और तीन ठंढाइयाँ पिलायें। विरेचन के उपरांत प्रातःकाल फौलाद की भस्म १ चावल ७ माशे ज़ुवारिश जालीनूस में मिलाकर १२ तोले बादियान के साथ और सायंकाल ७ माशे माजून फलासफा १२ तोले अर्क पान के साथ देवें।

जिह्वा के ऊपर निम्नलिखित ओषधियों का उपयोग करें—(१) अकरकरा, मवीज़ज, राई प्रत्येक ६ माशा जल में क्वाथ करके गण्डूष करायें। (२) अजवायन, राई, सेंधानमक प्रत्येक ३ माशा कूटकर किंचित सिरका मिलाकर मुंह में रखवायें। (३) यदि प्रकृति में उष्णता हो तो गुलाब के फूल १ तोला, सुमाक १ तोला जल में पकाकर २ तोला सिकंजबीन मिलाकर कुल्लियाँ करायें।

यदि अफीम या कोकीनजन्य हो, तो उनका परित्याग करायें और २ तोले अमलतास आधा सेर दूध में पकाकर उससे कुल्लियाँ करायें। आहार में दूध-घी अधिक देवें और फौलाद की भस्म १ चावल, ७ माशे माजून

फलासफा में मिलाकर प्रातः सायंकाल १२ तोले अर्क बादियान के साथ खिलायें।

पथ्य--बकरी और पक्षियों का मांस मसाला मिलाकर, मूँग, अरहर की दाल,चपाती, पुदीना, अनारदाना, अदरक की चटनी आदि।

अपथ्य--गोभी, आलू, अरबी, कचालू, मसूर, उड़द की दाल, मछली दूध, दही से परहेज करें।

२--फसादुज्जौक

नाम--(अ०) फ़सादुज्जौक़ ; (हिं०) सर्वथा एक ही स्वाद का वा अन्यथा स्वाद का ज्ञान होना ; (सं०) एक स्वादता वा अन्यथा स्वादता ; (अं०) डिस्गूजिया (Disgeusia)।

वक्तव्य--इस रोग में सदा एक विशेष स्वाद का अनुभव होता रहता है या किसी वस्तु को चखते समय असली स्वाद के विपरीत स्वाद का अनुभव हुआ करता है। जैसे-मीठी वस्तु खायें तो वह उसको तिक्त या खरी मालूम होती है आदि।

हेतु--चतुर्दोषों में से किसी एक दोष की प्रगल्भता इसका प्रधान हेतु होता है। सुतरां प्रगल्भ दोष का स्वाद अनुभूत होता रहता है।

लक्षण--यदि हेतु बलवान् हो तो इस रोग में हर समय प्रगल्भ दोष का स्वाद अनुभव होगा और यदि बलवान् नहीं, अपितु साधारण हो तो अन्यथा वा विपरीत स्वाद का अनुभव होगा। स्वाद से ही प्रगल्भ दोष का ज्ञान कर सकते हैं, यथा-- तिक्त स्वाद से पित्त, मधुर से रक्त या मधुर कफ, लवण से लवणनिष्ट कफ और फीके से कफ का ज्ञान होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--प्रगल्भ दोष के शोधन के पश्चात् रक्तज एवं पित्तज में (१) १ तोला अनारदाना चबाना और जिह्वा के ऊपर मलना और (२) इमली ३ तोला या (३) आलूबोखारा ७ दाना पानी में भिगोकर उससे कुल्ली करना तथा मुख के भीतर रखना परम गुणकारी है। कफज एवं सौदावी में (४) सरसों या (५) राई १-१ तोला पानी में पीसकर मुंह में रखना और बदलते रहना अतीव गुणकारी है।

सिद्धयोग--अकरकरा, ऊद खाम, हलदी प्रत्येक ६ माशा, सबको सिरका में शुद्ध करके और कालीमिर्च ३ माशा सबको कूटकर जीभ के ऊपर मलें।

३--सिक्लुल्लिसान

नाम--(अ०) सिक्लुल्लिसान, सिक्ल जबान ; (उ०) हकलाना, हकलापन, लुकनते जबान ; (अं०) स्टैमरिंग (Stammering)।

वर्णन--इसमें रोगी अटक-अटककर बोलता है। पूरे वाक्य का उच्चारण ठीक-ठीक शीघ्रतापूर्वक नहीं कर सकता। इसको बोलचाल की भाषा में 'हकलापन' कहते हैं।

हेतु--कुछ लोगों को तो यह रोग जन्मतः होता है, जो असाध्य है। परंतु; कभी पक्षवध या आक्षेप वा सरसाम के कारण भी यह रोग हो जाता है। कभी-कभी शीतल एवं स्निग्ध पदार्थों के अति सेवन से श्लैष्मिक द्रव उत्पन्न होकर जिह्वा की वातनाड़ियों में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे वे ढीली हो जातीं और जिह्वा को चेष्टा करने से रोकती हैं तथा रोगी अटक-अटककर संभाषण करता है।

लक्षण--यदि पक्षवध या आक्षेप वा सरसाम के कारण यह रोग हो तो ये रोग विद्यमान होंगे। श्लैष्मिक द्रव के कारण यह रोग हो तो जिह्वा बोझल होगी। मुख से बारंबार द्रव बहेगा। रोगी की प्रकृति श्लेष्मल होगी और कफ के अन्यान्य लक्षण पाये जायँगे।

चिकित्सा--पक्षवध, आक्षेप या सरसाम से यह रोग हुआ हो, तो अपने प्रकरण में लिखे अनुसार उसकी विधिवत् चिकित्सा करें। श्लैष्मिक द्रव के कारण यह रोग हो तो बुत्लानुज्जौक के प्रकरण में लिखी हुई विरेचन विधि के अनुसार इस में भी विरेचन देवें तथा २ तोले सिकंजबीन असली १५ तोले पानी में मिलाकर उससे कुल्लियाँ करायें अथवा कालीमिर्च, राई, नौशादर, अकरकरा, लौंग और सोंठ प्रत्येक ६ माशा सबको जल में उबालकर उससे गण्डूष एवं कुल्ली करायें। प्रातः काल ५ दाने बादाम का मग्ज २ तोले शहद में घोटकर चटनी की भाँति चटा दिया करें। भोजनोत्तर मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर प्रातः काल खिलायें और सायंकाल मर्जा जवाहर वाला १ टिकिया और मण्डूर भस्म १ टिकिया, ५ माशे अतरीफल उस्तूखुदूस में मिलाकर खिला दिया करें। तिर्याक फारूकी १ माशा जीभ पर मलना और उतना ही १ तोला खमीरा गावजबान सादा या ७ माशा खमीरा गावजबान जवाहर वाला में मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। इसी प्रकार मफासली ३ टिकिया प्रातःकाल ताजे पानी से खिलाना और गोदंती भस्म १ टिकिया ताजे पानी या १ तोला शहद में मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। भुना हुआ सुहागा १ माशा १ तोला शहद में मिलाकर प्रातः सायंकाल जीभ के ऊपर मलें।

पथ्य--बकरी का मांस, चपाती गरम मसाला मिलाकर देवें। मूँग और

अरहर की दाल लहसुन डालकर तथा करेले की तरकारी प्रभृति देवें। अंडा, बिस्कुट, अंगूर, सेव, अनार आदि भी अभ्यासानुकूल दे सकते हैं।

अपथ्य--बादी, गरिष्ठ एवं शीतल पदार्थों से परहेज करायें। गोभी, उड़द की दाल, अरवी, शलगम, मसूर की दाल और दूध, दही तथा मछली आदि नहीं देवें।

४--वरमुल्लिसान व हुर्कतुल्लिसान

नाम--(अ०) वरमुल्लिसान, हुर्कतुल्लिसान ; (उ०) जबान का वरम; (हिं०)जीभ की सूजन ; (सं०) जिह्वाशोथ, जिह्वादाह ; (अं०) ग्लोसायटीज (Glossitis),इरिटेशन ऑफ दी टंग(Irritation of the Tongue)

भेद--गरम और सर्द इसके दो भेद होते हैं। इनमें गरम रक्त एवं पित्तजन्य और सर्द कफ एवं सौदाजन्य होता हैं।

हेतु--तमाकू खाने और पीने का असाधारण व्यसन, आहारदोष, तीक्ष्ण मसालेदार आहार का सेवन, तीव्र ज्वर, फिरङ्ग, पारद सेवन, पान में अधिक चूना खाना, अन्त्र आमाशय के पाचन का दोष, दन्तरोग और अधिक गरम दूध पीना इसके हेतु हैं।

लक्षण--जिह्वा सूज जाती है। उसमें दर्द होता है और बोलने में कष्ट होता है। मुँह से लार बहता है। ग्रीवा की सिरायें फूलकर चेहरा रक्त वा नीलवर्ण हो जाता है। बैचैनी के कारण ज्वर भी हो जाता है। उष्ण शोथ में लक्षण तीव्र होते हैं। रक्त की प्रगलभता की दशा में जिह्वा कालाई लिये लाल होती है। उसमें बोझ एवं खिचावट अधिक होती है। पित्तप्रकोप में जिह्वा पिलाई लिये होती है और उसमें दर्द एवं जलन अधिक होती है। शीतल शोथ में लक्षण कम तीव्र होते हैं। कफाधिक्य की दशा में जिह्वा श्वेत होती है और पुष्कल लार बहता है। सौदाधिक्य की दशा में जिह्वा काली होती है और उसकी झिल्ली शुष्क होती है।

चिकित्सा--प्रथम रोग के हेतु का पता लगाकर उसका निवारण करें और १ छटाँक रेंडी का तेल पाव भर गाय के दूध में मिलाकर पिलायें। यदि रोगी उसे पी न सके तो १ छटाँक रेंडी का तेल और १ तोला साबुन डेढ़ सेर गरम पानी में मिलाकर बस्ति देवें तथा गुलबनफ्शा ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, गुलाब के फूल ५ माशा, नीलूफर के फूल ५ माशा, आलूबोखारा ५ दाना कासनी के बीज ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ५ दाना, सूखी मकोय ५ माशा, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा और गावजबान ५ माशा सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें।

अमलतास का गूदा ६ माशा, सूखा धनिया ५ माशा पाव भर गाय के दूध में उबालकर उससे गण्डूष करायें। वेदना शमन के लिये बाहर से गले को सेकें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो जीभ पर जोंक लगवायें, सरारू की फस्द करायें और दोषानुसार मुंजिज देकर विरेचन करायें।

पथ्यापथ्य—पतला और मृदु आहार, जैसे—दूध, यवमंड, मूँग की दाल का पानी, मूँग की नरम खिचड़ी, गेहूँ का दलिया आदि खिलायें। मसाला और गरम आहारों से परहेज करायें। यदि रोगी को आहार देना आपत्तिजनक हो तो पोषण बस्ति के द्वारा अथवा नाक के द्वारा कण्ठ के भीतर रबड़ की नाली प्रविष्ट करके आमाशय के भीतर आहार पहुँचाने का यत्न करें।

५—शुकाकुल्लिसान

नाम—(अ०) शुक़ाकुल्लिसान ; (उ०) जबान का फटना ; (हिं०) जीभ फटना ; (सं०) वातप्रकोपज जिह्वाकण्टक ; (अं०) फिशर ऑफ दी टंग (Fissure of the Tongue), क्रैक्ड ऑर फिशर्ड टंग (Cracked or Fissured Tongue)। जिह्वा कतिपय स्थानों में फट जाती है।

हेतु—मस्तिष्क की उष्ण या रूक्ष विप्रकृति, आमाशयगत तीक्ष्ण वाष्प अथवा विदग्धोद्गार (धूम्रोद्गार) युक्त अजीर्ण, तीक्ष्ण चटनी या अधिक मसालायुक्त आहार, पान में अधिक चूना और तमाकू खाना आदि इस रोग के हेतु होते हैं।

लक्षण—जिह्वा अनेक स्थलों में फट जाती है। कष्ट के कारण रोगी भली भाँति बोल और खा-पी नहीं सकता। जिह्वा का रंग लाल हो जाता है और प्यास अधिक लगती है। यदि उचित उपाय न किया जाय तो रोग बढ़कर जिह्वार्बुद (सरतानुल्लिसान) का रूप ग्रहण कर लेता है। यदि आमाशय के विकार या अजीर्ण के कारण यह रोग हो तो धूम्रोद्गार आते हैं। यदि मस्तिष्क की विप्रकृति के कारण हो तो मस्तिष्क में गर्मी और खुश्की के लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा—निदान परिवर्जन करें। ज्वर की तीव्रता निवारण करने तथा वाष्पों को नष्ट करने के लिये ४ तोला रेंडी का तेल पिलाकर विरेचन करायें। या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा खिलाकर कब्ज दूर करें और १ तोला अतरीफल कश्नीज खिलायें। जिह्वा की रूक्षता दूर करने के लिये स्निग्ध पदार्थों से स्नेहन करें। कतीरा और लिसोढ़ा समभाग चूर्ण करके गोलियाँ बनाकर मुख के भीतर रखें। २–२ तोले इसबगोल और बिहीदाने के लुआब से कुल्लियाँ करायें तथा ३ माशा बिहीदाने का लुआब, ३–३ माशा मीठे कद्दू के बीज के मग्ज एवं तरबूज के बीज के मग्ज का शीरा २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें। यदि जलन अधिक हो तो पोस्ते की डोडी २ नग, समूचा इसबगोल ५ माशा, पोस्ते का

दाना ३ माशा,पाव भर अर्क गुलाब में काढ़ा करके उससे कुल्लियाँ करायें। यदि पान के चूना से जीभ फट जाय तो गरी का टुकड़ा या कसेरू चबाने या जीभ पर मक्खन मलने से ही लाभ हो जाता है तथा गोंदनी की नरम शाखाओं की छाल लेकर कत्था लगाकर चबाने से भी बहुत शीघ्र आराम हो जाता है। यदि जीभ अधिक फट गई हो तो सफेद कत्था, वंशलोचन, संगजराहत बराबर-बराबर पीसकर मुँह के भीतर छिड़कें अथवा ३ माशा कुंदुर पीसकर १ तोला सफेद मोम में मिलाकर जीभ के ऊपर मलें।

पथ्य--दूध, चावल, साबूदाना, फिर्नी, मूँग की खिचड़ी, गेहूँ का दलिया, कद्दू, टिंडा, तुरई आदि।

अपथ्य--मांस, लहसुन, प्याज, लाल मिर्च, गरम मसाला, बैंगन, चाय, तेल और अम्ल से परहेज करें।

६--अज़मुल्लिसान

नाम--(अ०) अज़्मुल्लिसान, इद्देलाउल्लिसान ; (उ०) जबान (जीभ) का बड़ा हो जाना (मुंह से बाहर निकल आना) ; (सं०) जिह्वावृद्धि ; (अं०) ग्लोसोसील (Glossocele), मैक्रोग्लोसिया (Macroglossia)

हेतु--मस्तिष्कीय प्रसेक या कफ एवं रक्त के प्रकोप से यह रोग होता है। वस्तुतः यह शोथ नहीं होता, अपितु दोषातिरेक के कारण जिह्वा आयतन में फूल जाती है या उसकी वातनाड़ियाँ कमजोर हो जाती हैं।

लक्षण--इस रोग में जीभ फूलकर इतनी बड़ी हो जाती है कि वह मुँह में नहीं समा सकती, प्रत्युत बाहर निकल पड़ती है। यह रोग प्रायः सहज (पैदायशी) होता है। जिह्वा की ऊपरी झिल्ली चिमटे के सदृश कड़ी होजाती है। पुष्कल लालास्राव होता है। यदि जीभ अधिक बढ़ जाय तो रोगी अपना मुँह बन्द नहीं कर सकता। यदि रोग रक्त के प्रकोप से होगा तो ललाई लिये नीलवर्ण की होगी और यदि कफज होगा तो जीभ सफेदी लिये होगी।

चिकित्सा--निदान हो जाने के बाद प्रगल्भ (प्रकुपित) दोष का शोधन करें। अस्तु, रक्त प्रकोप की दशा में कीफाल एवं जिह्वाधोगा सिरा का वेधन (फस्द) करें। खट्टे अनार का रस, नीबू का रस प्रभृति जैसी अम्ल वस्तुएँ जीभ पर मलें, जिसमें द्रव का उद्रेक (स्राव) होकर दोष निकल जाय। कफप्रकोप की दशा में कफ पाचनोपरांत हब्ब इयारिज के द्वारा शोधन करें। तदुपरांत कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, और सेंधानमक सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर जीभ के ऊपर मलें। अलसी, मेथी प्रत्येक ७ माशा और अंजीर ५ दाना

काढ़ा करके इससे गण्डूष करायें। कफशोधनोपरांत रोगी को माजून फलासफा ७ माशा या जुवारिश जालीनूस ५ माशा प्रातः सायंकाल सेवन करायें।

७--संरतानुल्लिसान

नाम--(अ०) सरतानुल्लिसान; (उ०) सरताने जबान; (सं०) जिह्वार्बुद, (अं०) कैन्सर ऑफ दी टंग (Cancer of the Tongue)।

वर्णन--यह एक सांधातिक प्रकार का व्रण है जो जिह्वा के धरातल वा उसकी जड़ में उत्पन्न हो जाता है।

हेतु--कभी-कभी पुष्कल तमाकू खाने या पीने, सड़े-गले दाँतों का क्षोभ या जीह्वाशोथ एवं जिह्वास्फटन के कारण जिह्वापर व्रण उत्पन्न हो जाता है और समय पर उसका प्रतीकार नहीं किया जाता, तो वह अंत में जिह्वार्बुद के रूप में परिणत हो जाता है तथा दुष्ट एवं दुर्निवार्य (हठीला) रूप ग्रहण कर लेता है। फिरङ्ग रोगी इसके आखेट अधिक हुआ करते हैं।

लक्षण--इस व्रण के विशिष्ट लक्षण यह है कि इसका मध्य भाग गंभीर और प्रांत अनियमित रूप से उभरे हुए होते हैं। मुख से पुष्कल लाला एवं दुर्गन्धित पदार्थ उत्सर्गित होता है। रोगी को खाने-पीने और बोलने में अत्यंत कष्ट अनुभव होता है और रोगी कुछ मास में ही परलोक सिधार जाता है।

चिकित्सा--तीव्र वेदनावस्था में बासलीक सिराका वेधन करायें। बार-म्बार सौदा का शोधन करें।

सीसे (नाग) को रेशा खतमी के लबाब के साथ खरल में आलोड़न करें और दिन-रात्रि में पांच-छः बार जिह्वार्बुद के ऊपर लेप करें। ५ तोले गुलरोगन को गरम करके नीचे उतार लेवें। जब शीतल हो जाय तब ७॥ माशा साफ किया हुआ क़मीला उसमें मिलाकर पतला लेप लगाते रहें।

पोस्त अनार, छिला हुआ मसूर, गेरू प्रत्येक १ तोला कूट-छानकर ६ तोला तीन वर्ष पुराना गुड़ मिलाकर लेप करें। जौहर मुनक्का १ चावल गुठली निकाले हुए एक मुनक्के के भीतर रखकर ५-५ तोले अर्क शीर एवं अर्क माउज्जुन्न के साथ खिलायें।

८--जिफ्दिउल्लिसान

नाम--(अ०) ज़िफ़्दिउल्लिसान; (उ०) तुंदवा, तेंदवा; (हिं०) जिह्वा के नीचे की रसौली; (सं०) उपजिह्वा, उपजिह्विका; (अं०) रेन्यूला (Ranula)।

वर्णन--इस रोग में जिह्वा के नीचे मेंढक के सिर की आकृति की एक रसौली या ग्रन्थि उत्पन्न हो जाती है। इसलिए अरबी और अंगरेजी में इसको क्रमशः जिफ्दअ (मेंढक) और रेन्यूला (मेंढक) कहते हैं। इसमें जिह्वा की ललाई, शोथ की सफेदी और सिराओं की हरियाली परस्पर मिलकर मेंढक की आकृति के समान होती है।

हेतु--यह रोग सांद्र रक्त या पिच्छिल कफ से उत्पन्न होता है, जिसका कारण यह है कि जिह्वा के नीचे की ग्रन्थियों की नालियाँ बन्द हो जाती हैं। इसलिए यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--जीभ के नीचे मेंढक और कभी-कभी अखरोट के बराबर रसौली हो जाती है, जिससे साँस लेने, निगलने और बोलने में कष्ट होता है। रसौली बढ़ जाने पर कष्ट भी बढ़ जाता है। शोथ के वर्ण (रंगत) से प्रगल्भ दोष का अनुमान किया जा सकता है। अस्तु, लाली एवं जलन रक्ताधिक्य और उसकी सफेदी एवं कड़ाई पिच्छिल कफ को लक्षित करती है।

चिकित्सा--रक्तप्रकोप की दशा में सराल की फस्द खोलें, जोंक लगवायें, शीतल विरेचन से शोधन करें। कफ के प्रकोप में दोषपाचन (मुंजिज) और विरेचन के द्वारा कफ का शोधन करें। शोधनोपरांत नौशादर, भुनी फिटकिरी, बोल प्रत्येक ३ माशा, जंगार १।। माशा सिरका में पीसकर बारंबार लगायें या नौशादर ३ माशा और हरा माजू ३ माशा पीसकर जीभ पर मलते रहें। जब उसमें क्षोभ उत्पन्न हो जाय, तब विलायती मेंहदी के पत्र, गुलनार, किशार कुंदुर सिरका में उबाल-छानकर इसका कवल धारण (मज्मजा) करें। जब रोगजनक दोष का उन्मूलन हो जाय, तब व्रण को अच्छा करने के लिये व्रणरोपण अवचूर्णन का उपयोग करें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो शस्त्र कर्म करें।

पथ्यापथ्य--जिह्वाशोथ के अनुसार।

९--खुशूनतुल्लिसान

नाम--(अ०) खुशूनतुल्लिसान, तशन्नुजुल्लिसान ; (उ०) ज़बान का खुरदरा हो जाना (खिंच जाना); (अं०) ग्लॉसोस्पैझम (Glossospasm)।

हेतु और लक्षण--इसके हेतु वही सामान्य आक्षेप के हेतु होते हैं और उसी की भाँति इसके भी दो भेद हैं--(१) तशन्नुज माद्दी और (२) तशन्नुज याबिस। इस रोग में जीभ खिंचकर छोटी हो जाती है। शेष तशन्नुज माद्दी एवं तशन्नुज युब्सी में उनके विशिष्ट लक्षण व्यक्त होते हैं।

चिकित्सा--इस रोग में (१) रोगन बनफ्शा या रोगन कद्दू का कवल धारण (मज्मजा) करने से उपकार होता है। इसी प्रकार (२) इक्लीलुल्मलिक,

(३) मर्जञ्जोश, (४) सोश्रा श्रौर (५) बाबूना श्रादि श्रोषधियों में से जो उपलब्ध हो या विद्यमान हो, उसे पानी में उबालकर कवल धारण (मज्मजा) करने (कुल्ली) से उस श्राक्षेप में लाभ होता है,जो शीतल हेतुश्रों से उत्पन्न हुश्रा हो श्रौर जिस प्रकार इन श्रोषधियों के काढ़े से लाभ होता है, उसी प्रकार इनसे बने तेलों के गण्डूष करने एवं कवल धारण करने से भी बहुत उपकार होता है। (६) कतीरा मुख में धारण करने से मुख, कण्ठ श्रौर जिह्वा के संपूर्ण भागों की रूक्षता दूर होती है। इसी प्रकार (७) इसबगोल के लुश्राब का कवल धारण करने (८) श्रालूबोखारा मुख में रखने श्रौर समस्त शीतल-स्निग्ध स्वरसों के गण्डूष मुख, जिह्वा श्रौर स्वरयन्त्र की रूक्षता को दूर करते हैं।

१०—रब्तुल्लिसान

नाम—(श्र०) रब्तुल्लिसान, इल्तिसाकुल्लिसान; (उ०) जबान का बँधना (या जुड़ना); (श्रं०) टंग टाई (Tonguen-tie), एङ्किलोग्लॉसिया (Ankyloglossia)।

वर्णन—इस रोग में जिह्वा के नीचे की चुन्नट (सीवन) इतनी छोटी होती है कि जिह्वा नीचे की श्रोर जबड़े के साथ लगी श्रौर बंधी रहती है। जब जन्मतः जिह्वा के नीचे की चुन्नट होती ही नहीं,तब जिह्वा का बहुत-सा भाग मुख के निम्न फर्श के साथ जुड़ा हुश्रा होता है। उक्त श्रवस्था को पाश्चात्य वैद्यक श्रौर यूनानी में क्रमशः 'ऐङ्किलोग्लॉसिया' श्रौर 'इल्तिसाकुल्लिसान' कहते हैं।

हेतु श्रौर लक्षण—यह रोग सहज वा जन्मज होता है। शिशु को दूध पीने में कष्ट होता है। जिह्वा मुख से बाहर नहीं निकल सकती श्रौर न उसमें भाषण की चेष्टा हो सकती है। श्रतएव; शिशु गूँगा (मूक) होता है श्रौर यदि बोले तो तुतलाता है।

चिकित्सा—इस रोग की चिकित्सा केवल शस्त्रकर्म के सिवाय श्रौर कुछ नहीं है। श्रस्तु; एक गोल नोकवाली कैंची से जिह्वा के नीचे की चुन्नट (लगाम ज़बान) को काट देते हैं।

११—जफाफुल्लिसान

नाम—(श्र०) जफ़ाफुल्लिसान; (उ०) जबान की ख़ुश्की; (हिं०) जीभ की रूक्षता; (सं०) जिह्वा शोष; (श्रं०) ग्लॉसोट्रिकिया (Glossotrichia), इक्थियोसिस लिंग्वी (Icthyosis Linguae)।

हेतु और लक्षण----इस रोग का हेतु गर्मी और खुश्की है जो साधारणतया पैत्तिक ज्वरों एवं कण्ठशोथ (खुनाक) आदि में प्रगट हुआ करती है। इसका एक और भेद भी है, जो जिह्वा के ऊपर पिच्छिल (लसदार) दोष जम जाने से उत्पन्न होती है। इन दोनों में नैदानिकी लक्षण यह है कि प्रथम में पीलापन, खुरदरापन और पित्त के अन्यान्य लक्षण प्रगट होते हैं और द्वितीय में उसके धरातल पर पिच्छिल द्रव पाया जाता है तथा लाला लसदार हुआ करती है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रोग के मूल हेतु को दूर करें। अस्तु, प्रथमोक्त में (१) इसबगोल के लुआब से कुल्लियाँ करायें, (२) कुलफा के बीज का शीरा या (३) कुलफा का रस या (४) तरबूज का रस और (५) खीरा के रस का कवल धारण करने और (६) बादाम के तेल को जीभ पर मलने से भी उपकार होता है। यदि आमाशय में पैत्तिक दोष विद्यमान हो तो संशोधन और लुआबों से कुल्ली कराने के पश्चात् (७) इसबगोल ४ माशा, सिकंजबीन तुफाही लीमूनी २ तोला के साथ देने से अद्भुत लाभ होता है। यदि मुँह में वायु लगने से जिह्वा-शोष हो गया हो तो (८) कतीरा और शकर सम भाग लेकर मुँह में रखने से लाभ होता है। द्वितीय भेद में अर्थात् जिह्वा के ऊपर पिच्छिल द्रव जम जाने से हुए जिह्वाशोष में (९) सिकंजबीन चाटने, (१०) खाली पुदीना जीभ के ऊपर भली भाँति मलने तथा (११) नीम की दातून के द्वारा जिह्वागत लसदार द्रव को साफ करते रहने से लाभ होता है।

वक्तव्य--जिन असंसृष्ट द्रव्यों का शुकाकुल्लिसान के प्रकरण में उल्लेख हो चुका है, वे भी इसमें लाभकारी हो सकते हैं।

१२--बयाजुल्लिसान

नाम--(अ०) बयाजुल्लिसान; (उ०) सफेदी जबान; (हिं०) जीभ सफेद होना, जीभ की सफेदी; (सं०) जिह्वाशौक्ल्य; (अं०) ल्यूकोप्लॉकिया लिंग्वैलिस (Leukoplakia Linguolis)।

हेतु और लक्षण--इस रोग का हेतु प्रायः तमाकू का क्षोभ होता है और कभी फिरंग के कारण यह रोग हो जाता है। वास्तव में यह जिह्वा का एक प्रकार का चिरज शोथ है जिसमें जिह्वा की त्वचा कड़ी होकर उस पर सफेद रंग के चट्ठे पड़ जाते हैं। कभी सारी जीभ सफेद हो जाती है। जब कुछ काल पश्चात् उसकी ऊपरी त्वचा शुष्क होकर उखड़ जाती है और सफेदी दूर हो जाती है तब नीचे से लाल-चमकीला धरातल निकल आता है। यदि त्वचा स्थान-स्थान से उतर जाय और स्थान-स्थान पर सफेद दाग (चिह्न) शेष रह जाएँ, तो उसको 'तकश्शुरुल्लिसान' कहते हैं। यदि इस रोग की चिकित्सा नहीं की जाय, तो

जिह्वा की त्वचा उतर जाने से उसका धरातल कोमल होकर व्रणित हो जाता है जिससे पुनः जिह्वार्बुद रोग हो जाता है ।

चिकित्सा--(१) हर प्रकार के क्षोभकारक खाद्य-पेय से परहेज करायें, (२) शीतल आहार खाने को देवें, (३) मलावरोध नहीं होने देवें और (४) 'तकश्शुरुल्लिसान' में वर्णित चिकित्सा को यहाँ भी काम में लेवें । फिरङ्गजनित होने पर उसकी चिकित्सा करें ।

१३--हिक्कतुल्लिसान

नाम--(अ०) हिक्कतुल्लिसान ; (उ०) जबान की खारिश ; (हिं०) जीभ की खुजली ; (सं०) जिह्वागत कण्डू ; (अं०) इक्थियोसिस लिंग्वी (Icthyosis Linguae) ।

हेतु और लक्षण--इसके हेतु वे तीक्ष्ण एवं दाहकारी पदार्थ हुआ करते हैं, जो मस्तिष्क से जिह्वा की ओर गिरते हैं या वाष्प रूप में आमाशय या संपूर्ण शरीर से उठकर उसकी ओर जाते हैं । सूरण आदि जैसे कुछ द्रव्यों के सेवन से भी यह रोग हो जाता है । इसमें जिह्वा लाल हो जाती है और रोगी हर समय उसे अपने दांतों से खुजलाता रहता है । गरम पानी या गरम शूरबा के कवल धारण करने से किसी कदर शांति मिलती है ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--दोषशोधन और सौदाविरेचन के उपरांत (१) सादा सिकंजबीन या (२) शर्बत नीलूफर या (३) शर्बत खशखाश प्रति दिन सेवन करने से उपकार होता है । तदुपरांत (४) गरम पानी और (५) सिरका एवं गुलरोगन का एक-एक करके क्रमशः कवल धारण करने से बहुत लाभ होता है । इसी प्रकार (६) त्रिफला के काढ़े से कुल्लियाँ करना भी लाभकारी है ।

१४--तकश्शुरुल्लिसान

नाम--(अ०) तक़श्शुरुल्लिसान ; (उ०) जबान के छिलके उतरना ; (अं०) सोराइसिस लिंग्वी (Psoriasis Linguae) ।

हेतु और लक्षण--इस रोग के निज (दाखली) और आगन्तुक (खारजी) दो प्रकार के हेतु होते हैं । मद्य, खारी नदी का जल और तीक्ष्ण क्षारीय लवण आदि का सेवन प्रथम प्रकार में और शरीर से तीक्ष्ण एवं क्षोभक बाष्प का उठना द्वितीय प्रकार में अंतर्भूत होते हैं, जिनसे केवल जिह्वा ही नहीं, अपितु मुख के भीतर का धरातल और दाँतों के बीच का मांस भी विदीर्ण हो जाता है । इसका लक्षण यह है कि जब रोगी अपने तालू और मुख को कपड़े आदि से मलता है, तब वहाँ

से महीन और सफेद से छिलके उतरते हैं । परंतु; इससे किसी प्रकार का दर्द आदि प्रतीत नहीं होता ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) यदि रोगी स्तन्यपायी शिशु हो तो उसके मुँह को दूध पिलानेवाली स्त्री के दूध से धोयें और दूध पिलानेवाली स्त्री का हेत्वनुसार चिकित्सा करें । (२) गुलाब के फूल और (३) गुलनार को सिरका में उबाल कर उससे कुल्लियाँ कराने से उपकार होता है तथा (४) सुमाक को अर्क गुलाब में भिगो और मल-छानकर उससे कवल धारण करना भी लाभकारी है । भोजन में ऐसे रोगियों को (५) कच्चे अंगूर का रस मिलाया हुआ आहार (हस्रमिय्यः) या (६) सुमाक डाला हुआ आहार (सुमाकिय्यः), (७) यवमंड, (८) मूँग की दाल आदि लाभकारी होती हैं । वे सभी उपाय जिनका उल्लेख तशक्ककुश्शफ्तैन में किया गया है, इसमें भी लाभकारी हो सकती हैं ।

दन्त-दन्तवेष्ट रोगानुच्छेद (अम्राजुल्अस्नान व अल्लिसः) ३

नाम--(अ०) अम्राजुल्अस्नान व अल्लिस्सः ; (फा०) अम्राज़े दंदाँ व इराक ; (हिं०) दाँत और मसूढ़ों के रोग; (सं०) दन्त और दन्तवेष्टगत रोग ; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी टीथ एण्ड गम्स (Diseases of the teeth and Gums) ।

दाँतों की स्वास्थ्यरक्षा

दाँतों को रोग एवं कष्ट से बचाने और उनको दीर्घकाल तक स्थिर एवं स्वस्थ रखने के लिये अधोलिखित उपदेश को ध्यान में रखना चाहिए--(१) अधिक प्रमाण में और थोड़ी-थोड़ी देर में भोजन करने से अजीर्ण एवं वाष्पोत्पत्ति होकर दाँतों को हानि पहुँचती है तथा (२) अत्यंत उपवास कर भोजन करना या (३) भोजन के पश्चात् तुरत सो जाना या (४) भोजन के ऊपर अति मद्यसेवन । (५) पतले और गाढ़े आहार, जैसे दूध और मछली या अंगूर और कले पाये एक साथ खाना दांतों के स्वास्थ्य के लिये अहितकर है । (६) अत्यंत लेसदार वस्तु जैसे रेवड़ी या सोहन हलुआ या सूखा अंजीर चबाना और कड़े पदार्थ जैसे बादाम आदि को बलपूर्वक तोड़ना, (७) अत्यंत अम्ल एवं शीतल और कठोर पदार्थ, जैसे बर्फ आदि का चबाना और खाना दाँतों के स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है । (८) अधिक उष्ण एवं शीतल पदार्थ का खाना विशेष कर उष्ण के बाद तुरत शीतल पदार्थ खाना और चबाना दाँतों के लिये परम अहितकर होता है । (९) भोजन करने के बाद चाँदी या सोने के उत्तम बारीक बने हुए दंतमार्जनी (खिलाल) या नीम के तिनके से दाँतों के बीच के झरियों को भली भाँति स्वच्छ कर लिया करें और भोजन के बाद खूब कुल्ली आदि कर लिया करें जिससे भोजन के कण दाँतों के बीच की झरियों में अवशेष रहकर सड़ न जायँ और कोई रोग उत्पन्न

न कर देवें। सवेरे-शाम जरिश्क, पीलू वा नीम की शाखा के दातून से दाँतों को स्वच्छ करने से दाँत दृढ़ एवं बलवान् होते हैं और मुख की दुर्गन्ध दूर होती है। हर एक लकड़ी से जो समय पर मिल जाय दातून नहीं करना चाहिये। इसलिए कि कतिपय लकड़ियाँ दाँतों के लिये विशेष रूप से अहितकर होती हैं। दातून सदैव ताजा और नरम प्रयोग करना चाहिए। सूखा, कड़ा या प्रयोग किया हुआ दातून कदापि उपयोग नहीं करना चाहिए। (१०) भोजन करने के बाद थोड़ा-सा पिसा हुआ नमक दाँतों पर मलकर कुल्ली करना और सोते समय (११) गुलरोगन या कोई और तेल दाँतों पर मलना दाँतों के स्वास्थ्य का रक्षक है।

दन्तरोग

१--वज्उल् अस्नान

नाम--(अ०) वज्उल् अस्नान, अलमुस्सिन्न ; (फा०) दर्दे दंदाँ ; (उ०) दाँत का दर्द ; (सं०) दन्तशूल, दालन, शीतदन्त ; (अं०) ओडनटैल्जिया (Odontalgia), टूथेक (Toothache)।

वक्तव्य—शैख और जालीनूस के मतानुसार दाँतों में स्पर्श एवं संवेदन शक्ति विद्यमान होती है। अस्तु; मसूढ़ों और दन्तगत वात-नाड़ियों की भाँति स्वयं दाँत भी शूलाक्रांत हो जाते हैं।

भेद--हेतु के विचारानुसार इस रोग के अधोलिखित तीन भेद होते हैं--(१) उष्ण (हार्र) जो सादा (अदोषज) उष्ण विप्रकृति या रक्तज एवं पित्तज दोष के प्रकोप से होता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे 'ओडंटैल्जिया' कहते हैं। (२) शीतल (बारिद) जो सादा (अदोषज) शीतल विप्रकृति या कफज एवं वातज (रीही) दोष के कारण होता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे 'ओडंटोडायनी (Odontodynae) कहते हैं। (३) कृमिज दन्तशूल (वज्उल् अस्नान दूदी) जो दाँतों में कीड़ा लगने के कारण होता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे 'ओडंटोनेक्रोसिस (Odontonecrosis) कहते हैं।

हेतु--सादा (अदोषज) उष्ण या शीतल विप्रकृति अथवा रक्त, पित्त, कफ और वायु (रीह) का प्रकोप इस रोग का हेतु होता है। इसके अतिरिक्त दाँतों के मलिन रखने और अजीर्ण के कारण तथा अधिक मधुर, अम्ल एवं बादी पदार्थ के उपयोग के पश्चात् मुख को स्वच्छ न करने से कोथ उत्पन्न होता और दाँतों में कीड़ा लगकर छिद्र हो जाता है तथा इससे भी दन्तशूल हो जाता है। संधिवात एवं पारे के अति सेवन से भी दाँत दूषित हो जाते हैं जिससे यह रोग उत्पन्न

हो जाता है। कभी-कभी स्त्रियों को गर्भावस्था में यह रोग हो जाता है। स्मरण रखना चाहिए कि मस्तिष्क के रोगों में साधारणतः उसके आसन्नवर्ती अवयव भी आक्रांत होते हैं। सुतरां जिनको प्रायः प्रसेक एवं प्रतिश्याय रहता है, वह इस रोग से अधिक आक्रान्त रहते हैं। अस्तु, मस्तिष्क की अवस्था का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये।

लक्षण--साधारणतया रात्रि के समय जब रोगी लेटकर सोने लगता है, किसी एक (विकारी) दाँत में अति तीव्र प्रकार का शूल आरंभ हो जाता है। कभी-कभी दर्द की टीसें इतनी तीव्र होती हैं कि रोगी को किसी करवट आराम नहीं मिलता। मुँह चलाने (हिलाने) से दर्द में अधिकता होती है। दाँत के समीप के मसूढ़े में सूजन होती है। कभी-कभी कपोल और चेहरा पर भी सूजन हो जाती है।

निदान--यदि दाँत का दर्द गर्मी (उष्ण विप्रकृति) से हो तो बहुत तीव्र और बेचैन कर देनेवाला होता है। ठंढे पानी से आराम होता है। मसूढ़े में भी न्यूनाधिक सूजन होती है। यदि वह सर्दी (शीतल विप्रकृति) से हो तो दर्द के साथ न टीस होती है, न चेहरे में शोथ (सोजिश) होता है और न मसूढ़ों में शोथ होता है, यह साधारणतया ठंढा पानी या किसी अन्य ठंढी वस्तु सेवन करने से उत्पन्न होता है। गर्म वस्तुओं से इसमें आराम प्रतीत होता है। यदि दाँत हिलने और दर्द के साथ विकारी स्थान और संपूर्ण शरीर में रूक्षता के लक्षण पाये जाते हों, नेत्र भीतर घुस (धँस) गये हों तो उक्त अवस्था में रोग का हेतु खुश्की वा रूक्षता (रूक्ष विप्रकृति) हुआ करती है। आमाशय के अनुबन्ध से हो तो उसके साथ कुपचन, आमाशय मल से परिपूर्ण होता और रात्रि के भोजन के पश्चात् प्रगट होता है। यदि वायु (रीही माद्दा) से हो तो दर्द एक दाँत से दूसरे दाँत में स्थानान्तरित होता रहता है। कर्ण या नेत्र के अनुबन्ध से हो तो उनमें भी कोई न कोई रोग विद्यमान होता है। यदि दर्द दाँतों की लंबाई में हो तो रोगजनक दोष खास दाँतों के जौहर में होता है। यदि गहराई में हो तो दाँत के नीचेवाली वातनाड़ी में दर्द हुआ करता है। यदि कृमिदन्त के कारण दर्द हो तो विकारी दाँत में कोई न कोई छिद्र अवश्य हुआ करता है। और यदि कृमिभक्षित दाँत के नीचे दर्द एवं टीस प्रतीत हो तो रोगजनक दोष उनके मूल में हुआ करता है।

चिकित्सासूत्र--यदि दाँत दर्द के साथ हिलते भी हों तो देखना चाहिए कि उन्होंने अपना स्थान तो नहीं छोड़ा और उनमें छिद्र तो नहीं है। यदि स्थान न छोड़ा हो तो दाँत को दृढ़ करने वाले मंजन का उपयोग करें। यदि उनमें छिद्र हो तो रूई में ओषधि लगाकर छिद्र में भर देवें। यदि छिद्र बड़ा हो तो किसी दन्तचिकित्सक से भरवा लेवें। सड़े-गले और अपना स्थान छोड़ देनेवाले दाँत

को निकलवा देना श्रेयष्कर होता है। परंतु; मजबूत दाँत को केवल दर्द के कारण कदापि नहीं निकलवाना चाहिए।

चिकित्साक्रम--मूल हेतु का पता लगाकर उसे दूर करना चाहिये। दाँतके ऊपर मल वा किट्ट जमा हो तो उसे दाँतको निर्मल बनानेवाले मंजन से मल कर स्वच्छ करें। अजीर्ण और आमवात इसके कारण हों तो उनकी चिकित्सा करें। यदि दोषज हो तो दोषका पाचन और शोधन करें। यदि दर्द गर्मी के कारण हो तो गुलरोगन में कपूर विलीन करके अथवा १ तोला गुलरोगन में कत्था और अफीम प्रत्येक चार रत्ती घोलकर दाँतोंपर मलें तथा हरे मकोय का रस, हरे धनिये का रस और हरे बारतंग का रस सब बराबर-बराबर लेकर अथवा चमेलीके पत्ते ६ माशा, पोस्तेकी डोडी १ नग, सिरीस की छाल ६ माशा, अनार के जड़ की छाल ६ माशा इनके काढ़े से गण्डूष करायें। पीने के लिये निम्न योग देवें--उन्नाब५ दाना, काहू के बीज, कुलफा के बीज, कद्दू के बीज की गिरी प्रत्येक ३ माशा सब को १२ तोला अर्क गावजबान में पीस लेवें। पुनः ३ माशा गावजबान को ५ तोले अर्क गावजबान में भिगोकर लुआब निकाल कर उसमें मिलायें और २ तोला शर्बत बनफ्शा योजित कर प्रातः सायं काल पिलावें। दोषज दंतशूल में दोष के पाचन और शोधन के पश्चात् उक्त योग सेवन करायें।

यदि दर्द सर्दी से हो तो २ माशा कालीमिर्च महीन पीसकर ६ माशे मधु में मिलाकर दाँतों पर लेप करें अथवा कबरकी जड़, दालचीनी, अकरकरा,कालीमिर्च और सोंठ प्रत्येक २ माशा–सबको ५ तोले सिरका, पाव भर अर्क गुलाब या डेढ़ पाव सादे पानी में उबाल कर गण्डूष करायें। तदुपरान्त काली मिर्च, अकरकरा, राई और सेंधानमक सबको बराबर-बराबर ले--पीसकर मंजन बनाकर दाँतों पर मलें। यदि साथ ही सौदावी या श्लैष्मिक दोष हो तो छिली हुई मुलेठी, गावज़बान, हंसराज, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५ माशा जलमें उबाल--छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें।

यदि दाँत हिलते हों तो बबूल की छाल के काढ़ेसे गण्डूष करायें या सुनूने पोस्त मुगीलाँ (बबूल की छाल आदि से बना मंजन) मलवायें। यदि इससे लाभ न हो और दाँत अपने स्थान से हट गये हों तो उन्हें उखड़वा देवें। यदि दाँत में क्रिमि पड़ने (कीड़ा लगने) और छिद्र हो जाने के कारण दर्द हो तो सम भाग कमीला, बायबिडंग और आड़ू के पत्ते के कुनकुने काढ़े से गण्डूष करायें और रोगन कमीला या अर्क अजीब या लौंग वा दालचीनी के तेलमें रूई का फाहा तर करके विकारी दाँत के छिद्र में रखें। यदि मसूढ़ों में पीव पड़ गई हो तो कपूर और नीलाथोथा १-१ माशा, नौशादर ४ रत्ती सब को १तोला पानी में घोलकर उसमें रूई का फाहा तर करके विकारी दाँतके ऊपर फेरें अथवा इस्पंद

सोख्तनी १ तोला को जलमें उबाल कर उससे गण्डूष करायें। यदि प्रसेकीय द्रवसे दंतशूल हो तो ६ माशा सुनून तमाकू और १ तोला सुनूने पोस्त मुगीलाँ मिलाकर प्रातः सायंकाल और रात्रि में दाँतों पर मलें और मण्डूर भस्म तथा प्रवाल भस्म दो-दो रत्ती, ७ माशे अतरीफल उस्तूखुदूस में मिलाकर प्रातःसायंकाल खाया करें। यदि अन्यान्य अंगों के अनुबन्ध से दन्तशूल हो तो उनकी चिकित्सा करें। दर्द के कारण यदि कपोलों पर सूजन हो तो सूखा मकोय और अमलतासका गूदा प्रत्येक १ तोला मकोय की पत्ती के रस में पीस कर कुनकुना गरम करके लेप करायें। हर प्रकारके दन्तशूल में गर्म या सर्द पदार्थ के सेवन से परहेज करें।

पथ्य––बकरी का शूरबा, चपाती, खिचड़ी, अरहर या मूँग की दाल, मेथी का साग, चुकंदर आदि।

अपथ्य––अम्ल, तेल, गोभी, बैंगन, मटर, प्याज, लहसुन, अरवी, आलू, कचालू और बर्फ आदि।

२––तहर्रुकुल् अस्नान

नाम––(अ०) तहर्रुकुल् अस्नान; (फा०) जुंबिशेदंदाँ; (उ०, हिं०) दाँत हिलना; (सं०) चलदन्त; (अं०) ओडन्टोसायसिस (Odontoseisis) लूज टीथ (Loose teeth)।

वक्तव्य—जब ५-६ वर्ष के बालकों और बूढ़ों को यह रोग हो तो उनकी चिकित्सा की आवश्यकता नहीं। क्योंकि बालकों के दूध के दाँत गिरकर पुनः उत्पन्न हो जाते हैं और बूढ़ोंको चिकित्सा से लाभ नहीं होता। कारण उनके मसूढ़े वहुत कमजोर हो जाते हैं।

हेतु––दन्तमूल में पतले श्लैष्मिक द्रवों का संचय, सार्वदिक प्रसेक और प्रतिश्याय, मसूढ़ों की सूजन, अभिघात (चोट), गोश्तखोरा और सार्वाङ्गिक दौर्बल्य।

लक्षण––पतले श्लैष्मिक द्रव और प्रसेक एवं प्रतिश्याय में मसूढ़े नरम और ढीले होते हैं। पुष्कल लार बहती है। शोथ और अभिघात में टीस होती है। गोश्तखोरा और सार्वांगिक दौर्बल्य में उनके लक्षण होते हैं।

चिकित्सा––सुनूने मुगीलाँ प्रातः और रात्रि में सोते समय दाँतों पर मला करें। अथवा अकरकरा, कनेर, गुलनार, नागरमोथा, फिटकिरी, गुलाब के फूल, बालछड़ प्रत्येक ३ माशा सब को पीस कर मंजन बनायें और सबेरे-शाम दोनों वेला दाँतों पर मलें।

यदि इन उपायों से लाभ न हो तो कफ का पाचन और शोधन करने के उपरान्त १ रत्ती मण्डूर भस्म ७ माशे जुवारिश जालीनूस में मिलाकर भोजनोत्तर सेवन करायें और प्रातः सायंकाल सुनूनें मुगीलाँ दाँतों पर मलवाया करें।

पथ्य--बकरी के मांस का शूरबा, मूँग, अरहर, मसूर की दाल, मेथी, पालक प्रभृति अभ्यासानुकूल।

अपथ्य--अम्ल, बर्फ, अधिक शीतल जल, और कठिन पदार्थों के सेवन से परहेज करें।

३--हफ़्र व क़लह

नाम-(अ०) हफ़्र व क़लह, तग़य्युर लौनेल्अस्नान; (उ० हिं०) दाँतों की मैल, दाँतों का रंग बदल जाना; (सं०) दन्तकिट्ट, दन्तशर्करा; (अं०) टार्टार (Tartar), डिस्कोलोरेशन ऑफ टीथ (Discoloration of teeth)

वक्तव्य—कभी-कभी दाँतों पर मल जमकर उनका रंग बुरा हो जाता वा बदल जाता है।

हेतु और लक्षण—दाँत साफ न करना, दूषित आहार सेवन करना, आमाशयका ठीक तरह काम न करना, दूषित दोषका दाँतके भीतर प्रवेश करना इसके प्रधान हेतु हैं। दाँतों पर भूरे रंगका मल जम जाता है। इसका रंग हरा, काला या पीला हो जाता है जिसका कारण यह है कि जो दोष आमाशयमें संचित हो जाते हैं उनसे सांद्र बाष्प उठकर दाँतों और उनकी जड़ों अर्थात् कठिन मल पर जम जाते हैं। उन बाष्पों को जब दातून और मंजन आदि से साफ नहीं किया जाता तब वे हफ़र व कलह अर्थात् कठिन मल (शर्करा-पथरी) का रूप ग्रहण कर लेते हैं। प्रगल्भ दोषकी पहिचान जमे हुये मल के रंग से की जाती है।

चिकित्सा--प्रातः दातून या मंजन दाँतों पर मलें। भोजनोत्तर दाँत भलीभाँति साफ किया करें। मुनूने मुजल्ली दाँतों पर मलें। कबर की जड़, अफसन्तीन, मस्तगी और अकरकरा प्रत्येक ६ माशा पानी में उबाल कर उससे कुल्लियाँ करें।

यदि इस प्रकार लाभ न हो तो किसी चतुर दन्तचिकित्सक से दाँतों का मल (किट्ट) उतरवा देवें। यदि दाँत का रंग स्वच्छ न हो तो पीला होने की दशा में पित्त का और काला होने की दशा में सौदा का शोधन करें। तदुपरान्त भोजनोत्तर ७ माशा जुवारिश जालीनूस सेवन करायें। दाँतों पर सुनून मुजल्ली मलें।

पथ्य--बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग, अरहर की दाल, कुलफा, पालक, तुरई, सेव आदि अभ्यासानूकूल दें।

अपथ्य--अम्ल, बर्फ, शीतल जल, एवं अत्यन्त शीतल पदार्थों से परहेज करें।

४--सरीरुल् अस्नान

नाम--(अ०)स (ज़) रीरुल् अस्नान (फ़िन्नौम); (उ०, हिं०) नींद में दाँत पीसना; (सं०) दन्त शब्द; (अ०)ओडन्टोप्रायसिस (Odontoprisis), ग्राइंडिंग ऑफ टीथ (Grinding of teeth)।

वर्णन--प्रायः बालकों में सांद्र वायु वा द्रव के कारण जबड़ों (हनुओं) की पेशियाँ दुर्बल एवं ढीली हो जाती हैं और नींद की दशा में उनकी ऊष्मा उन वायु एवं द्रवों को विलीन नहीं कर सकती। अतएव साधारण-सा आक्षेप हो कर दाँत बजते हैं। कभी-कभी बूढ़ों और स्त्रियों को इसी कारण यह रोग हो जाता है।

हेतु--द्रवकी अधिकता, सान्द्र वायु, उदरकृमि और अजीर्ण आदि। कभी यह रोग संन्यास, अपस्मार, आक्षेप और पक्षवधकी पूर्व भूमिका (पूर्व रूप) होती है।

लक्षण--रोगी नींद में दाँत पीसता है। प्रायः उसके मुँहसे लार भी बहती है। अंगड़ाइयाँ और जम्हाइयाँ अधिक आती हैं।

चिकित्सा--यदि द्रवातिरेक और वायु वा अग्निमान्द्य (आमाशय दौर्बल्य) के कारण यह रोग हो तो कफका शोधन करने के उपरान्त लोह भस्म १ चावल ६ माशे माजून फलासफा में मिला कर प्रातः सायंकाल सेवन कराएँ और ऊपर से १० तोले अर्क सौंफ में २ तोले मधु मिला कर उबाल कर पिलाएँ तथा रात्रि में हब्ब इयारिज ७ माशा या अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला खिलाते रहें तथा रोगन कुश्त (कुष्ठ तैल) या रोगन सोसन ग्रीवा पर मर्दन करें। यदि यह रोग उदर-क्रिमियों के कारण हुआ हो तो उसकी चिकित्सा करें।

पथ्यापथ्य--जरसुल् अस्नानवत्।

५--जरसुल् अस्नान

नाम--(अ०) जरसुल् अस्नान, जहाबोमाएल् अस्नान; (उ०, हि०) दाँत कुंद या खट्टे वा कोट होना; दाँतों की आब जाते रहना (सं०) दन्तहर्ष; (अं०) रफनेस ऑफ टीथ (Roughness of teeth), ओडंटोट्रिप्सिस (Odontotripsis)।

वर्णन--दन्त हर्ष (दाँत कुंद होने)में किसी खुरदरापन उत्पन्न करने वाले हेतु से दाँत सवेदना रहित एवं सुन्न हो जाते हैं। दाँत के नीचे कोई वस्तु चवाने से इतना कष्ट होता है कि शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाँतों की नज़ाकत (ज़हाबो माएल् अस्नान) में उनकी आब जाती रहती है और वे शीतल एवं उष्ण स्पर्श सहन नहीं कर सकते।

हेतु--अम्ल, संग्राही और फीकी वस्तु के निरंतर चबाने या आमाशय में

अम्लता अधिक हो जाने से दाँतों की कुंदी अर्थात् दाँत कोट होना और बर्फ आदि अत्यन्त शीतल द्रव्यों के सेवन या बारंबार दाँत साफ कराने के कारण दाँत की आब जाते रहने से नज़ाकत रोग उत्पन्न होता है।

लक्षण--दाँतों की कुंदी में दाँत खट्टे हो जाते हैं और वस्तुओं को चबाने से कष्ट अनुभव होता है। दाँतों की नज़ाकत में भी वस्तुओं को चबाने से कष्ट अनुभव होता है और उष्ण एवं शीत स्पर्श सहन की शक्ति नहीं रहती।

चिकित्सा-दोनों में प्रायः गर्म वस्तुओं का सेवन लाभकारी होता है। सुतरां गर्म रोटी का निवाला (कवर) या गर्म कबाब दाँतों के नीचे दबाने से लाभ होता है। २ तोले गुलकन्द असली में ६ माशा सौंफ मिला पकाकर पिलाने से भी उपकार होता है। नमक, सातर कोही, जरावंद तवील, शिब्ब यमानी (फिटकिरी) सबको बराबर-बराबर ले पीस कर दाँतों पर मलते रहने से भी लाभ हो जाता है। कुछ काल चाँदी का छल्ला दाँतों में रखने से लाभ होता है। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो कफका मुंजिज (पाचन) पिलाकर शोधन करें। तदुपरान्त इयारिज फैंकरा सेवन करायें और दाँतों पर मलवायें।

पथ्य--बकरी के मांस का शूरबा, चपाती, करेला, तुरई, मूँग, अरहर की दाल आदि।

अपथ्य--अम्ल, बर्फ, आलू, भिंडी, गोभी, उड़दकी दाल, टमाटर और अचार आदि।

६--हिक्कतुल् अस्नान

नाम--(अ०) हिक्कतुल् अस्नान; (उ० हिं०) दाँत की खुजली; (अं०) इरिटेशन इन टीथ (Irritation in teeth)।

हेतु और लक्षण--यह रोग कभी-कभी दुष्ट गुणान्वित जल पीने या तीक्ष्ण एवं क्षोभकारक आहार सेवन करने से हो जाया करता है। उष्ण एवं क्षोभकारी दोषोत्पन्न खाद्य एवं पेय का कुछ अंश दन्तमूल की ओर गिर कर दाँत और मसूढ़ों में खुजली उत्पन्न कर देता है। यदि शरीर के शेष भाग में भी यही दोष फैल गया हो तो और स्थानों में खुजली प्रतीत हुआ करती है। इस प्रकार की खुजली से दाँतों में यह अवस्था हुआ करती है कि जब तक रोगी उनको पीस-पीस कर खुजलाता न रहे, शांति नहीं मिलती।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--सौदा की शुद्धि के उपरान्त (१) अर्क गुलाब और सिरका या (२) सिकंजबीन सादा या असली से कुल्लियाँ करायें। यदि रोगी की प्रकृति शीत लिये हो तो (३) सिरका में मधु और चुडैल का तेल (कतरान) पका कर उसका कवल धारण करने और पतला लेप करने से लाभ होता है।

उष्ण एवं दोष-संशमनार्थ आंतरिक रूप से (४) १० तोला तरबूज के रस में २ तोला सफेद शकर मिला कर या (५) १० तोला कुलफा का रस या (६) १० तोला हरे कासनी का रस, ४ तोला सिकंजबीन मिला कर पीने से लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--सौदा की शुद्धि के उपरान्त (१) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला या (२) अतरीफल जमानी ६ माशा अकेला या ६-६ तोला अर्क गावजवान और अर्क मुण्डी के साथ उपयोग करने से उपकार होता है। विशेष शुद्धिके लिये (३) हब्ब अफ्तीमून, (४) हब्ब इयारिज यथा विधि सेवन करने से लाभ होता है। उष्णता शमन और प्रकृति परिवर्तन के लिये (५) खमीरा आवरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा या (६) खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा अकेले या ५ तोला अर्क गजर ४ तोला, अर्क बादियान् ३ तोला, अर्क अंबर २ तोला और मिश्री मिलाकर सेवन करने से अद्भुत लाभ होता है। दाँत को दृढ़ एवं संक्षोभक द्रवों के उत्सर्ग के लिये (७) सुनून पोस्तमुगीलाँ वाला, (८) सुनून तम्बाकू मंजन की भांति दाँतों पर मलकर लगभग दो घंटे तक कुल्ली न करना और रात्रि में भी सोते समय दाँत पर मलकर सो रहना अतीव गुणकारी है।

पथ्य--शीतल और स्निग्ध आहार, जैसे छिली हुई मूँग की दाल, कद्दू, पालक, मुर्गीका बच्चा आदि का सेवन करें।

अपथ्य--तीक्ष्ण (कटुक), तिक्त और नमकीन पदार्थों से यावच्छक्य बचें।

७--तफ़त्तुत व तकस्सरुल् अस्नान

नाम-(अ०) तफ़त्तुतुल् अस्नान, तकस्सरुल् अस्नान; (उ० हिं०) दाँतों का रेज़ा-रेज़ा होना, दाँतों का टूटना (अं०) ओडंटोनेक्रोसिस (Odontonecrosis) केरीज ऑफ टीथ (Caries of teeth)।

हेतु और लक्षण--तफत्तुत और तकस्सुर में केवल यह अंतर है कि प्रथमोक्त में दाँत से छोटे-छोटे कण पृथक् होते हैं और अंतिमोक्त में उससे बड़े-बड़े टुकड़े टूट कर पृथक् होते हैं। कभी-कभी इस का हेतु दाँत का प्रकृतिस्थ द्रव होता है। पर कभी-कभी अत्यन्त रूक्षता से भी यह रोग हो जाता है। दोनों में विभेद करने के लिये यह देखना आवश्यक है कि दाँत बारीक, कृश एवं रूक्ष हैं तथा रोगी दुर्बल, अत्यन्त श्रमशील या वृद्ध है। यदि ऐसा हो तो समझ लो कि रोग का हेतु रूक्षता है। यदि इसके विपरीत हो, तो द्रवको रोगजनक दोष माना जायगा।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--द्रवातिरेक जनित तफ़त्तुत व तकस्सर में दोष के स्राव को रोकना और अत्यन्त संग्राही द्रव्यों से दाँतों को बल प्रदान करना लाभकारी होता है। अस्तु (१) फिटकिरी, (२) नौसादर और (३) मसीकृत माजू आदि

हर एक अलग-अलग शहद में मिला कर दाँतों पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। रूक्ष दोष में जो कठिनता पूर्वक आराम हो सकता है, रोगी की प्रगल्भता को रोकने के लिये स्निग्ध आहार, यथा--(४) यवमंड, (५) कद्दू मिश्रित आहार (कईय्य:) और (६) पालक युक्त आहार (इस्फानाखिय्य:) सेवन करना और रूक्ष आहार से परहेज आवश्यक एवं लाभकारी होता हैं। (७) इसबगोल का लुआब (८) मुर्गी के अंडे की सफेदी (९) गदही के दूध प्रभृति स्निग्ध द्रव्यों में से जो मिल जाय उसे कवल (मज्मजा--कुल्ली) की भाँति प्रयोग करने और (१०) रोगन बनफ्शा, (११) रोगन बादाम का अभ्यङ्ग करना तथा मुख में धारण करना और (१२) गायके मक्खन का लेप लाभकारी होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--द्रवातिरेक की दशा में कफसंशोधनोपरान्त (१) अतरीफल सगीर १ तोला या (२) अतरीफल उस्तूखुदूस १ तोला उपयोग करते रहें और विशेष शुद्धि स्वरूप (३) हब्ब इयारिज विधिवत् सेवन करें। वे सभी योग और मंजन आदि जिनका उल्लेख 'तहर्रुकुल् अस्नान' के प्रकरण में किया जा चुका है, इस रोग में भी लाभदायक हो सकते हैं। रूक्षता की दशा में मस्तिष्क के रूक्ष रोग तथा रूक्षाक्षेप के उपायों को ध्यान में रखें और स्नेहनार्थ (४) खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरबाला ५ माशा अकेले या लुआब बिहीदाना, शीरा मग्ज कद्दूए शीरीं प्रत्येक ८ माशा, शीरा उन्नाब ७ दाना, १२ तोले अर्क गावजबान में तुख्म निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा या मिश्री मिला कर पिलायें। इसके अतिरिक्त 'तहर्रुकुल् अस्नान' के प्रकरण में मसूढे की कमजोरी एवं रक्ताल्पता के लिये उल्लिखित दाँत और मसूढों को बल प्रदान करने वाले योग--मंजन और कवल आदि का आवश्यकतानुसार उपयोग करें।

पथ्यापथ्य--रोग के प्रधान हेतु के विचारानुसार पथ्यापथ्य स्थिर करें।

८--तज़य्युदुल् अस्नान ।

नाम--(अ०) तज़य्युदुल् अस्नान; (उ०) दाँतों का बढ़ जाना; (सं०) दन्तशोथ, (अ०) ओडन्टायटिस (Odontitis)

हेतु और लक्षण--इसका हेतु यह है कि जहाँ दाँत साधारण आहारको ग्रहण करते हैं वहाँ उन दोषों (मवाद) को भी, जो उनकी ओर गिरा करते हैं, अपने भीतर स्थान दे सकते है, जिससे उनका आयतन एवं स्थूलता अधिक हो जाती है। अस्तु, जब उनके ऊपर कोई माद्दा स्रावित होता है तब उससे परिपूर्ण हो कर वे शोथयुक्त हो जाते हैं, जिसके साथ कभी-कभी दर्द भी होता है और कभी नहीं होता। यदि दोष गर्म हो तो शोथ वेदनापूर्ण होता है। परन्तु, द्रवातिरेक

(खिल्त रतूबी) की दशा में दर्द नहीं पाया जाता । कभी-कभी सूजे हुए दाँत इतने लंबे हो जाया करते हैं कि दूसरे दाँतों से भी किसी वस्तु के चबाने में बाधक हुआ करते हैं । इस प्रकार के वर्धित दाँत जन्मतः अन्य सभी दाँतों की अपेक्षया अधिक कड़े होते हैं । अथवा उनकी जड़ में सूजन हुआ करती है या वह अपने केंद्रस्थान से ऊपर उखड़ आते हैं ।

चिकित्सा--यदि उक्त शोथके साथ दर्द भी हो तो (१) सरारूका सिरावेध करवाने और (२) उपयुक्त विरेचन से शरीर का शोधन करने और आहार के सुधार एवं कमी से लाभ होता है । वेदना शमनार्थ (३) पोस्ते का दाना पड़े हुए यवमंड के सेवन से भी लाभ होता है । उक्त अवस्था में दोषविलोम करण की भी आवश्यकता होती है । अतएव (४) सिरका में मिलाये हुए मकोय के रस की अर्क गुलाब और गुलरोगन में से किसी एक के साथ कुल्लियाँ लाभकारी होती हैं । यदि दाँतों की सूजन वेदनारहित हो तो दोषपाचनोपरान्त (५) मत्बूख अफ्तीमून से सामान्य शोधन और पुनः (६) हब्ब इयारिज से मस्तिष्क की विशेष शुद्धि करना स्वास्थ्य का हेतु होता है । यदि कोई दाँत जन्मज कठोरता के कारण लंबा हो गया हो, तो उसे दो अंगुलियों या किसी लोहे के यन्त्र में पकड़ कर (७) रेतीसे रगड़ डालना श्रेष्ठतर होगा, जिसमें वह अन्य दाँतों के बराबर हो जाय । जड़ की सूजन से जो लम्बाई होती है उसके लिये (८) कीफाल का सिरावेध और उपयुक्त संशोधनों का व्यवहार आवश्यक है । यदि जड़ में दोष संचित हो जाने के कारण दाँत उखड़ आया हो तो सर्वथा अलग हो जाने की दशा में असाध्य होता है । परन्तु सम्बन्ध बना रहने पर (९) सरारू का सिरावेध एवं दोष संशोधनोपरान्त (१०) शिब्ब यमानी और (११) इन्द्रायन को सिरका में उबाल कर उससे कुल्लियाँ करने और उखड़े हुए दाँत को उसकी जड़ में प्रविष्ट करके (१२) चाँदी या सोने के तार से बाँध देने से उसकी पुनः स्थिरता एवं जीवन का साधन बन जाता है । तदुपरान्त (१३) मस्तगी या (१४) शिब्ब यमानी पीस कर जड़ में छिड़कने से जड़ मजबूत होती है और आगामी पतित होनेवाले दूषित दोष को ग्रहण नहीं करती ।

९--तस्हीलो नबातेल् अस्नान

नाम--(अ०) तस्हीलो नबातेल् अस्नान; (उ०) दाँत आसानी से उगना, (हि०) दाँत सरलता से निकलना; (अं०) ईजी ओडनटायसिस (Easy Odontiasis)

बालकों के सहज दन्तोद्गम का उपाय यह है कि जब अगले दाँतों के प्रगट होने के लक्षण दिखाई पड़े तब मसूढ़ों को वसा एवं मज्जा से तर रखा जाय, विशेष

कर (१) मुर्गी की वसा और (२) खरहे की मज्जा (मग्ज) मलने से बहुत शीघ्र दाँत निकलते हैं। इसके अतिरिक्त (३) मधु एवं मक्खन या (४) बादाम का तेल या बत्तख की चर्बी से मसूढ़ों को स्नेहाक्त करते रहने से भी बहुत लाभ होता हैं। एतत्कालीन वेदना नष्ट करने के लिये (५) मकोय का रस गुलरोगन में मिला कर गरम-गरम मलने से लाभ होता है। किसी-किसी के मत से बालक के गले में (६) सीप लटकाने या (७) रीछ या (८) घोड़े या (९) कुत्ते का दाँत लटकाने से भी विशेष रूप से दाँत सहज में निकल आते हैं।

दन्तवेष्टगत रोग

१--वरमुल्लिसा

नाम-(अ०) वरमुल्लिस्सः ; (उ०,हि०) मसूढ़ों की सूजन; (सं०) दन्तवेष्ट प्रकोप ; (अं०) जिंजिवाइटिस (Gingivitis)।

भेद्--इस के निम्न तीन भेद होते हैं:-(१) रक्तज, (२) पित्तज, (इन दोनों को उष्ण शोथ कहते हैं) और (३) कफज (इस को शीतल शोथ कहते हैं)

हेतु--दन्तविकार, प्रसेक एवं प्रतिश्याय, आमाशयिक वाष्प, पारदविषमयता, दन्तमूलगत रक्तस्राव, बालकों में दन्तोद्भेद, फिरङ्ग और कण्ठमाला आदि।

लक्षण--रक्तज में लाली, एवं दर्द और टीस होती है। पित्तज में लाली एवं दाह होता है, शोथ कम और दर्द अधिक होता है। कफज शोथ का रङ्ग सफेद और शीत-स्पर्श होता है और दर्द एवं दाह कम होता है।

चिकित्सा--निदानपरिवर्जन करें। गर्म (पित्तज और रक्तज) सूजन में गुलनार, आर्दमूरद, तुख्ममूरद, लाल चन्दन, सुपारी, सुमाक, धनिया प्रत्येक ६ माशा, पानी में उबालकर उससे कुल्लियाँ करायें। गुलनार, गुलाब के फूल, मसूर, मसीकृत सुपारी, माजू, सुपारी, प्रत्येक ३ माशा कूट-छान कर मसूढ़ों पर मलें और १२ तोला अर्क शाहतरा में ३ माशे बिहीदाने का लुआब, ५ दाने उन्नाब और ३ माशे काहू के बीजों का शीरा निकालकर २ तोले शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो शोधन करें और पुनः ये ही उपाय ग्रहण करें। कफज शोथ में मध्वम्बु (माउल्अस्ल) से कुल्लियाँ करें और सुनूने तम्बाकू या सुनूने पोस्त मुगीलाँ दाँतों पर मल देवें। आवश्यकता होने पर शोधन करें।

पथ्यापथ्य--कुरूहलिस्सावत्

२—कुरूह व नासूर लिस्सा

नाम--कुरूह (अ०) क़ुरूहुल्लिस्सः, तक़य्युहुल्लिस्सः ; (उ०) मसूढ़ों से पीप आना, मसूढ़ों के पुराने पीपदार ज़ख्म; (सं०) दन्तवेष्ट (क), (अं०) पायोरिया आॅल्विओलौरिस (Pyorrhoea Alveolaris) सप्पूरेटिव्ह जिन्जिवाइटिस (Suppusative Gingivitis)।

नासूर (अ०) नासूरुल्लिस्सः, तक़य्यूह अवारी; (उ० हि०) मसूढ़ों का नासूर; (सं०) दन्तनाड़ी; (अं०) साइनस इन् दि गम्स (Sinus in the gums), रिग्स डिजीज (Rigg's disease)।

वक्तव्य—जब दन्तमूल के चतुर्दिक् मसूढ़ों के भीतर व्रण बनकर उससे पीप बहने लगती है तब उन्हें **कुरूह लिस्सः** (दन्तवेष्ट) कहते हैं। जब ये व्रण बहुत पुराने एवं दुर्गन्धयुक्त हो जाते हैं तब उन्हें **नासूरलिस्सः** (दन्तनाडी) के नामसे अभिधानित करते हैं। इसमें एक छिद्र वा नाली होती है जिसमेंसे पिलाई लिये एक प्रकारका द्रव (जर्दाब) बहा करता है। इसका रोपण कठिन होता है।

भेद--यद्यपि इस रोग का कोई विशिष्ट भेद नहीं है, तथापि जब व्रण में शोथ एवं दुर्गन्ध न हो तब उसको 'कर्हा सादा' और जब शोथ एवं दुर्गन्ध अधिक हो तो तब 'कर्हा खबीसा' कहते हैं। जब ये व्रण दिनों दिन दूषित हो कर गलते जायँ तब उन्हें 'आकिलः' या 'गोश्तखोरः' कहते हैं।

हेतु--इस रोग का कारण साधारणतया पित्त या रक्त वा दूषित द्रव होता है, जिन में विदग्ध सौदा की प्रगल्भता होती है। दाँतों को स्वच्छ न करने से उन पर मल जम जाता है और भोजन के कण दाँतों में दूषित होकर इस रोग को उत्पन्न कर देते हैं। भोजन को भली भाँति चबाकर न खाना तथा मधुर भोजन का अतिसेवन भी इस रोग की उत्पत्ति में सहायक होता है। वातरक्त और आमवातिक प्रकृति के लोगों को यह रोग अपेक्षाकृत अधिक होता है।

लक्षण--दन्तमूल के ऊपर पीले रंग का प्रचुर कड़ा मल (हफ़्र—शर्करा) होता है। कभी-कभी मसूढ़ों से रक्त बहता है। फिर उनमें पीप पड़ जाती है जो मसूढ़ों को दबाने से भली भाँति प्रगट होती है। मुखसे दुर्गन्ध आने लगती है। दाँत सड़ कर हिलने लगते हैं और अन्त में गिड़ पड़ते हैं। कभी-कभी यह रोग एक दाँत के मसूढ़ों में उत्पन्न हो कर उसीमें सीमित रहता है। पर प्रायशः फैल कर समस्त मसूढ़ों को आक्रान्त कर लेता हैं। चेहरे का रंग प्रायः मलिन होता है।

वक्तव्य—दन्तवेष्ट और दन्तनाड़ी एक अत्यंत कष्टदायक, दुष्ट एवं दुश्चिकित्स्य रोग है जो तीव्र प्रकार के उपद्रव प्रगट होने पर प्रायः सांघातिक सिद्ध होता है। परंतु दाँत सड़कर गिर जाने पर साधारणतः रोग आराम हो जाता है। पुराना होने पर कभी-कभी इसके साथ (तप व दिक) भी हो जाता है।

चिकित्सासूत्र—इस रोग में मुख और दाँत को स्वच्छ रखना चाहिए तथा संग्राही एवं जीवाणुनाशक ओषधियाँ सेवन करनी चाहिए, यदि दाँतों पर कठिन मल हो तो उसे दन्तचिकित्सक से साफ कराना चाहिए। यदि रोग का असर रक्त तक पहुँच गया हो तो रक्तशोधक ओषधियों का प्रयोग कराना चाहिये। यदि निरंतर की जानेवाली चिकित्सा से लाभ न हो और उसका प्रभाव साधारण स्वास्थ्य एवं अन्यान्य अंगों पर पड़ रहा हो, तो पुनः मसूढ़ों का छेदन करवा देना अथवा दाँतों को निकलवा देना चाहिए।

चिकित्सा क्रम—२ तोले मिश्री के चूर्ण मिले हुए ५ माशे सौंफ, ५ दाने उन्नाब और ३ माशे इलायचीदाना के शीरा के साथ १ तोला अतरीफल शाहतरा प्रातः सायंकाल सेवन करायें, भोजनोत्तर ३ गोली हब्ब पपीता खिलायें। गुलनार, माजू, सुमाक, जौजुस्सरो, समूचा मसूर, ऊदसलीब, सूखा मकोय, धनिया, सफेद चन्दन प्रत्येक ९ माशा को अंगूरी सिरका और अर्क गुलाब प्रत्येक १ पाव में पका छान कर इससे गण्डूष करायें। तदुपरान्त झाऊ और अकरकरा प्रत्येक ९ माशा, ममीरा ३ माशा, पीली हड़ ६ माशा, गुलाबके फूल, नौसादर, कबाबचीनी और समुद्रफेन प्रत्येक १॥ माशा, गुलनार और सुमाक प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा—समस्त द्रव्यों को कूट-छान कर चूर्ण बना कर रखें और मंजन की भाँति लगवायें। दुष्टव्रण एवं दन्तनाड़ी में ताजा अनबुझा चूना १ तोला, पीला हड़ताल, लाल हड़ताल, सज्जी, जंगार और अकाकिया प्रत्येक ६ माशा—सब को कूट-छान कर और तीक्ष्ण सिरका में मिलाकर टिकिया बनाकर सुखायें और पीस कर व्रण के ऊपर अवचूर्णन करें (छिड़कें)। कुछ कालोपरान्त मुख को अर्क गुलाब आदि से धोयें या जराबन्द मुदहरज को पीसकर मधुमें मिलाकर लेप करें। यदि आवश्यकता हो तो दोष का पाचन करके विरेचन देवें।

पथ्य—बकरीके मांसका शूरबा, मूँग या अरहर की दाल, कद्दू, तुरई, करेला, मेथीका साग, पालक का साग, आदि।

अपथ्य—अरबी, आलू, बैगन, भिंडी, आदि बादी पदार्थ तथा बर्फ एवं अम्ल से परहेज करें।

३—लस्सा दामिय्या

नाम-(अ०) लस्सः दामिय्यः, स्करबूत; (उ०,हिं०) मसूढ़ों से खून आना, गोश्तखोरा; (अं०) ब्लीडिंग गम (Bleeding gum), स्कर्वी (Scurvy)।

वर्णन—इस रोग में मसूढ़े पिलपिले हो जाते हैं और उनसे रक्त बहता है तथा रोगी बहुत दुर्बल हो जाता है।

हेतु—मसूढ़ों की पोषण शक्ति का दौर्बल्य या रक्त-प्रकोप वा रक्तविकार इस रोग का साधारण हेतु है। पर किसी-किसी ने मसूढ़े की रगों की दुर्बलता और पोलापन को भी इसका उत्पादक कारण स्वीकार किया है।

लक्षण—रक्त प्रकोपकी दशामें मसूढ़े लाल होते हैं और इससे भिन्न दशाओं में सफेद एवं विवर्ण (बदरंग) होते हैं। यदि रक्तविकार इसका कारणभूत हो तो रक्त दुष्टि के अन्यान्य लक्षण पाये जायेंगे। यदि केवल रगों की दुर्बलता के कारण हो तो रगें रक्त से परिपूर्ण एवं नीली होंगी परन्तु, रक्तदुष्टि एवं अधिकता के अन्यान्य लक्षण इसके साथ नहीं होंगे। यदि किसी पारद के योग या किसी तीक्ष्ण ओषधि के सेवन से हो तो इससे पूर्व कोई ऐसी ओषधि सेवन की गई होगी। किसी दाँत आदि के हिलने वा खराबी से हो तो वह विद्यमान होगी।

चिकित्सा—रक्त की प्रगल्भता एवं रक्तदुष्टि के कारण मसूढ़ों से रक्तस्राव हो रहा हो, तो सिरावेध करायें और रक्तशोधक ओषधियाँ पिलायें। यदि केवल मसूढ़ों की रगों की दुर्बलता से हो तो संग्राही ओषधियाँ लगायें और बलवर्धक-ओषधियाँ सेवन करायें। ६ माशा फिटकिरी महीन पीसकर एक बोतल पानी में मिलाकर उससे कुल्लियाँ करायें। सूजन दूर करने और रक्तस्राव रोकने के लिये यह परम गुणकारी है। गुलबाबूना, इक्लीलुल्मलिक, अलसी और मेथी प्रत्येक ६ माशा सबको पानी में उबालकर उससे कुल्लियाँ कराने और २ तोले पोस्ते की डोडी के काढ़े से सेक करने से लाभ होता है। यह मंजन मसूढ़ों पर मलें—रूमी मस्तगी, हरा माजू, सफेद कत्था और भुनी हुई फिटकिरी प्रत्येक ३ माशा को कूट-छानकर मंजन बनायें और आवश्यकतानुसार प्रातः सायंकाल मसूढ़ों पर मलें। सुनूने पोस्त मुगीलाँ या सुनूने कलाँ या सुनूने तंबाकू या सुनूने जर्द में से कोई एक सुनून (मंजन) आवश्यकतानुसार दातों और मसूढ़ों पर मलने से लाभ होता है।

अपथ्य—उड़द की दाल, अरबी, आलू, भिंडी, मटर और बादी एवं गलीज पदार्थ और शीतल जल के सेवन से परहेज करें।

पथ्य—बकरी के मांस का शूरबा, चपाती, मूँग और अरहर की दाल, करेला, मेथी का साग, बिस्कुट, पाव रोटी आदि अभ्यासानुकूल सेवन करें।

कण्ठान्न प्रणाली स्वरयन्त्र रोगाध्याय ६

नाम—(अ०) अम्राजुल्हलक वल्मरी वलहंजरः ; (उ०) हलक वमरी व नरखरा की बीमारियाँ ; (हिं०) कण्ठ, अन्नप्रणाली और स्वरयन्त्र के रोग ; (अं०) डिजीजेज आफ दी थ्रोट, ईसोफैगस एण्ड लेरिंक्स (Diseases of the throat, Oesophagus and Larynx)।

वक्तव्य—कण्ठरोगों की सिद्धान्ततः सर्वोत्तम चिकित्सा सिरावेध (फस्द) है। यदि संशोधन अपेक्षित हो तो तात्कालिक अवश्यकता के लिये दोष-पाचन (मुंजिज) के बिना भी विरेचन दे सकते हैं। कण्ठरोगों में कष्ट के समय हाथ-पाँव खींचकर बाँधना भी एक हितकर उपाय है।

कण्ठरोग

१—इस्तर्खाउल्लहात

नाम—(अ०) इस्तर्खाउल्लहात, सुक़ूतुल्लहात ; (उ०) कौवा गिरना, घुंडी पड़ना, कौवा लटक जाना ; (सं०) गलशुण्डिका, कण्ठशुण्डी ; (अं०) इलॉङ्गेशन आफ दी युहृव्युला (Elongation of the Uvula)।

हेतु—रक्त प्रकोप के कारण उष्ण विप्रकृति या कफ प्रकोप के कारण स्निग्ध एवं शीतल विप्रकृति की उत्पत्ति इसका हेतु है। यह रोग स्निग्ध प्रकृति के लोगों, विशेषतः बालकों को और रबीकी उष्ण स्निग्ध तथा शरद् की शीतल स्निग्ध ऋतु में अधिक हुआ करता है और युवाओं की अपेक्षया बालक इससे अधिक आक्रांत हुआ करते हैं। कभी इसके साथ ज्वर भी होता है। कभी-कभी कण्ठगत क्षोभ या पुरानी सूजन अथवा कफ की अधिकता से कण्ठ की झिल्ली ढीली होकर कौआ गिर पड़ता है।

लक्षण—कौवा ढीला और लंबा होकर नीचे लटक जाता है। रोगी के कण्ठ में किसी वस्तु के होने की प्रतीति होती है जिसके कारण कण्ठ के भीतर क्षोभ एवं सुरसुराहट होकर बारंबार शुष्क खाँसी उठती है जो साधारणतया चित्त लेटने पर आती है। कभी खाँसी की तीव्रता से इतना उत्क्लेश एवं कष्ट होता है कि उससे वमन हो जाता है। निगलने में रोगी को कष्ट अनुभव होता है। यदि शिशु इस रोग से आक्रांत हो तो वह कृश और दुर्बल हो जाता है। जीभ को बाहर खींचकर रोगी के कण्ठ में देखने पर कौवा स्पष्टतः लटका हुआ दिखाई देता है।

निदान—रक्तज (उष्ण-स्निग्ध विप्रकृति) में गर्मी, शोथ और लाली के साथ प्यास भी होती है और कभी ज्वर भी होता है। कफज में कौए का रंग

सफेद होता है, शोथ और प्यास कम होती है। परंतु मुंह से पुष्कल लार बहती है। कौए की जड़ पतली और सिर मोटा दिखाई देता है। अन्य हेतुओं की विद्यमानता उनके निदान के लिये पर्याप्त है।

चिकित्सासूत्र——रोगी को साधारण स्वास्थ्य के ध्यान रखने का आदेश करें और ऐसी सभी बातों से बचने के लिये कह देवें जिनसे कण्ठ के भीतर क्षोभ होता है। प्रगल्भ दोष का यथाविधि पाचन और शोधन करने के उपरांत छींक उत्पन्न करें और गलशुण्डी तथा उसकी जड़ के ऊपर संग्राही औषधियाँ लगायें।

चिकित्साक्रम——रक्तज में सिरावेध करने के उपरांत सिरका और अर्क गुलाब मिलाकर उससे गण्डूष करायें। अथवा पोस्त अनार, माजू, गुलनार फारसी, बबूल की छाल प्रत्येक १ तोला सबको १ एक सेर पानी में उबालकर उससे गण्डूष करायें। इसी प्रकार विलायती मेंहदी, गुलनार, गुलाब के फूल प्रत्येक ६ माशा के क्वाथ में ४ तोले शर्बत शहतूत मिलाकर उससे गण्डूष कराने से भी लाभ होता है। निशास्ता को सिरका में पीसकर अथवा मुलतानी मिट्टी को पानी में पीसकर चँदिया पर लगाना लाभकारी उपाय है। गुलाब के फूल, हरा माजू, सुपारी, गुलनार और सुमाक प्रत्येक १ माशा को महीन पीसकर मलमल के कपड़े में छान कर छोटे चमचे में रखकर ऊँगली से अथवा रूई के फाहा से गलशुण्डी पर लगाये अथवा दाँत में लगाने की मिस्सी ऊंगली में लगाकर उससे पतित (स्थानच्युत) गलशुण्डी को उठायें और मुलतानी मिट्टी तथा इसबगोल प्रत्येक १ तोला सिरका में मिलाकर कपड़े पर फैलाकर तालू के ऊपर लगायें।

कफज गलशुण्डी में हब्ब इयारिज से शोधन करने के उपरांत अंजीर और राई प्रत्येक २ तोले को सेर भर पानीमें पका कर उससे गण्डूष करायें और भुनी हुई फिटकिरी ३ माशा को ६ माशा मधु में मिलाकर गलशुण्डी पर लगाने से उपकार होता है। इसी प्रकार माजू का लेप भी लाभकारी होता है। गले में रूमाल डाल कर ऊपर को उठाने से भी लाभ होता है।

पथ्य——गेहूँ की दलिया, यवमंड, मूँग की दाल, बकरी का शूरबा आदि।

अपथ्य——अम्ल, तेल, आलू, गोभी, अरबी आदि बादी एवं गरिष्ठ पदार्थों से परहेज करें।

२——वरमुल्लहात

नाम——(अ०) वर्मुल्लहात ; (उ०) कौए की सूजन ; (सं०) गलशुण्डीशोथ ; (अं०) यूव्हयुलाइटिस (Uvulitis)।

हेतु और लक्षण——इस रोग के विभिन्न हेतु होते हैं। यह भी कण्ठशोथ (खुनाक) एवं मुखपाक की भाँति (१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज

(४) सौदावी और कभी (५) प्रसेकज (नजली) होता है। हेतुओं के निदान के लिये भी उन्हीं साधनों का आश्रय लिया जाता है। अस्तु (१) रक्तज में शोथ और शोथ स्थल लाल और (२) पित्तज में पीला होता है। दोष की तीक्ष्णता के विचार से शोथ एवं दर्द में न्यूनाधिकता होती है। पित्तज में मुख-शोष एवं तृष्णाधिक्य होता है। (३) कफज में शोथ का रंग सफेद और वह नरम तथा वेदनारहित होता है। (४) सौदावी में शोथ काला एवं कठोर होता है। मुख अम्ल होता है।

चिकित्सा--(१) रक्तज में रक्तज खुनाक की भाँति सिरावेध, विरेचन, लेप, गण्डूष और ठंढाई का प्रयोग कराते हैं। धनिया और समूचा मसूर प्रत्येक १ तोला, कासनी और काहू के बीज प्रत्येक ६ माशा, हरी कासनी के पत्र, हरे मकोय के पत्र और हरे तूत के पत्र प्रत्येक ५ तोला--सबको ऽ१ एकसेर पानी में उबाल-छानकर ५ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर गण्डूष करने और गुलाब के फूल, गुलनार, लाल चंदन और कपूर सबको बराबर-बराबर लेकर सबको महीन पीसकर गलशुण्डी पर मलने से बड़ा उपकार होता है। (२) पित्तज गलशुण्डी शोथ में पित्तज मुखपाक या खुनाक (कण्ठशोथ) की भाँति चिकित्सा करें। (३) कफज गलशुण्डीशोथ में कफज मुखपाक या खुनाक की भाँति उपचार करें। (४) सौदावी गलगण्डीशोथ में माउज्जुब्न और सौदाकी विरेचनीय ओषधियाँ पिलायें। प्रत्येक दोष में उसके उचितरीति से (खुनाक और मुखपाक में उल्लिखित) संशोधन का ध्यान रखें। रक्तज में गुद्दी पर जोंक लगवाना या सींगी लगवाना भी लाभकारी होता है। (५) प्रसेकीय गलशुण्डीशोथ में प्रसेक (नजला) को रोकनेवाली ओषधियों का उपयोग करें और हब्ब इयारिज आदि से मस्तिष्क का यथाविधि शोधन करें और गुलनार अकाकिया, पोस्ते का दाना और खुरासानी अजवायन बराबर-बराबर लेकर काढा बनाकर उससे गण्डूष करायें।

३--खुनाक

नाम--(अ०) खुनाक़; (फा०) खबः, बादजहरः; (उ०) खुनाक; (अं०) अन्जाइना (Angina), सीनन् की (Cynanche), सोर् थ्रोट (Sore throat)।

वर्णन--खुनाक का धात्वर्थ गला घुटना या दम घुटना है। परंतु यूनानी वैद्यक की परिभाषा में यह एक शोथ है जो कण्ठावयव अर्थात् गलान्तर्गन्थि कण्ठ और स्वरयन्त्र के बाहरी या भीतर की पेशियों में प्रगट होता है, जिससे रोगी को

श्वास लेना और खाना-पीना कठिन हो जाता है। इन सभी रोगों का अन्तर्भाव यूनानी वैद्य 'खुनाक' शब्द में करते हैं।

शोथ के स्थान भेद और लक्षणोंकी तीव्रता के विचार से उसके निम्न चार भेद होते हैं :--

(१) खुनाकमुत्लक--इसका वर्णन आगे होगा। (२) जुबहः यह एक दुष्ट प्रकार का खुनाक है जिसमें रोगी बोलने और निगलने की शक्ति नहीं रखता तथा पी हुई वस्तु नाक से निकल जाती है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे सिनन्की (Cynanche) कहते हैं। शैखुर्रईस जुबहा और खुनाक दोनों को एक ही मानते हैं। (३) खुनाक खानिका अर्थात् दम घोंटनेवाला खुनाक। वस्तुतः यह तीव्र प्रकार का जुबहा है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे सिनन्की सफोकेटिह्वा (Cynanche suffocative) कहते हैं। (४) खुनाक कलबी अर्थात् कुत्ते का खुनाक। यह एक अत्यन्त तीव्र प्रकार का खुनाक है, जिसमें रोगी कुत्ते (कलब--कुत्ता) की भाँति मुँह खुला रखता है और जीभ बाहर निकाले रखता है। पाश्चात्य वैद्यक में इसे सिनन्की मैलिग्ना (Cynanche maligna) कहते हैं। यह तथा जुबहा खुनाक के उभय भेद असाध्यतम होते हैं। इस प्रकार के तीव्र कष्ट से रोगी ३-४ दिन में मर जाता है। इनकी चिकित्सा ठीक रक्तज और पित्तज खुनाक के समान करनी चाहिये। इस विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि यूनानी वैद्यक में (१) गलान्तर्ग्रन्थिशोथ (वरम लौजतैन), (२) गलशुण्डीशोथ (वरम गल्समा), (३) कण्ठावयव शोथ और (४) स्वरयन्त्र पेशीशोथ सबको 'खुनाक' ही कहते हैं। अस्तु, नीचे इनमें से केवल खुनाक वा खुनाक मुत्लक का विवरण किया गया है।

खुनाक मुत्लक

नाम--(अ०) खुनाक़ मुत्लक़, ख़ुनाक़ लौज़िय्यः, वरम लौज़तैन, क़ुरूह लौजिय्यः; (उ०) गला पड़ना, लब्बे पड़ना; (सं०) गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, गलान्तर्ग्रन्थिव्रण; (अं०) टॉन्सिलाइटिस (Tonsillitis), क्विन्जी (Quinsy), अन्जाइना टॉन्सिलैन्स (Angina Tonssillans)।

वक्तव्य--यूनानी वैद्यकीय ग्रन्थों में वरम लौजतैन का पृथक् वर्णन नहीं किया गया, प्रत्युत खुनाक के प्रकरण में ही इसका उल्लेख मिलता है तथा उसको खुनाक का एक हेतु बतलाया गया है। अस्तु, किसी-किसी यूनानी वैद्य (हकीम) ने लौजतैन (गलान्तर्ग्रन्थि) या उनके आसन्नवर्ती पेशियों के शोथ से होनेवाले खुनाक को खुनाक मुत्लक माना है। किन्तु शैख ने गलशुण्डीशोथ के प्रकरण में गलान्तर्ग्रन्थिशोथ (वरम लौजतैन) की चिकित्सा भी लिखी है।

वर्णन--इस रोग में गलान्तर्ग्रन्थियाँ सूज जाती हैं। निगलने में कठिनाई होती है और कण्ठ के भीतर संक्षोभ की प्रतीति होती है। रोग की तीव्रता में उनके भीतर व्रण होकर अङ्गमर्द और न्यूनाधिक ज्वर भी हो जाता है।

भेद--विभिन्न हेतु और दोष के विचार से इसके निम्न चार भेद होते हैं :—(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदावी। यूनानी वैद्यक में प्रथम दोनों को उष्ण और अंतिम दोनों को शीतल व्याधि कहते हैं। पाश्चात्य वैद्यक में उष्ण को 'अक्यूट' और शीतल को 'क्रॉनिक' कह सकते हैं।

हेतु--यूनानी वैद्यक के अनुसार इस रोग के उत्तेजक हेतुओं में रक्त, पित्त कफ और सौदा इन चतुर्दोषों का अन्तर्भाव होता है अर्थात् जब गलान्तर्ग्रन्थियों में चतुर्दोषों में से किसी एक वा अधिक दोष की प्रगलभता होती है तब उनमें शोथ उत्पन्न हो जाता है। दुर्गन्धित वायु सूँघने, सर्दी लगने या वर्षा में भीगने से यह रोग हो जाता है। बाल्य और यौवनकाल में यह रोग अधिक हुआ करता है आमवात तथा अन्यान्य हुम्मयात अफिना भी इस रोग के हेतु होते हैं। कुछ कुटुंब और व्यक्ति इस रोग के लिये अधिक अनुकूल होते हैं। किसी-किसी को यह रोग बारंबार होता रहता है।

लक्षण और निदान--जिह्वामूलके समीप कण्ठ के भीतर वेदना एवं कष्ट अनुभव होता है। निगलने में कठिनाई एवं दर्द होता है। आसन्नवर्ती गुदद जाजिबा के शोथ से ग्रीवा में हनुकोण के स्थान पर शोथ और दवाने पर मामूली-सा शोथ पाया जाता है। न्यूनाधिक जाड़े से ज्वर चढ़ जाता है जो बालकों में विशेषकर १०३° तक या इससे भी अधिक हो जाता है। यदि शोथ अधिक हो तो पानी पीते समय कभी-कभी पानी नाक में चढ़ जाता है। रक्तप्रकोप की दशा में मुख और जिह्वा का वर्ण लाल होता है, स्वाद मधुर, सिर और कण्ठ की सिरायें रक्त से परिपूर्ण होती हैं। पित्तप्रकोप में मुख शुष्क एवं कड़वा होता है। तृष्णाधिक्य, अनिद्रा और जिह्वा पीली होती। कण्ठ में टीस पड़ती है। दाह (सोजिश), गर्मी और बेचैनी पाई जाती है। परंतु रक्तज की अपेक्षया तनाव कम होता है। कफज में कण्ठ, चेहरा, जिह्वा और नेत्र का वर्ण सफेद होता है। शोथ अपेक्षाकृत अधिक होता है। प्रचुर लाला-स्राव होता है। तृष्णा, ज्वर, दाह और दर्द प्रभृति उपद्रव अपेक्षाकृत कम तीव्र होते हैं। गौरव एवं उद्वेष्टन अधिक होता है, किन्तु मृदुता के कारण निगलने में अधिक कठिनाई नहीं होती। रोगी साधारणतः मुख खोलकर साँस लेता है। सोते समय खर्राटे मारता है और स्वर भारी हो जाता है। सौदाके प्रकोप की दशा में शोथ स्याही मायल होता। जिह्वा, नेत्र और कण्ठ का वर्ण—रंग भी खाकी होता है। मुख शुष्क और स्वाद अम्ल होता है।

परीक्षा--रोगी का मुँह भली भाँति खोलवाकर जीभ के ऊपर एक चमचा या जीभ को दबाने वाला एक विशेष यन्त्र (टंग डिप्रेसर) रखकर नीचे दबायें और खूब स्वच्छ प्रकाश में रखकर देखें। यदि सूजी हुई गलान्तर्ग्रन्थियाँ भली भाँति दिखाई नहीं देवें तो रोगी से आ-आ कहलावें। इससे ग्रन्थियां ऊपर उठकर भली भाँति दिखाई देने लगती हैं।

प्रगति और परिणाम--साधारणतया चार-पाँच दिन में सूजन उतरकर सप्ताह दो सप्ताह में आराम हो जाता है। रोग तीव्र होने पर पीप पड़कर फोड़ा बन जाता है और अत्यधिक कष्ट का कारण होता है। कभी गलान्तर्ग्रन्थियाँ बढ़कर बहुत कड़ी हो जाती हैं तथा साँस लेने और निगलने में कठिनाई होती है। दुर्बल युवती स्त्रियों और कण्ठमालायुक्त बालकों में प्रायः ऐसा होता है। कभी गलान्तर्ग्रन्थियाँ बढ़कर कर्ण के आन्तरिक छिद्रों पर इतना दबाव डालती हैं कि रोगी बहिरा हो जाता है।

चिकित्सासूत्र--कब्ज हो तो उसे दूर करें। गुलबनफ्शा घी में भूनकर बंधवाएँ अथवा उड़द की कच्ची पक्की रोटी पर गुलरोगन लगाकर गले पर बाहर की ओर बंधवाएँ और १ तोला गुलबनफ्शा पकाकर पिलायें। प्रायः इन उपायों से आराम हो जाता है। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो यथाविधि दोष का पाचन और शोधन करें और रक्तज हो तो जोंक लगवायें।

चिकित्साक्रम--यदि रक्त प्रकोप के कारण सूजन हो तो निम्नलिखित ठंढाई सेवन करायें--अर्क शाहतरा ६ तोला और अर्क मुरक्कब फसाद खून ६ तोला में ३ माशा बिहीदाने का लुआब और ५ दाना उन्नाब तथा ३ माशा छिले हुए काहू के बीज का शीरा निकालकर १२ तोला शर्बत तूतस्याह मिलाकर पिलायें तथा पाव भर गाय के दूध में २ तोला अमलतास का गूदा उबालकर उससे गण्डूष करायें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो गले पर जोंक लगवायें और यथाविधि दोषपाचन (मुंजिज) और विरेचन देकर उपरिलिखित उपाय करें। पित्तज में १० तोला अर्क नीलूफर में ३ माशा बिहीदाने का लुआब और ३-३ माशा खीरा-ककड़ी के बीज एवं काले कुलफा के बीज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत आलू मिलाकर पिलाने से तथा १०तोला हरे धनिये के रस में ६ माशा पीला रसवत मिलाकर गण्डूष कराने से उपकार होता है। कफज में अनीसून, सौंफ, मस्तगी, बालछड़ प्रत्येक ५ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें और सायंकाल १ माशा मस्तगी पीसकर २ तोला गुलकंद में मिलाकर खिलायें अथवा ७ माशा जुवारिश जालीनूस खिलाकर ऊपर से ६-६ तोला अर्क सौंफ और अर्क पान २ तोला शर्बत तूत मिलाकर पिलायें और अंजीर विलायती ७ दाना, मूली के बीज ७ माशा उबाल-छान-

कर उससे गण्डूष करायें। अमलतास का गूदा ६ माशा, गूलबाबूना, इकलीलुल्मलिक, गेरू, पीला एलुआ और जदवार खताई प्रत्येक ६ माशा--सबको हरे मकोय के रस में पीसकर कुनकुना गरम करके कण्ठ और गले पर लेप करें।

सौदावी में उन्नाब ७ दाना, गुलबनफ्शा ७ माशा, छिली हुई मुलेठी और गावजबान प्रत्येक ५ माशा सबको उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर पिला देवें और प्रकृति को मृदु करने के लिये तीव्र बस्तियों का उपयोग करें। सूजन उतारने के लिये स्थानीय रूप से अलसी, धनिया, सूखा मकोय और पोस्ते की डोडी प्रत्येक ५ माशा सबको जल में पका-छानकर ३ माशा पीला रसवत मिलाकर उससे गण्डूष करायें और गुलबाबूना, मेथी, अलसी, खतमीके बीज, सोआ बीज प्रत्येक ६ माशा और बर्ग कर्नब १ तोला सबको पानी में कूट-पकाकर गुलरोगन और बत्तख की चर्बी १-१ तोला मिलाकर कुनकुना गरम करके गले पर लेप करें। प्रसेकीय में जिसके साथ कण्ठ के भीतर (सोजिश) हो विहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना और लिसोढ़ा ६ दाना पानी में पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर पिलायें। यदि प्रसेकज (नजलावी) के साथ सूजन तो न हो, किन्तु पिपासा प्रभृति उपद्रव हो तो गुलबनफ्शा ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, गावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा पानी में पकाकर और छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलाएँ। यदि सूजन में पीप पड़ जाय तो मेलतहाँ (एक प्राचीन शस्त्र कर्म करने का यन्त्र है) से भेदन करें। भेदन करते (चीरा देते) समय शस्त्र का रुख कण्ठविवर की ओर रखना चाहिये।

सिद्धयोग--बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता प्रत्येक ३ माशा, मग्ज बिहीदाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, खीरा-ककड़ी के बीज का मग्ज प्रत्येक २ माशा, बादाम का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना और सत मुलेठी प्रत्येक ४ माशा, समस्त द्रव्यों को पीसकर इसबगोल के लुआब में मिलाकर छोटी-छोटी टिकियाँ या गोलियाँ बनायें। इसे मुख में रखकर लुआब चूसने से गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, कण्ठशोथ और कास आराम होता है।

पथ्य--गेहूँ की पतली दलिया, मूँग की दाल का पानी (यूष), यवमंड, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा आदि।

अपथ्य--मांस, वैगन, अरवी, आलू, अम्ल, तेल और बर्फ।

४—दर्दे गुलू

नाम--(अ०) खबः ; (उ०) गले का दर्द, दर्दे गुलू ; (सं०) कण्ठक्षत (अं०) सोरथ्रोट (Sore Throat)।

(अ०) वरमुल्हलक हाद्द ; (उ०) गले का शदीद वर्म ; (सं०) तीव्र कण्ठशोथ, ग्रसनिका शोथ, (अं०) अक्यूटफेरिंजायटिस (Acute Pharyngitis)।

(अ०) वरमुल्हलक मुज्मिन, खुशूनतुल हलक ; (उ०) गले का कोहना वर्म, गले की खारिश ; (सं०) चिरज कण्ठशोथ, कण्ठगतकण्डू ; (अं०) क्रॉनिक फेरिंजायटिस (Chronic Pharyngitis)।

(अ०) बुसूरुल्हलक ; (उ०) गले की फुंसियाँ ; (सं०) कण्ठगत पिड़का ; (अं०) ग्रेन्यूलर फेरिंजायटिस (Granular Pharyngitis)।

वर्णन--इस रोग में कण्ठ की श्लेष्मल कला में सूजन हो जाती है, जिससे कण्ठ के भीतर दर्द होता है। कभी कण्ठ के भीतर अप्राकृतिक झिल्ली उत्पन्न हो जाती है। बुसूर में कण्ठ की पिछली दीवाल पर छोटी-छोटी फुंसियाँ हो जाती हैं। कण्ठ की झिल्ली स्थूल हो जाती है। इसको वक्ताओं का कण्ठक्षत भी कहते हैं, क्योंकि सामान्यतया यह वक्ताओं तथा गायकों को अधिक होता है।

हेतु--प्रसेक एवं प्रतिश्याय, गलान्तर्ग्रन्थिशोथ, खुनाक, रक्तज्वर, कतिपय रक्तविषमयतायें, धूलिकण अथवा किसी क्षोभक वस्तु का कण्ठ के भीतर चला जाना, इसके हेतु हैं। शीतल वायु में आवास करने, रक्त या पित्त वा कफ की अधिकता होने और स्निग्ध वस्तु सेवनोपरांत बहुत शीतल जल पीने से भी यह रोग हो जाता है। चिरज कण्ठशोथ तो प्रायः कण्ठशोथ से उत्पन्न होता है। परंतु कभी फिरंग, उरःक्षत, वातरक्त और मद्यपान से सीधे भी इस रोग के लक्षण प्रगट हो जाते हैं। वक्ताओं का कण्ठक्षत गायकों और वक्ताओं को अधिक एवं ऊँचे स्वर से बोलने या गाने से हुआ करता है।

लक्षण--कण्ठ के भीतर शोथ, लाली, गौरव, सुरसुराहट एवं दर्द होता है। तृषा लगती है। किसी भाँति जाड़ा लगकर ज्वर हो जाता है। आवाज भर्राई हुई होती है या बैठ जाती है। प्रायः कास उठता है और प्रचुर कफोत्सर्ग होता है। मुख का आस्वाद रक्तप्रकोप की दशा में मधुर, पित्त प्रकोप की दशा में तिक्त और कफ प्रकोप की दशा में फीका होता है।

चिरज कण्ठशोथ में ये ही लक्षण साधारण होते हैं तथा प्रातःकाल खाँसी आती है। किन्तु, कफ बहुत कठिनाई से निकलता है। कभी कफ रक्तमिश्रित होता है। प्रायः प्रसेक भी होता है। कण्ठगत पिड़का (बुसूरहल्का) में ये ही लक्षण पाये जाते हैं, साथ ही कण्ठ के भीतर छोटी-छोटी फुंसियाँ भी पाई जाती हैं।

उपद्रव और परिणाम--यह रोग साधारणतया एक-दो सप्ताह में आराम हो जाता है। पर कभी चिरकारी स्वरूप ग्रहण करता है। कभी यह खुनाक

के रूप में परिणत हो जाता है और कभी शोथ कान की भीतरी नाली में व्याप्तमान होकर बधिरता उत्पन्न कर देता है।

चिकित्सासूत्र--रोग के मूल हेतुका पता लगाकर उसका परिवर्जन करें। कब्ज नहीं होने देवें। संग्राही गण्डूष करायें तथा संग्राही औषधियाँ कण्ठ में लगायें। दर्द हो तो वेदनानिग्रह औषधियाँ देवें। कण्ठ के ऊपर टकोर करायें और सूजन उतारनेवाले लेप लगायें। यदि अपेक्षित हो तो दोषविलोम-करणार्थ जोंक लगवायें। यदि ज्वर हो तो स्वेदजनक और ज्वरघ्न औषधियाँ देवें।

चिकित्साक्रम--यदि कष्ट तीव्र हो तो पावभर पानी में ५ तोले अमलतासका गूदा उबालकर पिलायें। (२) आधसेर दूध में ५ तोले अमलतास का गूदा उबालकर पिलाये। (३) जदवार ३ माशा, रसवत ३ माशा, हरे मकोय के रस में पीसकर कण्ठ के ऊपर लेप करें। (४) रात्रि में गुलबनफ्शा २ तोले गाय के घी में भूनकर रात्रि में गले पर बाँधें। (५) दूसरे दिन अधोलिखित ठंढाईका योग देवें--६-६ तोले अर्कमकोय और अर्क गावजबान में ३ माशा बिहीदाने का लुआब और ७ दाने उन्नाब तथा ५ माशे मीठे कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत तूत स्याह मिलाकर पिलायें। यदि सर्दी या स्नेहपानोत्तर शीतल जल पीने के कारण यह रोग हो तो पीला अंजीर ४ दाना, गुठली निकाली हुई दाख १० दाना, मेथी ६ माशा, अलसी ६ माशा पानी में काढ़ा बना-छानकर पिलायें।

यदि द्रवातिरेक (आक्लेदाधिक्य) या प्रसेक के कारण यह रोग हो तो सौंफ, सौंफ की जड़, जूफा, मुलेठी प्रत्येक ५ माशा, हंसराज और गावजबान प्रत्येक ७ माशा, पीला अंजीर ३ दाना, बीज निकाली हुई दाख ७ दाना, सबको आध सेर पानी में काढ़ा करके २ तोला शर्बत जूफा मिलाकर पिलायें। यदि कण्ठ के भीतर कफ चिपका हो तो उसे निकालने के लिये सेंधानमक, नौसादर, सुहागा समभाग लेकर गरम पानी में घोलकर गण्डूष करायें और हब्बगुल पिस्ता चूसने के लिये देवें। यदि विरेचन अपेक्षित हो तो तीन दिनके पीछें उपर्युक्त काढ़े में मक्कीसनायपत्र ६ माशा, अमलतासका गूदा ५ तोला, तुरंजबीन ३ तोला मिलाकर विरेचन देवें। यदि धूलिकणादि से हो तो लवण जल से गण्डूष करायें और रूब्ब शहतूत चटवायें, यदि अन्यान्य हेतु हों तो उनका परिवर्जन करें। इन समस्त हेतुओं में अखंड मसूर ६ माशा, पोस्ते की डोडी, छोटी माई, गुलनार फारसी और सूखा धनिया प्रत्येक ६ माशा--सबको जल में उबालकर उससे गण्डूष करें और १ माशा माजू पीस-छानकर २ तोला मधुमें मिला लेवें तथा उसमें रूई की फुरेरी तर करके कण्ठ के भीतर लगायें, चिरज कण्ठशोथ में उपर्युक्त विधि से तीन विरेचन देवें और पावभर गाय के

दूध में २ तोले अमलतास का गूदा उबालकर उसस गण्डूष करायें तथा २ तोले मधु में ६ माशा चूना मिलाकर कण्ठ के बाहर लेप करें। कण्ठगत पिड़का-की भी यही चिकित्साविधि है। यदि शोथ अत्यधिक हो और श्वासावरोध हो रहा हो तो सरारू के खिरावेध से बड़ा उपकार होता है। कण्ठशोथ में फुरेरी से संग्राही पतला लेप लगाना अथवा सीकरयंत्र (रशाशा) से औषधि पहुँचाना अधिक गुणकारी है।

सिद्ध योग कुर्स खास—कतीरा, निशास्ता, बबूल का गोंद, सतमुलेठी, खीरा-ककड़ी के बीज का मग्ज प्रत्येक १ तोला, सत पुदीना (मेंथोल) २ माशा मिलाकर छोटी-छोटी टिकियाँ बनायें और मुँह में रखकर इनका रस चूसते रहें।

पथ्य—मूँगकी दाल, गेहूँ की दलिया, कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, चपाती आदि नरम, लघु एवं शीघ्रपाकी आहार देवें।

अपथ्य—मांस, गुड़, तेल, अम्ल, गरिष्ठ, गरम मशालेदार आहार से परहेज करायें। तम्बाकू और सिगरेट का सेवन वर्जित कर देवें।

५—इह्तिबासुश्शै फ़िल्हल्क।

नाम—(अ०) इह्तिबासुश्शै फिल्हल्क; (उ.) किसी चीज का गले में फँस जाना; (सं) कण्ठशल्य; (अं०) चोकिंग (Choking)।

(अ०) तअल्लुकुल्अलक फिल्हल्क; (उ०) हलक (गले) में जोंक चिमटना; (सं०) कण्ठगत जलौका; (अं०) लीच इन् दि थ्रोट (Leach in the Throat)।

वर्णन—भोजन का कड़ा निवाला (कवर) या अस्थि या रुपया-पैसा या मछली का काँटा या सूई या पिन या कोई और वस्तु (शल्य) कण्ठ के भीतर फँस जाती है। कण्ठ के भीतर फँसनेवाले शल्य निम्नलिखित प्रकार के होते हैं और उनमें से प्रत्येक का भिन्न-भिन्न नाम है। यथा—

(१) कण्ठ के भीतर निवाला अटक जाना (गस्सा तआम), (२) कण्ठ में मछली का काँटा अथवा अन्य काँटा अटक जाना (तशब्बत शौक), (३) सूई या पिन निगलना (बलअ् इब्र:), (४) तालाब आदिका पानी पीते समय किसी छोटी-सी जोंक का कण्ठ के भीतर चिमट जाना (तअल्लुकुल्अलक फिल्हल्क), (५) अस्थि या किसी कठिन वस्तु, जैसे रुपया-पैसा का फंस जाना, इसका कोई विशिष्ट नाम नहीं है और (६) पानी पीते समय स्वरयन्त्रमें पानी चला जाना और उच्छू आना (शर्कमाऽ)।

हेतु और लक्षण—स्पष्ट हैं। साधारणतया हेतु की विद्यमानता के साथ खाँसी और मिचली आती है और प्रायः साँस रुकता हुआ प्रतीत होता है।

जोंक की दशा में प्रथम तालाब का जल पीने की घटना होती है। तदुपरांत आकुलता एवं बेचैनी होती है और थूक के साथ पतला खून बहता है।

चिकित्सा—प्रत्येक की पृथक-पृथक चिकित्सा एवं उपाय निम्नाङ्कित हैं—

(१) जब कण्ठ के भीतर कोई बड़ा पदार्थ वा शल्य, जैसे रोटी का ग्रास, मांस का टुकड़ा या आमकी गुठली आदि फँस जाय और उससे दम रुकने लगे तब कण्ठ के भीतर खूब नीचे तक अंगुली डालकर पुनः अंगुली को टेढ़ा करके फँसे हुये शल्य के निकालने का यत्न करें। यदि निकल सके तो उत्तम वरन् उसे किंचित् आगे की ओर ढकेल देवें। तदुपरांत बलपूर्वक खाँसने का यत्न करें। यदि फुफ्फुस में पर्याप्त वायु विद्यमान हो तो उक्त पदार्थ खांसने के साथ अवश्य निकल जायगा। यदि यह उपाय सफल न हो तो पानी या कोई और प्रवाही वस्तु खूब मुँह भरकर पिलायें। यदि लाभ न हो तो ग्रीव और उभय स्कंधों के मध्य बलपूर्वक मुक्के मारें। यदि संभव हो तो वमन की चेष्टा करें। यदि यह भी न हो सके तो ग्रीवा की द्वितीय कशेरुका (मोहरे) के बराबर सींगी लगावायें।

(२) यदि कण्ठ के भीतर मछली का काँटा या अन्य काँटा फँस जाय और मुँह खोलने पर दिखाई पड़ जांय तो उसे मोचने बा अग्नि पकड़ने की चिमटी से निकाल लेवें। यदि दृष्टि में नहीं आये तथा श्वास-प्रश्वास में भी रुकावट न हो तो रोटी का बड़ा ग्रास खाने से ग्रास के साथ निकल जाता है। यदि इससे लाभ न हो तो लगातार कुछ बड़े-बड़े स्नेहाक्त ग्रास खिलाकर ऊपर से लवण या राई गरम पानी में मिलाकर वमन करायें। यदि यह उपाय भी सफल न हो तो इस्पंज का एक टुकड़ा या मांस की नरम बोटी या सूखा अंजीर किंचित् चबाया हुआ एक सुदृढ़ डोरे से बाँधकर रोगी को निगलने का आदेश मरें। पुनः रोगी को पानी पिलायें। फिर डोरे को खींच लेवें। फँसा हुआ शल्य उनमें अटककर बाहर निकल आयेगा। यदि उक्त क्रिया से कण्ठ के भीतर क्षोभ हो जाय तो इस बगोल का लुआब घूँट-घूंट करके पिलायें।

(३) यदि कण्ठ के भीतर सूई या पिन चली जाय तो उपर्युक्त उपायों को काम में लेवें या चुंबक पत्थर ३ माशा पीसकर २ तोले अंगुरी मद्य में मिलाकर पिलायें। इसके आधा घंटा बाद सेंधा नमक ६ माशा और राई ६ माशा दोनों को आधा सेर गरम पानी में मिलाकर पिलायें, जिसमें वमन होकर वह निकल जाय।

(४) यदि कण्ठ के भीतर जोंक चिमट जाय, तो कण्ठ का अवलोकन करें। यदि दिखाई देती हो तो उसे (जंबूर) से पकड़कर दबायें, जिसमें वह कण्ठ को छोड़ देवे। उसके थोड़ी देर पीछे उसे नरमी से बाहर खींच लेवें। यदि

दृष्टि में नहीं आवे तो सिरकायें लवण या अफीम घोलकर या पीसकर उससे गण्डूष करायें ।

जोंकि दृष्टि में आती हो अथवा नहीं आती हो, उसके निकालने का एक उत्तम उपाय यह है कि थैली में कीचड़ बाँधकर रोगी के मुँह में भर देवें । उसकी गंध पाते ही जोंक मुँह में आ जायगी । फिर उसे हाथ या यंत्र से निकाल देवें ।

(५) यदि कोई अस्थि या रुपया-पैसा कण्ठ के भीतर फँस जाय, तो रोगी उलटा (सिर नीचे) करके एड़ी पकड़कर उठायें तथा उसकी ग्रीवा एवं पीठ पर थपकी लगायें । इससे अटका हुआ शल्य निकल पड़ता है ।

यदि कण्ठ के भीतर फँसा हुआ शल्य नहीं निकल सके, तो इस बात का प्रयत्न करें कि वह आमाशय में चला जाय । उस स्थान से वह सरलतया मल के साथ निकल जायगा । उक्त अवस्था में रोगी को कोई पतला आहार या पानी पिलायें, अथवा चावल, दलिया, खिचड़ी या दाल चपाती खिलायें । यदि प्यास अधिक लगे, तो बर्फ चुसायें या घूँट-घूँट करके थोड़ा दूध पिलायें । यह क्रिया करने से वह वस्तु दूसरे-तीसरे दिन मल के साथ निकल जायगी । यदि वह वस्तु आमाशय में पहुँच चुकी हो, तो रोगी को कोई विरेचन या सारक मृदुरेचन औषधि नहीं देनी चाहिये । यदि कण्ठ के भीतर फँसा हुआ शल्य न बाहर निकल सके और न आमाशय में चला जाय, प्रत्युत पूर्ववत् फँसा रहकर कष्टश्वास का कारण हो तो जब तक किसी उपयुक्त उपाय का अवसर न मिले, तब तक रोगी का कृत्रिम श्वास जारी रखना चाहिये, जिसमें ताजा वायु फुफ्फुसों में प्रविष्ट होकर जीवन स्थिर रहे ।

श्वसनक्रिया के लिये रोगी को सूँघने का नमक (स्मेलिंग साल्ट) या एमोनिया सुंघायें । वक्ष के ऊपर भीगे हुए तौलिये मारें तथा रोगी को गरम रखें ।

(६) उच्छू (नासू चढ़ने) की दशा में स्कंध के ऊपर थपकी लगाना चाहिये । इससे चिकित्सा सुधर जाती है ।

पथ्यापथ्य—यदि शल्य निकलने के पश्चात कण्ठ के भीतर क्षोभ हो तो प्रवाही आहार सेवन करायें । यदि क्षोभ न हो तो साधारण भोजन देवें । यदि कोई शल्य आमाशय में चला गया हो, तो प्रवाही आहार नहीं देवें ; प्रत्युत दलिया, चावल, खिचड़ी, चपाती आदि देवें ।

६—मख्नूक बवहक

नाम—(अ०) मख़्नूक़ बवह् क़ ; (उ०) फाँसी लगना ; (सं०) पाशबद्ध, उद्बंधन ; (अं०) हैङ्गिङ्ग (Hanging) ।

वर्णन--उद्बंधन वा पाशबद्ध का वह भेद जिसमें रज्जु या लताका पाश लगाकर मनुष्य स्वयं टाँग लेता है या उसे टाँग देते हैं। इस अवस्था में कण्ठ का पीड़न होने (कण्ठ घुट जाने) के कारण संज्ञानाशादि लक्षण उत्पन्न होते हैं।

उपचार--यदि किसी के कण्ठ में पाश लग गया हो, तो प्रथम अविलंब उसे खोल देवें या काट देवें। यदि कोई पाश (फाँसी) पर लटक रहा हो, तो उसे तुरत उतार लेना चाहिये। यदि चाकू विद्यमान हो तो उससे रज्जु या रूमाल या जिस वस्तु का पाश लगाया गया हो, उसको अविलम्ब काट डालना चाहिये। यदि चाकू न हो, तो जब तक वह लाया न जा सके, तब तक पाश पर लटकने वाले के शरीर को टांग पकड़कर ऊपर की ओर उठाये रखें, जिसमें उसके कण्ठ पर से बोझ हट जाय। जब पाश का फंदा काट दिया जाय, तब उस व्यक्ति की ग्रीवा और वक्ष के ऊपर के बंधन ढीला कर देना चाहिये। यदि श्वास बंद हो गया हो, तो अविलम्ब कृत्रिम श्वास चालू कर देना चाहिये। यदि अन्य सहायक वर्तमान हो या पाशबद्ध व्यक्ति अभी स्वयं श्वास ले रहा हो, तो उसके मुख एवं वक्ष के ऊपर शीतल जल के छींटे मारना चाहिये। हाथ-पाँव खूब बलपूर्वक ऊपर की ओर मलना चाहिये। नौशादर पीसकर खाने वाले चूना में मिलाकर उसको सुँघायें और रोगन बनफशा या रोगन बादाम १ तोला एक सेर कुनकुना पानी में मिलाकर उससे गण्डूष करायें। यदि भली भाँति सचेत न हो तो उसके तलुवों पर बारीक राई या रोगन बाबूना से मालिश करें और दो घंटे पश्चात् प्रच्छान रहित सींगी लगायें या बस्ति देवें।

अन्नमार्ग के रोग

१—उस्त्रुल्बलअ्

नाम—(अ०) उस्त्रुल्बलअ्; (उ०) मुश्किल से निगलना; (सं०) निगलनकृच्छ्रता; (अं०) डिस्फैजिया (Dysphagia)

वर्णन—इस रोग में रोगी किसी वस्तु को कठिनाई से निगल सकता है।

हेतु—कण्ठ, स्वरयन्त्र और अन्नमार्ग के विविध रोग, कण्ठ व्रण, कण्ठगत अर्बुद (सरतान), कण्ठगत स्फीति, महाधमनिज रक्तार्बुद (अनुरस्मा अव्रती) आदि से यह रोग होता है। गुण के विचार से यह उष्णता, शीतलता, स्निग्धता और रूक्षता के प्रकोप से हो सकता है। अस्तु, इसके निम्न चार भेद होते हैं—(१) उस्त्रुल्बलअ हार्र, (२) उस्त्रुल्बलअ् बारद, (३) उस्त्रुल्बलअ् रतब और (४) उस्त्रुल्बलअ् याबिस आदि।

लक्षण—रोगी भोजन को बड़ी कठिनाई से निगल सकता है। इसी प्रकार जल, थूक आदि भी कठिनता से निगला जा सकता है। उष्णता की प्रगल्भता

में तीव्र पिपासा और कण्ठ के भीतर गर्मी एवं दाह होता है। शीत की प्रगल्भता में पिपासा एवं दाह नहीं होता। स्निग्धता की प्रगल्भता में पुष्कल मुखसे लाला बहती रहती है। रूक्षता की प्रगल्भता में मुख-शोथ होता है और तर पदार्थों के सेवन से लाभ प्रतीत होता है।

चिकित्सा--बाहर कण्ठ के ऊपर जिस स्थान पर दबाने से दर्द मालूम हो वहाँ मधु और चूने का लेप करें। यदि गर्मी से हो तो गावजबान और बिहीदाना प्रत्येक ३ माशा, अर्क गावज़बान तथा अर्क शाहतरा प्रत्येक ६ तोला में भिगोकर लुआब निकालें और उसी अर्क में काले कुलफा के बीज, छिले हुए काहू के बीज, मीठे कद्दू का मग्ज प्रत्येक ३ माशा, उन्नाब ५ दाना पीसकर शीरा निकालकर मिला लेवें और २ तोला शर्बत तूत स्याह सम्मिलित करके प्रातः सायंकाल पिलायें और ताजे दूध से गण्डूष करायें। शहतूत की पत्ती और समूचा मसूर प्रत्येक १ तोला, पोस्ते की डोडी २ नग पानी में काढ़ा करके कुनकुना गण्डूष करायें। यदि कष्ट अधिक हो तो खुनाक में लिखित उपाय काल में लेवें। आराम होने के पश्चात् बलवृद्धि के लिये खमीरा आवरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा या खमीरा गावजबान जवाहरवाला ५ माशा प्रातः काल कुछ दिन तक खिलायें। कभी-कभी शर्बत तूत स्याह चटाना भी लाभकारी होता है। द्रवाधिक्य के कारण हो तो अनीसून, सौंफ, मस्तगी और बालछड़ प्रत्येक ५ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें और सायंकाल १ माशा मस्तगी पीसकर २ तोला गुलकंद में मिलाकर खिलायें। अथवा जुवारिश जालीनूस ७ माशा खिलाकर ऊपर से अर्क बादियान और अर्क पान ६-६ तोला शर्बत तूत स्याह २ तोला मिलाकर पिलायें।

प्रसेक (नजला) के कारण हो और कण्ठ के भीतर शोथ (सोजिश) भी हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ९ दाना, सबको पानी में पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें। यदि दाह एवं पिपासा आदि उपद्रव न हों तो गुलबनफ्शा ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ९ दाना, गावज़बान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा सबको जल में पका-छानकर २ तोला शर्बत तूत मिलाकर पिलायें। कब्ज हो तो लऊक सपिस्ताँ खियार शंबरी इसी योग में सम्मिलित करके सेवन करायें।

पथ्यापथ्य--गर्मी से हो तो गरम पदार्थों से तथा लहसुन, प्याज, गरम मसाला लालमिर्च आदि के अति सेवन से बचें। सर्दी वा प्रसेक से हो तो शीतल वायु से परहेज करायें। बादी एवं कफकारक वस्तु नहीं खिलायें और चिकने पदार्थ से भी परहेज करायें।

२—इन्तबाकुल्मरी ।

नाम— (अ०) इन्तबाकुल्मरी; (उ०) गिजाकी नालीका जुड़ जाना; (अं०) स्ट्रिक्चर ऑफ दी ईसॉफैगस (Stricture of the oesophagus)।

वर्णन—इस रोग में अन्नमार्ग के भीतरी स्तर परस्पर संश्लिष्ट हो (जुड़) जाते हैं; जिससे पानी एवं पतला आहार तो उक्त मार्ग से नहीं जा सकता परन्तु बड़े एवं भारी निवाले (ग्रास) अपने बोझ के कारण नीचे उतर जाते हैं।

हेतु—आक्षेपग्रस्त व्याधियाँ, जैसे अपतन्त्रक या जलसंत्रास (हलकाव) के कारण वातनाड़ियाँ आक्षेपग्रस्त हो कर निगलना कठिन हो जाता है। (इन्तबाक तशन्नुजी) या अन्न-प्रणाली के भीतरी धरातलमें तीक्ष्ण मद्य सेवन के कारण अथवा किसी दाह, तीक्ष्ण, अम्ल आदि के भूल से पी जाने के कारण पिड़का एवं क्षत उत्पन्न हो कर उसके परत पस्पर जुड़ जाते हैं (इन्तबाक़ कुरूही) या कोई सौदावी शोथ या दुष्ट अर्बुद उत्पन्न हो कर अपने दबाव से उसके मार्ग को संकीर्ण कर देते हैं (इन्तबाक खबीस) वातरक्त प्रकृति के लोग इस रोग से अधिक आक्रांत होते हैं।

लक्षण—इन्तबाक तशन्नुजी प्रायः अपतन्त्रक या जालसंत्रास (हलकाव) रोग में होता है और इनके लक्षण पाये जाते हैं तथा भोजन खाया नहीं जाता व बाहर निकल आता है। इन्तबाक कुरूही एवं खबीस में भोजन कभी कभी के भीतर उतर जाता है और कभी नहीं उतरता तथा व्रण एवं शोथ के लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा सूत्र और चिकित्सा क्रम—यदि इन्तबाक (संश्लेष) आक्षेप के कारण हो तो हींग, कपूर, कस्तूरी आदि आक्षेपहर एवं वातनाड़ी या अवसादक ओषधियाँ देवें तथा अपतन्त्रक की चिकित्सा करें। अस्तु, जदवार १ माशा और ऊदसलीव १ माशा पीसकर दवाउल्मिस्क मोतदील ५ माशा में मिला कर खिलायें और ६-६ तोला अर्क बादियान एवं अर्क मकोय में ३-३ माशा सौंफ, कुसूस के बीज तथा खीरा-ककड़ी के बीज का शिरा निकाल कर २ तोला शर्बत बजूरी मोतदील मिलाकर ऊपर से पिलायें।

यदि क्षतके कारण अन्नमार्ग के परत जुड़ गये हों, तो सलाई एवं उपयुक्त ... के द्वारा स्रोत परिविस्तृत हो सकता है। पर यदि ये उपाय सफल न हों ... अन्नमार्ग का स्रोत उद्घाटित होने की कोई आशा नहीं हो, तो शस्त्रकर्म के ... यह रोग असाध्य है। परन्तु शस्त्रकर्म के द्वारा उदर के ऊपर से छिद्र ... आहार पहुँचाने का प्रबन्ध करने से रोगी अपनी आयु भर जीवित रह सकता है।

साधारण दशाओं में ग्रीवाकी द्वितीय कशेरुका पर सींगी लगवाने से भी स्रोतोद्घाटन हो जाता है, जिससे प्रवाही आहार पहुँचाना संभावित हो जाता है।

पथ्य--सादा, शीघ्रपाकी एवं बल्य आहार, जैसे-बकरी का या पक्षियों का शूरबा या चखनी, चने का पानी, चपाती, गेहूँकी दलिया, अंडे प्रभृति आहार भलीभाँति चबाकर खाना चाहिये।

अपथ्य--अधिक ठण्ढे एवं गरिष्ठ पदार्थों से, जैसे बर्फ, आलू, अम्ल, अरवी, गोभी, बैंगन से परहेज करना चाहिये। अधिक उत्तेजक (उष्ण) पदार्थ एवं तीक्ष्ण मसाला भी सेवन नहीं करना चाहिये।

३--इस्तिर्खाउल्मरी

नाम--(अ०) इस्तर्खाउल्मरी ; (उ०) मरीका ढीला हो जाना; (सं०) अन्नमार्गघात; (अं०) पैरेलिसिस ऑफ दी ईसॉफैगस (paralysis of the oesophagus)।

वर्णन--इस रोग में अन्नप्रणाली के भीतरी परत द्रवातिरेक से घातित हो कर परस्पर मिल जाते हैं और उसके मांसतंतु भी जो आहार के आदि शोषणमें सहायक होते हैं, घातित यानी ढीले और सुस्त हो जाते और अपने प्राकृतिक कर्म संपादन नहीं कर सकते हैं।

हेतु और लक्षण--यह रोग साधारणतया सर्दी एवं श्लैष्मिक द्रवों के कारण प्रगट होता है। इसमें कोई वस्तु भी कण्ठ से नीचे नहीं उतर सकती ! क्योंकि अन्नप्रणाली के घातित हो जाने से निगलन शक्ति नष्ट हो जाती है।

चिकित्सा--यदि थोड़ा बहुत आहार या ओषधि कण्ठ से उतर सके, तो चिकित्सा से लाभ होने की आशा हो सकती है, वरन् यह रोग भी असाध्य होता है। इसमें भी अंगघात की भाँति दोषपाचन और विरेचन तथा गण्डूष के द्वारा रोगजनक द्रवका शोधन करें। शोधनोपरान्त दबाउल्मिस्क हार ३ माशा या माजून फलासफा ७ माशा प्रथम खिला कर ऊपर से निम्न योग पिलायें--अनीसून, बालछड़ प्रत्येक ४ माशा, रूमीमस्तगी, बहमन सुर्ख, बहमन सफेद प्रत्येक ३ माशा यथाविधि पकाकर ४ तोला गुलकन्द असली मिला कर पिलायें।

४--हक्काकुल्मरी

नाम--(अ०) हक्काकुल्मरी ; (उ०) मरी की खारिश ; (सं०) अन्नप्रणालीगत कण्डू ; (अं०) इरिटेशन इन दी ईसॉफैगस (Irritation in the oesophagus)।

हेतु और लक्षण—तीक्ष्ण दोषों का आमाशय में संचित हो कर अन्नप्रणाली की ओर गति करना अथवा उसके उष्ण बाष्प का अन्नप्रणाली में दाह आदि उत्पन्न करना। रोगी हर समय खँखारता रहता और सिर तथा ग्रीवा को ऐंठता रहता है। क्योंकि खुजली के कारण उसे चैन नहीं पड़ता। शुष्क (ग्रास) आहार के बड़े-बड़े निवाले (ग्रास) से रोगी को सुख एवं आनन्द प्राप्त होता है।

चिकित्सा—दुष्ट दोष से आमाशय की शुद्धि के लिए (१) सोआ बीज ६ माशा या (२) मूली के बीज ६ माशा आधासेर पानी में पकाकर २ तोला सिकंजबीन मिलाकर पिलायें, जिससे वमन हो जाय। पुनः (३) सिकंजबीन अंसली ३ तोला आधासेर पानी में मिलाकर उससे गण्डूष कराना लाभकारी होता है। खुजली दूर करने के लिये (४) ताजा दूध में मधु या चीनी मिलाकर पिलायें अथवा शोधनोपरान्त निम्न योग पिलायें:—

९-९ माशा खीरा-ककड़ी के बीज और कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा, ३ माशा बिहीदाने का लुआब, ५ माशा इसबगोल का लुआब ७-७ तोला अर्क केवड़ा और अर्क बेदमुश्क में निकालकर २ तोला शर्बत बनफ़्शा मिलाकर घूँट-घूँट पिलायें।

५—वरमुल्मरी

नाम—(अ०) वरमुल्मरी; (उ०) गिजाकी नाली की सूजन; (सं०) अन्नप्रणाली शोथ; (अं०) ईसॉफेजा (गा) यटिस (oesophagitis)

वर्णन—इस रोग में अन्नप्रणाली सूज जाती है, जिससे भोजन और जलका निगलना कठिन हो जाता है।

हेतु—यह रोग उष्ण दोष अर्थात् रक्त वा पित्तके प्रकोप से अथवा शीतल दोष अर्थात् कफ और सौदा के प्रकोप से होता है। उष्ण शोथ साधारणतया तीक्ष्ण मद्य, अधिक मसालेदार और अधिक उष्ण खाद्य एवं पेय और कतिपय ज्वरों से होता है।

लक्षण—उष्ण शोथ में ज्वर एवं तृष्णा की तीव्रता और उभय स्कन्धों के मध्य दर्द होता है। आहार निगलना कठिन एवं कष्टदायक होता है। जब इन लक्षणों के पश्चात् कम्प उत्पन्न हो, तो शोथ के पकने और पीप पड़ जाने का लक्षण है। जब वमन के द्वारा पीप उत्सर्गित होने लगे तब यह इस बात का प्रमाण है कि शोथ फट गया (कुरूहुल्मरी) है। शीतल भेद में ज्वर एवं तृष्णा नहीं होती, दर्द अत्यल्प और उभय स्कंधों के मध्य भारीपन अधिक होता है।

चिकित्सा सूत्र—सूजन के प्रारम्भ में दोषविलोमकरण और अन्तमें शोथ विलयन (सूजन उतारने वाली) ओषधियों का उपयोग करना चाहिये। उभय

स्कंधों के मध्य लेप लगायें जायें। इसी प्रकार वहाँ टकोर भी करना चाहिये। उष्ण शोथ में बासलीक या सरारूका सिरावेध भी लाभकारी है।

चिकित्सा क्रम--उष्ण शोथमें यदि रक्तप्रकोप के लक्षण पाये जायँ और रोगी में सह्यता (क्षमता) हो तो बासलीक का सिरावेध करायें। ७ तोले कासनी या काहूके रसमें ५ माशे कुलफाके बीजों का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत शहतूत मिलाकर घूँट-घूँट पिलायें अथवा १० तोला यवमण्ड में २ माशा मीठे बादाम का तेल मिलाकर पिलायें। रोग के अन्त में सूजन उतारने के लिये ७-७ तोले हरे मकोय और हरी कासनी के रस में ३ तोला अमलतास का गूदा और २ तोला शर्बत बनफ़्शा मिलाकर पिलाना लाभकारी है। यदि सूजन में पीप पड़ जाय, तो अलसी का लुआब और कनौचा के बीज का लुआब देवें। जब वह पककर फूट जाय, तब गाय के दूध में बादाम का तेल मिलाकर पिलायें और हरीरा खिलायें तथा रोगारंभ में ६ माशा सफेद चन्दन हरी कासनी या हरे मकोय के रस में घिसकर उभय स्कंधों के बीच में लेप करें। अन्त में यह सूजन उतारनेवाला लेप लगायें--गुलबाबूना, खतमी के बीज, गुलबनफ्शा, जौ का आटा प्रत्येक ६ माशा सबको हरे मकोय के रस में पीसकर १ तोला मिलाकर उभय स्कंधों के बीचमें लेप करें। जब सूजन पकने लगे तब निम्न लेप का उपयोग करें--मेथी का आटा, जौ का आटा, अलसी,खतमी के बीज सबको पानी में पकाकर बनफ्शा मिलाकर लेप करें। जब सूजन फट जाय, तब उसके शोधनार्थ मध्वाम्बु (माउल्अस्ल) पिलायें।

यदि शीतल दोष के कारण यह रोग हो, तो दोष पाचन और शोधन के पश्चात् गुलबाबूना ६ माशा और अलसी ६ माशा पानी में काढ़ा बनाकर २ तोला शर्बत अंगूर मिला कर घूँट-घूँट पिलायें। रोगन बाबूना और रोगन शिबित्त उभय स्कंधों के बीच कुनकुना मर्दन करें।

पथ्यापथ्य--उष्णशोथ में हरीरा या दूध का यवमंड या अरारूट या साबूदाना खिलायें तथा तीक्ष्ण एवं उष्ण पदार्थों से परहेज करायें। शीतल शोथ में मुद्गयूष, चनेका यूष, यखनी, मुर्गे का सादा शूरबा सेवन करायें। शीतल पदार्थों से परहेज करायें।

स्वरयन्त्र के रोग

१--बुह्हतुस्सौत

नाम--(अ०) बुहहतुस्सौत; (उ०) आवाज बैठना, गला बैठना (सं०) स्वरघ्न, स्वरभेद; (अं०) अॅफोनिया (Aphonia)।

वर्णन--कभी-कभी स्वरयन्त्र की रचना में किसी कारण वश परिवर्तन उत्पन्न हो कर आवाज बैठ जाती है और गला पड़ जाता है।

भेद--हेतु के विचारानुसार इसके कतिपय निम्नलिखित भेद होते हैं--(१) प्रसेकीय, (२) उष्ण, (३) शीत, (४) स्निग्ध, (५) रूक्ष, (६) सयाही, जो चिल्लाने से उत्पन्न होता है, (७) वरमी (शोथज जो स्वरयन्त्र के शोथ से उत्पन्न होता है।) और (८) सम्मी (विषभक्षणज जो सेंदूर और सूर्मा आदि विषैली वस्तुओं के सेवन से उत्पन्न होते हैं)।

हेतु--धूएँ तथा धूलिकणादि का साँस के भीतर चला जाना, तीक्ष्ण एवं उच्च स्वर से भाषण करना, दीर्घकालतक प्रवचन करना, अभिभाषण देना, उच्च स्वर से गाना, भूलसे सेंदूर खा जाना, गर्मी और खुश्की की अधिकता या पैत्तिक दोष की प्रागल्भता, तीव्र प्रसेक, कभी वर्षामें भीगने या अधिक सर्दी लगने अथवा शीतल पदार्थों के खाने-पीने से कफ अधिक उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--यदि गर्मी के कारण हो तो तृष्णा अधिक मालूम होगी और मुख शुष्क होगा। पित्त की अधिकता में मुखका स्वाद तिक्त होता है, सर्दी के कारण हो तो गलेमें खरखराहट एवं बोझ मालूम होता है। कफ अधिक निकलता है।

चिकित्सा--यदि किसी आगन्तुक कारण से, यथा धूआँ और धूलिकणादि साँसके साथ चला जाने या अभिभाषण करने, प्रवचन करने और गाने से यह रोग हो तो उक्त अवस्था में दीपक का गुल पानमें रखकर खिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार अदरक चबाने से स्वर खुल जाता है। २ रत्ती कुलंजन पान में खाने से भी लाभ होता है। यदि सिंदूर भक्षण से यह रोग हो तो तमाकूका गुल (जट्ठा) जो हुक्का में होता है ऽ१ सेर ऽ५ पाँच सेर पानी में भिगो देवें। ३-४ दिन के पश्चात् उसमें से स्वच्छ पानी निकाल कर रखें और इस पानी को कढ़ाई में पकायें। सूखने के उपरान्त कढ़ाई में शेष रहा हुआ तीक्ष्ण एवं लवणीय सत्व छूरी आदि से खुरचकर रख लेवें। इसे पान में रखकर खिलाने से दो-तीन बार में स्वर खुल जाता है। गर्मी, खुश्की या पित्तके प्रकोप से हो तो प्रातः ३ माशा बिहीदाना पानी में भिगोंकर लुआब निकालें और उन्नाब ५ दाना, मग्ज कद्दू ३ माशा, मग्ज तरबूज ३ माशा अर्क गावजबान १२ तोला में पीस कर शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें तथा बिहीदाना और मिश्री मुँह में रख कर उसका लुआब चूसते रहें।

यदि सर्दी और कफ के कारण हो तो छिली हुई मुलेठी और हंसराज प्रत्येक ५ माशा, लिसोढ़ा ६ दाना, अनीसून ६ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा पानी में उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें और करफसकी जड़, अनीसून

सोश्रा, सूखा पुदीना प्रत्येक ६ माशा, मधु २ तोला पानी में पका-छानकर उससे गण्डूष करायें तथा कुलंजन या अदरख मुँहमें रखकर उसका रस चूसते रहें। हब्ब बुह्‌हुतुस्सौत एक गोली हर समय मुँह में रखना और लुआब चूसते रहना भी लाभकारी है। केवल आगन्तु (बाहरी) खुश्की और गर्मी के कारण यह रोग हो तो बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ माशा, लिसोढ़ा ६ दाना पानी में पका-छान कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर दो-तीन दिन प्रातः सायंकाल पिलायें अथवा मीठे बादाम का मग्ज ५ दाना, भुनी हुई अलसी चिलगोजे का मग्ज और सोसन की जड़ प्रत्येक तीन माशा कतीरा, बबूल का गोंद और सतमुलेठी प्रत्येक १ माशा, मिश्री ३ माशा, मधु १।। माशा सब द्रव्यों को कूट छानकर शहद में मिलाकर चनाप्रमाण की गोलियाँ बनायें और हर समय एक गोली मुँहमें रखकर उसका लुआब चूसते रहें।

यदि प्रसेक (नजला) के कारण यह रोग हो तो उष्ण प्रसेक में लिखित चिकित्सा करें। पानमें लौंग या जावित्री आदि इस रोग में लाभकारी है। कभी आतशक (फिरंग) एवं सूजाक के रोगियों को यह रोग हो जाता है। उक्त अवस्था में रोग की विशिष्ट औषधियों के अतिरिक्त फिरंग आदि का उपचार भी करना चाहिये।

पथ्य—बकरी का शूरबा, चपाती, मूँगकी दाल, कद्दू, पालक, चुकन्दर, मुर्गी के बच्चे का शूरबा आदि।

अपथ्य—धूलि-कणादि, उच्चस्वर, दूध, मक्खन, दही, चावल, मछली, अम्ल, तेल, लाल मिर्च और अधिक ठंढे पानी से परहेज करें।

उर:फुफ्फुस रोगाधिकार ७

फुफ्फुसरोगाध्याय १

वक्तव्य—समस्त तीक्ष्ण, उष्ण तथा अम्ल वस्तुएँ फुफ्फुस को हानि पहुँचाती हैं। फुफ्फुस के रोगों में अधिकतया अवलेह (लऊक) और गोलियाँ परम गुणकारी होती हैं; क्योंकि मुँह में अधिक काल रहने तथा लुआब (या रस) निगलते समय फ़स्वारिय: के समीप पहुँचने के कारण इनका बराबर प्रभाव होता रहता है।

नाम—(अ०) रबू, जीक़ुन्नफ़स, बुहर, इन्तसाबुन्नफस; (उ०) दमा; (सं०) श्वास; (अं०) ऐस्थमा वा ऐज्मा (Asthma) डिस्प्नीया (Dyspnoea), ऑर्थोप्नीया (Orthoponoea)।

वक्तव्य—जीकुनफस, रबू और बूहर श्वासकृच्छ्रता की उत्तरोत्तर बढ़ती हुई अवस्थाओं के अलग-अलग अरबी नाम हैं। इन्तसाबुन्नफस जीकुन्नफस ही की तीव्रावस्था का नाम है। इसमें रोगी जब तक ग्रीवाको सर्वथा सीधा न रखे, साँस नहीं ले सकता। साधारणतया इन सबको समानार्थी माना जाता और दमा कहा जाता है।

वर्णन—इस रोग में फुफ्फुस की सूक्ष्म वायुप्रणालिकाओं में आक्षेप हो कर श्वास कृच्छ्रता पूर्वक (तंगीसे) आता है। प्रायः यह रोग आवेगपूर्वक होता है।

भेद—इसके प्रधान दो भेद होते हैं—शुष्क (खुश्क) और आर्द्र (मर्तूब वा तर)। शुष्क दमा में केवल वायुप्रणालियों एवं श्वसनी पेशियों में आक्षेप होता है जिससे श्वास लेने में कष्ट एवं कठिनाई होती है—आर्द्र दमा में आक्षेप के अतिरिक्त वायुप्रणालियों में कफ संचित हो जाता है जिससे श्वास लेने में कठिनाई होती है।

हेतु—प्रसेक, प्रतिश्याय या कास के कारण कभी कफ फुफ्फुस के भीतर संचित हो जाता है जिससे श्वास लेने में कष्ट होता है। कभी फुफ्फुस में रूक्षता के कारण नालियाँ (तजावीफ) संकीर्ण हो जाती हैं और श्वास रुक-रुककर आता है। कभी चेचक के कारण भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—यदि प्रसेक, प्रतिश्याय या कासके कारण यह रोग हो तो उक्त रोग विद्यमान होंगे। रोग के आवेग से पूर्व प्रायः मलावरोध एवं आध्मान होता है। प्रथम मामूली खाँसी उठती है। दम लेने में कष्ट मालूम होता है। कभी सहसा दौरा होजाता है। रोगी का दम घुट-घुट कर आता है। खाँसते-खाँसते चेहरा लाल हो जाता है और रोगियों से बोला नहीं जाता। पुनः किंचित्-सा कफ निकल कर सम्पूर्ण शरीर पर पसीना हो कर वारी रुक जाती है। निवृत्ति काल में रोगी स्वस्थ मालूम होता है और कोई कष्ट नहीं होता।

चिकित्सा—यदि प्रसेकएवं प्रतिश्याय के कारण यह रोग होतो उसका उचित उपचार करें। यदि कफ की अधिकता से हो तथा सीने पर कफ एवं खर-खर का शब्द हो तो दोषके तरलीभवन के लिए कुछ दिन गावजबान, कैंची से कतरा हुआ आबरेशम, गेहूँका चोकर प्रत्येक ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, मिश्री २ तोला, सबको पानी में पका-छानकर पिलायें। यदि श्लेष्मा गाढ़ी हो तो सौंफ की जड़, छिली हुई मुलेठी और जूफाए खुश्क प्रत्येक ५ माशा बीज निकाली हुई दाख ६ दाना और पीला अंजीर ३ दाना उपर्युक्त योगमें मिलाकर सेवन करायें। तीसी का तेल २ तोले में १ तोला सफेद मोम और १ तोला बकरी के वृक्क की चर्बी मिला कर कुन-कुना करके सीना पर मर्दन करें। रात्रिमें सोते समय ११ तोला लऊक सेपिस्ताँ और लऊक मोतदिल १२ तोले अर्क गावजबान में पकाकर पिला दिया

करें। पीला अंजीर ३ माशा, उस्तूखुद्दूस ५ माशा, हंसराज ५ माशा, मधु २ तोला पानी में उबाल कर सवेरे-शाम और इसी योग के साथ ७ माशा लऊक कताँ खिलाना भी लाभकारी है। ईर्सा और फितरासालियून ३-३ माशे, मधु २ तोला पानी में उबालकर पिलाना या जूफाए खुश्क और अलसी के बीज प्रत्येक ५ माशा मिश्री २ तोला पानी में उबाल कर सवेरे शाम पिलाना और १ टिकिया इन्तिसाबी १ तोला मधु या मक्खन में मिलाकर रात्रिमें खिलाना भी लाभकारी है। यदि उपर्युक्त उपायों से लाभ न हो तो विधिवत् कफपाचन ओषधि पिलाकर हब्ब इयारज का विरेचन देवें। शोधनोपरान्त खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला बलवृद्धि के लिये देवें। कफज कृच्छ्रश्वास के लिये कभी वमन कराना भी लाभकारी होता है। यदि प्रसेक के कारण यह रोग हो तो खमीरा खशखाश ७ माशा और लऊक नजली ७ माशा और बरशाशा १ माशा आदि में से कोई एक ओषधि देने से उपकार होता है।

यदि खुश्की के कारण हो तो लऊकनजली आब तरबूजवाला ७ माशा खिला कर ऊपर से बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ५ दाना पानीमें उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफशा या शर्बत खशखाश मिलाकर ३-३ माशे काहू के बीज और कद्दू केमग्ज का शीरा योजित कर पिलायें और ६-६ माशे गुलबनफ्शा एवं गुलनीलूफर पानी में काढ़ा करके उससे वक्षके ऊपर परिषेक करें। अथवा आवश्यक प्रमाण में गुलरोगन लेकर वक्षके ऊपर उसका मर्दन करें। बलवृद्धि के लिये खमीरा आबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा या दियाकूजा ७ माशा १२ तोले अर्क गावजबान और २ तोले शर्बत फर्याद रस के साथ देवें। लऊक सेपिस्ताँ २ तोले या लऊक इसबगोल २ तोले १२ तोले अर्क गावजबान में पकाकर पिलाना या बेनजीर एक टिकिया मधु १ तोला या मक्खन १ तोला में मिलाकर रात्रि में सोते समय या आवेग की दशामें खिलाना भी लाभकारी है।

यदि सावाद चेचक के कारण हो तो खाकसी ५ माशा, पीला अंजीर ३ दाना कैंची से कतरा हुआ आबरेशम ५ माशा, मधु २ तोला पानी में उबाल-छानकर सवेरे-शाम पिलायें। आवश्यकता हो तो खमीरा मरवारीद ५ माशा भी इस योग के साथ देवें। १ रत्ती सफूफ दमा मछलीवाला १ तोला खमीरा गावजबान में मिलाकर खिलाने से भी लाभ होता है या सफूफ दमा हल्दीवाला ५ माशा एक दिन पानीसे खिलायें। दूसरे दिन से ५ माशा पर १ रत्ती प्रति दिन चूर्ण बढ़ाकर ५१ दिन तक खिलायें। इसके बाद त्याग करा देवें तो इस उपाय से भी उपकार हो जाता है, हब्ब जीकुन्नफस १ गोली कुछ दिन रात्रि में सोते समय खिलाने या शर्बत जूफा मुरक्कब चटाने से भी लाभ होता है। हब्ब मोमियाई

सादा भी कुछ दिन खिलानेससे पर्याप्त लाभ हो जाता है। निम्न योग भी श्वास-कृच्छ्र में लाभकारी है--कलमीशोरा और लाहौरी नमक प्रत्येक १ तोला, अफीम १।। माशा, प्रथम दोनों द्रव्य यवकुट करके आधी अफीम उसके नीचे और आधी उसके ऊपर रखकर मिट्टी के दो प्यालों में कपड़मिट्टी करके बेर की लकड़ी से एक लौकी हलकी मृदु अग्नि सवाघड़ी देवें। फिर उतार कर प्याले में जितने ओषधि के बाष्प जाकर लगे हों, उस सत्त्वको खुरच लेवें। फिर उसको निकाल कर एक शीशी में रख लेवें। १ चावल इस सत्त्वमें से प्रातः और उतना शामको २ तोला शर्बत जूफा में मिलाकर चटाना चाहिये।

यह रोग आवेगपूर्वक होता है। अतएव आवेगावस्था में कष्ट दूर करने का यत्न करें, और रोग निवृत्तकाल में मूल हेतु के निवारण का उपाय करें। जब यह रोग खुश्की के कारण हो, तब तुरत चिकित्सा की ओर ध्यान देना चाहिये। वरन कुछकाल तक आराम न हो, तो यह सिल्ल की ओर स्थानान्तरित हो जाता है, जो अत्यन्त भयावह रोग है।

पथ्य--बकरीका शूरबा, चपाती, मूँग-अरहर की दाल, मुर्गीके बच्चे का शूरबा, बथुये की भुजिया, तरकारियों में चुकन्दर, कद्दू, तुरई, आदि देवें।

अपथ्य--अधिक सोना, शीतल और अम्ल पदार्थ का खाना-पीना, अंगूर, सेव, नारंगी आदि फल, नीबू और शीतल जलका अतिसेवन अधिक धूप में चलना फिरना, अधिक आयास, और श्रम करना, गुड़, तेल, लाल मिर्च, लहसुन आदि अपथ्यकर एवं वर्जित हैं।

२--सुआल

नाम--(अ०) सुआल; (फा०) सुर्फ; (उ०) खाँसी; (सं०) कास; (अं०) कफ (cough) ब्रॉङ्काइटिस (Bronchitis)।

वर्णन--जिस समय फुफ्फुस में किसी कष्टदायक पदार्थ के उत्सर्ग की चेष्टा करता है, तो उस चेष्टा को यूनानी वैद्यों की परिभाषा में सुआल (खाँसी) कहते हैं।

हेतु—खाँसी का हेतु प्रायः मस्तिष्क से दोषों का अवतरण होना है जो फुफ्फुस की ओर गिरते रहते हैं और फुफ्फुस को उनके उत्सर्ग की आवश्यकता होती है। कभी सर्दी के कारण फुफ्फुस में कफ अधिक संचित हो कर खाँसी का रोग हो जाता है। कभी-कभी गर्मी और खुश्की के कारण खाँसी हो जाती है। खाँसी के प्रधान दो भेद होते हैं। (१) खुश्क खाँसी और (२) तर खाँसी,

लक्षण—प्रसेक या प्रतिश्याय सर्दीके कारण हो तो बालकों, बूढ़ों और कफ प्रकृतिवालों को शरद् ऋतु में होती है। वक्ष में वक्ष (छाती) की अस्थि के

नीचे क्षोभ प्रतीत होता है। श्वासकृच्छता पूर्वक (तंगी से) आता है। बारंबार खाँसी उठती है। रात्रि में सोते समय और प्रातः समय खाँसी अधिक आती है। कभी पिलाई लिये सफेद कफ कठिनाई से निकलता है। कभी-कभी पतला लेसदार रंग का कफ निकलता है। कुपथ्य के कारण इस प्रकार की खाँसी बद्धमूल एवं स्थायी हो जाती है और शरद् ऋतु में अधिक होती है। गर्मी और खुश्की के कारण हो तो खाँसी में कफ नहीं निकलेगा, कण्ठ शुष्क होगा और सीना पर क्षोभ (खराश) मालूम होगा। इस प्रकार की खाँसी उष्ण प्रकृति एवं युवाओं को ग्रीष्म ऋतु में प्रायः हुआ करती है। यदि इसकी चिकित्सा की ओर ध्यान नहीं दिया जाय तो फुफ्फुस में क्षत हो कर उरः क्षत (सिल) रोग में परिणत हो जाता है।

चिकित्सा सूत्र—दोषज और कफज कास में दोषपाचन (नुज़्ज माद्दा) का उपाय करना चाहिये। जिसमें दोष की भौतिक स्थिति मोतदिल (प्रकृतिस्थ—न अधिक गाढ़ा न अधिक पतला) हो और निकलने के योग्य हो जाय। यह ध्यान रखें कि अधिक उष्ण या अधिक शीतल औषधियों का उपयोग न करें, क्योंकि अधिक उष्ण औषधियों से दोष में असाधारण तारल्य हो जाता है और अधिक शीतल औषधियों से असाधारण सान्द्रत्व। अस्तु, दोषपाचन का जो मूल उद्देश्य अर्थात् दोषकी भौतिक स्थितिका प्रकृतिस्थ (मोतदिल) होना वह नष्ट हो जाता है। यदि खाँसी के साथ विरेक होते हों, या अन्य उपद्रव उत्पन्न हो जायँ तो दोनों के लिये लाभकारी औषधियों का उपयोग यथास्थान और यथा प्रमाण दोष-प्रकृति आदि का विचार कर के करना चाहिये। जैसे यदि खाँसी के साथ विरेक आते हों तो बबूल का गोंद और निशास्ता आदि भून कर देना चाहिये और ऐसे शर्बतों का उपयोग करना चाहिये जो कासमें लाभकारी होने के साथ ही संग्राही भी हो। जैसे—शर्बत खशखाश, शर्बत अनार, शर्बत हब्बुल्आस आदि यदि खाँसी के साथ रक्तष्ठीवन भी हो तो बबूल का गोंद, कतीरा, सतमुलेठी आदि के साथ कोई रक्त शोधक औषधियों की योजना भी करनी चाहिये। जैसे—दम्मुल्अख्वैन, संगजराहत, गिल अरमनी आदि।

जालीनूस के मतानुसार यदि खाँसी में गाढ़ा कफ निकलता हो तो उसे पतला करने के लिये जूफा, सूखा पुदीना आदि उपयोग करें। यदि पतला कफ निकलता हो तो निशास्ता प्रभृति से उसे गाढ़ा करें। यदि लेसदार कफ हो तो सिकंजबीन आदि से उसका छेदन करें। यदि दोष इतने प्रचुर प्रमाण में हो कि दोषाधिक्य के कारण रोगी दुर्बल हो जाय, तो विरेचन द्वारा दोष का शोधन करें। निम्नलिखित औषधियाँ हर प्रकार की खाँसी में उपकारक है—

यवमण्ड (माउश्शईर) खाँसी के लिये अतीव गुणकारी है। काकड़ासींगी

महीन पीस कर कालीमिर्च-प्रमाण की गोलियाँ बनाकर मुँह में रखना अथवा बाकला के दाने के बराबर बोल (मुरसकी) खाना बहुत ही गुण कारी है। पुरानी खाँसी में ३ माशा फिदक यवनंड के साथ खाना लाभकारी है। वाह्यतः बादाम का तेल और मोम वक्ष और उभय स्कन्धों के बीच मर्दन करने या नाभिस्थल पर रोगन बनफ्शा मलने से भी खाँसी में लाभ होता है।

चिकित्सा क्रम—यदि प्रसेक के कारण हो तो गुलबनफ्शा ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढा ६ दाना, गावजबान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, खुब्बाजी बीज ७ माशा और छिली हुई मुलेठी ५ माशा, सबको पानी में पका-छान कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर सबेरे पिलायें। कफकी अधिकता से हो तो गावजबान ५ माशा, गुलगावजबान ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, छिली हुई मुलेठी ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी में उबाल कर सबेरे-शाम पिलायें और रात्रि में सोते समय लऊक सेपिस्तां और लऊक मोतदिल १—१ तोला १२ तोले अर्क गावजबान में उबाल कर पिला दिया करें। यदि कुछ दिन के सेवन से लाभ न हो तो सौंफ की जड़, मुलेठी, जूफाए खुश्क, हंसराज प्रत्येक ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी में पका-छानकर गरम-गरम पिलायें और शिलारस १ माशा पीसकर १ तोला मधु में मिलाकर लेह (चटनी) सा बनाकर चटायें, या काकड़ासींगी, शकरतीगाल, सोंठ और पीपला मूल १-१ माशा बारीक पीसकर २ तोला मधु में मिलाकर लेह-सा बनाकर चटाते रहें, या हब्बगुलपिस्ता मुंह में रखकर चूसते रहना या अभ्रक भस्म ४ चावल १ तोला मधु में मिलाकर रात्रि में सोते समय चाट लेना या इन्तसाबी एक टिकिया १ तोला मधु या मक्खन में मिला कर रात्रि में सोते समय खाना भी लाभकारी है। हब्ब सिफा एक गोली, हब्ब जदवार १ गोली, तिर्याक नजला ७ माशा, बरशाशा या लऊक कतां में से कोई एक औषधि देने से भी लाभ होता है। हब्ब गुलपिस्ता या बस्तज १ टिकिया मुँहमें रखकर लुआब चूसते रहना भी लाभकारी है। अधोलिखित गोलियां भी हर प्रकार की खाँसी के लिये विशेष कर प्रसेकीय के लिये तो बहुत ही गुणकारी हैं—सतमुलेठी, बबूल का गोंद, कतीरा, शकर तीगाल, बदाम का मगज, सफेद पोस्ते का दाना प्रत्येक ६ माशा, अफीम और केशर प्रत्येक ५ माशा—सब को पीस कर गावजबान के लुआब में मिलाकर मूँगके बराबर गोलियाँ बना लेवें। । समय पड़ने पर १—२ गोली मुँह में रखकर लुआब चूसते रहें। यदि गर्मी और खुश्की के कारण हो तो बबूल का गोंद, कतीरा, सतमुलेठी शकरतीगाल प्रत्येक १ माशा महीन पीस कर ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से ३ माशा बिही दाना, ५ दाना उन्नाब, ६ दाना लिसोढ़ा पानी में पकाछान कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर सबेरे-शाम पिलायें।

यदि उष्ण प्रसेक के कारण हो तो बबूल का गोंद, कतीरा और सतमुलेठी १-१ माशा बारीक पीसकर ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर प्रथम खिलायें, ऊपर से गावजबान ३ माशा, पोस्तेकी डोडी १ नग १२ तोले अर्क गावजबान में शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत खशखाश मिलाकर सबेरे-शाम पिलायें।

खुश्की अधिक हो तो ३ माशे खीरा-ककड़ी के बीज, ३ माशे कुलफा के बीज ३ माशे मीठे कद्दू के मग्ज १२ तोले अर्क गावजबान में पीस कर शीरा निकाल कर २ तोले शर्बत खशखाश मिलाकर सबेरे-शाम पिलायें। शामको मस्तिष्क दौर्बल्य के प्रकरण में लिखित हरीरा मग्ज बादामवाला योग सेवन करायें। लऊक-नजली आब तरबूजवाला ७ माशा या लऊक आबनैशकर ७ माशा खिलाना और हब्ब लुब्बुल् खशखाश मुँहमें रखना या हब्ब सुर्फा १ गोली मुँहमें रख कर उसका रस चूसते रहना भी लाभकारी है। ये गोलियाँ भी लाभकारी हैं– सतमुलेठी, बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता, शकरतीगाल, बाकला का आटा, उन्नाब का आटा, मीठे बादाम का मग्ज, तरबूज के बीज का मग्ज, पोस्तेका दाना प्रत्येक ४ माशा, अफीम १ माशा, केशर १ माशा सबको कूट छान कर आवश्यकतानुसार अर्क गावजबान में घोंटकर मूंग प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें। आवश्यकता पड़ने पर १-२ गोली मुंह में रखकर लुआब चूसते रहें।

पथ्य— बकरी का मांस, चपाती, मूंग-अरहर की दाल, खिचड़ी, तरकारियों में चुकंदर, बथुआ या पालक आदिका साग देवें।

अपथ्य—सर्दी के कारण हो तो सिर और छाती को शीतल वायु से बचायें। शीतल जल पीने से बचें। बादी, गरिष्ठ, कफकारक, शीतल-स्निग्ध द्रव्य सेवन नहीं करें। गर्मी और खुश्की के कारण हो तो गरम मसाला, आलू, अरवी, मछली, लहसुन, प्याज, तेल एवं गुड़ के पके हुए पदार्थ और अम्ल आदि से परहेज करें।

३—नफ्सुद्दम

नाम—(अ०) नफ्सुद्दम; (उ०) खून थूकना, थूकमें खून आना; (सं०) रक्तष्ठीवन; (अं०) हीमाप्टीसिस (Haelmoptysis)।

वर्णन—इस रोग में मुखमार्ग से थूक और कफके साथ या थूक बिना शुद्ध रक्त निकलता है।

वक्तव्य—जो रक्त फुफ्फुस एवं तत्सम्बन्धी अंगों जैसे स्वरयन्त्र, फुफ्फस प्रणाली आदि से थूक के साथ निकलता है उसे 'नफ्सुद्दम' और आमाशय, अन्नप्रणाली, नाक या मुंह से निकलने वाले को 'कैउद्दम' या 'नज्फुद्दम' कहते हैं।

इसका वर्णन आमाशय के रोगों में किया गया है। पाश्चात्य वैद्यक में नज्फुद्दम को हीमोरेज (Haemorrhage)' और कैउद्दम को 'हीमाटेमेसिस (Haematemesis)' कहते हैं। आयुर्वेद में प्रथम को 'रक्तस्राव' और द्वितीय को 'रक्त वमन' कहते हैं।

हेतु--इसका प्रधानतम कारण उरःक्षत है, किंतु फुफ्फुसशोथ, फुफ्फुसव्रण, धमनी विस्तृति (एन्युरस्मा), सर्तान या किसी उग्र चेष्टा के कारण फुफ्फुसीय रक्तस्रोतसों के फट जाने तथा कतिपय हृद्रोगों से भी यह विकार हो जाता है। कदाचित् फुफ्फुस विकार के कारण कभी-कभी मासिक धर्म बन्द हो जाने पर स्त्रियों के फेफड़ों से रक्त निकलने लगता है। कभी-कभी खाँसी की तीव्रता, बलपूर्वक चिल्लाने, कण्ठ के भीतर जोंक लग जाने, तीव्र रेचन या तीक्ष्ण उष्ण औषधाहार के सेवन या वायु की अधिकता आदि से फुफ्फुसीय स्रोतस् फट जाने से रक्तष्ठीवन रोग हो जाता है।

मुँह से निकलनेवाला रक्त कभी मसूढ़ा आदि मुखावयव से या गलशुण्डी या मूर्धा आदि कण्ठावयव से अथवा सिर से कण्ठ की ओर उतरता है अथवा स्वरयंत्र, फुफ्फुसप्रणाली, वक्ष एवं फुफ्फुस से अथवा अन्नप्राणाली, आमाशय तथा यकृत् में से किसी अंग से अथवा हृदय से आता है। कभी-कभी प्रसेक भी इसका कारण-भूत होता है।

लक्षण--जो रक्त मुखावयव अर्थात् मसूढ़ों और दाँतों की जड़ों से आता है, वह थूक के साथ निकलता है और जो कण्ठावयव अर्थात् गलशुण्डी या मूर्धा वा कण्ठ की सूजी हुई ग्रन्थि से आता है, वह खखार के साथ आता है; कण्ठ के भीतर क्षोभ एवं सूखी खाँसी आती है और दम लेने में कष्ट होता है। जो सिर से आता है वह कभी खंखार के साथ आता है, किन्तु इसके साथ नकसीर के लक्षण, जैसे चेहरे की सुर्खी और शिरोःगौरव आदि भी पाया जाता है और रक्त निकलने के पीछे सिर में हलकापन मालूम होता है। जो रक्त स्वरयंत्र या फुफ्फुस-प्रणाली से आता है वह भी खंखार के साथ आता है, किन्तु प्रमाण में कम होता है तथा आवेगपूर्वक आता है। जो वक्ष (सीना) से आता है, वह अत्यधिक खाँसने से आता है, थोड़े दर्द के साथ और काले रंग का जमा हुआ होता है। सीना में तनावट और गौरव मालूम होता है और कभी-कभी श्वास लेने में कष्ट होता है। जो खास फुफ्फुस से आता है वह पतला, रक्त, झागयुक्त (कफदार) और खाँसी के साथ निकलता है। परन्तु; इसके साथ दर्द नहीं होता। यदि किसी फुफ्फुसीया सिरा के फट जाने से सहसा बहुत-सा रक्त निकल जाय या हृदय से रक्त आये तो कभी मूर्च्छा और कभी मृत्यु भी हो जाती है। जो रक्त अन्नप्रणाली, आमाशय या यकृत् से आता है वह वमन

के द्वारा निकलता है और उसका रंग कालाई लिये होता है, उसमें कुछ भोजन का अंश भी मिला होता है तथा आमाशय के ऊपर जलन एवं गर्मी प्रतीत होती है।

चिकित्सा——यदि मसूढ़ों से थूक के साथ रक्त आता हो, तो कवल का निम्न योग देवें——हरा माज़ू, गुलनार, हब्बुल् आस, पोस्त, छोटी माईं, सफेद कत्था, फिटकिरी प्रत्येक ६ माशा, पानी में पका-छानकर उससे कुल्ली करायें। संग-जराहत, दम्मुल्अख्वैन, कुंदुर प्रत्येक ३ माशा महीन पीसकर मंजन की भाँति दाँतों के ऊपर मलें अथवा सुनून मुजर्रब या सुनून कलाँ या सुनून चोबचीनी में से कोई सुनून (मंजन) दाँतों पर मलें।

यदि कण्ठावयव अर्थात् गलशुण्डी या मूर्धा या सिरसे रक्त आता हो तथा रोगी बलवान् हो तो सरारू का सिरावेध करें और गुद्दी पर खाली सींगी लगवायें तथा कवल (मज्मजा) का उपरिलिखित योग व्यवहार करायें।

यदि स्वरयन्त्र और फुफ्फुस प्रणाली से रक्त आता हो तब भी उपर्युक्त कवल का प्रयोग करायें अथवा मेंहदी के पत्र, सूखा धनिया प्रत्येक ६ माशा, कमीला ३ माशा पानी में उबालकर उससे कवल धारण करायें तथा निम्न गुटिका योग का सेवन करायें——दम्मुल् अख़्वैन, गिल अरमनी, अकाकिया, गुलनार फारसी, शादनज मग्सूल, कहरुबाशमई, निशास्ता, संगजराहत, बबूल का गोंद, कतीरा, सत मुलेठी प्रत्येक २ माशा, अफीम और केसर ४–४ रत्ती कूट-छानकर यथावश्यक गावजबान के लुआब में मिलाकर चने प्रमाण की गोलियाँ बनायें और दो गोलियाँ हर समय मुँह में रखवाकर धीरे-धीरे लुआब चुसायें।

यदि स्वयं फेफड़े से रक्त आता हो तथा सूजन न हो तो सीने पर संग्राही ओष-धियों का लेप करें। यदि किसी फुफ्फुसीया सिरा (रग) के फट जाने से एक साथ अधिक रक्त निकले अथवा हृदय से रक्त आया हो और मूर्च्छा की दशा हो तो रोगी को शीतल गृह में सुखपूर्वक चुप-चाप लिटा देवें। उसका सिर ऊंचा रखें। बोलने और चेष्टा करने से रोकें। सीने पर बर्फ लगायें। रोगी चतुर हो तो बर्फ के टुकड़े चुसायें। चंदन को अर्कगुलाब में घिसकर उसमें कपड़ा भिगोकर सीने के ऊपर रखवायें। गेरू, संगजराहत और दम्मुल्अख़्वैन १–१ माशा महीन पीसकर ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर खिलायें। ऊपर से ३ माशे बिहीदाने का लुआब, ३ माशे अंजबार की जड़ का शीरा, ३ माशे हब्बुल्आस का शीरा, ३ माशे कुलफा के बीज का शीरा, बड़ की डाढी का शीरा जल में पीसकर २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर एक समय पिलायें। दूसरे समय कुर्स गुलनार ४।। माशा या कुर्स कहरुवा ४।। माशा खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क गावज़बान में २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर पिला दिया करें अथवा

गुलखैरू १ तोला गरम पानी में भिगोकर छानकर २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर पिला दिया करें। अडूसा की पत्ती १ तोला पानी में पीस-छानकर २ तोला शर्बत खशखाश या २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि प्रसेक के कारण रक्त बहता हो तो गेरू और संगजराहत १-१ माशा महीन पीसकर ७ माशे खमीरा गावजबान या ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर प्रथम खिलाकर बिहीदाना ३ माशा, उन्नाव ५ दाना, लिसोढा ९ दाना पानी में उबाल-छानकर २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर ३ माशे कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा योजित कर पिलायें। कनपुटियों पर नजलाबन्द चिपकायें। खाँसी की तीव्रता में दियाकूजा ७ माशा और २ तोला शर्बत खशखाश के साथ उपर्युक्त योग सेवन करायें।

रक्तष्ठीवन कासोपकारी लऊक अंजबार का योग—अंजबार की जड़ २ तोला, पोस्ते की अखंड ५ डोडी, खतमी के बीज १॥ तोला, खुब्बाजी के बीज १॥ तोला, लिसोडा १॥ तोला, मुलेठी १४ माशा, बिहीदाना ६ माशा, उन्नाव २० दाना सबको रात्रि में पुटपाक किये हुए कद्दू और पेठा के आध-आध सेर रस में भिगोकर सवेरे पका-छानकर आध सेर मिश्री मिलाकर चाशनी करें। तदुपरांत कहरुबाए शमई, गिल अरमनी, सत मुलेठी, दम्मुल्अख्वैन, वंशलोचन प्रत्येक ७ माशा, बबूल का गोंद और कतीरा ६-६ माशा पीसकर योजित करें। मात्रा—७ माशा लेकर थोड़ा-थोड़ा चटायें। काफूर सय्याल ५-५ बूँद पानी में मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि उरःक्षत (सिल्ल) के कारण रक्त आता हो, तो उपद्रव एवं कक्षा को ध्यान में रखकर वे ही उपाय काम में लेवें, जिनका उल्लेख सिल्ल के वर्णन में किया गया है।

विशेषकर फुफ्फुसशोथ की दशा में रक्तष्ठीवन बहुत ही भयंकर है। इसकी चिकित्सा में असावधानी करने से प्रायः परिणाम दुःखद होता है और प्रायः उरःक्षत (सिल्ल) की आशंका होती है।

पथ्य—लघु, नरम और शीघ्र पाकी आहार, जैसे—यवमंड अर्थात् जौ का उबाला हुआ पानी तीव्र रोग में और रोग निवृत्ति की दशा में साबूदाना या खीरा-ककड़ी के बीज के मग्ज की खीर पकाकर कम मीठा मिलाकर देवें। मूँग की दाल का पानी या मूँग की नरम खिचड़ी या गेहूं की दलिया। आरोग्योन्मुख होने की दशा में गेहूं की चपाती बकरी के शूरबा कम मिर्च और मसाला पड़े के साथ और तरकारियों में से कद्दू, पालक, तुरई, भिंडी, टिंडा आदि देना चाहिए।

अपथ्य--तीव्र चेष्टा और गुरु पदार्थों के उठाने, अधिक चलने-फिरने, दौड़ने और परिश्रम करने, अधिक मद्यपान और चायसेवन तथा गरम, तीक्ष्ण, मधुर और लवण आहार, मसालेदार पदार्थों, अचार, चटनी आदि, मछली और अंडा आदि के सेवन तथा अतिमैथुन से परहेज करना चाहिए।

४--सिल्ल व दिक

नाम--(अ०) सिल्ल, दिक़; (फा०) तपेदिक़; (उ०) दिक का बुख़ार; (सं०) उरःक्षत, क्षय, राजयक्ष्मा; (अं०) थायसिस (Phthisis) कन्‌जम्प्शन (Conjumption)।

वक्तव्य—सिल्ल का अर्थ क्षय वा शोष (हुज़ाल व ज़बूल) है। फुफ्फुसीय व्रण (क़र्हारियः) में शरीर अनिवार्यतः क्षीण वा कृश हो जाता है; अतएव यूनानी हकीम इसे 'सिल्ल' नाम से अभिधानित करते हैं।

हेतु--साधारणतः उष्ण प्रसेकीय दोष के फुफ्फुस पर गिरने और उसमें क्षोभ उत्पन्न होकर व्रण हो जाने या पार्श्वशूल का नियमपूर्वक चिकित्सा न होने और दोष रुककर पक जाने से फुफ्फुस में व्रण हो जाते हैं। कभी पुरानी खाँसी में चिकित्सा की गड़बड़ी से साधारणतया यह रोग हो जाता है। क्योंकि; अधिक काल तक खाँसी बने रहने से फुफ्फुस दुर्बल हो जाते हैं और उनमें क्षोभ होकर व्रण उत्पन्न हो जाते हैं।

लक्षण--इसके साथ दिक का होना अनिवार्य है। रोगी को प्रथम शुष्क कास और सूक्ष्म ज्वर होता है। कुछ कालोपरांत खाँसी में कभी रक्त और कभी शुष्क छिलके और कभी रक्तमिश्रित कफ निकलता है। चेहरा लाल होता है। नेत्र धँस जाते हैं। नख टेढ़े हो जाते हैं। कभी-कभी पादशोथ होता है। जिस ओर के फुफ्फुस में व्रण होता है, उस ओर की करवट लेने में कष्ट अधिक होता है और खाँसी उठती है। सिल्लोत्पादक दोष प्रथम फुफ्फुसों में संचित होकर दाने और ग्रन्थियों का रूप ग्रहण कर लेता है। कुछ काल बाद ये दाने वा ग्रन्थियाँ पककर पनीर के सदृश हो जाते हैं। तदुपरांत उक्त दोष गलकर पीप में परिणत हो जाता है तथा फुफ्फुस में विवर वा व्रण उत्पन्न कर देता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि फुफ्फुस में तो किसी प्रकार का व्रण नहीं होता, किन्तु रोगी की बाह्य दशा ठीक सिल्ल (यक्ष्मा) के रोगी जैसी होती है। कृच्छ्रश्वास, तीव्र कास, शरीर में दौर्बल्य की उत्तरोत्तर वृद्धि, शरीर कार्श्य आदि यक्ष्मा के सभी लक्षण पाये जाते हैं। इस प्रकार के रोगियों में सिर से वक्ष की ओर अत्यंत सांद्र एवं गाढ़े द्रव निरंतर उतरते रहते हैं और वह अत्यंत कोथयुक्त तथा पीप के सदृश होते हैं। इनके थूक में निकलने

से यक्ष्मा का संदेह होता है। यद्यपि यह रोग वस्तुतः श्वास (कृच्छ्रश्वास) रोग का एक भेद होता है। परन्तु यक्ष्मा से लक्षण सादृश्य के कारण यूनानी वैद्य इसे भी सिल्ल (यक्ष्मा) कह देते हैं। परन्तु फुफ्फुसीय व्रण की दशा में सिल्ल हकीकी और इस प्रकार की सिल्ल को गैर गैर हकीकी के नाम से अभिधानित करते हैं। भेद केवल यह है कि गैर हकीकी में केवल अपक्व द्रव थूकके साथ निकलता है तथा ज्वर नहीं होता और हकीकी में पीप और रक्त दोनों निकलते हैं तथा इसके साथ स्वल्प ज्वर भी होता है। निदान के लिये इस बात का पता लगाना आवश्यक होता है कि थूक के साथ निकलने वाला द्रव केवल गाढ़ा कफ है या पीप। परीक्षार्थ थूक में निकले हुए द्रव को पानी में डालकर रख देवें और हिलायें नहीं। दो-तीन घंटे पीछे देखें। यदि वे तलस्थित हो गये हों तो पीप समझना चाहिये। यदि वे जल के ऊपर तैरते रहें, तो कफ समझें। अथवा कोयले की अग्नि पर डालकर देखें। यदि दुर्गन्धित चिरांँयध उठे तो पीप, वरन् कफ समझें।

उपद्रव के विचार से सिल हकीकी के ये दो भेद होते हैं :--१ तीव्र और २ चिरज। तीव्र वा उग्र दोषयुक्त सिल्ल में अधिक से अधिक ६ मास में तीनों कक्षाएँ पूरी हो जाती हैं। परंतु चिरज सिल्ल का रोगी उचित उपाय होने पर प्रायः ३३ मास और कोई वर्षों भी जीवित रह जाते हैं।

लक्षण एवं चिकित्सा के विचारानुसार यक्ष्मा (सिल्ल) को तीन कक्षाओं में विभाजित करते हैं।

प्रथम कक्षा--इसमें रोगी को अति सूक्ष्म खाँसी आती है जो किसी-किसी समय साधारण रूप में उठती है--हलका ज्वर होता है जिसका अनुभव रोगी को नहीं होता। खाँसी में किंचित् पतला झाग और कफ कभी-कभी निकलता है। रोगी की भूख, प्यास आदि सभी ठीक दशा में होती हैं। यदि सौभाग्यवश ऐसी दशा में चिकित्सा की ओर ध्यान हो जाय, तो साधारणतः आरोग्य की आशा होती है।

द्वितीयकक्षा--इसमें खाँसी तीव्र हो जाती है और अत्यधिक रक्त आना आरंभ हो जाता है। हर समय स्वल्प ज्वर रहता है। हाथ की हथेलियाँ और पैर के तलुवे जलते हैं। वक्ष में साधारण (स्वल्प) वेदना प्रतीत होती है। जब पीप बनने लगे तब प्रतिदिन रात्रि में दो बार शीतपूर्वक ज्वर होता है। रात्रि में ज्वर १०३° और नाड़ी का स्पंदन ११० तक अथवा इससे अधिक हो जाता है। दौर्बल्य उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। रोगी अत्यंत क्षीण हो जाता है। यदि इसमें चिकित्सा की जाय तो आरोग्य की आशा तो नहीं होती, किन्तु रोगी चिरकाल तक जीवित रह सकता है।

तृतीयकक्षा--इसमें प्रातःकाल सिर और सीना पर प्रचुर स्वेद होता है। असीम दौर्बल्य एवं कार्श्य हो जाता है। रात्रि में निद्रा नहीं आती और पाद-शोथ हो जाता है। दुर्गन्धित विरेक आने प्रारंभ हो जाते हैं और समस्त लक्षण तीव्र हो जाते हैं। रोगी के बाल गिरने आरंभ हो जाते हैं। जब इस प्रकार के विरेक आने आरंभ हो जायँ कि वे अत्यंत दुर्गन्धित हों और थूक भी अधिक दुर्गन्धित हो जाय, तब रोगी की आसन्न मृत्यु समझना चाहिये। ऐसे समय में हर एक उपाय निरर्थक सिद्ध होता है।

चिकित्सा--इस प्रकारके रोगी को बहुत स्वच्छ रखें। ओढ़ने, बिछाने और पहिनने के वस्त्र मलिन नहीं होने देवें, प्रत्युत तीसरे-चौथे दिन बदल दिया करें। प्रारंभ में ही यदि रोग का निदान हो जाय, तो केवल जलवायु एवं आहार परिवर्तन पर्याप्त है। खाँसी के लिये साधारण प्रसेक एवं प्रतिश्याय की चिकित्सा करें। रोग की अधिकता की दशा में यदि रक्त आता हो तो गेरू, संगजराहत, दम्मुल्अख़्वैन और मसीकृत केकड़ा प्रत्येक १ माशा पीसकर २ तोले शर्बत खशखाश में मिलाकर प्रथम खिलायें। ऊपर से बेदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना और लिसोढ़ा ९ दाना पानी में उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि अधिक प्रमाण में रक्त आता हो तो इसी योग के साथ (काफूर महलूल) १०–१० बूँद पानी में मिलाकर भोजनोत्तर दोनों समय पिला दिया करें।

यदि पाचन शक्ति बिगड़ जाय तो बेदाना के स्थान में उन्नाब, ५ माशा बादियान (सौंफ), ३ माशा मुलेठी १२ तोले अर्क गावजबान में इनका शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर पिलायें। रक्त बन्द होने के बाद सफेद राल २ रत्ती, बबूल का गोंद, कतीरा और मसीकृत केकड़ा प्रत्येक १ माशा पीसकर १ तोला लऊक़ नजली आब तरबूज वाला में मिलाकर प्रथम खिलायें। ऊपर से पूर्व लिखित बेदाना उन्नाबवाला योग पिलायें। इस रोगी के लिये साधारण मलावरोध रहना हितकर है। परंतु अधिक मलावरोध की दशा में कोई ऐसी मलावरोध निवारक (कब्जकुशा, मुलय्यिन) औषधि जिससे एक दस्त खुलकर हो जाय, सेवन कराना जरूरी है। प्रत्युत श्रेष्ठतर यह है कि खाने की ओषधि के स्थान में उक्त प्रयोजन के लिये बस्ति का प्रयोग किया जाय। रात्रि में सोते समय २ तोला लऊक सेपिस्तां १२ तोले अर्क गावज-बान में उबालकर पिला दिया करें। तीव्र खाँसी में हब्बसुर्फा का प्रयोग भी गुणकारी है। ३ माशे मछली का सरेश दूध में घोलकर भोजन के साथ खिला दिया करें तथा रोगी का बल स्थिर रखने का ध्यान रखें।

यदि ज्वर तीव्र न हो तो बलवृद्धि के लिये लघु स्वर्णभस्म (कुश्ता तिला

खुर्द) २ चावल ७ माशे खमीरा गावजबान अंबरी या ५ माशे मुफर्रेह बारिद में मिलाकर रात्रि में सोते समय खिला दिया करें या विद्रुत स्वर्ण (तिला महलूल) ३ बूंद अथवा विद्रुत मुक्ता (मरवारीद सय्याल) ५ बूँद पानी में मिलाकर बलवृद्धि के लिये पिला दिया करें। पाचन का विशेष रूप से ध्यान रखें। यदि रोगी को अतिसार हो जाय, तो उसकी ओर शीघ्र ध्यान देवें। इस प्रयोजन के लिये मालती वसंत २ चावल ७ माशे जुवारिश ऊद शीरी में मिलाकर खिलाएं। यदि विरेक बन्द न हो तो पीने की ओषधि में पोस्ते की एक डोडी का शीरा तथा ३ माशे हब्बुल् आसका शीरा योजित करें या सफूफ तीन ५ माशे गाय के घी में मलकर देवें। सायंकाल कुर्स सर्तान ४।। माशा १२ तोले अर्क गावजबान और २ तोले शर्बत एजाज के साथ देवें। १ माशा आमलासार गंधक महीन पीसकर २ तोले शर्बत एजाज या ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर खाना प्रभावतः लाभकारी है।

स्त्री, गदही या बकरी में से जिसका दूध प्राप्त हो सके, उसे राजयक्ष्मा के रोगी को पिलाने से उपकार होता है। जब शरीर में अधिक रूक्षता हो जाय तब दूध का सेवन प्रारंभ कराना चाहिये। ७ तोले से प्रारंभ करके तीन दिन तक बराबर इसी प्रमाण से देवें। तदुपरांत चौथे दिन से १-१ तोला प्रति दिन बढ़ाते रहें। जब दूध का प्रमाण ४१ तोला तक पहुँच जाय, तब उसी प्रकार १-१ तोला प्रति दिन कम करके प्रथम मात्रा पर आ जायँ। पुनः तीन दिन तक यही प्रमाण अर्थात् ७ तोला सेवन कराके छोड़ देवें।

यदी स्त्री वा बकरी का दूध पिलाना हो, तो ऐसी स्त्री या बकरी का पिलावें जिसे प्रसव हुए चालीस दिन बीत चुके हों, यदि गदही का दूध पिलाना अभीष्ट हो, तो ऐसी गदही खोजना चाहिये जिसको बच्चा जने चारमास बीत चुके हों। बकरी, स्त्री या गदही को ठंढे शाक खिलायें। यदि चारे का विशेष प्रबन्ध न हो सके, तो कम से कम ऐसे उष्ण पदार्थ नहीं देवें, जिनका प्रभाव दूध पर पड़कर रोगी को हानि पहुँच सके। यदि दूध पिलाने से ज्वर बढ़ जाय, तो दो-चार दिन दूध का सेवन त्याग देवें और उसके बदले ककड़ी का पानी, हिनवाना का रस या कुलफा के बीज का शीरा पिलायें। मीठा करने के लिये दूध में अत्यल्प चीनी या मधु मिलायें, जिसमें वह आमाशय में जम न सके। हब्ब मसीहा १ गोली गाय के दूध के साथ घटा-बढ़ाकर देने से भी बहुत लाभ होता है।

यदि खाँसी तीव्र हो तो ३ माशे कतीरा दूध में घोलकर पिलायें। आमाशय दौर्बल्य (अग्निमांद्य) की दशा में स्याह जीरा पीसकर दूध के ऊपर प्रक्षेप देकर पिलायें। हब्बसिल्ल १ गोली दूध के साथ देते रहने से भी उपकार होता है। यदि आमाशय के भीतर दूध दूषित एवं विकृत हो जाय, तो उस समय

मृदुरेचन औषधि देवें। सुतरां लऊक सेपिस्तां ख़ियार शंबरी १ तोला १२ तोले अर्क गावजबान में उबालकर पिलाने से एक-दो विरेक हो जाते हैं। लऊक नजली आब तरबूजवाला ७ माशे या खमीरा आबरेशम शीरए उन्नाब-वाला ५ माशा खिलाने से बलवृद्धि होती है। कुर्स तबाशीर, कुर्स कहरुवा या कुर्स सर्तान काफूरी में से कोई एक औषधि ४।। माशे १२ तोले अर्क गावजबान और २ तोले शर्बत एजाज या २ तोले शर्बत खशखाश मिलाकर उसके साथ देने से भी लाभ होता है। खाँसी की तीव्रता में २ गोली हब्ब सुर्फा रात्रि में सोते समय खिलाने से भी शांति मिलती है। अत्यंत दुर्बलता होने पर १ गोली हब्ब जवाहर या २ चावल कुश्ता तिला खुर्द ५ माशे खमीरा आबरेशम हकीम इर्शद-वाला में मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। सिल्ल गैर हकीकी में कफज कृच्छ्रश्वासोल्लिखित चिकित्सा पर्याप्त होती है।

यदि प्रसेक एवं प्रतिश्याय के कारण हो तो प्रसेक और प्रतिश्याय में लिखित चिकित्सा विधि काम में लेवें। हरा गुरुच, हरा नाय, छिली हुई मुलेठी और अड़ूसा की पत्ती प्रत्येक ३ माशा सबको गरम पानी में भिगो-छानकर (फांट बनाकर) २ तोले शर्बत एजाज़ मिलाकर पिलाने से भी सिल्ल व दिक में बड़ा लाभ होता है। बबूल का गोंद, कतीरा, सत मुलेठी, वंशलोचन, गुरुच का सत, कहरुवा शमई, दम्मुल् अख़्वैन, प्रवाल, छोटी इलायची का दाना प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर २ तोले शर्बत बनफ्शा में मिलाकर चटाने से लाभ होता और रक्त आना बन्द हो जाता है।

पाचनविकार और आमाशयातिसार में आमाशय और अन्त्र को उद्दीपन कराने वाली औषधियाँ सेवन करनी चाहिये। अस्तु, भोजनोत्तर १ माशा सफूफ नमक या ३ माशा सफूफ नाना खिलाने या ५ बूंद विद्रुत गन्धक (गंदक सय्याल) पानी में मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। अतिसार बन्द करने तथा अन्त्र और आमाशय के उद्दीपनार्थ २ रत्ती मालती वसंत या २ रत्ती तूतिया, एकबीर ७ माशे माजून संगदानए मुर्ग में मिलाकर या ७ माशे ऊद जुवारिश शीरी में मिलाकर सेवन कराने से उपकार होता है। ग्रैवेयी ग्रंथियों के शोथयुक्त होने पर यदि शोथ बाहर से मालूम हो तो सावरभृङ्ग भस्म १ माशा १ तोला घी में मिलाकर सूजन पर लगाने से लाभ होता है अथवा १ माशा जदवार और ३ माशे ईर्सा महीन पीसकर १ तोला मरहम बासलीकून या १ तोला मरहम दाखिलयून में मिलाकर लगाना चाहिये। यदि कण्ठ से रक्त आता हो तथा कण्ठ में पीड़ा हो तो मेंहदी की पत्ती, कमीला, सूखा धनिया प्रत्येक ३ माशा पानी में उबालकर उससे गण्डूष करायें। कब्ज होने पर कोई तीक्ष्ण विरेचन औषधि नहीं देवें। प्रत्युत आवश्यकता पड़ने पर केवल १ माशा कमीला, २ तोले गुलकंद

में मिलाकर रात्रि में खिला देने से प्रातः खुलकर साफ पाखाना हो जाता है।

पूर्वावधानता--जो व्यक्ति दुर्बल एवं क्षीणकाय होते हैं विशेषकर युवावस्था में १६–१७ वर्ष से २२ वर्ष की आयु तक विशेषतः ३०–३५ वर्ष की आयु तक वे प्रायः इस रोग के लिये अनुकूल होते हैं। ऐसे व्यक्तियों को पूर्वावधानता स्वरूप दुःख-शोक, चिन्ता, आयास, क्रोध; क़लम और श्रम की अधिकता, रात्रिजागरण और अतिव्यवाय, अधिक परिश्रम, अधिक संभाषण तथा लोहार का व्यवसाय और शीशा की कलई एवं तेजाब आदि के काम से तथा इस प्रकार के व्यवसाय से जिनसे फुप्फुस पर बल पड़े और सीना को कष्ट हो, परहेज करना चाहिये। अधिक शीत एवं तीव्र धूप में चलने-फिरने से सावधान रहें। यदि प्रसेक और प्रतिश्याय आदि होता हो तो उसका तात्कालिक उपचार करायें। असावधानी नहीं करें। यदि संभव हो तो ऐसे स्थान की वायु में जो शामक हो और आर्द्र न हो, जैसे पर्वतीय वायु प्रायः होती है, आवास ग्रहण करें।

इस रोग से पीड़ित रोगियों के समीप अधिक काल तक नहीं ठहरें। ऐसे रोगियों के थूक,-कफ और पीप आदि तथा मल-मूत्र को किसी पृथक् पात्र में कराके आबादी से दूर पहुँचाकर काष्ठ का बुरादा डालकर जलवा देवें। ऐसे रोगियों के साथ खाने-पीने से और विशेष कर उनका जूठन खाने और जूठा पानी पीने और खाने के जूठे पात्र में बिना धुलवाये भोजन करने अथवा शरीर का उतरा हुआ वस्त्र बिना धुलवाये पहिनने और एक ही शय्या पर साथ में सोने से परहेज करें।

रोगावस्था में रोगी के लिये परहेज--दूध पिलाने के मध्य मछली और अम्ल सेवन से परहेज करें। गरम और मसालेदार पदार्थ तथा गुड़ एवं तेल और इनकी पकी हुई वस्तुओं, गोभी, आलू, अरबी, कचालू आदि गरिष्ठ एवं दीर्घपाकी पदार्थों एवं प्याज आदि बाष्प कारक पदार्थों से परहेज करें।

पथ्य--पतला, लघु एवं शीघ्रपाकी बल्य आहार जैसे--बकरी का शूरबा या मूँग, अरहर की दाल चपाती के साथ देवें। पालक, कुलफा, कद्दू, तुरई, टिंडा आदि शाकों में से कोई साग देवें। ताजा केकड़े के हाथ-पैर पृथक् करके शेष को पानी में उबालकर शूरबा या यखनी की भांति देने से सिल्ल (यक्ष्मा) के रोगी को बड़ा लाभ होता है। दही और छाछ में लहसुन मिलाकर देने से भी बहुत उपकार होता है।

५--ज़ातुज्जन्ब

नाम--(अ०) ज़ातुज्जन्ब, वरम ग़िलाफ़ुर्रियः; (उ०) पसली या पहलू का दर्द; (अं०) प्ल्युरिसी (Pleurisy) या प्लुराइटिस (Pleuritis)।

वर्णन--वास्तव में तो पर्शुकापेशियों के भीतर की ओर आवरण करनेवाली झिल्ली को 'जातुज्जन्ब' कहते हैं ; परन्तु कभी-कभी फुफ्फुस के ऊपर आवरण करनेवाली झिल्ली में, कभी फुफ्फुस की रचना एवं भीतरी पेशियों में या पर्शुकाओं के भीतरी धरातल पर आवरण करनेवाली झिल्ली में या वक्षोदरमध्यस्थ पेशी (हजाब हाजिज़) में भी शोथ हो जाता है।

भेद--रोगों की सम्प्राप्ति के विचार से इसके निम्न दो भेद होते हैं-(१) जातुज्जन्बहक़ीक़ी--इसमें पर्शुकाओं की भीतरी पेशियों या वक्षोदरमध्यस्थ पेशी के ऊपरी धरातल पर आवरण करनेवाली झिल्ली में शोथ होता है। इसको ही पाश्चात्य वैद्यक में 'प्ल्युरिसी' या 'प्ल्युराइटिस' कहते हैं। (२) जातुज्जन्ब ग़ैर हक़ीक़ी--इसमें पर्शुकाओं की मध्यवर्ती पेशियों तथा उनको आवरण करने वाली झिल्लियों के बीच शोथ नहीं होता, अपितु केवल सांद्र वायु अवरुद्ध होकर वेदना का कारण हो जाते हैं। इसको 'वज्उज्जन्ब' भी कहतेहैं। पाश्चात्य वैद्यक में इसको' फाल्स प्ल्युरिसी (False Pleurisy)' या 'प्ल्युरोडीनिया (Pleurodynia) कहते हैं। जातुज्जन्ब हक़ीक़ी के पुनः ये दो आवरण भेद होते हैं--(१) खालिस जिसमें वक्षकी बाहरी पेशियों का या पर्शुकाओं के ऊपर की झिल्ली में शोथ हो जाता है, जिससे कभी त्वचा भी आक्रान्त होती है। इसके अतिरिक्त शोथ के स्थान के विचारानुसार भी इस रोग को विभिन्न नामों से अभिधानित किया गया है। अस्तु, यदि उरोऽस्थि के नीचे आवरण करने वाली झिल्ली के अगले भाग में सूजन हो तो उसको जातुस्सद्र (Mediastinal Pleuritis) कहते हैं। यदि उसके पिछले भाग में सूजन हो, जो रीढ़ के मोहरों पर आवरण करती है तो उसको जातुल्-अर्ज (Mesodmitis) कहते हैं। यदि मिथ्या पर्शुकाओं के भीतरी धरातल पर स्तर करनेवाली झिल्ली में सूजन हो, तो उसे शौसः (Pleuritis) पार्श्वशूल कहते हैं। यदि वक्षोदरमध्यस्थ पेशी (दियाफर्गमा) में शोथ हो तो उसे बरसाम (Diaphragmitis) कहते हैं। यदि उभय पार्श्व के फुफ्फुसावरण तथा उरोऽस्थि के नीचे आवरण करनेवाली झिल्ली सभी सूज जाएँ तो उसे ख़ानिक़ः या जातुज्जन्ब मुजाअफ़् (Double Pleurisy) कहते हैं।

इसी प्रकार किसी-किसी ने रोगजनक दोष के विचार से भी इसके निम्न चार भेद किये हैं--(१) रक्तज, (२) पित्तज, (३) कफज और (४) सौदावी।

हेतु--इस रोग का मूल हेतु चतुर्दोषों में से किसी एक का प्रकोप विशेषकर अम्लपित्त, रक्तमिश्र पित्त, क्षारीय या दुर्गन्धित (दूषित) कफ और विदग्ध सौदा का प्रकोप हुआ करता है, जो सर्दी या अभिघात लगने से प्रकट हुआ करता है। यह चाहे रक्त, सौदा, कफ या किसी दोष से भी

उत्पन्न हुआ हो, इसमें पित्त का संसर्ग अवश्य होता है। परन्तु; गैर खालिस जिसमें केवल पर्शुकाओं के बाहर वाली झिल्ली ही शोथयुक्त होती है, केवल रक्त से उत्पन्न हो जाता है। यद्यपि यह रोग हर अवस्था में उत्पन्न हो सकता है, तथापि स्त्रियों की अपेक्षया पुरुषों को और बालक एवं वृद्धों की अपेक्षया युवाओं को अधिक होता है। मद्यपायी और दुर्बल व्यक्ति जिनके फुफ्फुस दुर्बल होते हैं या वे निर्धन व्यक्ति जिन्हें पर्याप्त पुष्टिकर भोजन नहीं मिल सकता, इस रोग से अधिक आक्रांत होते हैं। जिसको यह रोग एक बार हो जाय, उसे इसके बारंबार होने का भय रहता है। शीतल एवं आर्द्र स्थानों में शरद् एवं वसंत ऋतु में गृह (आवास) की अस्वच्छता एवं गंदगी और पोशाक मैले-कुचैले रखने से भी यह रोग हो जाता है। यह भी एक संक्रामक रोग है और कतिपय रोगों के उनके आक्रमणकाल में विशेषकर हृद्रोग, तीव्र वृक्कशोथ, मधुमेह, रोमान्तिका, दुष्ट प्रतिश्याय (इन्फ्ल्युएन्जा), राजयक्ष्मा, चिरज कास आदि में यह उपद्रव रूप में हो जाता है।

लक्षण--रोगी को ज्वर होता और पर्शुकाओं के नीचे चुभन प्रतीत होती है। बारंबार खाँसी उठती है। श्वास कठिनाई एवं कृच्छ्रतापूर्वक आता है। मुख शोष होता तथा पिपासा लगती है। चेहरे पर किंचित् लाली होती है। नाड़ी कठिन और मृदु अर्थात् (मिन्शारी) होती है।

स्वास्थ्य रक्षा--रोगी को सीने (छाती) पर चोट लगने तथा रोग के अन्यान्य हेतुओं से बचे रहने का आदेश करें और सदैव गंभीर श्वास लेनेरूप व्यायाम का अभ्यासी बनायें।

चिकित्सासूत्र--रोगी को शीत से बचाये रखें और किसी प्रकार की चेष्टा नहीं करने देवें। उसे बिल्कुल शय्या पर आराम से लेटाये रखें और उठने-बैठने की आज्ञा नहीं देवें। बिना आवश्यकता के बोलने एवं दीर्घ श्वास लेने से मना कर देवें। आवास को गर्म एवं खुश्क रखें। यदि आवश्यक हो तो उसे कोयलों से गर्म कर लेवें; परन्तु इस बात का ध्यान रखें कि धुआँ उत्पन्न न हो।

यदि वेदना (दर्द) तीव्र हो तो उसे कम करने के लिये राई का पलस्तर लगायें या पोस्ते की डोंड़ी को पाव भर पानी में पकाकर उसे टकोर करें। दर्द एवं सूजन दूर करने के लिये विपरीत दिशा की बासलीक का सिरावेध बहुत गुणकारी है। विबंध (कब्ज) हो तो उसे निवारण करें और हेतु हो तो उसे निवारण का उपाय करें।

चिकित्साक्रम--विकारी स्थल पर, प्रत्युत विकारी पार्श्व के सीने के आधे भाग पर राल का पलस्तर या जिमाद उशक लगायें या एक चौड़ी-सी पट्टी

बँधवायें, जिसमें उस ओर गति कम हो। तीव्र वेदना में पोस्ते की दो डोंडी और २ तोले गुल बाबूना के काढ़े से टकोर करें। कब्ज की व्यथा हो तो लऊक सेपिस्तां खियारशंबरी १ तोला १२ तोले अर्क गावजबान में उबालकर कवोष्ण (कुनकुना) पिलायें। यदि रोगी बलवान् हो और रक्त प्रकोप रोग का हेतु हो तो दोषविलोमकरणार्थ रोगारंभ होने से तीन दिन के भीतर जिस ओर का फेफड़ा विकृत हो, उसके विपरीत ओर की बासलीक का सिरावेध करायें। उसके पश्चात् रुग्ण दिक् (पार्श्व) का सिरावेध कराना लाभकारी होता है। सिरावेधनोत्तर शीतजननार्थ (ठंढाई के लिये) बिहीदाना ३ माशा, उन्नाब ५ दाना और लिसोढ़ा ६ दाना पानी में पका-छानकर इसमें २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम कवोष्ण पिलायें, मर्दनार्थ कैरूती आर्द करस्ना १ तोला, तारपीन का तेल १ तोला दोनों को गरम करके मिला लेवें और दर्द के स्थान पर मर्दन करके ऊपर से गरम रूई बाँध देवें। यदि सिरावेध उचित न हो तो दोष-विलोमकरणार्थ (इमाला) सींगी लगवाना लाभकारी होता है।

यदि दोष सिरकी ओर स्थानान्तरित होकर मस्तिष्क की दशा को विकृत कर देवें तो सरसाम की भाँति सिरका २ तोला, गुलरोगन २ तोला और अर्क गुलाब आदि १० तोले में वस्त्रखंड भिगोकर सिर के ऊपर रखें।

यदि गाढ़ा और लेसदार कफ निकलता हो तो निम्न योग देवें —गुल-बनफ्शा, खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज प्रत्येक ७ माशा, छिली हुई मुलेठी, हंसराज प्रत्येक ५ माशा, पानी में काढ़ा बनाकर २ तोला मधु मिलाकर पिलायें तथा १ तोला गुलरोगन में ६ माशा सफेद मोम पिघलाकर लोबान और मस्तगी प्रत्येक ३ माशा का चूर्ण मिलाकर कवोष्ण मर्दन करने से लाभ होता है।

आराम हो जाने के पश्चात् ५ माशे खमीरा गावजबान जवाहरवाला में २ चावल उत्तम सावरशृंग भस्म लपेटकर या १ तोला मधु में मिलाकर देने से भी उपकार होता है।

तीव्र ज्वर में पीने के योगों में ७ माशे खाकसी की योजना की जा सकती है।

रोगकाल में प्यास के लिये पानी के स्थान में समय-समय पर अर्क मकोय और अर्क गावजबान दो-दो चार-चार घूँट देते रहें। हर प्रकार के उत्तेजक एवं स्वापजनन द्रव्यों से परहेज करायें।

वक्तव्य—प्रत्येक सूजन इन तीन बातों से खाली नहीं होती। या तो वह बैठ जाती है, या पक जाती है या सूजन का स्थान कड़ा होकर रह जाता है। इन स्थानों की सूजन बैठने का लक्षण यह है कि दिनानुदिन लक्षणों में कमी होती जाती है। जब सूजन पक जाती है, तब ज्वर एवं वेदना शान्त हो जाती

है। किन्तु ; सूजन का स्थान बोझल होता है और जिस दिन वह फूटता है, उस दिन फिर शीत लगकर तीव्र ज्वर चढ़ता है। सूजन के ठहरने या ठोस होने का लक्षण यह है कि प्रायः उपसर्गों में कमी हो जाती है, किन्तु सूखी खाँसी और श्वास-कष्ट बढ़ जाता है तथा सूजन का स्थान बोझल हो जाता है। यदि सूजन पककर फूट जाय और आराम मालूम न हो, तो रोगी मरणासन्न होता है। फुफ्फुस शोथ (न्युमोनिया) रोगी का पादशोथ शुभ और अतिसार अशुभ लक्षण है। जातज्जन्व अपने उपसर्गों एवं परिणामों के विचार से यह अत्यन्त सांघातिक रोग है। अतएव चिकित्सा के समय किसी चतुर एवं योग्य चिकित्सक के परामर्शानुसार कार्य करें। क्योंकि ; यदि भूल हो जाय, तो प्रथम तो इससे ही रोगी का बचना कठिन हो जाता है। यदि बच भी जाय, तो पीछे यक्ष्मा या उरःक्षत आदि रोगों के होने की आशंका होती है।

पथ्यापथ्य--रोगावस्था में केवल बकरी या मुर्गे का शूरबा या मुद्‌ग यूष या यवमंड में ५ दाना उन्नाव, ६ दाने लिसोढ़ा, ५ माशे छिली हुई मुलेठी और बादाम का तेल ६ माशा मिलाकर देवें। पर इस बात का ध्यान रखें कि आर्द्र आहार अत्यधिक न हो, क्योंकि इस प्रकार फेफड़े के विकारी आवरण में द्रवोद्रेचन का भय होता है। इसीलिये जल भी नहीं देना चाहिये। अधिक प्यास लगने पर कवोष्ण अर्क गावजबान दो-चार घूँट देना चाहिये। ज्वरादि दूर होने के पश्चात् यखनी का शूरबा-चपाती देवें। आहार लवणवर्जित देना चाहिये। यदि रोगकाल में सूजन फूट जाय, तो उस समय मध्वाम्बु (माउल्‌अस्ल) और यवमंड देवें जिसमें व्रण शुद्ध हो जाय। इन उपर्युक्त आहारों के अतिरिक्त शेष सभी आहारों से परहेज कराना चाहिये। धूएँ और धूप से भी परहेज कराना चाहिये।

हृद्रोगाध्याय २

नाम--(अ०) अम्‌राजुल्‌ क़ल्ब ; (उ०) दिल की बीमारियाँ ; (सं०) हृद्रोग, हृदयविकार ; (अं०) डिजीजेज आफ दी हार्ट (Diseasis of the Heart)।

१--खफकान

नाम--(अ०) ख़फ़्क़ान, इख़्तिलाजुल्‌ क़ल्ब ; (उ०) दिल का धड़कना (फड़कना ; (सं०) हृद्‌द्रव, हृदय द्रव, हृदयस्पंदन, हृच्छीघ्रता ; (अं०) पॉल्पिटेशन (Palpitation), **टैकीकार्डिया** (Tachycardia)।

वक्तव्य--'खफ्कान' में हृदय जोर-लोर से धड़कता है अथवा शीघ्र-शीघ्र गति करता है अर्थात् उसकी गति तीव्र हो जाती है। जब यह गति इतनी तीव्र हो जाती है कि उसमें कोई प्रबन्ध शेष न रहे, तब उसे 'इख़्तिलाजुल्क़ल्ब' कहते हैं। इसका एक भेद वह है, जिसमें हृदय की गति में कुप्रबन्ध उत्पद्धन्न हो जाता है और रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानौ उसका हृदय सीने से बाहर निकला जाता है। इसे 'क़ज़्फुल्क़ल्ब' (हृत्तालवैषम्य--Irregularity) कहते हैं।

भेद--हेतु एवं लक्षणानुसार इस रोग के विविध भेद किये गये हैं। अस्तु, जो हृदय की विप्रकृति (Functional disorder--क्रियाविकार) से होता है, उसके ये दो उपभेद हैं--उष्ण और शीतल। उष्ण के पुनः ये दो अवान्तर भेद होते हैं--अदोषज (साजिज) और दोषज (माद्दी)। दोषज में पित्तज और रक्तज का अंतर्भाव होता है। इसी प्रकार शीतल के पुनः निम्न दो अवांतर भेद होते हैं--अदोषज और दोषज। दोषज में कफज और सौदावी का अंतर्भाव होता है। इसके अतिरिक्त इसके निम्न भेद भी होते हैं--हृदयदौर्बल्यजन्य, स्पर्शासहिष्णुताजन्य (हिस्सी) और आमाशयानुबंधी।

हेतु--दोषजादोषज विप्रकृति, रक्ताल्पता या रक्त दुष्टि, हृदयदौर्बल्य एवं स्पर्शासहिष्णुता, पुष्कल तमाकू-चाय-मद्यादि मादक एवं उत्तेजक द्रव्य सेवन, हस्तमैथुन, अतिमैथुन, शुक्रप्रमेह और शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम आदि द्वारा उत्पन्न हुआ वातनाड़ी दौर्बल्य, अजीर्ण, अर्श, गलगण्ड, आर्तवदोष और वात-रक्त आदि से तथा अत्यधिक दुःख-चिंता से भी यह रोग हो जाता है। स्थूल पुरुषों एवं कोमल प्रकृति की ललनायें इस रोग से अधिक आक्रान्त होती हैं। स्त्रियों को अपतन्त्रक या मृगी, कम्पवात, उन्माद, मालीखोलिया आदि विकारों से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--साधारण आकस्मिक घटनाओं, तीव्र वेग से चलने, सीढ़ी पर चढ़ने तथा उद्वेग एवं क्रोध आदि मानसिक विकारों से हृदय जोर-जोर से धड़कने लगता है और वह धड़कन सीने की दीवाल में प्रतीत होती है। रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका हृदय डूब रहा हो। इसके साथ कभी नेत्र के सामने अंधेरा भी आ जाता है। साँस फूलना, नाड़ी तीव्र हो जाती, मूत्र रक्त वर्ण और मल शुष्क होता है। निरंतर कब्ज रहता है। वायु एवं कफ जन्य हो तो अङ्गमर्द एवं जम्भाई बहुत आती, मूत्र श्वेत एवं गाढ़ा होता, क्षुधा कम लगती और आलस्य बना रहता है। पुनः यह रोग क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। सदैव प्रातः काल या साधारण-साधारण बातों से हृदय धड़कने लगता है। कभी-कभी इसके साथ हृदयस्थल पर पीड़ा भी होती है। रोग के तीव्र होने पर इसके साथ मूर्च्छा के दौरे पड़ने लगते हैं।

चिकित्सा सूत्र—रोगी को खुली वायु में रखें। उत्तम, शीघ्रपाकी और पुष्टिकर आहार देवें। अधिक मानसिक या शारीरिक श्रम से बचायें। चिन्ता दुःख, शोक और भय से सुरक्षित रखें। अजीर्ण और विबंध नहीं होने देवें। समय-समय पर वातनाड़ी और हृदय को पुष्ट करने वाले पदार्थ सेवन कराते रहें। मादक द्रव्य, तमाकू, चाय, कहवा आदि तथा मैथुन और हस्तमैथुन से परहेज करायें।

जब रोगी आवेग पीड़ित हो तो प्रथम उसको सौमनस्यजनन एवं बल्य औषधि-सवन द्वारा दूर करें। आवेगनिवृत्त होने के पश्चात् मूल हेतु का पता लगाकर उसको दूर करें। अस्तु, यदि अदोषज विप्रकृति हो तो शमन और दोषज हो तो शोधन करें। यदि आमाशय के विकार से हो तो उसकी चिकित्सा करें। यदि किसी अन्य रोग से हो तो उसका निवारण करें।

चिकित्सा—आवेगकाल में रोगी को आराम से लिटाये रखें और मनःप्रसाद-कर एवं बल्य ओषधियाँ, जैसे मुफर्रेह बारिद ५ माशा या खमीरा संदल ७ माशा या खमीरा मरवारीद ५ माशा ५ तोले अर्क बेदमुश्क और ५ तोले अर्क केवड़ा तथा २ तोले शर्बत गुड़हल के साथ देवें। यदि इससे लाभ न हो, तो जवाहर मोहरा आधी से १ रत्ती या जहरमोहरा, वंशलोचन, हरा यशव, छोटी इलायची का दाना, अकीक भस्म और मुक्ता १–१ रत्ती बारीक पीसकर ७ माशे खमीरा अबरेशम हकीम ईर्शदवाला या ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर खिलायें और ऊपर से मीठे अनार का रस, संतरा का रस और नाशपाती का रस प्रत्येक ५ तोला और शर्बत संदल २ तोला पिलायें। सफेद चंदन १ तोला, कपूर ३ माशा और अर्क गुलाब आध पाव में मिलाकर सुंघाएँ। चंदन को गुलाब के अर्क में घिसकर हृदयस्थल पर लेप करें।

जब आवेग निवृत्त हो जाय, तब रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसे दूर करें। अस्तु, अदोषज उष्ण विप्रकृति में ३ माशा कुर्स काफूर २ तोले शर्बत अनार में मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से १ तोला काले कुलफा के बीज का शीरा, अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला में निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर की योजना करके पिलायें। रक्तज में ९ माशा खमीरा संदल प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क और अर्क केवड़ा प्रत्येक ५ तोले में १ तोला इसबगोल का लुआब, काहू और कासनी के बीज प्रत्येक ६ माशा का शीरा, ५ माशे सूखे धनिये का शीरा निकालकर २ तोले मीठे अनार का शर्बत मिलाकर पिलायें। पित्तज में आलूबुखारा ११ दाने या इमली ४ तोले को १४ तोले अर्क गुलाब में भिगोकर ऊपर से निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोले गुलकंद या २ तोले शर्बत अनार मिलाकर ४ माशे बालंगू के बीज का

प्रक्षेप देकर पिलायें या अर्क बेदमुश्क या अर्क गुलाब ८ तोला में ५ दाने आलूबुखारे का शीरा, ३ माशे जरिश्क का शीरा और ५-५ माशे काहू के बीज तथा सूखे धनिया का शीरा निकाल कर शर्बत अनार या शर्बत संदल २ तोले मिलाकर खिलायें। शीतल विप्रकृति में प्रकृतिसाम्यानुवर्तन के लिये बादरंजबूया ५ माशा, गावजबान और गुलगावजबान प्रत्येक ३ तोला, पानी में उबालकर २ तोले गुलकंद मिलाकर पिलायें। कफज में बादरंजबूया, बस्फाइज, अफ्तीमून प्रत्येक ६ माशा, अनीसूं, मुलेठी, गावजबान प्रत्येक ५ माशा, मकोय, कड़ के बीज प्रत्येक ९ माशा, दरूनज अकरबी ४ माशा—समस्त द्रव्यों को रात्रि में गरम पानी में भिगोयें। प्रातः पका-छानकर शर्बत उस्तूखुद्दूस और गुलकंद प्रत्येक २ तोले मिलाकर पिलायें। इस योग से सप्ताह या पक्ष भर दोषपाचन करके हब्ब सिब्र का सेवन कराके दोष का पाचन करें। शोधनोपरांत प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये दरूनज अकरबी ५ माशे, जदवार खताई ४ रत्ती बारीक पीसकर अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला के साथ खिलायें। सौदावी में उन्नाब ५ दाना, शाहतरा, बादरंजबूया, खीरा और ककड़ी के बीज, गावजबान, मकोय, हंसराज प्रत्येक ६ माशा, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) ११ दाना, अर्क गावजबान, अर्क शाहतरा प्रत्येक ८ तोला में रात्रि भर भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोले गुलकंद मिलाकर पिलायें। इस प्रकार और दोषपाचन कर चुकने पर इसी योग में गुलाब के फूल १।। तोले, सनाय मक्की १ तोला, उस्तूखुद्दूस ६ माशे, अफ्तीमून १ तोला और अमलतास का गूदा ४ तोला योजित करके मिलाकर शोधन करें। यदि रक्ताल्पता और दौर्बल्य के कारण यह रोग हो तो दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ७ माशा, अर्क माउल्लहम ५ तोले, अर्क अंबर ५ तोले के साथ देवें और पक्षियों का शूरबा पिलायें। यदि अमाशय दौर्बल्य (अग्निमान्द्य) एवं वाष्प के कारण हो,जैसा प्रायः हुआ करता है तो (१) आमले का मुरब्बा या हड़का मुरब्बा १ नग धो-साफकर चाँदी के वर्क में लपेट कर खिलायें और ऊपर से ३ माशे सूखा धनिया, ११ दाने किशमिश, सौंफ ५ माशे, गाजर का अर्क ६ तोले, अर्क गावजबान ६ तोले में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोले गुलकंद मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें। (२) सौंफ १ तोला, धनिया १ तोला, छोटी इलायची का दाना ६ माशा, मिश्री १ तोला समस्त द्रव्यों को पीसकर चूर्ण बना लेवें। इसमें से ३ माशे भोजनोत्तर दोनों समय सेवन करें। (३) रात्रि में सोते समय १ तोला अतरीफल कश्नीजी सेवन करें।

वक्तव्य—इस रोग में विभिन्न प्रकार के आमोद-प्रमोद तथा नदी एवं बगीचों की सैर बहुत ही लाभकारी है और दुःख एवं शोक बहुत ही हानिकर है।

पथ्य--बकरी के मांस का शूरबा, कुलफा, पालक, तुरई, कद्दू, अरहर और मूंग की दाल, नाशपाती, अंगूर, मालटा, सेव, संतरा, मीठा अंगूर, ककड़ी, खीरा आदि। वायुजन्य हृत्स्पंदन में प्रायः पक्षियों का शूरबा और अंडी की जर्दी लाभकारी होती है।

अपथ्य--लाल मिर्च, गरम मसाला, लहसुन, प्याज, गोभी, आलू, अरवी, उड़द की दाल, मसूर और चने की दाल, गुड़, तेल, चाय, तमाकू आदि।

२--ग़शी (मूर्च्छा)

नाम--(अ०) ग़शी, गश्यान, इग्माऽ; (फा०) बेहोशी; (उ०) गशी; (सं० मूर्च्छा, संज्ञानाश, अचेतता; (अं०) सिङ्कोपी (Fainteng) फेंटिंग (Syncare)।

वर्णन--इस रोग में सहसा हृदय की गति बन्द हो जाती है, जिससे रोगी मूर्च्छित हो जाता है। यदि कारण बलवान् न हो तो मूर्च्छा में कुछ कमी हो जाती है, वरन् रोगी कुछ काल तक साधारणतया एक ही दशा में पड़ा रहता है। जब वह पुनः चैतन्य नहीं हो सकता और मर जाता है तब उसे 'सकूतुल्कल्ब' (हृद्भेद--Heart failuse) कहते हैं।

भद--यद्यपि हेत्वनुसार इसके अनेक भेद हो सकते हैं। तथापि साधारणतया इसके तीन भेद किये जाते हैं--(१) हृदयजन्य, (२) दोषसंचयजन्य (इम्तिलाई) और (३) अतिरक्तस्रावजन्य, शोधन जन्य (इस्तिफ्रागी)।

हेतु--प्रायः इसका हेतु दौर्बल्य, रक्ताल्पता, ओजोःक्षय और किसी कारण अतिरक्तस्राव हो जाना है। पर कभी-कभी सहसा परम आह्लादकारक या अत्यंत दुःख एवं शोक के समाचार सुनने से और कोमल प्राकृतिक भय (नाजुक मिज़ाजी खौफ) या किसी तीव्र आघात के लगने से चोट, क्षत एवं दर्द की तीव्रता से भी मूर्च्छा की नौबत पहुँचती है।

लक्षण--आवेग के समय रोगी के हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं। श्वास कृच्छ्रतापूर्वक आता है। नाड़ी सगीर एवं दुर्बल होती है। सिर घूमता है। नेत्र के सामने अंधेरा आ जाता है। शीतल स्वेद होकर शरीर तर-बतर हो जाता है और रोगी अचेत हो जाता है। पर कुछ कालोपरांत एक शीतल श्वास भरकर रोगी होश में आ जाता है। उस समय वमन होता है। यदि रोग का हेतु साधारण हो तो केवल जी मिचलाता है। चेहरा फीका पड़ जाता है। नाड़ी दुर्बल (मंद) चलती है और केवल मस्तक पर जरा-सा स्वेद हो जाता है। कभी अकस्मात् मूर्च्छा होकर रोगी तुरन्त मर जाता है। यद्यपि मूर्च्छा के रोगी और संन्यास रोगी की दशा लगभग समान होती है। तथापि

मूर्च्छा रोगी के बाल उखाड़ने से और हाथ-पाँव कसकर बाँधने से रोगी बात का उत्तर दे सकता है। इसके विपरीत संन्यास रोगी उत्तर नहीं दे सकता। मूर्च्छा रोगी का चेहरा पीला, नाड़ी शिथिल और श्वास अत्यंत कमजोर और शरीर स्वेद से तर-बतर होता है और श्वास खर्राटे से नहीं आती।

चिकित्सा सूत्र--हृदयदौर्बल्य एवं मूर्च्छा के लिये अनुकूल स्पर्शासहिष्णु व्यक्तियों को उद्वेग एवं क्लम आदि से सुरक्षित रखें। आवेग के समय रोगी को सुखपूर्वक उत्तान शयन करा देवें और उसका सिर शेष शरीर की अपेक्षया नीचा रखें जिसमें रक्त सरलतापूर्वक मस्तिष्क की ओर भ्रमण कर सके। हाथ-पाँव कसकर बांधे देवें और गले के बटन और सीनाबन्द आदि खोल देवें। सिर, चेहरे और सीना पर शीतल जल के छींटें मारें। हाथ-पाँव का नीचे से ऊपर की ओर संवाहन (मालिश) करें। आवेग के पश्चात् मूल निदान का परिवर्जन करें।

चिकित्सा क्रम--इस्तिलाई गशी में पादस्नान (पाशोया) करायें और सींगी लगवायें। सिर, चेहरे और सीने पर शीतल जल के छींटे मारें और अर्क गुलाब २ तोला, अर्क केवड़ा २ तोला और अर्क बेदमुष्क ३ तोला में ३ माशे कपूर मिलाकर शीशी में डालकर सुँघायें। पर यदि मूर्च्छा अतिशोधन के पश्चात् हुई हो तो कबाब और गरम रोटी की गन्ध सुँघायें। मांसार्क (माउल्लहम) में दवाउल्मिस्क घोलकर पिलायें। आमाशयिक द्वार के ऊपर गरम तेल का मर्दन करें या राई का प्रस्तर लगायें, यदि अपतन्त्रक या मस्तिष्कगत रक्तसंचय के कारण मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो तो तीक्ष्ण सिरका सुंघायें या चूना और नौसादर समभाग महीन पीसकर और पानी मिलाकर सुंघायें। यदि तीव्र आवेग के कारण मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो, जैसा कि शूल (कुलंज) आदि में हुआ करता है, तो स्वापजनन द्रव्यों का उपयोग करें। यदि मूर्च्छा से पूर्व उत्क्लेश (मिचली) और मूर्च्छाकाल में हिक्का (हिचकी) की व्यथा हो तो रोगी को तत्काल वमन करा देवें। इससे प्रायः रोगी होश में आ जाया करता है। यदि विषधर जंतुओं के दंश या किसी विष के भक्षण से मूर्च्छा उत्पन्न हुई हो तो उनका उपयुक्त उपचार करें। हृदयजनित मूर्च्छा में जहरमोहरा, वंशलोचन, अनारदाना, सुमाक, जदवार, गुलाब का केसर, कहरुबाये शमई, हरा यशब प्रत्येक १ माशा--सबको महीन पीसकर ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला या ५ माशा खमीरा मरवारीदमें पिलायें और अनार एवं नाशपाती का रस प्रत्येक ६ तोला या ३ माशे गावजबान का लुआब, ५ माशे सौंफ का शीरा, ९ दाने गुठली निकाले हुये मुनक्का का शीरा, अर्क गावजबान, अर्क केवड़ा, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ३ तोले में निकालकर २ तोले शर्बत सेब मिलायें और

खमीरा खाकर ऊपर से पिलायें। यह प्रायः सभी प्रकार की मूर्च्छा एवं हृत्स्पंदन में लाभकारी है।

मूर्च्छा का आवेग (दौरा) निवृत्त हो जाने के उपरांत हृत्स्पंदन एवं इख़्तिलाजुल्क़ल्ब के अनुसार उपचार करें और मूल हेतु का पता लगाकर उसके निवारण का यत्न करें।

पथ्य—हृदय एवं मस्तिष्क को बल देनेवाले आहार खिलायें। अस्तु, मुर्गी के बच्चे की यख़नी और पक्षियों के मांस खिलायें। दूध, मक्खन, मलाई, दही आदि देवें। फलों में सेव, केला, संतरा, अंगूर, नाशपाती, अमरूद आदि, बहुत ही गुणकारी होते हैं। आवश्यकतानुसार हरे शाक, जैसे पालक, कद्दू, टिंडा, सोआ आदि खिलायें। खशका, खिचड़ी और मूँग की दाल भी दे सकते हैं।

अपथ्य—बादी और अम्ल पदार्थों से और विशेषतः उष्ण आहार से सर्वथा परहेज करायें। ऐसी दशा में बैंगन, करेला, मसूर की दाल, मछली, अंडे और आध्मानकरक आहार जैसे भिंडी, उड़द की दाल, मूली, गोभी आदि बिल्कुल नहीं देवें। कठिन व्यायाम और धूप में अत्यधिक भ्रमण करना भी उक्त अवस्था में अहितकर सिद्ध होता है।

३—वज्उल्क़ल्ब

नाम—(अ०) वज्उल्क़ल्ब ; (फा०, उ०) दर्दे दिल ; (हिं०) हृदय का दर्द ; (सं०) हृच्छूल, हृत्पीड़ा ; (अं०) अन्जाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris)।

वर्णन—कभी हृदयस्थल पर इतना तीव्र दर्द होता है कि रोगी सहन की सामर्थ्य नहीं रख सकता और दम बन्द होने के कारण वह आसन्न-मरण हो जाता है।

हेतु—कुपचन, उदराध्मान, मलावरोध, अति मद्यसेवन, दुःख, क्रोध एवं शोकादि का अकस्मात् होना, अति व्यायाम, कतिपय हृदय के रोग, अति मैथुन, आमवात, वातरक्त या हृदय पर वसा की उत्पत्ति आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—यह रोग प्रथम सहसा आरंभ हो जाता है। तदुपरांत वेगपूर्वक आवेग के रूप में होता है। प्रथम आवेग से यदि रोगी बच जाय, तो कुछ दिन वा कुछ मास के पश्चात् इसका दूसरा आवेग प्रथम की अपेक्षया अधिक तीव्र होता है। तीसरा आवेग (दौरा) दूसरे की अपेक्षया तीव्र एवं शीघ्र होता है। आवेग से पूर्व रोगी को कुछ व्याकुलता (बेचैनी) होती है। हृदयस्थल पर गौरव एवं बोझ मालूम होता है। पुनः वहाँ तीव्र शूल प्रतीत होता है। कभी

की तीव्रता से रोगी अत्यंत दुर्बल हो जाता है। स्वेद होकर शरीर लथपथ हो जाता है। कभी साथ ही वमन भी हो जाता है। कठिन श्वासावरोध की दशा में रोगी के मृत्यु की आशंका होती है। हृदय धड़कता है। नेत्र के सामने अन्धेरा आ जाता है और मस्तक पर स्वेद हो जाता है। शरीर शीतल और नाड़ी अत्यंत सूक्ष्म एवं सगीर होती जाती है। किंतु संज्ञा यथावत् बनी रहती है। आवेग की दशा २–३ मिनट या कभी-कभी घंटे-दो घंटे भी रहती है।

चिकित्सासूत्र––रोगोत्पत्ति के जो-जो हेतु बतलाये गये हैं उनमें से मूल हेतु का पता लगायें। पुनः उसका उचित प्रतीकार करें। दर्द की दशा में दर्द दूर करने का यत्न करें। दौरा (आवेग) होने की दशा में इस प्रकार के उपाय करें जिससे पुनः दौरा न हो। अस्तु, दौरा की दशा में स्वापजनन एवं शामक औषधियों का बहिराभ्यंतरिक उपयोग करें। रोगी को शुद्ध वायु में शयन करायें। शरीर को निश्चेष्ट रखें। मनः प्रसादकर औषधकल्प (मुफ़र्रेहात) जैसे––खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला या विद्रुत मुक्ता (मरवारीद महलूल) दवाउल्मिस्क में मिलाकर सेवन करायें। सुगन्धित द्रव्य सुँघायें। कभी-कभी बस्ति एवं पादस्नान भी लाभकारी होता है। वेदनास्थल पर लवण, गेहूँ की भूसी, गुलबाबूना आदि की पोटली बनाकर सेक करें। गुलाब का इत्र मलें। यदि विबंध हो तो रेंडी के तेल की बस्ति से उसका निवारण करें। दौरा न होने पर मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करें।

चिकित्साक्रम––दौरा प्रारंभ होते ही रोगी को सुखपूर्वक शय्या पर लिटायें और तीक्ष्ण सिरका सुँघायें। दर्द के स्थान पर गुलाब के इत्र की मालिश करें और गुल बाबूना २ तोला और खतमी के फूल २ तोला कूटकर पोटली में बांध लेवें और हृदय के ऊपर टकोर करें।

पोस्ते की ५ डोडी को पाव भर पानी में उबालकर उसमें यह पोटली भिगोयें तथा इससे दर्द के स्थान पर सेक करें। थोड़ी देर टकोर करके उस स्थान पर जिमाद जाफरान जदीद लगा देवें। इन उपायों से प्रायः दर्द कम हो जाता है।

दर्द में कमी होने पर हेतु पर विचार करें। यदि आमाशय के विकार से हो तथा मिचली मालूम होती हो तो गरम पानी में २ तोले सिकंजबीन सादा मिलाकर पिलायें और वमन करायें। यदि तीव्र विबंध (कब्ज) हो तो रेंडी का तेल ४ तोला गरम पानी में मिलाकर उसमें साबुन घोलकर बस्ति देवें या शर्बत वर्द मुकर्रर ४ तोले, शर्बत दीनार ४ तोले, अर्क गुलाब १० तोले मिलाकर पिलायें। यदि वायु की प्रगल्भता इसका हेतु हो तो प्रातः जुवारिश कमूनी १ मात्रा खिला कर ऊपर से ५ माशे सौंफ का शीरा, ९ दाने गुठली निकाले हुये मुनक्का का

शीरा, ५ माशे कुसूस के बीज का शीरा, १२ तोले अर्क गुलाब में निकालकर २ तोले शर्बत अंगूर मिलाकर पिलायें : हृदय की बलवृद्धि के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ३ माशे प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजबान, अर्क केवड़ा, अर्क गुलाब प्रत्येक ४ तोले, रुब्ब बिही शीरीं २ तोले मिलाकर सायंकाल पिलायें। यदि हृदयरोग अथवा कोई अन्य हेतु इसका उत्पादक हो तो उसकी चिकित्सा करें। तात्पर्य यह कि प्रत्येक दशा में हृदय की बलवृद्धि का ध्यान रखना आवश्यक है। अस्तु, इस प्रयोजन के लिये प्रति दिन दावउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला ५ माशा खिलाना लाभकारी है।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार खिलायें। बकरी का शूरबा, चपाती, साबूदाना, अंडा, मुर्गी का बच्चा, तीतर और बटेर का मांस सेवन करें।

अपथ्य--आध्मानकारक, गरिष्ठ और दीर्घपाकी आहार जैसे--आलू, अरवी, मछली, बैंगन, करेला, गुड़, तेल, आम्ल पदार्थ आदि से परहेज करें।

४--जोफुल्कल्ब

नाम—(अ०) ज़ोफ़ुल्क़ल्ब ; (उ०) दिल की कमजोरी ; (सं०) हृदय दौर्बल्य ; (अं०) ब्रैडीकार्डिया (Bradycardia)।

वर्णन—इस रोग में हृदय की गति बहुत मन्द हो जाती है जिससे नाड़ी की गति भी कम हो जाती है।

हेतु—साधारणतः विभिन्न वातिक, मार्यादिक या चिरज रोगों, जैसे—हुम्मा मुह्रिका बलिय्यः, अपस्मार, मालीखोलिया, रक्तालपता, मधुमेह, अपतन्त्रक, प्रसूत ज्वर, मूत्रविषमयता आदि में हृदय दुर्बल हो जाता है। हृदय की धमनियों के रोग से भी हृदय दुर्बल हो जाता है। लगातार दुःख एवं चिन्ता का भी हृदय पर प्रभाव पड़ता है।

लक्षण—हृदय की गति मन्द हो जाती है। नाडी दुर्बल होती और उसकी चाल कम हो जाती है अर्थात् १ मिनट में यह केवल ४०-५० बार गति करती है। तबीअत आलस्ययुक्त रहती है। काम करने को जी नहीं चाहता।

चिकित्सा सूत्र और चिकित्सा क्रम—शुद्ध एवं खुली वायु में रहना चाहिये और प्रति दिन उपवनों की सैर करनी चाहिये।

हृदय की बलवृद्धि के लिये बल्य एवं उत्तेजक औषधियों का उपयोग करना चाहिये तथा निदान परिवर्जनका यत्न करना चाहिये।

इस विषय में अधोलिखित चिकित्साक्रम उपादेय है—प्रातः रेहाँ के बीज १ तोला रात्रि में ६ तोले अर्क गुलाब में भिगोकर आकाश के नीचे ओस में रखें और प्रातः इसमें २ तोले मिश्री मिलाकर पिलायें। अथवा अढ़हुल के सात फूलों की हरियाली (हरे भाग) दूर करके रात्रि में १० तोले अर्क गुलाब में भिगोकर ओस में रखें। प्रातः ऊपर नियरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोले मिश्री मिलाकर पिलायें या प्रातः-सायंकाल अक्सीर कल्ब ३ माशा या जवाहरमोहरा आधी रत्ती ५ माशे खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला या ७ माशे खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला या ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर अर्क अंबर ४ तोले, अर्क गावजबान ८ तोले के साथ देवें। या प्रातः-सायंकाल वंशलोचन, छोटी इलायची का दाना जहरमोहरा, हरायशब प्रत्येक १ माशा, मोती २ रत्ती, फादजहर हैवानी (जान्तवाश्मरी), सबको महीन पीस कर ५ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिला कर देवें और ऊपर से ८ तोले अर्क गुलाब, ४ तोले अर्क अंबर पिलायें।

पथ्य—लघु एवं पुष्टिकर आहार देवें। मोटे गेहूँ की रोटी, शूरवा यखनी; अंडे, तरकारियों में कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक; फलों में संतरा सेव, अंगूर, नाशपाती, मक्खन, दूध आदि देवें।

अपथ्य—उड़द और मसूर की दाल, मांस और गोभी आदि गरिष्ठ पदार्थ से परहेज करें।

५——सुकूतुल्कल्ब

नाम—(अ०) सुकूतुल्क़ल्ब, सुक़ूतुल्क़ुव्वत; (उ०) दिल की हरकत का बन्द हो जाना, दफ्तअन् कुव्वत का घट जाना; (सं०) हृद्भेद, हृदयावसाद; (अं०) हार्टफेल्योर (Heartfailure)।

वर्णन—इस रोग में विना किसी आगन्तु (बाह्य) कारण के सहसा असाधारण रूप से बल घट जाता है। कभी-कभी कारण बलवान होने से मूर्च्छा भी हो जाती है।

हेतु—कभी रक्त की प्रगल्भता या अन्य सांद्र दोषों के आमाशय या श्वासोच्छ्वासमार्ग में अवरुद्ध होकर बाधा उत्पन्न करने से और कभी दोष के असाधारणरूप से पतला होने या ज्वर आदि से विलीन होकर रूह (ओज) में स्वभावतः दौर्बल्य एवं विलीनीभवन उत्पन्न हो जाने से यह रोग प्रगट हो जाया करता है।

लक्षण—पूर्वोक्त हेतुओं में से किसी हेतु की विद्यमानता, जैसे अत्यन्त उष्ण या शीतल वायु का प्रभाव करना, या ज्वर आदि का पूर्व पाया जाना अथवा शरीर में रक्त का प्रमाण अधिक होना आदि।

चिकित्सा—यथाशक्ति व्यायाम करें। सिरावेध एवं विरेचन आदि के द्वारा शोधन करके स्नान करायें। खैरी एवं कुटके तेल को एक में मिलाकर सीना (छाती) के ऊपर मर्दन करें। यदि आमाशयस्थ इम्तिलाऽ इसका हेतुभूत हो तो शुद्धि के उपरान्त वमन कराना अतीव गुणकारी होता है। यदि सांद्रदोष इसके हेतुभूत हों तो दोषपाचन औषधि सेवन कराके इयारजात से विरेचन देवें। अस्तु, उक्त प्रयोजन के लिये इयारज फैकरा, सफेद निसोथ, गारीकून, अफ्तीमून और नमक हिन्दी का योग करके विरेचन देने से सांद्रदोष का शोधन हो जाता है। यदि रक्त की प्रचुरता के कारण यह रोग (सुकूत कुव्वत) हो तो बासलीक का सिरावेध कराएँ और बलवृद्धि एवं प्रकृतिसम्यानुवर्तन का यत्न करें। अस्तु, बलवृद्धि के लिये खमीरा मरवारीद सादा अर्क सेव या अर्क शीर आदि के साथ देवें। शेष मूर्च्छा (गशी) के प्रकरण में वर्णित चिकित्सा क्रम काम में लेवें।

६—जगततुल्कल्ब

नाम—(अ०) जगततुल्क़ल्ब; (उ०) दिल का बैठा जाना; (अं०) स्टोक ऐडम्ज डिजीज (Stoke Adm's Disease)।

वर्णन—इस रोग में रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका हृदय बैठा (दबा) जाता है।

हेतु—इस रोग का हेतु साधारणतया सौदावी दोष है जो स्रोतों के द्वारा रक्त के साथ हृदय उद्रिक्त होता है और उसके प्रभाव से हृदय डूबता हुआ प्रतीत होता है। कभी आहारजनित बाष्प भी इसके हेतु होते हैं। यदि दोष अधिक उष्ण एवं अधिक प्रमाण में हो तो मूर्च्छा उत्पन्न करता है।

लक्षण—इस रोग में रोगी को ऐसा प्रतीत होता है, मानो उसका हृदय डूबा जाता है। मुँह से पुष्कल लाला बहती है। नाड़ी अत्यंत मंदगति से चलती है। कभी साधारण मूर्च्छा या भ्रम का दौरा (आवेग) हो जाता है। प्रायः वृद्धों को यह रोग हो जाता है।

चिकित्सा—यह रोग दोषज होता है। अतएव प्रथम सौदापाचन औषधि पिलाकर पुनः विरेचन द्वारा उसका शोधन करें। शोधनार्थ इयारजात बहुत गुणकारी सिद्ध होते हैं। हृदय की बलवृद्धि और यकृत् का प्रकृति साम्यानुवर्तन

करें। बलवृद्धि के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली, तिर्याक कबीर, याकूती मुफर्रेह बहुत ही गुणकारी होती हैं। ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा प्रथम खिलायें और ऊपर से ५ माशे सौंफ का शीरा, २ माशे कुसूस के बीज का शीरा, ३ माशे अनीसून का शीरा ३-६ तोले अर्क बादियान और अर्क शाहतरा में निकालकर २ तोले शर्बत अंगूर मिलाकर पिलायें। फिरङ्ग हो तो उसकी चिकित्सा करें।

७--इम्तिलाउल् क़ल्ब

नाम--(अ०) इम्तिलाऽ ग़िलाफ़ेल्क़ल्ब; (उ०) गिलाफे दिल में खून भर जाना, (सं०) हृदयावरणगत रक्तसंचय; (अं०) हाइमोपेरिकार्डिअम् (Hymopericardium)

हेतु--सिर की ओर से त्रुटित द्रव या फुपफुस एवं हृदय के आहार से बचा हुआ निरर्थक सान्द्र रक्त का हृदयावरण में भर जाना इसके हेतु होते हैं।

लक्षण--श्वासकृच्छ्रता, हृदयस्थल पर गौरव एवं बोझ की प्रतीति, नाक के नथुनों का फैल जाना इसके सामान्य लक्षण हैं। रक्त संचय में नाड़ी द्रुतगामिनी, कठिन एवं प्रकृतकाल से कम ठहरनेवाली (मुतवातिर) और कफसंचय में मन्दगामिनी एवं विषम आघातयुक्त (मुख्तलिफ) होती है। रक्त और कफ प्रकोपक अन्य लक्षण इसके नैदानिक लक्षण हैं।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--रक्तसंचय में बासलीक के सिरावेध के पश्चात् अवशिष्ट दोष के निर्हरण के लिये फलरस तथा अन्य शीतल ओषधियों से विरेचन करावें। शमन एवं ठंढाई के लिये पानी आदि में कुलफा के बीज का शीरा निकाल कर सिकंजबीन बजूरी एवं शर्बत उन्नाब मिला कर देते हैं। दोषविलयन के लिये जौ का आटा, खतमी, लाल-सफेद चन्दन, हरे धनिये इन्हें कासनी के रस में पीस कर सीना पर लेप करें। कफज संचय में बोल, एलुआ, रूमीमस्तगी और लौंग को पानी में पीस कर सीना (वक्ष) पर लेप करें। विरेचन एवं दोष शोधन के बाद रूमीमस्तगी और कुंदुर को मुंह में चबाकर मुखगत लाला को थूकने से अवशिष्ट द्रव शुष्क हो जाते हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार--कफज में मत्बुख अफ्तीमून या हब्ब इयारज आदि से प्रकृति, वय और बलादि का विचार करके विरेचन द्वारा शोधन करें तथा मरूदीतूस एवं दवाउल्मिस्क प्रभृति जैसी हृदय बलदायिनी औषधियाँ सेवन करायें।

८—इस्तिस्काऽ ग़िलाफ़ेल् क़ल्ब

नाम—(अ०) इस्तिस्क़ाऽ ग़िलाफ़ेल्क़ल्ब, इह्तिवाउर्रतूबत अललक़ल्ब, सयाहतुलक़ल्ब ; (उ०) ग़िलाफ़ुल् क़ल्ब में पानी भर जाना, दिल का पानी में तैरना, दिलका डूबना ; (सं०) जलहृदयावरण ; (अ०) हाइड्रोपेरिकार्डियम्। (Hydropericardium) ।

वर्णन—इस रोग में हृदयावरण के भीतर पानी भर जाता है और रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका हृदय पानी में तैरता हो।

हेतु—हृदयावरण के उभयस्तरों के बीच द्रव संचित होने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है। (बहुधा यह द्रव आमाशयिक द्वार का होता है जो अनुबन्ध के कारण इस रोग का हेतु होता है।) यह रोग साधारणतः जलोदर के उत्पत्तिकाल में विशेष कर जलोरस या जलोदर में, पर कभी-कभी अन्य हेतुओं से भी उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—प्रधान हेतु के विशिष्ट लक्षणों के अतिरिक्त वक्ष में बोझ और दबाव, कृच्छ्रश्वास, रक्तसंचय, अत्यन्त व्याकुलता, या विशुद्ध मूर्च्छा के दौरों, शोफ, यकृद्वृद्धि और मूत्रशोष (मूत्राल्पता) के विकार भी न्यूनाधिक पाये जाते हैं। कभी-कभी रोगी ऐसा अनुभव करता है मानो उसका हृदय पानी में तैर रहा हो। नाड़ी कोमल एवं दुर्बल होती है।

चिकित्सा—द्रवशोषण के लिये निम्नलिखित लेप लगायें—बालछड़, केसर, गुलाब का फूल और मस्तगी को बादरंजबूया के रस में पीस कर हृदयस्थल पर लेप करें। आमाशय तथा आमाशयिक द्वार की शुद्धि के लिये वमन करायें। दोषशोधन के लिये प्रथम कफपाचन औषधि देकर, पुनः कफविरेचन एवं हब्ब इयारज आदि से शोधन करें। शोधनोपरान्त हृदय को बलवान् एवं द्रव को कम करने के अभिप्राय से दबाउल्मिस्क, हलवा तल्ख़ और अन्यान्य मुफर्रेह, माजून और जुवारिश आदि कल्पों का उपयोग करते रहें।

९—इल्लते दुख़ानिय्या

नाम—(अ०) इल्लते दुख़ानिय्यः ; (उ०) दिल से धूआँ उठना; (अं०) न्यूमोपेरिकार्डियम् (Pneumopericardium) ।

वर्णन—इस रोग में हृदय से धूआँ-सा उठता हुआ प्रतीत होता है।

हेतु—शरीर में दोषों के विदग्ध होने से धूआँ उठा करता है जिसे रोगी हृदय से धूआँ उठता हुआ ख्याल करता है।

लक्षण—हाथ-पाँव और प्लीहा आदि के स्थान पर सूजन मालूम होती है तथा अनिद्रा एवं हृदय में धड़कन पायी जाती है। दोषों के विदग्ध होने से

जब धूआँ उठकर हृदय को अतीव पीड़ित करता है तब मूर्च्छा की बारी होती है। जब धूआँ मस्तिष्क में पहुँच कर मानसिक ओज (रूह दिमागी) को मलिन कर देता है तब अन्यथाज्ञान (वसवास) एवं चिन्ता आदि के लक्षण प्रगट होने लगते हैं।

चिकित्सा--बासलीक या साफिन का सिरावेध कर के शरीर से अवशिष्ट सौदावी दोष के निर्हरण के लिये मत्बूख़ अफ्तीमून और माउज्जुब्न सेवन करायें। बलवृद्धि एवं प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये अनोशदारू लूलुवी उलवीखानी ५ माशा ६ तोले अर्क शीर के साथ सेवन करायें।

१०--तकश्शुरुल्क़ल्ब

नाम--(अ०) तक़श्शुरुल्क़ल्ब ; (फा०) ख़राशे दिल ; (उ०) दिल का छिलना, दिल की खराश ; (अं०) अँन्जाइनाकार्डिस (Anginacardis), अन्जाइना डिस्पेप्टिका (Angina Dyspeptica)।

वर्णन--इस रोग में रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानों उसके हृदय की कोई वस्तु छीलती है।

हेतु—दीर्घकाल तक पित्त के दस्त आते रहना अथवा मस्तिष्क से तीक्ष्ण-उष्ण मलों का आमाशय पर (किसी-किसी के मत से हृदय पर) गिरना इसके हेतु हैं।

लक्षण--कष्ट के समय रोगी के चेहरा और मस्तिष्क पर शिकन पड़ जाती है। कभी-कभी स्वेद भी आ जाता है। कष्ट की तीव्रता से कभी थोड़ी देर के लिये रोगी अचेत भी हो जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—यदि पैत्तिक दोष रोग का हेतुभूत हो तो विधिवत् पित्तपाचन औषधि देकर पित्तविरेचन औषधि से दोष का शोधन करें। बलवर्धन एवं प्रकृतिसाम्यानुवर्तन के लिये बल्य औषधियाँ सेवन करें। यदि मस्तिष्कगत द्रव एवं प्रसेक इसके हेतुभूत हों तो उष्ण प्रसेक का शोधन करें। शोधनोपरान्त प्रसेकीय हृच्छूल (तकश्शुरुल्कल्ब) में निम्न लिखितयोग सेवन करायें— बंशलोचन और हब्बुल आस ३-३ माशे पीस कर २ तोले शर्बत खशखाश में मिलाकर चटायें अथवा यह योग देवें—सुमाक ३ माशा, कतीरा, गुलाब का जीरा प्रत्येक १ माशा पीस कर २ तोले शर्बत खशखाश में मिलाकर ५ तोले अर्क बहार नारंग के साथ सेवन करायें।

संसृष्ट द्रव्योपचार--बलवर्धन और प्रकृतिसाम्यानुवर्तन के लिये पैत्तिक दोषशोधनोपरान्त मुफर्रेद बारिद या अनोशदारूए लूलुवी उलवी खानी अर्क

संदल एवं शर्बत खशखाश के साथ सेवन करायें। प्रसेकीय में हब्ब इयारज और हब्ब सिब्र आदि से शोधन करके दोष को रोकने के लिये शर्बत खशखाश का उपयोग करें।

११--सूए तनफ्फ़ुस क़ल्ब

नाम--(अ०) सूए तनफ्फ़ुस कल्ब, सिग़ुल् कल्ब; (उ०) खराबी तनफ़्फ़ुस दिली, लाग़री दिल; (सं०) हार्दिक आश्वासता, हृदयक्षय; (अं०) कार्डिअक एप्नीया (Cardiac Apnoea), ऐट्रोफी ऑफ दी हार्ट (Atrophy of the Heart)।

वर्णन--इस रोग में बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के तथा पाचन शक्ति ठीक होने पर भी रोगी के सामान्य शरीर एवं हृदय में कृशता, दौर्बल्य एवं अंगघात उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। बलक्षय के कारण नाड़ी में नाना प्रकार की भिन्नताएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

चिकित्सा--प्रगल्भ गुण और वर्तमान उपद्रव को ध्यान में रखकर सीने पर लेप लगायें। यदि प्रगल्भ दोष का निदान न हो सके तो सम्यक् दोषपाचन और विरेचन से विपत्तिकारक दोष का शोधन करें। पथ्यापथ्य का उचित प्रबन्ध करें।

१२--इन्कितान्न गिजाएल कल्ब

नाम--(अ०) इन्क़िताअ गिजाएल्क़ल्ब; (उ०) दिल की गिजा का बन्द हो जाना; (सं०)हृदयापुष्टि; (अं०) कॉरोनरी डिजीज (Coronary Disease)।

वक्तव्य--इस विलक्षण रोग का उल्लेख हकीम इब्नसीना ने किया है। इसमें हृदय को आहार पहुँचना बन्द हो जाता।

हेतु--वृक्कशोथ या वृक्ककाठिन्य के कारण हृदय की ओर आहार ले जाने वाले स्रोतों पर दबाव पड़ने से यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--हृदय को प्रतिनियत आहार के अभाव से उसमें उष्णता प्रगल्भ होकर यक्ष्मा (दिक) जैसा ज्वर चढ़ा रहता है जिसे चिकित्सक शोथज्वर अनुमान किया करता है। परन्तु इसका हेतु हृदय में आहार प्राप्त न होना ही है। हृदय की असाधारण उष्णता से शरीर में क्षय आरंभ होकर दौर्बल्य बढ़ता जाता है। यह रोग प्रायः सांघातिक होता है।

चिकित्सा--मूल हेतु अर्थात् वृक्कशोथ की चिकित्सा करें। रोगकाल में हृदय को पोषणीय शक्ति पहुँचाने के लिये गेहूँ की रोटी और जौ का सत्तू, सेव के पानी में पीस कर सीना पर लेप करें।

स्तनरोगाध्याय ३

नाम--(अ०) अम्राज़ुस्सदी ; (फा०) अमराज़े पिस्तान ; (उ०) पिस्तान (छाती) की बीमारियाँ ; (सं०) स्तनरोग ; (अं०) डिजीजेज ऑफ दी ब्रेस्ट (Diseases of the Breast)।

वक्तव्य—स्तनरोगों में प्राय: ऐसे भी रोग हैं जिनका सम्बन्ध शस्त्रक्रिया से है। परन्तु, मैंने लगभग उन सबका यहां संक्षिप्त विवरण कर दिया है।

१--क़िल्लतुल्लब्न

नाम--(अ०) क़िल्लतुल्लब्न ; (उ०) दूध की कमी ; (सं०) अल्पक्षीरता, स्तन्याल्पता ; (अं०) गॅलक्टोस्केसिस (Galactos-Kesis)।

हेतु--इसके निम्न तीन हेतु होते हैं--(१) रक्ताल्पता, (२) रक्ताधिक्य और (३) रक्तविकार।

लक्षण--रक्ताल्पता से जब क्षीराल्पता रोग हो जाता है तब स्तन्यपान करानेवाली (स्तन्यधात्री) के शरीर का वर्ण पीला हो जाता है तथा कार्श्य एवं दौर्बल्य पाया जाता है। यदि रक्ताधिक्य के कारण अल्पक्षीरता हो तो शरीर में रक्ताधिक्य स्पष्टतया लक्षित होता है। यदि रक्त दोष इसका कारण हो तो दूध के वर्ण एवं भौतिक स्थिति से उसको जाना जा सकता है। अस्तु, यदि दूध पतला और उसका स्वाद एवं गन्ध तीक्ष्ण और वर्ण पीलाई लिये हो तो रक्त में पित्त का संयोग इसका कारण हुआ करता है। यदि दूध में अम्लता पाई जाय और इसका वर्ण अधिक सफेद हो तो रक्त में अम्ल श्लेष्मा का संयोग अनुमान करें। यदि दूध अधिक सान्द्र, अल्पप्रमाण और वर्ण मलिन हो तो रक्त में सौदा के मिश्रण का परिणाम समझें।

चिकित्सा--(१) यदि रक्ताल्पता इसका कारण हो तो रक्तवर्द्धक औषध और आहार सेवन करायें। स्तन्यजनन के लिये निम्न योग लाभकारी है।

योग--तोदरी १ तोला गाय के पाव भर दूध में २ तोला मिश्री मिलाकर सेवन करायें। (२) यदि रक्तविकारके कारण दूध में अल्पता हुई हो तो दोषानुसार प्रकुपित दोष का शोधन करके क्षीरजनक औषधियाँ सेवन करायें।

(३) यदि रक्ताधिक्य स्तन्याल्पता का हेतु हो तो सिरावेध एवं शृङ्ग द्वारा रक्तमोक्षण करने से लाभ होता है। स्तन्यजनन के लिए निम्न योग लाभकारी एवं कृत्प्रयोग है।

योग—सतावर, मिश्री समभाग लेकर चूर्ण बना ५ माशे सौंफ के शीरा से सेवन करें अथवा यह योग देवें—सौंफ, मिश्री बराबर-बराबर लेकर पीस कर इसमें से प्रतिदिन ५ माशा सेवन करें।

२—कसरतुल्लब्न

नाम—(अ०) कसरतुल्लब्न; (उ०) दूध की जयादती; (सं०) स्तन्याधिक्य; (अं०) गैलक्टोरिया (Galactorrhoea)।

हेतु—रुद्धार्तव या प्रसूता को दौर्बल्य वा किसी रोग से पीडित होने के कारण शिशु का स्तन्यपान न कराने देना तथा शरीर में रक्त का आधिक्य आदि इसके हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण—स्तनों में काठिन्य, तनाव एवं वेदना आदि होती है।

टिप्पणी—कभी-कभी पुरुषों में भी यौवनकाल आसन्न होने पर स्तनों में दूध आकर वेदना का कारण हुआ करता है।

चिकित्सा—अल्पस्तन्य उत्पन्न करनेवाले तथा रूक्ष औषध एवं आहार सेवन करायें। रक्ताधिक्य की दशा में सिरावेध आदि करायें। रुद्धार्तव में आर्तवजननद्रव्य आदि तथा कारणानुरूप अन्यान्य उपयुक्त उपाय काम में लावें। मसूर या जीरा को सिरका में पीस कर स्तन पर लेप करने से दूध कम हो जाता है।

अथवा यह लेप लगायें जो परीक्षित है—लाख, मुरदासंग प्रत्येक ६ माशे दोनों को पीस कर २ तोला गुलरोगन मिलाकर लेप करें और पीने के लिये यह योग देवें—सौंफ, खरबूजा के बीज, गोखरू, खीरा-ककड़ी के बीज, काकनज के बीज प्रत्येक ६ माशा सब को पानी में पीस कर छान लेवें और ३ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलायें।

३—वरमुस्सदी, हिक्कतुस्सदी

नाम—(अ०) वरमुस्सदी (उ०) पिस्तान का वरम; (सं०) स्तनकोप, स्तनाग्रप्रकोप; (अं०) इन्फलामेशन ऑफ मैमा (Inflamation of Mamma) मॅस्टायटिस (Mastitis)।

(अ०) हिक्कतुस्सदी, (उ०) पिस्तान की खारिश; (सं०) स्तनकण्डू, स्तनशोथ; (अं०) प्रूराइटिस ऑफ मैमा (Pruritis of Mamma)।

हेतु— स्तन्यपान करानेवाली स्त्री को अपने स्तन या स्तनाग्र में कभी-कभी मीठी-मीठी खुजली प्रतीत हुआ करती है जो प्रायः थोड़ी देर पश्चात् स्वयमेव जाती रहती है। पर कभी-कभी यह दशा दीर्घकाल तक स्थिर रहती है या शीघ्र-शीघ्र होकर परेशानी का कारण होती है। कभी-कभी स्तन्यपान काल में स्तन की रचना में तनिक-सी असावधानी से शोथ हो जाता है। कभी यौवन के आरम्भ में और कभी विवाह से पूर्व भी रक्तगत तीक्ष्णता के कारण या किसी आकस्मिक अभिघात से या किसी तीक्ष्ण दोष की अधिकता से भी शोथ हो जाता है। कभी आमाशय, यकृत् और पाचन—इनके दोष से भी स्तनकण्डू उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—रुग्ण स्तन या स्तनाग्र में मन्द-मन्द खुजली होती है जो थोड़ी देर में शान्त हो जाती है और पुनः होने लगती है। जब स्तन शोफयुक्त हो जाता है तब शोथ के स्थान पर लालिमा, तीव्रता, चमक और असीम दाह होता है। कठिन टीसें उठती हैं; दर्द होने लगता है और तीव्र ज्वर हो जाता है। यदि स्तन्य पिलानेका काल हो तो वेदना की लहरियाँ कक्ष, स्कंध और बाहु तक पहुँचती हैं। यदि रक्तविकार से हो तो उसके लक्षण पाये जाते हैं। पित्त के प्रकोप से हो तो उसके लक्षण विद्यमान होगें।

चिकित्सा—खुजली दूर करने के लिये कुनकुने गरम पानी से साबुन लगाकर स्तन धोकर स्वच्छ करें और यह चूर्ण सवेरे-शाम खिलायें—सूखा पुदीना, सौंफ, मस्तगी, छोटी इलायची दाना, सूखा धनिया, सूखा मकोय, सफेद जीरा, काली मिर्च, काला नमक, भुना सुहागा प्रत्येक ६ माशे लेकर सबको कूट-छान कर चूर्ण बनायें और सबेरे शाम ३-३ माशा ताजा पानी से फँकायें। शोथ की दशा में तीक्ष्णता निवारण के लिये ३ माशे बिहीदाने का लुआब ३-३ माशे कुल्फा और काहू के बीज का शीरा, ५ दाना उन्नाब का शीरा, ५ दाना आलू-बुखारा का शीरा, अर्क शाहतरा १० तोला में लुआब और शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर सबेरे-शाम पिलायें। शोथ के आरम्भ में हरी कासनी के पत्र २ तोला, हरे मकोय के पत्र २ तोला कूटकर गुलरोगन और शुद्ध सिरका ६-६ माशा योजित करके शोथस्थल पर लेप करें। शोथ के बृद्धिकाल में आधा सेर उष्ण जल में २० सेर सिरका मिलाकर बकरी की बस्ति में भरकर इससे शोथ के स्थान पर सेक करें। अथवा सिकंजबीन २ तोला और गोघृत १ तोला में बाकला के बीज का मग्ज पीस कर मिलायें और कुनकुना गरम करके लेप करें।

चरम वृद्धि काल में बाकला के बीजों का मग्ज, खतमी के बीज, मेथी, छड़ा हुआ जौ और गेहूँ की सूखी रोटी प्रत्येक ६ माशे, केसर ३ माशा—सब को महीन पीस कर तीन अंडे की जर्दी में मिला कर थोड़ा पानी मिला कर कुनकुना

लेप करें। यदि रक्तविकार के कारण हो तो उसका उचित उपचार करें।

कफज शोथ में कफपाचन औषधि पिलाकर विरेचन देवें और हरा बाबूना, हरा सोआ के पत्र, हरे मकोय के पत्र और हरे धनिये के पत्र प्रत्येक ६ माशा महीन पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर कुनकुना गरम करके लेप करें।

सौदावी शोथ में सौंफ ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, अर्क गावजबान ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला में पीस कर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें।

जब व्रणशोथ पाक को प्राप्त होने लगता है तब शोथ के स्थान में रक्तिमा, उष्णता और वेदना की टीस अधिक हो जाती है और ज्वर भी तीव्र हो जाता है। जब पाक प्रारम्भ हो जाय और पूय पड़ जाय तब शोथविलयन ओषधियों से लाभ नहीं होता। उक्त अवस्था में अलसी की पुल्टिस (उपनाह) बाँधनी चाहिये जिससे शोथ पक कर विदीर्ण हो जाय और पूय निर्हरण हो जाय।

जब शोथ के भीतर पूय पड़ जाय और वह तैयार हो जाय तब उसके स्वयं विदीर्ण होने की वाट नहीं देखनी चाहिये। अपितु, किसी स्थानीय कुशल जर्राह (शल्यहर्ता) या डाक्टर के परामर्श से व्रण को भेदन कर शोथस्थल को शुद्ध कर देना चाहिये। पूय निर्हरण के पश्चात् व्रण का उचित उपचार करना चाहिये।

अपथ्य--उपद्रवों के अनुसार आवश्यक परहेज करें।

पथ्य--प्रारम्भ में शीघ्रपाकी लघु आहार भूख से थोड़ी कम मात्रा में देवें। आरोग्य होने पर धीरे-धीरे सामान्य आहार शूरबा, फुलका, मूँग की नरम खिचड़ी, दूध, खशका, कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक आदि शाक देवें।

४—अल्वर्मुस्सलिब बस्सल्अत फिस्सदी

नाम--(अ०) अल्वर्मुस्सलिब वस्सल्अत फ़िस्सदी ; (उ०) पिस्तान का सख्त वर्म या रसौली ; (सं०) स्तनकठिनशोथ या स्तनार्बुद ; (अं०) ट्यूमर्ज ऑफ दी ब्रेस्ट (Tnmours of the Breast)

हेतु— इस प्रकार के शोथ साधारणतया श्लेष्मा और सौदा या उभय के संयोग द्वारा उत्पन्न होते हैं। पर कभी उष्ण (रक्तज और पित्तज) शोथ में अधिक शीतसंग्राही ओषधियों के उपयोग से भी कठिन शोथ (स्तनार्बुद) उत्पन्न हो जाते हैं।

लक्षण--कफज शोथ शरीर के वर्ण का होता है। स्पर्श करने से किसी प्रकार कोमल प्रतीत होता है। परन्तु सौदावीशोथ का वर्ण कृष्णाभ होता है और स्पर्श करने से कठिन प्रतीत होता है। संसर्गज होने पर उभय के लक्षण व्यक्त होते हैं।

चिकित्सा--प्रबल दोष के अनुसार प्रथम पाचनौषध देकर विरेचन द्वारा दोष का शोधन करें। यदि सिरावेध अपेक्षित हो तो सिरावेध किया जाय। सिरावेधोपरान्त अवशिष्ट दोष के शमनार्थ निम्न योग पीने के लिये देवें--सूखा मकोय, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ४ माशा, पित्तपापड़ा ६ माशा--सब को जल में उबाल छानकर १।। तोला मिलाकर पिलायें।

शोथ मृदु एवं विलीन करने के लिये प्रथम बत्तख के एक अंडे की जर्दी २ तोला रोगन बनफ्शा में मिलाकर स्तन के ऊपर लेप करें। तदुपरान्त रोगन बादाम २ तोला या रोगन जैतून २ तोला में पीला मोम ६ माशा मिला कर मर्दन करें। या बाकला का आटा और इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) १।। तोला को ५ तोले तिल के तेल में मिलाकर लगायें। या मरहम दाखिलयून का उपयोग करें।

अर्बुदविलयनार्थ शफ्तालू (आडू) और सुदाब की हरी पत्ती महीन पीस कर स्तन पर लेप करने से लाभ होता है। सौदा के प्रकोप में सिरावेध द्वारा दोष का शोधन करने से उपकार होता है।

५--दूबैलतुस्सदी

नाम--(अ०) दुबैलए सदी (दुबैलतुस्सदी); (उ०) छाती का फोड़ा, थनैला, (सं०) स्तनविद्रधि; (अं०) मैमरी अॅब्सेस ((Mammary abscess))।

वर्णन--स्तन में दोष संचित होकर पूय पड़ जाता है। साधारणतया उष्ण शोथ (रक्तज और पित्तज) आदि इसका हेतु हुआ करता है।

चिकित्सा--दोषपाचनार्थ रेहाँ के बीज ५ तोला गायके दूध में पकाकर बांधे यदि अत्यधिक पाचन या व्रणविदारण की आवश्यकता हो, तो निम्न योग का उपयोग करें।

प्रलेप योग--अलसी के बीज, तिल, सोसन की जड़, सिलारस, बकरी की लेंड़ी, कबूतर की बीट, नतरात ? (संभवतः कतरान या नतरून) और राल समस्त द्रव समभाग लेकर महीन पीस कर तिलके तेल, एवं खैरी के तेलमें मिलाकर स्तन के ऊपर लेप करें। यदि इस उपाय से व्रणशोफ विदीर्ण न हो तो उस का भेदन करें और दोष निर्हण के उपरान्त व्रणरोपण मलहर का उपयोग करायें।

६—रूकुरुह व आकिलतुस्सदी

नाम—(अ०) कुरूह व आकिलतुस्सदी ; पिस्तान के पीपदार जख्म, (सं०) स्तनगत सपूयव्रण ; (अं०) स्लॉफिंग अल्सर ऑफ दी ब्रेस्ट (Sloughing ulcer of the Breast)।

वर्णन—जब स्तन शोथ में पूय पड़ कर वह व्रणित हो जाता है अर्थात् व्रण विदीर्ण हो जाता है तब ऐसा व्रण (घाव) हो जाता है। इसमें स्तन की धातुएँ गलती चली जाती है। इसीलिये इसे आकिला कहा जाता है,

चिकित्सा—अन्यान्य अंगों जैसे–मुख, जिह्वा आदि के व्रणों में जो उपक्रम किया जाता है, इसमें भी उन्हीं उपायों का अवलम्बन करें। तथा जलाया हुआ सीसा (सीसा मोहरिक) का अवचूर्णन विशेष रूपसे गुणकारी है। निम्नलिखित मरहम भी व्रणरोपण के लिये उपकारी हैं।

मलहर नीम—नीम के पत्तों की राख (नीम के पत्तों को लोहे के पात्र जैसे कड़ाही या जलते हुए तवे पर डाल कर कर इतना जलायें कि वह काले हो जायें) २।। तोला को ५ तोला सरसों के तेल (अग्नि पर खूब उबाल कर लाल करके) में मिलाकर अग्नि से नीचे उतार लेवें और नीम के डंडे से आध घंटे तक घोंटते रहें। इसके बाद शीतल कर के सुरक्षित रखें। आवश्यकता होने पर इसे घाव के ऊपर छिड़ककर ऊपर से नीम की सूखी राख छिड़क दिया करें।

७—अजमुस्सदी

नाम—(अ०) अजमुस्सदी ; (उ०) पिस्तान (छातियों) का बड़ा हो जाना ; (सं०) स्तनवृद्धि ; (अं०) हाइपरट्रॉफी ऑफ दी ब्रेस्ट (मैमा) (Hypertrophy of the Breast (Mamma))।

जब स्तन में आक्लेद या शैथिल्य जनक उष्णता उत्पन्न हो जाती है, तब वह विवर्धित हो जाता है तथा ढीला हो कर लटक जाता है। कभी इतना बढ़ जाता है कि उदर तक लटक आता है।

चिकित्सा—स्तन को कठोर और संकुचित करनेवाली शीतल, संग्राही एवं रूक्ष औषधियों का उपयोग करायें। अस्तु, निम्नलिखित लेपों के उपयोग से कुच कठोर हो जाता है और वह संकुचित हो जाता है।

प्रलेप योग—खड़िया मिट्टी, माजू, सफेदा और अजवायन खुरासानी के बीज समभाग लेकर सिरका में पीस कर मलमल के टुकड़े पर लगा कर तीन दिन तक स्तन के ऊपर लगायें।

अन्य प्रलेप योग—फिटकीरी १ तोल को ६ तोला जल में घोल कर २ तोला खट्टे अनार का छिलका महीन पीस कर मिलावें और स्तन के ऊपर लेप करें। परम परीक्षित योग है।

८—इह् तिवासुल्लब्न व तजब्बुनुल्लब्न

नाम—(अ०) इह् तिवासुल्लब्न; (उ०) पिस्तान में दूध जमा होकर रुक जाना; (सं०) स्तन्यस्तम्भ, क्षीरावरोध, (अं०) रिटेन्शन ऑफ मिल्क (Reteution of Milk)।

(अ०) तजब्बुनुल्लब्न ; (उ०) पिस्तान में दूधका मुन्जामिद हो जाना ; (सं०) स्तन्यस्तम्भ ; (अं०) फ्रीजिंग ऑफ मिल्क (Freezing of Milk)।

हेतु—कभी-कभी दूध साधारण से अधिक गाढ़ा हो कर या स्तन की वाहिनियों के किसी कारण से बारीक हो जाने के कारण या दुग्ध स्रोतसों में सांद्रीभूत कफ के अवरोध हो जाने से या स्तनपेशियों का स्वाभाविक अवस्था से बढ़ कर वाहिनियों पर दबाव पड़ने से अथवा अधिक प्रमाण में दूध उत्पन्न हो कर वाहिनियों में फँस जाने से अथवा उनमें अर्बुद उत्पन्न हो जाने से दूध संचित हो कर स्तन के भीतर रुक जाता है। यदि वह दीर्घ काल तक स्तन में यथावत् स्थिर रहे तो दही या पनीर की भाँति जम कर स्तन की धातुओं में कठोरता उत्पन्न कर देता है।

लक्षण—स्तन के भीतर दूध अवरुद्ध हो जाने, जमकर दूषित हो जाने और देर तक रुके रहने से विषमयता उत्पन्न हो कर स्तन की धातुओं में तनाव एवं पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। रक्तानुधावनकी तीव्रता के कारण कभी-कभी शोथ हो जाता और ज्वर भी हो जाता है।

चिकित्सा—सर्वप्रथम उस दूध को निकालना चाहिये जो स्तन में संचित हो कर रुक गया है, जिससे दूध का तनाव और पीड़ा तुरत निवृत्त हो कर अन्य उपद्रव उत्पन्न होने की आशंका न रहे।

अस्तु, उष्ण जल बोतल में भर कर उसे खाली कर देवें और तुरत स्तन से बोतल का मुँह लगा देवें। इस विधि से दूध निकल आता है। स्तन से दूध निकलने के पश्चात् मूल व्याधि के हेतु परिवर्जन की ओर ध्यान देवें। अस्तु, यदि दूध गाढ़ा हो या दुग्धस्रोतों में सांद्र कफ जन्य अवरोध हो तो गुल बाबूना सूखा पुदीना, मेथी, खतमी के बीज और अलसी १-१ तोला सब को पानी में उबालकर उस से सेंक एवं परिषेक करें और सीठी को महीन पीस कर सोआ का तेल मिला कर लेप करें।

अपथ्य—कफकारक, सांद्र एवं गुरु पदार्थों से तथा दूषित पदार्थों से परहेज

करें। दही और पनीर कदापि सेवन न करें, क्योंकि इन से दूध साधारणतया जम जाता है।

पथ्य--साधारण शूरबा, चपाती, मूँग या अरहर की दाल और कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक, खिचड़ी आदि में से यथाभ्यास सेवन करायें।

---०---

६—इस्तर्खाउिस्सदी

नाम--(अ०) इस्तेर्खाउस्सदी ; (उ०) पिस्तान का ढीला हो जाना ; (सं०) स्तनघात ; (अं०) रिलाक्सेशन्द ऑफ मैमा (Relaxation of Mamma)।

यद्यपि स्तन की रचना का प्रायः ग्रंथिमय भाग कोमल मांस का होता है। परन्तु उसके भागों का अधिक ढीला एवं सुस्त हो जाना जिस मलभूत दोष से होता है, वह दुग्धोत्पादन में अवश्य व्यतिक्रम उत्पन्न करता है।

हेतु--कफात्मक द्रवों की बहुलता, स्तनके स्रोतों एवं उसकी धातुओं का रक्त एवं दूध से शून्य होना, शरीर में रक्त की अल्पता, दीर्घकाल तक स्तन्यपान कराना और स्नान (हमाम) का प्रायशः उपयोग भी इस रोग का हेतु होता है।

लक्षण--ऐसी स्त्रियों का शरीर स्थूल, ढीला और बादी से फूला हुआ होता है। श्लेष्माधिक्य के अन्य लक्षण भी पाये जाते हैं। हर प्रकार का सुख और गृह के आवश्यक काम-काज में हाथ न डोलाना, उष्ण जल से नहाने और शीघ्र-शीघ्र स्नान का अवसर होना या शिशुओं को अधिक काल तक स्तन्य पान करना आदि।

चिकित्सा--ऐसी दशा में कफपाचनौषधि मिलाकर विरेचन देवें और हरा माजू, अनारका छिलका, झाऊ, जुफ्तबलूत, अकाकिया प्रत्येक ६ माशा सब को शुद्ध सिरका में पीस कर स्तनों के ऊपर लेप करें।

अपथ्य--स्निग्ध-कफकारक एवं वादी पदार्थों से और अधिक स्नान से परहेज करें।

पथ्य--आर्द्रताशोषक एवं रूक्ष आहार सेवन करें ; जैसे कबाब और बेसन की रोटी, भुने हुए चने, भुना हुआ कीमा आदि यथावश्यक चपाती के साथ देवें।

१०—सिग्रुस्सदी

नाम—(अ०) सिग्रुस्सदी ; (उ०) पिस्तान का छोटा हो जाना ; (सं०) स्तनवृद्धि, स्तनक्षय ; (अं०) ऐट्रॉफी ऑफ दी मैमरी ग्लैन्ड (मैमा) (Atrophy of the mammary gland) (Mamma)

कभी-कभी स्तन सामान्य अवस्था से बहुत छोटे हो जाते हैं।

हेतु—कभी-कभी स्तन की आकर्षणी शक्ति किसी व्याधि के कारण दुर्बल हो कर इस योग्य नहीं रहती कि आहार का शोषण यथेष्ट प्रमाण में कर सके। अतएव स्तन की धातुओं के पोषणार्थ यथेष्ट रक्त नहीं मिलता। कभी इन स्रोतों में दोषिक अवरोध हो जाते हैं जिनके रास्ते स्तन का पोषक रक्त आया करता है। कभी सामान्य दौर्बल्य और शरीर कार्श्य के साथ स्तन भी छोटे हो जाते हैं। कभी अतीव क्षय (तहल्लुल) एवं संशोधन से शरीर में रूक्षता प्रबल हो कर और रक्तविकार के कारण शारीरिक पोषण में व्यतिक्रम (गड़बड़) होता है। अतएव स्तन भी छोटे रह जाते हैं। कभी जननाङ्गों के सहज एवं जन्मोत्तर (कृत्रिम) विकार या अवस्था के कारण भी स्तन छोटे हो जाते हैं।

लक्षण—यदि स्तन की आकर्षणी शक्ति किसी कारण से दुर्बल हो गई हो तो उसके लक्षण विद्यमान होंगे। स्रोतों में अवरोध उत्पन्न करनेवाले दोष के लक्षण प्रगट होंगे। संशोधन और क्षय (तहल्लुल्) की अधिकता से हो तो पता लगाने से विरेचन का अतियोग, सिरावेधन, जलौकावचारण अथवा किसी अन्य साधन द्वारा शरीर से अधिक रक्त का निर्हण, साक्षी होगा। प्रकृति की रूक्षता और रक्त दुष्टि के कारण हो तो उसके लक्षण व्यक्त होंगे।

चिकित्सा—यदि आकर्षणी (शोषण) शक्ति के दौर्बल्य से यह रोग हो तो सूखे केचुए ६ माशा, सूखी जोंक ६ माशा, दोनों महीन पीस कर २ तोले कुष्ठ के तैल में मिलाकर पतला लेप लगावें।

यदि स्रोतों में किसी सान्द्रीभूत दोष या चिपकावदार (कफ) आदि से अवरोध उत्पन्न हो गया हो तो यह योग सेवन करायें :—सौंफ और कुसूस के बीज ५-५ माशा पोटली में बाँधकर विरंजासिफ और दालचीनी ३-३ माशा सबको रात्रि में उष्ण जल में भिगो देवें और सबेरे किंचित् गरम करके खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिला कर पिलायें और सौंफ, नाखूना, खतमी की जड़, कर्नब के बीज, सोआ के बीज, अफसन्तीन प्रत्येक ६ माशा, पीला अंजीर ३ दाना, बोल ६ माशा इन समस्त द्रवों को जल में पीस कर कुष्ठ-तैल में मिला कर स्तनों पर कुनकुना गरम लेप करें।

यदि सार्वाङ्गिक दौर्बल्य के कारण स्तन साधारण से छोटे हों, तो ५दाने मीठे बादाम का मग्ज, कतीरा ६ माशा निशास्ता ६ माशा, मिश्री १ तोला कूट-छान कर

चूर्ण बनालेवें। इसमें से एक-एक तोला सबेरे-शाम बकरी के दूध से खिलायें। तथा भैंस और हाथी की चर्बी समभाग मिला कर गरम कर के कुछ दिन स्तनों पर मर्दन करें।

यदि गर्मी और खुश्की के कारण से हो तो दुग्ध और घी अधिक प्रमाण में खिलायें तथा भेड़ और बत्तख इन की चर्बी ६-६ माशा और सफेद मोम ६ माशा परस्पर मिलाकर गरम करके मर्दन करें।

यदि जननाङ्गों के सहज दोष या अवस्था इसका हेतु हो तो वह दुष्प्रतिक्रिय है।

अपथ्य--शरीर को कृश करनेवाले उपायों, शोक एवं क्रोध, आतप और अग्निसेवा, अधिक परिश्रम इनसे परहेज करें। गुड़, तेल और अम्ल पदार्थों का सेवन कम करें।

पथ्य--स्नेहाक्त, बल्य और पतले आहार सेवन करायें। अंडा, मुर्गी के बच्चों का शूरबा, दुध, मक्खन, घी, मलाई और सब प्रकार के फलों में से जो प्रिय हों उन्हें देवें। मूँग की खिचड़ी, खशका, मूँग और अहरहर की दाल, शाकों में भिंडी, तुरई, कद्दू, टिंडा, पालक आदि यथाभ्यास देवें।

उदर रोगाधिकार ८

(पचनसंस्थान के रोग)

आमाशय रोगाध्याय (अम्राज़ुल्मेदा) १

१—वज्उल्मेदा

नाम—(अ०) वज्उल्मेदा ; (फा०) दर्दे मेदा, दर्दे शिकम ; (हिं०) पेट का दर्द ; (सं०) आमाशयशूल ; (अं०) गॅस्ट्रॅल्जिया (Gastralgia)।

यह आमाशय का वातिक शूल है। वस्तुतः यह पचनविकार का एक लक्षण है।

हेतु—यह रोग आमाशय की अदोषज या दोषज विप्रकृति से उत्पन्न होता है। कभी दूषित वायु, गुरु एवं दीर्घपाकी आहार सेवन करने तथा आमाशय पर अति उष्ण संक्षोभक पैत्तिक दोष गिरने से अथवा अप्राकृतिक रूप से आमाशय में श्लेष्मा के संचित हो जाने से यह रोग उत्पन्न होता है। कभी-कभी आमाशय के स्पर्शासहिष्णु हो जाने से भी वेदना होने लगती है। कभी गुरु एवं बादी आहार सेवन करने से पचनविकार होकर रियाह् (वायु) उत्पन्न हो जाते हैं और वेदना का कारण होते हैं। कभी अधिक भोजन करने से आमाशय में भोजन दूषित हो जाता है जिससे वेदना उत्पन्न हो जाती है। परन्तु स्त्रियों को यौवन या रुद्धार्तव काल में शारीरिक दौर्बल्य के कारण अथवा अपतन्त्रक के कारण भी यह व्याधि हो जाता है। पर साधारणतया अजीर्ण वा मलावरोध के कारण यह वेदना हुआ करती है।

लक्षण—हेतुओं की विविधता के अनुसार इसके विविध लक्षण होते हैं। विप्रकृति की दशा में जिस प्रकार की विप्रकृति हो उसी प्रकार के लक्षण विद्यमान होते हैं। उदाहरणतः उष्ण की दशा में आमाशय में दाह और उष्णता, तृष्णाधिक्य, मुखशोष तथा शीतल पदार्थों से लाभ आदि। शीतल की दशा में इसके विपरीत लक्षण प्रगट होते हैं। अदोषज (सादी) विप्रकृति में गौरव-रहित हलके लक्षण होते हैं और दोषज विप्रकृति में गौरव के साथ उग्र एवं तीव्र होकर प्रगट होते हैं। आध्मान और उदरगत वायु की दशा में उदर के भीतर आटोप एवं दाह होता है। उदर में रुक-रुक कर पीड़ा होती है। पसलियों में खिचावट होती और पेट फूल जाता है। अजीर्ण एवं आहार दुष्टि की दशा में अम्लोद्गार आते हैं। वेदना रुक-रुककर होती है। उत्क्लेश होता है और कभी-कभी वमन भी हो जाता है। वातनाड़ियों के स्पर्शासहिष्णु हो जाने की

दशा में खाली पेट रहने पर वेदना होती है तथा भोजन कर लेने पर वह कम हो जाती है।

चिकित्सा—रोगजनक दोष के शोधन और निदानपरिवर्जन के पश्चात् यदि पीड़ा अल्प हो तो रोगी को सोडावाटर अर्थात् खारे पानी का एक बोतल बाजार से मँगा कर पिलायें और १२ तोला सौंफ के अर्क या उष्ण जलके साथ १ तोला जुवारिश कमूनी खिलायें। यदि पीड़ा तीव्र हो और भोजन किये तीन घंटे से कम हुए हों तो आधा सेर गरम पानी में २।। तोला नमक मिला कर पिलायें और कंठ के भीतर उँगली डालकर रोगी को वमन करायें। बोतल में गरम पानी भर कर इससे आमाशय के ऊपर सेंक करें और १ तोला राई आवश्यकतानुसार सिरका में पीसकर कपड़े पर फैला कर पीड़ा के स्थान पर १५ मिनट तक प्लस्तर की भाँति लगायें।

वायु (रियाह) की अधिकता से हो तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से १२ तोला सौंफ के अर्क में ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और ३ माशा अनीसून इनको पीस-छान कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा में मिला कर प्रातः सायंकाल कोष्ण पिलायें।

यदि आहारदुष्टि के कारण हो तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिला कर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज, और ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का इनको १२ तोला सौंफ के अर्क में पीस-छान कर ४ तोला गुलकन्द और ४ तोला सादा सिकंजबीन मिला कर प्रातः सायंकाल पिलायें। सफूफ नमक सुलेमानी खास १-१ माशा या सफूफ नमक शैखुर्रईस १-१ माशा या हब्ब पपीता २-२ गोली खिलाना भी लाभकारी है। तीव्र पीड़ा होने पर हब्ब कबिद २-२ गोली या कबिदी २-२ टिकिया खिलाने से भी पीड़ा शांत हो जाती है।

विबंध (कब्ज) हो तो मुलय्यिन ४ टिकिया या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा १२ तोला कुनकुना अर्क सौंफ से खिलायें। अथवा सनाय मक्की के पत्र ६ माशा, काला नमक ६ माशा बारीक पीसकर चूर्ण बनायें। इस चूर्ण को १० तोला अर्क गुलाब या १२ तोला अर्क सौंफ से फँका देवें। इससे तुरत विरेक होकर उदरशूल शांत हो जाता है। यह शूल में भी लाभकारी है।

यदि पीड़ा आवेगपूर्वक होती हो अथवा प्रतिदिन पीड़ा रहती हो तो कुर्स कमूनी तीन टिकिया जल से खिलायें। तीन दिन तक इसी मात्रा में खिलाकर बाद में १-१ टिकिया प्रतिदिन बढ़ाते जायँ, यहाँ तक कि १४ टिकिया तक पहुँचायें। पुनः इसी प्रकार एक-एक टिकिया कम करके प्रथम मात्रा (३ टिकिया) तक पहुँचायें और तीन दिन तक सेवन कराके बन्द करा देवें। यदि पीड़ा कम न हो तो मूँग का आटा ऽ। दूध में गूंधकर ६ माशा सेंधा नमक, ३ माशा सोंठ और

३ माशा हींग महीन पीस-मिलाकर टिकिया पकायें और इसको एक ओर से कच्चा रखें। कच्ची की ओर गुलरोगन चुपड़कर रात्रि में कुनकुना उदर के ऊपर बांध लिया करें।

शीतजन्य उदरशूल में मस्तगी १ माशा और जदवार खताई १ माशा महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से १० तोला अर्क गुलाब २ तोला शर्बत दीनार या २ तोला शर्बत वर्द मुकर्रर मिलाकर कुनकुना पिलायें। ४ तोला एरण्डतैल, १० तोला अर्क गुलाब और २ तोला बूरा—(शकर सुर्ख) मिलाकर पिलाने से भी उदरशूल नष्ट होता है।

अपथ्य—जबतक आमाशय शुद्ध न हो भोजन सर्वथा त्याग देवें। उदर शुद्ध होने के बाद भूख से कम भोजन करें। सांद्र, दीर्घपाकी और आध्मान-कारक पदार्थ, जैसे मटर, गोभी, आलू, अरवी, कचालू, उड़द की दाल आदि से परहेज करें।

पथ्य—उदरशुद्धि और पीड़ा शांत हो जाने के बाद बकरी का शूरबा चपाती के साथ खिलायें। मुर्गी के बच्चे का शूरबा या अखनी, पुदीना की चटनी जीरा मिलाकर देवें। भोजनोत्तर सिरका की चटनी या अदरक का मुरब्बा थोड़ा-सा खिलाना चाहिये।

२—वज्उल्फ़ुवाद

नाम—(अ०) वज्उल्फ़ुवाद; (उ०) फम मेदा का दर्द, कलेजा जलना; (सं०) हृदयोद्वेष्टन, हृदयोत्क्लेश; (अं०) कार्डिऐल्जिया (Cardialgia)।

कार्डिऐल्जिया को अरबी में वज्उल्फ़ुवाद कहते हैं जिसका धात्वर्थ हृच्छूल है। पर वस्तुतः यह आमाशयिक द्वार (फम मेदा) का तीव्र शूल है। आमाशयिक द्वार हृदय के समीप होता है और उसके शूल में हृदय के सान्निध्य के कारण रोगी हृत्स्थल पर दर्द की शिकायत करता है। अतएव इसको उक्त नाम से अभिहित किया गया।

हेतु—आमाशयिक द्वार पर पित्त गिरने से अथवा उस में सांद्र वायु के संचित हो जाने से यह पीड़ा होती है।

लक्षण—पित्तजन्य शूल में रोगी को तीव्र तृष्णा लगती है। मुख और जिह्वा शुष्क हो जाती है। चेहरे और नेत्र का वर्ण पीला हो जाता है। मुख का स्वाद तिक्त हो जाता है। दाहपूर्वक मलोत्सर्ग होता है। मूत्र में दाह और लालिमा होती है। किसी शीतल द्रव्य-सेवन से वह शांत हो जाता है। सांद्र वायु के संचय से हो तो उत्क्लेश होता और बारंबार उद्गार आते हैं।

उद्‌गार आने या अपान वायु के निर्हरण से वेदना कम हो जाती है। पीड़ा किसी समय कम और किसी समय अधिक हो जाती है।

चिकित्सा--पित्तज शूल में ३ माशा जरिश्क, ५ दाना आलू बोखारा और ५ माशा सौंफ को ६-६ तोला अर्क गावजबान और अर्क गुलाब में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला सिकंजवीन लीमूँ या ४ तोला शर्बत गोरा मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें। भोजनोत्तर जुवारिश अनारैन ७-७ माशा खिलायें। ग्रीष्म काल में छाछ में बर्फ मिलाकर पिलाने से भी उपकार होता है। सफेद चंदन, गुलाब के फूल, बंशलोचन, सुमाक प्रत्येक ३ माशा--सबको अर्क गुलाब में पीसकर इसबगोल का लबाब मिलाकर आमाशयिक द्वार के ऊपर लेप करें तथा गुलाब का इत्र उक्त स्थल पर मलें। आराम होने के उपरांत सिकंजबीन और उष्ण जल मिलाकर वमन करायें, तदुपरांत शर्बत वर्द मुकर्रर अर्क गुलाव में घोलकर पिलायें। आवश्यकता होने पर उष्ण शिरःशूल की भांति पाचनौषध पिलाकर शीत विरेचनीय औषधि द्वारा शोधन करें। तीव्र पित्त प्रकोप में वासलीक सिरा का वेधन करें।

यदि सांद्र वायु से यह रोग हो तो प्रथम वमन करायें। तदुपरांत वातानुलोमन औषधियाँ सेवन करायें। सुतरां जुवारिश कमूनी खिलाकर १० तोला अर्क गुलाब और २ तोला सिकंजवीन मिलाकर पिलाना लाभकारी है। अथवा मस्तगी १ माशा, जदवार १ माशा महीन पीसकर जुवारिश जालीनूस ७ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा में मिलाकर प्रथम खिलायें। ऊपर से १२ तोला अर्क माउल्लहम मर्का कासनी वाले में ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें तथा राई सिरका में पीसकर कपड़े पर फैलाकर आमाशयिक द्वार के ऊपर १५ मिनट तक प्लस्तर की भांति लगायें। १ रत्ती हीराहींग गुठली निकाले हुये मुनक्का में लपेटकर ऐसे दर्द में खिलाने से अथवा काला नमक अर्क गुलाब में घोलकर पिलाने से भी लाभ होता है। जिनको यह पीड़ा आवेगपूर्वक होती हो वे जुवारिश कमूनी १-१ तोला नित्य भोजनोत्तर सेवन करते रहें। शेष वे सभी उपाय काम में लेवें जिनका उल्लेख हृच्छूल के वर्णन में किया गया है।

अपथ्य--गर्मी के कारण हो तो मांस का सेवन त्याग देवें। दूध और गरम मसाला आदि से परहेज करें। वायु के कारण हो तो बादी एवं गुरु पदार्थों जैसे आलू, अरवी, गोभी, मटर और उड़द की दाल आदि से परहेज करें।

पथ्य--पीड़ा शांत हो जाने पर साधारण आहार जैसे बकरी का शूरबा, चपाती और शाकों में कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, टिंडा आदि आवश्यकतानुसार देवें।

३—फुवाक़

नाम—(अ०) फुवाक़; (उ०, हिं०) हिचकी; (सं०) हिक्का; (अं०) हिक्कफ (Hiccough), हिक्कप (Hiccup)।

जिस प्रकार फुफ्फुस निज कष्टदायिनी वस्तु को खाँसी के द्वारा दूर करने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार आमाशयिक द्वार में यदि कोई कष्ट होता है तो वह उसे हिचकी द्वारा दूर करता है।

हेतु—कभी यदि कोई तीक्ष्ण वस्तु सेवन की जाती है अथवा कोई तीक्ष्ण दोष (पित्त) आदि आमाशय पर गिरता है या आमाशयिक द्वार में श्लैष्मिक द्रव संचित हो जाते हैं तो हिचकी आने लगती है। सांद्र, आध्मानकारक एवं स्निग्ध आहार का सेवन, आमाशय में प्रभूत वायु की उत्पत्ति होना, इसके हेतु हैं। अपतन्त्रक, आमाशयशोथ एवं यकृच्छोथ के कतिपय रोगों में भी यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण—पित्तज हिक्का में आमाशयिक द्वार के ऊपर दाह प्रतीत होता है, तृष्णाधिक्य, जिह्वाशोष आदि तथा पित्त के अन्य लक्षण पाये जाते हैं। श्लैष्मिक द्रव एवं सांद्र वायु जन्य रोग में आमाशयिक द्वार के ऊपर बोझ-सा प्रतीत होता है। पचनविकार, उदरशूल, आध्मान और आटोप आदि लक्षण होते हैं।

चिकित्सा—गरम पानीमें लवण या सिकंजबीन मिलाकर पिलाकर प्रथम रोगी को वमन करायें। तदुपरांत तुख्म करफ्स, स्याह जीरा, अनीसून, सोंठ, सूखा पुदीना, असारून, बालछड़, जरावंद मुद्हरज प्रत्येक ३ माशा—सबको जलमें क्वाथ करके ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें। भोजनोत्तर जुवारिश जालीनूस ७ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा खिला दिया करें।

यदि आमाशयशोथ, यकृच्छोथ या अपतन्त्रक के कारण यह रोग हो तो उक्त रोगों की चिकित्सा करें। यदि किसी सांद्र (गलीज) आहार सेवन या अति भोजन करने से यह रोग हो, तो प्रथम वमन कराके तदुपरांत सौंफ १ तोला और गुलकंद २ तोला को १० तोला अर्क गुलाब में क्वाथ करके छानकर २ तोला सिकंजबीन मिलाकर पिलायें तथा छोटी इलायची ३ माशा और सूखा पुदीना ३ माशा रोगी को चाबने को कहें और भोजन में कमी करें।

वायु (रियाह) की अधिकता हो तो जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौंफ, अनीसून, कुसूस के बीज, काला जीरा प्रत्येक ३ माशा; १२ तोला अर्क सौंफ में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें या सोंठ ५ माशा, काली मिर्च ५ दाना, मिश्री २ तोला सबको जल में उबाल-छानकर चाय की भाँति प्रातः सायंकाल कुनकुना पिलायें।

यदि सांद्रीभूत कफ के कारण यह रोग हो तो मस्तगी १ माशा, अकरकरा १ माशा महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस मिलाकर प्रथम खिला देवें। ऊपर से गावजबान ३ माशा, उन्नाब ५ दाना, मिश्री २ तोला जल में उबाल-छानकर पिलायें। अथवा सौंफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा १२ तोला अर्क सौंफ में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर कुनकुना पिलायें या सफूफ नमक सुलेमानी १ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा में मिलाकर खिलायें।

अपथ्य--क्षुधा से अल्प भोजन करायें। उत्तम हो कि आवश्यकतानुसार एक-दो समय उपवास करायें। मांस, दूध, घी, गरम मसाला और आलू, अरवी, उड़द की दाल, भिंडी, मटर आदि से परहेज करायें।

पथ्य--रोग निवृत्त होने पर लघु आहार, बकरी का शूरबा, चपाती, शाकों में कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, करेला, मूंग और अरहर की दाल आदि यथाभ्यास देवें।

वक्तव्य--रोगी को भूख से कम भोजन कराना, या किसी विधि से अकस्मात् भय दिलाना या उष्ण जल के कुछ घूंट पिलाना, उभय स्कंध के मध्य खाली सींगी लगवाना इस रोग में लाभकारी उपाय है। रोग की साधारण दशा में सांस रोकने या एक घूंट शीतल जल पीने अथवा गण्डूष करने या छींक उत्पन्न करने से यह रोग आराम हो जाता है।

४--क़ै, तहव्वुअ और ग़सियान

नाम--(अ०) क़ै; (उ०, हिं०) कै; (सं०) वमन, छर्दि; (अं०) वमिटिंग (Vomiting)।

(अ०) तहव्वुअ; (उ०, हिं०) ओकाई, उबकाई; (सं०) उत्क्लेश, हृल्लास; (अं०) रेचिंग (Retching)।

(अ०) गस्यान; (उ०, हिं०) मतली, मिचली, जी पंछिआना; (सं०) उद्रेचन; (अं०) नॉसिया (Nausea)।

वर्णन--क़ै आमाशय की उस चेष्टा को कहते हैं जिसके साथ आमाशय-स्थित पदार्थ अंशतः या संपूर्ण मुखमार्ग से निस्सरित हो जाते हैं। कभी-कभी आमाशय में न्यूनाधिक चेष्टा तो होती है, किन्तु वह उतनी बलवती नहीं होती कि भीतर के पदार्थ का निर्हरण कर सके। उक्त अवस्था को अरबी में तहव्वुअ (उबकाई Retching) कहते हैं। कै और उबकाई से पूर्व की वह अवस्था जिसमें जी मिचलाता है और यह मालूम होता है कि अभी कै या उबकाई आयेगी

गृस्थान (मिचली Nausea) कहते हैं। कै वस्तुतः स्वयमेव कोई रोग नहीं है, प्रत्युत कतिपय अन्यान्य रोगावस्थाओं का अन्यतम लक्षण है।

हेतु--आमाशय में पित्त का संचय एवं दाह उत्पन्न करना अथवा शीतल एवं स्निग्ध (आर्द्र) आहार का पुष्कल सेवन ; आमाशय में श्लेष्मा का संचय होकर पचनविकार को विकृत करना, अधिक खाने-पीने से आमाशय में आहार का दूषित हो जाना ; आमाशयगत संक्षोभ या दाह अथवा किसी व्रण का होना या आमाशयगत आक्षेप इसके हेतु हैं। कभी कुस्वादु एवं तिक्त पदार्थ सेवन, दुर्गन्ध सूँघने या भयङ्कर दृश्य देखने, यकृत्, वृक्क, मस्तिष्क, सुषुम्ना या गर्भाशय के कतिपय रोग तथा कतिपय प्रकार के ज्वरों के होने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण--पित्त की अधिकता से यह रोग हो तो मुख का स्वाद तिक्त होगा, तृष्णा की तीव्रता होगी, जिह्वाशोष होगा और उसपर कण्टक उत्पन्न हो जायँगे। वमन हो तो वह प्रायः पीले रंग का होगा। कभी-कभी विविध वर्ण का वमन होता है। आमाशयस्थ श्लेष्म संचय से हो तो मुख का स्वाद लवण या अम्ल होगा। वमन में श्वेत झारा या श्लेष्मा निकलेगी। तृष्णा न्यून होगी। मूत्र में सांद्रत्व एवं सफेदी होगी। मूत्र प्रमाण में अधिक आयेगा। पचनविकार से हो तो उदरस्थ आध्मान और वायु की अधिकता होगी। मंद-मंद पीड़ा होगी। अम्लोद्गार आयेंगे। यदि वमन होगा तो उसमें आहार का कुछ अंश निस्सरित होगा। किसी प्रकार के ज्वर के कारण यह रोग हो तो ज्वर विद्यमान होगा। अन्यान्य रोगजन्य हो तो उनकी विद्यमानता निदान के लिये काफी है।

निदान--आमाशय के वमन में प्रथम मिचली होती फिर वमन होता है। वमन हो चुकने के पश्चात् तबीअत हलकी हो जाती है, पर किसी प्रकार दुर्बलता प्रतीत हुआ करती है। परंतु मस्तिष्क के वमन में होने से पूर्व मिचली नहीं होती, प्रत्युत् प्रायः खाली आमाशय और सूखी उबकाइयां आया करती हैं। वमन हो चुकने के पश्चात् किंचित् दौर्बल्य की प्रतीति भी नहीं होती और न आराम होता है। गंदना (कुर्रास) के रंग का, काले या जंगली रंग का वमन होना अथवा केवल दोष का निर्हरण होना अरिष्टसूचक है। एक ही दिन में विविध वर्णों का वमन होना अत्यंत अरिष्टसूचक एवं हरा दुर्गन्धित वमन सांघातिक होता है।

चिकित्सा--मूल हेतु का पता लगाकर उसके परिवर्जनका यत्न करें। पित्तज वमन में गुनगुना पानी करके उसमें ४ तोला सिकंजबीन मिलाकर पिलायें और वमन करायें जिससे आमाशय भली-भांति शुद्ध हो जाय। तदुपरांत जरिश्क ३ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, अर्क गावजबान ६ तोला और अर्क पुदीना

६ तोला में पीस कर शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत गोरः या २ तोला सिकंजबीन लीमूँ मिलाकर पिलायें और जरिश्क ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना, सुमाक १ माशा, वंशलोचन १ माशा, बिजोरे का छिलका १ माशा, पिस्ते का बाहरी छिलका १ माशा, सफेद चंदन १ माशा सबको १-१ तोला अर्क गुलाब और शुद्ध सिरका में पीसकर आमाशयिक द्वार के ऊपर लेप करें। एक कागजी नीबू काटकर उस पर नमक और कालीमिर्च छिड़ककर चुसायें। ५ दाना आलूबोखारा और ३ तोला इमली को पानी में भिगोकर लिया हुआ निथरा पानी (जुलाल), ३ माशा कुलफा के बीज और ३ माशा जरिश्क तथा ५ दाना छोटी इलायची इनको पानी में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत भिलाकर पिलाने से भी लाभ होता है।

उपर्युक्त उपायों से लाभ न हो तो पित्तज शिरःशूल की भाँति पाचन औषधि पिलाकर विरेचन देवें। संशोधनोत्तर यदि कुछ दोष अवशेष रह जाय जिसका निर्हरण असंभव हो, तो संशमन औषध एवं आहार से दोष का शमन करें।

यदि श्लेष्माधिक्य से यह रोग हो तो मूली के बीज १ माशा, सेंधा नमक ३ माशा, शुद्ध मधु २ तोला एक सेर पानी में पकाकर पिलायें और भली-भांति वमन करायें। जब आमाशय भली-भाँति शुद्ध हो जाय तब ३ माशा मस्तगी महीन पीसकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर खिलायें और मस्तगी, बालछड़, ऊदगर्की, विजोरे का छिलका प्रत्येक ३ माशा यथावश्यक अर्क गुलाब और सिरका में पीसकर आमाशय के ऊपर लेप करें। सूखा पुदीना, मस्तगी, छोटी इलायची का दाना, विजौरे का छिलका, ऊदगर्की, पिस्ते का बाह्यत्वक् प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर ७ माशा जुवारिश मस्तगी में मिलाकर दूसरे समय सेवन करायें। भोजनोत्तर ५ माशा अनोशदारूए लूलुवी ४ चावल नमक मृगांग मिलाकर खिलायें या खुब्सुल्हदीद १ टिकिया ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल में मिलाकर देवें। जुवारिश कमूनी ७-७ माशा का सेवन भी लाभकारी है।

पित्तज वमन के रोगियों को जुवारिश तबाशीर ७ माशा या जुवारिश अनारैन ७ माशा या जुवारिश तमर्रहिंदी ७ माशा भोजनोत्तर खिलाना या थोड़ा-थोड़ा सिकंजबीन चटाना भी लाभकारी है।

कभी-कभी उदर में केचुए उत्पन्न होने और अन्त्र में कृमि उत्पन्न होने से भी मिचली और उबकाई का रोग हो जाता है। उक्त अवस्था में कृमिनाशन और कृमिनिःसारण के लिये कृमिरोग में वर्णित चिकित्सा क्रम अपनायें। कभी स्त्रियों को गर्भावस्था में और कभी-कभी लोगों को नाव या रेल की दीर्घ यात्रा में वमन और उत्क्लेश की व्याधि हो जाती है। उक्त अवस्था में यथावश्यक

समीचीन उपाय करें। गर्भवती को केवल शर्बत गोरः चटाने से ही तथा नाव की यात्रा में कोई अम्ल वस्तु जैसे नीबू, इमली आदि सेवन कराने से यह दूर हो जाता है।

अपथ्य--उष्णता से हो तो धूप में चलने-फिरने, श्रम और आयास-प्रयास से बचें तथा उष्ण एवं मसालेदार पदार्थ-सेवन से परहेज करें। यदि श्लेष्माधिक्य या पचन-विकार के कारण हो तो बादी एवं गुरु पदार्थ, जैसे लोबिया, चना, मटर, आलू, अरवी, उड़द की दाल और बर्फ आदि से परहेज करायें। दही, मक्खन अधिक नहीं देवें।

पथ्य--बकरे का भृष्ट मांस, मुर्गा, तीतर, बटेर आदि का शूरबा, मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, पालक, कुलफा, तोरई, करेला आदि का शाक गेहूं की चपाती के साथ देवें या मूँग की खिचड़ी खिलायें।

५—क़ैउद्दम

नाम--(अ०) क़ैउद्दम ; (उ०, हिं०) खूनी कै ; (सं०) रक्तवमन ; (अं०) हीमेटीमेसिस (Hematemesis)।

इस रोग में आमाशय या अन्नमार्ग से वमन द्वारा रक्त निर्हरण होता है।

हेतु--यह रोग दो प्रकार से होता है। प्रथमतः अन्नमार्ग या आमाशय की किसी वाहिनी के विदीर्ण हो जाने या कट जाने से रक्त का वमन होता है अथवा अन्य अंग-प्रत्यंग जैसे यकृत् या प्लीहा या शिर में अभिघात लगने से रक्त आमाशय में आकर गिरता है और वमन के द्वारा निस्सरित होता है।

लक्षण--आमाशयगत किसी वाहिनी के विदीर्ण होने से यह रोग हो तो क्षत स्थान के ऊपर पीड़ा होती है। यदि अन्नमार्ग में कोई कष्ट हो तो उभय स्कंधों के मध्य पीड़ा होती है। यदि यकृत्, प्लीहा या शिर से रक्त आमाशय में गिरता होगा तो इन अंगों में से किसी में कोई विकार अवश्य विद्यमान होगा।

नफ्सुद्दम (रक्तष्ठीवन) और कैउद्दम (रक्तवमन) में यह अन्तर है कि नफ्सुद्दम में रक्त की कुल्लियाँ आती हैं या रक्त खखार के साथ कफमिश्र आता है तथा रक्त फेनयुक्त लाल रंग का आता है और इसके साथ खांसी होती है तथा सांस लेने में कष्ट होता है। परंतु कैउद्दम में वमन द्वारा जो रक्त निकलता है, वह स्याही मायल होता है, फेनयुक्त नहीं होता। वह प्रायः आहारमिश्रित होता है। आमाशय स्थल पर आकुलता और बेचैनी होती है।

चिकित्सा--रोगी को अनाहार रखें और बर्फ के टुकड़े चाबने को देवें। आमाशयिक द्वार के ऊपर भी बर्फ रखवायें और नफ्सुद्दम (रक्तष्ठीवन) में

उल्लिखित रक्तस्तम्भक औषधियां उपयोग करायें और उसमें लिखे समस्त उपाय काम में लेवें। हस्त-पाद को कसकर बाँधना और पिंडलियों पर खाली सींगी लगवाना भी आशु प्रभावकर है। दम्मुल् अख़्वैन, कुंदुर, गिल अरमनी, गुलनार फारसी, बबूल का गोंद प्रत्येक १ माशा पीसकर १ तोला रुब्ब विही में मिलाकर बारंबार चटाना भी लाभकारी है।

वटी योग—अकाकिया, गुलाब का जीरा, गिल अरमनी, गुलनार फारसी प्रत्येक ३ माशा, अफीम १॥ माशा, अजवायन खुरासानी, बबूल का गोंद ३-३ माशा सबको पीसकर ३ माशा इसबगोल के लबाब में गूँधकर गोलियाँ बनायें। ३ माशा यह गोलियाँ खिलाकर १२ तोला अर्क गावजबान में २ तोला शर्बत अंजबार मिलाकर पिला दिया करें।

प्रलेप योग—अकाकिया, गुलनार सफेद और लाल चंदन प्रत्येक ६ माशा—सबको पानी में पीसकर आमाशय के ऊपर लेप करना चाहिये।

यकृत्, प्लीहा या शिर में आघात पहुँचने से जो रक्त वमन हो उसमें बासलीक़ सिरा का वेधन करायें। सिरावेधोत्तर विकारी अंग का सुधार करें। यकृत् या प्लीहा के ऊपर सींगी लगवाना भी लाभकारी है। आमाशयव्रण के कारण हो तो उक्त रोग की यथावत् चिकित्सा करें।

अपथ्य—उष्ण एवं तीक्ष्ण पदार्थों के खाने-पीने से, धूप में चलने और परिश्रमका कार्य करने से, शोक, क्रोध, तीव्र चेष्टा, मैथुन, कबाब, चाय और मद्य के अतिसेवन तथा स्नान से परहेज करें। मधुर एवं अधिक मसालेदार भोजन से बचें।

पथ्य—प्रथम मृदु एवं लघु भोजन, जैसे यवमंड या खीरा-ककड़ी के बीजों के मग्ज की खीर या साबूदाना। यदि आमाशय ग्रहण कर सके तो दूध बर्फ से शीतल करके देवें। कुछ कमी होने पर धीरे-धीरे दूध में डबल रोटी भिगोकर या चावल का खशका दूध मिलाकर कम मिठास डालकर सेवन करायें। जब आमाशय ऐसा आहार ग्रहण करने लगे तब मूँग की नरम खिचड़ी या बकरी का शूरबा बहुत कम मिर्च का देवें और धीरे-धीरे कुलफा, कद्दू, तोरई, टिंडा, भिंडी, आदि शीतल शाक सम्मिलित करके उसके साथ गेहूँ की चपाती देवें।

६—नफ़ख़ व क़राक़िर मेदा

नाम—(अ०) नफ़ख़ुल मेदा, क़राक़िर मेदा ; (हिं० उ०) अफारा (सं०, आध्मान ; (अं०) टिम्पनाइटिस (Tympanitis), बोबारिग्यस (Borbaryguns)।

हेतु—मंदाग्नि (आमाशयान्त्र की दुर्बलता), शीतल, गुरु एवं आध्मान कारक (बादी) पदार्थ का सेवन, अधिक जल पीना, भोजनोपरान्त तुरत सो जाना, भोजनोत्तर लघुभ्रमन न करना, अधिक देर बैठे रहना आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण—भोजन करने के बाद या वैसी ही उदर मशक की भाँति स्फीत हो जाता है। पर्शुकाओं और उदर के नीचे उद्वेष्टन होता है। मुख से थूक आता है। कभी अम्लोद्गार भी आते हैं और उदर में गुड़गुड़ शब्द (क़राकिर) होता है तथा हृदय धड़कता है।

चिकित्सा—ऐसी दशा में सोडे की खारी बोतल पिलाना लाभकारी है। सौंफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, कुसूस ३ माशा १२ तोला अर्क सौंफ में पीसकर ४ तोला शर्बत दीनार या ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलाना अथवा जुवारिश कमूनी ७ माशा खिलाकर ऊपर से अर्क सौंफ १२ तोला, खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिला देना भी गुणकारी है। गेहूँ की भूसी १ तोला, बाजरा १ तोला, सेंधा नमक ६ माशा, काला जीरा ६ माशा, अजवायन ६ माशा सबको कपड़े की पोटली में बाँध कर उदर के ऊपर गरम करके टकोर करें। भोजनोत्तर नमक शंखुर्रईस १ माशा या सफूफ नमक सुलेमानी खास अथवा हब्ब पपीता २-२ गोली या कबिद नौसादरी २-२ गोली देने से भी लाभ होता है। आवश्यकतानुसार शेष वे ही उपाय काम में लेवें जिनका उल्लेख उदरशूल में हो चुका है।

अपथ्य—वायुकारक एवं सांद्र वस्तु, जैसे आलू, उड़द की दाल, मटर, अरबी आदि से परहेज कराएं। प्रथम एक-दो दिन लंघन कराएँ। इसके बाद रोग निवृत्त होने पर पथ्य में बकरीका शूरबा चपाती के साथ या मुर्गा, तीतर, बटेर काशूरबा गरम मसाला डालकर देवें। मूँग की खिचड़ी, मूँग-अरहर की दाल, कबाब चाय आदि यथाभ्यास भूख से एक-दो ग्रास कम देना चाहिये।

७—अतश मुफ़रित

नाम—(अ०) इल्लतुल्अतश, अतश मुफ़रित ; (उ०) प्यास की शिद्दत; (सं०) तृष्णाधिक्य, तृष्णातिरेक ; (अं०) पॉलीडिप्सिया (Polydipsia)

इस रोग में अत्यधिक प्यास लगती है। इसके ये दो भेद हैं—(१) सत्य (सादिक) अर्थात् सच्ची प्यास जिसमें केवल भोजन को पतला (तरल) बनाने तथा अंग-प्रत्यंगों तक पहुँचाने के लिये भी पानी की आवश्यकता होती है। (२) मिथ्या (काजिब) अर्थात् झूठी प्यास जिसमें शरीर में आक्लेदाल्पता के बिना बारंबार जल की इच्छा होती है।

हेतु--कभी गरमी में चलने-फिरने तथा ऋतु के कारण अथवा लहसुन, प्याज तथा उष्ण पदार्थ के प्रचुर उपयोग से, कभी-कभी ज्वर की तीव्रता में अधिक तृषा लगती है, क्योंकि आमाशय की उष्णता एवं शुष्कता के कारण मुखस्थ द्रव (आक्लेद) शुष्क हो जाते हैं तथा आमाशय को अधिक जल की आवश्यकता होती है। पर कभी-कभी पिच्छिल सांद्र कफ आमाशय में चिपक जाता है और आमाशय उसको पृथक् करने तथा प्रक्षालनार्थ बारंबार जल की इच्छा करता है।

लक्षण--गर्मी के कारण हो तो शीतल जल या बर्फ सेवन करने से शांति मिलेगी। ज्वर से हो तो वह विद्यमान होगा। कफ से हो तो शीतल जल सेवन से तृष्णा शांत नहीं होगी अपितु, बढ़ती जायगी। रोगी को कुनकुना जल सेवन से शांति मिलेगी। अन्य रोग से होने पर उनके लक्षण मिलेंगे।

चिकित्सा--यदि संशोधन या चेष्टा एवं परिश्रम के बाद या गर्मी में मार्ग चलकर आने के पश्चात् तृषा प्रतीत हो तो कुछ देर तक ठहरकर पानी पीएँ, ऐसी दशा में तुरत ही जल पीना हानिकर होता है। यदि जल से शांति न मिले तो शर्बत केवड़ा ४ तोला या शर्बत नीलूफर ४ तोला या शर्बत अजीब ४ तोला या शर्बत गुडहल ४ तोला इनमें से कोई एक शर्बत अर्क बेदमुश्क ४ तोला और अर्क गावजबान ८ तोला में मिलाकर बर्फ से शीतल करके रोगी को पिलायें। किसी उष्ण पदार्थ के सेवन से हो तो तुख्म खुर्फा स्याह (कुलफा के कृष्ण बीज), मीठे कद्दू के बीज के मग्ज, तरबूज के बीज के मग्ज प्रत्येक ३ माशा, अर्क गावजबान ८ तोला तथा अर्क बेदमुश्क ४ तोला में पीसकर शीरा निकालकर उसमें ३ माशा बेदाना का जल में लबाव निकालकर मिला लेवें और शर्बत उन्नाब तथा शर्बत नीलूफर ४-४ तोला योजित कर दो-तीन दिन तक प्रातः-सायंकाल पिलायें।

पित्त के प्रकोप से हो तो आलू बोखारा ५ दाना, जरिश्क ४ माशा १२ तोला अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मीठे अनार का शर्बत मिलाकर सबेरे-शाम पिलाएँ।

ज्वर की तीव्रता के कारण हो तो ज्वर का उचित उपचार करें और सिकंजबीन ४ तोला, अर्क गुलाब ४ तोला और अर्क गावज़बान ८ तोला मिलाकर बारंबार पिलायें या शर्बत बनफ़्शा ४ तोला १२ तोला अर्क गावजबान में मिलाकर बर्फ से शीतल करके थोड़ा-थोड़ा पिलायें।

कफ के कारण हो तो कुनकुना पानी थोड़ा-थोड़ा पिलायें जिसमें कफ पतला होकर निर्हरण हो जाय या चाय की कोष्ण प्याली पिलायें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद या हब्ब पपीता ३-३ गोली खिला दिया करें। प्रातः-सायंकाल कुर्स खुब्सुलहदीद १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर खिलायें।

अपथ्य--गरम मसाला, लाल मिर्च, लहसुन, मछली, अंडा, कबाब, मद्य

आदि उष्ण पदार्थ और बादी, गुरु एवं कफकारक पदार्थ गोभी, मटर, आलू, अरबी प्रभृति नहीं देवें।

पथ्य---बकरी का शूरबा, चपाती, कद्दू, कुलफा, पालक, तोरई, टिंडा, मूँग अरहर की दाल, मूँग की खिचड़ी प्रभृति देवें और संतरा, अनार, ककड़ी, अंगूर सेब, नासपाती आदि यथाभ्यास देवें।

८—फसादुश्शह्वत

नास---(अ०) फ़साद (नुक्सानु) इशह्वत, ह्वम; (हिं०, उ०) भूख की कमी, भूख की खराबी; (सं०) अरोचक, भक्तद्वेष, अरुचि; (अं०) एनोरेक्सिया (Amoneesia), पिका (Peca)।

वक्तव्य---नुक़्सानुश्शह्वत से भूख की कमी अभिप्रेत है। जब क्षुधा एकदम नष्ट हो जाय तब उसे बुह्लानुश्शह्वत कहते हैं। इन उभय दशाओं में हेतु एक ही होते हैं। वह्म और फसाद शह्वत से बुरी वस्तुओं की इच्छा अभिप्रेत है। ये उभय समानार्थी हैं। किन्तु कतिपय हकीमों ने इन दोनों में यह भेद किया है कि वह्म में तीक्ष्ण, चटपटी, नमकीन आदि बुरी वस्तुओं के खाने की प्रबल इच्छा होती और फसादुश्शह्वत में कोयला, चना, कील प्रभृति अहितकर द्रव्यों के खाने की रुचि होती है।

हेतु---कभी उष्ण, मधुर एवं स्निग्ध पदार्थों के अति सेवनसे पित्त अधिक उत्पन्न होकर आमाशय पर गिरता है और भूख बंद कर देता है कभी-कभी बादी, भारी एवं चिरपाकी पदार्थों के सेवन से कफ अधिक उत्पन्न होकर भूख को रोकता है। पर कभी उदरस्थ कृमि के कारण भूख बंद हो जाती है; क्योंकि वह अन्त्र और आमाशय को अपनी चेष्टा से क्लेश पहुँचाते हैं।

लक्षण---क्षुधा या तो कम लगती है अथवा सर्वथा भोजन की रुचि ही नहीं होती। कभी-कभी भोजन से घृणा हो जाती है तथा रोगी को बरबस कुछ खिलाया-पिलाया जाता है।

चिकित्सा---उष्ण एवं स्निग्ध पदार्थ-सेवनसे हो तो उनका परित्याग करायें। पित्त निर्हरण के लिये कुनकुने पानी में सिकंजबीन मिलाकर वमन करायें। तदुपरांत जरिश्क और कुलफा के कृष्ण बीज प्रत्येक ३ माशा, सौंफ ५ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, ६-६ तोला अर्क गावजबान और अर्क नीलूफर में शीरा निकालकर २ तोला शर्बत गोरः या २ तोला सिकंजबीन या २ तोला शर्बत अनार शीरी मिलाकर पिलायें तथा जुवारिश संदल ७ माशा या जुवारिश तबाशीर ७ माशा या जुवारिश अनारैन ७ माशा खिलाकर ऊपर से मीठे अनार का रस ५ तोला,

लुकाट का रस ५ तोला, अर्क बेदमुश्क ३ तोला और अर्क गुलाब २ तोला मिलाकर शर्बत अजीब २ तोला या शर्बत नीलूफर २ तोला सम्मिलित करके पिलायें। सफेद चंदन अर्क गुलाब में घिसकर उसमें कपड़ा तर करके आमाशय के ऊपर स्थापन करें।

पित्त प्रकृति वालों के लिये उचित यह है कि भोजन से पूर्व थोड़ा-सा शीतल जल पी लिया करें। इससे प्रायः भूख खुल जाती है।

यदि कफ की अधिकता से हो तो उष्ण जल में लवण मिलाकर रोगी को पिलाकर वमन करायें। वमन हो जाने के पश्चात् यह योग सेवन करायें-- मुलेठी, मस्तगी, गुल गावजबान और इलायची का दाना प्रत्येक ३ माशा, समस्त द्रव्यों को जल में उबाल कर ४।। तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें और ६-६ तोला अर्क पुदीना और अर्क सौंफ ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें और जुवारिश जालीनूस ७-७ माशा या जुवारिश कमूनी ७-७ माशा प्रातः-सायंकाल खिलायें।

यदि प्लीहा बढ़ जाने के कारण हो तो उसकी विधिवत् चिकित्सा करें और भोजनोत्तर यह चूर्ण सेवन करायें--राई ९ माशा, भृष्ट सुहागा ३ माशा, नौसादर २ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमें से ३ माशा चूर्ण सवेरे-शाम ताजा पानी से फँकायें। कब्ज हो तो सप्ताह में दो बार सोते समय कुर्स मुलय्यित ५ टिकिया गाय के दूध या ताजा पानी से खिलायें। क्षुधा उत्पन्न करने के लिये सफूफ नमक सुलेमानी खास १ माशा या सफूफ नाना ३ माशा या सफूफ शीरी ३ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा या अनोशदारू लूलुवी ७ माशा में से कोई औषधि आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

अपथ्य--पित्तके कारण हो तो मांस के अति सेवन, गरम मसाला और उष्ण वस्तुओं के सेवन से, धूप में चलने फिरने, अग्नि सेवा और परिश्रम से बचना चाहिये। कफ के कारण हो तो सांद्र एवं बादी पदार्थों जैसे उड़द की दाल, गोभी, आलू,अरवी, मटर, लोबिया, बाकला आदि के सेवन से बचें। बासी भोजन और मछली प्रभृति नहीं खायें। प्लीहा हो तो स्निग्ध पदार्थों जैसे घी, तेल और दूध आदि आमाशय को शिथिल करनेवाले द्रव्यों से परहेज करें।

पथ्य--प्रथम आहार वर्जित करें और कुछ काल तक बहुत कम-कम खिलायें। तदुपरांत धीरे-धीरे यथावश्यक साधारण बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग-अरहर की दाल, खिचड़ी, तीतर, बटेर, मुर्ग का शूरबा आदि यथाभ्यास सेवन करायें।

९—जूउल्कल्ब, जूउल्बक़र

नाम—(अ० जूउल्कल्ब, जूउल्बक़र; (उ० हिं०) भूख बहुत लगना, भूख का हूका ; (सं०) भस्मक, अत्यग्नि ; (अं०) बूलीमूस (Bulimus), बूलीमिया (Bulimia) ।

इस रोग में रोगी को बारंबार क्षुधा लगती है ।

हेतु—शरीर में क्षतिपूर्ति या भोजन की अपेक्षा होने पर शरीर के अंग-प्रत्यङ्ग आमाशय से आहार की माँग तो करते ही हैं पर कभी-कभी प्लीहा के विवर्द्धित हो जाने से तथा सौदा अधिक उत्पन्न होने से आमाशयिक द्वार में सौदा का अन्तर्भरण अधिक होता है अथवा मास्तिष्कीय प्रसेक उस पर गिरते हैं और इस हेतु आहार आमाशय से बारंवार फिसल जाता है । पर कभी मधुमेह के कारण तथा शिशुओं में उदरकृमिके कारण भी यह व्याधि हो जाती है । कभी-कभी तीव्र ज्वरों या अन्य व्याधियों से चिरकाल तक पीड़ित रहने के उपरान्त यह रोग उत्पन्न हो जाता है ।

लक्षण—ऐसे रोगी को बारंबार तीव्र मिथ्या क्षुधा पीड़ित करती है, जो थोड़ा भोजन कर लेने पर शान्त हो जाती है । पुनः कुछ काल पश्चात् लगती है । रोगी आलस्ययुक्त एवं मुरझाया हुआ रहता है । ऐसा प्रतीत होता है मानो हृदय डूबा जा रहा है । आहार से शारीरिक भाग नहीं बनता । रोगी अति भोजन करने पर भी दुर्बल रहता है ।

चिकित्सा—मूल हेतु का पता लगा कर उसका परिवर्जन करें । लवण और अम्ल पदार्थ सेवन नहीं करें, मलावरोध हो, तो जुवारिश सफरजली मुसहिल १ तोला या कुर्स मुलय्यिन ४ टिकिया १२ तोला अर्क सौंफ के साथ खिलायें या जुवारिश कमूनी ७ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा या जुवारिश ऊद शीरीं ७ माशा भोजनोत्तर खिलायें । नीहार मुंह नीबू का रस चीनी मिला कर पिलायें और वमन करायें । तथा बादाम की गिरी, पिस्ता की गिरी और अखरोट की गिरी समभाग पीस कर चीनी और घी के साथ पकाकर हलवा बनाकर खिलाएँ । यदि प्लीहाभिवृद्धि के कारण अथवा उदरकृमि के कारण यह रोग हो, तो इनकी चिकित्सा करें ।

अपथ्य—लवण, कषाय और विस्वाद (बिकठी) पदार्थों से परहेज करायें ।

पथ्य—बल्य एवं स्नेहाक्त आहार जैसे—बादाम, पिस्ता आदि की गिरियाँ आवश्यकतानुसार खिलायें ।

—०—

१०—वरमे मेदा

नाम—(अ०) वरमुल्मेदा ; (उ०) मेदा की सूजन ; (सं०) आमाशय-शोथ ; (अं०) गैस्ट्राइटिस (Gastritis)।

कभी-कभी आमाशय पर उष्ण प्रसेक (नज़लात) गिरने से या किसी संक्षोभ के कारण आमाशय में शोथ हो जाता है।

हेतु—खराब, बासी और गुरु भोजन का अतिसेवन, अधिक स्नेहाक्त तथा मसालेदार या मधुर पदार्थ का सेवन, कच्ची-हरी तरकारियाँ और अम्ल पदार्थ खाना, गाजर, मूली और गला-सड़ा केला-अमरूद आदि खाना, अति मद्यसेवन आदि से और रोमान्तिका (खसरा) के बाद या आमाशय में व्रणादि होने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—उदर में गौरव और बेचैनी होती है। मिचिली और थूक अधिक आता है। कभी-कभी अम्लोद्गार आते हैं। मुख से बारम्बार खट्टा पानी निकलता है। क्षुधा कम हो जाती है। तृष्णा तीव्र हो जाती है। मलावरोध हो जाता और मूत्र अल्प आता है। शिर: शूल और प्राय: सूक्ष्म ज्वर भी होता है। शिशुओं में यह शोथ अन्त्रों की ओर बढ़कर विरेक होने लगते हैं। आमाशय के ऊपर पीड़न करने से पीड़ा प्रतीत होती है। भोजन का ग्रास या जल का घूँट आमाशय-शोथ के स्थान परप हुँचने से किंचित् कष्ट प्रतीत होता हैं। कभी-कभी मरोड़ के साथ पतले विरेक आने लगते हैं। बारंबार मिचली होने से कभी वमन भी हो जाता है। रोगी को भोजन से घृणा हो जाती है। असीम दौर्बल्य एवं बेचैनी होती है। कभी-कभी हिचकियाँ आकर रोगी आसन्न-मृत्यु हो जाता है।

चिकित्सा—रोगारम्भ में आमाशय के ऊपर यह लेप करें—रसवत, लाल-चन्दन, गुलाब का फूल, गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा—सबको ५ तोला हरी मकोय के रस में पीसकर कुनकुना गरम करके आमाशय के ऊपर लेप करें। तीन दिन के पश्चात् इसी योगमें जौका आटा १ तोला, खतमी के बीज ६ माशा, अमलतास का गूदा ९ माशा योजित करके प्रयोग करें।

सप्ताह के पश्चात् लेपका निम्न योग काम में लेवें—बालछड़, गुल बाबूना, नाखूना प्रत्येक ६ माशा अमलतास का गूदा ९ माशा, जौका आटा १ तोला, सूखी मकोय ६ माशा, समस्त द्रव्यों को हरे मकोय के रस में पीस-कर गरम करके शोथ के स्थान पर लेप करें। हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ५ तोला, हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी ५ तोला, शर्बत दीनार ४ तोला मिलाकर प्रातः-सायंकाल पिलायें। कुछ दिन के पश्चात्

जब तीव्रता कम हो जाय तब गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ६ दाना, कासनी-मूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावज़बान ५ माशा, मकोय ५ माशा--रात्रि में उष्ण जल में भिगोयें और प्रातःकाल मल छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिला दिया करें। तीन दिनके पश्चात् यदि आवश्यकता पड़े तो कुसूस के बीज ५ माशा पोटली में बाँधा हुआ और हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ५ तोला, हरी कासानी के रस का फाड़ा हुआ पानी ५ तोला योजित कर सेवन करायें और खमीरा बनफ्शा के स्थान में शर्बत बज़ूरी ४ तोला सम्मिलित करें।

मलावरोध हो तो ४ तोला गुलकन्द की योजना करें और दूसरे समय अपराह्णकाल में यह योग देवें--दवाउल्-मिष्क मोतदिल ५ माशा खिला-कर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ६ दाना गुठली निकाला मुनक्का, ३ माशा मकोय, अर्क सौंफ ६ तोला और अर्क विरंजासफ ६ तोला में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि शोधन अपेक्षित हो, तो प्रातः काल के पेय योग में आठ दिन तक मकोय और कासनी के रस के फाड़े हुये पानी के बिना मिलाये, पिला कर ६ वें दिन सनायमक्की ७ माशा योजित कर रात्रि में भिगो देवें और प्रातःकाल मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकन्द ४ तोला, तरंजीवन ४ तोला--बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला, ५ दाना बादाम की गिरी का शीरा योजित कर पिलायें और दूसरे दिन तबरीद का (शीतजनन)योग देवें। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार तीन विरेचन करावें।

विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् ५ माशा खमीरा गावज़बान जवाहरवाला खिलाकर ५-५ तोला हरे मकोय और हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें। यदि ज्वर, मसूरिका, रोमान्तिका या अन्यान्य रोगों के कारण यह रोग हो, तो उसका आवश्यकता-नुसार उचित प्रतिकार करें और उनका ध्यान चिकित्सा में अवश्य रखें।

वक्तव्य--जिन हेतुओं से आमाशय शोथ होता है, उन्हीं हेतुओं से आमाशय में व्रण भी हो जाते हैं। कभी यही रोग चिरकालानुबंधी होकर व्रण उत्पन्न कर देता है, जिसको पाश्चात्य वैद्यक में 'गैस्ट्रिक अल्सर' (आमाशय व्रण) कहते हैं। इसके हेतु, लक्षण और चिकित्सा लगभग आमाशय शोथ के समान हैं। अतएव इस रोग का पृथक् वर्णन नहीं किया गया।

शोथ पक्व होने पर ज्वर और पीड़ा शमन हो जाती है। उस समय दूध में कुनकुना जल मिलाकर रोगी को पिलायें। उदर को हाथ से किंचित् पीड़न कर निचोड़ना चाहिये जिसमें पक्व शोथ विदीर्ण हो जाय। शोथ विदीर्ण होने

का लक्षण यह है कि रक्त और पूय वमन एवं विरेक के द्वारा निर्हरण हो। पुनः व्रण शुद्धि के लिये उस समय ५ तोला मधु और १५ तोला जल में घोलकर कुनकुना करके पिलायें जिसमें आमाशय पूय से शुद्ध हो जाय। तत्पश्चात् गुलनार फारसी, दम्मुलअख्वैन, गिल अरमनी, कुंदुर, कहरुवा शमई प्रत्येक ६ माशा—सबको बारीक पीसकर चूर्ण बनायें। इसमें से ६–६ माशा चूर्ण सवेरे-शाम सेवन करायें।

अपथ्य—अम्ल, मसालेदार और तीक्ष्ण पदार्थों से परहेज करायें।

पथ्य—पतला और शीघ्रपाकी आहार देवें। जब रोग के लक्षण हल्के हो जायँ, तब यवमण्ड या मुर्गी के बच्चों का शूरबा बिना मसाला के पकाया हुआ या बिना मिर्च का बकरी का शूरबा, मूँगकी नरम खिचड़ी या खश का दूध के साथ देवें।

११—सूए हज्म

नाम—(अ०) **सूएहज्म, ज़ोफो हज्म, फसादे हज्म तुख़्मः**; (उ०) **बदहज्मी, तुख़्मा**; (सं०) **अजीर्ण, अपच**। (अं०) **डिस्पेप्सिया** (Dyspepsia), **इन्डाइजेस्चन** (Indigestion)

वक्तव्य—कुछ लोगों ने जोफेमेदा, ज़ोफे हज्म, सूए हज्म और तुख़्मा का वर्णन एक साथ किया है, क्योंकि इन सबके हेतु लक्षण और चिकित्सा लगभग एक समान है। परंतु, धात्वर्थ के विचार से इनमें सूक्ष्म भेद है। **जोफ मेदा** में आमाशय दुर्बल हो जाता है, जिससे आहार का पचन विलंब से होता है, किन्तु **ज़ोफ़े हज्म** में केवल पाचन शक्ति दुर्बल हो जाती है, जिससे साधारण भोजन देर में पचता है और जब उसका सम्यक् परिपाक न होकर वह दूषित हो जाता है, तब उसे **सूए हज्म** या **फ़सादे हज्म** कहते हैं। **तुख़्मा** में भोजन बिल्कुल नहीं पचता, प्रत्युत या तो दूषित होकर किसी अप्राकृत पदार्थ में परिणत हो जाता है अथवा विरेक या वमन आदि के द्वारा ज्यूँ का त्यूँ (अपक्व दशा में ही) निस्सरित हो जाता है।

हेतु—**आमाशय-विकार, अनियमित भोजन, भोजन को खूब चबा-चबा कर नहीं खाना इसके प्रधान हेतु हैं। इसके बाद मद्य, तम्बाकू, चाय, कहवा और बर्फ आदि का अतिसेवन, अधिक शारीरिक या मानसिक श्रम तथा शोक एवं चिन्ता आदि भी प्रायः यह रोग उत्पन्न कर दिया करते हैं।**

लक्षण—**विभिन्न रोग एवं रोगियों में इसके लक्षण अति विभिन्न होते हैं। पर साधारण तया भोजन करने के तीन घंटा पश्चात् उदर में उद्वेष्टन, गौरव और**

बेचैनी प्रतीत होती है। कभी मिचलीं आती है और कभी वमन हो जाता है। कभी मलावरोध हो जाता है। कभी श्वेत वर्ण के विरेक होते हैं, जिनमें भोजन ज्यूँ का त्यूँ (अपरिपक्व दशा में) निर्हरण होता है। अम्लोद्‌गार आते हैं। मुख में बारंबार खट्टा पानी भर जाता है तथा मुख का स्वाद बिगड़ जाता है। आलस्य, शिरः शूल, हृत्स्पन्दन और आमाशयिक द्वार पर (हृदय के पास) मन्द-मन्द पीड़ा होती है। मूत्र श्वेत वर्ण का आता है और उसमें सफेदी तलस्थित होने लगती है (जो अपक्व आहार होता है)। कभी-कभी हृदयोद्वेष्टन होता और लवण एवं अम्ल-उद्‌गार आते हैं।

चिकित्सा—यदि उष्णता के कारण यह रोग हो और उदर में पीड़ा एवं बेचैनी मालूम होती हो, तो प्रथम उष्ण जल में सिकंजबीन मिला कर पिलायें और रोगी को वमन करायें। पीड़ा के स्थान पर उष्ण जल बोतल में भर कर बोतल को उदर के ऊपर फेरते रहें। इसकी सेंक से पीड़ा में कमी होगी। अथवा प्रथम ६ तोला इमली जल में उबाल-छानकर उसके ऊपर ७ माशा सनाय मक्की के महीन चूर्ण का प्रक्षेप देकर रोगी को पिलायें, जिस में विरेक हो कर तबीयत शुद्ध हो जाय। तदुपरान्त ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से सौंफ और कुसूस के बीज के प्रत्येक ५ माशा ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब में पीस-कर शीरा निकाल कर ४-४ तोले गुलकन्द और सिकंजबीन मिला कर पिलायें।

यदि स्वयं विरेक हो रहे हों तो उनको बन्द न करें, अपितु तबीयत (प्रकृति) की सहायतार्थ यह ओषधि सेवन करायें—सौंफ ७ माशा, सूखापुदीना ३ माशा सफेद इलायची का छिलका ५ माशा, गुलकन्द ४ तोला सबको जल में उबाल-छान कर ४ तोला सिकंजबीन मिला कर पिलायें। यदि पीड़ा तीव्र हो तथा आध्मान हो, तो जलके स्थान में १० तोला अर्क गुलाब या १२ तोला अर्क सौंफ में ओषधियाँ उबाल कर देवें। हैजा में लिखित उपाय तुख्मा में भी लाभकारी होते हैं। आवश्यकतानुसार उनका परिपालन करें।

पित्त की अधिकता में जरिष्क ३ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, सौंफ ५ माशा ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब में पीस-छान कर ४ तोले सिकंजबीन सादा और चार तोले गुलकन्द मिला कर पिलायें और वमन करायें। तदुपरान्त ७ माशा जुवारिश कमूनी खिला कर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, बीज निष्कासित मुनक्का ९ दाना ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गुलाब में पीस-छानकर ४ तोला शर्बत दीनार या ४ तोला गुलकन्द या ४ तोला शर्बत वर्द मुकर्रर मिला कर पिलायें। पीड़ा की दशा में सोडावाटर की खारी बोतल पिलायें। तृष्णा तीव्र होने पर सादा सिकंजबीन अर्क गुलाब में मिलाकर बर्फ से शीतल करके थोड़ा-थोड़ा पिलायें।

पीड़ा तीव्र हो तो नमक सुलेमानी खास १ माशा ७ माशा जुवारिश कमूनी कबीर में मिला कर खिलायें और ऊपर से १२ तोले अर्क वादियान और ४ तोले शर्बत दीनार मिलाकर पिलायें।

रोगनिवृत्ति के उपरान्त पाचन-शक्ति बढ़ाने के लिए कुर्स कमूनी न्यूनाधिक करके जिस प्रकार आमाशय शूल (दर्दे मेदा) के वर्णन में उल्लेख किया गया है, उपयोग करायें अथवा भोजनोत्तर सफूफ-नमक शेखुर्रईस १ माशा या सफूफ नमक सुलेमानी खास १ माशा या जुवारिश कमूनी ७ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा या हब्ब पपीता २-२ गोली या कबिदी २-२ टिकिया या दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या अनोशदारू लूलुई ५ माशा या जुवारिश मस्तगी ७ माशा में से कोई एक योगौषध आवश्यकतानुसार कुछ दिन निरंतर सेवन करायें।

टिप्पणी—तुख्मा और बदहजमी (अजीर्ण) में जब विरेक होते हैं, तब उनको रोकना नहीं; प्रत्युत् यावच्छक्य दूषित दोष के विरेक द्वारा निर्हरण में सहायता करनी चाहिए।

अपथ्य—बादी, गुरु, दीर्घपाकी और आध्मानकारक पदार्थों एवं अधिक मशालेदार और उष्ण पदार्थों से परहेज करें। आलू, अरवी, भिण्डी, खरबूजा, केला, गोभी आदि से भी परहेज करें।

पथ्य—रोग की तीव्रता में यावच्छक्य भोजन नहीं देवें। रोग निवृत्त होने पर प्रथम पतला और शीघ्रपाकी आहार थोड़ी मात्रामें देना प्रारम्भ करें। जब रोगी स्वास्थ्याभिमुख होता जाय, तब यथावश्यक धीरे-धीरे भोजन की मात्रा बढ़ाते जायँ। बकरी का शूरबा, चपाती, मूँग की दाल, मूँगकी नरम खिचड़ी, डबल रोटी दूध या शूरबा में भिगोकर खिलायें। तीतर, बटेर का शूरबा पिलाना, सिरका की चटनी या अदरक का मुरब्बा भोजनोत्तर थोड़ा-सा खिलाना या पुदीना की चटनी चटाना भी लाभकारी उपाय है।

१२—हैज़ा

नाम—(अ०, उ०, हिं०) हैज़ा; (सं०) विसूचिका; (अं०) कॉलरा (Cholera)

वर्णन—हैजा में आहार आमाशय के भीतर दूषित हो जाता है और दूषित विष-द्रव्य सचेष्ट हो कर वमन और अतिसार के रूप में निस्सरित होता है। अस्तु, सदीद गाजरूनी ने लिखा है कि हैजा आमाशय में आहार की परिणति एवं संशोधन के लिए उसका चेष्टा करना है तथा तत्स्थ पैत्तिक दोष तनुत्व एवं लघुत्व

के कारण वमन द्वारा निर्हरण हो जाता है और श्लैष्मिक दोष गुरु होने के कारण अन्त्र की ओर प्रेरित हो जाता है तथा अतिसार के द्वारा निर्हरण होता है।

हकीम जर्जानी और एलाकी का वचन है कि हैजा तीव्र एवं भयंकर रोगों में से है। इसमें वमन और अतिसार होता है। पर कभी-कभी केवल विरेक होते हैं, किंतु मिचली उक्त अवस्था में भी विद्यमान रहती है। इस रोग का मूलभूत हेतु अजीर्ण (सूए हज्म) है।

यह रोग यद्यपि तीव्र व्याधियों के अन्तर्भूत है। इसी हेतु इसमें तीव्र उपद्रव प्रकट हुआ करते हैं। जैसे—वमन, अतिसार, असीम दौर्बल्य, नाड़ीलुप्तता, स्वेद, हस्त-पाद की शीतलता, मूर्च्छा और आक्षेप आदि लक्षण प्रकट हो जाते हैं; किंतु ये इतने आतङ्कपूर्ण नहीं हैं।

हैजे में जिस दोष की उल्वणता होती है, उसके अनुसार इसे पैत्तिक, श्लैष्मिक और सौदावी कहते हैं। जिन दिनों में वायु के दूषित होने के कारण इस रोग की घटना साधारणतया एवं व्यापक हुआ करती है, इसे हैजा वबाई (जनपदोद्ध्वंसक विसूचिका) के नाम से अभिधानित करते हैं। सुतरां इस रोग के ये चार भेद हैं—हैजा सफराई, हैजा बल्गमी, हैजा सौदावी और हैजा वबाई। स्थान संकोच के कारण यहाँ इन में से प्रत्येक का पृथक् निदान-चिकित्सा न देकर केवल सामान्य विवरण ही दिया गया है।

हैजे की चिकित्सा में यह बात विशेषरूपेण ध्यान में रखने योग्य है कि जब तक वमन और अतिसार के द्वारा संपूर्ण दूषित विष द्रव्य उत्सर्गित न हो जाय, संग्राही ओषधि का उपयोग कदापि न करें। क्योंकि विष द्रव्य का शरीर के भीतर रुका रहना हृदय, मस्तिष्क और अन्यान्य अंगों की ओर प्रसृत हो जाने के कारण अत्यन्त भयावह ही नहीं अपितु सांघातिक सिद्ध होता है। सुतरां इस रोग में यदि दोष वमन या अतिसार में भली-भाँति निर्हरण न हो, तो मृदुसारक एवं विरेचन द्वारा उनकी सहायता करनी चाहिये। जब विष द्रव्य सम्यक् निर्हरण हो जाय, तब शमन ओषधि देना जरूरी है।

फादजहरमादनी (जहरमोहरा), फादजहर हैवानी, दरियाई नारियल, जदवार खताई, पपीता, कालीमिर्च, ऊदसलीब, पियाराँगा इनमें से किसी एक का दोषानुसार स्वतन्त्र व्यवहार हैजामें लाभकारी एवं परीक्षित है। हकीम शरीफ खाँ महोदय लिखते हैं कि जब वमन एवं मूर्च्छा प्रकट हो और दाँती लग जाय, तो २ माशा पपीता अर्क गुलाबमें पीसकर पिलाना, जदवार खताई, ऊदसलीब, दरियाई नारियल प्रत्येक पृथक्-पृथक् ४ रत्ती की मात्रा में अर्क गुलाब में पीसकर कंठ के भीतर टपकाना तथा पादस्नान (पाशोया) करना, सींगी लगवाना और वमन कराना रोगनिवारक उपाय हैं। मूर्च्छा दूर करने के लिये इसी दशा में

बासलीक या अकहल सिरा का वेधन कर रक्तमोक्षण करना खुलासतुल्हिक्मत के लेखक महोदय का परीक्षित है। मीर साहब खुलासा लिखते हैं कि जब हैजा में मूर्च्छा आदि प्रकट हो, तब एक लौह खण्ड खूब तप्त करके रोगी की चँदिया पर कुछ दूरी पर रखें और कागजी नीबू उस पर निचोड़ें तथा चँदिया पर टपकने देवें। इससे मूर्च्छा तुरत दूर होती है। इसी प्रकार तिल के तेल में जायफल पीसकर शरीर पर मलने से भी मूर्च्छा दूर होती है। हस्त-पाद में उद्वेष्टन होने की दशा में कुनकुना तेल में कपड़ा तर करके आमाशय के ऊपर रखने से लाभ होता है। इस रोग में रोगी को किसी प्रकार की चेष्टा नहीं करने देना, अपितु शयन कराये रखना और यदि निद्रा न आये तो निद्राकारक उपाय करना तथा अन्न-पान का सर्वथा परित्याग कर देना ये सर्वोत्तम उपाय हैं।

—०—

यकृत्पित्ताशयरोगाध्याय (अम्‌राजजिगर बल्मरारः) २

१—ज़ोफ़ेल्कबिद्

नाम—(अ०) ज़ाफ़ेल्कबिद ; (उ०) ज़ोफ़े जिगर, जिगर की कमजोरी; (सं०) यकृद्दौर्बल्य, (अं०) डल्नेस ऑफ लिवर (Dullness of Liver)

यकृत् की समस्त या कुछ शक्तियों में विकार आ जाता है, जिससे वह अपनी क्रिया यथावत्‌रूपेण संपादन नहीं कर सकता।

हेतु—आर्तवावरोध तथा पित्ताशयावरोध के कारण यकृत् में रक्त या पित्तका संचय, यकृत् का छोटा हो जाना, यकृदावरोध, यकृच्छोथ आदि इसके प्रधान हेतु हैं। यदि हेतु बलवान होता है या देर तक रहता है, तो संपूर्ण शक्तियों में दौर्बल्य प्रगट हो जाता है, अन्यथा कुछ ही में दौर्बल्य होता है।

लक्षण—ताजा मांस के धोवन की भाँति विरेक होते हैं। शरीर का वर्ण परिवर्तित हो कर पीला या सफेदी मायल हो जाता है। कभी श्यामता लिये होता है। क्षुधा कम लगती है। शरीर कृश एवं दुर्बल हो जाता है। कभी-कभी यकृद् में मन्द-मन्द पीड़ा होती है, जिसकी टीसें दक्षिण की ओर अन्तिम पर्शुका तक जाती हैं।

चिकित्सासूत्र—मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करें और जिस दोष के प्रकोप एवं प्रगल्भता से यह रोग हो उसका शोधन और शमन करें। यकृद्‌बलदायिनी ओषधि और उपायका विशेष रूप से ध्यान रखें। यदि स्वयमेव विरेक आने प्रारम्भ हो जायँ तो तत्क्षण संग्राही ओषधियों का उययोग न करें, अपितु सुगंधित अनुष्णाशीत (मोतदिल) ओषयधियों का उपयोग करायें तथा बल्य एवं अवरोधोद्‌घाटक (मुफत्तेहात) औषध और उपाय काम में लेवें।

चिकित्साक्रम--यकृत् के दौर्बल्य में साधारणतया निम्नलिखित उपक्रम लाभकारी सिद्ध होता है, क्योंकि यकृद्दौर्बल्य साधारणतया आक्लेद एवं शीत से होता है।

(१) फौलाद भस्म २ चावल ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर ५-५ तोले अर्क मकोय और अर्क सौंफ के साथ सवेरे-शाम सेवन करें।

(२) जुवारिश मस्तगी ७ माशा, बनुस्खाकलाँ भोजनोत्तर दोनों समय खिलायें। यदि यकृद्दौर्बल्य कफ की अधिकता से हो तो (१) गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावज़बान ७ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, बिरंजासफ ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर सवेरे मल-छान कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें। (२) अमलतास का गूदा १ तोला, अफसंतीन रूमी ६ माशा, इज़खिर मक्की ६ माशा, कुष्ठ (कुस्त तल्ख) ६ माशा, जदवार खताई ६ माशा हरे मकोय में पीसकर यकृत्स्थल पर कुनकुना गरम लेप करें। (३) यदि पित्त के कारण हो, तो जुवारिश आमला खिलाकर ऊपर से इमली १ तोला और आलूबोखारा ३ दाना को जल में भिगो कर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर मीठे अनार का शर्बत २ तोला मिलाकर पिलायें, (४) या कासनी के बीज १ तोला, खीरा-ककड़ी के बीज ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा ताजे जल में भिगोकर शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें।

यदि शिशुओं में यकृत् दौर्बल्य पाया जाय तो (१) जुवारिश मस्तगी रूमी ३ माशा खिलायें। ऊपर से १ माशा सौंफ का शीरा, १ माशा इलायची दाने का शीरा जलमें निकालकर ६ माशा मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें। (२) जौहर मेदा १ रत्ती भोजनोत्तर फँकायें।

परीक्षित योग--आनन्दरसायन, सफूफ जिगर, जुवारिश आमला लूलुवी आदि।

अपथ्य--ऊष्माधिक्य में उष्ण पदार्थ और शीत में शीतल पदार्थ सेवन न करें। मधुर एवं अम्ल पदार्थ भी साधारणतया अहितकर सिद्ध होते हैं। गुड़ और तेलके बने पदार्थ और आलू, अरवी, कचालू आदि बादी सान्द्र एवं दीर्घपाकी वस्तुओं से परहेज करें।

पथ्य--बकरी का शूरबा, चपाती, कुलफा, पालक, मूँग और अरहर की दाल प्रभृति उपयोग करें।

२--वज्उल् कबिद

नाम--(अ०) वज्उल्कबिद ; (उ०) दर्द जिगर; (सं०) यकृच्छूल; (अं०) बिलियरी कॉलिक (Biliary Colic)।

हेतु-- कभी उष्ण उपाय काम में लेने से और धूप आदि में अधिक भ्रमण करने से या अति मांस या मद्य सेवन से और व्यायाम के अभाव से यकृत् में उष्णता बढ़ जाती है तथा पित्त की अधिक उत्पत्ति होकर शूल उत्पन्न हो जाता है। कभी नित्य बने रहने वाले मलावरोध के कारण अथवा शीतल एवं गुरु आहार सेवन से या बर्फ आदि के अतिसेवन से अथवा दौड़ने-घूपने के बाद पसीना सूखने से पूर्व जल पी लेने के कारण यकृत् में शीत का प्रभाव अधिक हो कर अधिक कफ उत्पन्न हो जाता है जो पीड़ा का हेतु होता है।

लक्षण--दक्षिण ओर की पर्शुकाओं के नीचे यकृत् के स्थान पर अकस्मात् तीव्र शूल होता है, जो पीड़न से अधिक पर करवट बदलने से किसी भाँति न्यून हो जाता है। इसी कारण रोगी करवटें बदलता और चिल्लाता है एवं पीड़ा की अधिकता से व्याकुल हो जाता है। मिचली होती है। उबकाइयां आती हैं। कभी हिचकी आती हैं तथा मलावरोध हो जाता है। चेहरा चिंतातुर और रोगी अशक्त हो जाता है। रह-रह कर वेदना के आवेग होते हैं। प्रत्येक आवेग के पश्चात् अंतिम कक्षा का दौर्बल्य हो जाता है। कभी तीव्र पीड़ा के कारण रोगी को मूर्च्छा आ जाती है। कभी-कभी हिचकियाँ इतनी अधिकता से आती हैं कि कष्ट की तीव्रता से रोगी की दशा बिगड़ जाती है। संपूर्ण शरीर शीतल एवं स्वेद से आक्लेदित हो जाता है। ये लक्षण कुछ घंटा और कभी-कभी कुछ दिन तक रहते हैं। इसके पश्चात् लक्षण कम हो जाते हैं।

उष्णता के कारण हो तो यकृत् के स्थान पर दाह भी प्रतीत होता है। मूत्र का वर्ण लाल या पीला हो जाता हैं। तृष्णा की तीव्रता हो, तो और रोगी को तीव्र ज्वर भी हो जाता है।

यदि शीत के कारण हो तो आरम्भ में मन्द-मन्द पीड़ा होती हैं। कुछ काल तक यह दशा रहने के उपरान्त विरेक भी होने लगते हैं। ओष्ठ और जिह्वा का वर्ण सफेदी-मायल हो जाता है। चेहरे पर भुरभुराहट होती है और नेत्र के पपोटे फूले हुये होते हैं।

चिकित्सा--जिन द्रव्यों का उल्लेख यकृद्बलदायक औषधियों में किया गया है, अम्ल द्रव्यों को छोड़ कर वे सब इसमें भी लाभकारी हैं। क्योंकि अम्ल पदार्थ बलवर्धन के काम में तो आ सकते हैं, किंतु अकेले पीड़ा में लाभ नहीं करते।

पीड़ा के आवेग के समय रोगी को सुखपूर्वक शयन करायें, पीड़ास्थल पर

सेंक करें अथवा पोस्ते की डोडी को अर्क गुलाब में क्वाथ करके उससे कोष्ण सेंक करें और गुल बाबूना २ तोला, नाखूना, टेसू के फूल, सूखा मकोय, हंसराज प्रत्येक दो तोला सब को एक सेर जल में पका कर और मल-छान कर उससे कोष्ण परिषेक (नतूल) करें।

यदि शीत के कारण यह रोग हो तो सौंफ ७ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, इजखिर की जड़ ७ माशा, बिल्लीलोटन ७ माशा, सबको जल में उबाल-छानकर ४ तोला शुद्ध मधु डालकर आठ दिन तक पिलायें। इसके पश्चात् नवें दिन जब चार घड़ी रात्रि शेष रहे तब उठ कर हब्ब शबयार ७ माशा यथावश्यक गोघृत से स्नेहाक्त करके १२ तोला कुनकुना गरम किये हुये अर्क सौंफ से फँका कर शयन करा दें। सवेरे उक्त योग में तरंजीवन ४ तोला, बूरा (शकरसुर्ख) ४ तोला मिला कर और ७ माशा पिसा हुआ सनायमक्की के पत्र सम्मिलित करके पिलायें। आगामी दिन तबरीद (शीतजनन) का योग सेवन करायें। इसी प्रकार दो-तीन विरेचन देने से रोग जाता रहता है, विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् कुर्स खुन्सुल्हदीद १ गोली ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ७ माशा माजून दबीदुल्वर्द में मिलाकर खिलायें और ऊपर से सौंफ ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सूखा मकोय ३ माशा, अर्क बिरंजासिफ ६ तोला और अर्क सौंफ ६ तोला में पीसकर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलायें, बलवृद्धि के अर्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाला ५ माशा, हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला, हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला, शर्बत बजूरी ४ तोला के साथ सेवन करायें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद ३-३ गोली खिला दिया करें या नौसादर विद्रुत ५-५ बिंदु जल में मिला कर पिला दिया करें और कबिदी २ गोली भोजनोत्तर खिलाना भी लाभकारी है।

यदि ऊष्माधिक्य से हो तो गुल बनफ्शा ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, कासनी के बीज ७ माशा, अधकुटा खीरा-ककड़ी के बीज ७ माशा, गावज़बान ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, अधकुटा गोखुरू ७ माशा, सब को रात्रि में उष्ण जल में भिगो कर सवेरे मल-छान कर ४ तोला सिकंजबीन बजूरी मिला कर एक सप्ताह तक पिलायें। विरेचन की आवश्यकता हो तो आठवें-नवें दिन इसमें सिकंजबीन मिलाकर शेष ओषधियों के साथ पुरानी इमली ५ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, तुरंजबीन ४ तोला, शीरखिस्त ४ तोला, गुलकन्द ४ तोला, ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा, बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला योजित करके विरेचन देवें। आगामी दिन तबरीद का योग सेवन करायें। मलावरोध हो तो आलूबोखारा ५ दाना, इमली ४ तोला जल में उबाल कर ४

तोला गुलकन्द मिला कर पिलायें। तृषा शमनार्थ आलूबोखारा ५ दाना ६-६ तोला अर्क कासनी और अर्क नीलूफर में भिगो कर ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर थोड़ा-थोड़ा पिलावें।

हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी शीतल और उष्ण उभय प्रकार के यकृच्छूल में लाभकारी है। शैखुर्रईस का कथन है कि कासनी प्रत्येक दशा में यकृत की प्रकृति से अनुकूलता रखती है।

आराम होने के पश्चात् बलवृद्धि के लिये मुफर्रेह बारिद ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल या दवाउल्मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरए, उन्नाब वाला या जुवारिश अनारैन या खमीरा मरवारीद में से कोई एक औषधि ६-६ तोला अर्क बिरंजासफ और अर्क गावजबान में शर्बत नीलूफर या शर्बत अनार शीरीं २ तोला मिला कर इसके साथ सेवन करायें।

टि०—इन उपायों से लाभ न हो, तो यकृद्दौर्बल्य में उल्लिखित उपाय काम में लावें।

अपथ्य—मांस, अंडा, मछली, मधुर एवं स्निग्ध आहार से तथा बर्फ और चावल के अतिसेवन से परहेज करें। इस में भिंडी, आलू, अरवी, कचालू, उड़द की दाल और सान्द्र पदार्थ अहितकर होते हैं।

पथ्य—हरी तरकारियाँ, साग-पात, ताजे फल, पतले और शीघ्रपाक आहार सेवन करायें। केवल विरेचन के दिन अपराह्नकाल में सिवाय मूँग की नरम खिचड़ी के और कोई आहार नहीं देवें।

३—वरमुल् कबिद, इजमुल् कबिद

नाम—(अ०) वरमुल् कबिद ; (उ०) वरम जिगर ; (सं०) यकृच्छोथ (अं०) हीपेटायटिस (Hepatitis)।

(अ०) इज़्मुल्कबिद ; (उ०) इज़्म जिगर ; (सं०) यकृद्वृद्धि ; (अं०) एन्लार्जमेंट ऑफ लिवर (Enlargement of Liver)।

इस रोग में यकृत् के भीतर शोथ (सोजिश) या विकार उत्पन्न हो कर साधारणतया यकृत् का आयतन (हजम) बढ़ जाता है और अन्य विशिष्ट लक्षण प्रगट हो जाते हैं। ज्ञात हो कि यकृत् भी एक ऐसा उत्तम और कोमल अंग है जो न अधिक शीत सहन कर सकता है और न अधिक उष्णता। यदि विलीनी भवन का प्रभाव किंचित् अधिक पहुँच जाय तो रोग के साथ-साथ शक्तियाँ भी नष्ट हो जाती हैं। यदि किंचिन्मात्र भी आवश्यकता से अधिक संग्राही औषध का उपयोग किया जाय तो इसमें तत्क्षण काठिन्य उत्पन्न हो कर

चिकित्सा से एक सीमा तक उदासीन कर देती है। अतएव इसकी चिकित्सा में परम सावधानी अपेक्षित है।

हेतु––मांस या गरम मसाला आदि का अति सेवन, अति भोजन तथा अति मद्यसेवन, यकृत् पर अभिघात लगना, मधुर और स्निग्ध पदार्थ का अति सेवन, शरीर में रक्त या पित्त की अधिक उत्पत्ति, कभी-कभी गुरु एवं सान्द्र आहारों के अति सेवन से अथवा ज्वर की तीव्रता में अति जल-सेवन से यकृत् में अधिक कफ उत्पन्न होकर शोथ उत्पन्न कर देता है। कभी ज्वरोत्तर प्लीहावृद्धि या प्लीहा में सौदा के प्रभूत संचय से भी यकृत् में कठिन शोथ उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण––यदि शोथ केवल यकृत् के आवरण में हो तो यकृत् के स्थान पर पीड़ा होगी, श्वास कृच्छ्रतापूर्वक आयेगा तथा यकृत् की क्रिया में किसी प्रकार का विकार नहीं होगा। पर जब यकृत् में भी शोथ हो तब ज्वर होगा और दक्षिण ओर की पर्शुका के नीचे यकृत् के स्थान पर शोथ प्रतीत होगा और पीड़नयुक्त पीड़ा होगी। श्वास लेने से पीड़ा में वृद्धि होगी। यदि शोथ यकृत् के नतोदर भाग में हो, तो रोगी को मलावरोध होगा, हिचकियाँ आयेगीं, हस्त-पाद शीतल होंगे और कभी-कभी मूर्च्छा भी होगी। यदि उन्नतोदर (उथले) भाग में शोथ हो, तो खाँसी होगी और श्वास कठिनतापूर्वक आयेगा। कभी-कभी मूत्रावरोध भी हो जाता है। यदि शोथ नतोन्नतोदर उभय पार्श्व में हो, तो अत्यंत भंयानक एवं सांघातिक लक्षण है। यदि रक्त या पित्त की अधिकता से हो, तो उक्त लक्षणों के साथ-साथ चेहरे पर भुरभुराहट होगी तथा जिह्वा का वर्ण श्वेत होगा। पादशोथ होगा, तृष्णा कम होगी और मन्द-मन्द ज्वर होगा। नेत्र के पपोटे फूले हुये होंगे। कठिन शोथ में इनके अतिरिक्त यकृत् के स्थान पर टटोलने से यकृत् में कठिनाई भली-भाँति लाक्षित होती है।

चिकित्सा––रक्तज और पित्तज अर्थात् उष्ण यकृत् शोथ में जिसमें तीव्र ज्वर, अति तृष्णा और यकृत् के स्थान पर लालिमा और दाह होता है। यदि रोगी बलवान् हो तो बासलीक सिरा का वेधन करें अथवा यकृत् के स्थान पर कुछ जोकें लगवायें। यदि शोथ उन्नतोदर हृदय (अर्थात् उथले भाग) में हो, जो कास एवं कृच्छ्रश्वास से पहिचाना जाता है, तो सिरा वेधोत्तर मूत्रल औषधियों का उपयोग करायें। यदि मलावरोध हो तो साथ ही तन्निवारक कोई मृदुसारक औषधि भी देते रहें। किन्तु विरेचन कदापि नहीं देवें। सुतरां हरी कासनी और हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४–४ तोला, ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें। यदि अधिक शांति अपेक्षित हो तो कुर्स ज़रिश्क ४ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी

४ तोला और हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला, ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलायें। मलावरोध हो तो उक्त शर्बत के स्थान में खमीरा बनफ्शा ४ तोला मिलाकर पिला दिया करें।

जब रक्तज या पित्तज शोथ यकृत् के नतोदर भाग में हो पीड़ा दाह, ज्वर और यकृत् में गौरव के साथ मवालावरोध, हिक्का, उबकाई या वमन और कभी मूर्च्छा एवं हस्त-पाद की शीतलतायें विकार होते हैं। उक्त अवस्था में सिरावेध या जलौकावचारण के पश्चात् मृदु-सारक और विरेचन द्वारा दोष का शोधन करना चाहिये। सुतरां गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, कासनी के बीज ७ माशा, सूखा मकोय ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः मल-छानकर हरी कासनी और हरा मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४-४ तोला योजित करके ४ तोला गुलकंद मिलाकर आठ दिन तक पिलायें। नवें दिन इसी योग में ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), तरंजबीन ४ तोला, शीरखिश्त ४ तोला, इमली ६ तोला योजित करके सेवन करायें। (तलय्यिन) के दिन हरी कासनी और हरे मकोय का रस इसमें सम्मिलित न करें। दूसरे दिन तबरीद (शीतजनन) का यह योग देवें। दवाउल् मिस्क बारिद ५ माशा प्रथम खिलाकर ऊपर से उन्नाब ५ दाना, कासनी के बीज ५ माशा, खीरा-ककड़ी के बीज ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा अर्क बिरंजासिफ ६ तोला और अर्क मकोय ६ तोला में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ५ माशे समचे रैहाँ के बीज का प्रक्षेप देकर पिलायें। एक-एक दिन के अन्तर से यथापेक्षित २-३ विरेचन देवें। विरेचन से निवृत्त होने के पश्चात् हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला, हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४ तोला, शर्बत बजूरी ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलाते रहें और बलबर्धनार्थ खमीरा आब-रेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा, या दवाउल् मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा या नोशदारूए लूलुवी ५ माशा अर्क बिरंजासिफ १२ तोला में २ तोला मिश्री मिलाकर इसके साथ खिला दिया करें। उष्ण शोथ के आरम्भ में लाल चंदन, कासनी के बीज, गुलाब के फूल, जौ का आटा और गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा यथापेक्षित हरे मकोय के रस में पीसकर १ तोला गुलरोगन और १ तोला शुद्ध सिरका मिलाकर यकृत् के स्थान पर लेप करायें। तीन दिन के उपरान्त इसमें शोथविलयन औषधियाँ, जैसे अमलतास का गूदा ९ माशा, गुल बाबूना, गेरू, खतमी के बीज, गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा प्रभृति योजित करें।

जब शोथ कफजन्य एवं उन्नतोदर यकृत् में हो तब गुलबनफ्शा ७ माशा,

अफसंतीन ५ माशा, बिरंजासिफ ५ माशा, सौंफ की जड़ ७ माशा, सूखा मकोय ७ माशा, गुलाब के फूल, कासनी के बीज, कुसूस के बीज प्रत्येक ५ माशा पोटली में बंधा हुआ रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर और हरी कासनी का फाड़ा हुआ रस ४ तोला और हरे मकोय का फाड़ा हुआ रस ४ तोला योजित कर पिला देवें। यदि कास हो तो कासनी और मकोय के रस के बिना उक्त योग में ५ माशा छिली हुई मुलेठी की योजना करके पिलायें। यदि कफज शोथ नतोदर यकृत् में हो तो निम्न योग कुछ दिन दोषपाचनौषध की भांति सवेरे पिलायें--गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, गावजबान, सूखा मकोय, बिरंजासिफ अफसंतीन प्रत्येक ५ माशा, इजखिरमूल ७ माशा, अनीसून और कुसूस के बीज प्रत्येक ५ माशा पोटली में बंधा हुआ रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिला दिया करें। दूसरे समय अपराह्ण काल में सौंफ, सूखा मकोय ५-५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना १२ तोला अर्क बिरंजासिफ में पीस-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। सात दिन (सप्ताह) तक यह योग, औषध मिलाकर आठवें दिन प्रातः कालीन योग में ६ माशा रेवंदचीनी योजित करके रात्रि में भिगो देवें और सवेरे ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरंजबीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ४ तोला शीरखिश्त और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिला देवें। एक-एक दिन के अन्तर से तीन विरेचन देवें। अवकाश के दिन तबरीद (शीतजनन) का योग पिलायें और शोथ के स्थान पर बोल (मुरमुकी), अफसंतीन, बिरंजासिफ, नागरमोथा, बालछड़, नाखूना, सूखा मकोय, बाबूना के फूल प्रत्येक ६ माशा, जदवार ३ माशा, रसवत ३ माशा यथापेक्षित हरे मकोय के रस में पीसकर कुनकुना लेप करायें। विरेचनों के उपरांत २०-२२ दिन निरंतर यह औषधि पिलावें--अफसंतीन ७ माशा, नौसादर ४ रत्ती जल में पीसकर अग्नि के ऊपर रखें। जब कासनी एवं मकोय के रस की भांति फटकर हरियाली पृथक् हो जाय, तब छानकर एक वेला पिलायें। दूसरे वेला माजून दबी दुल्वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुम ३ माशा प्रथम खिलाकर हरी कासनी और हरे मकोय के रस का फाड़ा हुआ पानी ४-४ तोला, शर्बत बज़ूरी ४ तोला मिलाकर पिला दिया करें। भोजनोत्तर हब्ब कबिद नोशादरी ३-३ गोली खिला दिया करें या कबिदी २-२ टिकिया खिला दिया करें।

जब शोथ चिरकारी हो जाय और ज्वर भी रहता हो तब ज्वरनिवारणार्थ बिरंजासिफ, शुकाई और बादावर्द प्रत्येक ३ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर

प्रातः छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी या २ तोला शर्बत वनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और सायंकाल सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा मकोय ३ माशा, अर्क बिरंजासिफ ६ तोला, माउल्लहम मकोय कासनीवाला ६ तोला में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें और जब शोथ कठिन (सलिव) हो जाय तब सौदा के शोधनार्थ प्रथम यह पाचनौषध पिलायें—कासनी के बीज ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, पित्तपापड़ा ७ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा, गुल-बनफशा ७ माशा, सूखा मकोय, सौंफ, कासनीमूल प्रत्येक ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलायें। पंद्रह दिन तक यह औषधि पिलाकर सोलहवें दिन इसी योग में ७ माशा सनाय मक्की और मिलाकर रात्रि में भिगो देवें और सवेरे मल-छानकर अमलतास का गूदा ५ तोला, गुलकंद ४ तोला, तरंजबीन ४ तोला, ५ दाने बादाम की गिरी का शीरा मिलाकर विरेचन देवें। एक-एक दिन के अंतर यथा पेक्षितसे ३-४ विरेचन देने चाहिये। अवकाश के दिन उपरिलिखित तबरीद का योग दिया जाय। संशोधनोपरांत बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहर वाली ५ माशा या माजून दबीदुल् वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुम कबीर ३ माशा खिलाकर अर्क माउल्लहम मकोय कासनीवाला ६ तोला, अर्क विरंजासफ ६ तोला, शर्बत बजूरी मोतदिल ४ तोला या सिकंजबीन ४ तोला मिलाकर पिला दिया करें। यकृत् के स्थान पर यह लेप लगायें—अफसंतीन रूमी, गूगल, नाखूना, गुलाब के फूल प्रत्येक ६ माशा बाल-छड़, रूमी मस्तगी, पीत एलुआ ३–३ माशा, बाबूना के फूल ६ माशा, चिरायता ६ माशा सबको कूट-छानकर हरे मकोय के रस में पीसकर गरम करके लेप कर लिया करें। यदि कठोरता अधिक हो, तो १ तोला सफेद मोम या १ तोला गुलरोगन और मिलाकर लगायें।

यदि दोष संचित हो जाय और पीव पड़ने के लक्षण प्रगट हों अर्थात् पीड़ा, ज्वर और समस्त उपद्रवों में तीव्रता उत्पन्न हो जाय और मूत्र बिंदु-बिंदु करके आये तथा पृष्ठ एवं पार्श्व के बल लेटना कठिन हो जाय, तो समझ लेवें कि यकृत् में फोड़ा बन गया जिसको दुबैलतुल् कबिद (यकृद्विद्रधि—HepaticA bscess) कहते हैं। इसका उपक्रम वही है जिसका वर्णन वर्मे मेदा (आमाशय शोथ) में किया गया है।

टि०—जब यह रोगी चिरकारी हो जाय तब ४ तोला शर्बत बजूरी के साथ ७ तोला ऊँटनी का दूध पिलाने से कुछ दिन में लाभ हो जाता है। इस रोग में यदि विरेक होने लगे तो हरे बारतंग का रस ५ तोला हरे मकोय के रस की भाँति फाड़कर २ तोला रुब्ब बीही मिलाकर पिलाने से भी लाभ होता हैं।

अपथ्य--समस्त मधुर एवं स्निग्ध पदार्थों से परहेज करायें, रक्तज और पित्तज शोथ में मांस, गरम मसाला, लाल मिर्चा, वेंगन, मछली, अंडा, मेथी का साग, लहसुन, प्याज, अरवी, कचालू, चाय, मक्खन, दूध, दही, खरबूजा, गुड़-तेल के बने पदार्थों के खान-पान तथा परिश्रम करने से बचें।

कफज शोथ में आलू, प्याज, तुरई, टिंडा, कद्दू, ककड़ी, कुलफा, नीबू, दूध, दही, मक्खन, मलाई और ऋतु फल जैसे आम, जामुन, अमरूद, तरबूज, खरबूजा आदि से परहेज करें। कठिन शोथ में कचालू और मांस की बोटी नहीं खायें। अरवी, आलू, भिंडी और चने-मसूर की दाल, बर्फ और शीतल जल से परहेज करें।

पथ्य--पित्तज और रक्तज शोथ में भोजन अत्यल्प प्रमाण में देवें और यवमंड या साबूदाना या खीरा--ककड़ी की खीर के सिवाय अन्य कोई आहार नहीं देवें। यदि क्षुधा अधिक प्रतीत हो तो पालक उबालकर उसके पानी में रोटी का बकला डालकर खिलायें। रोग निवृत्त होने के उपरान्त शीतल पदार्थ कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, खश की खिचड़ी, अनार, अंगूर, सेब, नाशपाती आदि देवें। कफज शोथ में रोगकाल में थोड़ी मात्रा में निम्नोक्त आहार देवें--

साबूदाना की खीर या चणक-जल या अरहर की दाल के यूष में गरम मसाला मिलाकर पिलायें। मकोय और कासनी के पत्तों का भुजिया बनाकर चपाती के बकला से खिलायें। रोग निवृत्ति के पश्चात् मुर्गा, तीतर और बटेर का शूरबा गरम मसाला डालकर देवें। कठिन शोथ में मुर्गी का बच्चा, तीतर या बकरी का शूरबा चपाती के साथ खिलायें। किन्तु अल्प प्रमाण में देवें। समस्त भेदों में विरेचन के दिन सिवाय मूंग की नरम खिचड़ी के अन्य कोई आहार नहीं देवें।

--०--

४—सूउल्किन्यः व इस्तिस्काऽ

नाम--(अ०) सूउल्क़िन्यः, इस्तिस्काऽ लहमी (आम); (सं०) सर्वांग शोथ; (अं०) ऐनासारका (Anasarca)।

--(अ०) इस्तिस्काऽ; (उ०) जलंधर; (सं०) शोफ; (अं०) ड्रॉप्सी (Dropsy)।

--(अ०) इस्तिस्क़ाऽ जिक्क़ी; (उ०) पेट में पानी पड़ जाना, (सं०) जलोदर; (अं०) ॲसाइटीज (Ascites)।

वक्तव्य—इस रोग में प्रथम यकृत् दुर्बल होता है और यकृद्दौर्बल्य के लक्षण प्रगट होते हैं। इस रोग में प्राचीन यूनानी वैद्यों के मत से यकृत् अपने दौर्बल्य

या विप्रकृति या अन्यान्य अंगजात विकार के अनुबन्ध से शुद्ध रक्त उत्पन्न नहीं कर सकता। इसी अनुबन्ध से इसको प्रथम **सूउल्क़िन्य:** (सूऽ=विकार, क़िन्य:=पूँजी अर्थात् शरीर या यकृत् की पूँजी--रक्त का दूषित हो जाना) कहते हैं। यह अवस्था इस्तिस्क़ाऽ रोग की पूर्व पीठिका या भूमिका (पूर्वरूप) होती है। पुनः जब इस प्रकार उत्पन्न दूषित रक्त धातुओं के पोषण में काम आने के अयोग्य एवं सम्यक्तया शोषित नहीं होता और अंगों के मध्य ठहरकर संचित हो जाता है तब उक्त अवस्था को **इस्तिस्क़ाऽ** कहते हैं। इसके निम्न भेद होते हैं—

(१) जब दुष्ट भूत श्लैष्मिक दोष समस्त शरीर के अंग-प्रत्यंग में व्याप्यमान हो जाता है तब उसे **इस्तिस्क़ाऽ लहमी** कहते हैं। (२) जब द्रव उदर गुहाओं में भर जाता है और उदर बढ़ जाता है तब उसे **इस्तिस्क़ाऽ ज़िक़्क़ी** कहते हैं। (३) जब द्रव अल्प और सांद्रीभूत होता है और उससे वायु उत्पन्न होकर उदरावकाशों में भर जाता है तथा जिक्की की-सी अवस्था उत्पन्न हो जाती है तब उसे **इस्तिस्क़ाऽ तबली** कहते हैं। आयुर्वेद का यह 'वातोदर' ज्ञात होता है।

हेतु--स्त्री सहवास के तुरत बाद शीतल जल या बर्फ पी लेने या धूप में मार्ग चलकर आते ही शीतल जल पीने से अथवा व्यायाम और परिश्रम के पश्चात् स्वेद शुष्क होने से पूर्व जल पीने या बर्फ और शीतल जल अति सेवन अथवा शीतल-स्निग्ध पदार्थों के अति सेवन से यकृत् दुर्बल होकर प्रचुर कफ उत्पन्न करता है। और यह कफ जो अभी आम और अपक्व आहार के रूप में होता है और अंगों के पोषण की योग्यता नहीं रखता, संपूर्ण शरीर में व्यापमान होकर शरीर के स्रोतों में प्रवेशित होकर सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्क़ाऽ लहमी) उत्पन्न करता है। कभी-कभी इन्हीं कारणों से आहार दूषित होकर द्रव रूप में परिवर्तित हो जाता है और यकृत् से नाभि की ओर जाकर उदरावकाशों में भर जाता है, जिसको इस्तिस्क़ाऽ ज़िक़्क़ी (जलोदर) कहते हैं। कभी इन्हीं हेतुओं से सांद्रीभूत द्रव उत्पन्न होकर उससे बाष्प उठते हैं और उदरावकाश में भरकर वायु का रूप ग्रहण करते हैं जिनसे उदर स्फीत हो जाता है और जिसको इस्तिस्क़ाऽ तब्ली (वातोदर) कहते हैं।

लक्षण--इस्तिस्क़ाऽ लहमी में संपूर्ण शरीर फूल जाता (सशोफ) है। शरीर पर शोथ जैसा प्रतीत होता है। इसको हाथ से स्पर्श करने पर वह कोमल और ढीला मालूम होता है। शरीर के किसी स्थान पर उंगली रख कर पीडन करने से गर्त बन जाता है और उंगली हटाने के कुछ देर बाद पुनः गर्त नष्ट होकर शरीर यथापूर्व हो जाता है। मूत्र गाढ़ा होता है और उसका वर्ण श्वेत हो जाता है। मल प्रमाण में अधिक और मृदु आता है। तृष्णा कमी के साथ लगती है। इस्तिस्काऽ ज़िक़्क़ी (जलोदर) में समस्त शरीर ढीला

होकर सूख जाता है। उदर बहुत बढ़ जाता है। उदर की त्वचा बहुत चमकीली हो जाती है और काच की भांति चमकती है। करवट बदलने से उदर में जल के छलकने का-सा शब्द होता है। नाड़ी अत्यंत दुर्बल (जईफ) हो जाती है। श्वास कृच्छ्रता पूर्वक आता है। दीर्घकाल तक यह रोग रहने के पश्चात् हस्त-पाद पर शोथ आ जाता है। मूत्र अल्प प्रमाण में आता है। इस्तिकाऽतबली (वातोदर) में उदर फूला हुआ (स्फीत) होता है। श्वास लेने में कष्ट होता है। परंतु जलोदर की अपेक्षया इसमें बोझ कम मालूम होता है। उदर में खिचावट और तनावट होती है। यदि उदर को हाथ से ठोंका जाय तो ढोलवत् शब्द होता है। उद्गारों के द्वारा या नीचे से कुछ अपान वायु के खुलने पर आराम मालूम होता है और खिचावट में किसी भांति कमी हो जाती है। इस भेद में अन्य भेदों की अपेक्षया हस्तपाद पर शोथ एवं भुरभुराहट कम होती है।

चिकित्सा--रोगारम्भ में रोगी को कसौंदी के पत्र १ तोला और काली मिर्च ५ दाना पानी में पीस-छानकर सवेरे पिलायें अथवा सवेरे ऊँटनी का दूध ७ तोला गुलकंद ४ तोला मिलाकर प्रथम तीन दिन तक इसी मात्रा में पिलायें। इसके उपरान्त एक-एक तोला दूध प्रति दिन उत्तरोत्तर बढ़ाकर ४१ तोला तक पहुँचायें। पुनः इसी प्रकार एक-एक तोला प्रति दिन घटाकर प्रथम मात्रा (७ तोला) तक पहुँचायें और तीन दिन तक इसी मात्रा में पिलाकर इसका परित्याग करायें। सायंकाल माजून दबीदुल्वर्द ७ माशा खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना ६-६ तोले अर्क सकोय और अर्क विरंजासिफ में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला गुलकंद मिलाकर पिलायें। यकृत् की उष्णता (तस्खीन) और प्रकृति साम्यानुवर्तन के लिये गुलगाफिस ५ माशा, गुठली निष्कासित मुनक्का ९ दाना, सौंफ, खरबूजा के बीज, कासनी के बीज, कासनी की जड़ ७-७ माशा, कुसूस के बीज ५ माशा (कपड़े में बंधा हुआ)--सबको रात्रि में जल में भिगोकर सवेरे मल-छानकर शर्बत दीनार ४ तोला और हरी कासनी, हरे मकोय और हरा कुकरौंधा इनके स्वरस का फाड़ा हुआ पानी ४-४ तोला मिलाकर पिलायें और यह लेप लगायें--अमलतास का गूदा ९ माशा और बाबूने का फूल, नाखूना, वालछड़, नागरमोथा, रेवंद चीनी प्रत्येक ६ माशा सबको यथावश्यक हरे मकोय के पत्रस्वरस में पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करें।

यदि शोथ के साथ उष्णता भी हो तो कुर्स जरिष्क ४।। माशा खिलाकर ऊपर से हरी कासनी और हरे मकोय के फाड़े हुए रस का ४-४ तोला पानी और ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें। यदि इन उपायों से लाभ

न हो और संशोधन अपेक्षित हो तो पाचन औषधि पिलाकर उष्ण विरेचन से शोधन करें। सुतरां सर्वाङ्ग शोथ (इस्तिस्काऽ लहमी) में निम्नलिखित पाचन औषधि पिलायें--सूखा मकोय ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, हंसराज ७ माशा, गुलगाफिस ५ माशा, सौंफ ७ माशा, खीरा-ककड़ी के बीज ७ माशा, ५ माशा कुसूस के बीज पोटली में बंधे हुये, छिली हुई मुलेठी ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर, प्रातः मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफशा या ४ तोला गुलकन्द असली मिलाकर आठ दिन तक पिलायें। नवें दिन इन ओषधियों के साथ अगर ५ माशा, मस्तगी ३ माशा, दालचीनी ५ माशा, सनाय मक्की ७ माशा अधिक मिलाकर भिगोयें। प्रातः इसमें ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला शीरखिश्त, ४ तोला तरंजबीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा और मिलायें और छानकर पिलायें। दूसरे (आगामी) दिन शीतजनन (तबरीद का) योग सेवन करायें। तीन विरेचन देने के उपरांत दावउल् कुर्कुम कबीर ५ माशा सेवन कराके ३ माशा कुसूस के बीज, ५ माशा सौंफ, ३ माशा सूखा मकोय, १२ तोला अर्क बिरंजासिफ में पीसकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन पिलाते रहें। जलोदर (इस्तिस्काय ज़िक्की) में भी ये ही उपाय प्रयोग में लेवें और माजून तुर्बुद ७ माशा मिलाकर (प्रातः) ऊपर से ८ तोला अर्क वीख कासनी २ तोला शर्बत असारून में मिलाकर प्रातः सायंकाल पिलायें और हब्ब इस्तिस्काऽ २ गोली रात्रि में सोते समय खिला दिया करें। शोधन अपेक्षित हो तो उपरि लिखितानुसार ३-४ विरेचन देवें। तदुपरांत दवाउल् कुर्कुम कबीर ५ माशा खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और अनीसून ३ माशा ६-६ तोला अर्क बादियान और अर्क बिरंजासिफ में पीस-छानकर ४ माशा खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि मलावरोध हो तो खमीरा बनफ्शा के स्थान में ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिला दिया करें और भेड़ की पुरानी मींगनी, नागरमोथा, नाखूना, गुल बाबूना, सूखा मकोय, अफसंतीन, बूरए अरमनी, मर्जञ्जोश, बिरंजासिफ, बोल (मुरमक्की) प्रत्येक ६ माशा, जुंदबेदस्तर ६ माशा समस्त द्रव्यों को हरे मकोय के रस में पीसकर सिरका मिलाकर उदर के ऊपर लेप करें और गंधक बूरए अरमनी, सेंधा नमक प्रत्येक ६ माशा जल में उबालकर गरम-गरम पानी से स्नान करायें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो किसी चतुर डाक्टर से टेंपिंग के द्वारा पानी निकलवायें, किन्तु समस्त जल एक ही बार न निकलवायें, प्रत्युत् कई बार थोड़ा-थोड़ा करके निकलवायें।

इस्तिस्काऽ तबली (वातोदर) में प्रातःकाल वही योग दिया जाय जिसका उल्लेख सर्वांग शोथ (इस्तिस्काऽ लहमी) में हो चुका है। किन्तु इसमें अनीसून

५ माशा, दालचीनी अधकुटा (यव कुट किया हुआ) और स्याह जीरा ५-५ माशा बढ़ा देवें। सायंकाल सौंफ ५ माशा, अनीसून ३ माशा, स्याह जीरा ३ माशा, सोंठ ३ माशा, इलायची का दाना ३ माशा ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क पुदीना में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिला दिया करें तथा सूखा बाजरा, सेंधा नमक और रेतबालू तीनों सम भाग लेकर कपड़े की पोटली में बांधकर गरम करके उदर के ऊपर टकोर किया करें। तदुपरांत गुलबाबूना, नाखूना, सुदाबपत्र, ऊदबलसाँ, तज प्रत्येक ६ माशा, जुंदवे दस्तर ३ माशा, सिलारस २ माशा सबको कूट-छानकर यथावश्यक रोगन बाबूना मिलाकर पीसकर कुनकुना गरम करके लेप कर दिया करें। आठ दिन औषधि मिलाने के पश्चात् यथा विधि विरेचन देवें और आगामी दिन तबरीद (शीत-जनन वा ठंढाई) के स्थान में इस योग का उपयोग करें--दवाउल् मिस्क मोतदिल ७ माशा प्रथम खिलाकर सौंफ ५ माशा, उन्नाब ५ दाना ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें। तीन विरेचनों के पश्चात् यदि अपेक्षित हो तथा ज्वर न हो तो उपरि लिखित विधि के अनुसार ऊँटनी का दूध पिलाना प्रारंभ कर देवें। विरेचनों से छुट्टी पाने के पश्चात् बलवर्धनार्थ माजून दबीदुल्वर्द ७ माशा या दवाउल् कुर्कुम कबीर ५ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा या जुवारिश जालीनूस ७ माशा एक टिकिया खुब्सुल्हदीद (मण्डूर भस्म) मिलाकर खिला दिया करें। ऊपर से अर्क बिरंजासिफ १० तोला या अर्क मकोय १२ तोला शर्बत बनफ्शा २ तोला या शर्बत बजूरी ४ तोला मिलाकर पिला दिया करें। कभी-कभी पांडुजन्य शोथ (औराम इस्तिस्काऽ) को उतारने के लिये १ तोला सोंठ का चूर्ण रात्रि में मिट्टी के कोरे पात्र में जल में भिगो देते हैं और प्रातःकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर पिलाते हैं। जब इसके ऊष्मा भी हो तब इसी गुण के लिये १ तोला देशी अजवायन उसी प्रकार रात्रि में भिगोकर प्रातःकाल पानी निथारकर (जुलाल) पिलाने से भी उपकार होता है। इस रोग में ऊष्मा के लिये ४-४ तोला हरी कासनी और हरे मकोय के फाड़े हुये रस का पानी ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलाने से भी उपकार होता है। जब अत्यधिक विरेक होते हैं तब ४ तोले हरे बारतंग के फाड़े हुए रस का पानी में २ तोला रुब्ब विही मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। मलावरोध निवारण के लिये उसारारेवंद १ माशा ७ माशा माजून दबीदुल् वर्द में मिलाकर खिलाने और ऊपर से १२ तोले अर्क बिरंजासिफ में ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलाने से उपकार होता है। हस्त-पादशोथ में अफसंतीन ६ माशा, अफ्तीमून ६ माशा इनको यथावश्यक हरे मकोय

के रस में पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करने से उपकार होता है। ये योग भी लाभकारी है--बोल, पीला एलुआ, इन्द्रायन की जड़, सोंठ, अंबाहलदी, पीली हड़ का बक्कल, रेवंद चीनी, सफेद निशोथ प्रत्येक ६ माशा, सनाय मक्की १ तोला समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर घी कुवार के रस में गूंधकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बनायें। इसकी मात्रा एक गोली से ३ गोली तक है। इसमें से आवश्यकतानुसार देवें। हर प्रकार के शोथ (इस्तिस्काऽ) में लाभकारी है।

वक्तव्य--कतिपय स्त्रियों में इस रोग के साथ गर्भ का संदेह होता है। इसकी परीक्षा यह है कि शोथ वाली स्त्री की नाभि लौटी (उलटी) हुई होती है। किन्तु, गर्भवती की नहीं होती। शोथवाली स्त्री के लेटते समय जल उभय ओर कूल्हों में संचित हो जाता है, परंतु गर्भ में यह दशा नहीं होती। शोथ के प्रत्येक भेद में सिरावेध वर्ज्य (निषिद्ध) है। किन्तु स्त्रियों में मासिक स्राव अवरुद्ध हो जाने से यकृत् की विकृति होकर यह रोग प्रगट हुआ हो तो साफिन सिरा का वेध लाभकारी हो सकता है। जब यह रोग बालकों को हो जाय, तब चना के बराबर दालचीनी या गुंजा-प्रमाण निर्विसी लेकर शिशु की माता के दूध में घिसकर प्रातःसायं उभय काल शिशु के कण्ठ के भीतर चमचा से टपकाने से लाभ होता है। सर्वांगशोथ (इस्तिस्काऽ लहमी) में कास और पाँवों पर फोड़े-फुंसी निकल आना अरिष्ट सूचक है। यदि जलोदर (इस्तिस्काऽ जिक्की) में वृषणों तक शोथ हो जाय, तो यह कष्टसाध्य वा दुश्चिकित्स्य है। शोथ रोगी के मल में रक्त आने लगे तो यह भी एक अरिष्ट लक्षण है।

अपथ्य--जल के स्थान में रोगी को केवल अर्क मकोय एवं अर्क सौंफ पिलायें। कोई बादी, गुरु, दीर्घपाकी और स्निग्ध आहार खाने के लिये नहीं देवें। मीठे पानी से स्नान नहीं करायें। प्रारंभ में प्रातः सायंकाल भोजन से एक घण्टा पूर्व व्यायाम वा स्नान करायें।

पथ्य--उष्ण एवं रूक्ष पदार्थ अत्यल्प प्रमाण में आवश्यकतानुसार देना चाहिये। बकरी का शूरबा या यखनी गरम मसाला डालकर देवें। रोग-निवृत्त होने पर रोटी में सोडा और नमक मिलाकर शूरबा के साथ देवें। मुर्गा, तीतर, बटेर और चकोर आदि की यखनी बिना घी के गरम मसाला डालकर देवें। सिरका में पड़ा हुआ मूली का अचार, आदी और जीरा आदि मिली हुई पुदीना की चटनी देवें।

---o---

प्लीहा क्लोम रोगाध्याय (अमराज तिहाल व बानकरास) ३

१—यरकान

नाम--(अ०) यरकान ; (उ०) यरकान, पीलिया ; (सं०) कामला; (हिं०) कॅवल, काँवर ; (अं०) जॉन्डिस (Jaundice), इक्टेरस (Icterus)।

इस रोग में कभी चेहरा और नेत्र पीले या काले हो जाते हैं। कभी संपूर्ण शरीर तो कभी केवल नेत्र ही पीले या काले हो जाते हैं। रोगी के चेहरा का वर्ण. अप्रिय दर्शन हो जाने के अतिरिक्त और अनेकानेक विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं।

हेतु--कभी उष्ण एवं तीक्ष्ण पदार्थों के अतिसेवन या लू लगने से यकृत् में पित्त की अधिक उत्पत्ति होकर रक्त में मिल जाता है और नेत्र, मुखमण्डल तथा शरीर का वर्ण पीला कर देता है। कभी यकृत् या प्लीहा की वाहिनियों में अवरोध उत्पन्न हो जाने से पित्त या सौदा पित्ताशय एवं प्लीहा में नहीं जाते और रक्त के साथ मिलकर शरीर में व्यापमान होकर उसका वर्ण पीला या काला बनाते हैं। जब पित्त के कारण वर्ण पीला हो जाय तो उसे यरकान अस्फर और सौदा के कारण वर्ण काला हो जाय तब उसे यरकान असवद या यरक़ान सिंधी कहते हैं।

लक्षण--यरकान अस्फर में मूत्र पीला और यरकान अस्वद में स्याही मायल रंग का आने लगता है। पुनः नेत्र का वर्ण पीला हो जाता है। ओष्ठ, दन्त-वेष्ट, जिह्वा और त्वचा का वर्ण सूक्ष्म पीताभ या कृष्णाभ-भूरा हो जाता है। पाचन विकृत हो जाता है। मुख का स्वाद तिक्त हो जाता है। क्षुधा नहीं लगती। स्निग्ध एवं स्नेहाक्त आहारों से घृणा हो जाती है। उदराध्मान रहता है। उद्गार आते हैं। अवरोध (सुद्दा) के कारण पित्ताशय से पित्त का स्राव अन्त्रों में नहीं होता। अतएव मल का वर्ण मलिन एवं मटियाला होता है। बेचैनी, अनुत्साह, दौर्बल्य एवं प्रकृति विकार होता है। त्वक् कण्डू होता है। कभी-कभी फोड़े फुंसियां निकल आती हैं। कभी रोगी को प्रत्येक वस्तु पीली दिखाई देने लगती है। रोग पुराना होने पर अतीव दौर्बल्य या प्रलाप एवं आक्षेप आदि अरिष्ट लक्षण प्रगट होकर रोगी का अन्त कर देते हैं।

चिकित्सा—यदि केवल ऊष्मा के कारण यह रोग हो तो अनार, तरबूज, कद्दू, खीरा इनमें से प्रत्येक का ३–३ तोला रस ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर कुछ दिन पिलाने से लाभ होता है। इसी प्रकार १ तोला चने की भूसी रात्रि में गरम पानी में भिगोकर सबेरे ऊपर से निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर पिलाने से आराम हो जाता है। अथवा हरी मूली के पत्ते के फाड़े

हुये रस का पानी ७ तोला बूरा (शकर सुर्ख) ४ तोला मिलाकर पिलाने से भी अति शीघ्र आराम हो जाता है। उन्नाब और आलूबोखारा प्रत्येक ५ दाना कासनी के बीज ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, गुल नीलूफर ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगो कर सवेरे मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर हरे मकोय और हरी कासनी के फाड़े हुये रस का पानी ४-४ तोला अधिक मिला कर पिलाने से ऊष्मा एवं पित्तोद्वेग शान्त होता है।

यदि इन उपायों से लाभ न हो तो पाचन का निम्नलिखित योग पिलायें--गुलबनफशा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान, कासनीके बीज और खीरा-ककड़ी के अधकुटे बीज प्रत्येक ५ माशा, खतमी के बीज ७ माशा, गुलनीलूफर ५ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, अधकुटा गोखरू ७ माशा सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर आठ दिन तक पिलावें। नवें दिन ७ माशा सनाय मक्की और ५ तोला इमली इसी योग में और बढ़ाकर रात्रि में भिगो देवें और सवेरे मल-छानकर इसमें तरंजबीन, शीरखिश्त, बूरा (शकरसूर्ख) और गुलकंद प्रत्येक ४ तोला और मिलाकर पिलायें। आगामी दिन ठंढाई (तबरीद=शीतजनन) का यह योग देवें--खमीरा गावज़बान १ तोला, चाँदी के एक वरक में लपेट कर प्रथम खिलायें और ऊपर से उन्नाब ५ दाना, खीरा-ककड़ी के बीज ५ माशा, सौंफ ५ माशा, अर्क बिरंजासिफ १२ तोले में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत बज़ूरी या ४ तोला शर्बत बनफशा मिलाकर समूचे रैहां के बीज ५ माशा छिड़क कर पिलायें। इसी प्रकार आवश्यकतानुसार दो-तीन विरेचन देवें।

यरकान अस्वद् में यह दोष पाचन औषधि (मुंज़िज) पिलायें---कड़के बीज, सूखा मकोय, कासनी की जड़, सौंफ की जड़, करपस की जड़, अनीसून, फुक्काह इजखिर प्रत्येक ५ माशा, बाल छड़ ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना रात्रि में जल में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला सिकंजबीन बज़ूरी मिलाकर आठ दिन तक पिलायें। नवें दिन इसी योग में सनाय मक्की ७ माशा, अफसंतीन ५ माशा, रेवंद चीनी ५ माशा अधिक मिलाकर रात्रि में भिगों देवें और सवेरे अमलतास की गुद्दी ५ तोला, तरंजवीन ४ तोला, बूरा ४ तोला और ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा अधिक मिलाकर ४ तोला शर्बत दीनार डालकर पिलायें और दूसरे दिन ठंढाई (तबरीद) के स्थान में मुलेठी, सौंफ और अनीसून प्रत्येक ५ माशा जल में उबाल-छानकर ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर ५ माशा रैहाँ के बीज छिड़क कर पिलायें। तीन विरेचन देने के पश्चात् हरी कासनी और हरे मकोय के फाड़े हुये रस का पानी ४-४ तोला ४

तोला शुर्बत बज़ूरी मिलाकर कुछ दिन पिलायें या हरी मूली के पत्ते के फाड़े हुये रस का पानी ७ तोला ४ तोला बूरा मिलाकर पिलाते रहें और अर्क गुलाब तथा तीक्ष्ण सिरका समभाग मिलाकर आबनूस की सलाई से नेत्र में अंजन करते रहें अथवा बिजौरे का छिलका जल में पीस कर चाँदी की सलाई से नेत्र में लगायें। इससे नेत्र का पीलापन और मलिनता दूर हो जाती है। अथवा कलौंजी ७ दाना स्त्री के दूध में घिसकर नाक में टपकाने से भी नेत्र का पीलापन दूर हो जाता है। आराम होने पर बलवर्धनार्थ जुवारिश अनारैन ७ माशा या दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा या मुफर्रेह बारिद ५ माशा या खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाब वाला ५ माशा सेवन करायें।

वक्तव्य--मूली, संतरा, गंडेरी (ईख की), गाजर और लोकाट यरकान के लिये विशेष लाभकारी है।

अपथ्य--स्निग्ध एवं स्नेह पदार्थ, वादी एवं गुरु पदार्थ जैसे आलू, अरवी, भिंडी आदि सेवन न करें। उष्ण पदार्थ, जैसे लहसुन, प्याज और लालमिर्च के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--रोगारंभ में जब तक पाचन यथावत् न हो जाय लघु एवं शीघ्र पाकी आहार सेवन करायें। १० तोला यवमंड, ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिलाकर पिलायें या साबूदाना पकाकर खिलायें। रोग घटने पर मुर्गी के बच्चे या बकरी का शूरबा या चना का पानी चपाती के साथ देवें। विरेचन के दिन केवल मूंग की नरम खिचड़ी खिलायें। शाकों में से कद्दू, टिंडा, पालक आदि यथाभ्यास देवें।

---०---

२—इज़्म तिहाल व वरम तिहाल

नाम--(अ०) इज़्मुत्तिहाल, वरमुत्तिहाल; (उ०) तिल्ली का वरम (बढ़ जाना); (सं०) प्लीहोदर, प्लीहजठर, प्लीहावृद्धि; (अं०) एन्लार्जमेंट ऑफ दी स्प्लीन (Enlargement of the spleen), स्प्लीनाइटिस (Spleenitis)।

इस रोग में प्लीहा अपने स्वाभाविक आकार से अधिक बढ़ जाती है और उदर के बाईं ओर पर्शुकाओं के किनारे के नीचे दबाकर देखने पर उसकी प्रतीति हो सकती है।

हेतु और लक्षण--प्लीहाशोथ प्रायः कठिन हुआ करता है। इसके अनेक हेतु होते हैं। पित्त, कफ और सौदा के अतिरिक्त यह वायु (रियाह) से भी प्रगट हो जाया करता है। इस रोग का सबसे व्यक्त एवं प्रमुख लक्षण विकारी

स्थल का शोथयुक्त एवं कठिन हो जाना है। इसके अतिरिक्त अम्लोद्गार, हृदय की जलन, अम्ल वमन आदि भी इसके लक्षण हैं। उष्ण शोथ की दशा में प्रदाह (शोथ), तृष्णा, कृष्णाभ रक्तमूत्र, प्लीहा स्थान की उष्णता तथा वायु-जन्य शोथ (वरम रीही) की दशा में आटोप, लघुत्व और पीड़न करने से दब जाना आदि लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा--प्रथम कुछ दिन तक गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, करफ्स की जड़ ५ माशा, पीला अंजीर ३ दाना, मजीठ ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः मल-छान कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें। सायंकाल सौंफ ५ माशा, सूखा मकोय ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, ६ तोले अर्क मकोय और ६ तोले अर्क सौंफ में पीस-छानकर ४ तोले खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें और सुदाब के पत्र १० माशा, उशक ७ माशा, बूरए अरमनी ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा २ तोले शुद्ध सिरका में पीसकर गरम करके प्लीहा के स्थान के ऊपर लेप लगायें या जिमाद किवरीत सिरका में मिलाकर प्लीहा के स्थान पर लेप करें। भोजनोत्तर सफूफ निहाल २–२ माशा प्रातः सायंकाल खिलायें या हब्ब अश्खार २–२ माशा सेवन करायें। यदि इन उपायों से कुछ दिनों में लाभ न हो तो पक्ष भर प्रातःकालीन योग में इजखिर की जड़ ७ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, शुकाई ५ माशा, वादावर्द ५ माशा अधिक मिलाकर विरेचन की भाँति पिलायें। तदुपरान्त इसी योग में विरेचनार्थ सफेद निशोथ ७ माशा, सनाय मक्की ७ माशा, पीली हड़ का वक्कल १ तोला सम्मिलित करके रात्रि में भिगो देवें। सवेरे मल-छानकर इस में ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरंजबीन, ४ तोला बूरा, ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा और मिलाकर पिलायें। आगामी दिन ठंढई (तबरीद का योग) देवें। इसी प्रकार तीन विरेचन देवें और गेहूँ की भूसी, सोआ और अंगूर की लकड़ी की भस्म सब को महीन पीसकर अंगूरी सिरका में मिलाकर प्लीहा के स्थान पर लेप करें। यदि इससे लाभ न हो तो अंजरूत ६ माशा, कतीरा १ तोला, उशक २ तोला, जरावन्द मुदहरज १ तोला पुराने सिरका में खूब घोलकर मोटे कपड़े के ऊपर लेप करें और प्लीहा के स्थान पर चिपका देवें और जितना कपड़ा उखड़ता जाय, प्रतिदिन कैंची से काटते जायँ। विरेचनों के पश्चात् बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा में कुर्स फौलाद एक टिकिया मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ, सूखा मकोय और कासनी के बीज प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ६ दाना, ६-६ तोला अर्क गावजबान और अर्क विरंजासिफ में पीस

कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। भोजनोत्तर सवेरे-शाम विद्रुत गंधक ४-४ विन्दु जल में डालकर पिलायें।

वक्तव्य--मूली, एरण्ड कर्कटी (पपीता) और अंजीर इस रोग में विशेष उपकारी हैं। इनमें से किसी एक के भोजनोत्तर सेवन करने का अभ्यास करना बहुत ही गुणकारी है।

अपथ्य--स्निग्ध एवं स्नेह पदार्थ, मिठाई, सान्द्र पदार्थ आलू, अरवी, कचालू उड़द की दाल प्रभृति इस रोग में हानि पहुँचाते हैं। दूध और मक्खन का सेवन भी वर्जित है।

पथ्य--क्षुधा से कम तथा साधारण भोजन देवें। बकरी का शूरबा, चपाती और पुदीना की चटनी, सिरका में पड़ा हुआ मूली का अचार यथावश्यक देवें। राई १ तोला, सुहागा ६ माशा, नौसादर ३ माशा इनका चूर्ण बनाकर रखें और इसमें से २-२ माशा चूर्ण भोजनोत्तर चटावें। ऊँटनी का दूध पी सकते हैं।

अन्त्ररोगाध्याय (अम्राज अम्आऽ) ४

१--इसहाल।

नाम--(अ०) इसहाल, ज़रब; (उ०) दस्त, पेट चलना; (सं०) अतिसार; (अं०) डायरिया (Diarrhoea), लूजनेस आफ दी बॉवेल्ज (Looseness of the bowels)।

वक्तव्य--जब किसी कारण से क्षुद्रान्त्रों की क्रिया या रचना में विकार हो जाता है, तब उद्वेष्टनरहित जालवत् विरेक होने लगते हैं, जो कभी एक विशेष स्वरूप के और कभी विभिन्न वर्ण के होते हैं। इनका प्रमाण और मात्रा भी हेतु के अनुसार विभिन्न होती है। विरेक कभी अन्त्र के विकार से और कभी आमाशय एवं यकृत् तथा कभी मस्तिष्क आदि के विकार से भी होते हैं।

यूनानी वैद्यों ने अन्त्र, आमाशय और यकृत् इन तीनों के रोगों में अतिसार का उल्लेख किया है, क्योंकि अतिसार के हेतुओं में इन तीनों का अंतर्भाव होता है। यकृत् के अतिसार को **क़ियाम कबिदी** और तज्जन्य रक्तातिसार को **ज़ूसन्तारिया कबिदी** कहते हैं। यदि अन्त्र और आमाशय में भोजन का पचन न हो और पतले विरेक के रूप में निःसरित हो, तो उसे **ज़रब** और यदि पचन अपूर्ण हो या भोजन दूषित हो जाय और तीन-चार बार निर्हरण हो तो उसे **खिल्फ़ा** कहते हैं। कभी अन्त्र और आमाशय में विस्फोट (फुंसियाँ) आदि

उत्पन्न हो कर भोजन बिना पके या अम्ल पचन के बाद निःसरित हो जाता है, तब उसे ज़लकुल्मेदा या ज़लकुलअम्आऽ कहते हैं।

हेतु--गुरु, बासी, (पर्य्युसित), अधिक मसालेदार आहार सेवन या मांस और पके हुए फलों का अति सेवन, अन्त्रों में संक्षोभ, शोथ, व्रण, अवरोध (विबंध) या कृमि उत्पन्न हो जाना, बारंबार विरेचन लेना, कभी प्रसेक और प्रतिश्याय की दशा में उपचार व्यतिक्रम इसके हेतु होते हैं। कभी यकृद्दौर्बल्य के कारण अन्त्र और आमाशय में द्रवोद्रेक हो कर भोजन को दूषित कर देते हैं जिससे अतिसार आरम्भ हो जाता है। कभी यकृत् की दुर्बलता के कारण भोजन का सम्यक् पाचन नहीं होता और वह दूषित हो जाता है और इस योग्य नहीं रहता कि शरीर उससे पोषण प्राप्त कर सके। यह दुष्टभूत भोजन लौटकर अन्त्रों की ओर आता है और विरेक प्रारम्भ हो जाते हैं। अथवा आमाशय दुर्बल (मंदाग्नि) होकर द्रवों का उद्रेक अधिक होता है, जिससे विरेक आते हैं। कभी अन्त्रों में श्लैष्मिक पिच्छिल द्रवों का संचय स्वयमेव हो जाता है। जब आहार आमाशय से अन्त्रों में आता है, तब वह फिसल जाता है और विरेक होते हैं। कभी यकृत् में उष्णता बढ़कर पैत्तिक विरेक होते हैं। कभी-कभी मल-मार्ग से रक्त निर्हरण होने लगता है (रक्तातिसार) है। यदि अर्श के कारण रक्त निर्हरण होता हो, तो साधारणतया रक्त मलके साथ या अकेले निर्हरण हुआ करता है। शिशुओं में कभी दन्तोद्भेद के कारण विरेक होते (शिशवातिसार) हैं।

लक्षण--जब आहारदुष्टि एवं अतिभोजन से विरेक होते हैं, तब उक्त अवस्था में उदर में आटोप, उद्वेष्टन और आध्मान होता है, जिह्वा मलिन होती, उत्क्लेश होता, अम्लोद्गार आते हैं, कभी शीत लगता है, बारंबार पतले-पतले पिलाई लिये फेनिल या मटियाले रंग के विरेक होते हैं। प्रसेक एवं प्रतिश्याय के कारण हों तो उनके लक्षण विद्यमान होंगे। अधिक सोने विशेष कर दिवा निद्रा के पश्चात् अधिक विरेक होंगे। चार-पाँच विरेक के पश्चात् कुछ काल बन्द रहेंगे। विरेक में किसी भाँति फेन का उत्सर्ग होगा। जब श्लैष्मिक द्रवों के अतिरेक से और आमाशय के दौर्बल्य (मन्दाग्नि) के कारण विरेक हों तो उक्त अवस्था में दिन में अधिक और रात्रि में कम होंगे। विरेकों की भौतिकस्थिति अधिकतर एक समान नहीं होगी, अपितु, कुछ सान्द्र और कुछ तरल भाग मिला हुआ उत्सर्गित होगा। आहार अपक्व उत्सर्गित होगा। अम्लोद्गार आयेंगे। जब यकृद्दौर्बल्य के कारण हों, तो उसके लक्षण जिनका उल्लेख यथास्थान किया गया है, पाये जायेंगे। आमाशय की दशा ठीक होगी। मलों की भौतिक-स्थिति सर्वथा एक समान होगी। विरेक पतले, पीले या लाल मांस के धोवन जैसे

होंगे। रात्रि में अधिक विरेक होंगे। जब आहार यकृत में पहुँचेगा, तब कुछ काल निरन्तर विरेक होंगे और फिर कुछ कालके लिये रुक जायँगे। मूत्रोत्सर्ग अल्प होगा। जब अन्त्रों में श्लैष्मिक द्रव संचित हो जाने के कारण विरेक हों, तब उनके साथ श्लैष्मिक द्रव अर्थात् आँव उत्सर्गित होगा। अन्त्रों में शूल और उद्वेष्टन (मरोड़) होगा। विरेक भोजन के लगभग १॥–२ घंटे बाद प्रारम्भ होंगे। रात्रि की अपेक्षया दिन में अधिक होंगे। मूत्र की दशा प्रकृतिस्थ होगी। यकृत् ऊष्मा के कारण जब पैत्तिक विरेक होते हैं, तब उस में दाह होता है। यकृत् के स्थान पर हाथ रखने से उष्णता की प्रतीति होती है। रोगी को अति तृष्णा लगती है तथा अधिक बेचैनी होती है। रोगी अत्यन्त दुर्बल एवं कृश हो जाता है। यदि अर्श के कारण रक्त के विरेक हों, तो अर्शांकुरों की विद्यमानता तथा अर्श के अन्यान्य लक्षण जिनका विवरण अर्श के प्रकरण में किया जायगा, पाये जायँगे। शिशुओं को दन्तोद्भेद काल में जो हरे या पीले रंगके फटे-फटे विरेक होते हैं तथा जिसके साथ तृष्णा होती है, उनकी चिकित्सा अम्राज सिब्यान (बालापस्मार) के प्रकरण में आगे वर्णित होगी।

चिकित्सा—प्रारम्भ में रोगी को आहार नहीं देवें और उसे सुख पूर्वक लिटाये रखें। यदि कोई संक्षोभकारी अर्थात् अपाचित या दुष्टभूत आहार उदर में विद्यमान हो, तो प्रथम कोई हल्का विरेचन देकर उदर शुद्धि करें। तदुपरान्त विरेक बन्द करने का यत्न करें। सुतरां मुलय्यिन ३ टिकिया या एरण्ड तैल ३ तोला एक पाव दूध में मिला कर पिला देवें जिससे यह संक्षोभकारक दोष निस्सरित हो जाय। तदुपरान्त ५ माशे सौंफ का शीरा ३ माशे हब्बुल्आस का शीरा, ३ माशे छोटी इलायची के दाने का शीरा पानी में पीस-छान कर २ तोला मिश्री मिलाकर कुछ दिन पिलायें। सवेरे-शाम इस योग के साथ ७-७ माशे जुवारिश मस्तगी और जुवारिश ऊद शीरीं सेवन करायें।

यदि उष्ण प्रसेक के कारण यह रोग हो तो उष्ण प्रसेक में उल्लिखित उपक्रम काम में लेवें। यदि पित्त के लक्षण पाये जायँ, तो पित्त की पाचन औषधि (मुंज़िज सफरा) पिलाकर यथाविधि विरेचन देवें। यदि शीत प्रसेक के कारण यह रोग हो, तो उस की चिकित्सा जो लिखी जा चुकी है, उसे काम में लेवें तथा अजवायन, पीली हड़का बक्कल (छिलका) प्रत्येक ५ माशा, सोंठ ३ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ५ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर सवेरे मल-छान-कर सेंधानमक ७ माशा और मेथी ३ माशा इनके चूर्ण का प्रक्षेप देकर पिलायें और अफीम ४ रत्ती, केसर २ रत्ती, गोंद, कतीरा, अजवायन खुरासानी और पोस्ते का दाना प्रत्येक १ माशा सबको महीन पीसकर अंडे की सफेदी में मिलाकर

एक मोटे कागज का गोल टुकड़ा काटकर उसके बीच में सूई से छिद्र करके उस कगज पर यह श्रोषधि लगाकर कनपुटी (शंखक) पर चिपका देवें।

यकृत् के दोष से विरेक होते हों तो यकृद्दौर्बल्य में लिखित चिकित्साविधि काम में लेवें और विरेक (अतिसार) बन्द करने का कदापि यत्न न करें ; क्योंकि इससे शोथ (इस्तिस्काऽ) एवं अन्य कठिन उपद्रवों के प्रादुर्भाव का भय है। अस्तु सवेरे सफेद चन्दन ३ माशा, उन्नाब ५ दाना १२ तोले अर्कगावजबान में पीस-छानकर २ तोला शर्बत खशखाश या २ तोला सिकंजबीन या शर्बत अनार मिलाकर पिलायें। सायंकाल ५ तोले अनार का रस २ तोला शर्बत खशखाश मिलाकर पिलायें। यदि दीर्घकाल पर्यन्त विरेक होने के कारण रोगी अधिक दुर्बल हो जाय तो जहरमोहरा और वंशलोचन १-१ माशा महीन पीसकर ७ माशे जुवारिश अनारैन में मिलाकर रोगी को खिला दिया करें। ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा जरिष्क, ३ माशा कुलफा १२ तोले अर्क गावजबानमें पीसकर शर्बत अंगूरी शीरीं मिलाकर पिला दिया करें। मूत्रप्रवर्त्तन के सहाय्यार्थ तथा ऊष्माशमनार्थ ३ माशा कासनी के बीज इसी योग में अधिक करके देना चाहिये और शर्बत अंगूर के स्थान में शर्बत बजूरी सम्मिलित करें। पित्त की तीक्ष्णता कम करने के लिये जहरमोहरा और वंशलोचन के साथ १ माशा सुमाक देते हैं। अधिक कब्ज अपेक्षित होने पर जुवारिश अनारैन के स्थान में ७ माशा जुवारिश आमला बनुसखा़ कलाँ का प्रयोग करें। आमाशय के उद्दीपनार्थ १ माशा पिस्ते का बहिः त्वक् अधिक योजित करते हैं। तीव्र पिपासा में अर्क गावजबान या लोहे का बुझा हुआ पानी पिलायें। यदि पेचिश का भय हो और मरोड़पूर्वक विरेक होने लगें और छिलके निकलें तो बलवृद्धि की ओर ध्यान देवें और ४ माशा रेशा खतमी और ३ माशा बिहीदाना का लबाब; ३-३ माशा बेलगिरी और मरोड़फली का शीरा जल में (लबाब और शीरा) निकाल कर २ तोला रुब्बबिही शीरीं या २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें।

यदि अग्निमान्द्य (आमाशयस्थ शीत) एवं आक्लेदाधिक्य के कारण विरेक होते हों तो उक्त अवस्था में सवेरे मस्तगी, इलायची का दाना, सूखा पुदीना और संगदाना मुर्ग प्रत्येक १ माशा सब को महीन पीस कर २ तोले गुलकन्द में मिलाकर प्रथम खिलायें। ऊपर से सौंफ ५ माशा, स्याहजीरा ३ माशा, अनीसून ३ माशा ६-६ तोले अर्क पुदीना और अर्क इलायची में पीसकर शीरा निकाल कर इसमें २ तोला रुब्ब विही शीरीं घोलकर पिला देवें। सायंकाल ऊद खाम ६ माशा, स्याहजीरा ६ माशा दोनों को सिरका में पीस कर दो दिन तक भिगो देवें, तदुपरान्त सुखा कर भून लेवें। पुनः अजवायन, कुरूया (विदेशीय

कृष्ण जीरक) भृष्ट सोंठ, छोटी इलायची और गुठली निकाला हुआ मुनक्का प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। ६ माशा इस चूर्ण में ४ रत्ती सफूफुल्इस्लाह मिलाकर फँका देवें। ऊपर से १२ तोला अर्क सौंफ २ तोला रुब्ब बिही डालकर पिला देवें।

जब अन्त्र में पिच्छिल आक्लेद (कफ) के संचय से विरेक होते (अतिसार) हों तो उक्त अवस्था में अपस्मार और पक्षवध के प्रकरण में उल्लिखित कफ पाचन ओषधि कुछ दिन पिलाकर विरेचन देवें। तदुपरांत मस्तगी, स्याह जीरा, सोंठ, अनीसून और सेंधानमक प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसमें से ३ माशा चूर्ण फँका कर ऊपर से १२ तोले अर्क सौंफ में २ तोला रुब्ब बिही शीरी मिलाकर पिला दिया करें और बबूल का गोंद ६ माशा, हब्बुल्-आस १ तोला, भृष्ट अनारदाना ६ तोला, खर्नूब ३ तोला सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसमें से ६ माशा चूर्ण ताजे पानी के साथ शाम को फँका दिया करें और बाजरा, सेंधानमक तथा गेहूँ की भूसी कूट-मिलाकर पोटली में बाँधकर गरम करके नाभि के समीप सेंक करें। यदि मरोड़ अधिक हो तो सफूफ मिकालियासा ५ माशा गाय के घी में स्नेहाक्त करगे या सफूफ भूय्या १ तोला फँकाकर रुब्ब बिही शीरीं २ तोला अर्क गावज़बान १२ तोला में मिलाकर पिला दिया करें और हब्ब पेचिश १ गोली रात्रि में सोते समय खिला दिया करें। आराम होने के पश्चात् फौलाद (फौलाद भस्म) १ टिकिया, दवाउल्मिस्क मोतदिल ५ माशा में मिलाकर कुछ दिन खिलायें। भोजनोत्तर हब्ब पपीता ३ गोली या जुवारिश जालीनूस ७ माशा, कुर्स खुब्सुल हदीद १ टिकिया मिलाकर खिला दिया करें। बलवृद्धि के लिये तूतियाए कबीर १ टिकिया या मालती वसंत एक टिकिया ५ माशे नोशदारू सादा या ५ माशे माजून संगदाने मुर्ग में मिलाकर खिलायें।

रक्तातिसार में जब रोगी के अधिक दुर्बल हो जाने का भय हो तो उसे बंद करने के लिये निम्न योग देवें—खस (काहू), बेलगिरी, धवई के फूल, मोचरस, मीठा इन्द्र जौ प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छानकर चूर्ण प्रस्तुत करें। इसमें से ६ माशा चूर्ण फँकाकर ऊपर से ५ तोले साठी चावल के धोवन में २ तोला रुब्ब बिही शीरीं मिलाकर कुछ दिन पिलायें। रक्त बन्द करने के लिये निम्न योग भी गुणकारी है—आम की गुठली का मग्ज और जामुन की गुठली का मग्ज प्रत्येक ६ माशा चूर्ण बनाकर फँकायें और ऊपर से २ तोला रुब्ब जामुन पानी में घोलकर पिला दिया करें। अथवा एक छुहारे की गुठली निकालकर उसके भीतर अफीम भरकर और इसके ऊपर गेहूँ का आटा लपेटकर कपरौटी करके गरम तनूर में रखें। जब गेहूँ का आटा लाल हो जाय, तब इसे तनूर से निकाल

कर गेहूँ का आटा पृथक् करके छुहारे को अफीम सहित पीस लेवें और चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें। इसमें से २-२ गोलियाँ आवश्यकतानुसार खिलाकर २ तोला रुब्ब बिही शीरीं जल में घोलकर पिला दिया करें। बलवृद्धि एवं ऊष्मा शमन करने के लिये कुर्स तबाशीर काबिज ४।। माशा या कुर्स काफूर ४।। माशा या कुर्स जरिष्क ४।। माशा आवश्यकता होने पर १२ तोले अर्क गावजबान के साथ देना चाहिये।

अपथ्य--प्रसेक और प्रतिश्यायज अतिसार में भोजनोत्तर तुरंत शयन करना विशेषकर दिन में सोना (दिवास्वप्न) हानिकारक है। शीतल जल पीने और स्नान करने तथा शीतल, बादी एवं गुरु पदार्थ सेवन से परहेज करें। बर्फ, आलू, अरवी, कचालू, भिंडी, उड़द की दाल आदि उपयोग में नहीं लेवें। श्लैष्मिक द्रवातिरेक जन्य अतिसार में भी इन्हीं पदार्थों से परहेज करना चाहिये। पित्तज अतिसार एवं ऊष्माधिक्य में अधिक उष्ण एवं मसालेदार पदार्थ सेवन नहीं करें। यकृद्दौर्बल्य में लहसुन, प्याज, मैदा और तनूर की पकी हुई रोटी, मांस, मछली आदि का सेवन हानिकारक है। अर्श की दशा में भी बादी एवं गुरु पदार्थों से परहेज करना चाहिये। बालकों के दन्तोद्भेदकालीन अतिसार में उक्त बालक की धात्री को उष्ण पदार्थ और गुड़-तेल की पकी हुई तथा गुरु एवं बादी वस्तु से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--प्रथम लघु एवं शीघ्र पाकी आहार, जैसे सागूदाना, खीरा-ककड़ी की खीर और गेहूँ का पतला दलिया खिलायें। रोग निवृत्त होने पर धीरे-धीरे मूँग की नरम खिचड़ी खिलायें या आटे में लवण और सोडा मिलाकर पतली चपाती पकाकर बकरी के मांस के कम मिर्च के पकाये गये शूरबा में चूरकर खिलायें और ज्यूँ-ज्यूँ रोग कम होता जाय, धीरे-धीरे आहार में आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन करते जायँ।

२--सहजुल् अम्आऽ और मग़स।

नाम--(अ०) सहजुल् अम्आऽ, कुरूह अम्आऽ, वरमुल्अम्आऽ; (उ०) आँतों की खराश, आँतों के जख्म, आँतों की सूजन; (सं०) अन्त्रशोथ, अन्त्रव्रण, अन्त्रक्षोभ; (अं०) एन्टीराइटिस (Enteritis), इन्टेस्टाइनल अल्सर्स (Intestinal ulcers)।

--(अ०) मगस; (उ०) मरोड; (सं०) उद्वेष्टन; (अं०) ग्राइप (Gripe)।

इस रोग में अन्त्रों के भीतरी धरातल पर क्षोभ होकर वह छिल जाता है

और कुछ काल के बाद व्रण भयावह और उग्र रूप धारण कर लेता है।

सह्ज और ज़हीरका भेद--किसी तीक्ष्ण एवं उष्ण वस्तु के स्राव या मल-मार्ग से उत्सर्गित होने से अन्त्र के भीतरी धरातल के छिल जाने को सह्ज कहते हैं। यदि यह रोग ऊर्ध्व एवं क्षुद्र अन्त्र में हो तो उसके साथ नाभि के ऊर्ध्व भाग में पीड़ा होती है। इसके विपरीत ज़हीर अर्थात् पेचिश सरलान्त्र का रोग है, जिसमें वह किसी कष्ट के कारण वारंवार मलनिर्हरण का यत्न करता है और बिना आँव एवं कभी किंचित् रक्त के और कुछ निःसरित नहीं होता।

हेतु--धूप में अधिक चलने-फिरने से, अग्नि के सम्मुख दीर्घ काल तक काम करने से या लाल मिर्च, मसालेदार और उष्ण पदार्थों के अतिसेवन से और चतु-दोषों में से किसी अप्रकृत दोष के संचय से विशेष कर पित्त अधिक उत्पन्न होकर अन्त्रों में स्रावित होता है और द्रवों को पारकर अन्त्र के संघटक तत्वों तक पहुँच कर इतना संक्षोभ उत्पन्न करता है कि स्वयमेव रोग कहलाता है। कभी अन्त्रों के अभिघात एवं क्षत से या अर्बुद आदि से मरक ज्वर एवं यकृद्दाह से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--मल बारंबार पतला एवं पीला होता है। यदि यह रोग कुछ दिन रहे तो अन्त्रों के संघटनकारी तत्त्व श्वेत छिलके की भाँति मल के साथ निःसरित होने लगते हैं। मूत्र पीला और दाहपूर्वक आता है। मल-त्यागोपरांत कुछ देर तक गुदस्थान पर दाह होता है। उदर में उद्वेष्टन (मरोड़) एवं पीड़ा होती है। तृष्णा का प्राबल्य होता है। कभी इतनी पीड़ा एवं मरोड़ होता है, कि रोगी मूर्च्छित हो जाता है और आक्षेप होकर मृत्यु की आशंका होती है। शरीर उष्ण हो जाता है। रोगी अत्यंत दुर्बल और अतीव बेचैन हो जाता है। कभी-कभी हिचकियाँ आने लगती हैं।

चिकित्सा--अन्त्र संक्षोभ (सहज) के प्रारम्भ में १ तोला बबूल का गोंद महीन पीसकर शीतल जल में भली भाँति आप्लुत करके विलायती एरण्डतैल १ तोला मिलाकर पिलायें। यदि रोग तीव्र हो और रोगी की शक्ति बलवती हो, तो प्रारंभ में बासलीक सिरा का वेध नहीं करें, वरन् ३ माशा कद्दू के मग्ज का शीरा, ३ माशा तरबूज के मग्ज का शीरा, ३ माशा कुलफा के बीज का शीरा, ३ माशा छिले हुये काहू के बीज का शीरा १२ तोले अर्क गावजबान में निकाल कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर सवेरे पिलायें। सायंकाल ३ माशा बिहीदाना और ४ माशा रेशा खतमी को १२ तोले अर्क गावजबान में भिगोकर लबाब निकालकर तथा ५ माशा सौंफ को अर्क गावजबान में पीसकर शीरा निकालकर लबाब और शीरा मिलाकर २ तोला शर्बत नीलूफर सम्मिलित करके ७ माशा समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर पिला दिया करें। यदि कष्ट

अधिक हो, तो ईसबगोल के स्थान में चहार तुख्म ७ माशा या तुख्म बारतंग ७ माशा छिड़ककर पिलायें अथवा पत्थर गरम करके छाछ में बुझाकर बबूल का गोंद, कतीरा, गुलाब के फूल का केशर, वंशलोचन और निशास्ता प्रत्येक ३ माशा सबको बारीक पीसकर छाछ में मिलाकर रेहाँ के बीज ५ माशा या समूचा ईसबगोल ७ माशा छिड़ककर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला देवें अथवा सवेरे सफूफ़ मिकलियासा ५ माशा यथावश्यक गाय के घी में स्नेहाक्त करके फँकाकर १२ तोले अर्क गावजबान में २ तोला शर्बत अनार शीरीं या २ तोला शर्बत नीलूफर सम्मिलित करके पिला दिया करें। सायंकाल बेल का मुरब्बा १ तोला खिलाकर ऊपर से ६-६ तोला अर्क गावजबान एवं अर्क गुलाब २ तोला शर्बत अनार शीरीं मिलाकर पिलायें। यदि रोग पुराना हो जाय और मल के साथ पूय आने लगे, तो कुर्स अकाकिया ३ टिकिया खिलाकर ऊपर से २ तोला शुद्ध मधु जल में मिलागकर पिला दिया करें और कुर्स रातीनज आधी टिकिया ऽ।।। चावलों की पीच में घोलकर इसकी पिचकारी करायें।

वक्तव्य—जब तक यह रोग पुराना न हुआ हो और पूय न पड़ गया हो, तब तक इस रोग में छाछ, दूध, दही आदि का उपयोग कर सकते हैं। पूय पड़ जाने के पश्चात् इनका उपयोग हानिकारक है। रोगारंभ में शीतल एवं पिच्छिल (लबाबदार) पदार्थ लाभकारी होते हैं।

अपथ्य—तीक्ष्ण, अम्ल, लवण और उष्ण पदार्थों से परहेज करायें। लाल मिर्च, गरम मसाला, मांस, अंडा, मछली, बैगन, सिरका की चटनी, पुदीना, आलू, अरवी, कचालू आदि पदार्थ हानिकारक हैं। परिश्रम के कार्य करने और धूप में चलने-फिरने से परहेज करें।

पथ्य—लघु शीतल आहार, दूध, चावल, मूँग की नरम खिचड़ी, खशका आदि, शाकों में कद्दू, तुरई, पालक, कुलफा, खीरा, ककड़ी, कम मिर्च का बकरी के मांस का शूरबा तरकारी के साथ पका हुआ देवें। दही और चावल का उपयोग लाभदायक होता है। बर्फ से शीतल किया हुआ या ताजा पानी पीना चाहिये।

३—ज़हीर

नाम—(अ०) जहीर; (उ०) पेचिश; (सं०) प्रवाहिका; (हिं०) आँव; (अं०) डिसेंटरी (Dysentry)।

किसी द्रव्य वा मलजनित कष्ट निवारण के लिये सरलान्त्र का अप्राकृतिक रूप से चेष्टा करना ज़हीर कहलाता है। किन्तु इससे सरलान्त्रीय धरातल का श्लैष्मिक द्रव ही निःसरित हुआ करता है। इसके यह दो भेद हैं—

(१) सादिक (वास्तविक) और (२) काज़िब (मिथ्या)। इनमें से प्रथम का कारण क्षारीय कफ या पित्त होता है और द्वितीय में केवल अवरोध (सुद्दा) उत्पन्न हो जाने से बारंबार मल त्याग की इच्छा होती है। इनके पहिचान की सरल विधि यह है कि ईसबगोल या कनौचा के बीज आदि रोगी को सेवन करायें। यदि ये मलके साथ निस्सरित न हों, तो समझ लेना चाहिये कि ज़हीर काज़िब अन्यथा ज़हीर सादिक है।

हेतु--वासी (पर्युषित) और नमकीन भोजन, मांस और सड़ी-गली मछली या अधिक अंडे खाना, कच्चा दूध पीना, कठिन मलावरोध, बारंबार विरेचन औषधि का सेवन, शुद्ध पित्त या पित्त एवं लवणनिष्ट कफ का मिश्रीभूत होकर अन्त्रों में स्रावित होना अथवा अन्त्रों में किसी सांद्र पिच्छिल या शुष्क सुद्दा (विवंध) का पड़ जाना इस रोग के हेतुभूत हैं। युवाओं की अपेक्षया, शिशुओं को और पुरुषों की अपेक्षया स्त्रियों को तथा उष्ण प्रदेशों में यह रोग अधिक होता है। वर्षा ऋतु में कभी यह महामारी के रूप में भी प्रसार पाता है।

लक्षण--मरोड़ के साथ प्रथम पतले-पतले आँवमिश्रित विरेक होते हैं। क्षुधा कम हो जाती है और सूक्ष्म ज्वर हो जाता है। इसके बाद बारंबार मल-त्याग की प्रवृत्ति होती है। मलत्याग के समय कुंथन एवं बल प्रयोग करना पड़ता है। उदर में तीव्र पीड़ा एवं मरोड़ होती है। मल अल्प प्रमाण में रक्त एवं आँवमिश्रित होता है। कभी कुंथन से गुदभ्रंश हो जाता है। रोग की तीव्रावस्था में दिन-रात में दस-बीस, प्रत्युत तीस-चालीस बार और कभी इससे भी अधिक बार मल त्याग की प्रवृत्ति होती है। ज्वर भी तीव्र हो जाता है। अति तृष्णा लगती, मिचली होती और कभी वमन भी हो जाता है। उदर में पीड़ा और आध्मान होता है। मूत्र भी दाह एवं कष्टपूर्वक होता है। पित्त की प्रगल्भता से यह रोग हो तो मलविसर्जन के पश्चात् गुदा में दाह होता है। विबन्ध (सुद्दा) के कारण यह रोग हो तो कभी-कभी मल में शुष्क घटक अर्थात् विबन्ध (सुद्दे) उत्सर्गित होते हैं। कभी-कभी मलमार्ग से बहुत-सा रक्त निःस्सरित होता है तथा रोगी अत्यंत दुर्बल हो जाता है।

चिकित्सा--प्रथम उपर्युक्त विधि के अनुसार इस बात की परीक्षा करें कि ज़हीर सादिक (वास्तविक प्रवाहिका) है या काज़िब (मिथ्या)। तदुपरान्त उचित प्रतिकार करें। प्रारंभ में संग्राही ओषधियों का उपयोग कदापि न करायें। प्रत्युत् निम्न विरेचनीय ओषधियों का सेवन करायें, जिसमें विरेक होकर यदि कोई विबंध (सुद्दा) हो, तो निस्सरित हो जाय।

योग--गुलबनफ़शा, गुलाब के फूल, सौंफ प्रत्येक ७ माशा जल में उबाल-छानकर गुलकंद ४ तोला, अमलतास का गूदा ६ तोला, तरंजबीन खुरासानी ४ तोला और

बदाम का तेल ६ माशा डालकर पिलायें। जब यह निश्चय हो जाय कि जहीर काजिब अर्थात् विबन्धों (सुद्दों) के कारण है, तब उक्त अवस्था में उपर्युक्त योग भी लाभकारी होता है अथवा एरण्ड तैल ४ तोला पाव भर गाय के दूध में मिलाकर २ तोला मिश्री डालकर पिलायें। जब विरेक होकर तबीयत शुद्ध हो जाय, तब दूसरे दिन ठंढाई (तबरीद) का निम्न योग सेवन करायें--खमीरा गावजबान १ तोला चाँदी के एक वर्क (पत्र) में लपेटकर प्रथम खिलायें। ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी का लबाब, ३ माशा हब्बुल्आस का शीरा ६-६ तोले अर्क बिरंजासिफ और अर्क गावजबान में लुआब और शीरा निकालकर ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर ७ माशे रेहाँ के समूचे बीज का प्रक्षेप देकर पिला देवें।

यदि शुद्ध पित्त या लवणनिष्ठ या पित्तमिश्र कफजन्य वास्तविक प्रवाहिका (जहीर सादिक) हो, तो बिहीदाना ३ माशा, रेशा खतमी ४ माशा जल में भिगोकर लुआब निकालें और ५ माशा सौंफ को जल में पीसकर शीरा निकालें और लुआब एवं शीरा को मिलाकर २ तोला शर्बत बनफ्शा सम्मिलित करके ७ माशे समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलायें। अथवा गुलबनफ्शा ७ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, कासनी की जड़ ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान और रेशा खतमी ५-५ माशा सबको रात्रि में उष्ण जल में भिगो देवें और प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर और ७ माशे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर पिलायें, सायंकाल उपर्युक्त योग सेवन करायें। यदि मल के साथ रक्त भी आ रहा हो तो प्रातः कालीन योग में तुख्म मरो हब्बुल्आस और रेशा अंजबार ५-५ माशा सम्मिलित करके भिगोयें और सायंकालीन योग में भी हब्बुल्आस ५ माशा और बेरव अंजबार ३ माशा जल में पीसकर शीरा निकालकर योजित करके सेवन करायें। अधिक मरोड़ होने पर ५ माशा मरोड़फली और मिलायें। यदि अत्यंत रक्त आ रहा हो और मरोड़ अधिक हो, तो ५ माशे सफूफ तीन यथावश्यक गाय के घी में स्नेहाक्त करके प्रथम खिलायें। ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी का लुआव, तथा हब्बुल्आस, वेख अंजवार और बेलगिरी प्रत्येक तीन माशा का शीरा १२ तोले अर्क गावज़बान में (शीरा और लुआब) निकालकर ५ माशा चहार तुख्म या ५ माशा बारतंग के बीज का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलायें।

यदि पेचिश के साथ प्रसेक एवं प्रतिश्याय भी हो, तो खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज और रेशा खतमी प्रत्येक ७ माशा, पानी में उबाल-छानकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। यदि मस्तिष्क दुर्बल हो, तो इसके साथ खमीरा गावज़बान जवाहर वाला ५ माशा सेवन करायें। यदि पेचिश के साथ

कोष्ठांग (आशय) शोथ भी हो तो गुलबनफ़शा ७ माशा, सूखा मकोय, रेशा खतमी और रेशा अंजबार प्रत्येक ५ माशा, सौंफ ७ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातः काल मल-छानकर ४ तोला शर्बत बनफ़शा मिलाकर पिला दिया करें। सायंकाल ६–६ तोले अर्क बिरंजासिफ और अर्क माउल्लहम कासनी-वाला में ३–३ माशे मकोय और हब्बुल् आसका शीरा और ४ माशा रेशा खतमी का लुआब निकालकर २ तोला शर्बत बनफ़्शा मिलाकर पिला दिया करें।

यदि रक्तार्श के साथ पेचिश भी हो, तो उक्त अवस्था में १ माशा रसवत खिलाकर पानी में ४ माशा रेशाखतमी का लुआब और ३ माशा हब्बुल्आस का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ़्शा मिलाकर ७ माशे समूचे ईसबगोल का प्रक्षेप देकर सवेरे-शाम पिलायें। जब पेचिश के साथ यकृत् एवं कोष्ठांग के शोथ का निवारण अभीष्ट होता है, तब हरे मकोय और हरी कासनी के रस का फाड़ा हुआ पानी ४–४ तोला, ४ तोला शर्बत बनफ़्शा मिलाकर ७ माशे समूचे इसबगोल का प्रक्षेप देकर पिलाते हैं और ६ माशा रसवत, सूखा मकोय तथा अतलतास का गूदा १–१ तोला यथावश्यक हरे मकोय के रस में पीसकर १ तोला गुलरोगन मिलाकर उदर के ऊपर कुनकुना गरम लेप करते हैं। कष्ट अधिक होने पर १ गोली हब्ब पेचिश रेशाखतमी के लुआब के साथ सेवन करायें तथा एक अंडे की जर्दी १ तोला गुलरोगन में फेटकर कुनकुना गरम उदर के ऊपर मरोड़ के स्थान पर मर्दन करें। रोग के पुराना हो जाने पर सवेरे सफूफ तीन वाला योग सेवन करायें तथा १ गोली हब्ब पेचिस रात्रि में अर्क गुलाब से खिला दिया करें और आधी टिकिया कुर्स रातीनज चावलों की पीच में घोलकर इसकी अन्त्र में पिचकारी करें तथा राल सफेद, गोंद बबूल वाली दो गोलियाँ सवेरे-शाम भोजनोत्तर सेवन करायें। आराम होने के पश्चात कुछ दिन तक बलवर्धन के लिये १ टिकिया मालती वसंत ७ माशा जुवारिश ऊदशीरीं में मिलाकर सवेरे और कुश्ता तिला खुर्द २ चावल ५ माशे दवाउल्मिस्क मातदिल में मिलाकर रात्रि में खिलायें और हब्ब पपीता २–२ गोली सवेरे-शाम भोजनोत्तर खिला दिया करें।

प्रसवोत्तर पेचिश में जो कतिपय स्त्रियों को हो जाती है, सफूफ मूया खिलायें अथवा रेहाँ के बीज, कनौचा के बीज, बारतंग के बीज, समूचा ईसबगोल प्रत्येक ३ माशा ६–६ तोले अर्क मकोय एवं अर्क सौंफ में उबाल कर ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

वक्तव्य—यह रोग अंतिम अन्त्र में होता है, जो नीचे से निकट है। अतएव इस रोग के पुराने होने पर अन्त्र में व्रण हो जाते हैं। उस समय औषधि पिलाने की अपेक्षया पिचकारी के द्वारा औषधि–प्रवेशित करना अधिक समीचीन होता है।

अपथ्य--अधिक भोजन न करायें। मधुर एवं अम्ल पदार्थ, लाल मिर्च, गरम मसाला, मांस, बैंगन, मेथी आदि उष्ण पदार्थ गुड़, तेल, मछली, अण्डा, भृष्ट चने तथा रूक्ष पदार्थ और आलू, अरवी, भिंडी प्रभृति गुरु पदार्थ से परहेज करायें।

पथ्य--सिवाय मूँग की नरम खिचड़ी या खशका और दही के रोगावस्था में कोई आहार न देवें। आराम होने पर धीरे-धीरे मूंग-अरहर की दाल, शूरवा चपाती, कद्दू, पालक, तुरई, कुलफा, ककड़ी, खीरा, प्रभृति ठंढे शाक यथाभ्यास देवें।

४—ज़रब व खिल्फा

नाम--(अ०) जरब, ख़िल्फ़ः; (उ०) संग्रहनी; (सं०) संग्रहणी; (अं०) क्रॉनिक डायरिया (Chronic Diarrhoea), स्प्रू (Sprue)।

एक प्रकार का चिरज अतिसार जिसमें अन्त्र और आमाशय की धारणा या संग्राहिणी शक्ति (कुव्वत मासिकः) दुर्बल हो जाती है तथा अन्त्र के भीतरी धरातल पर कहीं-कहीं व्रण भी हो जाते हैं।

हेतु--उष्ण प्रदेश विशेषतः भारतवर्ष में यह रोग अधिक होता है तथा पुरुषों की अपेक्षया स्त्रियों एवं शिशुओं को अधिक होता है।

लक्षण--किंचिन्मात्र खाने-पीने से भी तुरंत मल की प्रवृत्ति होकर पतला-सा विरेक हो जाता है। स्तन्यपायी शिशुओं को भी दन्तोद्भेद काल में प्रायः इस प्रकार के विरेक होते हैं, जिनका वर्णन बालरोग में किया जायगा। रोगी का मुख एवं जिह्वा लाल हो जाती है। कभी मुख और जिह्वा में छोटे-छोटे विस्फोट एवं व्रण हो जाया करते हैं। मुख से लालास्राव होता है। खाना और निगलना कठिन हो जाता है। प्रातःकाल तीन-चार दूषित फेनिल, श्वेत या मटियाले रंग के विरेक हो जाते हैं। रोगी दिनानुदिन दुर्बल एवं निढाल होता जाता है और मुखमण्डल फीका पड़ जाता है। कभी ये विरेक आवेग-पूर्वक होते हैं, तब इसको इसहाल दौरी या दौरुल्बल कहते हैं।

चिकित्सा--रोगी को सुखपूर्वक बिछौने पर लेटाये रखें। आरंभ में एक पाव गाय के दूध में ३ तोला एरण्ड तैल मिलाकर पिलायें जिसमें अन्त्र और आमाशय शुद्ध हो जायँ। इसके उपरांत कुछ दिन तक माजून संगदानए मुर्ग ५ माशा सेवन कराके ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा हब्बुल् आस, ३ माशा इलायची का दाना जल में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला मिश्री या २ तोला सब्ब बिही मिलाकर सवेरे-शाम पिला दिया करें और पोस्त संगदानए मुर्ग, रूमी मस्तगी, स्याहजीरा, भुनी हुई धनिया, छोटी इलायची का दाना, पिस्ता का

बाह्य त्वक्, विजौरे का पीला छिलका, अनारदाना, गुलाब के फूल की कली, गुठली निकाला हुआ मुनक्का प्रत्येक ७ माशा, ऊद गर्की (पानी में डूब जाने वाला कृष्णागुरु), बेलगिरी, वंशलोचन--प्रत्येक ३ माशा, कहरुवा शमई ३।। माशा, गुलाब के फूल का जीरा ३ माशा सबको चूर्ण बनाकर रखें। इसमें से ४।। माशा चूर्ण ७ तोले अर्क इलायची या ७ तोले तप्त लोह से बुझाया हुआ पानी के साथ फँका दिया करें। तूतियाए कबीर २ चावल, मालती वसंत २ चावल, नोशदारूए लूलुवी ५ माशा या माजून संगदानए मुर्ग ७ माशा या जुवारिश ऊद शीरी ५ माशा में मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से सौंफ ५ माशा, हब्बुल्-आस ३ माशा, इलायची का दाना ३ माशा, यदि मरोड़ भी हो तो वेलगिरी ३ माशा, मरोड़ फली ३ माशा जल में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला रुब्ब बिही शीरीं मिलाकर पिला दिया करें।

यदि अन्त्र में व्रण हो गये हों, तो दालचीनी ८ माशा, पीपल ४ माशा, लौंग २ माशा, छोटी और बड़ी इलायची १–१ माशा, वंशलोचन १ तोला ४ माशा, मिश्री २ तोला ८ माशा--सबको कूचट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमें से ६ माशा चूर्ण सवेरे-शाम पानी में घोले हुए २ तोले रुब्ब बिही शीरीं के साथ फँका देने से उपकार होता है। योगौषधों में से जुवारिश आमला सादा या लूलुवी ७ माशा या कुर्स तबाशीर काबिज ४।। माशा या कुर्स जरिष्क ४।। माशा, जुवारिश ऊद शीरीं या जुवारिश ऊद तुर्श ७ माशा या जुवारिश अनारैन या जुवारिश शाही ७ माशा में से कोई एक ओषधि आवश्यकतानुसार देनी चाहिये।

अपथ्य--बादी, गुरु, दीर्घपाकी एवं उष्णपदार्थों से तथा लाल मिर्च एवं गुड़ तेल के पदार्थों से परहेज करें।

पथ्य--लघु, शीघ्रपाकी, यथा मूंग की नरम खिचड़ी या डबल रोटी दूध में भिगोकर कम मीठा डालकर देवें। कम मिर्च का बकरी का शूरवा चपाती भिगोकर देवें। या दूध खशका देवें।

५--कुलंज

नाम--(अ०, उ०) क़ुलंज; (सं०) शूल; (उ०) कुलंज का दर्द; (अं०) कॉलिक (Colic)।

वक्तव्य--कुलंज वस्तुतः 'कोलूनरंज' था जो प्रयोगबाहुल्य से 'कुलंज' रह गया। यह एक तीव्र और कठोर व्याधि है, जो वृहद अन्त्र विशेषकर वृहदन्त्र के वक्र भाग में अवरोध उत्पन्न होने (सुद्दा पड़ने) से या उसमें सांद्र वायु के अवरुद्ध होने से उत्पन्न होता है। इसमें रोगी को मल की प्रवृत्ति नहीं होती और वह पीड़ा की तीव्रता से तड़पना और बेचैन होता है। कभी पीड़ा की

तीव्रता से मर भी जाता है। जब क्षुद्रान्त्र में अवरोध होता है, तब इस प्रकार की पीड़ा होती है और रोगकी तीव्रता में मलगंधि छर्दि अथवा मल की छर्दि आने लगती है, तब इसको प्राचीन यूनानी वैद्यक की परिभाषा में 'एलाऊस' कहते हैं। परंतु आधुनिक पाश्चात्य वैद्य (डॉक्टर) कुलंज इल्तिवाई (Volvulus) को एलाऊस कहते हैं।

हेतु—बादी, गुरु, दीर्घपाकी, आध्मानकारक और शीतल पदार्थों के खाने, बर्फ पीने या बर्फ और मलाई की कुल्फियों के अति सेवन से या वर्षा में भीगने और किसी रूक्ष एवं संग्राही वस्तु के सेवन से प्रचुर श्लेष्मोत्पत्ति होकर अन्त्रों में चिपट जाती हैं, जिससे वायु (रियाह) उत्पन्न होकर मल, अवरुद्ध हो जाता है अथवा मल शुष्क होकर स्वयमेव अन्त्रों में रुक जाता है तथा कष्ट का हेतु बनता है। कभी किसी भारी वस्तु के उठाने या तीव्र चेष्टा करने से भी आन्त्र परिवर्तनज शूल हो जाता है।

लक्षण—प्रथम पाचन विकृत हो जाता है। आटोप और आध्मान होता है तथा उदर किसी भाँति स्फीत हो जाता है। पुनः नाभि के चतुर्दिक रुक-रुककर तीव्र शूल होता है, जिसको पीड़न करने से सुख प्रतीत होता है। रोगी पट अर्थात् पेट (उदर) के बल पड़ा रहता है और उदर को प्रायः हाथ से दबाये रखता है। उग्र मलावरोध होता है। उत्क्लेश होता और कभी वमन भी हो जाता है। शूल की तीव्रता और बेचैनी से रोगी बारंबार उठता-बैठता है और कभी करवट बदलता है। यदि मल विसर्जन होता है, तो अल्प प्रमाण में और लेसदार होता है। कुलंज रीही में वायु अपने स्थान से चलता-फिरता प्रतीत होता है और वायु के उत्सर्गिक होने अर्थात् वायु के अनुलोम होने से शूल में किंचित् कमी हो जाती है। शूल प्रायः आवेगपूर्वक होता है। वायु अनुलोम (या उत्सर्गिक) होकर आवेग अकस्मात् शांत हो जाता है। पर यदि यह शूल दीर्घकाल पर्यंत रहे, तो पीड़ा की अधिकता से रोगी का चेहरा चिंतातुर और शरीर शीतल हो जाता है। नाड़ी दुर्बल हो जाती है। किसी-किसी रोगी को मूर्च्छा भी आ जाती है। किन्तु ज्वर नहीं होता और शीतल स्वेद आता है, इस रोग में यदि रोगी का मूत्र भी अवरुद्ध हो जाय, तो उसके प्राणनाश की आशंका होती है।

चिकित्सा—यदि शूल हलका हो, तो प्रथम जुवारिश कमूनी मुसहिल १ तोला खिलाकर ऊपर से १२ तोले अर्क सौंफ में ५ माशा सौंफ, ३-३ माशा अनीसून और कुसूस के बीज पीसकर ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिलायें अथवा १ तोला जुवारिश सफर जली मुसहिल में ४रत्ती सफूफुल्इम्लाह मिलाकर खिलायें और ऊपर स १२ तोला अर्क सौंफ और ४ तोला शर्बत दीनार मिला-

कर कुनकुना गरम करके पिलायें। अन्त्र शुद्धि एवं विबंध (सुद्दे) निर्हरण के लिये ५ तोला एरण्ड तैल १२ तोले अर्क गुलाब या १२ तोले अर्क सौंफ में मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलायें और बोतल में गरम पानी भरकर शूल के स्थान पर सेंक करें। यदि इस उपाय से शूल शांत न हो और मलोत्सर्ग न हो, तो एक सेर उष्ण जल में १ तोला देशी साबुन घोल लेवें और इसमें २॥ तोला एरण्ड तैल तथा १ तोला तारपीन का तैल मिलाकर वस्ति देकर अन्त्र का शोधन करावें। यदि एक बार के बस्तिदान से शूल कम न हो, तो एक घंटे तक शूल के स्थान को सेंकते रहें। तदुपरांत पुनः वस्ति करें, जिसमें वायु या विबंध (सुद्दे) दूर होकर शूल शांत हो जाय। शूल कम होने के पश्चात् सनाय मक्की और सफेद निसोथ प्रत्येक ७ माशा, ४ तोला गुलकंद मिलाकर १२ तोले अर्क गुलाब के साथ तीसरे दिन खिला दिया करें, जिसमें अन्त्र शुद्ध रहें और प्रति दिन ७ माशे जुवारिश कमूनी खिलाकर ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज १२ तोले अर्क सौंफ में पीसकर ४ तोला शर्वत दीनार मिलाकर १५–२० दिन निरंतर सवेरे-शाम पिलाते रहें। शूल की तीव्रता एवं कष्ट निवृत्ति के लिये कोई अवसादक एवं स्वापजनन औषध देनी चाहिये। उक्त गुण के लिये हब्बुश्शिफा २ गोली या १ माशा बरशाशा खिला देने से शूल कम हो जाता है। छुहारे की गुठली के बराबर साबुन का टुकड़ा काटकर इसे गोला एवं चिकना बनाकर गुलरोगन से स्नेहाक्त करके गुदा में स्थापन करने से भी मलोत्सर्ग में सहायता मिलती है।

यदि किसी उग्र चेष्टा या भारयुक्त वस्तु के उठाने से अन्त्र में बल या ग्रन्थि पड़कर (आन्त्र परिवर्तन होकर) या वृषणों में अन्त्र के अवतीर्ण हो जाने से या आन्त्रापसरण के कारण कुलंज का शूल उत्पन्न हो जिसको कुलंज हल्तिवाई (आन्त्रपरिवर्तनज शूल— Volvulus) कहते हैं। उक्त अवस्था में रोगी को चित्त लेटाकर उसके उदर को धीरे-धीरे मलें तथा उसके हस्त-पाद उठाकर मिलायें जिसमें अन्त्र अपने स्थान में आ जाय।

रोग निवृत्त हो जाने की दशा में ७ माशे जुवारिश कमूनी कबीर या ७ माशे जुवारिश जालीनूस या ७ माशे जुवारिश कुर्तुम में १ माशा नमक शैखुर्रईस या ४ रत्ती सफूफुल् इम्लाह मिलाकर कुछ दिन तक भोजनोत्तर सेवन कराते रहें। हब्ब कबिद ३ गोली या हब्ब हिल्तीत ३ गोली, या हब्ब पपीता ३–३ गोली या कबिदी २–२ टिकिया भी भोजनोत्तर खिलाना लाभकारी है। बिल्कुल आराम हो जाने पर बलवर्धनार्थ दवाउल्मिस्क मातदिल जवाहर वाली या ७ माशा जुवारिश शाही में खुब्सुल्हदीद १ टिकिया या कुश्ता फौलाद १ टिकिया मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

वक्तव्य—यदि शूल तीव्र हो और मूर्च्छा के आवेग होने लगें, तो प्रथम अवसादक ओषधि का उपयोग अनिवार्य होता है। कुलंज का एक उग्र एवं असाध्यतम भेद, जिसमें अन्त्रों में इतना प्रवल विबंध (सुद्दा) होता है कि मुख-मार्ग से वमन में मल आता है अर्थात् मलगंधि वा मलकी छर्दि होती है, उसे यूनानी वैद्य 'एलाऊस' और पाश्चात्य वैद्य (डॉक्टर) 'इन्टेस्टाइनल ऑब्स्ट्रक्शन' और आर्य वैद्य 'बद्धगुदोदर' कहते हैं। यह अत्यन्त भयङ्कर स्थिति होती है। इससे कोई-कोई भाग्यवान् रोगी ही बचता है। इसका निदान, चिकित्सा और अन्यान्य लक्षण कुलंजवत् होते हैं। अतएव इसका वर्णन पृथक नहीं किया गया। ऐसी भयावह स्थिति में किसी चतुर एवं अनुभवी वैद्य, हकीम या डाक्टर के परामर्श से चिकित्सा करनी चाहिये।

अपथ्य—जिनको कुलंज का आवेग हो चुका हो या मलावरोध रहता हो, उनको सदा गरिष्ठ, दीर्घपाकी एवं शीतल पदार्थों, जैसे आलू, अरबी, भिंडी कचालू, कच्चा दूध, उड़द-चने की दाल, चावल और बर्फ आदि के सेवन से बचना चाहिये।

पथ्य—रोगावस्था में कोई आहार न देवें। रोग कम होने पर लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, बकरी का शूरबा,[तीतर, बटेर या मुर्गे के मांस का शूरबा या मूंग-अरहर की दाल का यूष प्रभृति यथावश्यक धीरे-धीरे देना प्रारम्भ कर देवें।

६—रियाह अमआऽ

नाम—(अ०) रियाह अम्आऽ, नफ्ख ; (फा०, उ०) नफ़ख शिकम ; (उ०, हिं०) अफारा ; (सं०) आनाह ; (अं०) फ्लैच्युलेंस (Flatulence)।

इस रोग में अपाचित भोजन दूषित होकर वायु उत्पन्न करता है, जिससे उदर अफर जाता है।

हेतु—गुरु, बाधी, सांद्र एवं पर्य्युषित भोजन करना, हरे शाक, मिठाई और फलों का अति सेवन इसके हेतु हैं। कभी-कभी सुख का जीवन व्यतीत करने और भोजनोत्तर तुरंत शयन कर जाने से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण—भोजन करने के कुछ घण्टा पश्चात् उदर अफर जाता (स्फीत हो जाता) है और जब तक उद्गार आदि आकर वायु का उत्सर्ग न हो जाय, तब तक तबीअत हलकी नहीं होती। कभी अधिक स्फीति के कारण उदर में शूल होता है, हृदय धड़कने लगता है और पेट में गुड़गुड़ाहट (कराकिट) मालूम होती है।

चिकित्सा—साधारण अवस्था में ५ माशा सौंफ या ५ माशा अजवायन चाबकर उसका रस चूसें या १ माशा सफूफ सुलेमानी खास या माशा सफूफ

नमक शैखुर्रईस भोजनोत्तर चाट लिया करें। भोजनोत्तर ७ माशा जुवारिश कमूनी या ७ माशा जुवारिश जालीनूस का सेवन भी लाभकारी है। उग्र अवस्था में ७ माशा जुवारिश बसवासः खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा अनीसून, ३ माशा कुसूस के बीज १२ तोले अर्क सौंफ में पीस-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर सवेरे-शाम पिलाना चाहिये। ३-३ गोली हब्ब तंकार भोजनोपरांत खिला दिया करें। तीव्रावस्था में सूए हज्म (अजीर्ण) में वर्णित उपक्रम करें।

अपथ्य--वादी, गुरु, दीर्घपाकी, आध्मानकारक वस्तुओं, जैसे--आलू, अरवी, कचालू, उड़द की दाल, मटर, लोबिया आदि के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--लघु, शीघ्रपाकी आहार, जैसे--चपाती के साथ बकरी के मांस का शूरबा देवें। शाकों में से कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक आदि देवें।

७—कब्ज

नाम—(अ०) क़ब्जुल् अम्आऽ, हुस्र; (उ०) क़ब्ज; (सं०) मलावरोध, मलबद्धता; (अं०) कॉन्स्टिपेशन (Constipation)।

वक्तव्य—यह कुलंज के प्रकार का एक रोग है, जिसमें मल की प्रवृत्ति (पायखाना) कठिनता पूर्वक या विल्कुल ही नहीं होता। कुलंज और इसमें अंतर यह है कि कुलंज में शूल का होना अनिवार्य है, किंतु कब्ज में नहीं। इसके ये दो भेद हैं--(१) आकस्मिक या कृत्रिम और (२) स्थिर या चिरज। उत्तर लिखित भेद को पाश्चात्य वैद्यक में 'हैबिच्युअल कॉन्स्टिपेशन (Habitual Constipation)' कहते हैं। कभी-कभी साधारणतया मल कम आया करता है, जिसके ये दो रूप हैं—प्रथम यह कि साधारण काल से देर में मल विसर्जन हो, जैसे दूसरे-तीसरे दिन मल की प्रवृत्ति हो। द्वितीय यह कि समय में तो परिवर्तन न हो, किंतु प्रमाण में कमी हो जाय। इसको भी कब्ज ही कहते हैं। साम्प्रत यह व्याधि व्यापक है।

हेतु—कभी श्लेष्माधिक्य या अन्याय हेतुओं से अन्त्रों की मलविसर्जनी शक्ति दुर्बल हो जाती है। कभी गुरु एवं दीर्घपाकी आहार के अति सेवन सुद्दे (मलग्रन्थि) बन जाते या अन्त्रों में पित्त का यथावत् स्राव न होने से और मल प्रवृत्ति के लिये प्रेरणा नहीं मिलने से, कभी-कभी मानसिक कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने से वातनाड़ियाँ दुर्बल हो जाती हैं और अन्त्रों की मलविसर्जनी शक्ति दुर्बल होकर कब्ज का रोग प्रगट हो जाता है। आलस्य, काम-काज न करने, सुस्त पड़ा रहने, सार्वांगिक दौर्बल्य तथा अर्शरोग में भी यह व्याधि लग जाता है।

लक्षण--मल त्याग के समय अधिक देर लगती है। शुष्क स्याही मायल और दुर्गन्धित मल कठिनाई से विर्जित होता है। कभी मलत्याग के समय मल काठिन्य एवं मलग्रन्थि (सुद्दों) के कारण रक्त और श्लेष्मा भी आ जाती है। अन्त्रों में देर तक मल के रहने के कारण उदर में दुर्गन्धित वायु उद्भूत होकर आध्मान हो जाता है। आलस्य और बुद्धिमान्द्य होता है। शिरःशूल, हृत्स्पंदन शरीर की पांडुरवर्णता या पीतवर्णता अति अङ्गमर्द, जृम्भा, पिंडलियों में हलकी पीड़ा—ये लक्षण होते हैं।

चिकित्सा--आकस्मिक कब्ज (मलावरोध) में ४ टिकिया मुलय्यिन रात्रि में सोते समय पाव भर दूध के साथ सप्ताह में एक-दो बार खिला दिया करें। नित्य बने रहने वाले (दायमी) कब्ज में १ तोला समूचा ईसबगोल रात्रि में सोते समय ताजे पानी से फँका देना या १ तोला मीठे बादाम का तेल गरम दूध में मिलाकर पिलाना या अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या अतरीफल जमानी ७ माशा रात्रि में सोते समय दूध के साथ देना भी लाभकारी होता है।

जब कफाधिक्य के कारण कब्ज हो, तो ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना १२ तोले अर्क सौंफ में पीसकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन पिलायें। इससे दूर न हो तो खमीरा बनफ्शा के स्थान में ४ तोला शर्बत दीनार मिलाकर पिला दिया करें। हब्ब तंकार ३ गोरी या ५ माशा माजून सनाय रात्रि में सोते समय गरम पानी से खिलाना भी लाभकारी है। यदि इन उपायों से लाभ न हो, तो ७ माशा सौंफ और ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का जल में उबाल-छानकर ५ तोला अमलतास का गूदा, ४ तोला तरंजबीन, ४ तोला बूरा (शकर सुर्ख), ५ दाने बादाम के मग्ज के शीरा की योजना कर ४ तोला गुलकंद मिलकर पिलायें या ५ तोला एरण्ड तैल पाव भर गाय के कुनकुना गरम दूध में मिलाकर पिलायें। ५ दाने पीले अंजीर को पाव भर गाय के दूध में २ तोला मिश्री मिलाकर उबालें। पुनः अंजीर पृथक् करके इस दूध को रात्रि में सोते समय पीकर सो रहने से भी मल शुद्ध हो जाता है और कब्ज जाता रहता है।

हबूब मुलय्यिन तबा--पीत एलुआ ४ तोला, ५ तोले अर्क गुलाब में ३ दिन तक भिगो रखें। इसके उपरान्त इसमें रूमी मस्तगी ३ माशा, सफेद निशोथ ६ माशा और मुलेठी का सत १ तोला बारीक चूर्ण करके मिलायें और चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमें से ३–४ गोली रात्रि में सोते समय ताजे पानी या गरम दूध से खिलायें।

कभी-कभी कब्ज के साथ अफारा (नफख) भी हो जाता है और उदर अफर जाता है तथा मूत्र अवरुद्ध हो जाता है। उक्त अवस्था में ६ माशा सौंफ, चूहे की मींगनी ६ माशा, एलुआ ६ माशा पानी या अर्क गुलाब में पीसकर कुनकुना गरम करके पेड़ू के स्थान पर अर्थात् नाभि के नीचे लेप करने से मूत्र एवं मलका उत्सर्ग शीघ्र हो जाता है और अफारा जाता रहता है।

कभी-कभी कब्ज की दशा में औषधियों से लाभ नहीं होता। उक्त अवस्था में बस्ति देनी चाहिये।

बस्ति योग--एरण्ड तैल ४ तोला, साबुन १ तोला, नमक ३ माशा, एक सेर पानी में मिलाकर बस्ति करें। इससे मल शुद्ध होकर अन्त्र शुद्धि हो जाती है। दोष मिट जाने पर १ टिकिया खुब्सुल् हदीद (मण्डूर भस्म), ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल में मिलाकर खिला दिया करें या २-२ गोली हब्ब कबिद भोजनोत्तर खिलायें।

अपथ्य--गरिष्ठ एवं दीर्घपाकी पदार्थ, उड़द या चने की दाल, आलू, अरवी, मटर आदि सेवन न करें। बारीक आटे या मैदे की रोटी और हलवा पूरी, कचौड़ी आदि के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--बकरी के मांस या मुर्गे का शूरबा, मामूली शाकों, जैसे कद्दू, पालक, कुलफा, तुरई, टिंडा आदि चपाती के साथ देवें या शूरबा में चपाती भिगोकर खिलायें। पुदीना या हरे धनिया की चटनी भोजनोपरान्त सेवन करें। फलों में आम, खरबूजा, संतरा, अंगूर, अमरूद, अंजीर, आलूबोखारा, आलूचा, जरदालू, आड़ू आदि भोजनोपरान्त खाना भी कोष्ठमार्दव कर (मुलय्यिन) है।

८--दीदान

नाम--(अ०) दीदानुल् अम्आऽ, दीदान; (फा०) दीदाने शिकम; (उ०) पेट या आँतों के कीड़े; (सं०) अन्त्रकृमि (उदरकृमि), कृमि, क्रिमि; (अं०) इन्टेस्टाइनल वर्मज़् (Intestinal worms)।

वक्तव्य--इस रोग में अन्त्रों के भीतर विभिन्न प्रकार के कृमि उत्पन्न हो जाते हैं, जो शीघ्र वा देर में विविध प्रकार के रोग-लक्षण और कष्ट उत्पन्न कर देते हैं। ये अन्त्रकृमि तीन प्रकार के होते हैं--(१) केंचुए जो केंचुओं की भाँति गोल-लंबे होते हैं। ये ऊर्ध्वान्त्र में उत्पन्न होते हैं। इनको अरबी हयात, आयुर्वेद में 'गण्डूपद क्रिमि' और अंगरेजी में 'राउंडवर्म (Round worm) कहते हैं। (२) कद्दूदाना जो सर्वथा कद्दू के बीज के समान, श्वेत एवं चपटे होते हैं। कभी-कभी ये पृथक्-पृथक् होते हैं और कभी मल के साथ इनकी

गड्डियाँ बनी हुई विसर्जित होती हैं। इस प्रकार के कद्दूदाना अन्त्र, अन्त्र भाग विशेष (कोलून) और उण्डुक में उत्पन्न हुआ करते हैं। इनको अरबी में **हब्बुलक़र्ज** आयुर्वेदमें 'पृथव्रध्न निभा व्रध्नाकार कृमि' और अंगरेजीमें 'टेप वर्म (Tape worm)' कहते हैं। (३) **चुनूने या चुरने** जो छोटे-छोटे श्वेत एवं सूत के समान बारीक होते हैं। इनका आकार-प्रकार ऐसा होता है, जैसे सिरका में पड़े हुए कृमियों का। इसी हेतु इनको अरबी में **'दूदुलख़ल्ल'** कहते हैं। आयुर्वेद में इन्हें 'सूत्रकृमि', हिंदी में 'सूती कीड़े' और अंगरेजी में थ्रेड वर्म (Thread worm)' कहते हैं।

हेतु—कृमि उत्पन्न का हेतु श्लैश्मिक द्रव है, जो अप्रकृत ऊष्मा के प्रभाव से अन्त्रों में दूषित हो जाता है। श्लैष्मिक द्रवोत्पत्ति का हेतु शीतल जल का अतिसेवन और हरे शाकों का सेवन है।

लक्षण—इस रोग के विभिन्न रोगियों में इसके विभिन्न लक्षण पाये जाते हैं अर्थात् एक ही रोगी में इसके समस्त लक्षण विद्यमान नहीं होते। क्वचित् ऐसा भी होता है कि प्रगटतः कोई लक्षण भी विद्यमान नहीं होते। तात्पर्य यह कि जब अन्त्रों में कृमि विद्यमान होते हैं, तब उदर साधारणतया फूला हुआ रहता है। उसमें आध्मान और आटोप होता है तथा कुलंजवत् शूल होने लगता है। रोगी विशेषकर यदि बालक हो, तो वह अपने नाक को नोचता रहता है। सीवन और गुदा में कण्डू होता है। मुंह से दुर्गन्ध आती है। भूख ठीक नहीं लगती और मल की प्रवृत्ति भी अनियमित होती है। शिरःशूल और चेहरा पीला होता है। रोगी निद्रा में दांत पीसता है और उसके मुख से लाला बहती है। जब कृमि अन्त्रों में अत्यधिक संक्षोभ उत्पन्न करते हैं, तब बालकों और कोमल प्रकृति स्त्रियों में विशेष रूप से कतिपय वातिक लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। उदाहरणतः शिर चकराता है, कान में बाजे से बजते हैं। कभी आक्षेप, कम्प या मृगी हो जाती है। क्वचित् रोगी उन्मादग्रस्त भी हो जाता है। केंचुओं की दशा में मिचली और हृदयोद्वेष्टन होता है। कद्दूदानों में मरोड़, अन्त्रशूल और अत्यन्त बेचैनी होती है। चुरनों में सरलान्त्र के भीतर और गुदा के समीप कण्डू हुआ करता है।

चिकित्सा—प्रथम गाय के दूध में मिश्री मिलाकर तीन दिन तक पिलायें और अत्यंत मधुर, स्वादिष्ट एवं स्नेहाक्त भोजन करायें। पुनः कृमिघ्न औषधि सेवन करायें और दूसरे दिन विरेचन देवें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) बायबिडंग ९ माशा, (२) सरख्स १० माशा, (३) तुर्मुस ६ माशा, (४) कालादाना २ माशा, (५) कुष्ठ ३ माशा, (६) सफेद निशोथ ६ माशा, (७) नमक हिंदी ५ माशा, (८) लहसुन ३

दाना, (६) तरामिरा ६ माशा, (१०) पुदीना ३ माशा ये सब ओषधियाँ पृथक् पृथक् कृमिघ्न होने के कारण अन्त्रकृमियों का नाश एवं निर्हरण करती हैं। अन्त्रस्थ मृत केंचुओं के निर्हरण के लिये राजी के मत से निम्न औषधियों का उपयोग लाभकारी है--(११) २ से ५ माशा तक कलौंजी का चूर्ण या इसका क्वाथ और इन्द्रायन के स्वरस में पीसकर नाभि के ऊपर किया हुआ इसका लेप भी गुणकारक है। (१२) शफ्तालू के हरे पत्र और कोमल शाखायें कूट-पीसकर नाभि के ऊपर लेप करने या उनका स्वरस पीने से केंचुए और कद्दूदाने निकल जाते हैं। (१३) सकमूनिया २ रत्ती और निशोथ ३ माशा नीहार-मुंह इसके सेवन करने से छोटे और बड़े उभय प्रकार के कृमि मृत होकर निर्हरण हो जाते हैं।

शैख और इब्न मासौया लिखते हैं कि (१४) कुलफा का स्वरस पीने से कद्दू दाना मरकर निकल जाते हैं। (१५) कच्चा लहसुन नीहार मुँह खाने और नाभि के ऊपर लेप करने तथा (१६) ३ माशा उशक को अफसंतीन के क्वाथ के साथ सेवन करने से भी उक्त लाभ होता है। समस्त यूनानी वैद्यों का इस विषय में मतैक्य है कि कद्दूदाना के निर्हरण के लिये (१७) कमीला (४ माशा की मात्रा में) एक सर्वोत्तम औषधि है। इसको गुलकंद अथवा किसी अन्य उपयुक्त ओषधि में मिलाकर सेवन करायें। जालीनूस के मत से इस विषय में तिर्याक फारूक भी अतीव लाभकारी है। लाल चनों को दो दिन और एक रात तीक्ष्ण सिरका में भिगो देवें और खूब भूख लगने पर सेवन करें। इससे कद्दू दाने मर जाते हैं। इसी प्रकार ६ माशा राई का चूर्ण शीतल जल से सेवन करने से भी लाभ हो जाता है। राजी ने अलहावी नामक अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ में लिखा है कि कद्दूदानों के निर्हरण हो जाने के उपरान्त गंधक, चुकन्दर, लवण, जैतून का तेल, कबर और अखरोट के तेल में से कोई द्रव्य भोजन से पूर्व सेवन कर लेना चाहिये। इससे पुनः इस रोग की पुनरावृत्ति नहीं होगी।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) अतरीफल दीदान रात्रि में सोते समय अथवा प्रातः नीहारमुँह ५ से १२ माशे तक १२ तोले अर्क गावजवान के साथ सेवन करने से अन्त्रकृमि नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार (२) अतरीफल किंवील १ तोला, १२ तोले अर्क बादियान के साथ विरेचन द्वारा उदर शुद्धि कर लेने के उपरान्त सेवन करने से इसमें अद्भुत् लाभ होता है। चुरनों और केंचुओं में विशेष लाभकारी एवं कृतप्रयोग है। इसको चार-पाँच दिन खिलाकर पुनः एक विरेचन दे देना चाहिये, जिसमें मृत कृमि निःसरित हो जायं। (३) हब्ब दीदान प्रति दिन १ गोली गरम पानी से सेवन करने से कद्दूदाने मरकर

निकल जाते हैं। (४) हब्ब मुलीम १ गोली माता के दूध में घिसकर देने से बालकों के चुरने दूर होते हैं। (५) सफूफ बिरंगी १।। तोला गरम पानी से सेवन करने से भी उदरकृमि विशेष कर केंचुए मरकर निकल जाते हैं। इसी प्रकार सफूफ दीदान, सफूफ कमून और माजून सरख्स का उपयोग भी लाभकारी है।

सिद्धयोग--(१) हर प्रकार के उदरकृमि नष्ट करनेवाली औषधि--शहतूत के वृक्ष की छाल २ तोला, खट्टे अनार के वृक्ष की छाल २ तोला दोनों को उबाल-छानकर पियें। (२) कद्दूदाने और लंबे कृमियों को निकालने वाली औषधि---निशोथ, कमीला कालादाना, सरख्स प्रत्येक १७ माशा, दिर्मनः तुर्की विरंग काबुली प्रत्येक ७ माशा, नमक हिंदी १ माशा, समस्त द्रव्यों को कूटकर दुग्ध और शर्करा में मिलाकर सेवन करें। (३) उदरकृमियों को मार-निकालनेवाला चूर्ण-योग--छिला हुआ बिरंग काबुली, सरख्स, सफेद निशोथ, कमीला प्रत्येक १७ माशा, बाकला, मिश्री, कुष्ठ तिक्त प्रत्येक २ तोला, दिर्मनः तुर्की ३ तोला, नमक हिन्दी ४ माशा---समस्त द्रव्यों को कूटकर ७ माशा प्रतिदिन नीहारमुंह खिलायें। (४) उदरकृमि निस्सारक औषधि जीरा किर्मानी, करंजुवा की गिरी, पलास पापड़ा, कमीला, बायविडंग प्रत्येक ४ माशा बारीक पीसकर गुड़ में मिलाकर दो बार खिलायें। (५) युवा और बालक कृमि-नाशक लेप---अफसंतीन रूमी, छिला हुआ बायबिडंग, इन्द्रायन का गूदा प्रत्येक ७ माशा---समस्त द्रव्यों को वृषपित्त के साथ अथवा केवल जल में पीसकर उदर के ऊपर लेप करें।

अपथ्य---गुरु, दीर्घपाकी, कफकारक सांद्र पदार्थ, तनूर एवं मैदा की पकी हुई रोटी, चने की दाल, आलू, अरवी, कचालू, मटर और लोबिये की फलियां, अमरूद, नासपाती और बेर आदि खाने से परहेज करें, बर्फ का अति सेवन न करें।

पथ्य---बकरी के बच्चा का मांस, मुर्गा या तीतर या बटेर का शूरबा या भुना हुआ चटक मांस गरम मसाला आदि डालकर खूब खिलायें। आटे में नमक और सोडा मिलाकर रोटी पकाकर खिलायें। पुदीना, अदरक की चटनी जीरा मिलाकर खिलायें। फलों में आड़ू, अखरोट (२ तोला) और मीठा बादाम (२ तोला) इनका अति सेवन परम गुणकारी है।

गुदरोगाध्याय (अम्‌राज़ मक़्‌अद्) ९

१—बवासीर

बवासीर के ये दो भेद हैं--(१) खूनी (बवासीर खूनी) और (२) रीही अर्थात् बादी (बवासीर रीही, रीहुल् बवासीर)। नीचे इनमें से प्रत्येक का विवरण किया जाता है--

बवासीर खूनी

नाम--(अ०) बवासीर दामी (दामियः); (उ०) बवासीर खूनी, बवासीर; (सं०) रक्तार्श; (अं०) हीमोरॉइड्‌ज (Hoemorrhoids) पाइल्ज (Piles)।

वक्तव्य—गुदोष्ठों (गुदा के किनारों) पर अंकुर (मस्से) उत्पन्न हो जाते हैं जिन्हें यूनानी वैद्य **'बवासीर'** कहते हैं। गुदरोगों में से यह एक प्रसिद्ध रोग है जिसमें गुदस्थ स्रोतों के मुख पर सांद्र सौदावी रक्त से ऐसे अंकुर उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे कभी-कभी रक्तस्राव होता रहता है और उनमें न्यूनाधिक शोथ एवं वेदना भी होती है।

हेतु और लक्षण--गरमी की तीव्रता और उष्ण आहार विशेषकर लाल मिर्च और मांस के अतिसेवन से बारंबार तीव्र विरेचन लेने से तथा भारतवर्ष की प्रकृति-भूत उष्णता के कारण रक्त विदग्ध होकर सांद्रीभूत एवं भारी हो जाता है तथा नीचे की ओर प्रवृत्त हो जाता है और अन्त्र के स्रोतों की उन अंतिम शाखाओं तक पहुँचकर जो सरलान्त्र से संलग्न हैं, दाह एवं उद्वेष्टन उत्पन्न करता है तथा उन स्रोतों के सिरे इस प्रतान-वितान (खिंचने-खिंचाने) के प्रभाव से स्फीत होकर उभर आते हैं और अंकुर (मस्से) कहलाते हैं। इनमें तीव्र वेदना उत्पन्न हो जाती है तथा उक्त विदग्ध रक्त की उष्णता एवं रूक्षता उनको विदीर्ण कर देती है जिससे रक्तस्राव आरंभ हो जाता है। कभी-कभी अत्यंत तीव्र कष्ट के कारण गुदा में शोथ भी हो जाता है। स्रोतों के स्फीत हो जाने के कारण मलत्यागमार्ग संकीर्ण हो जाता है जिससे मलावरोध बना रहता है। यदि कठिनता पूर्वक मलोत्सर्ग होता भी है तो अंकुरों एवं स्रोतों पर पीडन होने (दबाव पड़ने) से कष्ट एवं वेदना के अतिरिक्त रक्त भी बहने लगता है। रक्त कभी मल के साथ मिला हुआ आता और कभी बिंदुशः टपकता है। कभी इतना रक्तस्राव होता है कि रोगी दुर्बल होकर मूर्च्छित हो जाता है। तीव्र वेदना

एवं कष्ट के कारण अंकुर शोथयुक्त होकर गुदा से बाहर निकल आते हैं। गुदा के स्थान पर बोझ, खर्जू एवं दाह होता है। अर्शांकुर कभी भीतर होते हैं। उक्त अवस्था में औषधादि लगाने में कष्ट होता है। कभी वे बाहर की ओर होते हैं। उक्त अवस्था में औषधादि लगाने में कष्ट होता है, कभी वे बाहर की ओर होते हैं। उक्त अवस्था में औषधि आदि सरलता से लगाई जा सकती है।

चिकित्सा--जब तक अर्शांकुरों से काला एवं गाढ़ा रक्त बहता रहे तथा शक्तिदौर्बल्य प्रगट न हो तब तक रक्त का बहना बन्द न करें। जब रोगी दुर्बल हो जाय और शुद्ध एवं रक्तवर्ण शोणित स्रावित हो तब उक्त अवस्था में रक्त-स्तंभन औषधियों का उपयोग करें। सुतरां सवेरे १ माशा रसवत प्रथम खिलाकर ऊपर से ४ माशा रेशा खतमी जल में भिगोकर लबाब निकालें और अंजवार की जड़ ३ माशा, हब्बुल् आस ३ माशा जल में पीसकर शीरा निकाल-कर लबाब में मिला लेवें और २ तोला शर्बत बनफ्शा या शर्बत अंजबार या शर्बत हब्बुल् आस २ तोला मिलाकर ७ माशे समूचा इसबगोल और ५ माशे बारतंग के बीज का प्रक्षेप देकर पिलायें। सायंकाल हब्ब बवासीर सुर्ख २ गोली खिला-कर शर्बत अंजबार २ तोला अर्क गावजबान १२ तोले में मिलाकर पिला दिया करें। रसवत १ माशा और गुग्गुल १ माशा यथावश्यक हरे गंदना के रस में पीसकर अर्शांकुरों पर लेप करें। या १० तोले दही का पानी लेकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर प्रतिदिन पिला दिया करें। अर्शांकुरों पर मरहम माज़ू या मरहब साईदा चोबनीब लगायें।

यदि अर्शांकुरों में खुजली हो तो पानी में कुचला घिसकर उन पर लेप करें अथवा मसीकृत प्रवालमूल ४ रत्ती, मसीकृत मोती ४ रत्ती, ७ माशे खमीरा खशखाश में मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से विहीदाना ३ माशा, कनौचा के बीज ३ माशा, इसबगोल ३ माशा जल में भिगोकर लवाब निकालकर अंजबार मूल और हब्बुल्आस ३-३ माशा जल में पीसकर शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर पिलायें और बूरा (शकर सुर्ख) और हरा माजूद ६ माशा जल में पीसकर अर्शांकुरों पर लेप करायें। जब अर्शांकुर शोथ युक्त होकर फूल जायं और रक्त स्रावित न हो तो बासलीक सिरा का वेधन करायें अथवा अर्शांकुरों पर जोंक लगवायें और शोथ एवं वेदना निवारण के लिये उन पर यथावश्यक मरहम काफूर लगायें। अथवा १-१ माशा रसवत और अफीम घी में मिलाकर अर्शांकुरों पर मरहम की भांति लगायें। भांग की पत्ती १ तोला यथावश्यक गाय के दूध में उबालकर उससे गुदा में वफारा देवें और सीठी की टिकिया बनाकर कुनकुना गरम अर्शांकुरों पर बांधे। छोटी हड़ घी में भूनकर चूर्ण बनाकर १ तोला प्रति दिन सेवन करने से रक्त बन्द हो जाता है।

नुसखा हब्बूब बवासीर मुजर्रब--रसवत, नीम के बीज की गिरी, बकायन के बीज की गिरी, काली हड़ प्रत्येक १ तोला--सबको कुकरौंधा के पत्र-स्वरस में पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें और २-२ गोली सवेरे-शाम ताजे जल से सेवन करायें।

टि०--अर्शांकुरों का छेदन कराना और अतीव आवश्यकता के बिना रक्त बन्द करना अहितकर है ; क्योंकि अर्शोजात रक्त के अवरुद्ध हो जाने से हृदय, मस्तिष्क एवं यकृत् पर कुप्रभाव पड़कर अन्यान्य भयावह एवं सांघातिक व्याधियों के प्रादुर्भाव का भय होता है। यदि अत्यन्त रक्तस्राव हो रहा हो तो रोगी को चेष्टा नहीं करने देवें और पाँव किंचित् ऊँचा रखकर चारपाई के ऊपर लिटाये रखें।

अपथ्य--उष्ण पदार्थ, जैसे मांस के अति सेवन, मद्य सेवन, लालमिर्च, बैंगन, चाय, अंडा प्रभृति के खान-पान से, उग्र चेष्टा एवं श्रम करने, धूप में चलने-फिरने और भार उठाने से परहेज़ करें।

पथ्य--लघु, नरम और शीघ्रपाकी आहार, जैसे--मूँग की नरम खिचड़ी या बकरी का कम मिर्च का शूरबा, कुलफा, ककड़ी, कद्दू, तुरई प्रभृति शाक यथाभ्यास देवें। मूँग की दाल चपाती के साथ और खशका दूध के साथ खिलायें।

बवासीर रीही

नाम--(अ०) रीहुल् बवासीर (बवासीर की रीह वा वायु) बवासीर रीह (ही) ; (उ०) रीही बवासीर ; बादी बवासीर ; (हिं०) बादी बवासीर, (सं०) वातार्श, (अं०) क्रॉनिक (Chronic Dyspepsia)।

इस रोग में यद्यपि रक्तादि नहीं निकलता, तथापि एतज्जन्य कष्ट रक्तार्श से कम नहीं होते। इसमें वायु (रियाह) होती है जो प्रायः उदरावकाश में कभी-कभी सम्पूर्ण शरीर में घूमती रहती है। इसमें अर्शांकुर बिल्कुल नहीं होते।

हेतु--चिरज मलावरोध और आर्द्र एवं शीतल स्थान पर अधिक बैठने से, बादी और वाष्पकारक पदार्थ या मांस के अतिसेवन से यह रोग हो जाता है। कभी-कभी अति मद्य सेवन से यकृत् की क्रिया मन्द होकर या अन्यान्य यकृद्रोगों के कारण और स्त्रियों में गर्भ काल में भी यह व्याधि हो जाती है।

लक्षण--उदरावकाश में वायु फिरती हुई मालूम होती है और मलावरोध होता है। कभी-कभी अङ्गमर्द एवं सन्धिपीड़ा होती तथा कटि एवं जानु में भी पीड़ा होती है। उठते- बैठते जोड़ चटख्ते हैं। पचन विकार एवं क्षुधानाश होता, शरीर एवं चेहरे का वर्ण फीका (विवर्ण) पीताभ एवं हरिताभ हो जाता है। कभी-कभी कण्डू रूप व्याधि भी हो जाती है।

चिकित्सा--उक्त अवस्था में सवेरे रसवत १ माशा, गूगुल १ माशा दोनों को पीसकर ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा अतरीफल मुक़ल या ५ माशा माजून मुकल में मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, अनीसून ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ में पीसकर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनपशा मिलाकर पिला दिया करें। सायंकाल हब्ब खुब्सुल्हदीद ३ गोली जल से खिला दिया करें। मलावरोध निवारण के लिये हड़ का एक मुरब्बा रात्रि में सोते समय खिला दिया करें और रसवत, नीम के बीज की गिरी, बकायन के बीज की गिरी प्रत्येक ६ माशा अर्क सौंफ में पीसकर इसमें रूई का फाहा आप्लुत करके गुदा में स्थापन करें जिसमें कण्डू, वेदना एवं शोथ शांत हो।

इस रोग के साधारण कष्ट सदैव रहा करते हैं। परंतु किसी कुपथ्य के कारण अथवा अन्यान्य वाह्य हेतुओं से आवेग के साथ कष्ट में वृद्धि हो जाती है। आवेग दूर होने के पश्चात् कुश्ता फौलाद १ टिकिया या कुश्ता खुब्सुल्‌हदीद १ टिकिया ७ माशे दवाउल्मिस्क मोतदिल में मिलाकर कुछ दिन सवेरे खिला दिया करें और सायंकाल हब्ब मुकल् ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ के साथ फँका दिया करें।

इस रोग में स्नान करना, घोड़े की सवारी और थोड़ा व्यायाम करना या कुछ दूर तक पैदल चलने का अभ्यास रखना लाभकारी उपाय है। यह गोली भी गुणकारी हैं--रसवत, नीम के बीज की गिरी, वकायन के बीज की गिरी, काली हड़, नरकचूर, गूगल (मुकल अर्जक), काली मिर्च, रूमी मस्तगी प्रत्येक ६ माशा लेकर सबको पीसकर कुकरौंधा के रस में घोंटकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बनायें। इसमें से २ गोली रात्रि में सोते समय खिलायें। यदि दोष की प्रगल्भता हो तो माली खोलिया में लिखे अनुसार सौदा का शोधन करें। और अफतीमून विलायती ५ माशा १२ तोले अर्क माउज्जुब्न में रात्रि में भिगोकर प्रातः मल-छानकर २ तोले शीरखिश्त मिलाकर पिलाने से यह रोग और माली खोलिया विशेष (मराक) भी नष्ट हो जाता है। समस्त आमाशयान्त्र बलदायिनी (दीपन), वातानुलोमन और मृदुसारक औषधियां इस रोग में लाभकारी होती हैं।

अपथ्य--बादी (वायुकारक) और गरिष्ठ पदार्थ आलू, अरवी, भिंडी, बैंगन, दूध, दही और दूध के बने पदार्थ, अधिक मधुर एवं अम्ल पदार्थ सिरका की चटनी और अचार आदि तथा लाल मिर्च के अति सेवन से परहेज करें।

पथ्य--चपाती, बकरी का शूरबा, कम मिर्च का बकरी के बच्चे का भुना हुआ मांस, मुर्गी का बच्चा, मूँग-अरहर की दाल, फलों में खूबानी, अंगूर और सेव आदि सेवन करायें।

२--नवासीर

नाम--(अ०) नवासीर, नवासीर मक्ऊद; (उ०, हिं०) भगन्दर; (सं०) भगन्दर; (अं०) फिश्च्युला इन एनो (Fistula in Ano)।

नवासीर नासूर का बहुवचन है जिसका अर्थ पुरातन गंभीर व्रण है। इसके ये दो भेद हैं--(१) नाफिज जिसमें उसका छिद्र सरलान्त्र तक चला जाता है। यह असाध्य एवं दुश्चिकित्स्य हुआ करता है, क्योंकि इससे मल निर्हरण होता रहता है। (२) गर नाफिज जिसमें छिद्र दोनों ओर नहीं खुलता, केवल मांस के भीतर रहता है और बाहर की ओर निकलता है। यह साध्य एवं चिकित्स्य हो सकता है। वाह्य और आभ्यंतर भेद से इसके दो उपभेद होते हैं। इन दोनों के निदान की सहज विधि यह है कि नासूर में सलाई और गुदा में ऊंगली डालकर अन्वेषण करें कि उक्त सलाई का सिरा ऊंगली को स्पर्श करता है या नहीं। यदि स्पर्श करता हो तो नाफिज वरन् गैरनाफिज समझें।

हेतु--शैखुर्रईस लिखते हैं कि कभी-कभी गुदा के अन्य क्षत एवं व्रण स नवासीर (भगंदर) की उत्पत्ति होती है और कभी-कभी बवासीर मुताकिला इनका हेतु हुआ करता है। जर्जानी और एलाकी के मतानुसार नवासीर और बवासीर के एक ही हेतु होते हैं।

लक्षण--इस रोग में गुदौष्ठों पर किसी जगह छिद्र होता है जिससे प्रतिक्षण रक्त एवं पूय मिला हुआ पीले रंग का पानी स्रावित होता रहता है। या छिद्र के स्थान पर दबाने से पीव निकलती है और बवासीर में उल्लिखित समस्त लक्षण पाये जाते हैं। यदि नाफिज हो तो मलत्याग के समय उससे मल निर्हरण हुआ करता है। यह असाध्य एवं दुश्चिकित्स्य है।

चिकित्सा--इस रोग की आभ्यंतरीय चिकित्सा तो वही है जिसका विवरण बवासीर खूनी में किया जा चुका है; किन्तु इसमें स्थानीय चिकित्सा एवं व्रण की शुद्धि अत्यावश्यकीय है। अतएव मृदुसारक औषधियों एवं उष्ण जल की वस्ति से व्रण को शुद्ध करते रहना चाहिये और नासूर के छिद्र में पिचकारी के द्वारा रोगन नासूर पहुँचाना या उसमें कपड़े की वत्ती आप्लुत करके स्थापन करना भी लाभकारी होता है। यदि नासूर गुदा के किनारे पर हो और सरलान्त्र पर्यंत नहीं पहुँचा हो तो प्रथम उसको दबाकर और सलाई डालकर मवाद

और पूयादि से शुद्ध करके रोगी को चित लेटाकर और नितम्बों के नीचे तकिया रखकर औषधि लगायें और जब तक औषधि सूख न जाय रोगी को उसी स्थिति में रखना चाहिये।

यदि नासूर सरलान्त्र पर्यंत पहुँच गया हो और वायु एवं मल उस मार्ग से उत्सर्गित होता हो तो उक्त अवस्था में चिकित्सा से सिवाय कष्टवृद्धि के और कोई लाभ नहीं हो सकता। ऐसी दशा में किसी चतुर शल्यहर्ता (सर्जन) के परामर्श से शस्त्र कर्म करा लेने से प्रायः उपकार होता है।

यह औषधि बन्द नासूर को खोलती और तत्स्थ पूयादि को शुद्ध करके कष्ट का निवारण करती है। गेहूँ का आटा १ तोला, शुद्ध मधु १ तोला और एक अंडेकी जर्दी, सबको परस्पर मिलाकर नासूर के ऊपर बाँधे। जल में बिल्ली की पसली पीसकर नासूर के भीतर टपकाने या उसमें कपड़े की बत्ती आप्लुत करके स्थापन करने से भी उपकार होता है।

अन्य एक बिच्छू को २ तोले गाय के घी में जलाकर उसमें बत्ती आप्लुत करके स्थापन करने या पिचकारी के द्वारा व्रण के भीतर प्रवेशित करने से भी लाभ होता है।

टि०--ऐसे रोगी को यदि मलावरोध हो जाय तो कोई तीव्र विरेचन न दे; अपितु कोई मृदुसारक औषधि देनी चाहिये। ५ दाने अंजीर विलायती रात्रि में एक पाव दूध में उबालकर वह दूध पिलाने से मलावरोध दूर हो जाता है।

अपथ्य--उष्ण, तीक्ष्ण मसालेदार, गुरु, बिष्टंभकारक, दीर्घपाक और बादी तथा गुड़-तेल के बने पदार्थ एवं लालमिर्च के अतिसेवन से परहेज करें।

पथ्य--लघु और मृदु, जैसे मूँग की नरम खिचड़ी या डबल रोटी, बकरी के शूरबे में भिगोकर और शीतल शाक जैसे कद्दू, तुरई, टिंडा, पालक, भिंडी आदि आवश्यकतानुसार देवें और कब्ज नहीं होने देवें।

--०--

३,४,५--वरम मक्अद, शिकाक मक्अद और हिक्कतुल् मक्अद

नाम--(अ०) वरमुल्म क़्अद; (उ०) मक़्अद की सूजन; (सं०) पायुशोथ, गुदपाक; (अं०) रेक्टायटिस (Rectitis)।

--(अ०) शिशुक़ाक़ुल्मक़्अद; (उ०) मक़्अद का फटना; (सं०) गुदचीर,; (अं०) फिशर ऑफ दी रेक्टम् या एनस (Fissure of the Rectum or Anus)।

--(अ०) हिक्कतुल् मक़ऊद; (उ०) मक़्अद् की खारिश; (सं०) गुदकण्डू; (अं०) प्ररायटिस एनाई (Pruritis Ani)।

हेतु--कभी अर्श या उदरकृमि एवं अजीर्ण के कारण स्त्रियों को गर्भावस्था में गुदकण्डू रोग हो जाता है। कभी तीव्र विरेचन के बारंबार उपयोग से अथवा अधिक मिर्च एवं मसालेदार भोजन करने या अति मद्य सेवन वा गुदा पर आघात लगने या किसी नुकीली वस्तु के चुभने से गुदा में शोथ हो जाता है। गुदचीर अर्श या भगन्दर रोग में हो जाता है।

लक्षण--मलत्याग-स्थान पर केवल कण्डू होता है। शोथ की दशा में गुद के चतुर्दिक दाह, शोथ और तीव्र पीड़ा होती है जिसकी टीसें पृष्ठ पर्यंत पहुँचती हैं। पेचिस और मरोड़ के साथ मलोत्सर्ग होता है। मल में स्याही मायल कफ निस्सरित होता है और बारंबार मूत्रोत्सर्ग होता है। गुदचीर में मलत्याग काल में गुदा में तीव्र पीड़ा एवं दाह होने के अतिरिक्त भगन्दर का दोष या अर्शोजात रक्त भी निकलता है।

चिकित्सा--गुदकण्डू में प्रथम रोगी को ३ टिकिया कुर्स मुलय्यिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलायें अथवा ३ तोला रेंडी का तेल एक पाव दूध में मिलाकर पिलायें जिसमें विरेक आदि होकर अन्त्र शुद्ध हो जायें। पुनः गुदा के ऊपर रोगन बनफ्शा या गुलरोगन या मरहम काफूर यथावश्यक तिला की भांति लगायें तथा रोगी को उष्ण जल में बैठायें। शोथ की दशा में रोगी को सुखपूर्वक रखें और उसे उष्ण जल में बैठायें अथवा गुलबनफ्शा १ तोला, खतमी के बीज १ तोला, खुबाजी के बीज १ तोला, सूखा मकोय १ तोला, १० सेर जल में उबालकर उसमें रोगी को बैठायें और गुलरोगन १ तोला मुर्गी के एक अंडे की सफेदी, हरे धनियेका रस ५ तोला मिलाकर इसमें ४ रत्ती अफीम की योजना कर शीशे या जस्ते की कटोरी में खूब घिसकर गुदस्थल में लेप करें तथा गुलबनफ्शा और गुलनीलूफर ७-७ माशा, कासनी के बीज ५ माशा, उन्नाब ५ दाना, आलूबोखारा ५ दाना समस्त द्रव्यों को रात्रि में गरम पानी में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर कुछ दिन तक पिला दिया करें।

यदि मलावरोध हो तो रात्रि में सोते समय एक हड़का मुरब्बा खिला दिया करें। गुदचीर के लिये बवासीर के प्रकरण में जिन योगों का उल्लेख किया गया है, उनका उपयोग करायें। भगन्दर जनित गुदचीर में कपड़े की बारीक बत्ती बनाकर रोगन नासूर में आप्लुत (लत) करके भगन्दरीय नाड़ी व्रण के स्थान पर रखवायें। कब्ज निवारण के लिये १ तोला समूचा इसबगोल या एक हड़का मुरब्बा खिला दिया करें और ६ माशा खतमी के बीज के लुआब और ६ माशा इसबगोल के लुलाब में १ तोला सफेद मोम और १ तोला गुलरोगन मिलाकर उसमें ३-३ माशा कतीरा और निशास्ता का महीन चूर्ण मिलायें।

पुनः गरम करके कैरूती की भांति तैयार करके गुदा पर लगाते रहें। मरहम काफूर, मरहम राल या मरहम जदवार लगाना भी लाभकारी है।

अपथ्य--उष्ण, तीक्ष्ण और मसालेदार वस्तु तथा बादी, गुरु एवं वाष्पकारक वस्तु, जैसे--उड़द की दाल, आलू, अरवी, कचालू आदि से परहेज करें।

पथ्य--पतले आहार यवमंड या सागूदाना, शूरबा, यखनी प्रभृति थोड़ी-थोड़ी मात्रा में थोड़े अन्तर से देवें। आराम होने पर धीरे-धीरे मूँग की दाल, चपाती या मूँग की नरम खिचड़ी आदि आवश्यकतानुसार देवें।

६—खुरूजुल् मक़अद

नाम--(अ०) ख़ुरूजुल् मक़अद; (उ०) काँच निकलना; (सं०) गुदभ्रंश; (अं०) प्रोलैप्सस एनाई (Prolapsus Ani)।

हेतु--यह रोग साधारणतया शोथ एवं अंगघात के कारण होता है। कभी सार्वदैहिक दौर्बल्य, उदरकृमि, प्रवाहिका, चिरज अतिसार वा ग्रहणी और हठीले कब्ज के कारण भी यह रोग हो जाता है। बालकों में यह रोग प्रचुरता से पाया जाता है।

लक्षण--मलत्याग के समय काँच (गुदा) बाहर निकल आती है। यदि शोथ के कारण हो तो गुदा पर सूजन होती है और बहुत कठिनाई से भीतर की ओर लौटती है। यदि घात (ढीला हो जाना) के कारण हो तो शोथज गुदभ्रंश के विपरीत यह सरलता से पुनः वापिस लौटाई जा सकती है। यदि कोई अन्य-कारण हो तो उसके विशिष्ट लक्षण व्यक्त होते हैं। रोग की प्रबलता होने पर मल की प्रवृत्ति के बिना कासने, हँसने और दैनिक कार्य करने से भी यह निकल आती है। कभी इसके ऊपर व्रण भी हो जाते हैं।

चिकित्साक्रम--मूल हेतु का पता लगाकर उसका परिवर्जन करें। वेदना शमनार्थ अवसादक विधियों का उपयोग करें। भांग की पत्ती दूध में महीन पीसकर गुदा के ऊपर लगायें। गुलनार सुर्ख, हरा माजू, अनार का छिलका प्रत्येक १ माशा--सबको महीन पीसकर भ्रष्ट गुद के ऊपर इसका अवचूर्णन करें और इसे धीरे-धीरे भीतर प्रविष्ट करके लंगोट बाँध लेवें। बलूत, अकाकिया, गुलनार, हरा माजू, अनार का छिलका प्रत्येक ६ माशा--सबको पानी में उबाल कर उससे गुद प्रक्षालन करें तथा सीठी को पीसकर उसके ऊपर लेप करें। फौलाद भस्म २ चावल ५ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर ताजे पानी खिलायें। यदि शोथ हो तो ३ माशा मरहम सफेदा में ४ रत्ती अफीम मिलाकर गुदा के चतुर्दिक् लेप करें।

अपथ्य--उष्ण एवं तीक्ष्ण पदार्थ से परहेज करें।

पथ्य--दूध, खशका और चपाती बकरी के शूरबा से देवें।

प्रमेह (मूत्र) रोगाधिकार (अम्राज निज़ाम बौल) १०

वृक्क-बस्ति रोगाध्याय (अम्राज गुर्दा बल्मसाना)

१—दजउल्कुलिया

नाम—(अ०) वजउल्कुल्य:, कुलंज कुल्वी:; (उ०) दर्दे गुर्दा, गुर्दे का दर्द ; (सं०) वृक्कशूल ; (अं०) रेनल कॉलिक (Renal colic) ।

हेतु—प्रथम वायु (रीह) जो सान्द्रदोषों से उत्पन्न हो कर वृक्क में संचरण करती है और द्वितीय अश्मरी या शोथ इसके प्रधान हेतु हैं ।

लक्षण—कटि में वृक्क के स्थान पर तीव्र पीड़ा होती है । पीड़ा की अधिकता के कारण रोगी व्याकुल एवं बेचैन होता तथा लोटता एवं तड़पता है । बारंबार मूत्र-त्याग की प्रवृत्ति होती है । किन्तु मूत्रावरोध होता है । यदि मूत्रोत्सर्ग होता भी है तो अल्प एवं बिंदुशः टपकता है । यदि अश्मरी के कारण हो, तो मूत्र रक्तमिश्र होगा । हस्त-पाद शीतल हो जाते हैं । नेत्र के सामने अंधेरा हो जाता है । नाड़ी क्षीण एवं दुर्बल हो जाती है । उत्क्लेश और वमन होता है । वातज शूल (रियाही दर्द) में शूल एक हीं स्थान में स्थिर नहीं रहता, इधर-उधर संचरण करता है तथा वृक्क के स्थान पर भारानुभव नहीं होता ।

चिकित्सा—वातज (रीही) वृक्कशूल में प्रथम दो गोली हब्ब मुसहिल गरम पानी से देवें और अर्क अजीब ६ माशा सिरका में मिला कर पीड़ा के स्थान में मर्दन करें । जब दो-तीन विरेक खुल कर हो जाएँ तब रात्रि में अर्क सौंफ कुनकुना गरम करके बारंबार पिलायें और सबेरे १२ तोले अर्क सौंफ में ५ माशा सौंफ और तीन माशा अनीसून का शीरा निकाल कर इसमें ४ तोला शर्बत दीनार घोल कर इसके साथ १ तोला जुवारिश कमूनी मुसहिल सेवन करायें । रात्रि में सोते समय हब्बतंकार ४ गोली खिलायें । दो सप्ताह के बाद कुर्स खुब्सुल्हदीद १ टिकिया ७ माशा माजून नान्खाह में मिला कर सवेरे देवें और भोजनोत्तर दोनों समय जुवारिश कमूनी सेवन करायें । कब्ज की दशा में हब्ब तंकार सेवन करायें । वृक्कस्थ सिकता वा अश्मरीजन्य वृक्कशूल में वृक्काश्मरी की चिकित्सा करें ।

सिद्ध योग—हब्ब मुसहिल—जयपाल के बीज का मग्ज, काली हरड़ और साठी का चावल समभाग ले कर जल से घोट-पीस कर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें । निरापद विरेचन योग है । आवश्यकतानुसार दो से तीन गोली तक जल के साथ सेवन करायें ।

अक्सीर अजीब—अजवायन का सत, पुदीना का सत और कपूर बराबर-

बराबर लेकर एक शीशी में डाल देवें। थोड़ी देर में द्रवीभूत हो जायगा। विविध रोगों और वेदनाओं में लाभकारी है।

पथ्यापथ्य--प्रथम दिन शूरवा और इसके बाद शूरवा-रोटी आदि क्षुधा से कम देवें। चावल, आलू, गोभी आदि बादी पदार्थों से परहेज करायें।

२--जोफ कुल्या व मसाना

नाम--(अ०) ज़ोफ़ुल्कुला ; जोफुल्कुल्यः (वल् मसानः), (उ०) जोफ़ेगुर्दः व मसाना, गुर्दा और मसान की कमजोरी ; (सं०) वृक्कबस्ति दौर्बल्य ; (अं०) एटोनी ऑफ दी किडनी एण्ड ब्लैडर (Atony of the kidney and Bladder)।

इस रोग में एक या दोनों वृक्कों की क्रिया मन्द हो जाती है और वे मूत्र का उत्सर्ग सम्यक् वा प्राकृतिक रूप में नहीं कर सकते।

हेतु--कभी अति मैथुन या घोड़े और ऊँट की सवारी अधिक करने या शीतल पदार्थों के अति योग से वस्ति और वृक्क दुर्बल हो जाते हैं।

लक्षण--वृक्क दौर्वल्य के साथ कामावसान भी हो जाता है। कटिशूल होता और चेष्टा करने से वृक्क के स्थान पर भी शूल होने लगता है। मूत्र रक्त वर्ण का हो जाता है। बस्ति के दौर्बल्य में मूत्र बारंबार होता है और कभी-कभी रोगी मूत्र रोकने में असमर्थ रहता है। इस रोग के लक्षण लगभग बौल जुलाली के समान होते हैं। तुसुतराँ बौल जुलाली में भी वृक्कों में रक्त संचय हो जाने के कारण गस्साली किस्म का मूत्रोत्सर्ग होता है। अतएव कतिपय यूनानी वैद्यों ने इसको बौल जुलाली का पर्याय माना है। इसकी चिकित्सा आदि भी किसी सीमा तक बौल जुलाली से तद्वत् है। अतएव बौल जुलाली में ही इसकी चिकित्सा लिखी गई है।

३--वरमुल्कुल्या

नाम--(अ०) वरमुल्कुला (कुल्यः) ; (उ०) वरम गुर्दः, गुर्दे की सूजन, ब्राइटका मरज ; (सं०) वृक्क शोथ ; (अं०) नेफ्राइटिस (Nephritis) ब्राइट्स डिजीज (Bright's disease)

हेतु--शरीर में रक्त एवं पित्त की अधिकता, कभी वृक्क स्थान के ऊपर अभिघात लगने या किसी स्निग्धद्रव्य के बहिराभ्यन्तरिक उपयोग से और कभी अश्मरी उत्पन्न हो जाने के कारण अथवा अति मद्यपान या अति शीत और कभी वातरक्त (नक़रिस) की पीड़ा एवं ज्वर के कारण भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--वृक्क के स्थान पर पीड़ा होती है। मूत्र थोड़ा-थोड़ा और बारंबार होता है तथा उसमें नृसारवत् तीक्ष्ण दुर्गन्धि होती है। शीत लग कर हल्का ज्वर होता है। मिचली और वमन भी होता है। मूत्र का वर्ण लाल और कभी स्याह भी होता है और मलावरोध हो जाता है। जब यह रोग पुराना हो जाता है तब मूत्र में पिच्छिल श्लेष्मा (बलगम लजिज) और प्रायः पूय भी आने लगता है। शरीर दिनानुदिद दुर्बल होता जाता है। तृष्णा, शिरः शूल एवं अनिद्रारूप उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं।

चिकित्सा--यदि रोग बलवान् हो तो प्रथम अनुकूल पार्श्व की बासलीक सिरा का वेधन करें। अन्यथा वृक्क के स्थान पर जोंक लगवायें या भरी सींगी लगवायें। तदुपरान्त २ तोला एरण्ड तैल अर्क गुलाब या कुनकुना गरम दूध में मिला कर ६-६ घंटे के उपरान्त दो-तीन दिन निरन्तर पिलायें जिसमें प्रति दिन ७-८ पतले दस्त हो जाया करे। विरेचनोपरान्त प्रतिदिन २-३ घंटा तक रोगी को गरम पानी में बिठायें और गरम पानी से निकलने के उपरान्त भी कपड़ा गरम पानी में भिगो कर निचोड़ कर उससे वृक्क के स्थान पर सेक करते रहें। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो मूल हेतु का पता लगा कर उसके उपचार का यत्न करें। अस्तु, यदि पथरी से यह रोग हो तो पथरी एवं सिकता (हसात व रमल) के प्रसंग में लिखित उपाय काम में लेवें। यदि रक्त वा पित्त की अधिकता से रोग हो तो संताप शमन और तीव्रता निवारण के लिये ३-३ माशे बिहीदाना और इसबगोल का लुआब, ५ माशा उन्नाब और ३ माशे कुलफा के बीजों को जल में पीस-छान कर २ तोला शर्बत वनफ्शा मिला कर पिलायें तथा जौ का आटा सूखा मकोय, लाल चन्दन, कासनी के बीज प्रत्येक ६ माशा २-२ तोले हरे मकोय और हरी कासनी के रस में पीस कर लेप करें। या गुलरोगन १ तोला और रोगन बनफ्शा १-१ तोला में सफेद मोम ६ माशा, पिघला कर मर्दन करें। यदि संशोधन अपेक्षित हो तो दोषानुकूल शीत पाचनौषधि जिसका उल्लेख शिरः शूल में किया गया है पिला कर शोधन करें।

अपथ्य--गरिष्ठ और दीर्घपाकी पदार्थ, जैसे--मटर, आलू, अरवी, उड़द की दाल, गोभी और चावल आदि के सेवन से तथा अति मद्यपान और अति मैथुन से परहेज करें।

पथ्य--लघु, शीघ्रपाकी भोजन, जैसे--बकरी का शूरबा चपाती के साथ या डबल रोटी दूध के साथ खिलायें। शाकों में से शीतल शाक कुद्दू, तुरई, टिंडा, पालक आदि पकाकर देवें। फलों में से गाजर, संतरा, अनन्नास प्रभृति खिलायें।

--०--

४--जयाबीतुस

नाम--(अ०) जयाबीतुस, दव्वारिय्यः ; (फा०) दोलाबिय्यः ; परकारिय्य : (उ०) ज़्याबीतुस ; (सं०) मधुमेह, क्षौद्रमेह ; (अं०) डायाबेटीज (Diabetes) ।

इस रोग में प्रभूत मूत्रोत्सर्ग होता है और तीव्र तृष्णा लगती है। अस्तु, रोगी तृष्णा की तीव्रता के कारण बारंबार जल पीता है, परंतु तृप्त नहीं होता। प्रत्युत् वह जल लगभग अपरिवर्तित रूप में शीघ्र मूत्रद्वारा उत्सर्गित हो जाता है।

भेद--इस रोग के निम्न दो भेद हैं--(१) ज़्याबीतुसहार जिसमें उग्र तृष्णा लगती है। प्रभूत मूत्रोत्सर्ग होता है। मूत्र का वर्ण शर्बती होता है। उसमें शर्करा भी होती है जिससे मूत्र के ऊपर मक्खियाँ और च्यूटियाँ बहुत लगती हैं तथा मूत्र का स्वाद एवं गन्ध मीठी होती है। उक्त अवस्था में मूत्र का परिमाण में अनिवार्यतः अधिक होना आवश्यक नहीं है। रोगी शीघ्र दुर्बल हो जाता है। इसे ज़्याबीतुस शकरी या शुक्री भी कहते हैं। आयुर्वेद का यह क्षौद्र-मेह वा मधुमेह और पश्चात्य वैद्यक का डायाबेटीज मेलिटस (Diabetes Mellitus) जान पड़ता है। (२) ज़्याबीतुस बारिद जिस में मूत्र फीका, जलवत् स्वच्छ और अधिक परिमाण में होता है। स्वास्थावस्था की अपेक्षया भार में यह लघु होता है। इसमें शर्करा नहीं होती और न किसी प्रकार की गन्ध एवं स्वाद होता है। यह प्रायः वाह्य शीत के कारण होता है। इसमें रोगी सदा पिपासु रहता है। चाहे जितना जल पी लें, किंतु तृष्णा का कम नहीं होती, इसे ज़्याबीतुस सादा भी कहते हैं आयुर्वेद का यह उदकमेह और पश्चात्य वैद्यक का डायाबेटीज-इन्सिपिडस (Diabetes Insipidus) ज्ञात होता है।

टि०—मात्र ज़यावीतुस शब्द से जयाबीतुस हार विवक्षित होता है।

हेतु--उष्ण पदार्थों के अतिसेवन, परिश्रम, मानसिक कार्यों की अधिकता और अति मैथुन से वृक्कोष्मा विर्वाधित हो जाती है जिससे वृक्क अधिक जल का शोषण करते हैं और दौर्बल्य के कारण सम्यक् पाचन नहीं कर सकते तथा उसे अपरिवर्तित दशा में ही छोड़ देते हैं जिससे यह रोग प्रगट हो जाता है।

लक्षण--वृक्क के स्थान पर कभी-कभी दाह प्रतीत होता है। मुखशोष एवं तृष्णाधिक्य होता, मूत्रोत्सर्ग बारंबार होता है जो प्रमाण में भी अधिक होता है। क्षुधा अधिक लगती है, किंतु अन्न का पचन कम होता है। रोगी क्षीण एवं दुर्बल होता जाता है। कुछ दिनों तक यह रोग बना रहने पर वृक्कों की चर्बी

घुल-घुल कर मूत्र के साथ उत्सर्गित होने लगती है और अंगों में रूक्षता बढ़कर रोगी की प्राण-रक्षा कठिन हो जाती है। बस्तिशूल और प्रायः कब्ज होता है। कभी-कभी सायंकाल हरारत भी हो जाती है तथा मैथुन शक्ति नष्ट हो जाती है।

चिकित्सा--अति मूत्र प्रसेक के मूल हेतु का पता लगा कर उसके निवारण का यत्न करें। अस्तु, प्रथम भेद में जो केवल बाह्य शीत के कारण होता है, बहिः शरीर को उष्ण करें तथा माजून फलासफा में खुब्सुल् हदीद (मण्डूर भस्म) और कुक्कुटाण्डत्वग् भस्म १-१ टिकिया मिला कर खिलायें या मस्तगी, जुफ्त बलूत, कुंदुर १-१ माशा चूर्ण करके माजून फलासफा या माजून कुंदुर ७ माशा मिला कर खिलायें अथवा मुर्गी के दो अण्डे सिरका में भिगो देवें। दूसरे दिन सवेरे इसका छिलका उतार कर अण्डों को फोड़ कर जर्दी और सफेदी दोनों खिलायें और ऊपर से १ तोला बिनौले का मग्ज रात्रि में गरम पानी में भिगों कर प्रातः ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलायें।

द्वितीय भेद में जो ऊष्माधिक्य के कारण होता है, यह योगौषधि पिलायें। पोस्ते का दाना, काहू के छिले हुए बीज, सूखा धनिया, काले कुलफा के बीज, गुलाब के फूल का केसर प्रत्येक ३ माशा पानी में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर पिला दिया करें या सफूफ संदल जयाबीतुस वाला ७ माशा फँकाकर ५ तोला खटमिट्ठे अनार का रस या ५ तोला दही का पानी या ५ तोला लुकाट का रस मिला कर पिला दिया करें और सफेद चन्दन, गुलनार, अकाकिया, गिल अरमनी, जौ का आटा प्रत्येक ६ माशा लेकर अर्क गुलाब और हरी कासानी के रस में पीस कर वृक्क के स्थान के ऊपर लेप करें।

मूत्रगत शर्करा कम करने या रोकने के लिए यह चूर्ण सेवन करायें--सूखा गुरुच ३ माशा और ३ माशा गुड़मार बूटी दोनों को चूर्ण करके समभाग कच्ची खाँड मिला कर फँकायें और ऊपर से ५ तोला हरे कद्दू का रस या खटमिट्ठे अनार का रस ५ तोला या दही का पानी ५ तोला २ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर पिलादिया करें। अति तृष्णा के शमनार्थ पानी से बारंबार कुल्ली या गण्डूष करायें। नीबू का रस या दही का पानी पिलाने से भी तृष्णा शान्त हो जाती है। जयाबेतु सी ५ टिकिया प्रति दिन जलसे सेबन कराने से अथवा जामुन की गुठली ३ माशा पीस कर पिलाने अथवा गूलर का अन्तर्छाल १ तोला पानी में भिगों-निथार कर पिलाने अथवा गूलर के अन्तरछाल और जामुन के गुठली का चूर्ण प्रत्येक ३ माशा २ तोला कच्ची खाँड मिला कर फँकाने से भी उपकार होता है। जामुन की गुठली ५ तोला कूट-छान कर चूर्ण बना कर इसमें १ माशा अफीम मिला-गूँध कर टिकिया बनायें। इसमें से दो माशा प्रति दिन सेवनकरने से इस रोग में बहुत लाभ होता है।

अपथ्य--प्रथम भेद में चावल, शीतल जल और बर्फ तथा शीतल पदार्थों से परहेज करें। द्वितीय भेद में गरम और मीठे पदार्थों का सेवन, धूप में फिरना तथा परिश्रम का कार्य, मांस, अंडा, तेल, बैंगन, मछली आदि सेवन तथा मैथुन इस रोग में हानिकारक है।

पथ्य--कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, मूँग-अरहर की दाल, चापाती, अनार, लुकाट, सेब, नासपाती, अंगूर, संतरा, बिस्कुट, पावरोटी खा सकते हैं और कासनी के पत्तों की भुजिया बनाकर खिलाना भी लाभकारी है। यथा संभव पिष्ट और मण्डमय पदार्थ सेवन नहीं करें। चोकर की रोटी पकवा कर सेवन कर।

५—बौल जुलाली

नाम--(अ०) बौल जुलाली; (उ०) जुलाली पेशाब; (सं०) लालामेह, ओजो मेह; (अं०) अॅल्ब्युमिन्यूरिया (Albuminuria)।

इस रोग में वृक्क दुर्बल हो कर क्षीण हो जाते हैं (हुजालुल् कुल्यः) और वृक्कों की चर्बी या अंडे की सफेदी की तरल का तत्त्व (पदार्थ) मूत्र में उत्सर्गित होने लगता है।

हेतु--अति मैथुन, अतिसंशोधन या अति मद्यपान अथवा यकृत् के दुर्बल हो जाने से या कभी-कभी हृदय के किसी रोग से अथवा विसूचिका एवं मरक ज्वर के उपरान्त भी यह रोग हुआ करता है।

लक्षण—इस रोग में वृक्कों की रचना में विकृति होती है। इस रोग के बढ़ जाने पर शोथ हो जाता है। प्रारंभ में रोगी स्वस्थ प्रतीत होता है। मूत्र श्वेत, प्रभूत प्रमाण में और बारंबार होता है। कटि और शिर के पश्चात् भाग में हर समय मन्द-मन्द पीड़ा रहती है। शरीर कृश हो जाता है और कामावसान हो जाता है। रोग के बढ़ जाने पर चेहरे का वर्ण फीका (विवर्ण) पड़ जाता है। चेहेरे पर भुरभुराहट (शोफ) हो जाती है। शिरः शूल होता और कभी-कभी आक्षेप एवं मूर्च्छा तक नौबत पहुँचती है। श्वास शीघ्र-शीघ्र आता है और नकसीर फूटती है। अति मद्य सेवन जनित रोग में प्रारम्भ में यकृत् दौर्बल्य आदि के लक्षण प्रगट होकर धीरे-धीरे बढ़ते हैं।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगा कर तदनुकूल चिकित्सा करें। यदि वृक्कशोथ प्रभृति के कारण यह रोग हो तो उनकी विशेष चिकित्सा करें। यदि अति समागम या संशोधन से यह रोग हो तो निदान का परिवर्जन करें और वृक्क के स्थौल्य के लिये मेदवर्द्धक औषधियों का उपयोग करें। प्रारम्भ में निम्न योग लाभकारी हैं--

नारियल का मग्ज (खोपड़ा), फिंदक का मग्ज, पिस्ता, चिलगोजा, अखरोट और बादाम इनका मग्ज (गिरी) प्रत्येक १ तोला कूट कर १२ तोले शुद्ध मधु में मिला कर रख लेवें। इसमें से १ तोला प्रति दिन खिलायें और ऊपर से पावभर गाय का दूध पिला दिया करें। यदि प्रकृति में उष्णता हो तो पोस्ते का दाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, तरबूज का मग्ज, पेठे का मग्ज, बिनौले का मग्ज प्रत्येक ३ माशा, ५ दाने बदाम का मग्ज और मिश्री २ तोला--सबको गाय के दूध में पीस कर गरम करके हरीरा के समान पका कर सेवन करें। रोग की तीव्रता में वृक्क के स्थान पर ग्लास या कुछ जोंक लगवायें या गरम पुलटिश बँधवायें अथवा निम्न औषधियों से आवजन करायें--

गेहूँ की भूसी, छिला हुआ जौ, खतमी के बीज, मकोय, बाबूना, नाखूना, प्रत्येक १ तोला सबको यथावश्यक जल में उबाल कर रोगी को सहनीय गरम काढ़े में बैठायें। तदुपरान्त वृक्क के स्थान पर जौ का आटा, खतमी-बीज, गुलबनफ्शा मकोय, मुगास–प्रत्येक एक तोला सब को हरे मकोय और हरी कासनीके यथावश्यक रस में पका कर और १ तोला रोगन बनफ्सा मिला कर लेप करें। इसके साथ अर्क मकोय, अर्क गुलाब और अर्क शाहतरा प्रत्येक ४ तोला गुलकन्द २ तोला मिला कर क्वाथ करें और इसमें ३ माशा कुलफा के बीज तथा ३ माशा तरबूज का मग्ज पीस कर मिलायें और २ तोला शर्बत बनफ्शा सम्मिलित करके तथा ७ माशे समूचे इसबगोल का प्रक्षेप देकर दो-दिन सबेरे शाम पिलायें।

पथ्यापथ्य--हरे शाक और दूध सेवन करें। लाल मिर्च, गरम मासाला अधिक मिष्टान्न का उपयोग, मांस, अंडे और अन्यान्य ऐसे द्रव्य जिनमें (खूबत बैजिय्यः) अधिक हो, अहितकर हैं।

६—अल्हसातो वर्रमले फ़िल्कुल्यः वल्मसानः

नाम--(अ०) अल्हसातो वर्रमल फ़िल्कुल्यः वल्मसानः। (उ०) गुर्दा व मसाना की पथरी व रेत; (सं०) वृक्क वस्त्यश्मरी सिकता; (अं०) रेनल ऑर वेसिकल कैल्क्यूलाई और ग्रेवल (Renal or Vesical Calculi or Gravel)।

इस रोग में वृक्क वा वस्ति में सिकता वा अश्मरी उत्पन्न हो जाती है।

हेतु--स्निग्ध वा आक्लेदयुक्त एवं गरिष्ठ आहार के अति सेवन से जिनके भीतर पार्थिव अंश (उपादान) का प्राधान्य होता है, कभी वृक्क और कभी वस्ति

में एक विशेष काल तक संचित होकर पड़े रहते हैं। शरीरोष्मा उसमें से सूक्ष्म घटकों को उड़ा देती है और विशुद्ध पार्थिव अंश अवशिष्ट रह जाते हैं जो सिकता और अश्मरी की उत्पत्ति के हेतुभूत होते हैं।

लक्षण--सिकता या कंकड़ी और पथरी। (अश्मरी) प्रायः वृक्क एवं वस्ति ही में बना करती है। कभी गवीनियों में भी कंकड़िया पाई जाती हैं जो वृक्कों से वस्ति की ओर आते हुए मार्ग में अटक जाती है। पथरी प्रारम्भ में छोटी अर्थात् मूँग या चने के दाने के बराबर होती हैं। यदि वृक्क एवं बस्ति के मध्यस्थित मर्ग से चलकर वे बस्ति में आ जाएँ तो उस पर मूत्र के सान्द्रभाग स्तर पर स्तर जमकरकुछ काल पश्चात् एक बड़ी पथरी बना देती है। पर कभी ये कण वृक्क ही में बन कर रह जाते हैं और धीरे-धीरे वृक्क ही में बढ़ कर पथरी बन जाती है। जब कभी पथरी वृक्क में हो या उससे सिकता आती हो तो कटि में मन्द-मन्द पीड़ा होती है जिसकी टीसें वृषण, जानु और कभी शिश्नमुंड तक जाती है। भागने दौड़ने, या ऊँटकी सवारी करने से पीड़ा में तीव्रता हो जाती है। बारंबार मूत्रत्यागकी प्रवृत्ति होती है, और रक्तमिश्रित मूत्र आता है या मूत्र के पश्चात् रक्त आता है। कभी-कभी कब्ज हो जाता है और रोगीको बारंबार वमन होता है। जब उभय वृक्कों में बड़ी-बड़ी पथरियाँ विद्यमान हों तो वे मूत्र का उत्सर्ग नहीं कर सकते और मूत्रावरोध होकर रोगी मर जाता है। जब पथरी बस्ति में होती है तब वस्ति (पेडू) के स्थान पर भारानुभव होता है और मूत्रत्याग कर चुकने के उपरान्त ऐसा प्रतीत होता है मानो अभी बस्ति में मूत्र अवशेष है। मूत्र प्रायः प्रगाढ़ीभूत आता है। चलने-फिरने या कोई काम करने से कष्टानुभव होता है। वृक्कों से प्रायः रक्त वर्ण की और वस्ति से प्रायः श्वेत या भूरे वर्ण की सिकता का उत्सर्ग होता है। सायंकाल मूत्रत्याग करके यदि शीशी या चीनी के किसी स्वच्छ पात्र में मुख बन्द करके रख देवें तो प्रातः काल उसमें लाल, भूरे या सफेद घटक दिखाई देते हैं।

चिकित्सा--जब मूत्र में सिकता या छोटी-छोटी पथरियाँ निस्सरित होती हैं, तब रोगी को यह आदेश करें कि वह कुछ काल तक मूत्र रोक रखे। पुनः एक टब में गरम पानी भर कर रोगी को उसमें बैठायें और उससे टब में बलपूर्वक मूत्रत्याग करने को कहें। उक्त क्रिया से प्रायः सिकता एवं कंकड़ी निस्सरित हो जाया करती है। हज्रूल्यहूद १ माशा, संग सरमाही १ माशा, हरी मूली के पत्रस्वरस १ तोला में घिस कर ५ माशा जुवारिश जरऊनी अंबरी बनुसखाँ कलां में मिला कर प्रथम खिलायें। ऊपर से कुलथी, दूकू, काकनज आलूबालू प्रत्येक ३ माशा १२ तोले अर्क अनन्नास में शीरा निकाल कर छानकर

४ तोला शर्बत बज़ूरी मिला कर कुछ दिन पिलायें। रात्रि में सोते समय १ रत्ती दवाए संगगुर्दा, २ तोले सिकंजवीन लीमूं में मिलाकर खा लिया करें।

ताजी भातल बूटी १ तोला और कालीमिर्च ५ दाना जल में पीस कर शीरा निकाल कर सवेरे पिलाना और टेसू के फूल, कुसुम के फूल, खरबूजा के बीज, खीरा-ककड़ी के बीज, गोखरू ६-६ माशा पानी में पका कर इसका परिषेक करना और सीठी को कुनकुना वृक्क वा बस्ति के ऊपर वेदना के स्थान में बाँध देना भी लाभकारी है। यदि पीड़ा अधिक हो तो वेदनाशमनार्थ १ माशा हींग, पोस्ते का दाना १ माशा या अफीम ४ रत्ती, कोकनार एक नग पानी में पीस कर वेदना स्थान पर लेप करें। निम्न योग भी लाभकारी है—

कलमी शोरा ३ तोला लोहे के कड़छे में डालकर अग्नि के ऊपर रखें इसके बाद १ तोला गंधक पीस कर उसके ऊपर थोड़ा-थोड़ा छिड़कें। जब शोरा जलवत् हो जाय, उस समय ताँबे के फैले हुए पात्र में डाल कर हिलाते रहें। शीतल होने के बाद इसे पीस कर रखें। इसमें से ३ माशा प्रति दिन खिला कर ऊपर से मूली की हरी पत्तियों का रस १० तोला ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिला कर पिला दिया करें। हज्रुलयहूद, संगसरमाही, कलमी शोरा, जवाखार प्रत्येक १ माशा महीन पीस कर जुवारिश जरऊनी ७ माशे में मिला कर खिलाना और ऊपर से १२ तोले अर्क अनन्नास में ४ तोला शर्बत बज़ूरी मिला कर पिलाना भी लाभकारी है।

यदि अश्मरी (पथरी) के बड़ा हो जाने के कारण कष्ट अधिक होने लगे तथा औषधियों से लाभ न हो, तो किसी अनुभवी कुशल सर्जन से शस्त्रकर्म के द्वारा उसे निकलवाना चाहिये।

टि०—यह रोग स्त्रियों की अपेक्षया पुरुषों एवं बालकों की अपेक्षया वृद्धों को अधिक हुआ करता है।

अपथ्य—गुरु, बादी, दीर्घपाकी और गरीष्ठ पदार्थों, जैसे आलू, अरवी, उड़द की दाल, बाजरा की रोटी, बैगन, मसूर की दाल आदि से परहेज करायें।

पथ्य—साधारणतया बकरी के मांस का शूरबा चपाती के साथ खिलाना और चना का पानी, बादाम का तेल, गाय का घी, पिस्ता, अंजीर, तरबूज, मूली, मूँग-अरहर की दाल, अंडे की जर्दी, पावरोटी, बिस्कुट प्रभृति अभ्यासानुकूल देवें।

७—वज्उल् मसाना

नाम—(अ०) वज्उल् मसान : (उ०) मसाना का दर्द ; (सं०) बस्ति-शूल ; (अं०) वेसाइकल स्पैज्म (Vesical Spasm), पेन आफ दी ब्लैडर (Pain of the Bladder) ।

इस रोग में पेडू के स्थान पर पीड़ा प्रारम्भ हो जाती है, जिसके कारण रोगी अत्यन्त त्रस्त हो जाता है ।

हेतु—साधारणतया शीतल पदार्थों के अति सेवन से बस्ति में वायु उत्पन्न होकर पीड़ा का कारण होते हैं ।

लक्षण—पेडू के स्थान पर खिचावट एवं पीड़ानुभव होता है और भार या अश्मरी के लक्षण प्रभृति नहीं होते ।

चिकित्सा—उक्त अवस्था में सौंफ, अनीसून, सोंठ, सूखा पुदीना प्रत्येक ५ माशा यवकुट कर के पानीमें काढ़ा करके ४ तोला खमीरा बनफ्शा या ४ तोला गुलकन्द मिला कर सवेरे पिलाना और शाम को ५ माशा सौंफ, ९ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का, कुसूस के बीज, अनीसून और स्याहजीरा प्रत्येक ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला गुलकन्द या ४ तोला खमीरा बनफ्शा या ४ तोला शर्बत दीनार मिला कर पिलाना लाभकारी होता है । बड़ी इलायची, सूखा पुदीना, स्याह जीरा, सेंधा नमक और सोंठ प्रत्येक तीन माशा सबको कूट-पीस कर १ तोला रोगन बाबूना में मिला कर बस्ति के स्थान को ऊपर कुनकुना गरम करके लेप करें और टेसू के फूल, सूखा पुदीना, सोंठ प्रत्येक १ तोला सबको पानी में क्वाथ करके इससे बस्ति के ऊपर परिषेक करें या रोगी को कटिपर्यन्त उष्ण जल में बैठायें और पोस्ते की डोडी को अर्क गुलाब में उबालकर उससे पीड़ा के स्थान पर कुनकुना गरम करके टकोर करें ।

इस रोग में यदि साधारण उपायों से लाभ न हो तथा कब्ज भी हो तो ५ तोला एरण्ड तैल १२ तोले अर्क गुलाब में मिलाकर रोगी को पिलायें जिसमें दो चार विरेक होकर प्रकृति शुद्ध हो जाय । क्योंकि कभी-कभी विरेक होने से यह रोग शान्त हो जाता है ।

पथ्य—मूँग या अरहर की दाल चपाती के साथ खिलायें । चाय, बिस्कुट, पावरोटी आदि और करेला का शाक यथाभ्यास खिलायें ।

अपथ्य—वायुकारक और शीतल पदार्थ से परहेज करायें । शलगम, गोभी, कद्दू, कुलफा, पालक, दूध, उड़द की दाल, मटर, लोबिया, अरबी, चावल प्रभृति अहितकारी पदार्थ हैं । अतएव इन से परहेज करें ।

८—बौलुद्दम

नाम—(अ०) बौलुद्दम, बौल दम्वी, (उ०) बौलखूनी, पेशाब में खून आना, खूनी पेशाब आना; (सं०) रक्त मेह; (अं०) हीमेट्यू (च्यू) रिया (Haematuria)।

इस रोग में रक्त मिश्रित मूत्र या शुद्ध रक्त कभी मूत्र से पूर्व और कभी पश्चात् आता है।

हेतु—उष्ण पदार्थों का अतिसेवन, बस्तिवृक्काश्मरि; वस्तिवृक्कजात अभिघात इसके प्रधान हेतु हैं। कभी तीव्र ज्वरों के पश्चात् भी और कभी अर्शोजात अवरुद्ध रक्त हो जाने से या स्त्रियों में आर्तव के अवरुद्ध हो जाने से यह रोग हो जाता है और वस्तिवृक्कगतव्रण या शिश्नव्रण में भी रक्तमिश्रित मूत्र उत्सर्गित होने लगता है।

लक्षण—कभी मूत्र के साथ मिला हुआ रक्त आता है और कभी मूत्र से पूर्व या पश्चात् और कभी मूत्र के स्थान में शुद्ध रक्त ही आया करता है। कतिपय दुर्बल व्यक्तियों में इस रोग के प्रारम्भ होने से पूर्व शीत लगता है तथा रोगी काँपता है। पुनः न्यूनाधिक रक्तमिश्रित मूत्र आता है और कुछ घंटे पश्चात् स्वयमेव स्वस्थमूत्र आने लगता है।

निदान—जब यह मूत्र, मूत्र मार्ग से आता है तब मूत्र से पूर्व और बिना मूत्र के भी उत्सर्गित हो जाता है और जब वृक्क से आता है तब मूत्रान्त में उत्सर्गित होता है या मूत्र का वर्ण स्याही-मायल बना देता है। वृक्क के स्थान पर भी पीड़ा अवश्य हुआ करती है। जब बस्ति से रक्त आता है तब मूत्र में मिला हुआ आया करता है जिससे मूत्र का वर्ण काला हुआ करता है तथा उसमें रक्त के स्कन्दित टुकड़े पाये जाते हैं। यह स्वयमेव कोई रोग नहीं है, अपितु रोग का एक लक्षण है।

चिकित्सा—शोणितमेह में रोगी को शय्या पर लेटाये रखें और किसी प्रकार की संक्षोभजनक उष्ण औषध वा आहार न देवें तथा मूल हेतु का पता लगा कर उसके निवारण का यत्न करें। सुतरां यदि आर्तव शोणित के अवरुद्ध होने से यह रोग हो या अर्शोजात रक्त रुकने से हो तो उसका समीचीन प्रतीकार करें। जिनका विवरण उन रोगों के प्रकरण में किया गया है। वृक्क, वस्ति, शिश्न इनमें व्रण होने के कारण यह रोग हो, तो उसका उचित उपाय करें। सफेद दूब १ तोला, दक्खिनी सफेदमिर्च ५ दाना जल में पीस-छान कर पिलायें या छोटा करेला पानी में पीस-छान कर कुछ दिन पिलायें।

शोणित मेह में निम्न चूर्ण का योग भी लाभकारी है--

दम्मुल् अख्वैन, गिल अरमनी, संगजराहत, गुलनार फारसी, अकाकिया, सफेद कत्था, कुंदुर, कतीरा, बबूल का गोन्द, भूनी हुई फिटकिरी, भुने हुए कुलफा के बीज प्रत्येक ३ माशा, काकनज १।। तोला, मिश्री ४। तोला, कूट-छान कर चूर्ण बनायें। इसमें से प्रति दिन ३ माशा चूर्ण फँका कर २ तोला शर्बत अंजबार पानी में घोल कर पिला दिया करें। कुर्स कहरुवा ४।। माशा ४ तोला शर्बत अंजबार के साथ देना भी लाभकारी है।

अपथ्य--उष्ण एवं तीक्ष्ण मसालेदार पदार्थों एवं मांस से कुछ दिन परहेज करें और अधिक परिश्रम के काम से बचें।

पथ्य--कम मिर्च की मूँग की दाल चापाती के साथ या दूध, चावल या कद्दू कुलफा, तुरई, टिंडा, पालक आदि के शीतल शाक बिना मिर्च के चपाती के साथ खिलायें या मूँग की नरम खिचड़ी खिलायें।

६—उस्रुल्बौल व इह्तिबासुल्बौल

नाम—(अ०); उस्रुल्बौल (उ०); मुश्किल से पेशाब आना, दिक्कत बौल, (सं०) मूत्रकृच्छ्र; (अं०) डिस्यूरिया (Dysuria)।

—(अ०) इहतिबासुल्बौल; (उ०) पेशाब रुक जाना, पेशाब का बन्द हो जाना, बंदिश बौल, (सं०) मूत्रावरोध, (वातबस्ति—मूत्रसङ्ग); (अं०) रिटेन्सन ऑफ यूरिन (Retention of urine)।

—(अ०) उस्रुल् बौल; (उ०) पेशाब का पैदा न होना; (सं०) मूत्रशोष, मूत्रक्षय (सु०); (अं०) इस्च्यूरिया (Ischuria)।

इस रोग में मूत्र कृच्छ्रता पूर्वक होता या अवरुद्ध हो जाता है। इस रोग का एक भेद और है जिसमें मूत्र की उत्पत्ति ही नहीं होती और मूत्र का विष रक्त में शोषित होकर शरीर में प्रसारित हो जाता है। हृदय, मस्तिष्क प्रभृति उत्तमाङ्गों तक इसका प्रभाव पहुँचने से मूर्च्छा, प्रलाप और आक्षेप प्रभृति अरिष्ट लक्षण प्रगट हो जाते हैं। इस रोग को पाश्चात्य वैद्यक में यूरीमिया (Uremia), यूनानी वैद्यक में तसम्मुमबौली और संस्कृत में मूत्रविषता या मूत्रविषमयता कहते हैं। उक्त अवस्था में सलाई पास करने से भी मूत्रोत्सर्ग नहीं होता। यह भेद प्रायः सांघातिक एवं भयावह होता है, तथापि उक्त अवस्था में वृक्क-स्थान के ऊपर सेक करना या गरम-गरम पुल्टिस बाँधना या सींगी या जोंक लगवाना या गरम जल से स्नान कराना या गरम कम्बल और चादर में रोगी को लपेटना जिसमें रोगी को पसीना आ जाय कभी-कभी लाभकारी होता है।

हेतु—मूत्रप्रणाली (गवीनी) में किसी अवरोध का उत्पन्न होना, दीर्घकाल तक मूत्र रोके रखना, पुराने सूजाक के कारण दुष्ट मांस उत्पन्न हो जाना, बस्तिघात, शिश्नमूलग्रन्थिशोथ, अश्मरी और स्त्रियों में गर्भाशय या डिम्बग्रन्थि का कोई रोग या गर्भावस्था या अपतन्त्रक रोग इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण—कभी मूत्र सम्यक् अवरुद्ध हो जाता है कभी कृच्छ्रतापूर्वक आता है। मूत्रकृच्छ्र (उस्रुल्बौल) प्रायः चिरकालानुबन्धी सूजाक के कारण युवा पुरुषों को हो जाता है। लालामेह के कारण मूत्रशोष (उस्रुल्बौल) रोग हो जाता है। तात्पर्य यह ज्ञात करना परमावश्यक होता है कि बस्ति में मूत्र उपस्थित है या उसकी उत्पत्ति ही बन्द है।

चिकित्सा—टबमें गरम पानी भर कर रोगी को उसके भीतर बैठायें और रात्रि में ५ टिकिया कुर्स मुलय्यिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलायें। यदि विरेक के साथ भी मूत्रप्रसेक की प्रवृत्ति न हो, तो १० तोला टेसू के फूल जल में उबाल कर इसके कोष्ण काढ़े से पेड़ू के स्थान पर धारें और सीठी को कुनकुना पेडू के स्थान पर बाँधे या कलमी शोरा, कपूर, देसी नील के बीज प्रत्येक ३ माशा जल में पीस कर नाभि के नीचे पेड़ू पर लेप करें और खतमी के बीज, खुब्बाजी के बीज, गुलबनफ्शा, हंसराज, गुलबाबूना, मेथी, सोआ के बीज प्रत्येक १ तोला, कुसुम के फूल', टेसू के फूल, गेहूँ की भूसी ३-३ तोला, सब को जल में क्वाथ कर के दस मिनट तक इसमें रोगी को बैठायें। जवाखार, मूली का क्षार, कलमी शोरा प्रत्येक १ माशा बारीक पीस कर चूर्ण बनायें और बकरी के दूध की लस्सी के साथ फँकायें या सफूफ इन्द्री जुल्लाब ५ माशा फँका कर खरबूजा के बीज, खीरा-ककड़ी के बीज, गोखरू प्रत्येक ३ माशा पानी में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत बजूरी सम्मिलित करके पिला दिया करें।

यदि इन उपायों से लाभ न हो; तो किसी चतुर डाक्टर से केथीटर (सलाई) पास कराके मूत्र निकलवायें। शोथ या अश्मरी के कारण यह रोग हो; तो उसका उचित उपचार करें और जवाखार, रेवंदचीनी, कलमी शोरा, सौंफ, मूली खार १-१ तोला, मिश्री २ तोला मिला कर चूर्ण बनायें। इसमें से ७ माशा चूर्ण सवेरे-शाम जल के साथ सेवन कराने से भी लाभ होता है। कलमी शोरा और चूहे की लेंडी पानी में पीस कर पेडू पर लेप करना चाहिये। २ टिकिया दवा कड़ाहीवाली जल के साथ देने से भी उपकार होता है।

अपथ्य—उष्ण, तीक्ष्ण पदार्थ, मसालेदार भोजन और मांस का सेवन हानिकारक है।

पथ्य--नरम, लघु, यवमण्ड या दूध खशका या डबल रोटी दूध में भिगो कर या मूँग की नरम खिचड़ी खिलायें।

१०—हुर्क़तुल्बौल व तक़्तीरुल्बौल

नाम--(अ०) हुर्क़तुल्बौल, हुर्कत इह्लील; (फा०) सोजिस नाइज: (उ०) पेशाब की सोज़िश (जलन); (सं०) मूत्रदाह; (अं०) इरिटेब्ल, यूरिन (Irritable Urine), वेसाइकल इरिटेबिलिटी (Vesical Irritability,) यूरेथ्राइटिस (Urethritis)।

--(अ०) तक़्तीरुल् बौल; क़त्रा क़तरा पेशाब आना; (सं०) वेदनायुक्त बिन्दुमूत्रता, मूत्रकृच्छ्र; (अं०) स्ट्रैंगुरी (Strangury)।

वर्णन--इस रोग में रोगी को बारंबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। परन्तु एक बिन्दु के अतिरिक्त कुछ नहीं निकलता और कभी-कभी दाहपूर्वक मूत्र होता है।

हेतु--अधिक उष्ण पदार्थ का सेवन, अति चाय पीने तथा गर्मी एवं अत्यन्त धूप में चलने-फिरने या कब्ज के कारण यह रोग प्रायः प्रगट हो जाता है। कभी परिश्रम और आयास से तथा निरन्तर रात्रिजागरण एवं अति मैथुन से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--मूत्र लाल या ललाई लिये,पीला एवं दाहपूर्वक होताहै और उसमें पूय और छिलके नहीं होते। मूत्रत्याग कर चुकने के उपरान्त भी बूँद-बूँद देर तक मूत्र टपकता रहता है। रोगी को ऐसा प्रतीत होता है मानो अभी वस्ति में मूत्र शेष है।

चिकित्सा--उक्त अवस्था में सवेरे गोखरू, खीरा-ककड़ी के बीज, खरबूजा के बीज प्रत्येक ३ माशा पानी में पीस-छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर कुछ दिन पिलायें और शाम को ३-३ माशा बिहीदाना और इसबगोल १२ तोला अर्क गावजबान में भिगो कर लुआब निकाल कर ५ दाना उन्नाब, ३ माशा कद्दू के बीज का मग्ज १२ तोले अर्क गावजबान में पीस-छान कर लुआब में मिला कर शर्बत उन्नाब या शर्बत नीलूफर ४ तोला सम्मिलित करके पिला दिया करें। यदि मलावरोधजन्य हो तो १० तोला अर्क गुलाब में ४ तोला एरण्ड तैल मिला कर पिलायें जिसमें दो-चार विरेक हो कर प्रकृति शुद्ध हो कर रोग शान्त हो जाय। ५ तोला केला के तने का पानी १ तोला मिश्री मिला कर पिलाना भी लाभकारी है। स्थानीय रूप में ३ माशा शियाफ अब्यज

श्रौर १ माशा कपूर बकरी के दूध में घोल कर उससे मूत्रनलिका के भीतर पिचकारी करें। माउज्जुब्न पिलाना भी लाभकारी है।

अपथ्य--तीक्ष्ण, लवण श्रौर उष्ण पदार्थों के सेवन से, अतिजागरण से श्रौर धूप में चलने-फिरने तथा परिश्रम के काम से परहेज करें। बैंगन, मछली, मसूर की दाल, मांस श्रौर मसालेदार भोजन सेवन न करें।

पथ्य--शीघ्रपाकी, लघु एवं नरम आहार सेवन करायें। कद्दू, टिंडा, तुरई, कुलफा, पालक इनकी मिर्च की तरकारी चपाती के साथ खिलाये या कम मिर्च की मूँग की दाल चपाती के साथ देवें या मूँग की नरम खिचड़ी, खशका दूध, डबल रोटी आदि आवश्यकतानुसार देवें।

११--बौल्फिल्फिरास व सल्सुल्बौल

नाम--(अ०) अल् बौल फ़िल्फ़िराश; (फा०) बौल बिस्तरी; (उ०) बिस्तर पर पेशाब निकलना; (सं०) शय्यामूत्र; (अं०) एन्यूरेसिस नॉक्टर्नल (Enuresis Nocturnal)। बेड वेटिङ्ग (Bed Wetting)।

--(अ०) सल्सुल्बौल, सल्सलुल्बौल, तसल्सलुल् बौल, (फा०) बौल-बेखबरी; (उ०) बिला इरादा पेशाब निकलजाना, (सं०) मूत्रातीत; (अं०) इन्कान्टिनेन्स ऑफ यूरिन (Incontinence of Urine)।

वर्णन--शय्यामूत्र (बौल्फिल्फिराश) अर्थात् शय्या पर सोते समय अचेतावस्था में मूत्रत्याग कर देने श्रौर मूत्रातीत (सल्सलुल् बौल) का हेतु श्रौर चिकित्सा लगभग एक ही-सी होती है। अतएव इन दोनों का एक ही स्थान में विवरण किया गया है। शय्यामूत्ररोग प्रायः शिशुओं को हुआ करता है जो रेबड़ी, तिलवा (तिल के लड्डू) आदि सेवन कराने से जाता रहता है। तीव्रावस्थामें मूत्रातीत वा सलसुल् बौल में उल्लिखित उपक्रम करें।

हेतु और लक्षण--अति शीतजन्य बस्तिघात इसका प्रमुख हेतु है। कभी-कभी वस्तिगत उष्णता का भी यह परिणाम हुआ करता है। शीत हेतु की दशा में मूत्र श्वेत श्रौर दाहरहित होता है श्रौर तृष्णा का सर्वथा अभाव होता है तथा गरमी से कभी प्रतीत होती है। उष्णजन्य हो तो मूत्र की सवर्णता, प्रकृतिगत उष्णता श्रौर उष्ण पदार्थों से हानि होना प्रभृति लक्षण प्रगट होते हैं।

चिकित्सा--ऐसे रोगी को गरम शय्या श्रौर गरम गृहमें शयन करना चाहिये श्रौर जल कम पीने को देवें, चित लेटने से रोकें श्रौर १ तोला गुलकन्द असली में ४ रत्ती मस्तगी का महीन चूर्ण मिला कर लड्डू बनायें श्रौर आवश्यकतानुसार सेवन करायें। या तिल को कूट कर गुड़ में मिला कर लड्डू बना कर

यथावश्यक सेवन करायें। बालकों को रेवड़ी और गजक खिलाना भी लाभकारी है। युवा और वृद्धों को ७ माशा माजून फलासफोम १ टिकिया कुश्ता पोस्त वैजामुर्ग (कुकुटाण्ड त्वग्भस्म) खिलाना या फौलाद भस्म १ टिकिया या जमुर्रद भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जरऊनी अंबरी के साथ कुछ दिन खिलाने से आराम हो जाता है। बड़ों को काला तिल और अजवायन समभाग कूट-छान कर दोनों के बराबर गुड़ मिला कर खिलाना भी गुणकारी है।

वस्तिदौर्बल्य में उल्लिखित समस्त औषधियाँ इस रोग में भी लाभकारी होती हैं।

अपथ्य--शीतल एवं तरल पदार्थ और अधिक जलसेवन से तथा शीत से परहेज करायें। चावल, गाजर, मूली, दही, छाछ, लस्सी आदि पदार्थ इस रोग में अहितकारी है।

पथ्य--बकरी का शूरबा, चपाती, मुर्गी का बच्चा, तीतर, बटेर, मुर्ग का शूरवा, मूँग-अरहर की दाल प्रभृति साधारण मिर्च और मसाला डाल कर देवें।

१२—सूजाक

नाम--(अ०) क़र्ह: मजरीउल्क़ज़ीब; (उ०) सूजाक; (सं०) औपसर्गिक पूयमेह; (अं०) गनोरिया (Gonorrhoea)।

वर्णन--यह एक विशिष्ट औपसर्गिक रोग है, जिसमें मूत्र मार्ग शोथ युक्त हो जाता है और उसमें पूय आने लगता है।

इसके ये दो भेद हैं--(१) नवीन--जब तक इसका प्रारम्भिक काल होता है और लक्षण तीव्र होते हैं, तब तक इसे सूजाक जदीद या हाद अथवा सैलान ज़ोह्री हाद कहते हैं। परन्तु जब वह अपने प्रारम्भिक अवस्था का अतिक्रमण कर चुकता है और तीव्र लक्षण दूर हो जाते हैं, तब उसे सूजाक कुहना या मुज़्मिन कहते हैं।

हेतु--प्रायः यह रोग कुकर्म एवं परदारागमन वा वेश्यागमन के परिणाम से होता है। अस्तु, सूजाक पीड़ित पुंश्चला-स्त्री अथवा ऋतुमती स्त्री वा श्वेतप्रदर पीड़ित स्त्री के साथ समागम करने से, गुह्याङ्ग के दूषित द्रव इस रोग के प्रधान हेतु हैं। श्यामल वर्ण की अपेक्षया श्वेतवर्ण के लोग में इस रोग से आक्रान्त होने की अधिक अनुकूलता होती है तथा इन लोगों में यह रोग अधिक तीव्र होता है।

लक्षण--समागम करने के पश्चात दूसरे-तीसरे दिन मूत्रनलिका लाल एवं शोथ युक्त हो जाती और उसमें दाह होता है। मूत्र पीड़ासहित दाहपूर्वक

आता है। पुनः नीलवर्ण का पतला पूय निस्सरित होने लगता है। तीन-चार दिन उक्त अवस्था रहकर लक्षण तीव्र हो जाते हैं। मूत्र के दाह एवं पीड़ा में वृद्धि हो जाती है और हरिताभ पीले रंग का गाढ़ा पूय अधिक प्रमाण में आने लगत हैं। कूल्हे और कटि में शूल होता है। कब्ज होता और क्षुधा कम हो जाती है। मूत्र रुक-रुक कर आता है और कभी-कभी रक्तमिश्रित मूत्र आता है। कभी-कभी मूत्र में छिछड़े और छिलके निस्सरित होते हैं। कभी जननांग शोथ युक्त होकर ऐसी पीड़ा युक्त हो जाता है कि किंचित् वस्त्र का भी स्पर्श हो जाय तो पीड़ा करने लगता है। दो-तीन सप्ताह ये लक्षण रह कर धीरे-धीरे उनमें कमी होने लगती है। यदि यथार्थ एवं समीचीन उपचार नहीं किया जाय या कुपथ्य-पालन किया जाय तो पुराना सूजाक हो जाता है जो दीर्घ काल पर्यन्त रहता है।

चिकित्सा---रोग के प्रारम्भ में जब कि दाह प्रगट हो, तब शीतल मूत्रल औषधियाँ, जैसे---खीरा-ककड़ी के बीज, खरबूजा के बीज और गोखरू प्रत्येक ३ माशा जल में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर सवेरे-शाम पिलायें। यदि इससे लाभ न हो तो मीठे फालसा की छाल १ तोला रात्रि में गरम जल में भिगों कर और सवेरे इसके ऊपर नियरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलायें या कहीं तीन टिकिया जलसे खिलायें। स्थानिक व्रण शुद्धि के लिये यदि पिचकारी की आवश्यकता हो, तो भृष्ट नीला थोथा १ माशा, मुरदासंग ६ माशा, सुरमा इस्फहानी १ तोला, रसवत १ तोला, सफेद कत्था १ तोला, हरा माजू १ तोला, रूमी मस्तगी ६ माशा, इन सब को खरल में बारीक करके एक बोतल पानी में खूब घोल कर पुनः इसमें एक माशा अफीम और १ माशा बिहरोजा खूब मिला कर रखें।
इसमें से यथाप्रमाण औषधि लेकर इससे प्रति दिन ३-४ दिन तक पिचकारी करें।

यदि इन उपायों से लाभ न हो और रोग तीव्र हो, तो सफूफ सुर्ख ३ माशा मिला कर उपरिलिखित शीतल मूत्र जनन औषधि या मीठे फालसा की छालवाला योग पिला दिया करें अथवा चन्दन का तेल १ माशा, बलसां का तेल १ माशा बताशे में रख कर खिला कर ऊपर से मीठे फालसा की छाल वाला योग पिलायें। अथवा 'दवाये सूजाक' ३ माशा खिला कर ४ तोला शर्बत बजूरी पानी में घोल कर पिला दिया करें।

जब सूजाक पुराना हो जाय तब सवेरे शाहतरा, चिरायता, सरफोंका, मुंडी ७-७ माशा, उन्नाब ५ दाना, काली हरड़, उशबा मगरबी अथवा लाल चन्दन प्रत्येक ७ माशा रात्रि में गरम पानी में भिगो दिया करें। सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलायें। सायंकाल 'दवा कडाही वाली'

१।। माशा या १ टिकिया खिला कर ४ तोला बजूरी पानी में मिला कर पिला दिया करें। यदि सूजाक अधिक पुराना हो जाय और इन उयपायों से लाभ न हो तो यही शाहतरा चिरायतावाला पाचन योग पन्द्रह दिन तक पिला कर अर्क मत्बूख हफ्त रोजा ८ तोला या 'दवाये स्याह मुसहिल' २ रत्ती के साथ विरेचन देवें। विरेचनों से छुट्टी मिलने के पश्चात् जौहर मुनक्का २ चावल, गुठली निकाले हुए एक मुनक्का के भीतर इस प्रकार लपेट कर कि दाँतो से औषधि का स्पर्श न हो सवेरे पानी के घूँट से निगलवा दिया करें। या हब्ब कत्थ एक गोली इस प्रकार मुनक्का में रख कर खिला दिया करें।

यदि मूत्र में दाह एवं जलन अधिक हो और पूय आता हो तो प्रथम १-१ तोला प्रातः, मध्याह्न एवं सायंकाल में पिला दिया करें। एक सप्ताह इसका उपयोग कराकर जब मूत्र का दाह शान्त हो जाय तब जौहरी १ गोली सवेरे ताजा पानी या १ तोला उसी अर्क के साथ निगलवा दिया करें। 'कुर्स कड़ाही वाली' एक टिकिया सायंकाल खिला कर ऊपर से ४ तोला शर्बत बजूरी पानी में मिला कर पिला दिया करें।

नवीन और पुरातन सूजाकोपयोगी योगौषधि–वंशलोचन, बड़ी इलायची का दाना, सत बिहरोजा, कबाबचीनी प्रत्येक ६ माशा, मिश्री २ तोला—सबको कूट-छान कर सुरमे की भाँति महीन करके थोड़ा-थोड़ा चन्दन का तेल मिला कर खरल करें और चीनी के प्याले में रख लेवें। इसमें से २-२ माशा प्रातः सायंकाल दूध से खिलायें।

टि०—रोग की तीव्रता में पिचकारी करने से रोग बढ़ जाता है और पूय आना बंद होकर वृषण प्रकोप प्रभृति उपद्रव हो जाते हैं। लक्षण हलका हो जाने पर पिचकारी की औषधियाँ प्रयुक्त करानी चाहिये। जब पूय आना बंद हो जाय तब एक-वो सप्ताह पीछे तक सावधानी वा सतर्कता की दृष्टि से चिकित्सा चालू रखें जिसमें सम्यक् आरोग्य लाभ हो जाय।

अपथ्य—उष्ण एवं क्षोभक पदार्थ, जैसे लाल मिर्च, तीक्ष्ण एवं मसालेदार आहार, अम्ल, अचार, चटनी, मांस, अंडे, मद्य एवं कबाब, तीक्ष्ण चाय प्रभृति खाने-पीने से, स्त्री समागम और अधिक चलने-फिरने, तेल और गुड़ के पके हुये पक्वान्न तथा मिष्ट पदार्थ से परहेज करें।

पथ्य—लघु, शीघ्रपाकी एवं शीतल आहार जैसे–दूध, डबल रोटी या दूध चावल या फिरनी या दूध में पका कर जौ का दलिया, मूँग की नरम खिचड़ी दाल-चपाती और शीतल हरे शाक जैसे—कद्दू, कुलफा, तुरई, टिंडा आदि देवें। विरेचन काल में मूँग की नरम खिचड़ी देनी चाहिये।

———

१३—वरम मसाना

नाम--(अ०) वरमुल् मसानः ; (उ०) मसाना का वरम (सूजन) (सं०) बस्ति शोथ ; (अं०) सिस्टायटिस (Cystitis)

वर्णन--इस रोग में साधारणतया बस्ति की ग्रीवा में पित्त वा पतले रक्त आदि के प्रकोप से दाह होकर शोथ हो जाता है।

हेतु--बस्ति के ऊपर आघात लगना, बस्तिगत अश्मरी (पथरी), मूत्रावरोध, सूजाक, वातरक्त, वृक्क के रोग, जयाबीतुस (मधुमेह), मूत्रगत संक्षोभक घटक, गुदशोथ या गर्भाशय शोथ प्रभृति इस रोग के हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण--पेडू में गौरव (भारीपन) या बेचैनी मालूम होती है; मूत्र गम्भीर वर्ण का दुर्गन्धित बारंबार थोड़ा-थोड़ा कर के हुआ करता है; जिसमें कफ या पूय आदि की तलछट तलस्थित होती है। बस्ति के स्थान पर पीड़ा होती है जिसकी टीसें वृषण और सीवन तक जाती हैं। ज्वर, उत्क्लेश एवं दौर्बल्य होता है। रोग की वृद्धिशील होने पर अति तीव्र पीड़ा होने लगती है। कभी मूत्र बूँद-बूँद करके आता है और कभी गवीनि द्वय वृक्क द्वय या गर्भाशय तक शोथ फैल जाता है और रोगी निढाल हो जाता है तथा प्रलाप होकर स्वर्ग सिधारता है। चिरकालानुबंधी बस्तिशोथ में बस्ति के स्थान पर हल्की-हल्की पीड़ा होती है और अल्प मात्रा में पूयमिश्रित मूत्र होता है।

चिकित्सा--(१) मैदे की रोटी का गूदा, यवकुट किया हुआ तिल, ताजा दूध प्रत्येक आवश्यकतानुसार लेकर रोगन बनफ्शा और रोगन बाबूना में गूँध कर लेप करें। (२) यदि शोथ के कारण मूत्रावरोध हो गया हो, तो निम्न लेप लगावें--जौ का आटा २ तोला, सफेद खतमी का फूल २ तोला, नाखूना २ तोला लेकर कूटें और हरे मकोय के रस तथा गुलरोगन में गूँध कर बस्ति एवं बस्तिपीठ के ऊपर लेप करें। (३) गुलबनफ्शा, मकोय, हंसराज और कासनी की जड़ की छाल प्रत्येक ७ माशा, ५ दाने यव कुट किये हुए उन्नाब--सब को गरम पानी में भिगो कर मल-छान कर ३ तोला शर्बत दीनार मिला कर पिलायें। (४) ऊँटनी का दूध १० तोला पिलायें।

पथ्यापथ्य--आहार में केवल दूध, यवमण्ड और दूध सोडा देना चाहिये। दही और साबूदाना भी दे सकते हैं। रोगी को हर प्रकार के मसालों, मद्य, कबाब, चाय, कहवा आदि से परहेज करना चाहिये।

प्रजननाङ्गरोगाधिकार

(अमराज निजाम आजाय तनासुल) ११

पुरुषरोगाध्याय (अम्राजुर्रजाल) १

१——जोफ बाह

नाम——(अ०) जोफ़ बाह, इनानत ; (उ०) नामर्दी , कुव्वत मर्दाना की कमजोरी ; (सं०) क्लैव्य, क्लीवता, नपुन्सकत्व ; (अं०) सेक्सुअल डेबिलीटी (Sexual debility)। इम्पोटेंसी (Impotency)

वर्णन——इस रोग में रोगी की मैथुन शक्ति अपूर्ण वा मिथ्या हो जाती है।

हेतु——कभी यह रोग जननेन्द्रिय वा वृषणों के सहज दोष के कारण हो जाता है जो दुश्चिकित्स्य है। पर साधारणतया अति मैथुन, हस्तमैथुन या गुदमैथुन प्रभृति कुकर्मों के अभ्यास से या दीर्घकाल तक शुक्रमेह और स्वप्नदोष की व्याधि रहने तथा चिकित्सा की चिन्ता न करने से भी यह रोग हो जाता है। कभी-कभी हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत् आदि उत्तमाङ्गों के दौर्बल्य से अथवा आमाशय वा वृक्कों के दुर्बल होने से भी यह अवस्था उत्पन्न हो जाती है। अति चिन्ता, शोक, क्रोध, भय, भ्रम, सार्वदैहिक दुर्बलता या अधिक स्थौल्य तथा मादक द्रव्यों जैसे अफीम, भाँग, मद्य, चरस, मदक, तमाकू, सिगरेट आदि का अति सेवन भी इस रोग को उत्पन्न कर देता है।

लक्षण—जननेन्द्रिय के घातित एवं निष्क्रिय हो जाने से रति-शक्ति विकृत या मिथ्या हो जाती है। कभी आंशिक शिश्नोत्थान हो जाता है और कभी मन ऐसा चंचल एवं स्थिर हो जाता है कि सर्वथा शिश्नोत्थापन होता ही नहीं। कभी-कभी मैथुन की बिल्कुल इच्छा नहीं रहती है। मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा में ज्ञानेन्द्रियाँ कुंठित और शिरःशूल होता है, प्रसेक एवं प्रतिश्याय होता और नेत्र के सम्मुख अंधेरा हो जाता है। हृदयदौर्बल्य की दशा में नाड़ी दुर्बल होती है और हृदय धड़कता है। यकृद्दौर्बल्य में क्षुधा कम हो जाती है, दुर्बलता होती है और कभी-कभी अतिसार होता है तथा यकृद्दौर्बल्य के अन्यान्य लक्षण पाये जाते हैं। मंदाग्नि (जोफ मेदा) में क्षुधा कम हो जाती है। अम्लोद्गार आते हैं। कभी-कभी दस्त आते हैं। वृक्कद्दौर्बल्य की दशा में वृक्क के स्थान और कटि में पीड़ानुभव होती है तथा वृक्क दौर्बल्य के अन्यान्य लक्षण पाये जाते हैं।

चिकित्सा—प्रथम रोग के मूल हेतु का पता लगा कर उसका परिवर्जन करें और सर्वप्रथम सामान्य शारीरिक स्वास्थ्य के यथावत् करने का प्रयत्न करें। जब स्वास्थ्य यथावत् हो जाय, तब यथावश्यक बाजी कर औषधियाँ सेवन करायें। सुतरां हृदय दौर्बल्य में जहरमोहरा १ माशा और वंशलोचन १ माशा दवाउलमिस्क मोतदिल या मफर्रेह बारिद या मुफर्रेह याकूती मोतदिल ५-५ माशा के साथ प्रथम खिला कर ऊपर से मीठे अनार का रस ५ तोला, मीठे सेव का रस ६ तोला में २ तोला शर्बत सेब मिलाकर ५ माशे करंजमुश्क के बीज का प्रक्षेप देकर पिलायें।

मस्तिष्क दौर्बल्य की दशा में ५ दाना मीठे बादाम का मग्ज, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, तरबूज के बीज का मग्ज, निशास्ता, बबूल का गोंद और छिले हुए काहू के बीज प्रत्येक ३ माशा, मिश्री दो तोला सबको पाव भर गाय के दूध में पीस कर अग्नि के ऊपर रखें। जब हरीरा के समान हो जाय, तब उतार कर ठंढा करके पिलायें।

यदि यकृत् दुर्बल हो तो गुलाब का फूल २ दिरम, लाख धोया हुआ (मग्सूल), ज़रिश्क, मुनक्का (गुठली निष्कासित) प्रत्येक ½ दिरम, मजीठ, वंशलोचन, सफेद चन्दन, जावित्री, बबूल का गोंद प्रत्येक एक दिरम, रेवन्द चीनी ½ मिस्काल, चुकबीज १ मिस्काल, केसर २ दाँग—समस्त द्रव्यों को कूट-पीस कर चूर्ण बनायें। इसमें से ६ माशा चूर्ण फँका कर ऊपर से पाँच तोला खटमिट्ठे अनार का रस २ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें।

आमाशय दौर्बल्य (मन्दाग्नि) की दशा में मस्तगी, सूखा पुदीना, काला जीरा, वंशलोचन, जहरमोहरा प्रत्येक १ माशा—सबको महीन पीसकर ७ माशे जुवारिश जालीनूस में मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से दालचीनी ३ माशा, सौंफ ५ माशा, सोंठ ३ माशा, सुखा पूदीना ३ माशा १२ तोले अर्क सौंफ में पीसकर शीरा निकालकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिलायें।

यदि वृक्क दुर्बल हों तो बिनौले का मग्ज, हब्ब सनोबर कलाँ, मग्ज पिस्ता, मग्ज नारजील (खोपड़ा), हब्ब कुलकुल, अखरोट का मग्ज प्रत्येक १ तोला, शकाकुल मिश्री, हब्बुल् जुल्म, सोंठ, इन्द्र जौ प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छान कर ७ तोला मधु में मिलाकर माजून बनायें और प्रति दिन सवेरे ७ माशा खिलायें।

द्रवातिरेक से यदि आमाशय में दुर्बलता आ गई हो अर्थात् मंदाग्नि हो तो जौहरसीन २ चावल, ७ माशा माजून कलाँ या ५ माशा माजून जालीनूस लूलवी में मिलाकर प्रथम खिलाकर ऊपर से ६ तोला अर्क पान और ६ तोला अर्क इलायची ४ तोला शर्बत सेव मिलाकर पिलाना लाभकारी है।

समान्य शारीरिक दौर्बल्य के कारण हो, तो सवेरे कुश्तातिला कलाँ २ चावल या कुश्ता तिला जदीद २ चावल या अल्अह्मर २ चावल ५ माशा लबूब कबीर या ७ माशा माजून कलाँ या २ माशा माजून जालीनूस लूलुवी में मिला कर प्रथम खिलाकर ऊपर से अर्क माउल्लहम खासुल्खास ५ तोला में २ तोला मिश्री मिला कर पिलाना लाभकारी है। २ गोली हब्ब अंबर मोमियाई गाय के दूध के साथ सायंकाल खिलाना और भोजनोत्तर ५ बूंद माउज्जहब (सुवर्ण) पिलाना या १ गोली हब्ब अह्मर खिला कर दूध पिलाना या ४ तोला शर्बत मवीज (द्राक्ष शार्कर) पिलाना भी गुणकारी है। दवाए डिप्टी साहब वाली १ रत्ती या दबाये सम्मुल्फार २ चावल १ तोला मलाई या मक्खन या माजून आर्दखुर्मा में मिलाकर देना भी गुणकारी है।

प्रसेक एवं प्रतिश्याय की दशा में मस्तिष्कबलवर्धनार्थ ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला के साथ १ गोली हब्ब जदवार देने से उपकार होता है।

स्वप्न दोष के आधिक्य एवं शुक्रप्रमेह के लिये ५ माशा सफूफ मुवल्लिफ या १ तोला सफूफ मुगल्लिज जदीद या अक्सीर एह्तिलाम ५ टिकिया या माजून मुगल्लिज १ तोला एक पाव दूध के साथ देवें और १ तोला माजून आर्द-खुर्मा या ५ माशा माजून सालब में १ रत्ती वंग भस्म मिलाकर खिलायें।

अपथ्य—अम्ल एवं शीतल खाद्य-पेय से परहेज करें। औषध सेवनकाल में तमाकू सेवन और स्त्री सहवास से भी बचें। आमाशय विकारज में वायु कारक, गुरु एवं दीर्घपाकी पदार्थ, मूंग और मसूर की दाल, बैगन और तनूर की रोटी आदि सेवन न करें। लाल मिर्च और गुड़-तेल के पके पदार्थ उपयोग में नहीं लेवें।

पथ्य—भृष्ट मांस, दूध, मछली, ताजा अंडे, चपाती, पुलाव, जर्दा, चाय, बिसकुट, सेव, अंगूर, नाशपाती, बादाम, मुनक्का, चिलगोजा, अखरोट, रबड़ी, मक्खन प्रभृति आवश्यकतानुसार जितना पच सके खिलायें।

टि०—प्रातः सायंकाल वायुसेवन करना, सुन्दर चित्र और फोटो देखना, कामोद्दीपक कथाएँ श्रवण करना और उपन्यास पढ़ना इस रोग में लाभकारी है।

२—जिर्यान

नाम—(अ०) ज (जि) र्यान, सैलाने मनी ; (उ०) जिर्यान (मनी), (सं०) शुक्रमेह ; (अं०) स्पर्मेटोरिया (Spermatorrhoea)।

वर्णन—इस रोग में शुक्र या शुक्रवत् द्रव मैथुन के बिना अनैच्छिक रूप से शिश्नेन्द्रिय से जाग्रतावस्था में स्रावित होता रहता है।

हेतु—प्रायः यह रोग अतिमैथुन या हस्तमैथुन जैसे कुटेव के कारण शिश्नेन्द्रिय के स्पर्शासहिष्णु हो जाने के कारण हुआ करता है। पर कभी मलावरोध हो जाने या वृक्क एवं वस्तिगत क्षोभ एवं अश्मरी के कारण और कभी बल्य एवं उष्ण पदार्थों के अतिसेवन, जैसे मदिरा या मांस और चाय आदि या मिष्टान्न के अतिसेवन से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण—जब वृक्क या वस्तिगत क्षोभ या अश्मरी वा सिकता के कारण अथवा मलावरोध के कारण यह रोग हो तब मलत्याग के वाद इसके कुछ बिन्दु निकल जाते हैं। बल्य एवं उष्ण पदार्थ के सेवन से हो तो प्रायशः वीर्यस्खलन हो जाया करता है। किन्तु हस्तमैथुन अथवा अति मैथुन से होने पर रोगी आलसी हो जाया करता है। अङ्गमर्द होता, मूत्र त्याग करते समय जलन एवं गुदगुदी-सी प्रतीत होती है। मूत्र बारंबार और अधिक प्रमाण में होता है। कटिशूल होता, मस्तिष्क और वातनाड़ियां दुर्बल हो जातीं, सार्वदैहिक दौर्बल्य, शिरःशूल एवं शिरोभ्रमण होता, स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता, काम-काज करने से जी घबराता, पृष्ठ पर च्यूँटियाँ सी रेंगती हुई प्रतीत होती है। बुद्धि मंद और स्मृति दुर्बल हो जाती है। सम्यक् निद्रा का अभाव होता, प्रायः मलावरोध रहता, क्षुधा नहीं लगती और सहवास की इच्छा धीरे-धीरे कम होती जाती है। कभी-कभी सर्वथा नष्ट हो जाती है। सहवासेच्छा इतना कम हो जाती है कि मामूली चेष्टा से, प्रत्युत् केवल स्पर्श मात्र से बिना प्रवेश के ही स्खलित हो जाता है। कभी पायजामा की रगड़ या किसी स्त्री के दर्शन से या मैथुन का ध्यान करने ही से वीर्यस्खलन हो जाता है। ऐसे रोगी को लोगों के साथ उठने-बैठने से घृणा हो जाती है और वह लज्जाशील एवं एकान्तप्रिय हो जाता है।

चिकित्सा—यदि पाचनशक्ति दुर्बल (मंद)हो या मलबद्धता हो तो उसका यथोचित उपाय करें। वृक्क एवं वस्तिगत क्षोभ एवं अश्मरी और सिकता के कारण यह रोग हो तो उसका यथोचित उपचार करें। हस्तमैथुन वा अति मैथुन जन्य हो तो इन कुटेवों का परित्याग करायें। उष्ण पदार्थों के सेवन से हो तो उनसे परहेज करायें और औषध रूप में १ रत्ती वंग भस्म १ तोला माजून आर्द खुर्मा या १ तोला माजून मुगल्लिज में मिलाकर सवेरे खिलायें और शाम को लबूब कबीर ५ माशा या माजून कलाँ ५ माशा या माजून सालब ५ माशा में २ चावल कुश्ता मुसल्लस (त्रिवंग भस्म) मिलाकर खिलायें। रात्रि में सोते समय ७ माशा इसबगोल की भूसी २ तोला मिश्री मिले हुये एक पाव गाय के दूध के साथ फँका दिया करें।

सामान्य कायिक दौर्बल्य के कारण हो तो १ गोली हब्ब जवाहर ५ माशा माजून जालीनूस लूलुवी में मिलाकर खिलाने से लाभ होता है। यह योग भी इस रोग में लाभकारी है—

मोचरस, छालिया (सुपारी), इमली के चीओं का मग्ज, उटंगन के बीज प्रत्येक २ तोला, संगजराहत, पाखानभेद १-१ तोला, कत्था सफेद, बीजबंद गुजराती, अजवायन ७-७ माशा--सबको कूट-छानकर समभाग मिश्री मिलाकर चूर्ण बनायें। इसमें से ७ माशा चूर्ण दूध के साथ खिला दिया करें।

अपथ्य---उष्ण एवं अम्ल पदार्थ, अति मैथुन, धूप में चलना-फिरना, शारीरिक एवं मानसिक परिश्रम से परहेज करें। प्रातः सायंकाल वायु सेवन करना और खाने-पीने में मध्य मार्गावलंबन करना आवश्यक है। मद्य, कबाब, चायसेवन और सिरगेट आदि के अति सेवन से भी परहेज करना चाहिये।

पथ्य---लघु, शीघ्रपाकी आहार जैसे---बकरी का शूरबा, चपाती, हरे शाक, दूध, मूंग की दाल और अंडा, बिसकुट आदि देवें।

३---सुर्अते इन्ज़ाल

नाम--(अ०) सुर्अते इन्ज़ाल, रिक्कत ; (उ०) सुर्अत इन्ज़ाल, (सं०) शीघ्रपतन, शुक्रतारल्य ; (अं०) रैपिड या प्रीमेच्योर इजॉक्युलेशन (Rapid or Premature Ejaculation)।

वर्णन--इस रोग में रोगी अपने संकल्प में पूर्णतया सफल नहीं हो सकता और समय से पूर्व स्खलित हो जाता है।

हेतु--साधारणतया हस्तमैथुन एवं अति मैथुन के कारण तथा कामुक एवं अश्लील विचार सदैव रखने से यह रोग हो जाता है। पर कभी शुक्र के आधिक्य से अथवा दीर्घकाल तक मैथुन का अवसर न मिलने से भी ऐसी आकस्मिक अवस्था उत्पन्न हो जाती हैं। इसके शेष हेतु वे ही हैं जिनका उल्लेख शुक्रमेह एवं स्वप्नमेह के प्रकरण में किया गया है।

लक्षण---स्त्री समागम के समय प्रवेश से पूर्व या शीघ्र पश्चात् अथवा प्रवेशकाल में शुक्र स्खलित हो जाता है। क्लैब्य वा कामावसान अवश्य होता है। कभी शिश्नप्रहर्षण के बिना ही शुक्र स्खलित हो जाता है। अपने संकल्प में असफलता के कारण लज्जा के मारे रोगी जीवन से मृत्यु को श्रेष्ठ समझता है।

चिकित्सा---रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसके परिवर्जन का यत्न करें। साधारण अवस्था में उन्हीं औषधियों का उपयोग करें जिनका विवरण जिर्यान (शुक्रमेह) के प्रकरण में किया गया है तथा सालब मिश्री, कुंदुर, जुफ्त बलूत, कुलंजन, पोस्ते का दाना प्रत्येक ९ माशा, मस्तगी रूमी, वंशलोचन, गुलनार प्रत्येक ६ माशा कूट-छानकर सम भाग चीनी (शकर सफेद) मिलाकर

बनायें। इसमें से ५ माशा चूर्ण प्रतिदिन पाव भर गाय के दूध के साथ खिलायें अथवा त्रिवंग भस्म (कुश्ता मुसल्लस) २ चावल, ५ माशा लबूब कबीर में मिलाकर सवेरे खिला दिया करें। मैथुन से पूर्व माजून मुकव्वी व मुम्सिक १ माशा खिलाकर पाव भर दूध पिला देना अथवा हब्ब मुम्सिक या हब्ब निशात या हब्ब अक्सीर १-१ गोली पाव भर दूध के साथ देना भी तत्क्षण प्रभाव प्रदर्शित करता है।

हबूब दाफा सुर्अत--सालममिश्री, रूमी मस्तगी, झड़बेरी की लाख प्रत्येक १ तोला बारीक पीसकर या कूट-छानकर गूलर के दूध में घोंटकर चना प्रमाण की गोलियां बनायें। इसमें से १ गोली प्रतिदिन सबेरे चालीस दिन तक निरंतर खिलायें। हब्ब तमर हिन्दी २-२ गोली सवेरे-शाम दूध के साथ खिलाने से भी उपकार होता है।

हबूब मुमसिक--अफीम, शिंगरफ, जायफल, कपूर, अकरकरा, मिश्री प्रत्येक ३ माशा, बीरबहूटी १२ नग, केसर १॥ माशा, जुंदबेदस्तर १॥ माशा--सबको कूट छानकर खरल करें और चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। समागम से दो घंटा पूर्व दो गोली खा लेवें। भोजन न करें। दूध जितना पी सकें पियें।

अपथ्य--अम्ल पदार्थ से परहेज करें। लाल मिर्च कम खायें। गुड़-तेल के पके हुये और उष्ण पदार्थों से परहेज करें। हस्तमैथुन की आदत का परित्याग करायें। स्त्री सहवास में मध्य मार्ग का अवलंबन करें।

पथ्य--लघु, शीघ्रपाकी भोजन देवें। बादी, गुरु एवं दीर्घपाकी भोजन से परहेज करायें।

४--एह्तिलाम

नाम--(अ०) एह्तिलाम, कसरत एह्तिलाम; (उ०) एहतिलाम, ख्वाब में शैतान आना; (सं०) स्वप्नप्रमेह, स्वप्नदोष; (अं०) नौक्टर्नल एमिशन (Nocturnal Emission)।

वर्णन--इस रोग में शुक्र के बाहुल्य, शुक्रोत्पादक अंगों की स्पर्शासहिष्णुता (जिकावते हिस) या कभी-कभी दौर्बल्य के कारण रोगी को निद्रावस्था में स्वप्न के सहित या कभी-कभी बिना स्वप्न के वीर्यपात हो जाया करता है।

हेतु--अश्लील विचार, अविवाहित रहना, हस्तमैथुन, अतिमैथुन, चित लेटना, मलावरोध, अजीर्ण, अधिक भोजन या उदरकृमि इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण--हर दूसरी-तीसरी रात्रि में कभी हर रात्रि में और रोग की तीव्रता में एक ही रात्रि में दो-दो बार और कभी दिन में भी स्वप्नावस्था में वीर्यपात हो जाया करता है। रोगी को जलकर मूत्र होता है। आलस्य एवं दौर्बल्य की वृद्धि हो जाती है। स्वप्नदोष के समय रोगी को कोई स्वप्नदर्शन होता है। जागृत होने पर स्वप्न या स्वप्नदोष का विवरण स्मरण नहीं रहता। कटिशूल और कभी वृषणशूल हो जाता है। यदि स्वस्थ युवा अविवाहित पुरुष को महीने में एक-दो बार स्वप्नदोष हो जाय तो उसको रोग नहीं समझना चाहिये, क्योंकि इसका कारण शुक्रबाहुल्य होता है। उक्त अवस्था में चिकित्सा की नहीं, अपितु विवाह की अपेक्षा होती है।

चिकित्सा--पचनक्रिया को ठीक रखें और खाने-पीने में सावधानी रखें। उष्ण पदार्थ के सेवन और अति भोजन से बचें। अश्लील एवं कामुक विचारों को मन में स्थान नहीं देवें। शयनसे पूर्व मल-मूत्र का त्याग कर लेना चाहिये। कब्ज हो तो सप्ताह में दो बार कुर्स मुलय्यिन ३ टिकिया रात्रि में सोते समय पाव भर गोदुग्ध के साथ खिला दिया करें और सफूफ मुवल्लिफ ५ माशा या अक्सीर एह्तिलाम ५ टिकिया पाव भर दूध से सबेरे देवें अथवा सफेद और लाल बहमन १-१ तोला, इसबगोल की भूसी ५ माशा, बबूल का गोंद ६ माशा, भृष्ट इमली की चीआँ का मग्ज १ तोला, सालममिश्री १ तोला--सबको कूट-छानकर समभाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर ७-७ माशा सवेरे-शाम पाव भर दूध के साथ सेवन करायें तथा जिर्यान (शुक्रमेह) के प्रकरण में उल्लिखित औषधियाँ आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी भोजन देवें और सोने से ३-४ घंटा पूर्व खा लेना चाहिये। कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, टिंडा, मूँग की दाल-चपाती के साथ देवें। दूध, मक्खन, घी जितना पच सके उतना सेवन करें।

अपथ्य--मांस, उष्ण पदार्थ और मसालेदार भोजन से परहेज करें। अंडा, चटनी, अचार, अति चायसेवन, सिगरेट पीने, मद्यपान, मिष्टान्न और गुरु पदार्थों के खाने-पीने से परहेज करें।

५—इस्तम्ना बिल्यद, जलक़

नाम--(अ०) इस्तम्ना बिल्यद, जलदउमैरः; (उ०) हथलस, जलक़, मुश्तज़नी; (सं०) हस्तमैथुन; (अं०) मस्टरबेशन (Masturbation) ऑनाजिज्म (Onanism)।

वर्णन--इस रोग में मनुष्य बिना स्त्री समागम के हाथ या किसी अन्य अप्राकृतिक साधन वा विधि से वीर्यपात कर देता है।

हेतु--साधारणतया कुसंग, मिथ्या, दूषित एवं कामुक विचारों को मन में स्थान देना, युवावस्था में विवाह न करना और अविवाहित रहना, कामेच्छा का प्राबल्य और एकान्त में रहने का अवसर मिलना इसके हेतु हैं। परंतु कुछ व्यक्तियों को बाल्यावस्था से ही इसका व्यसन होता है। सुतरां अल्प अवस्था के बालकों के शिश्नमुंड (सुपारी) के ऊपर धात्री या माता-पिता की असावधानी से मैल जमना या उदरकृमि अथवा धात्री का रोते हुए बालक को मूत्र की जगह सुहलाकर चुप् करना आदि भी इस प्रकार के हेतु हैं, जिनसे शिश्नेन्द्रिय में क्षोभ उत्पन्न होकर यदि यह दुर्व्यसन बाल्यावस्था में पड़ जाय तो यह युवावस्था तक नहीं जाता।

लक्षण--यद्यपि यह क्रिया प्रायः हाथ से की जाती है, परंतु एकान्तावस्था में या सोते समय मनुष्य मैथुन के बिना किसी और रीति से भी दिन-रात में एक बार या कई बार शुक्र स्खलित कर देता है। शुक्र के अपक्व रहने और उसके अधिक प्रमाण में नष्ट हो जाने के कारण शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग एवं शक्तियाँ (कुवा) दुर्बल हो जाती हैं। मूत्र बारंवार एवं जलकर आने लगता है। शिश्नेन्द्रिय की जड़ पतली और एक तरफ को टेढ़ी हो जाती है तथा वह प्राकृतिक दर्जे को नहीं पहुंचती। दूषित द्रवों के संचय के कारण इन्द्रिय की रगें फूल जाती हैं तथा स्पर्शासहिष्णु (जकीउल् हिस्स) हो जाने से स्वप्नदोष, शुक्रमेह, नपुंसकता, कामावसाय आदि व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। मन चंचल, व्याकुल एवं शोकातुर हो जाता है। अत्यंत आलस्य के कारण कारोबार में मन नहीं लगता। लोगों के संग से घृणा और एकान्तप्रियता आ जाती है। ऐसे रोगी इतने लज्जाशील हो जाते हैं कि किसी से आँख नहीं मिला सकते। शारीरिक दौर्बल्य के साथ शरीर का वर्ण पीला हो जाता है। हाथ-पाँव शीतल रहने लगते हैं। नेत्र के नीचे कृष्ण मंडल पड़ जाते हैं और दृष्टि धीरे-धीरे कम हो जाती है। क्षुधा नहीं लगती। पाचन खराब रहता है। प्रायः मलबद्धता होती है। बुद्धि-स्मृति प्रभृति मानसिक शक्तियाँ अत्यन्त दुर्बल हो जाती हैं। शिर में पीड़ा होती और चक्कर आता है। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती हैं। शुक्र के बारंबार एवं अधिक नष्ट हो जाने से प्राणशक्ति (कुव्वत हैवानी) दुर्बल होकर नाना भाँति की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियाँ उत्पन्न होती रहती हैं तथा ऐसे रोगियों की आयु घट जाती है। प्रायः ऐसे रोगी अपस्मार, कम्पवात या उन्माद ग्रस्त होकर शीघ्र इहलौकिक लीला समाप्त कर जाते हैं।

चिकित्सा--सर्वप्रथम रोगी अपने विचारों को पवित्र बनाये और सत्संग

ग्रहण करे तथा कुसंग से बचे। दूषित एवं कामुक विचार मन से निकाल डाले। एकान्तवास या अकेले कमरे में सोने-बैठने से परहेज करे। इस दुर्व्यसन एवं कुटेव का परित्याग करके शुद्ध हृदय से अपने कुकर्मों के लिये परम पिता के समक्ष शोक एवं पश्चात्ताप करे। यदि शुक्रमेह, शीघ्रपतन या स्वप्न-दोष में से कोई रोग हो तो उन प्रकरणों में उल्लिखित औषधियाँ सेवन करायें। पाचन सुधारने का ध्यान रखें। मलबद्धता नहीं होने देवें। शिश्नेन्द्रिय पर प्रथम निम्न औषधियों का मर्दन करायें जिसमें वातनाड़ियाँ नरम होकर उपचार एवं उपाय ग्रहण करने के योग्य हो जायँ।

योग—बकरी के गुर्दे (वृक्क) की चर्बी २ तोला, बत्तख की चर्बी २ तोला, गुलरोगन ४ तोले, रोगन बबूना ४ तोला, जिफ्त रूमी ६ माशा--इन समस्त द्रव्यों को कुनकुना गरम करके पंद्रह-बीस मिनट तक प्रतिदिन कम से कम सप्ताह पर्यंत मर्दन करना चाहिये। तदुपरांत जब यह अनुभव हो कि अब वातनाड़ियाँ नरम हो गईं तब आँबाहलदी, हाथी दाँत का बुरादा, मालकँगनी, पुराना खोपड़ा प्रत्येक एक तोला सबको कूटकर सात पोटली बनायें। इसमें से एक पोटली प्रतिदिन रात्रि में गरम करके एक सप्ताह पर्यंत पंद्रह-बीस मिनट तक सेकें। उक्त उपाय करने के पश्चात् तीसरे सप्ताह से तिलाजदीद मा तिला आला या तिला सुर्ख रात्रिमें सोते समय थोड़ा-सा लेकर शिश्नमुंड एवं सीवन बचाकर शिश्नेन्द्रिय पर लगाकर गरम पान बाँधकर कच्चा धागा लपेट कर सो रहा करें। सवेरे कुनकुना गरम पानी से धो डालें। इसी प्रकार कुछ दिन तक लगाने के पश्चात् यदि दानें निकल आयें तो तिला का उपयोग त्याग कर चमेली का तेल दिन में दो-तीन बार लगा दिया करें। जब दाने मिट जायं और व्याधि शेष रहे तो पुनः तिला का उपयोग कम से कम एक मास पर्यंत बराबर चालू रखें।

सामान्य-शारीर शक्ति एवं शरीरोष्मा बढ़ाने के लिये कुश्ता तिलाकलाँ २ चावल या कुश्ता तिला जदीद २ चावल, ५ माशा लबूब कबीर या ५ माशा माजून कलाँ या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली या ५ माशा माजून साहिब में मिलाकर सवेरे खिलाकर ऊपर से अर्क माउल्लहम खासुल्खास ५ तोला या अर्क माउल्लहम जदीद ५ तोला में २ तोला मीठे अनार का शर्बत या २ तोला मिश्री मिलाकर पिला दिया करें और सायंकाल माजून मोमियाई २ माशा में कुश्ता तामेसर २ चावल मिलाकर खिलायें और ऊपर से अर्क माउल्लहम अंबरी ५ तोला २ तोला मिलाकर पिला दिया करें।

मस्तिष्क बलवर्धनार्थ हब्ब जवाहर १ गोली ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला में मिलाकर और हृदयबलवर्धनार्थ ५ माशा खमीरा मरवारीद या

५ माशा खमीरए अबरेशम हकीम इर्शदवाला मिलाकर खिला दिया करें। बस्ति एवं वृक्क के बलवर्धन के लिये ५ माशा माजून फलासफा या ५ माशा जुवारिश जरऊनी अंबरी या ५ माशा माजून अलकली या ५ माशा माजून जदीद में २ चावल कुश्ता मुसल्लस या ४ चावल कुश्ता पोस्त बैजए मुर्ग मिलाकर खिला दिया करें। हब्ब अहमर १ गोली, इश्रती १ गोली, हब्ब खास १ गोली, हब्ब अंबर मोमियाई २ गोली, माजून मुकव्वी व मुम्सिक १ माशा, अल्अह्मर २ चावल, हब्ब निशात गोली प्रभृति में से कोई एक योग यथावश्यक मक्खन या मलाई या दूध के साथ कुछ दिन खिलायें। इससे कामावसाय (क्लैव्य) दूर होकर शरीर में पर्याप्त वाजीकरण शक्ति आ जायगी।

अपथ्य---चाय एवं सुरापान,अधिक मधुर एवं अम्ल पदार्थ, गुड़, तेल आदि के सेवन से परहेज करें। सच्चरित्र एवं सदाचारी पुरुषों का संग करें और अपने संकल्प पर दृढ़ एवं अटल रह कर इस विनाशकारी कुटेव एवं दुष्कर्म या पाप कर्म से अपने पैरों में कुल्हाड़ी न मारें।

पथ्य---कम मसाला और कम स्नेहाक्त साधारण भोजन करें। बकरी का शूरबा या चपाती, मूँग-अरहर की दाल, हरे शाक, पाव रोटी, बिस्कुट, अंडा प्रभृति अभ्यासानुकूल सेवन करें।

६---वरम खुस्या एवं दर्द खुस्या

नाम---(अ०) वज्उल् उन्सियैन व वरमुल् उन्सियैन; (उ०) खुस्यों का दर्द और सूजन; (सं०) वृषणशूल, वृषणशोथ; वृषण प्रकोप; (अं०) न्युरल्जिया ऑफ दी टेस्टिक्ल्ज (Neuralgia of the Testicles), ऑर्काइटिस (Orchitis)।

वर्णन---कभी उभय वृषणों में कभी एक वृषण में रुक-रुक कर शूल हो जाता है और कभी शोथ हो जाता है।

हेतु---वृषणों पर आघात लगना, औपसर्गिक पूयमेह (सूजाक) या फिरंग, कनपेड़, बस्त्यश्मरी, बस्तिशोथ, आमवात (संधिवात), वातरक्त (नक़रिस) शीत लगना, हस्तमैथुन, अति मैथुन, अजीर्ण प्रभृति इसके प्रधान हेतु हैं।

लक्षण---विकारी वृषण शोथयुक्त होकर कठोर एवं वेदनापूर्ण हो जाता है। पीड़ा अति तीव्र होती है जिसकी टीसें उदर, कटि एवं जानुओं (रानों) तक जाती हैं। ज्वर हो जाता है। मिचली और उबकाइयाँ आती हैं।

चिकित्सा---मूल हेतु का पता लगाकर दूर करने का यत्न करें। मलबद्धता (कब्ज) हो तो पावभर गाय के दूध के साथ ४ टिकिया मुलय्यिन खिला

दिया करें अथवा एरण्ड तैल ३ तोला आधा पाव गाय के दूध में मिलाकर पिला दिया करें। १-१ तोला हरे धनिये, हरे मकोय और हरी कासनी के रस में १-१ माशा अफीम और कपूर तथा २ माशा अजवायन खुरासानी बारीक पीसकर दर्द के स्थान पर पतला लेप करें अथवा ३-३ तोले सिरका और अर्क गुलाब में १ माशा कपूर मिलाकर इसमें कपड़ा तर करके विकारी स्थान पर रखें। इक्लीलुल्मलिक (नाखूना) गुल बाबूना, मर्जञ्जोश, कैसूम, सोआ के पत्ते प्रत्येक १ तोला—सब को एक सेर पानी में पकायें। जब आधा पानी रह जाय तब रुग्ण स्थान को इसके कुनकुना गरम काढ़े से धोयें और शोथ उतारने के लिये गूगुल शिलारस, बोल, गुल बाबूना, स्याहज़ीरा, बालछड़ प्रत्येक ३ माशा गुल खतमी कलाँ, मेथी, नाखूना, बाकला का आटा प्रत्येक ४ माशा, सफेद मोम २ तोला, बकरी के गुर्दे की चर्बी २ तोला और गुलरोगन ४ तोला, प्रथम मोम और चर्बी को गुलरोगन में पिघलायें, इसके बाद शेष औषधियों का बारीक चूर्ण बनाकर इसमें मिलायें और लेप करें। अथवा, जिमाद वर्म उन्सियैनइसबगोल के लुआब में घोलकर कोष्ण लेप करें। अथवा पोस्ते की डोडी और टेसू के फूल प्रत्येक ५ तोले को ३ सेर पानी में काढ़ा करके उससे धारें और सीठी को गरम-गरम बाँध देवें। यदि रोगी बलवान् हो तो बासलीक या साफिन का सिरावेध करायें या ठुड्ढी पर सींगी वा जोंक लगवायें। मलावरोध निवारण की आवश्यकता हो तो बस्ति करें।

अपथ्य—बादी, गुरु, तीक्ष्ण और मसालेदार भोजन से परहेज करायें। चलने-फिरने और अधिक चेष्टा करने से रोक देवें।

पथ्य—यवमंड या मूँग की नरम खिचड़ी जैसे नरम और लघु आहार के सिवाय और कुछ न देवें।

७—फ़त्क़

नाम—(अ०) फ़त्क़, क़ीलः, उदरः, क़ुर्क़ुर ; (उ०) फत्क़, क़ीलः, आँत उतरना ; (सं०) अन्त्रवृद्धि ; (अं०) हर्निया (Hernia), सील (Cele) रैप्चर (Rupture)।

वर्णन—यह वह रोग है जिसमें उदरच्छदा कला (पर्दए सफाक) के फट जाने या उसके वंक्षणी-स्रोत के परिविस्तृत हो जाने से उदर के भीतर की कोई वस्तु जैसे—अन्त्र, वसा, वायु (रीह) या जल आदि अपने स्थान से हटकर किसी अन्य स्थान में फँस जाती है या वंक्षणी-स्रोत से नीचे वृषण में उतर आती है। इसको यूनानी वैद्यक में 'फ़त्क़' और 'क़ीलः' तथा आयुर्वेद में 'आन्त्रवृद्धि' कहते हैं।

आधुनिक परिभाषा के अनुसार इसे 'वङ्क्षणी आन्त्रवृद्धि' या 'आन्त्रजन्य या आन्त्रागमजन्य वृषणवृद्धि' कहते हैं।

भेद—इसके निम्न चार भेद होते हैं—(१) क़ीलतुल् अम्आऽ—इसमें अण्डकोष के भीतर अन्त्र का कोई भाग उतरता है। इसको 'फ़त्क़ मिश्र्वी या मिश्राई' भी कहते हैं। अंगरेजी और संस्कृत में इसे क्रमशः 'इन्टेस्टाइनल हर्निया (Intestinal Hernia) और 'अन्त्रवृद्धि' कहते हैं।

(२) क़ीलतुस्सर्ब या फ़त्क़ सर्बी—इसमें उदरच्छदाकला (सुर्ब—Omenta) का कोई भाग होता है। इसमें अन्त्र कठिनाई पूर्वक लौटता है और आटोप होता है। इसी बात से इसमें और आन्त्रजन्य वृषण वृद्धि (कीलतुल् अम्आऽ) में भेद करते हैं। इसको अंग्रेजी में ओमेन्टल हर्निया (Omental Hernia) कहते हैं।

(३) कीलतुल्माऽ या फत्क़ माई—इस यें अण्डकोष कठिन एवं जलपूर्ण मालूम होती है और किसी प्रकार ऊपर नहीं जाती। इसको संस्कृत और अंग्रेजी में क्रमशः मूत्रवृद्धि (जलवृषण) एवं हाइड्रोसील (Hydrocele) कहते हैं।

(४) कीलतुर्रीह या फ़त्क़ रीही—इसमें अण्डकोष के भीतर वायु भरी होती है। यह सरलता से ऊपर चली जाती है। इसको संस्कृत और अंगरेजी में क्रमशः 'वातजवृद्धि' एवं 'फायसोसील (Physocele), कहते हैं।

(५) क़र्व लह्मी—इसमें अण्डकोष में कठोरता एवं तनाव प्रतीत होता है, परंतु स्वयं अण्ड वा मुष्क के घटकों में कोई ऐसी बात नहीं होती। इसी कारण इसमें और वृषण के कठिन शोथ में भेद करते हैं। इसको संस्कृत और अंग्रेजी में क्रमशः 'मांसज वृद्धि' एवं 'सार्कोसील (Sarcocele)' कहते हैं।

चिकित्सासूत्र—आन्त्रवृद्धि में अन्त्र को धीरे-धीरे मलकर अपने स्थान पर लौटायें। यदि शीघ्र न लौटे तो पानी गरम करायें और आबजन में बैठायें। अस्तु, जब अन्त्र अपने स्थान पर लौट जाय, तब वृषण, वंक्षण और पेड़ू के ऊपर कोई उपयुक्त लेप लगायें।

उदरच्छदाकलावृद्धि (कीलतुस्सर्ब) में भी उपर्युक्त विधि से काम लेवें। वातजवृद्धि (कीलतुर्रीह) में वायुनाशक द्रव्य सेवन करायें तथा वायुकारक द्रव्यों से परहेज करायें और वृषणों को बाँधे रखें। मूत्रजवृद्धि वा जलवृषण (कील-तुल्माऽ) में जलोदर की भांति जल का शोषण करें। यदि लाभ न हो तो किसी कुशल हकीम वा जर्राह से पानी निकलवा देवें। मांसज वृद्धि

(कर्व लहमी) में मत्बूख अफ्तीमून से सौदा का शोधन करें और वृषणशोथ में लिखित उपचार करें।

पथ्यापथ्य--वातोदर के अनुसार व्यवहार करें। उदाहरण स्वरूप लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, जैसे--दूध, घी, मक्खन, हरे शाक आदि देवें और काबिज (ग्राही), आध्मानकारक एवं दीर्घपाकी आहार जैसे गोभी, आलू, अरवी प्रभृति से परहेज करायें।

वक्तव्य--कभी किसी आकस्मिक या नैसर्गिक छिद्र या चीर के मार्ग से अन्त्र का कुछ भाग अपने स्थान से हट कर वृषणों में अवतीर्ण होने लगता है। यह विकार साधारणतया प्रायः किसी तीव्र चेष्टा करने या भार वहन या भोजनोत्तर तुरत स्त्री समागम करने से या किसी वाह्य अभिघात या चिरज मलावरोध, बस्त्यश्मरी या जलोदर (इस्तिस्काऽ) के कारण भी हो जाया करता है। कभी-कभी यह रोग अतीव भयावह रूप ग्रहण करके रोगी के प्राणनाश का हेतु होता है। अतएव इसकी चिकित्सा में विलंब एवं असावधानी करना बड़ी भूल है। इसकी अव्यर्थ या रामबाण चिकित्सा सिवाय शस्त्र कर्म के और कोई नहीं है। इसीलिये इसकी चिकित्सा आदि का वर्णन यहां अति संक्षेप में किया गया है। अलबत्ता इसके लिये अंग्रेजी औषध बिक्रेताओं के यहाँ से बनी बनाई पेटियाँ मिलती हैं जिनके लगाये रहने से लाभ होता है और बार-बार अन्त्र उतरने नहीं पाता।

स्त्रीरोगाध्याय (अमराज मख्सूसा निस्वाँ-ज़नाँ) १२

(अम्राजुर्रहम–गर्भाशय के रोग) १

१—अक़र

नाम—(अ०) अक़र; (उ०) बाँझपन, बाँझ होना; (सं०) बन्ध्यात्व (अं०) स्टेरिलिटी (Sterility)। पुरुष के बाँझपन अर्थात् मर्दाना बाँझपन को अरबी में उक़्म (Sterility in man) कहते हैं।

वर्णन—इस रोग में रोगिणी गर्भधारण एवं सन्तानोत्पत्ति के सर्वथा अयोग्य होती है।

हेतु—यदि गर्भाशय और डिम्बग्रन्थि के सहज विकार, जैसे गर्भाशय के छोटा होने, गर्भाशय द्वार या गर्भाशय ग्रीवा के बन्द होने अथवा डिम्बग्रन्थि के विकृत या छोटा होने के कारण यह रोग हो तो असाध्य है। पर जब गर्भाशय के रोग, जैसे गर्भाशय शोथ या गर्भाशय का उलट जाना अर्थात् उसके अन्तः धरातल का भग से बाहर होकर इस प्रकार निकल आना कि उसका छिद्र प्रगट न हो (इन्क़िलाबुर्रहम) या डिम्बप्रणाली शोथ अथवा आर्तव दोष अर्थात् रुद्धार्तव, कृच्छ्र एवं अति आर्तव या श्वेत प्रदर, रक्ताल्पता (पांडु), गुह्यांग के कोई रोग या सूजाक और फिरंग के कारण यह रोग हो, तो यथोचित उपाय करने से यह दूर हो सकता है। कभी श्लेष्माधिक्य से प्रकृति में शीत की प्रगल्भता हो कर गर्भाशय की धारण शक्ति दुर्बल हो जाती है जिससे गर्भधारण नहीं होती।

लक्षण—उपरोल्लिखित रोगों में से किसी न किसी रोग की विद्यमानता, प्रकृतिगतशीत एवं श्लेष्माधिक्य में स्त्री का शरीर स्पर्श करने से शीतल प्रतीत होता है। शरीर का वर्ण सफेदी लिये हो जाता है। गर्भाशय से द्रव स्रावित होता रहता है। हर समय आलस्य रहता और अंगमर्द अधिक होता है।

चिकित्सा—रोग के मूल हेतु का पता लगायें; क्योंकि कभी-कभी पुरुष की अयोग्यता से भी सन्तानोत्पत्ति नहीं हो सकती। प्रथम स्त्री-पुरुष का वीर्य पृथक्-पृथक् जल में डाल कर यह परीक्षा करें कि दोष किसमें है। जिनका वीर्य जल में तैरने लगे और तलस्थित न हो उसका उपचार करें। उक्त अवस्था में पुरुष को उन्हीं औषधियों का उपयोग करायें जो शुक्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन और क्लैव्य। (जोफबाह) के प्रकरण में लिखी गई हैं। यदि सूजाक या फिरंग इसका हेतु हो, तो इनका यथोचित उपाय करें। यदि स्त्री को अनियमित ऋतु एवं आर्तवावरोध के कारण यह रोग हो, तो इनका यथोचित उपाय करें।

श्वेतप्रदर या गर्भाशयशोथ या गर्भाशय सम्बन्धित किसी विकार के कारण यह रोग हो जाय तो इनका आवश्यकतानुसार यथोचित प्रतीकार करें। द्रवातिरेक एवं श्लेष्माधिक्य के कारण यह रोग हो, तो सवेरे--मस्तगी, सोंठ और स्याह-जीरा १-१ माशा महीन पीस कर ७ माशा जुवारिस जालीनूस में मिला कर प्रथम खिलायें; ऊपर से सूखा पुदीना, बड़ी इलायची, छोटी इलायची ५-५ माशा, सोंठ, स्याहजीरा, अनीसून ३-३ माशा, सौंफ ५ माशा और दालचीनी ३ माशा--सबको जल में क्वाथ करके २ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलायें और शाम को सौंफ ५ माशा, स्याह जीरा, सोंठ, अनीसून ३-३माशा १२ तोले अर्क इलायची में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिलायें।

यदि संशोधन अपेक्षित हो तो प्रथम ७-८ दिन तक पाचन औषधि (मुंजिज) मिलाकर नवें दिन से यथाविधि विरेचन देवें। विरेचन से खाली होने के बाद द्रवाभिशोषण के लिए हलवाये सुपारी पाग या माजून सुपारी पाक में २ चावल मुक्ता भस्म मिलाकर कुछ दिन खिलायें और मासिक धर्म से शुद्ध होने एवं स्नान करने के पश्चात् १ गोली हब्ब हमल १ तोला माजून मोचरस में मिला कर सवेरे खिलायें और शाम को २ गोली हब्ब मरवारीद खिला कर ३ तोले अर्क अम्बर और ७ तोले अर्क गावजबान में २ तोला मिश्री मिला कर पिलाने से भी उपकार होता है। हाथीदाँत का बुरादा २ माशा महीन चूर्ण बना कर कुछ दिन स्त्री को खिलाने और बरगद की दाढ़ी का चूर्ण बनाकर समभाग चीनी मिला कर एक तोला प्रति दिन स्त्री-पुरुष दोनों अर्थात् दम्पति को पावभर दूध के साथ खिलाने और ऋतुस्नान करने के पश्चात् सहवास करने से गर्भधारण होने में सहायता मिलती है। गर्भ स्थिर हो जाने के पश्चात् गर्भिणी एवं भ्रूण की बल-वृद्धि एवं भ्रूण की सुरक्षा के हेतु माजून हमल अंबरी उलवीरवाँवाली ५ माशा या माजून नुसारए आजवाली ५ माशा गर्भस्थित के तीसरे महीने से निरंतर प्रति दिन खिलाते रहें।

अपथ्य--अधिक उष्ण एवं अम्ल पदार्थ, अचार और मसालेदार भोजन स तथा बादी एवं गुरु पदार्थ के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--साधारण शूरबा-चपाती, मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, कुलफा, तुरई, भिंडी, पालक आदि का शाक यथाभ्यास सेवन करायें।

२—उस्र व एह्‌तिबासुत्तम्स

नाम—(अ०) उस्रुत्तम्स, एह्‌तिबासुत्तम्स ; (उ०) हैज का मुश्किल (तक्लीफ या दुश्वारी) से आना, हैज का बन्द हो जाना ; (सं०) कृच्छ्रार्त्तव, रुद्धार्त्तव, आर्त्तवावरोध ; (अं०) डिस्मेनोरिया (Dysmenorrhoea), एमेनोरिया (Amenorrhoea)।

हेतु—श्वेत प्रदर, डिम्बग्रन्थिशोथ, आर्तवकाल में शीत लगना या वर्षा में भीगना, कभी अति मैथुन, शोक एवं दुःख से अनायास यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कभी-कभी रक्ताल्पता एवं दौर्बल्य के कारण या चिरज एवं चिरकालानुबन्धी रोगों से दीर्घकालपर्यन्त आक्रान्त रहने से अथवा कतिपय यकृद्रोगों के कारण, कभी गरीष्ठ भोजन के अतिसेवन से कफ एवं सौदा अधिक उत्पन्न हो कर रक्त को सान्द्रीभूत (गलीज) कर देते हैं जिससे वह (रक्त) सूक्ष्म स्रोतों (वाहिनियों) में से प्रवाहित नहीं हो सकता। सुतरां आर्तव की प्रवृत्ति रुक जाती है। कुछ स्त्रियों को मेदावी एवं स्थूल (मांसल) होने के कारण यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है।

लक्षण—प्रारम्भ से ही आर्तव की प्रवृत्ति नहीं होती अथवा कुछ काल हो कर बन्द हो जाता है या नियत मात्रा (प्रमाण) से न्यून होता है या थोड़ा-थोड़ा रुक-रुक कर वेदनापूर्वक होता है। वेदना की तीव्रता के कारण रुग्णा की संज्ञा स्थिर नहीं रहती। आर्तवकाल में अंगमर्द एवं व्याकुलता और बेचैनी होती है। पेड़ू के स्थान पर गौरव, कटि, कूल्हे एवं ऊरुओं (रानों) में पीड़ा होती है। यदि इसका कारण रक्ताल्पता हो तो शरीर का वर्ण फीका (विवर्ण) हो जाता है, चेहरा पांडु-पीतवर्ण और सामान्य शरीर दुर्बल एवं आलस्ययुक्त हो जाता है। हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। यदि शीत लगने या वर्षा में भीगने अथवा शोक एवं चिन्ता से यह रोग हो तो थोड़ा-सा आर्तव आकर पुनः अकस्मात् बन्द हो जाता है। दीर्घ काल तक यह रोग रहने पर अपतन्त्र रोग हो जाता है और मूर्च्छा के आवेग होने लगते हैं।

वक्तव्य—गर्भावस्था, स्तन्यदानकाल (शिशु को दुग्धपान कराने का समय) और ४५ वर्ष की आयु के पश्चात्, अर्थात् अनार्तवकाल में आर्तव का प्रवर्तन न होना रोग अन्तर्भूत नहीं समझा जाता। क्योंकि उक्तकाल में स्वभावतः आर्तव की प्रवृत्ति नहीं होती। जब युवती स्त्री को आर्तवप्रवर्तन न हो और उसके पेड़ू आदि में पीड़ा हो तो यह समझना चाहिये कि गर्भाशय या गर्भाशयद्वार अथवा डिम्बग्रन्थि में कोई सहज वा कृत्रिम दोष विद्यमान है। कृत्रिम वा उपार्जित दोष का प्रतीकार तो चिकित्सा द्वारा सम्भव हो सकता है, परन्तु सहज दोष असाध्य होता है।

चिकित्सा--प्रायः आदि यौवनकाल में लड़कियों को अनियमित ऋतु आया करता है। उदाहरणतः दो-दो या तीन-तीन, प्रत्युत् चार-चार मास पश्चात् ऋतु आया करता है। परन्तु ज्यूँ-ज्यूँ उत्तरोत्तर आयु बढ़ती जाती है यह दोष स्वयमेव दूर होता जाता है। विवाहोपरान्त तो यह अनियमितता प्रायः मिट ही जाती है।

इस रोग के विभिन्न हेतु होने के कारण इनकी चिकित्सा में भी विभिन्नता पाई जाती है। सुतरां यदि रोगिणी रक्तप्रकृति, मांसल, मेदावी, मोटी-ताजी एवं स्थूल काय हो तो ऋतु के नियमित काल से दो-चार दिन पूर्व विरेचन देवें और राई का चूर्ण बनाकर गरम जल टब में भरकर उसमें चूर्ण डाल कर रुग्णा को प्रति दिन दस-पन्द्रह मिनट उसमें बैठाएँ।

जब अनायास शीत लगने और वर्षा में भीगने से यह रोग हो, तब भी उपर्युक्त क्रिया करें और टेसू के फूल २ तोला तथा पोस्ते की डोडी १ तोला दो सेर पानी में काढ़ा कर के उसमें फलालैन तर करके गर्भाशय के स्थान पर टकोर करें। ऊरुओं (रानों) के भीतर की ओर जोंक लगवाना या किसी कुशल जर्राह (सर्जन) से साफिन का सिरावेध करना लाभकारी होता है।

श्वेत प्रदर या अन्यान्य रोगों के कारण यह रोग हो तो उनका नियमित उपचार करना चाहिये। रक्ताल्पता (पांडु), सार्वदैहिक दौर्बल्य एवं रोगोत्तर दौर्बल्य के कारण यह रोग हो तो यथोचित बल्य एवं रक्तानुकारि ओषधियों वा योगौषधियों के द्वारा इनका प्रतिकार करें।

जब कफ और सौदा के आधिक्य के कारण यह रोग हो, तो हब्ब कुर्तुम ७ माशा सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, खरबूजे का छिलका और बीज ७-७ माशा, हंसराज ७ माशा, तीन पाव पानी में क्वाथ करें और जब तृतीयांश शेष रह जाय तब छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिलाने से उपकार होता है। नियत ऋतुकाल से तीन दिन पूर्व हब्ब मुदिर्र या मुबारकी १-१ गोली प्रातः मध्याह्न और सायंकाल अर्थात् दिन में तीन वार खिलाकर ऊपर से ४ तोला शर्बत बजूरी जल में घोल कर पिलाने से भी लाभ होता है। प्रतिदिन ५ टिकिया इद्राटी सेवन करने से भी उक्त लाभ होता है। मासिकधर्म जारी हो जाने पर हब्ब मुदिर्र या मुबारकी का सेवन त्याग देना चाहिये।

यदि इन उपायों से लाभ न हो तो--पोस्त अमलतास, बाँस की गाँठ (गिरह) अखरोट, हंसराज, वायबिडंग काबुली, डोडा-कपास प्रत्येक ७ माशा, गंदना के बीज, गोखरू, मूली के बीज, गाजर के बीज, कलौंजी प्रत्येक ३।। माशा, पुराना गुड़ ५ तोला--समस्त द्रव्यों को जल में क्वाथ बना छान कर पिलायें।

जब ऋतु खुल कर आने लगे तो ऋतु से शुद्ध एवं स्नान करने के उपरान्त बलवर्द्धनार्थ खमीरा अबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा, या दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा, या माजून कुर्तुम ७ माशा कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य-----उछलना, कूदना, दौड़ना, सीढ़ी पर जल्दी-जल्दी चढ़ना, चिंता शोक, भय और आकस्मिक आनन्द आदि ऋतुदुष्टि के हेतुभूत होते हैं। अतएव यावच्छक्य इनसे बचना चाहिये। उष्ण पदार्थ, अंडा, अचार, आदि का सेवन और कठिन परिश्रम एवं स्त्रीसहवास करना भी हानिकारक है।

पथ्य--कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक प्रभृति शीतल शाक, बकरी का मांस, मूँग-अरहर की दाल, चपाती, खशका, पावरोटी, पुलाव, बिसकुट, मक्खन, दूध आदि आवश्यकतानुसार सेवन करायें।

३—इस्तेहाजा और कसरते तम्स

नाम--(अ०) इस्तेहाजा, कस्रतुत्तम्स; (उ०) हैज की कसरत अय्याम की ज्यादती; (सं) अतिरज, अत्यार्तव, असृग्दर; (अं०) मेनोरहाजिया (Menorrhagia)।

वर्णन--इस रोग में अर्तव-शोणित का प्रवर्तन अनियमित एवं अधिक होता होता है। इसके ये दो स्वरूप हैं--(१) नियमित एवं निश्चित काल में वृद्धि हो जाती है, जैसे--साधारणतः यदि पाँच दिन इसके लिये स्थिर एवं नियत हैं तो अधिकता की दशामें सात-आठ- दस दिन तक उसमें वृद्धि हो जाती है (२) नियत काल के अतिरिक्त किसी और काल में आर्तव-शोणित का प्रवर्तन आरम्भ हो जाता है। इसको यूनानी वैद्य अपनी परिभाषा में 'इस्ते हाजा' कहते हैं। इन दोनों का उपचार प्रायः एक समान है।

हेतु--उष्ण एवं तीक्ष्ण पदार्थों के अतिसेवन से पैत्तिक द्रव अधिक होकर रक्त को पतला कर देते हैं तथा संरक्षक स्रोत में रूक्षता उत्पन्न हो जाती है जिससे पूर्ण रक्षा नहीं कर सकते हैं। कभी-कभी उछलने, कूदने, दौड़ने, सीढ़ीपर बारं-बार चढ़ने या शरीर में रक्त की बाहुल्यता से और कभी आर्तव काल में स्त्रीसंगम करने से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--शरीर दुर्बल हो जाता है, नाड़ी तीव्र एवं द्रुतगति से चलती है। तृष्णाधिक्य होता है, चेहरे का वर्ण पांडु-पीत हो जाता है। रक्त निकलते समय दाह एवं जलन होती है। मूत्र का वर्ण ललाई लिये पीला हो जाता है। हृदय, मस्तिष्क और यकृत् आदि उत्तमाङ्गों के दौर्बल्य के लक्षण प्रगट हो जाते हैं।

चिकित्सा--उक्त अवस्था में ३ माशा बिहीदाने का लुआब, ५ दाना उन्नाव का शीरा, ३-३ माशा काहू के बीज, तरबूज के बीज के मग्ज, अंजबार की जड़ और कुल्फाके बीज इनका शीरा १२ तोले अर्क नीलूफर में निकाल कर ४ तोला शर्बत उन्नाब या शर्बत नीलूफर ४ तोला मिलाकर ७ माशा बारतंग के बीज का प्रक्षेप देकर सवेरे पिलायें और शामको ४।। माशा कुर्स कहरुवा खिला कर ऊपर से १२ तोले अर्क नीलूफर में ५ दाना उन्नाब और ३ माशा छिले हुए काहू के बीज का शीरा निकाल कर २ तोला खट्टे अनार के शर्बत या २ तोला फालसा का शर्बत मिला कर पिलायें। बड़की दाढ़ी (बरोंह) ३ तोला, आनार का छिलका २ तोला, हरा माजू २ तोला, बबूल की छाल दो तोला—सब को जल में भिंगो कर उससे योनि-प्रक्षालन करायें। यह बर्ति भी लाभकारी है--गुलनार फारसी, हरा माजू, कुंदूर, सुर्मा इसफहानी, अकाकिया, यमनी फिटकीरी प्रत्येक ६ माशा सबको कूट-छान कर बारतंग के रस में मिलाकर वर्त्ति बनायें और उपयोग करायें।

खाने के लिये यह योग भी लाभकारी है--दम्मुल् अख्वैन, वंशलोचन, कहरुवा शमई, गिल अरमनी, गुलनार फारसी, निशास्ता, बबूल का गोन्द, कतीरा, मसीकृत सावरशृंग, शादनज मग्सूल प्रत्येक १ तोला—सबको कूट-छान कर चूर्ण बनायें। इसमें से ६-६ माशा चूर्ण सवेरे-शाम फँका कर १२ तोले अर्क गाबजवान में २ तोला शर्बत अंजबार मिला कर पिला दिया करें।

आराम होने पर बलवर्द्धनार्थ मुफर्रेह बारिद ५ माशा या खमीरा आबरेशम शीरए उन्नाब वाला ५ माशा, या खमीरा अबरेशम हकीम ईर्शदवाला ५ माशा कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य--उष्णपदार्थ जैसे मांस, लाल मिर्च और गरम मसाला आदि के सेवन से, अधिक चेष्टा, धूपमें चलने-फिरने और समागम से परहेज करें। चाय और गरम दूध का सेवन भी उक्त अवस्था में हानिप्रद है।

पथ्य--साधारण शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, पालक, टिंडा, तुरई, मूँगकी दाल चपाती के साथ देवें और दूध, खशका, मूँगकी खिचड़ी, अंगूर, नाशपाती, फालसा प्रभृति यथाभ्यास देवें।

४—वरमुर्रहम, इम्रविजाजुर्रहम

नाम--(अ०) वरमुर्रहम, इम्रविजाजुर्रहम; (उ०) रहम (नाफ) की सूजन, रहम का टल जाना, नाफ का टल जाना; (सं०) गर्भाशय शोथ, गर्भाशय-

विच्युति ; (अं०) मेट्रायटिस (Metritis), डिस्प्लेस्मेंट ऑफ दी यूटरस (Displacement of the Uterus)।

वर्णन—कभी गर्भाशय अपने स्थान से टलकर सामने या पीछे की ओर झुक जाता है। कभी उसकी ग्रीवा और कभी उसके भीतर भी शोथ हो जाता है।

हेतु—गर्भाशय के स्थान पर आघात लगना, आर्तव काल में शीत लगना या वर्षा में भीगने के कारण माहवारी का रुक जाना, गर्भाशय के भीतर तीक्ष्ण औषधियों का प्रयोग करना, कभी-कभी गुप्ताङ्ग शोथ एवं सूजाक के कारण और कभी अति मैथुन, गर्भधारण या गर्भपात के पश्चात् भी प्रायः यह रोग उत्पन्न हो जाता है। कुछ विलासी प्रकृति के पुरुष संभोग के कतिपय अन्य सरल एवं प्राकृतिक आसनों को छोड़कर केवल कामवासना की तृप्ति के लिये अप्राकृतिक आसन वा विधि का उपयोग करते हैं जिसका अनिवार्य फल निर्दोष ललनाओं के लिए यह रोग होता है।

लक्षण—रुग्णा के पेडू और कटि में पीड़ा होती है। चलने-फिरने में कष्ट होता है। गाढ़ा एवं लेसदार द्रव गर्भाशय से बारंबार स्रावित होता रहता है। स्त्री समागम के समय प्रायः कष्ट होता है। गर्भाशय स्थूल (मोटा) एवं सुषिरपूर्ण (पिलपिला) हो जाता है। मासिक धर्म कष्टपूर्वक होता है। मूत्र बारंबार और रुक-रुक कर होता है। गुप्ताङ्ग में गौरव एवं दाह प्रतीत होता है। रोग तीव्र होने पर कम्पपूर्वक ज्वर हो जाता है। गुप्ताङ्ग के भीतर अंगुली डाल कर देखने से गर्भाशय शोथयुक्त एवं वेदनापूर्ण प्रतीत होता है। कभी अतिसार होने लगता है तो कभी उदराध्मान हो जाता है। उत्क्लेश होता और बारंबार वमन होता है। कभी मूर्च्छा एवं प्रलाप होने लग जाता है। रोग पुराना होने पर गर्भाशय में व्रण हो जाता है और श्वेत प्रदर (सैलानुर्रहिम) की व्याधि हो जाती है।

चिकित्सा—रोगिणी को सुखपूर्वक शय्या पर लेटाये रखें और अधिक चलने-फिरने एवं चेष्टा करने से मना कर देवें। यदि रुग्णा बलशालिनी हो तो साफिन का शिरावेध करायें या जानुओं (रानों) के भीतर की ओर जोंक लगवायें तथा खतमी के फूल, सूखा मकोय और बिरंजासफ प्रत्येक ५ तोला जल में उबाल कर गरम पानी में मिला कर एक टब में भरें और उसमें रुग्णा को कटि पर्यन्त बैठायें। वेदना शमनार्थ पोस्ते की डोडी १ तोला और टेसू के फूल १ तोला पानी में उबाल कर उसमें फलालैन का टुकड़ा तर करके पेडू के स्थान पर सेक करें। प्रारम्भ में जौ का आटा, खतमी के बीज, खतमी के फूल, रसवत, लालचन्दन प्रत्येक ६ माशा, अमलताश का गूदा ९ माशा—सबको यथोचित हरी कासनी और हरेमकोय के रस में पीस कर पेडू के

ऊपर लेप करें और गुप्ताङ्ग के भीतर धात्री से र्बात-स्थापन करायें अथवा हरी कासनी और हरे मकोय के यथावश्यक रस में १ तोला मरहम दाखिलयून मिला कर और गुलरोगन १ तोला, मुर्गी के एक अंडे की सफेदी तथा ९ माशा अमलतास का गूदा सम्मिलित करके उसमें स्वच्छ एवं नरम कपड़ा तर करके फलवर्ती (हुमूल की भाँति) धारण करायें। सूखा मकोय, बिरंजासिफ, गुलबाबूना १-१ तोला सब को पानी में काढ़ा कर के डूश द्वारा पिचकारी करके या एनीमा सीरिंज के द्वारा पिचकारी करके गर्भाशय और गुह्याङ्ग को प्रक्षालित करके शुद्ध कर दिया करें।

यदि आर्तवावरोध के कारण शोथ हो तो सबेरे हब्ब कुर्तुम, सौंफ, हंसराज, खरबूजा के बीज, खरबूजे का छिलका प्रत्येक ७ माशा, गावजबान ५ माशा- सबको जल में उबाल-छान कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर कुछ दिन पिलायें और सायंकाल माजून कुर्तुम ५ माशा खिला कर सौंफ, कड़, खीरा ककड़ी के बीज, खरबूजा के बीज प्रत्येक ५ माशा सबको जल में पीस कर शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिला कर पिला दिया करें। और जुंदबेदस्तर ३ माशा, जदवार ३ माशा, गुलाब के फूल ६ माशा, मालती ३ माशा बालछड़ और सूखा मकोय प्रत्येक ६ माशा, सब को आवश्यकतानुसार हरे मकोय के रस में पीस कर १ तोला रोगन बाबूना मिला फलवर्ति की भाँति उपयोग करायें।

ज्वर का उपसर्ग होने पर प्रातः-सायंकालीन योग में ७ माशा खाकसी योजित करें। द्रव की शुद्धि के लिये ६ माशा सूखा बिहरोजा, सेंधानमक ६ माशा, बायबिडंग ६ माशा, समुद्रफेन ३ माशा बारीक कूट-छान कर तीन गोलियां बना कर दो उभय पार्श्व में और एक मध्य में धात्री से धारण करायें। जब द्रव की शुद्धि हो जाय तब उपरिलिखित मरहम दाखिलयूनावाला योग पाँच-छः दिन निरंतर फलवर्ति (हमूल) की भाँति प्रयोग करायें। तदनन्तर दृढ़ता के लिये अनार का छिलका, कसीस, हरा माजू, तज कलमी, पुराना गच और छोटी माई प्रत्येक ६ माशा --सबको कूट-छानकर महीन कपड़े में पोटली बाँधकर धात्री के द्वारा तीन-चार दिन तक (हमूल) की भाँति प्रयोग करायें।

अन्य उपद्रवों का उपचार आवश्यकतानुसार करें। अस्तु; वेदना की दशा में सफेद मोम १तोला, १ तोला गुलरोगन में पिघला कर और ३ माशा बारीक पिसाहुआ एलुआ उसमें मिला कर इसकी फलवर्ति (हमूल) स्थान करें।

अपथ्य--अधिक चलने-फिरने और तीव्र चेष्टा करने तथा बादी एवं गुरु पदार्थों के सेवन से परहेज करें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी, जैसे--कम मिर्च की बकरी का शूरबा-चपाती डाल कर या मूँग-अरहर की दाल, कद्दू, कुलफा, तुरई, टिंडा, पालक आदि की तरकारी आवश्यकतानुसार देवें।

५---हिक्कतुल्फ़र्ज, वरमुल्फ़र्ज़

नाम--(अ०) हिक्कतुल्फ़र्ज, वरमुल्फर्ज ; (उ०) खारिश शर्मगाह, वरम शर्मगाह ; (सं०) भगकण्डू, भगशोथ ; (अं०) वल्वर प्रूराइटिस (Vulvar Pruritis)', वल्वाइटिस (Vulvitis)।

हेतु--श्वेत प्रदर, शारीरिक दौर्बल्य, स्थानिक शोथ, आर्तव दोष अथवा बिंदुमूत्र (तक़्तीरुल् बौल) या कष्ट प्रसूति, मधुमेह (जयाबीतुस) एवं सूजाक के कारण यह रोग हो जाता है। कभी मैला-कुचैला रहना और कामाद्रि के बाल का बढ़ जाना और जूँ पड़ जाना भी इसका हेतु होता है।

लक्षण--वेदनापूर्वक मूत्र होता है। रुग्ण-स्थान में असीम कण्डू होता है। कभी वहाँ पर लालिमा और शोथ हो जाता है।

चिकित्सा--विकारी स्थान को गरम पानी और साबुन से धोकर शुद्ध करें। तदुपरान्त १ तोला गुलरोगन या १ तोला रोगन बनफ्शा में १ माशा कपूर, ३ माशा सफेद कत्था और १ माशा गिलअरमनी का महीन चूर्ण मिला कर लगायें। अथवा ३-३ माशा रसवत एवं लालचन्दन और एक माशा कपूर इनको यथोचित अर्क गुलाब में घिसकर उसमें कपड़े की गद्दी तर करके रुग्ण स्थान के ऊपर धारण करायें। शोथ की दशामें मरहम काफूर लगवायें और गुलनीलूफर, खतमी के फूल, गुलाब के फूल, शाहतरा, सूखा मकोय, कासनी के बीज, प्रत्येक ५ माशा, उन्नाब ५ दाना सबको यवकुट करके रात्रि में गरम पानी में भिगोयें। सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर कुछ दिन पिलायें।

अपथ्य--उष्ण पदार्थ, गुड़, तेल, अधिक मशालेदार पदार्थ आदि के सेवन से बचें। रुग्णस्थान को स्वच्छ रखें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार जैसे--यवमण्ड, साबूदाना आदि हरे शाक, जैसे कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई आदि चपाती के साथ देवें या मूँग की नरम खिचड़ी, खशका दूध, मक्खन, आदि का सेवन उपादेय है।

६---वरम मह्बिल

नाम--(अ०) वरम मह्बिल ; (उ०) वरम अन्दाम निहानी, अंदाम निहानी की सूजन ; (सं०) योनिशोथ ; (अं०) वेजायनाइटिस (Vaginitis)। इस रोग में गुह्याङ्ग (योनि) शोथ युक्त हो जाता है।

हेतु--कष्टप्रसूति, अतिमैथुन, अति आर्तवप्रसवशोणितस्राव, श्वेत प्रदर, मधुमेह, सूजाक, स्थानिक आघात एवं क्षत, गुह्याङ्ग की मलिनता और अस्वच्छता, खुनाक वबाई (रोहिणी) प्रभृति कतिपय ज्वर इसके हेतु हुआ करते हैं।

लक्षण--गुप्ताङ्ग में अत्यन्त शोथ एवं दाह होता है। मूत्र त्याग करते समय पीड़ा होती है और बारंबार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। यदि भगोष्ठ भी शोथयुक्त हो, तो चलने में भी कष्टानुभव हुआ करता है। योनि से हरापन लिये पीला द्रव स्रावित होता है। सार्वदैहिक दौर्बल्य होता है। रोग तीव्र होने पर ज्वर भी हो जाता है। दस-पन्द्रह दिन बाद रोग सर्वथा नष्ट हो जाता है अथवा लक्षण घटकर रोग पुराना (चिरकालानुबंधी) हो जाता है। उक्त अवस्था में रोगिणी के गुप्ताङ्ग में हलका कण्डु शोथ एवं दाह हुआ करता है।

चिकित्सा--रोगिणी को सर्वथा सुखपूर्वक शय्या पर लेटायें रखें। रोगारम्भ में कुछ दिनतक प्रति दिन दो बार दस मिनट तक गरम जल में कमर तक बैठायें अर्थात् आवजन करायें तथा यह योग पीने को देवें।

नीलूफर के फूल, खतमी के फूल, गुलाब के फूल, पित्तपापड़ा, मकोय, कासनी के बीज प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब ५ दाना सब को कूट कर रात्रि में गरम पानी में भिंगो देवें और सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्वत नीलूफर मिला कर पिलायें। चौथे दिन एक विरेचन देवें तथा उपयुक्त फलवर्ति (फिर्जजा) एवं लेप का यथाविधि प्रयोग करें।

७--इख़्तनाक़ुर्रहम

नाम--(अ०) इख्तिनाक़ुर्रहम ; (उ०) बावगोला ; (सं०) अपतन्त्रक ; (अं०) हिस्टीरिया (Hysteria)।

वर्णन--यह एक वातव्याधि है जो वातसंस्थानिक क्रिया में विकार उत्पन्न होने से प्रगट होती है। इससे शारीरिक एवं आध्यात्मिक क्रिया में भी किसी प्रकार अन्तर आ जाता है। यद्यपि यह रोग अधिकतया स्त्रियों को होता है और स्त्रियों को प्रचुरता से होने (या गर्भाशय के विकार से होने) के कारण इसको 'इख्तिनाकुर्रहम' कहते हैं, तथापि क्वचित् पुरुष भी इसके आखेट होते हैं। अस्तु, शैखुर्रईस बूअलीसीना एवं राजी का यह वचन है कि "कभी स्त्रियों के इख्तिनाकुर्रहम की भाँति पुरुषों को भी इसी प्रकार की रुग्णावस्थायें उत्पन्न हो जाती हैं।"

हेतु--बहुधा धनवान् और कोमल प्रकृतिवाली नगर की स्त्रियाँ १२ से ४० वर्ष तक की आयु में प्रायः इस रोग का आखेट हुआ करती हैं। कष्टार्तव या किसी कारण वश उसका अवरुद्ध हो जाना, विलासिता का जीवन व्यतीत करना, काम-धंधा और साधारण परिश्रम न करना, कामोत्तेजक उपन्यास आदि श्रवण एवं पठन करना, कामप्रवणता, हठीला कब्ज (मलवद्धता) या उदराध्मान, चिंता, शोक, क्रोध, भय, उलझन या अतीव हानिजन्य आघात और युवती स्त्री का दीर्घकाल पर्यन्त विवाह न करना अथवा अति जागरण आदि इस रोग के हेतु हैं।

लक्षण--यह रोग आवेग (दौरा) पूर्वक होता है। आवेग किसी को कुछ मिनट, किसी को कुछ घंटे और किसी को दो-चार दिन तक रहता है और वह प्रायः आर्तवकाल में पड़ता है। प्रथम रोगिणी के कूल्हों में कुछ पीड़ा प्रतीत होती है। नेत्र से अश्रु बहता है। शिरः शूल होता है। रोगी निढाल होता है और आलस्य एवं दौर्बल्य के लक्षण प्रगट होते हैं। नेत्र के सामने अंधेरा हो जाता है। कुछ देर बाद उदर में एक गोला-सा उठकर ऊपर जाकर गले में अटक जाता है जिसको रोगिणी बारंबार निगलने का यत्न करती है और उसका दम घुटने लगता है। इसी कारण जनसाधारण इसको 'बावगोला' या इख्तिनाक 'इख्तिनाकुर्रहम' (गला घोंटना) कहते हैं। ग्रीवास्तम्भ, उद्गारबाहुल्य तथा बहुमूत्र होता और हृदय का स्पन्दन बढ़ जाता ह। रोगिणी अकस्मात् चिल्ला कर रुदन करने लगती है या अट्टहास करके हँसने लगती है तथा मूर्च्छित-सी हो कर पृथ्वी पर गिर पड़ती है। स्वर बैठ जाता है। बोला नहीं जाता। छाती कूटती है। हाथ-पांव मारती है। शरीर में उद्वेष्टन होता है। कभी उठती और कभी बैठती है। हस्तपाद में आक्षेप हो जाता है। श्वासोच्छ्वास बढ़ जाता है। हस्त-पाद शीतल हो जाते हैं। कभी रोगिणी अपने शिर के बाल नोचती है और कपड़े फाड़ती है। पास-पड़ोस के लोगों से घृणा करती तथा काट खाने को दौड़ती है और कभी दीवाल से शिर टकराती है। बारंबार अपने कण्ठ की ओर अंगुली ले जाती है मानो कण्ठ के भीतर किसी वस्तु के अटकने का संकेत करती हो। जब रोग का बल घट जाता है तब रुग्णा हाँफती और काँपने लगती है। स्पर्श से चौंकती और कभी चुपचाप पड़ी रहती है। अन्ततोगत्वा खिलखिला कर हँस देती है या रो देती है और रोग का आवेग दूर हो जाता है। पुष्कल मूत्र प्रसेक होता है। यदि रोग के आवेग में अपस्मारवत् आक्षेप हो तो रोगिणी मूर्च्छित (लुप्तसंज्ञ) हो जाती है। किसी-किसी को प्रलाप हो जाता है जिससे आवेग की दशा में बहकती और असम्बद्ध भाषण (बेहूदा बकवास)

करती है। इस रोग के आवेग में रोगिणी के मुख से अपस्मारी की भांति झाग (फेन) नहीं आता।

चिकित्सा---यदि रोगिणी कुमारी हो तो प्रायः विवाहोपरांत यह व्याधि स्वयमेव दूर हो जाती है। नवयुवती स्त्री को यह व्याधि हो तो आयुवृद्धि के साथ धीरे-धीरे कम हो जाती है। आवेग की दशा में अर्क गुलाब और अर्क केवड़ा आदि सुगन्धित द्रव्य मुख एवं छाती पर छिड़ककर रोगिणी को होश में ले आयें। गले और सीना का बन्धन ढीला करके रुग्णा के शिर को किंचित् ऊँचा रखें। चेहरे पर शीतल जल के छींटे मारें या हींग सुँघायें। एक-दो मिनट के लिये नाक के नथुने बन्द कर देवें। बाहु और पिंडली को कसकर बाँधें। पाँव और सम्पूर्ण शरीर का खूब संवाहन करें। नाभि के नीचे और पिंडलियों के ऊपर खाली सींगी लगवायें और पाशोया (पादस्नान) करावें। यदि मलावरोध हो तो बस्ति देवें और शुद्ध कस्तूरी १ माशा रोगन यास्मीन (चमेली का तेल) १ तोला में घोलकर उसमें रूई तर करके तैलपिचु की भाँति योनि में स्थापन करायें तथा तज ६ माशा, नागरमोथा ६ माशा, बालछड़ ६ माशा कूट-छानकर यथावश्यक मकोय के रस में मिलाकर नाभि के नीचे लेप करें।

अनावेग की दशा में मासिक धर्म के नियमन के लिये ५ माशा कड़ (कुसुम के बीज), सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, हंसराज ७ माशा, खरबूजा के बीज ५ माशा, खरबूजा का छिलका ७ माशा सबको जल में काढ़ा करके छानकर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर सवेरे पिलायें। यदि गर्भाशयस्थ दूषित द्रव संचय से हो तो गर्भाशय की शुद्धि के लिये यह झाड़ का योग प्रयुक्त करायें---बायबिडंग ६ माशा, समुद्रफेन, सूखा विरोजा, सेंधा नमक प्रत्येक ३ माशा कूट-छानकर मलमल के महीन नरम कपड़े में छोटी-छोटी तीन पोटलियाँ बाँधकर एक पोटली गर्भाशय के मुख के नीचे और उसके दाहिने-बायें दोनों ओर एक-एक पोटली दाई से स्थापन करायें। इस विधि से तीन दिन तक उक्त क्रिया करें।

मलावरोध हो तो रात्रि में सोते समय कुर्स मुलय्यिन ३ टिकिया खिलाकर एक पाव दूध पिला दिया करें या सनाय मक्की ७ माशा और ४ तोला बूरा एक पाव गाय के दूध में उबालकर पिलायें।

आक्षेपनिवारण के लिये १–१ माशा जदवार और ऊदसलीब महीन पीसकर ५माशा खमीरा गावजबान,जदवार, ऊदसलीब वाला में मिलाकर सवेरे प्रथम खिलाकर ऊपर से ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज, ३ माशा सूखा मकोय ६–६ तोला अर्क सौंफ और अर्क बिरंजासिफ में पीसकर ४ तोला शर्बत दीनार या ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर पिला दिया करें। नियत ऋतुकाल से तीन दिन पूर्व से हब्ब मुदीर्र १–१ गोली या मुबारकी १–१ गोली प्रातः

मध्याह्न-सायंकाल अर्थात् दिन में तीन बार तीन दिन तक खिलाकर ४ तोला शर्बत बजूरी पानी में घोलकर पिलायें।

यदि संशोधन अपेक्षित हो तो यथाविधि प्रथम ग्यारह दिन तक मुंजिज देकर मुसहिल (विरेचन) देवें। विरेचन से खाली होने के बाद सवेरे १-१ माशा जदवार और ऊदसलीव महीन पीसकर एक तोला खमीरा गावजबान में मिलाकर खिला दिया करें। जदवार खताई, कलमी शोरा, रूमी मस्तगी, जुंदबेदस्तर, ऊदसलीब, अकरकरा प्रत्यक ३ माशा, फादजहर हैवानी १।। माशा, असली कस्तूरी १ माशा कूट-छानकर गुठली निकाले हुये मुनक्का को पीसकर तैयार किये हुये शीरा में मिलाकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमें से २-२ गोली सायंकाल खिलाकर ऊपर से ५ तोला अर्क गुलाब पिला दिया करें।

अपतन्त्रक हर वटी योग--हींग १ माशा, बालछड़ २ माशा, गुल बाबूना और मुलेठी १-१ तोला--सबको महीन पीसकर जल में घोंटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें। इसमें से १-१ गोली दिन में तीन बार देवें।

बलवृद्धि के लिये ५ माशा खमीरा आबरेशम हकीम इर्शदवाला या ५-५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली या दवाउल्मिस्क हार्र जवाहरवाली या तिर्याक फारूक १ माशा या खमीरा गावजबान १ तोला में मिलाकर कुछ दिन खिलायें। इस बात का सदैव ध्यान रखें कि पाचनशक्ति ठीक रहे। मलबद्धता नहीं होने देवें। चिकित्साकाल में सतर्कता की दृष्टि से मलबद्धतानाशक (कब्जकुश) औषधि का उपयोग कराते रहना श्रेयस्कर एवं समीचीन होता है। दो टिकिया दवाउश्शिफा (सर्पगंधावटी) जल के साथ सेवन कराना भी परम गुणकारी है।

अपथ्य--बादी, गुरु, दीर्घपाकी एवं बाष्पोत्पादक पदार्थों से तथा शोक एवं क्रोध से, कामोत्तेजक कथानक और उपन्यास आदि के पढ़ने एवं अतिजागरण से परहेज करें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार देवें। विरेचन काल में नरम मूंग की खिचड़ी के सिवाय कोई अन्य आहार नहीं दिया जाय। अन्य काल में आवश्यकतानुसार कम मिर्च का बकरी के मांस का शूरबा चपाती के साथ देवें। शाकों में कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, टिंडा आदि आवश्यकतानुसार देवें। फलों में मीठा अनार, अंगूर, अमरूद, सेब आदि अभ्यासानुकूल देवें।

८—सैलानुर्रहम

नाम—(अ०) सैलानुर्रहम; (उ०) सफेद पानी आना (बहना); (सं०) श्वेतप्रदर; (अं०) ल्युकोरिया (Leucorrhoea) ह्वाइट्स (Whites)।

इस रोग में स्त्रियों के गुप्तांग से पिलाई लिये सफेद द्रव बहा करता है।

हेतु—कभी सूजाक, फिरंग (आतशक) अथवा वातरक्त (निक़्रिस) में उपद्रवस्वरूप यह रोग हो जाता है। कभी-कभी गर्भाशय शोथ, गर्भाशयभ्रंश, रुद्धार्तव अथवा प्रारंभिक आयु में गर्भस्थित हो जाने से और गुह्यांगशोथ या प्रदाह के कारण अथवा सार्वदैहिक दौर्बल्य एवं रक्ताल्पता के कारण भी यह व्याधि उत्पन्न हो जाती है। कभी शीतल एवं तर आहार के अति सेवन से शरीर में अधिक आक्लेद उत्पन्न होकर इस रोग का हेतु होता है। स्मरण रखना चाहिये कि श्वेत प्रदर से पीड़ित रोगिणी को गर्भाशय शोथ की तीव्रातीव्र शिकायत अवश्य होती है। अतएव श्वेतप्रदर की चिकित्सा के साथ-साथ गर्भाशय शोथ का उपचार अवश्य करना चाहिये।

लक्षण—कटि में दर्द रहता है। पेड़ू में बोझ एवं वेदना—कष्ट अवश्य पाया जाता है। वारंवार मूत्रत्याग की प्रवृत्ति होती है। सामान्य कायिक दौर्बल्य, क्षुधानाश, कष्टार्तव और आलस्य होता है। काम-काज करने की इच्छा नहीं होती। भगकण्डू होता उससे श्वेत छाछ की भांति या पीताभ द्रव स्रावित होता रहता है। जब तक यह व्याधि रहती है गर्भस्थित नहीं हुआ करता। कभी-कभी गर्भकाल में भी यह व्याधि हो जाती है। उक्त अवस्था में रोगिणी के गुह्यांग में असीम कण्डू होकर अधिक प्रमाण में द्रव स्रावित हुआ करता है। नवविवाहिता एवं नवयुवती स्त्रियों को भी यह व्याधि प्रायः हो जाती है। यदि वृद्धावस्था में इस प्रकार की व्याधि होती हैं तो गुप्तांग से पनीर के समान जमा हुआ और गाढ़ा द्रव स्रावित हुआ करता है। युवती स्त्रियों में श्वेत लेसदार कभी-कभी पतला एवं चमकीला द्रव निस्सरित होता है जो भगोष्ठों पर चिपक जाया करता है।

चिकित्सा—प्रथम किसी चतुर दाई को दिखाकर विवरण ज्ञात करें। यदि इस व्याधि के साथ गर्भाशयशोथ भी हो तो प्रथम गर्भाशय शोथ के प्रकरण में उल्लिखित शोथ की चिकित्सा करें। अर्थात् मरहम दाखिलयून १ तोला हरी कासनी और हरे मकोय के १–१ तोला रस में मिलाकर ६ माशा गुलरोगन और मुर्गी के एक अंडे की सफेदी सम्मिलित करके दाई (दाया) के द्वारा स्थानिक प्रयोग करायें। यदि दोषनिर्हरण की अपेक्षा हो तो गर्भाशय शोथ में

उल्लिखित झाड़ का योग प्रयुक्त करायें। तदनन्तर रुग्णा के सार्वांगिक स्वास्थ्य के लिये बल्य औषधियों का प्रयोग करायें। स्थानिक रूप से गुह्यांग की शुद्धि एवं स्वच्छता परमावश्यकीय है, अन्यथा व्रण आदि उत्पन्न होकर भयंकर रोगलक्षणों के उत्पन्न हो जाने का भय है। अस्तु, फुलाई हुई फिटकिरी २ माशा और सफेद कत्था ४ माशा, १।। छटांक स्वच्छ जल में घोलकर कुनकुना गरम करके फीमेल सीरिंज (स्त्रियों में प्रयुक्त होनेवाली योनि बस्ति) के द्वारा उसको धो लिया करें। और अकाकिया, गुलनार, हरा माजू, फिटकिरी, बालछड़ प्रत्येक ३ माशा--सबको महीन पीसकर और एक स्वच्छ एवं नरम कपड़े को स्वच्छ पानी में नम करके उक्त औषध से आप्लुत (लत) करके योनि के भीतर रखें। त्रिवंग भस्म (कुश्ता मुसल्लस) २ चावल १ तोला माजून मोचरस में मिलाकर खिलाना अथवा कुक्कुटाण्डत्वग्भस्म २ चावल मिलाकर खिलाना भी लाभकारी है। माजून सुपारी पाक ७ माशा या हलवाए सुपारी पाक १ तोला में शुक्ति भस्म १ रत्ती या मुक्ता भस्म २ चावल मिलाकर खिलाने से भी उक्त लाभ होता है। सामान्य कायिक दौर्बल्य निवारण करने के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा में १ टिकिया कुर्स फौलाद मिला कर खिला दिया करें अथवा भोजनोत्तर ३–३ माशा शर्बत फौलाद सेवन करायें।

श्वेतप्रदरोपयोगी चूर्ण योग --कुंदुर, गुल पिस्ता, सुपारी का फूल, कलमी तज, रूमी मस्तगी, सफेद इलायची, वंशलोचन, सालममिश्री, सफेद मुसली, संगजराहत, चुनिया गोंद, छोटी माईं, पठानी लोध प्रत्येक ६ माशा, मिश्री ७ तोला कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमें से ७–७ माशा चूर्ण प्रातः सायंकाल दूध से खिलायें।

गर्भावस्था में भी लाभकारी श्वेतप्रदरोपयोगी चूर्ण योग--मुक्ताशुक्ति १।। तोला, वंशलोचन ६ माशा, तालमखाना ६ माशा, छोटी इलायची का दाना ६ माशा, मिश्री ३ तोला--सबको कूट-छानकर चूर्ण बनायें। इसमें से ७ माशा चूर्ण फँका दिया करें।

कभी-कभी इस रोग के पुराना होने के कारण गर्भाशय में व्रण एवं घाव हो जाते हैं। उक्त अवस्था में यथोचित उपचार के साथ-साथ नीम की पत्ती १ तोला और कबीला ३ माशा, जल में क्वाथ करके इससे पिचकारी करके गर्भाशय को धुलवाते रहना और स्थानिक रूप से यथावश्यक मरहम काफूर या मरहम जदवार लगाना और १ माशा मुरदासंग और १ माशा दुग्ध पाषाण सबको महीन पीसकर मरहम सफेदा या मरहम काफूर में मिलाकर उसमें नरम कपड़ा या रूई आप्लुत करके इसे गर्भाशय के भीतर फलवर्ति (फिर्जजा) की भांति स्थापन करवाना चाहिये।

अपथ्य--बादी, गुरु, कफकारक एवं अधिक उष्णपदार्थ, तेल-गुड़ के पके हुये एवं अम्ल पदार्थ और लाल मिर्च के सेवन से यावच्छक्य परहेज करें। अधिक चलना-फिरना, कोई भार उठाना, कठिन परिश्रम एवं चेष्टा करना इस रोग में हानिकारक है।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, जैसे--कम चिर्च का बकरी का शूरवा, कद्दू, कुलफा, पालक, टिंडा, तुरई, चुकंदर आदि की तरकारी या मूंग-अरहर की दाल चपाती के साथ देवें या मूंग की नरम खिचड़ी और पुलाव खिलायें। फलों में से मीठा अनार, अंगूर, सेव और अमरूद आदि देवें।

---

९ हिक्कतुर्रहम, शिकाकुर्रहम, बुसूरुर्रहम

नाम--(अ०) हिक्कतुर्रहम, शिक़ाक़ुर्रहम, बुसूरुर्रहम; (उ०) रहम की खारिश, रहम का फट जाना, रहम की फुंसियाँ; (सं०) जरायुजकण्डू जरायुविदार, गर्भाशयिक विस्फोट (व्रण), (अं०) इचिंग ऑफ यूटरस (Itching of Uterus), रैप्चर यूटराई (Rupture Uteri), अलसर ऑफ यूटरस (Ulcer of Uterus)।

हेतु--कभी किसी दोष के प्रगल्भ होने (प्रकोप) से, कभी श्वेतप्रदर या गर्भाशयशोथ के चिरकालानुबंधी हो जाने पर गर्भाशय में कण्डू होता है और कभी-कभी छोटी-छोटी फुंसियाँ भी हो जाती हैं। कभी गर्भाशय द्वार की श्लैष्मिक कला में क्षोभ होकर विदीर्ण हो जाता है और उसमें व्रण एवं घाव हो जाते हैं।

लक्षण--कण्डू एवं दाह (सोजिश) होता है। यदि फुंसियाँ हों तो ऊंगली डालने से मालूम होती हैं। व्रण एवं घाव हों तो उनसे पूय एवं मवाद निकलता है। कण्डू की दशा में मैथुनेच्छा बढ़ जाती है। कण्डू की अधिकता की दशा में कभी-कभी गर्भाशय बाहर निकल आता है।

चिकित्सा--प्रथम रोग के मूल हेतु का पता लगाकर उसका निवारण करें। श्वेतप्रदर वा गर्भाशय शोथ इसका हेतु हो तो उसका उपचार करें। यदि किसी दोष के प्रकोप के कारण हो तो प्रथम शिरावेध एवं विरेचन द्वारा उसका शोधन करें। तदनन्तर निम्न औषधियाँ सेवन करायें। दाह एवं कण्डू निवारणार्थ--

३ तोले अर्क गुलाब में ३ माशा कपूर पीसकर उसमें कपड़ा भिगोकर योनि के भीतर स्थापन करायें। ५ तोले अर्क गुलाब में ६-६ माशा इसबगोल और खतमी के फूल का लुआब निकाल कर इसमें मुर्गी के एक अण्डे की सफेदी और

गुलरोगन ६ माशा योजित कर पतला लेप लगवायें। ५ तोला अनार का छिलका और ५ तोला छिला हुआ मसूर जल में काढ़ा करके उससे योनि प्रक्षालन करायें।

फुंसियों की दाह मिटाने के लिये रसवत, मुरदासंग, गिल अरमनी, सफेदा काशगरी हरे मकोय के रस या अर्क गुलाब में पीस कर मुर्गी के अण्डे की सफेदी और गुलरोगन मिला कर इसको अथवा मरहम सफेदा या मरहम काफूर को फलवर्ति की भाँति योनि में स्थापन करें या पिचकारी करें। सैलानुर्रहम के प्रकरण में पिचकारी का जो योग लिखा गया है उसकी पिचकारी करें।

पीने के लिये उक्त अवस्था में कोई रक्त शोधक योग सेवन करायें।

अपथ्य--उष्ण, तीक्ष्ण एवं मसालेदार आहार के सेवन से और अग्नि सेवन से, अधिक काम-काज करने से और मैथुन से परहेज करें। लालमिर्च कम खायें। मीठे पदार्थों से भी परहेज करें। गुड़ और तेल के बने कोई पदार्थ सेवन न करें।

पथ्य--लघु, नरम, शीघ्रपाकी आहार, बकरी का शूरबा चपाती के साथ या मूँग की दाल चपाती के साथ और मूँग की नरम खिचड़ी, खशका दूध के साथ और फलों में से शीतल फल और शीतल शाक सेवन करें।

१०---इस्कात हमल।

नाम--(अ०) इस्क़ात हमल; (उ०) हमल गिर जाना; (सं०) गर्भपात, (अं०) एबार्शन (Abortion)। मिसकैरेज (Miscarriage)।

इस रोग में सात मास से पूर्व गर्भाशय से गर्भ का पात हो जाता है।

हेतु--सामान्य कायिक दौर्बल्य, रक्ताल्पता, जोर से उछलना-कूदना, सीढ़ी पर बारंबार चढ़ना-उतरना, ठोकर खाकर गिरना, किसी भारी वस्तु का उठाना, उदर के ऊपर आघात लगना, एक्का, गाड़ी आदि सवारी, अतिमैथुन, भयभीत होना, अत्यन्त दुःख, चिन्ता और शोक, तीव्र औषधियों या तीव्र विरेचन का सेवन आदि इसके हेतु हैं। कभी मादक द्रव्य के सेवन या कतिपय गर्भाशयिक रोग और सूजाक एवं फिरंग रोग के कारण भी गर्भपात हो जाता है।

लक्षण--प्रथम गर्भिणी बेचैन एवं आलस्ययुक्त होती है। अङ्गमर्द होता है तथा उदर, कटि एवं ऊरुओं में ठहर-ठहर कर प्रसववेदना व पीड़ा होती है। जो क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। गर्भाशय से रक्तस्राव होता है। कुछ स्त्रियों को वमन होता है और सूक्ष्म ज्वर भी हो जाता है। किसी को अल्प और किसी को अधिक रक्तस्राव होता है जो भयंकर लक्षण है।

चिकित्सा--यदि रक्तस्राव कम हो और वेदना भी हल्की हो तो अविलम्ब यथोचित उपचार करने से गर्भ स्थिर रहने की आशा हो सकती है। अस्तु, रोगिणी को चारपाई पर एक करवट सुख पूर्वक लेटायें; उठने-बैठने, चलने-फिरने की आज्ञा कदापि न देवें और रक्तस्तम्भक औषधियों का बहिराभ्यन्तरिक उपयोग करायें। सुतरां, गेरू और संगजराहत १-१ माशा महीन पीस कर आमला के एक मुरब्बा में मिला कर प्रथम खिलायें और ऊपर से ३-३ माशा हब्बुल्आस, अंजबार की जड़ और काला कुलफा के बीज १२ तोला अर्क गावजबान में पीसकर २ तोला शर्बत खशखाश मिला कर पिलायें। दूसरे समय के लिये ६-६ माशा बबूल का गोन्द, गेरू, सफेद पोस्ते का दाना, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, काला कुलफा के बीज और ३-३ माशा कहरुबाये शमई, दम्मुल् अख्वैन तथा गिल अरमनी और २ तोला मिश्री सबको कूट-छान कर चूर्ण बनायें। इसमें से ७ माशा चूर्ण ४ तोला शर्बत अंजबार के साथ तीसरे पहर फँका दिया करें और हरा माजू, गुलनार, झाऊ, अकाकिया, पोस्त अनार प्रत्येक ६ माशा महीन चूर्ण बना कर मलमल का कपड़ा पानी में भिगो कर उस पर उक्त चूर्ण का प्रक्षेप देकर फलवर्ति की भाँति गद्दी रखवायें अथवा २।। तोला पानी में ६ माशा फिटकिरी घोल कर उसमें कपड़े की गद्दी तर करके फलवर्ति की भाँति स्थापन करायें और ६-६ माशा गेरू, सुपारी और हरामाजू तथा एक माशा अफीम जल में पीस कर पेड़ू के स्थान पर लेप करें।

किंतु जब अत्यन्त रक्तस्राव हो रहा हो और वेदना भी शीघ्र-शीघ्र उठती हो, तब प्रायः गर्भपात हुए बिना नहीं रहता। उक्त अवस्था में तीव्र आर्तवजनन औषधियों (मुदिर्रात) से द्रव (प्रसवशोणित) निर्हरण में सहायता करें जिसमें सत्वर गर्भपात हो कर रुग्णा रक्तस्राव आदि कष्ट से सुरक्षित रहे। द्रवनिर्हरण एवं शुद्धि के लिये अन्न-जल के स्थान में क्वाथ का निम्न योग सेवन करायें--मुश्क-तरामसीअ ७ माशा, पोस्त अमलतास ६ माशा, खरबूजे का छिलका १ तोला, सौंफ ७ माशा, हंसराज ७ माशा सबको तीन पाव जल में क्वाथ करें, जब तृतीयांश जल शेष रह जाय, तब यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो ४ तोला शर्बत बजूरी और यदि शीत ऋतु हो तो ४ तोला पुराना गुड़ मिला कर पिलायें। तीव्र तृष्णा में अर्क सौंफ और अर्क मकोय मिला कर थोड़ा-सा केवल कण्ठ तर करने के लिये दे सकते हैं।

वक्तव्य--दम्पति में से यदि किसी को फ़िरंग वा सूजाक का रोग हो तो गर्भस्थिति से पूर्व उसका यथोचित उपचार करना परमावश्यक है अन्यथा गर्भ-पात की आशंका होती है।

अपथ्य--गर्भपात के हेतुओं के निवारण का यत्न करें। जब बारंबार गर्भपात हो जाता हो तब अनागत बाधाप्रतिषेधस्वरूप गर्भकाल में माजून हमल

अंबरी उलवीखाँवाली ५ माशा या माजून नुशारये आजवाली ५ माशा रोगिणी को खिलाते रहें। चालीस दिन तक चेष्टा आदि से तथा गुरु भोजन एवं अम्ल और ग्राही पदार्थों से परहेज करायें।

पथ्य--गर्भपातोत्तर ५ दिन तक अन्न-जल के स्थान में केवल उपरिलिखित काढ़ा पिलाते रहें और अन्न-जल सर्वथा वर्जित करा देवें। पाँचवें-छठे दिन ९ दाने मुनक्का बीज निकाल कर और अग्नि पर सेक कर आहारस्वरूप खिलायें। सातवें दिन समूचा मोठ जल में पकाकर उसका पानी (यूष) पिलायें। तदुपरान्त धीरे-धीरे मोठ वा मूँग की दाल का पानी (यूष) या बकरी के मांस का शूरबा चपाती भिगो कर देवें। जलके स्थान में अर्क मकोय और अर्क सौंफ मिला कर पिलायें। चालीस दिन के पश्चात् बल्य आहारौषध आवश्यकतानुसार दे रुग्णा के शारीरिक बल की वृद्धि करें।

बालरोगाधिकार (अम्राज़ुल् अत्फ़ाल) १३

१--तशन्नुज अत्फ़ाल

नाम--(अ०) तशन्नुज अत्फ़ाल ; (सं०) शिश्वाक्षेप ; (अं०) इन्फॅन्टाइल कन्वलशन (Infantile Convulsion)।

हेतु--सामान्य दौर्बल्य, मलबद्धता, अजीर्ण, उदराध्मान, उदरशूल, दन्तोद्भेद, ज्वरारम्भ आदि।

निदान और लक्षण--आक्षेप से पूर्व शिशु की पुतलियाँ समानान्तर नहीं रहतीं अर्थात् उनमें भेंगापन हो जाता है। शिशु नेत्रगोलक फिराने लगता है। उँगलियों को भींचता है। अंगूठे को बारंबार हथेलियों को ओर ले जाता है। ग्रीवा को अकड़ाकर शिर पीछे की ओर कर लेता है। इसके हस्त-पाद में अनियमित चेष्टायें प्रगट होने लगती हैं और अन्ततः आक्षेप--विशिष्ट आवेग हो जाता है। शिशु हस्त-पाद और शिर को जोर-जोर से मारता है। उसके चेहरे का वर्ण पीला एवं रक्ताभ हो जाता है। ओष्ठ नीले हो जाते हैं और मुट्ठियाँ बन्द हो जाती हैं। अंगूठा उँगलियों के नीचे हो जाता है। पांव का अंगूठा भीतर फिर जाता है। एक-दो मिनट के पश्चात् यह आवेग दूर हो जाता है या न्यूनाधिक अन्तर से बारंबार होता है।

चिकित्सा--मलावरोध हो तो ग्लीसरीन की बत्ती या साबून के फलवर्ति आदि के द्वारा उसका निवारण करें। खमीरा गावजबान अंबरी जदवार ऊद सलीबवाला आयु के अनुसार एक माशा अर्क गावजबान के साथ देवें या निम्नलिखित योग का सेवन करायें--कस्तूरी, हींग, प्रत्येक एक रत्ती, मधु २ माशा--प्रथम दोनों ओषधियों को पीस कर मधु में मिला कर दिन में तीन-चार बार चटायें।

२--उम्मुस्सिब्यान

नाम--(अ०) उम्मुस्सिब्यान, सरअ अत्फाल ; (उ०) बच्चों की मृगी ; (सं०) बालापस्मार, उल्बक ; (अं०) इन्फॅन्टाइल एपी लेप्सी (Infantile Epilepsy)।

वर्णन और हेतु--इसके हेतु भी लगभग वेही हैं जो तशन्नुज अत्फाल के हैं। क्वचित् इसका हेतु मस्तिष्क विकार होता है। श्लैष्मिक द्रवातिरेक के कारण तथा खान-पान के असंयम से साधारणतया स्तन्यपायी एवं अल्पायु शिशुओं को

यह रोग होता है। परन्तु कभी स्तन्यत्याग के अनन्तर भी कतिपय शिशुओं को यह रोग हो जाता है। कब्ज, किसी गुरु आहार का सेवन, दन्तोद्भेद और उदर कृमि इस रोग के हेतु हैं।

लक्षण--आवेग के समय शिशु के हस्त-पाद में आक्षेप होता है। नेत्रगोलक ऊपर को चढ़ जाते हैं और शिशु संज्ञाशून्य हो जाता है। इसके लक्षण भी लगभग तशन्नुज अतफ़ाल के समान हैं। अन्तर केवल यह है कि इसमें आवेग के आरम्भ में शिशु साधारणतया चिल्ला कर मूर्च्छित हो जाता है और आवेग के अन्त में दीर्घ श्वास लेकर उसके मुख से झाग आते हैं।

चिकित्सा--आक्षेपवत् उपचार करें अथवा निम्नलिखित योगों में से किसी एकका व्यवहार करायें--(१)कुंदुर, एलुआ, जुंदबेरदस्तर प्रत्येक १ माशा कट-पीस कर मुद्गप्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमें से सवेरे-शाम या केवल एक बार दिन में एक गोली माता के दूध में घोलकर पिला दिया करें। (२) जायफल, जावित्री, हींग, एलुआ सकोतरी प्रत्येक ६ माशा, केसर ३ माशा--जल के साथ महीन पीस कर राई के बराबर गोलियाँ बना कर सवेरे-शाम एक-एक गोली माता के दूध में घिस कर देवें। नर व मादा ऊद सलीब नीले डोरे में बाँध कर शिशु के गले में तबीज की भाँति लटकाना या जमुर्रद गले में लटकाना भी लाभकारी है। फादजहर हैवानी माता के दूध में घिस कर अथवा मृतक के शिर की हड्डी घिस कर शिशु को पिलाने से बालापस्मार प्रभावतः दूर हो जाता है। जिन ललनाओं के शिशु बालापस्मार में नष्ट हो जाते हों उनको गर्भधारण के तीसरे महीने से सातवें महीने तक माजून हमल अंबरी ५ माशा प्रत्येक मास में बीस दिन तक सेवन कराने से, शिशु उक्त व्याधि से सुरक्षित रहता है।

वक्तव्य--इस रोग के आवेग के समय शिशु के नेत्र गोलक के ऊपर हाथ रख लेना चाहिये। कभी-कभी परिचारकों की असावधानी से इस रोग के कारण शिशु भेंगे हो जाते हैं, औषधियों की उपरिलिखित मात्रा स्तनपायी शिशु के लिये है। अधिक आयु के बालक को उनकी आयु के अनुसार द्विगुण औषधि देनी चाहिये।

अपथ्य--यदि शिशु स्तन्यपायी हो तो स्तन्यधात्री को उत्तम आहार देना चाहिये और आक्लेदजनक पदार्थ चावल प्रभृति एवं सरअ (मृगी) के प्रकरण में लिखित पदार्थों से परहेज करायें। यदि बालक सयाना हो तो उसके खान-पान तथा अन्यान्य उपायों में सावधानी रखें।

पथ्य--स्तन्यधात्री को लघु, शीघ्रपाकी आहार देना चाहिये। बकरी का शूरबा चपाती के साथ या मुर्गे का शूरबा, मूँग या अरहर की भुनी हुई दाल और पक्षियों के मांस का शूरबा आदि देवें। बालक यदि सयाना हो और

खाता-पीता हो तो ये ही पदार्थ भूख से कम एवं सावधानीपूर्वक शिशु को देना चाहिये।

३—सुआलुस्सिब्यान

नाम—(अ०) सुआलुस्सिब्यान; (उ०) बच्चों की खाँसी; (सं०) बालकास; (अं०) इन्फॉन्टाइल ब्राङ्काइटिस (Infantile Bronchitis)।

हेतु—शीत लगना, प्रसेक एवं प्रतिश्याय, दन्तोद्भेद, खसरा, चेचक, काली-खाँसी।

चिकित्सा—साधारण खाँसी के लिये ४ तोला अर्क गावजबानमें ६ माशा लऊक सपिस्ताँ पकाकर दो-दो घंटे पश्चात् एक-एक चम्मच कुनकुना गरम पिलाते हैं और गुलबनफ्शा ७।। माशा, उन्नाब ५ दाना, लिसोढ़ा ६ दाना, खतमी के तीज ७ माशा, मुलेठी ५ माशा गावजबान ५ माशा पानी में उबाल-छान कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर शिशु की माता को पिलायें और इसमें दो-तीन चम्मच औषधि शिशु को भी पिला दिया करें। यदि सीना (वक्ष) में कफ संचित हो जाय और श्वास के साथ शब्द करता हो तो गावजबान और गुलगावज़बान ३-३ माशा, उन्नाब ५ दाना, मिश्री एक तोला सबको जल में उबाल-छान कर शिशु और उसकी माता दोनों को पिलायें। शर्बत एजाज ६ माशा गरम करके थोड़ा-थोड़ा शिशु को चटायें।

यदि मलावरोध हो तो उपर्युक्त योग में एक तोला तरंजबीन घोल कर पिलायें या एरण्डतैल मधु में मिला कर पिलायें। सोंठ और काकड़ासींगी १-१ माशा भृष्ट करके बारीक पीस कर ६ माशा मधु में मिला कर चटाने से भी शिशुओं के कास में उपकार होता है। गुलरोगन या रोगन बबूना या कैरूती आर्दकरस्ता शिशु के वक्ष (सीना) पर नरम हाथ से मर्दन करके ऊपर से रूई गरम करके बाँध देवें। शेष खाँसी के प्रकरण में उल्लिखित उपक्रम करें।

४—डब्बए अत्फाल

नाम—(अ०) डब्बए अत्फाल; (उ०) पसली चलना; (सं०) बाल वायुप्रणालिका शोथ, बाल श्वसनकज्वर, (अं०) प्राइमरी ब्राङ्को न्यूमोनिया (Primary Broncho-Pneumonia)।

यह एक प्रकार का श्वसनकज्वर (न्यूमोनिया) है जो साधारणतया शिशुओं को होता है।

हेतु--बालकासवत् ।

लक्षण--प्रारम्भ में साधारण खाँसी एवं ज्वर होता है। पश्चात् ज्वर तीव्र हो जाता है। किंतु ज्वर एक समान नहीं रहता। कभी कम और कभी अधिक होता रहता है। खाँसी सूखी होती है। कफ निकलता भी है तो कई बार खाँसने के पश्चात् अत्यल्पप्रमाण में, खाँसी बारम्बार उठती है। शिशु अत्यन्त दुर्बल एवं निढाल (अवसादग्रस्त) हो जाता है। कभी तीव्र कष्ट से संज्ञानाश की अवस्था उत्पन्न हो जाती है।

चिकित्सा--शिशु को निर्वात गरम कमरे में कोमल शय्या पर लेटायें और गुलबनफ़्शा १ माशा, उन्नाव १ दाना, लिसोढा ३ दाना, गावज़बान ३ माशा जल में पका-छान कर ६ माशा खमीरा बनफ़्शा मिला कर पिलायें। यदि तृष्णा अधिक हो तो इसी योग में १ माशा काहू के बीज का शीरा और मिलायें और कैरूती आर्द करस्ना कुनकुना गरम करके सीना (वक्ष) पर मर्दन करें। ६ माशा राई और २ तोला अलसी यवकुट करके एक स्वच्छ पोटली में बाँध कर कुनकुना गरम कर के इससे टकोर करें। तृष्णा निवारण के लिये अर्क गावजबान कुनकुना गरम करके थोड़ा-थोड़ा पिलायें। शेष न्यूमोनिया (जातुनिया) के प्रकरण में वर्णित उपक्रम करें।

५---उताश अत्फाल

नाम--(अ०) वरम आशियः दिमाग तिफ़्ला न; (उ०) उताश अत्फ़ाल; (अं०) इन्फन्टाइल मेनिन्जाइटिस (Infantile Meningitis)।

वर्णन-लक्षणादि--वस्तुतः यह एक प्रकार का सरसाम और अत्यन्त कष्टदायक रोग है जिससे प्रायः शिशु प्रति वर्ष प्राण गँवाया करते हैं। साधारणतया इसको 'प्यास' के नाम से अभिहित किया जाता है। इसमें शिशु को अत्यन्त व्यग्रता एवं तीव्र तृष्णा लगती है। वह शिर धुनता है, निद्रा नहीं आती। झपकी (गुनूदगी) आती भी है तो तुरन्त चौंक कर उठ-बैठता है। ज्वर तीव्र होता है शिरः शूल होता है। शिशु चिड़-चिड़ा स्वभाव का हो जाता है और वह बारबार रुदन करता है। हस्तपाद में आक्षेप और कभी मूर्च्छा की-सी दशा हो जाती है। कभी-कभी दस्त (विरेक) भी प्रचुरता से आते हैं। यह रोग साधारणतया बालकों को ग्रीष्मकाल में लू लगने या अधिक काल तक धूप में रहने और दन्तोद्भेद काल में मस्तिष्क की झिल्लियों में शोथ उत्पन्न होकर हुआ करता है। परंतु इस रोग का सबसे महत्त्व का कारण जो साधारणतया पाया जाता है, यह है कि प्रायः कतिपय ना समझ मातायें सहवासोत्तर बिना खाये शिशु को तुरत दूध पिला

देती हैं जिससे यह रोग उत्पन्न हो जाता है। प्रथमतः स्तन्यपान काल में बालरक्षा की दृष्टि से स्त्री समागम से यावच्छक्य परहेज करें, क्योंकि इस क्रिया से साधारणतः दूध दूषित होकर शिशु के लिये सांघातिक विष हो जाता है। फिर भी उक्त क्रिया के अनन्तर पान या कुछ और वस्तु कलेवा की भाँति खाकर कमसे कम एक घंटे बाद शिशु को दूध पिलाना चाहिये।

चिकित्सा--प्रथम १ माशा बर्ग गावजबान का लुआब, १ दाना उन्नाब का शीरा, १ माशा काहू के बीज ५ तोला अर्क गावजबान में निकाल कर ६ माशा शर्बत नीलूफर मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाते रहें और ६ माशा सिरका दो तोला गुलरोगन मिला कर उसमें कपड़ा तर कर के शिरके ऊपर रखें। यदि शिर पर बाल हों तो उनको बनवा दिया जाय। कपड़ा बारंबार बदलते रहें। यदि मलावरोध हो तो ६ माशा एरण्डतैल मिला कर चटायें। तरंजबीन, शीरखिस्त १-१ तोला ५ तोले अर्क गावज़बान में घोल कर कुनकुना गरम करके पिलायें। यदि आवश्यकता हो तो शेष उपचार सरसामवत् करें।

६---शहीका

नाम--(अ०) शहीक़, (उ०) काली खाँसी; (सं०) कुक्कुर कास; (अं०) हूपिंग कफ (Hooping Cough)। परटस्सिस (Pertussis)।

वर्णन--इस प्रकार की खाँसी प्रायः २ वर्ष से ८ वर्ष तक के बालकों को हो जाया करती है, इसकी गणना औपसर्गिक एवं मरक वा जनपदोद्ध्वंसक रोगों में की जाती है। बालक को एक बार यह खाँसी होने पर पुनः दोबारा नहीं होती।

हेतु--वायु प्रणालिकाओं में सान्द्र कफ के चिमट जाने और साधारण खाँसी की चिकित्सा में असावधानी करने से अथवा इस रोग के उपसर्ग होने या खाने-पीने के पात्रों एवं अन्यान्य विभिन्न प्रकार से औसपर्गिक रोग की भाँति यह व्याधि हो जाती है।

लक्षण--खाँसी के आवेग (दौरा) से पूर्व कण्ठ के भीतर सरसराहट या संक्षोभ प्रतीत होता है। पुनः खाँसी उठती है। प्रसेक पूर्वक सूक्ष्म ज्वर होता है। खाँसते-खाँसते रोगी बेदम हो जाता है। चेहरा लाल या नीला पड़ जाता है। नेत्र उभर आते हैं। कभी मल-मूत्र हो जाता है। रोग की तीव्रता में कभी कान या नाक से रक्त निकल आता है। खाँसते-खाँसते फुफ्फुस रोगी में वायु निकलकर मुख का वर्ण नीला या,काला हो जाता है। जब बलपूर्वक

श्वास भीतर खींचता है तब मुर्गे की बाँग या सीटी के शब्द जैसा शब्द निकलता है। प्रायः वमन हो जाता है जिसमें श्वेत कफ सरीखा पिच्छिल द्रव उत्सर्गित होकर आवेग शान्त हो जाता है। साधारण रोग में रोग का आवेग शान्त होने के उपरान्त रोगी भला-चंगा मालूम होता है। आवेग या दौरे की कोई संख्या नियत नहीं होती। साधारण रोग में २-३ बार खाँसी उठती है। तीव्र रोग में एक घंटे में तीन-चार बार और दिन की अपेक्षया रात्रि में खाँसी का जोर अधिक होता है।

चिकित्सा--जब प्रसेक के साथ हलका ज्वर हो तो बालक को २ माशा गुलबनफ़्शा, १ माशा गावजबान, २ माशा बिहीदाना, २ माशा खुब्बाजी के बीज, ३ दाना उन्नाब, ५ दाना लिसोढ़ा पानी में पका-छानकर १ तोला शर्बत बनफ़्शा मिला कर प्रातः सायंकाल पिलायें। रोग निवृत्त न हो तो गावजबान, मुलेठी, सौंफ की जड़ २-२ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ३ दाना, लिसोढ़ा २ दाना, सौंफ २ माशा पानी में उबाल-छान कर १ तोला खमीरा बनफ़्शा मिलाकर सवेरे पिला दिया करें। शाम को ६ माशा लऊक मोतदिल और ६ माशा, लऊक सपिस्ताँ ६ तोला अर्क गावजबान में काढ़ा करके कुनकुना गरम पिलायें तथा २ तोला गेहूँ, २।। तोला गुड़ और १ तोला सेंधा नमक पात्र में रख कर उसका मुँह बन्द करके दस सेर उपलों में फूँक लेवें। इसमें से सवेरे-शाम और दोपहर १-१ माशा चटायें। छोटे शिशुओं को १ रत्ती माता के दूध में घोलकर पिलायें। आयु के अनुसार औषध-परिमाण घटा-बढ़ा लेना चाहिये। क्योंकि ये परिमाण छोटे शिशुओं के लिये लिखे गये हैं। निम्न योग भी इस रोग में लाभकारी हैं--

खुरासानी अजवायन, केसर, १-१ माशा, अफीम ४ रत्ती, काहू के बीज, बबूल का गोन्द, छिली हुई मुलेठी, कुंदुर, कतीरा, बोल, बिहीदाना ३-३ माशा--समस्त द्रव्यों को पानी में घोट-पीस कर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमें १ गोली आवश्यकता के समय देवें। निम्न क्षारयोग भी लाभकारी है--

खुरासानी अजवायन, अजवायन, साँभर नमक १-१ तोला--सबको यवकुट करके जल में मिला कर मिट्टी के सकोरे में रखकर पाँच सेर उपलों के मध्य रखकर अग्नि देवें। आवश्यकता के समय १ रत्ती यह क्षार शिशु को चटा दिया करें।

अपथ्य--स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, शीतल एवं तर पदार्थों से तथा गुड़-तेल की पकी वस्तु, कद्दू, ककड़ी, खीरा, शलगम, गोभी आदि से परहेज करायें।

पथ्य--साधारण बकरी का शूरबा, चपाती, खिचड़ी, साबूदाना आदि सेवन करायें।

७---इसहाल सिब्यान

नाम---(अ०) इसहाल सिब्यान (अत्फाल) ; (उ०) बच्चों के दस्त ; (सं०) बालातिसार। शिश्वातिसार। (अं०) इन्फाँन्टाइल डायरिया (Infantile Diarrhoea)।

शिशुओं की पाचन शक्ति दुर्बल होती है। अतएव साधारण असावधानी से भी उन्हें अतिसार एवं मलावरोध हो जाता है। उक्त अवस्था में केवल भोजन की सुव्यवस्था एवं सावधानी पर्याप्त होती है। इस पर भी यदि शिशु को दीर्घ काल तक निरन्तर दस्त हों तो इसकी ओर ध्यान देवें। यदि दस्त फटे-फटे एवं दुर्गन्धित होते हों तो सौंफ और कुसूस के बीज १-१ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का २ दाना पानी में पीस कर ६ माशा गुलकन्द मिला कर पिलाते रहें और सफूफ चुटकी २-२ रत्ती दूध में घोल कर दिन में दो बार चटा दिया करें।

यदि दस्त जल की भाँति पतले और अधिक परिमाण में होते हों और शिशु अधिक दुर्बल हो जाय तो उन्हें बन्द करने के लिये १-१ माशा सौंफ, छोटी इलायची के दाने और हब्बुल्आस पानी में पीस-छान कर ६ माशा मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें और हब्ब पपीता आधी गोली दूध में घोलकर पिला दिया करें। यदि दस्त अधिक हो रहे हों और तृष्णा भी हो तो दन्तोद्भेद के प्रकरण में लिखित उपक्रम करें।

यदि चुरनों (सूत्रकृमि) की शिकायत हो तो रोगन कमीला या रोगन नीम में रूई का फाहा तर करके उँगली से शिशु के गुदस्थल में रख दिया करें और शेष दीदान (कृमि) रोग में लिखित उपचार करें।

सफूफ चुटकी जो शिशुओं के हर प्रकार के अजीर्ण एवं अफारा को दूर करता है। यदि दस्त होते हों और मलावरोध हो तो उसको भी दूर करता है। शिशुओं को विशेष कर स्तन्यत्यागकाल में इसका उपयोग अत्यन्त गुणकारी है।

योग---सौंफ, भुना सुहागा, नौशादर, नरकचूर, वायबिडंग, शोरा नमक, काला नमक, कचलोन, नमक लाहौरी, नमक ताम, अनीसून, मुलेठी, शुद्ध स्याह जीरा, सफेद जीरा, छोटी एवं बड़ी इलायची के दाने, गुलाब का फूल, चाकसू, सूखा आमला, पीली हड़ का बकला, काली हड़, बहेड़े का छिलका---सबको समभाग लेकर चूर्ण प्रस्तुत कर शीशी में सुरक्षित रखें। इसमें से १-१ चुटकी दिन में दो-तीन बार शिशु को खिला दिया करें।

दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा या जवाहरवाली ४ रत्ती की मात्रा में शिशु को माता के दूध में घोल कर चटाने से पाचन ठीक रहता है और उसे

बल की प्राप्ति होती है। उग्र अतिसार वा अन्यान्य रोग जन्य दौर्बल्य में आध चावल से एक चावल तक जवाहर मोहरा मधु या शर्बत बनफ़्शा में मिला कर सवेरे-शाम चटाते रहने से भी अति शीघ्र शक्ति लौट आती है।

२ चावल भुना सुहागा शिशु को कभी-कभी दूध में घोल कर देने से उसका पाचन ठीक रहता है। नवजात शिशु को मधु का सेवन भी अत्यन्त गुणकारी है।

पथ्यापथ्य--केवल अंडे की सफेदी का पानी या यवमण्ड या दही का पानी देवें। अतिसार बन्द हो जाने पर क्रमशः माता का दूध या अन्य शीघ्रपाकी आहार देवें। भोजन की शुद्धता एवं स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखें।

८---नबात इस्नान

नाम--(अ०) नबात इस्नान; (उ०) बच्चों के दाँत निकलना; (सं०) दन्तोद्भेद; (अं०) टीथिंग (Teething), डेन्टिशन (Dentition)।

हेतु--यद्यपि यह स्वाभाविक घटना है, तथापि प्रारम्भ में दन्तोद्भेद के कारण मसूढ़े छिदने के कष्ट और तीक्ष्ण द्रवों के दूध प्रभृति के साथ मिल कर आमाशय में जाने के कारण शिशु को बहुधा अतिसार हो जाता है।

लक्षण--साधारणतया छः या सात मास के शिशुओं को दाँत निकलना आरम्भ होता है। शिशु के लिए यह एक विशेष सावधानी का काल है। अतएव यह आवश्यक है कि दन्तोद्भेद-काल में शिशु की पूर्ण सावधानी रखें: क्योंकि तनिक-सी असावधानी के कारण शिशु के प्राणनाश की आशंका होती है। प्रारम्भ में जब दाँत निकलने लगते हैं तब उसे नाना भाँति के रोग सताते हैं; जैसे लार बहती है, शिर एवं कनपुटियों में दर्द होने के कारण शिशु बारंबार शिर धुनता है, कभी सूक्ष्म ज्वरोष्मा हो जाती है, अधिक तृष्णा लगती है अथवा कभी मलावरोध हो जाता है। कभी दस्त होने लगते हैं या नेत्र दुखते हैं। दस्त कभी हरे और कभी गहरे-पीले रंग के होते हैं। शिशु कठिनाई से दूध पीता है तथा अत्यन्त दुर्बल एवं अवसादग्रस्त (निढाल) हो जाता है।

चिकित्सा--इस प्रकार के दस्त को रोकने का यत्न न करें। दाँत सरलता से निकलें, इस हेतु मक्खन और शहद मिला कर शिशु के मसूढ़ों पर मलें या पानी में छुहारा घिसकर मसूढ़ों पर मलें। दस्त अधिक होते हों तो जहरमोहरा और वंशलोचन २-२ रत्ती यथावश्यक जल एवं अर्क गुलाब में घिसकर ३ माशा सौंफ, १ माशा इलायची के दाने, १ माशा हब्बुल्‌आस, ३ तोले अर्क बेदमुष्क और २ तोले अर्क गुलाब में पीसकर १ तोला मिश्री मिलाकर पिलायें। लाभ न हो तो उक्त योग में २ माशा बेलगिरी का शीरा और बढ़ा देवें तथा मिश्री के स्थान में

१ तोला रुब्ब बिही मिलाकर पिलायें। प्यास की तीव्रता में पीपल की छाल जलाकर उसकी राख पानी में डाल देवें। यह पानी शिशु को पिलाने से दस्त और प्यास दोनों आराम होते हैं। इसी प्रकार छोटी इलायची को गरम भूभल में भुलभुलाकर पानी या अर्क गावजबान में बुझाकर वह पानी पिलाने या नीबू के बीज पानी में घिसकर पिलाने अथवा कमल गट्टे के भीतर की हरी पत्ती (जीभी) पानी या अर्क गावजबान में घिसकर पिलाने से प्यास और दस्त दोनों आराम होते हैं। प्यास के लिये अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क बारंबार आवश्यकतानुसार पिलायें।

अपथ्य--स्तन्यपायी शिशु की माता को हर प्रकार के गुरु, दीर्घपाकी एवं आध्मानकारक आहारसेवन से और अधिक उष्ण वस्तुसेवन, अग्निसेवा और मैथुन से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--शिशु की माता को नरम आहार मूँग की नरम खिचड़ी या डबल रोटी, दूध या बकरी के शूरबा के साथ भिगोकर या बकरी के शूरबे में शीतल शाक पकाकर उसमें चपाती भिगोकर भूख से थोड़ा कम खिलायें। यदि बालक भी थोड़ा-बहुत भोजन करने लगा हो तो अत्यंत सावधानी के साथ जब प्रकृति स्वास्थ्यानुमुख हो तो साबूदाना या दूध के साथ डबल रोटी अल्प परिमाण में देवें।

संधिरोगाधिकार (अम्राज़ुल् मफ़ासिल) १४

१. (अ०) वज्उल् मफ़ासिल ; (उ०) जोड़ों का दर्द, गठिया (सं०) आमवात, संधिवात ; (अं०) र्‍यूमाँटिज़्म (Rheumatism)।

२. (अ०) वज्उल् वरिक ; (उ०) सुरीन (चूतड़) का दर्द ; (अं०) कॉक्सल्जिया (Coxalgia)।

३. (अ०) निक्रिस ; (उ०) पाँव के अंगूठे (छोटे जोड़ों) का दर्द ; (सं०) वातरक्त ; (अं०) गाउट (Gout), पोडाग्रा (Podagra)।

वर्णन--संधियों में प्रत्येक संधि (जोड़) विभिन्न नामों से अभिधानित की गई है। सुतरां शरीर की समस्त संधिगत वेदना को वज्उल् मफ़ासिल या गठिया कहते हैं। इसी प्रकार नितम्ब (सुरीन) गत वेदना को वज्उलवरिक और घुटने के जोड़ के दर्द को वज्उर्रुक्व: और टखने या पादांगुष्ठगत वेदना को निक्रिस कहते हैं।

हेतु--वर्षा में भीगने या शीत लगने अथवा वादी एवं शीतल-स्निग्ध पदार्थों के अति सेवन से श्लैष्मिक द्रव उत्पन्न होकर संधियों में प्राप्त होकर अवरुद्ध हो जाते हैं और उनसे वायु उत्पन्न होकर उद्वेष्टन उत्पन्न करता है जिससे कठिन वेदना उत्पन्न हो जाती है। कभी वायु के प्राबल्य से अंग अपने स्थान से उखड़ जाता है। कभी-कभी सूजाक एवं फिरंग के कारण भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--शरीर की सभी संधियों में विशेषकर कोहनी, टखना और घुटना आदि में शोथ एवं दर्द हो जाता है। कभी उपर्युक्त संधियों में से किसी एक स्थान (संधि) पर दर्द हुआ करता है। संधियों में कठोरता उत्पन्न हो जाती है। शीत एवं वर्षा ऋतु में रोग में तीव्रता हो जाती है। विकारी संधियों में द्रव संचित हो जाता है। संधियां फूलकर एवं शोथयुक्त होकर विकृतांग (कुरूप) हो जाती हैं। कभी-कभी वे जुड़कर निष्क्रिय हो जाती हैं। निक्रिस का दर्द बहुधा दाहिने पैर के अंगूठे की संधि में और कभी उभय पैरों के अँगूठों की संधियों में और कभी एड़ी और टखना की संधि में इतना तीव्र होता है कि रोगी दर्द के मारे बेचैन हो जाता है। रुग्ण संधि को स्पर्श करने या चेष्टा करने (हिलाने) से तीव्र वेदना होने लगती है। कभी-कभी कम्प के साथ हलका ज्वर और पचन विकार भी हो जाता है। कभी हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। शिर में तीव्र शूल होता है। चक्कर आते हैं। वेदना की तीव्रता के कारण रात्रि में निद्रा नहीं आती। स्वभाव चिड़चिड़ा हो

जाता है। हस्त-पाद की ऊँगलियाँ खिचती या फड़कती हैं और उनमें सुरसुराहट प्रतीत होती है।

चिकित्सा--प्रारंभ में कुछ दिन ७ माशा माजून सूरंजान खिलाकर ऊपर से ३--३ माशा गोखरू, खरबूजा के बीज और खीरा-ककड़ी के बीज पानी में पीस कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिलायें। दर्द के स्थान पर यथावश्यक रोगन हिना कुनकुना गरम करके मर्दन करें। यदि प्रारंभ में इस उपाय से लाभ न हो तो १ तोला सोम्रा के बीज जल में उबालकर सिकंजबीन मिलाकर गरम-गरम पिलायें जिससे वमन हो जाय। आरंभ में वमन हो जाने से प्रायः यह रोग आराम हो जाता है। यदि संशोधन अपेक्षित हो तो प्रथम यह पाचन औषधि (मुंजिज) नौ दिन तक पिलायें--मीठा सूरंजान ५ माशा, गुलबनफ़शा और चिरायता ७--७ माशा, उन्नाब ५ दाना, सूखा मकोय, सौंफ की जड़, शाहतरा, अफ्तीमून विलायती और बस्फाइज फुस्तुकी प्रत्येक ५ माशा, गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सौंफ ७ माशा सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोयें और प्रातः मल-छानकर ४ तोला गुलकंद या ४ तोला तरंजबीन मिलाकर पिला दिया करें। दसवें दिन इस योग में ७--७ माशा गुलाब का फूल और सनाय मक्की और मिलाकर भिगोयें और प्रातः मल-छानकर ५ तोला अमलतास का गूदा, तरंजबीन ४ तोला, गुलकंद ४ तोला और बूरा (शकरसुर्ख) ४ तोला तथा ५ दाना बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें।

यदि उक्त विरेचन से दोष का सम्यक् निर्हरण न हो, तो दूसरे और तीसरे विरेचन में हब्ब इयारिज ९ माशा पूर्वोक्त विधि के अनुसार उपयोग करायें या हब्ब सूरंजान ५ गोली रात्रि में खिलाकर सवेरे विरेचन औषधि पिलायें। प्रत्येक विरेचन के बीच एक-दो दिन का अन्तर देकर दूसरा विरेचन देवें। दो विरेचनों के अन्तरिम काल में पूर्वलिखित ठंढाई (तबरीद) का योग सेवन करायें। विरेचनों से खाली होने पर माजून उश्बा ७ माशा, या माजून इजाराकी ३ माशा या माजून सूरंजान शीरीं ७ माशा १० तोला अर्क उश्बा और २ तोला मिश्री के साथ देवें। वेदना की तीव्रता की दशा में सूखे मेंहदी के पत्र १ तोला और देशी साबुन १ तोला यथावश्यक सिरका में पीसकर अग्नि के ऊपर रखें। जब मरहम के समान हो जाय तब कुनकुना गरम संधियों पर लेप करके रूई या रेंड़ का पत्ता रखकर बाँध दिया करें या रोगन कुचला, या रोगन गुल आख और रोगन कुश्त या रोगन सुर्ख में से किसी रोगन (तेल) में ५ बूँद रोगन अजीब मिलाकर आवश्यकतानुसार गरम करके मर्दन करें।

यदि आतशक या सूजाक के कारण यह रोग हो तो उन रोगों की यथोचित चिकित्सा करें। दोष संशोधन के लिये यथाविधि मुंजिज (पाचन) और

विरेचन औषधि सेवन कराने के पश्चात् बलवृद्धि के लिये दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा या माजून चोबचीनी बनुस्खये खास ५ माशा या खमीरा आबरेशम हकीम इर्शदवाला ५ माशा कुछ दिन तक सवेरे-सवेरे खिलायें और हब्ब आसाब एक गोली या हब्ब खास एक गोली भोजनोत्तर खिला दिया करें। सायंकाल २ चावल जौहर मुनक्का, एक मुनक्का की गुठली निकालकर उसके भीतर बन्द करके पानी के घूंट के साथ बिना चाबे कण्ठ से उतार (निगल) लिया करें।

अपथ्य--समस्त बादी उत्पन्न करनेवाले एवं शीतल पदार्थ कद्दू, पालक, भिंडी, अरवी, आलू और अति दूध-चावल, बर्फ और मक्खन आदि का अति सेवन हानिकारक है।

पथ्य--मुर्गी के बच्चे और तीतर-बटेर का भृष्ट मांस गरम मसाला मिलाकर खिलायें। मूंग-अरहर की दाल चपाती, चाय, अंडे की जर्दी, बिस्कुट, अंजीर, एवं गुठली निकाला हुआ मुनक्का खा सकते हैं।

१—इर्कुन्नसाऽ

नाम--(अ०) इर्कुन्नसाऽ; (उ०) लँगड़ी का दर्द; (सं०) गृध्रसी वात, गृध्रसी; (अं०) स्याटिका (Sciatica)।

वर्णन--यह एक प्रसिद्ध दर्द है जो चूतड़ के जोड़ (नितम्बसंधि) से नीचे पाँव तक उतरा करता है और कभी-कभी ऊंगलियों तक पहुँच जाता है। यदि दोष अल्प होता है तो केवल घुटने या पिण्डली या इससे भी ऊपर तक सीमित रहता है। यूनानी वैद्यों के मत से नसाऽ नामक (गृध्रसी) नाड़ी में दोष के अधिष्ठान करने से यह रोग होता है।

हेतु--वज्उल्मफ़ासिल (संधिवात) और इस रोग के हेतु लगभग एक ही से होते हैं। किन्तु प्रायः कफ-दोष उक्त नाड़ी में अवस्थित होकर वेदना का हेतु होता है। कभी वायु के आधिक्य से यह रोग उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--रोग से पूर्व वायु एवं कफप्रकोपक हेतुओं की विद्यमानता रहती है। वेदना नितम्बसंधि (चूतड़ की संधि) से आरम्भ होकर नीचे एक पैर की ओर उतरती है। कभी-कभी यह पाँव की ऊँगलियों तक पहुँचती है।

चिकित्सा--वज्उल् मफ़ासिल अर्थात् गठिया में लिखित उपचार इस रोग में भी लाभकारी है।

जब इर्कुन्नसाऽ केवल वायु (रियाह) के कारण होता है तब दर्द दौरे के साथ हुआ करता है। उक्त अवस्था में सोंठ ७ माशा, कालीमिर्च ५ दाना जल में

उबाल-छानकर २ तोला मिश्री मिलाकर चाय की भाँति कुनकुना गरम करके पिलाने से लाभ होता है।

शेष समस्त उपाय वे ही हैं जिनका विवरण वज्उल्मफ़ासिल के प्रकरण में किया गया है। बलवृद्धि के लिये विरेचनोत्तर गोदंती भस्म एक टिकिया या मण्डूर भस्म एक टिकिया ७ माशा माजून फलासफा या ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर खिलायें और हब्ब सूरंजान ५ गोली रात्रि में सोते समय कुछ दिन खिला देने से भी बड़ा लाभ होता है। यदि कोई उपाय सफल न हो तो किसी कुशल जर्राह (सर्जन) से गृध्रसी नाड़ी (रग इर्कुन्नसाऽ) का पता लगाकर दहन कर्म करा देवें। इससे प्रायः लाभ हो जाता है।

अपथ्य--वायुकारक एवं कफकारक शीतल एवं तर पदार्थों से परहेज अनिवार्य है। चावल, दूध, दही, कद्दू, भिंडी, खरबूजा, तरबूज, पालक आदि अम्ल पदार्थ आड़ू, कमरख, नारंगी आदि अहितकर होते हैं। बर्फ का शीतल जल पीने और शीत जल से स्नान करने से भी परहेज करना चाहिये।

पथ्य--बकरी का शूरबा, चपाती, तीतर, मुर्गे का भुना हुआ मांस, मूँग या अरहर की दाल, अंडों की जर्दी आदि अभ्यासानुकूल देवें।

२—दाउल्फ़ील

नाम--(अ०) दाउल्फ़ील; (उ०) फीलपा; (सं०) श्लीपद; (हिं०) हाथीपांव; (अं०) एलीफन्टायसिस (Elephantiasis)।

वर्णन--इस रोग में रोगी का पैर फूलकर हाथी के पैर के सदृश हो जाता है।

हेतु--सौदा, कफ या रक्त इन दोषों के पैर की ओर प्रचुरता से अवतीर्ण होने से यह रोग प्रगट होता है। इसके अतिरिक्त स्थानीय जलवायु, सांद्र एवं सौदाजनक आहार का अति सेवन भी इस रोग की उत्पत्ति का हेतुभूत होता है।

लक्षण--यदि रोग का हेतु सांद्र, कृष्ण एवं विदग्ध रक्त हो तो स्पर्श में उष्ण प्रतीत होता है। प्रारंभ में पैर का रंग लाल होता है जो क्रमशः स्याही मायल नीला (कृष्णाभ नील) हो जाता है। पैर किसी भाँति फटा-फटा रहता है। यदि सांद्र कफ से यह रोग उत्पन्न हुआ हो तो पिंडली एवं पैर ललाई एवं उष्णता के बिना स्थूल (मोटे) होते हैं और बहुधा शीतस्पर्श प्रतीत होते हैं और फटने नहीं पाते।

चिकित्सासूत्र--जिस पैर में यह रोग हो प्रारंभ में उसी ओर के हाथ की बासलीक शिरा का वेधन करें और पीने के लिये जोशाँदा अफसंतीन के साथ माउज्जुब्न पिलाकर कई वार विरेचन देकर सौदा का निर्हरण करें। जब शरीर सांद्र दोष से शुद्ध हो जाय, तव घुटने के पीछेवाली शिरा का वेधन (फस्द) करें और पिंडली पर सिंगी लगायें। कफ और पित्तजनक आहार त्याग देवें। पिंडलियों पर बलवान् लेप लगायें। चलना-फिरना और सभी काम-धंधा बन्द कर देवें। श्लैष्मिक दोष की दशा में वमन करायें और कफकारक भोजन सेवन नहीं करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--आवश्यकतानुसार और बलानुसार(१) बासलीक का शिरावेध करने से दवाली (शिराकुटिलता) और श्लीपद आराम हो जाते हैं। (२) सात या आठ दाना रेंडी की गुद्दी (मग्ज) शुद्ध मधु के साथ पीने और लेप लगाने से अद्भुत् लाभ होता है। (३) इसी प्रकार सनाय मक्की ५। माशा उभय प्रकार प्रयोग करने से लाभ होता है। ये रोग यदि उष्णता से हों तो (४) ६।। माशा बारतंग के पीने और लगाने से लाभ होता है। (५) इसी प्रकार माउज्जुब्न का मलना भी उक्त अवस्था में लाभकारी होता है। अन्दरूमाखुस के मत से (६) २।।। सकबीनज का आंतरिक उपयोग परम गुणकारी हैं। इसी प्रकार (७)(८) ६ माशा काली तुलसी की शीरा और हरमल के बीज ६ माशा पीना और लेप लगाना और (९) ३।। माशे इन्द्रायन के गूदे का काढ़ा पीना लाभकारी है।

संसृष्टद्रव्योपचार--(१) सफूफ लाजवर्द या (२)हब्ब लाजवर्द (३) इयारिज फैंकरा के साथ मिलाकर देने से लाभ होता है। इयारिज फैंकरा में (४) हज्र अरमनी और (५) लाजवर्द मग्सूल मिलाकर (६) मत्बूख अफसंतीन के साथ उपयोग करने से लाभ होता है।

सिद्धयोग--(१) हब्ब अफसंतीन--अफ्तीमून विलायती, बेख़ लुफ्फाह, गुल बनफ्शा प्रत्येक १ तोला, इन्द्रायन का गूदा, कड़वे बादाम का मग्ज, सकमूनिया मुशव्वी प्रत्येक ६ माशा, लाजवर्द मग्सूल, अनविध मोती, प्रवाल प्रत्येक ३ माशा सबको कूट-पीसकर चना प्रमाण की गोलियां बनायें और ६ माशा सिकंजबीन बजूरी के साथ सप्ताह में दो बार देवें। श्लीपद और शिराकुटिलता में लाभकारी है।

(२) श्लीपदनाशक औषधि--खनिज नौशादर १ तोला २० तोले अर्क सौंफ में घोलकर एक बोतल में रखें। इसमें से सवेरे-शाम थोड़ा-थोड़ा लेकर मर्दन करते रहें जिसमें शोषित हो जाय। शोथ के ऊपर दृढ़ पट्टी बाँधे जिसमें दोष नीचे न उतरे।

३---दवाली

नाम--(अ०) (द(दु)वाली) ; (उ०) पिंडली की रगों का फूल जाना; (सं०) शिराकुटिलता (अं०) वेरिकोज वेन्स (Varicose Veins)।

वर्णन--इस रोग में एक वा दोनों पिंडलियों की शिरायें फूल जाती हैं और उनमें स्थान-स्थान पर गोहें उत्पन्न हो जाते हैं।

हेतु--यह रोग अधिकतर सौदा के उतरने से प्रगट हुआ करता है और साधारणतया श्रमिकों, दूतों, अधिक पैदल यात्रा करनेवालों और भारवहन करने वालों को यह रोग हुआ करता है।

लक्षण--पिंडली के ऊपर मोटी-मोटी शिरायें लक्षित होती हैं जिनका रंग प्रायः हरियाली लिये हुये होता है। फूली हुई शिराओं में स्थान-स्थान पर ग्रन्थियाँ-सी उत्पन्न हो जाती हैं।

चिकित्सा--इस रोग की चिकित्सा ठीक दाउल्फील (श्लीपद)के समान है। अस्तु; वहाँ अवलोकन करें। इसमें कफ एवं सौदा का शोधन करने के उपरान्त शिरावेध करें। गरिष्ठ एवं सौदाजनक आहार का परित्याग कर देवें। अधिक भ्रमण बन्द कर देवें और पिंडली पर नीचे से ऊपर तक पट्टी बाँध देवें।

त्वग्रोगाधिकार (अमूराज़ुल् जिल्द) १५

१--शिरा

नाम--(अ०) शिरा; (उ०) पित्ती उछलना, छपाकी; (सं०) शीतपित्त; (अं०) अर्टिकेरिया (Urticaria)।

इस रोग में शरीर पर गोल-गोल लाल धब्बे (चकत्ते) पड़ जाते हैं।

हेतु--इस रोग का प्रादुर्भाव प्रायः अजीर्ण के कारण होता है। भूख से अधिक भोजन कर लेने अथवा किसी गुरु एवं दीर्घपाकी वस्तु के सेवन या किसी तीक्ष्ण एवं उष्ण पदार्थ, जैसे--बैंगन या आम आदि अथवा अति मांस-सेवन से भी कभी-कभी यह व्याधि हो जाती है। पुरुषों की अपेक्षया स्त्रियों को और वृद्धों की अपेक्षा युवाओं को यह व्याधि अधिक होती है। शिशुओं को दन्तोद्भेद-काल में भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--कभी तो यह रोग आवेगपूर्वक होता है और कभी अकस्मात् सम्पूर्ण शरीर पर गोल-गोल ललाई लिये धब्बे (ददोड़े या चकत्ते) पड़ जाते हैं जिनमें दाह एवं तीव्र कण्डू होता है। पुनः वह शीघ्र लीन भी हो जाते हैं। साधारणतया इसके साथ हलका ज्वर भी हो जाता है।

चिकित्सा--यदि अजीर्ण एवं अति भोजन से यह रोग हो तो आध सेर गरम पानी में १ तोला नमक मिलाकर रोगी को पिलायें जिसमें दो-चार वमन होकर उदर शुद्ध हो जाय। तदुपरान्त ४ तोला एरण्ड तैल १० तोला अर्क गुलाब में २ तोला मिश्री मिलाकर कुनकुना गरम करके पिलायें या गुठली निकाला हुआ मुनक्का ९ दाना, सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा पुदीना ३ माशा, सौंफ का अर्क ६ तोला और अर्क गुलाब ६ तोला में पीसकर ४ तोला सिकंजबीन मिलाकर पिलायें और फिटकिरी एवं गेरु समभाग अर्क गुलाब में पीसकर शरीर पर मलें। जब ददोड़ों में अधिक ललाई एवं सूजन हो तथा जलन मालूम होती हो तो उक्त अवस्था में रक्त शोधक औषधियों का उपयोग आरम्भ करायें, जैसे--माजून उश्बा १ तोला खिलाकर १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून में ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलाने से लाभ होता है। विरेचनार्थ गुलबनफ्शा, पीली हड़ और सनाय मक्की प्रत्येक ७ माशा, आलूबोखारा ५ दाना, इमली ४ तोला, अमलतास का गूदा ५ तोला, शीरखिश्त २ तोला, तरंजबीन ४ तोला, अर्क सौंफ और अर्क गावजबान प्रत्येक १० तोला में भिगो-छानकर ५ दाने बादाम के मग्ज का शीरा मिलाकर पिलायें। शुद्धि के उपरान्त दाहशमनार्थ कुर्स काफूर

४।। माशा १२ तोला अर्क कासनी और ४ तोले मीठे अनार के शर्बत के साथ खिलायें और ५ तोला अर्क गुलाब में २ माशा फिटकिरी और १ तोला गुलरोगन मिलाकर शरीर पर मर्दन करें अथवा १० तोले अर्क गुलाब में १ तोला रोगन संदल मिलाकर मलें।

स्तनपायी शिशु को यह रोग हो तो उसकी माता और शिशु दोनों के आहार में सावधानी रखें तथा पाचन का ध्यान रखें। माता और शिशु दोनों को यथाविधि उपयुक्त विरेचन देवें।

अपथ्य--यदि किसी विशिष्ट औषधाहार के सेवन से यह रोग हुआ हो तो उसका परित्याग करायें। संभव हो तो एक-दो समय का उपवास करायें (अनाहार रखें)। अति उष्ण, तीक्ष्ण एवं नमकीन वस्तु से, मछली, आम, बैंगन, लाल मिर्च आदि के अति सेवन से तथा गुरु पदार्थ के सेवन से परहेज करायें।

पथ्य--रोग निवृत्त होने पर साधारण आहार बकरी का शूरबा चपाती के साथ देवें। किन्तु भूख से किंचित् कम खिलायें। पुनः धीरे-धीरे शीतल शाक और अन्य उपयोगी पदार्थ सेवन करायें।

२--जर्ब व हिक्का

नाम--(अ०) जर्ब, हिक्कः; (उ०) खारिश या खुजली, सादा खारिश या सूखी खुजली; (सं०) खर्जू, कण्डू; (अं०) स्केबीज (Scabies), प्रूराइगो (Prurigo)।

इस रोग के ये दो भेद होते हैं--(१) शुष्क और (२) तर। शुष्क खुजली का उत्पादक दोष केवल रूक्ष सौदा है और तर खुजली में श्लैष्मिक द्रव भी सम्मिलित होते हैं। यह व्याधि अधिकतया रक्त के विदग्धीभूत होने और सौदा के प्राबल्य से उत्पन्न होती है।

हेतु--कभी मधुर वस्तुओं एवं गुड़, तैल आदि के अति सेवन से रक्त में दाह (इह्तिराक) होकर, कभी उत्तम पौष्टिक आहार के अभाव से, और पाचन-विकार, मलिन रहन-सहन और स्त्रियों के ऋतुदोष से भी यह रोग हो जाता है।

लक्षण--तर खुजली में शरीर पर सूक्ष्म चट्टे या दाने हो जाते हैं जिनमें पूय भरा रहता है और उनमें अत्यन्त दाह एवं कष्ट होता है। शुष्क खुजली में छोटी-छोटी लाल फुंसियाँ सारे शरीर में इतस्ततः विकीर्ण रूप में प्रगट हो जाती हैं। इनमें इतनी खुजली होती है कि रोगी को खुजलाते-खुजलाते चैन नहीं आता।

त्वचा रूक्ष एवं खुरदरी हो जाती है। तर खुजली प्रायः पिंडलियों से प्रारंभ हुआ करती हैं।

चिकित्सा--उक्त अवस्था में शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुंडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, काली हड़ ७ माशा, यदि ग्रीष्म ऋतु हो तो लाल चंदन ७ माशा और शीत ऋतु हो तो उश्बा मगरबी ७ माशा और मिलाकर रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर कुछ दिन पिलायें और निगंदबाबरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना सवेरे गरम पानी में भिगोकर सायंकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर कुछ दिन पिलायें और पन्द्रह दिन तक प्रातः कालीन योग मुंजिज के रूप में पिलाकर अर्क सत्बूख हफ्त रोजा का विरेचन देवें।

प्रारंभ में १ तोला रोगन चमेली, अर्क गुलाब ५ तोला एवं कागजी नीबू का रस १ तोला परस्पर मिलाकर शरीर पर मर्दन करें या आमलासार गंधक, कपूर, नीलाथोथा, मुरदासंग और कमीला प्रत्येक ३ माशा पानी में पीसकर इक्कीस बार पानी से धोये हुये गाय के घी में मिलाकर शरीर पर मल लिया करें और घण्टा भर धूप में बैठकर समभाग बेसन और मेंहदी मिलाकर शरीर पर मलकर गरम पानी से स्नान कर लिया करें।

विरेचनों से छुट्टी पाने पर माजून उश्बा ७ माशा या आतरीफल शाहतरा ७ माशा ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाये हुए १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ पी लिया करें। भोजनोत्तर हब्ब किबरीत २-२ गोली खाना भी लाभकारी है।

अपथ्य--शरीर को मलादि से शुद्ध एवं स्वच्छ रखें। वस्त्र की शुद्धि अनिवार्य समझें। धूप में चलने-फिरने, उष्ण एवं मधुर पदार्थ, मांस एवं अधिक मसालेदार आहार-सेवन से यावच्छक्य परहेज करें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी आहार, जैसे--मूंग की खिचड़ी, पालक, कुलफा, चुकन्दर तथा कम मिर्च के पके अन्य शीतल शाक चपाती के साथ खिलायें और दूध, घी, मक्खन जितना पच सके खिलायें।

३---क़ूबा।

नाम--(अ०) क़ूबा; (उ०) दाद; (सं०) दद्रु; (हिं०) दाद, दिनाय; (अं०) रिंग-वर्म (Ring-worm)।

हेतु--कभी गरिष्ठ भोजन करने या अजीर्ण एवं शरीर को मलिन रखने तथा वस्त्र एवं शय्या आदि को स्वच्छ न रखने, दीर्घ काल तक स्नान न करने,

मधुर पदार्थ के अति सेवन और भीगा हुआ वस्त्र धारण करने से यह रोग हो जाता है।

लक्षण--शरीर के किसी स्थान विशेषतः जंघासो एवं वृषणों में प्रायः दाद हो जाता है। दाद के स्थान की त्वचा कड़ी एवं खुरदरी हो जाती है और उसमें अत्यन्त खुजली होती है जिससे रोगी उसे प्रतिक्षण खुजलाता रहता है। रोगी जितना ही खुजलाता है, खुजली उतनी ही बढ़ती जाती है। दाद का स्थान श्वेत या श्यामता लिये हो जाता है। कभी उक्त स्थल पर बराबर छोटे-छोटे दाने निकलकर परस्पर सम्मिलित हो जाते हैं जिनसे ओस के समान द्रव निकल कर बहता रहता है। कभी उक्त स्थल पर रूक्षता के कारण भूसी उड़ती रहती है। दाद के स्थान पर चिह्न पड़ जाता है जो त्वचा से किंचित् उभरा (ऊंचा) प्रतीत होता है। कभी दाद का स्थान लाल एवं शोथयुक्त हो जाता है और उसमें छोटी-छोटी फुंसियाँ उत्पन्न होकर दाह एवं टीस हो जाती है। उकवत या उकौता भी दाद का ही एक भेद है जो हाथ-पैर की पीठ पर हुआ करता है।

चिकित्सा--आभ्यन्तर प्रयोग हेतु जरब व हिक्का के प्रकरण में लिखित शाहतरावाला रक्तशोधक फाण्ट योग पंद्रह दिन तक पिलायें। यदि संशोधन अपेक्षित हो तो इसके पश्चात् अर्क मत्बूख हफ्तरोजा ८ तोला सात दिन तक विरेचन की भाँति पिलाकर शोधन करें और रोगन दाद आवश्यकतानुसार लगायें। विरेचनोत्तर ७ माशा अतरीफल शाहतरा या १ तोला माजून उश्बा ४ तोला शर्बत उन्नाब मिले हुये १२ तोले अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून के साथ कुछ दिन पिलायें और जिमाद दाद नीबू के रस में मिलाकर दाद के स्थान पर कुछ दिन लगायें। सवेरे ५ टिकिया मवीजी और ५ टिकिया मगरबी सायंकाल ताजे पानी से खिलाना भी लाभकारी है। उकौता के लिये भी यही उपर्युक्त चिकित्साक्रम उपादेय है।

पथ्यापथ्य--जरब व हिक्का (खर्जु एवं कण्डू) के समान।

४—हसफ, हसफा

नाम--(अ०) हसफ़, हसफ़ः; (उ०) गर्मी दाने, पित्त; (सं०) राजिका; (हिं०) अन्हौरी, अम्हौरी; (अं०) प्रिक्ली हीट (Prickly heat), हीट रैश (Heat Rash), मिलिएरिया (Miliaria)।

हेतु--गर्मी की तीव्रता एवं स्वेदाधिक्य, बहुत गरम वस्त्र धारण करना, शरीर का दुर्बल होना या किसी तीव्र स्वेदल औषधि का उपयोग करना इसके

हेतु हैं। बालकों और दुर्बल व्यक्तियों को यह व्याधि ग्रीष्म ऋतु में प्रायः हुआ करती है।

लक्षण--जब स्रोतों या उपचर्म के नीचे स्वेद रुक जाता है तब इससे वहाँ पर बाजरे के दानों के समान अत्यन्त छोटे-छोटे दाने उत्पन्न हो जाते हैं। कभी ये दाने विकीर्ण (असम्मिलित) और कभी सम्मिलित होते अर्थात् मिल मिलकर गुच्छा-सा बन जाते हैं। पहले दाने मुरझा जाते हैं और नवीन दाने प्रति दिन लगातार निकलते आते हैं। कभी-कभी ये दाने लाल होते हैं और कभी श्वेत होते हैं। कभी-कभी इन दानों में सूई या काँटे चुभने जैसी जलन एवं चुभन होती है।

चिकित्सा--कड़ाके की गरमी और अति स्वेद से रोगी की रक्षा करें। सफेद चंदन अर्क गुलाब में घिसकर अथवा मेंहदी के पत्र हरी कासनी के रस में गूंधकर बर्फ से शीतल करके शरीर पर मर्दन करें या कतीरा महीन पीसकर और मक्खन में मिलाकर शरीर पर मर्दन करें और गरम पानी से मेंहदी और बेसन मलकर स्नान करें। गुलरोगन १ तोला, शुद्ध सिरका ४ तोला, अर्क गुलाब ५ तोला और कपूर १ माशा सबको मिलाकर शरीर पर मर्दन करें। सवेरे निम्न योग पिलायें--

गुलनीलूफर ५ माशा, कासनी की जड़, कासनी के बीज, शाहतरा प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब ५ दाना, आलू बोखारा ५ दाना सबको रात्रि में गरम पानी में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाब या ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें और सायंकाल ३ माशा बिहीदाना का लुआब, ५ दाना उन्नाब और ३ माशा कद्दू के बीज के मग्ज का शीरा १२ तोले अर्क शाहतरा में निकालकर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिला दिया करें।

अपथ्य--धूप में चलने-फिरने, अधिक परिश्रम करने और उष्ण पदार्थों के खाने-पीने से परहेज करें।

पथ्य--मामूली बकरी का शूरबा या मूंग की दाल अथवा शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, पालक, तुरई, टिंडा आदि देवें।

५, ६, ७—बहक, कलफ, बुसूर लब्नी

नाम--(अ०) बहक़ ; (उ०, हिं०) छीप ; (अं०) पिटिरियासिस (Pityriasis)।

भेद--(१) बहक़ अब्यज (सिध्म कुष्ठ--सेहुआ) और (२) बहक़ अस्वद (नीलिका)।

--(अ०) कलफ़, बरश, नमश ; (उ०) झाईं ; (सं०) व्यङ्ग ; (अं०) फ्रेक्ल्ज (Freckles), लेंटिगो (Lentigo), क्लोआज्मा (Chloasma)।

--(अ०) बुसूर लब्नी; (उ०) कील, मुँहासे, डोंडसा ; (सं०) यौवन (युवान) पिड़का, मुख दूषिका ; (अं०) एक्नी (Acne)।

हेतु और लक्षण--कभी तीक्ष्ण गर्मी में रहने और धूप में अधिक चलने-फिरने का अवसर पड़ने से कपोल एवं हाथ की पीठ पर छोटे-छोटे भूरे वा स्याही मायल चिह्न हो जाते हैं जिसको 'कलफ' या 'झाईं पड़ना' कहते हैं। कभी मलिन रहने और वस्त्र एवं शय्या शुद्ध एवं स्वच्छ न रखने, बासी, गुरु एवं अपुष्टिकर भोजन करने से उदर या ग्रीवा एवं बाहुओं पर छोटे-छोटे पिलाई लिये सफेद चिह्न पड़ जाते हैं। कभी-कभी बराबर-बराबर अनेक चिह्न उत्पन्न होकर परस्पर मिलकर दूर तक धब्बा-सा पड़ जाता है और उक्त स्थान पर भूसी-सी लगी हुई जान पड़ती है। कभी उसमें खुजली भी हो जाती है। कभी-कभी खुजली नहीं होती, उसको 'बहक़' या 'छीप' कहते हैं। यौवनकाल में साधारणतया या पाचन एवं रक्तदोष से अथवा उष्ण भोजन एवं मद्यसेवन आदि से, स्त्रियों का मासिक धर्म बन्द हो जाने से चेहरे और ग्रीवा या कपोलों पर कभी नासिका पर कभी-कभी सीने (वक्ष) पर छोटे-छोटे नुकीले दाने उत्पन्न हो जाते हैं जो कड़े एवं लाल रंग के होते हैं। जब ये दाने पक जाते हैं तब उनसे कील और थोड़ी-सी पीव निकलती है।

चिकित्सा--रोग के प्रधान हेतु का निवारण करें। छीप (बहक--सिध्म, नीलिका) के स्थान पर चकवड़ के बीज, वकुची और मूली के बीज प्रत्येक ३ माशा पानी में पीसकर लेप करें। झाईं (कलफ--व्यंग) को दूर करने के लिये समुद्रफेन को नीबू के रस में घिसकर लगायें अथवा संतरा का छिलका २ तोला, हलदी, सफेद चंदन, बालछड़, नागरमोथा, छडीला, बादाम का मग़ज़ प्रत्येक ६ माशा, तिल १ तोला सबको महीन पीसकर गेहूँ का आटा २ तोला मिलाकर १ तोला चमेली का तेल सम्मिलित करके पानी में घोलकर प्रति दिन रात्रि में मलकर सो रहा करें। सवेरे नीम का साबुन या कार्बोलिक सोप मलकर मुँह को भलीभाँति धोयें।

मुँहासे और कील तो प्रायः स्वयमेव दूर हो जाते हैं। यदि कष्टदायक हों और रोगी युवा हो और रक्त की प्रगल्भता हो तो सरारू का शिरावेध करायें। यदि स्त्रियों को मासिकधर्म के दोष से यह रोग हो तो उसका उपयुक्त उपचार करें। भुने हुये चना ६ माशा, मुरदासंग ३ माशा, सफेदा काश्गरी ३ माशा बकरी के दूध में पीसकर रात्रि में मुँहासों पर लगा लिया करें और सवेरे मेंहदी और बेसन मलकर मुंह धो लिया करें।

उबटन का योग--तुर्मुस, बाकला के बीज, पोस्ते का दाना, खरबूजा के बीज का मग्ज, बादाम का मग्ज प्रत्येक ६ माशा, केसर ३ माशा सबको महीन पीसकर उसमें से थोड़ा-सा लेकर पानी मिलाकर लेप करें और दो घण्टे बाद मेंहदी और बेसन से मुंह धोकर थोड़ा-सा चमेली का तेल मुंह पर मल लिया करें। यदि दोष के प्रकोप से हो तो हब्ब इयारिज का विरेचन देकर उसका शोधन करायें या एक-दो साधारण विरेचन देवें। जब दोष का शोधन हो जाय तब रक्त शुद्धि के लिये अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला में ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर कुछ दिन पिलायें और माजून उश्बा १ तोला या अतरीफल शाहतरा ७ माशा रात्रि में सोते समय पाव भर दूध के साथ कुछ दिन पिलायें।

अपथ्य--दूषित, बादी, गुरु एवं मधुर पदार्थों, गुड़ और तेल की बनी हुई वस्तुओं के खाने-पीने से, अति मद्य-मांस के सेवन, धूप एवं अधिक गर्मी में चलने-फिरने से यथासंभव परहेज करें।

पथ्य--साधारण शूरबा, चपाती और शीतल शाक देवें। फलों में नारंगी, अनार, सेब, नाशपाती आदि आवश्यकतानुसार एवं अभ्यासानुकूल देवें।

८—जुज़ाम

नाम--(अ०) दाउल्असद, जुज़ाम; (उ०, हिं०) कोढ़; (सं०) महाकुष्ठ; (अं०) लेप्रसी (Leprosy)।

हेतु--प्रायः यह रोग सूजाक, आतशक (फिरंग) आदि जैसे घृणित एवं सौदावी रोगों से अधिक पीड़ित रहने से और उत्ताप की अधिकता से सौदा जलकर रक्त में मिल जाने तथा उसको दूषित करके संपूर्ण शरीर में व्यापमान हो जाने से होता है। कभी-कभी यह रोग पैतृक या आनुवंशिक होता है और चालीस-पचास वर्ष की आयु में या उसके बाद प्रायः होता है। यौवनकाल में बहुत कम होता है।

लक्षण--शरीर का वर्ण श्यामता लिये रक्त हो जाता है। कान की लौ मोटी पड़ जाती है। प्रायः बेडौल (विरूप) उभार एवं ग्रन्थियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। सम्पूर्ण शरीर पर गोल-गोल एवं गुलाबी रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। मूत्र स्याही मायल हो जाता है। प्रायः रोगी आकुलताकारक स्वप्न देखता है। अन्त में अवयव गलने लगते हैं और गिर जाते हैं। घाव चाहे जितना बड़ा हो, पर उसमें पीड़ा नहीं होती।

चिकित्सा--यह रोग भी औपसर्गिक वा संक्रामक है जो एक रोगी से दूसरे में संक्रान्त हो सकता है। अतएव ऐसे रोगियों के साथ खाने-पीने, उठने-बैठने तथा सोने से परहेज करना चाहिये। प्रारंभ में सवेरे शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुंडी, काली हड़, लाल चन्दन या उश्वा मगरबी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाव ५ दाना रात्रि में गरम पानी में भिगोकर सवेरे मल-छानकर ४ तोला शर्बत उन्नाव मिलाकर पिलायें और हिरनखुरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना सवेरे गरम पानी में भिगोये और सायंकाल उसका जुलाल (निथरा हुआ पानी) लेकर पिलायें और कम से कम इक्कीस दिन तक यह औषधि बराबर पिलायें। इसके पश्चात् अर्क मत्बूख हफ्त रोजा एक बोल की सूखी ओषधियां रात्रि में तीन सेर गरम पानी में भिगो देवें और प्रातः इतना पकायें कि तीन भाग पानी जल जाय और केवल तीन पाव पानी शेष रह जाय। पुनः छानकर बोतल में भरकर सुरक्षित रखें। सप्ताह पर्यंत सवेरे ८ तोला यह अर्क प्रति दिन रोगी को पिला दिया करें। इससे प्रतिदिन रोगी को दो-चार दस्त हो जाया करेंगे। पुनः देखें, यदि आवश्यकता शेष रहे तो कुछ दिन तक उपर्युक्त औषधियाँ पिलाकर पुनः मत्बूख यथाविधि इतना दिन पिलायें कि शरीर दोषों से सर्वथा शुद्ध हो जाय। तदनन्तर रसवत २ माशा, चाकसू ३ माशा, नरकचूर ३ माशा, कत्था सफेद ३ माशा, सबको रात्रि में गरम पानी में भिगो कर सवेरे जुलाल निथार कर पिलाना और सायंकाल माजून उश्बा १ तोला ६-६ तोला अर्क शीर मुरक्कब और अर्कमाउज्जुब्न, शर्बत उन्नाव ४ तोला मिलाकर पिलाना (विरेचनोत्तर) लाभकारी है। यदि इन उपायों से लाभ न हो तो स्थानीय सुयोग्य हकीम के परामर्श से माउज्जुब्न का प्रयोग करना श्रेयस्कर होता है। आराम होने के उपरान्त बलवृद्धि के अर्थ खमीरा आबरेशम शीरा उन्नाबवाला ७ माशा या मुफर्रेह बारिद ५ माशा या दवाउल् मिस्क बारिद जवाहरवाली ५ माशा खिलाकर अर्क शीर मुरक्कब ६ तोला, अर्क माउज्जुब्न ६ तोला, शर्बत उन्नाव ४ तोला मिलाकर कुछ दिन पिलाना चाहिये। जौहर मुनक्का २ चावल या हब्ब कत्थ १ गोली बीज निकाले हुये एक मुनक्का के भीतर बन्द करके बिना चबाये पानी के घूंट से निगलवा देना और कुछ दिनतक निरन्तर देना लाभकारी होता है।

इसके अतिरिक्त ये गोलियाँ भी लाभकारी है विशेष कर ऐसे कुष्ठी के लिये जिसके नख और हस्त-पाद की अंगुलियाँ भी झड़नी आरम्भ हो गई हो--एक कृष्ण सर्प मार कर उसका शिर पृथक करके बिना हड्डी के मांस निकाल कर उसमें तीन माशा संखिया मिला कर खरल करें जिसमें काला हो जाय। फिर कालीमिर्च प्रमाण की गोलियाँ बना कर एक गोली मक्खन में मिला कर

तीन दिन लगातार खिलायें। खाने को सिवाय जौ की रोटी के और कुछ न देवें।

अपथ्य--बादी, गुरु एवं उष्ण पदार्थों, जैसे आलू, बैंगन, मसूर की दाल, मछली, कबाब, लालमिर्च एवं अन्यान्य उष्ण पादार्थों से परहेज करें। गरम स्थान में रहने से भी बचें। चिकित्सा की ओर शीघ्र ध्यान देवें। अन्यथा रोग पुराना होकर असाध्य हो जाता है।

पथ्य--विरेचनकाल में केवल मूँग की नरम खिचड़ी एक समय तीसरे पहर खिलायें। इसके अतिरिक्त अन्य समय में चपाती के साथ शीतल शाक, कद्दू, तुरई, कुलफा, पालक, मूँग की दाल आदि सेवन करें। दूध, मक्खन, घी आदि जितना पच सके सेवन कराना चाहिये।

९—बर्स

नाम--(अ०) बर्स; (उ०, हिं०) सफेद दाग (कोढ़), फुलबहरी; (सं०) श्वित्र, किलास कुष्ठ; (अं०) ल्युको डर्मा (Leucoderma)।

हेतु--बहुधा यह रोग पैतृक वा आनुवंशिक होता है। पर कभी अधिक काल तक मछली सेवन करने या मछली खाकर दूध पी लेने या दूध पीकर कोई अम्ल पदार्थ जैसे सिरके का अचार या चटनी खा लेने से भी यह रोग उत्पन्न हो जाता है। वास्तव में यह रोग त्वचा के पोषण दोष के कारण होता है। अस्तु, त्वचा की संवर्तन शक्ति (पाचन शक्ति) दुर्बल होने से उसके आहार का सम्यक् पाचन नहीं होता और वह कुछ न कुछ अपक्व रह कर कफ रूप में परिणतशील हो जाता है तब उससे श्वेत दाग उत्पन्न हो जाते हैं। इन चिह्नों के स्थान को चुटकी से पकड़कर ऊपर उठाकर मांस को छोड़ कर केवल त्वचा ही में सूई चुभा कर देखें। यदि उसमें से रक्त बहे तो ऐसे रोगी को साध्य एवं चिकित्स्य और यदि जलवत् द्रव बहे तो उक्त अवस्था में उसे असाध्य समझें। रोगारम्भ में चिकित्सा कर लेने से प्रायः लाभ हो जाता है।

लक्षण--शरीर में स्थान-स्थान पर श्वेत दाग पड़ जाते हैं जो आरम्भ में छोटे-छोटे होते हैं, किंतु; धीरे-धीरे बढ़ते-बढ़ते बड़े हो जाते हैं। साधारणतया ये दाग हाथों और चेहरे पर अधिक हुआ करते हैं। यदि दाग कम और छोटे हों तो ठीक होने की आशा हो सकती है। परन्तु शरीर के अधिक भाग पर फैल जाने पर कष्टसाध्य होते हैं।

चिकित्सा--फालिज में लिखित विधि से प्रथम श्लेष्मपाचन औषधि पिलाकर विरेचन देकर उसका शोधन करें। पाचनौषधि सेवन के

मध्य पीला अंजीर ५ दाना, चकबड़ के बीज ३ माशा, वकुची ३ माशा सिरका में पीस कर दागों पर लेप करते रहें। यदि रोग हल्का हो तो रसवत, चाकसू, नरकचूर और सफेद कत्था प्रत्येक ३ माशा सबको रात्रि में गरम पानी में भिगो कर सवेरे जुलाल निथार कर पिलायें। यदि दाग शरीर के थोड़े भाग पर हों तो ६ माशा सफूफ बर्स रात्रि में गरम पानी में भिगो कर सवेरे उसका जुलाल निथार कर चालीस दिन तक बराबर पिलायें और उसकी सीठी सिरका में पीसकर दागों पर लगायें। विरेचनोत्तर फौलाद भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर या मण्डूर भस्म १ टिकिया दवाउल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा में मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

रोगन बर्स सफेद दागों पर लगाने और बताशा में रख कर खिलाने से लाभ होता है।

मसीकृत मयूरास्थि ३ माशा, वकुची ३ माशा, हलदी ३ माशा पीस कर एक पाव करेला के रस में घोल कर इसमें से प्रति दिन दागों पर लेप करनेसे लाभ होता है।

बर्स का एक भेद वह है जिसको 'बर्स अस्वद' या 'बहक़ अस्वद' कहते हैं। आयुर्वेद और पाश्चात्य वैद्यक का यह क्रमशः 'नीलिका' और 'पिटिरिआसिस नाइग्रा (Pityriasis Nigra)' है। इसका लक्षण यह है कि मछली के सेहरे की भाँति इसमें त्वचा से सेहरे निकलते हैं और दाग को मलने से भूसी निकलती है और दाग का स्थान काला होता है। सौदाबी दोष इसका उत्पादक होता है। कुष्ठ की भूमिका (पूर्वरूप) होने से इसका उपचार भी वही है जिसका उल्लेख जुजाम के प्रकरण में किया गया है। ऐसे दागों पर हड़ताल, फिटकिरी और गंधक मूली के अर्क में पीस कर मलने अथवा मूली के बीजों को प्याज के रस में पीस कर मलने से भी लाभ होता है। खर्बक स्याह को सिरका में पीस कर लेप करने से उक्त लाभ होता है।

अपथ्य—शीतल, तर एवं बादी पदार्थों, जैसे चावल, दूध, दही, उड़द की दाल, आलू, अरवी, टिंडा, कद्दू आदि से परहेज करें और मछली न खायें।

पथ्य—विरेचन काल में मूँग की नरम खिचड़ी और सफूफ बर्स के सेवन काल में केवल बेसनी रोटी, नमक की घी अधिक प्रमाण में मिला कर खिलायें। इन दिनों के अतिरिक्त बकरी का भुना हुआ मांस गरम मसाला मिला कर चपाती के साथ खिलायें।

———

१०—खनाजीर

नाम—(अ०) ख़नाज़ीर ; (उ०, हिं०) कण्ठमाला ; (सं०) कण्ठमाला, गण्डमाला ; (अं०) स्क्रॉफ्यूला (Scrofula) ।

हेतु—गरिष्ठ , स्थूल, दीर्घपाकी एवं कफकारक आहारौषधि के अति सेवन से सांद्र कफ उत्पन्न होकर इस रोग का हेतु होता है ।

लक्षण—साधारणतः ग्रीवा की ग्रन्थियाँ एवं कोमल मांस और क्वचित् वंक्षण एवं कक्ष की ग्रन्थियाँ भी शोथयुक्त होकर माला की तरह हो जाती है अतएव हिंदी और उर्दू में इसको 'कंठमाला' कहते हैं। अर्बुद और इस शोथ में यह अन्तर होता है कि अर्बुद का मांस के साथ सम्बन्ध नहीं होता और ग्रन्थियाँ पृथक् मालूम होती है और इस शोथ की ग्रन्थियाँ मांसके साथ चिमटी होती हैं और कड़ी होती हैं। कभी-कभी ये ग्रन्थियाँ पक कर फूट जाती हैं जिनसे पूय बहता रहता है। कभी-कभी रोगी को तीव्र ज्वर हो जाता है और प्रायः मन्द-मन्द ज्वर तो रहा ही करता है।

चिकित्सा—सवेरे कफदोषपाचनौषधि में शाहतरा और चिरायता ७–७ माशा अधिक मिला कर पिलायें और सायंकाल अफसन्तीन ७ माशा, चोपचीनी ५ माशा, मिश्री २ तोला पानी में उबाल-छान कर पिलायें। पन्द्रह दिन तक पाचन औषधि (मुंजिज) पिला कर अफ्तीमून और बस्फाइज फुस्तुकी ५-५ माशा अधिक मिला कर तीन दिन और पिला कर अर्क मत्बूख हफ्तरोजा का विरेचन देवें। तदुपरान्त ठंढाई (तबरीद) का यह योग देवें—खमीरा गावजबान १ तोला एक चाँदी के बर्क में लपेट कर प्रथम खिला कर ६-६ तोले अर्क गावजबान और अर्क मकोय में ५ दाना उन्नाब का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन तक पिलायें। यदि आवश्यकता हो तो कुछ दिन पुनः दोषपाचनौषधि पिला कर इसी प्रकार विरेचन देवें।

ग्रन्थियों पर प्रारम्भ में सावर शृंग भस्म ३ माशा इक्कीस बार जल में धोये हुये १ तोला घी में मिला कर या जदवार ३ माशा और सौसन की जड़ ३ माशा महीन पीस कर १ तोला मरहम दाखिलयून या १ तोला मरहम बासलीकून में मिला कर कुछ दिन लगायें या जिमाद खनाजीर एक टिकिया यथावश्यक हरे मकोय के रस में पीस कर कुनकुना गरम करके लेप कर दिया करें। विरेचनोत्तर अतरी फल गुद्दी ७ माशा खिला कर ५ माशा सौंफ, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा मकोय ३ माशा ६-६ तोले अर्क सौंफ और अर्क मकोय में पीस-छान कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर कुछ दिन तक पिलायें। मकोय २ तोला, बिरंजासिफ मर्जञ्जोश और अफसंतीन प्रत्येक १ तोला पानी में उबाल कर बफारा लेवें और सेक करें।

यदि किसी उपाय से कण्ठमाला की ग्रन्थियाँ विलीन न हों तो उन पर तीव्र औषधियाँ चूना, हड़ताल आदि लगा कर उनको फाड़ डालें या शस्त्रकर्म के द्वारा निकलवायें। यदि पीलू के पत्र ऊँट के मूत्र में पीस कर कुछ दिन तक बराबर ग्रन्थियों के ऊपर लेप किये जायँ तो लाभकारी होते हैं। आराम होने के पश्चात् मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस में मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

नागफनी का दो-चार फल प्रतिदिन खिलाना और उसी को पीस कर ग्रन्थियों पर लगाना कण्ठमाला के लिये प्रभावतः गुणकारी है।

अपथ्य—अम्ल और शीतल पदार्थों के सेवन से परहेज करें। उड़द की दाल, कद्दू, टिंडा, दूध, दही, चावल, आलू, अरवी, कचालू आदि नहीं खायें।

पथ्य—बकरी के मांस का शूरबा, करेले की तरकारी, मूँग-अरहर की दाल चपाती के साथ देवें। पाव रोटी, बिस्कुट, चाय, अंडा प्रभृति आवश्यकतानुसार देवें। ऐसे रोगियों को बलकारक भोजन खिलाना और समुद्र यात्रा कराना लाभकारी होता है।

११—आतशक

नाम—(अ०) अफ़रंजी, अल्ख़जील, आतशक हक़ीकी; (फा०) आतशक; आबलए फिरंग; बाद फिरंग (उ०) आतशक बाद फिरंग; (हिं०) गरमी; (अं०) सिफिलिस (Syphilis), हार्ड शंकर (Hardchancre)।

वर्णन—किसी-किसी के मत से यह प्राचीन व्याधि है और बुसूर गरीबा से यही विवक्षित है। किसी-किसी के मत से यह जम्रा और नारफारसी का एक भेद है। साधारणतया यह निरूपण किया जाता है कि यह एक नूतन व्याधि है जो चार या पाँच सौ वर्ष से फिरंङ्गीय द्वीप में प्रगट होकर अधुना समस्त देशों में प्रसारित हो गया है। अतएव प्राचीनों के ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। सुतरां यह एक संक्रामक वा औपसर्गिक रोग है जो रोग का उपसर्ग होने या वंशानुगतरूपेण पिता-माता से प्राप्त होता है।

हेतु—यह रोग औपसर्गिक है। अतएव आतशक पीड़ित व्यक्तियों के संग, उनके पास उठने-बैठने, उनके साथ भोजन करने या रोगियों का उच्छिष्ट पानी पीने या रजस्वला स्त्रियों के साथ मैथुन करने या बाजारू पुंश्चली स्त्रियों के साथ सहवास या वेश्यागमन करने से यह व्याधि हो जाती है। सुतरां इस व्याधि का विष प्रभावहीन शरीर में प्रविष्ट होकर दोषों (अख्लात) एवं रक्त को जला कर विदग्ध सौदा बना देता है तथा ये दूषित दोष एवं रक्त शरीर में रह कर इस रोग का हेतु होते हैं।

लक्षण---शरीर के किसी भाग पर विशेष कर विशिष्ट अंग (लिङ्ग) के ऊपर किसी स्थान में प्रथम एक फुन्सी उत्पन्न होती है जो धीरे-धीरे बढ़कर फट जाती है और एक व्रण-सा बन जाता है। इसके आस-पास की त्वचा किंचित् शोथ युक्त हो जाती है। व्रण को दबाने से कड़ा प्रतीत होता है तथा वेदना कम होती है और पूय भी कम निकलता है। पाँच-सात दिन के पश्चात् वंक्षण की ग्रन्थियाँ शोथयुक्त होकर कड़ी हो जाती है जो दबाने से कड़ी मालूम होती हैं। कभी-कभी ये शोथयुक्त ग्रन्थियाँ पक जाती हैं और उनमें पीड़ा होती है। कभी-कभी संपूर्ण शरीर पर व्रण बन जाते हैं और शरीर फूट निकलता है। शरीर की सन्धियों में पीड़ा होने लगती है और कभी-कभी ज्वर भी हो जाता है।

चिकित्सासूत्र---आतशक की प्रथम और द्वितीय कक्षा में सौदापाचन एवं विरेचन के अनन्तर दोष का संशोधन करके पारद-योगों का प्रयोग करायें और तृतीय कक्षा के आतशक में उश्बा, चोबचीनी और अर्क मुसफ्फी खून आदि का उपयोग करायें।

चिकित्सा---शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुंडी प्रत्येक ७ माशा, उन्नाब पाँच दाना, काली हड़ ७ माशा, यदि शीत ऋतु हो तो उशबा मगरबी ७ माशा और यदि ग्रीष्म हो तो लाल चन्दन ७ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगो कर सवेरे मल-छान कर ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें और सायंकाल निर्गंद बाबरी १ तोला, काली मिर्च ५ दाना दोनों को सवेरे पानी में भिगो कर रखें और सायंकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर पिलायें। कम से कम १५ दिन या २१ दिन तक यह योग पिला कर जुजाम (कुष्ठ) के प्रकरण में लिखित विधि के अनुसार सप्ताह पर्यन्त अर्क मत्बूख हफ्तरोजा का विरेचन पिलायें। इसके अनन्तर देखें यदि शोधनोपरान्त और आवश्यकता हो तो उपर्युक्त योग पाँच दिन तक पिला कर पुनः यथाविधि मत्बूख हफ्तरोजा पिलायें, यहां तक कि शरीर सर्वथा शुद्ध हो जाय। यद्यपि यह चिकित्साविधि दीर्घकालिक (दीर्घसूत्री) है, परन्तु इससे स्थायी लाभ हो जाता है। विरेचनों से अवकाश मिलने पर २ चावल जौहर मुनक्का या १ गोली हब्ब कत्थ गुठली निकाले हुए एक मुनक्का के दाने के भीतर लपेट कर जल के घूँट के द्वारा सवेरे इस प्रकार निगल लिया करें कि दाँतों से इसका स्पर्श न हो। सायंकाल मजून उशबा १ तोला खिलाकर ऊपर से ६ तोला अर्क उश्बा, ६ तोला अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून या १२ तोला अर्क चोबचीनी ४ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिला दिया करें। व्रणों पर मरहम आतशक आवश्यकतानुसार लेकर लगायें। हब्ब लीमू २ गोली ताजे जल से खिलाना भी लाभकारी है। सफेदा काशगरी, रसवत, कपूर,

२-२ माशा सब को बारीक पीसकर यथावश्यक रेशा खतमी के लुग्राब में मिलाकर व्रणों पर लगायें। इससे लाभ होता है।

अपथ्य--अम्ल द्रव्य का सर्वथा परित्याग कर देवें। गुड़-तेल के बने पदार्थ और अधिक उष्ण पदार्थ जैसे लहसुन, प्याज, बैंगन, मसूर की दाल, आलू आदि नहीं सेवन करें। स्वस्थों को ऐसे रोगियों के साथ अधिक रहने से, साथ भोजन करने और उनके शरीर से उतारे हुये वस्त्र धारण करने से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--हव्ब लीमूँ के सेवन काल में लंबा कद्दू और मूँग की दाल सेवन नहीं करें। इसके अतिरिक्त अन्यान्य औषधियों के सेवनकाल में इनका सेवन कर सकते हैं। कुलफा, टिंडा, भिंडी, तुरई, अरहर की दाल, बकरी के मांस का शूरबा चपाती के साथ सेवन करायें। घी जितना पच सके, सेवन करायें।

१२—जुद्री

नाम—(अ०) जुद्री; (फा०) आबलः; (उ०) चेचक, सीतला; (सं०) मसूरिका, शीतला, माता, वसन्तरोग; (अं०) स्मॉल-पॉक्स (Small Pox), वेरिओला (Variola),।

१३—हुस्बा

नाम--(अ०) हुस्बा; (फा०) सुर्खचः; (उ०) खसरा; (सं०) रोमान्तिका; (अं०) मीजल्स (Measles), मार्बिल्लाई (Marbilli)।

वर्णन--ये दोनों संक्रामक विस्फोटक ज्वर हैं जो प्रायः बसन्त ऋतु (रबीअ) अर्थात् चैत के महीने में हुआ करते हैं। इन दोनों में प्रमाण और आयतन का भेद होता है। सुतरां जुदरी (मसूरिका) के दाने बड़े होते हैं और हुस्बा (रोमान्तिका वा खसरा) के छोटे। इसके अतिरिक्त मसूरिकाजनक दोष साधारणतया रक्त होता है और इसके दाने लगभग समूचे मसूर जैसे होते हैं और अन्ततोगत्वा पककर इनमें से पूय स्रावित हुआ करता है। परन्तु खसरा का जनकदोष प्रायः पित्त होता है। इसके दाने बाजरे के दाने के बराबर होते हैं। रोमान्तिका का उत्पादक दोष पित्त होता है। अतएव यह अत्यन्त कष्टदायक एवं रदी होती है। अनुभव से यह सिद्ध हुआ है कि जब दाने दोहरे होते हैं अर्थात् दानों पर दाने चढ़े हुये होते हैं और एक दूसरे से सर्वथा मिले हुए (संमिलित) होते हैं या जिन दानों का वर्ण काला होता है या जिस समय दाने वक्ष एवं उदर

के स्थान पर अधिक होते हैं या देर में प्रगट होते हैं वे अत्यन्त भयावह होते हैं। कभी-कभी इन दोनों के प्रकटीभूत दाने अकस्मात् लुप्तप्राय हो जाते हैं और इनके दोष का अन्तर्भरण उत्तमाङ्ग और कोष्ठांगों में होने लगता है। उक्त अवस्था में मूर्च्छा उत्पन्न हो जाती है और रोगी मर जाता है। कभी-कभी दाने पूर्णतया निकल आते हैं और इनके निकल आने के पीछे भी ज्वर विद्यमान रहता है। यह अत्यन्त आंशकापूर्ण स्वरूप है, क्योंकि दानों के प्रगट होने के उपरान्त ज्वर जाता रहना चाहिये था परन्तु; इसकी विद्यमानता दोष का प्राचूर्य एवं चरम विकृति को लक्षित वा प्रमाणित करती है। यूनानी वैद्यों के लेखानुसार यदि दाने वक्ष और उदर पर अधिक न हों और इनमें पूर्वोक्त अरिष्ट लक्षण न हों और पाक-प्राप्त करलेने के उपरान्त सिर उच्च एवं अत्यन्त चमकीले दिखाई देवें तो उनमें अधिक भय नहीं है। जिन बालकों को अभी तक यह व्याधि नहीं हुई, उन्हें चैत के महीने से कुछ पूर्व अनागतबाधाप्रतिषेधार्थ कान के पीछे जोंक लगवाना चाहिये। पहले ही से उनको मांस-सेवन न करायें। यदि आवश्यकता हो तो उसमें तुरई, कद्दू, पालक, कासनी, कुलफा प्रभृति डालकर खिलायें तथा उसे धूप में दौड़ने-फिरने से वर्जित कर देवें। पूर्वविधानता की दृष्टि से बालकों को समूचा मोती निगलवाना या सलाया मरवारीद शर्बत बनफ्शा में मिलाकर चटाना विशेष रूप से चेचक से सुरक्षित रखता है। यदि चेचक निकल भी आये तो तज्जन्य कष्ट और अन्यान्य अङ्गोपाङ्गों की सुरक्षा के लिये अतीव उपादेय है।

हेतु--चेचक भी एक औपसर्गिक वा संक्रामक रोग है जो एक से दूसरे रोगी में संक्रान्त हो जाता तथा एक से दूसरे रोगी को लग जाता है। साधारणतया यह रोग बालकों को हुआ करता है। पर क्वचित् बड़ों को भी हो सकता है। वसन्त ऋतु एवं उष्ण दशों में बहुधा यह रोग महामारी के रूप में प्रसार पाया करता है। धनी लोगों की अपेक्षया निर्धनों को और गौरांगों की अपेक्षया कृष्णांगों (कालों) को यह अधिक हुआ करता है। इससे अधिकतया वे ही बालक आक्रान्त होते हैं जिनको टीका नहीं लगाया होता या दूषित टीका लगा होता है। इसके विषप्रभाव से पित्त अधिक उत्पन्न होकर रक्त में मिल जाता है जिसको शरीर प्रकृति (तबीयत मुदब्बिरए बदन) त्वचा की ओर उत्सर्गित करती है और त्वचा के ऊपर दाने उत्पन्न हो जाते हैं।

लक्षण--चेचक (मसूरिका) के प्रारम्भ में अश्रु बहता है, नेत्र लाल होते हैं, नासिका में कण्डू (खुजली) और शिर में शूल होता है। कभी-कभी खाँसी और कण्ठ में वेदना होती है तथा स्वर बैठ जाता है। इन लक्षणों के साथ ज्वर होता है, बालक स्वप्नावस्था में भय खाता और चौंकता है। कटि-शूल होता, चेहरा लाल और तमतमाया हुआ प्रतीत होता है और दूसरे दिन

कम्पयुक्त तीव्र ज्वर हो जाता है। कनपुटियों की नसें उभरी हुई और फड़कती हुई मालूम होती हैं। मलावरोध होता, क्षुधा कम हो जाती, बेचैनी बढ़ जाती, कतिपय रोगियों को तीव्र पिपासा होती और प्रलाप तन्द्रा एवं मूर्च्छा हो जाती है। तीसरे दिन ज्वर हल्का हो जाता है। प्रथम मस्तक, चेहरे और पृष्ठ पर दाने निकलते हैं। पुनः हस्त-पाद और समस्त शरीर पर दाने निकल आते हैं। ये दाने कभी कुछ एक तथा कभी अत्यधिक होते हैं। कभी पृथक्-पृथक् वा असम्मिलित और कभी परस्पर मिलकर (सम्मिलित) गुच्छे से हो जाते हैं, विशेष कर चेहरे पर प्रचुरता से दाने निकलते हैं। प्रारम्भ में दाने लाल होते हैं। दूसरे-तीसरे दिन ये चपटे उभार बन जाते हैं और छोटी-सी राई या सूक्ष्म छर्रों के समान कड़े प्रतीत होते हैं। तीसरे-चौथे दिन दानों में स्वच्छ उज्ज्वल द्रव भर जाता है। पाँचवें दिन प्रत्येक दाने के चतुर्दिक् लाल मण्डल-सा उत्पन्न हो जाता है और दाने की नोक भीतर की ओर दब जाती है। इनका उज्ज्वल द्रव मलिन होने लगता है। सातवें-आठवें दिन इनमें पूय पड़ने लगता है। आठवें दिन दानों का उज्ज्वल द्रव पूय में परिणत हो जाता है और इनकी नोक ऊपर की ओर उभर आती है तथा नोक पर काला बिंदु मालूम होता है। उस दिन पुनः तीव्र ज्वर हो जाता है। रोगी को निगलने में कष्ट एवं श्वासकृच्छ्रता होती है। चेहरा और नेत्र सूज जाते हैं और प्रलाप भी हो जाता है। दसवें-ग्यारहवें दिन दाने मुरझाने लगते हैं और चौदहवें दिन तक मुरझा कर उन पर भूरे या स्याही मायल खुरंड बन जाते हैं। उन्नीसवें दिन यह खुरण्ड उतरने लगते हैं और साधारणतया एक-दो मास तक खुरंड उतरते रहते हैं। खुरंड उतर जाने के पश्चात् त्वचा के ऊपर लाल-भूरे रंग के दाग रह जाते हैं। यदि रोग की तीव्रता के कारण त्वचा गल जाय तो दागों के अच्छा होने के स्थान में पीछे उनके भीतर गर्त बन जाते हैं। खसरा के आरम्भ में भी प्रायः उपर्युक्त लक्षण होते हैं। परन्तु इसमें चौथे या पाँचवें दिन पोस्ते के दानों के सदृश लाल-लाल छोटे-छोटे दाने होते हैं जो परस्पर संमिलित होकर अर्ध चन्द्राकार स्वरूप के धब्बे बना देते हैं। ये दाने प्रथम मस्तिष्क एवं चेहरे पर और पुनः सारे शरीर पर निकलते हैं और एक-दो दिन तक निकलते रहते हैं। जब दाने प्रचुरता से निकलते हैं तब उनका कोई विशिष्ट स्वरूप नहीं रहता। दानों का वर्ण कभी अरुण (गुलाबी) पीताभ रक्त और कभी श्यामाभ (स्याही मायल) रक्त होता है। दबाने से ललाई लुप्त हो जाती है। दानों के निकलते समय तीव्र प्रतिश्याय होता है। जब दाने निकल चुकते हैं तब लक्षण हल्के हो जाते हैं। छठवें सातवें दिन ये दाने मुरझा जाते हैं। आठवें दिन मुरझाये हुए दानों पर से गेहूँ की भूसी के समान बारीक-बारीक छिलके या खुरंड (व्रणवस्तु)

झड़ जाते हैं। उस समय शरीर में तीव्र कण्डू होता है। बहुधा आठवें दिन ज्वर उतर जाता है। मसूरिका और रोमान्तिका में जब प्रारम्भ ही से दाने काले या नीले वर्ण के प्रगट हों और अनियमित हों तथा बालक को व्यग्रता, प्रलाप और श्वास कष्ट हो तथा मटियाले या काले दस्त आयें तब ये लक्षण असाध्य एवं अरिष्ट सूचक होते हैं।

चिकित्सा--जब उपर्युक्त लक्षण से ज्वर आरम्भ हो जाय तब बालक को सच्चे मोतियों के छोटे-छोटे चार-पाँच दाने निगलवा दिया करें और ३ दाना उन्नाब, ५ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का, ३ दाना पीला अंजीर, २ माशा खाकशी, १ तोला मिश्री पानी में उबाल-छान कर पिलायें। यदि दौर्बल्य अधिक हो तो इसी योग के साथ खमीरा मरवारीद ३ माशा खिला दिया करें और रोगी की शय्या पर खाकसी छिड़कवा देवें। जल पीने के पात्र में १ तोला खाकसी पोटली में बाँध कर डाल देवें। कास हो तो श्लेष्मोत्कारि ओषधियाँ इसी योग में योजित कर देवें और २ माशा गावजवान, २ माशा खतमी के बीज सम्मिलित करके पिलायें और उग्र कास में लऊक सपिस्ताँ ७ माशा, अर्क गावजबान २ तोला या अर्कबिरंजासिफ २ तोला में उबालकर बिना छाने दूसरे समय अपराह्न (तिजहरियाँ) में पिला दिया करें।

मलावरोध हो तो प्रातःकालीन योग में गुलबनफ्शा ३ माशा योजित करके सेवन करायें और मिश्री के स्थान में १ तोला शर्बत बनफ्शा सम्मिलित करके पिलायें। यदि अतिसार आरम्भ हो जाय तो जहरमोहरा २ रत्ती, मोती २ चावल, कहरुवाए शमई ४ चावल, बारतंग के बीज २ माशा--समस्त द्रव्यों को महीन कूट-छान कर चूर्ण बनायें। इस चूर्ण में से १ माशा चूर्ण खिला कर २ माशा हब्बुल् आस का शीरा एवं २ माशा अंजबार की जड़ का शीरा पानी में पीस कर शीरा निकाल कर १ तोला शर्बत हब्बुल् आस मिलाकर पिलायें। यदि तृष्णा अधिक हो तो ग्रीष्म ऋतु में ताजा पानी पिलायें और शीत ऋतु में मकोय या गावजबान का अर्क पिलायें और चेचक के दानों पर गुलाब के फूल, कुंदुर, एलुआ, अंजरुत, दम्मुल्अख्वैन सब समभाग पीस कर अवचूर्ण न करें।

यदि अत्यन्त दौर्बल्य एवं मूर्च्छा हो तो हृदयबलवर्धनार्थ जवाहरमोहरा आध चावल, मुफर्रेह शैखुर्रईस २ माशा या मुफर्रेह आजम २ माशा, या मुफर्रेह याकूती २ माशा में मिला कर प्रथम खिलायें। ऊपर से ३ तोला अर्क गुलाब या ३ तोला अर्क केवड़ा में १ तोला शर्बत सेब डालकर पिलायें। यदि तीव्र खाँसी हो तो अर्क गुलाब एवं अर्क केवड़ा न देकर इनके स्थान में अर्क गावजबान ४ तोला सेवन करायें। आराम होने के पश्चात् मुफर्रेह बारिद

४ तोला, अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १ तोला शर्बत उन्नाब के साथ कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य--अंडे, सादा मांस, दूध, मछली, गरम मसाला, लाल मिर्च और अम्ल पदार्थ तथा चावल आदि से परहेज करें।

पथ्य--चेचक निकलने के काल में आहारस्वरूप मुनक्का या अंजीर के कुछ दाने यदि बालक खाता पिता हो तो खिलायें या अरहर की दाल का पानी या मसूर की दाल पकाकर, यदि रोटी खाता हो तो चपाती के साथ या अकेले जैसे बालक की रुचि हो खिलायें। आराम होने के पश्चात् शीतल शाक, कद्दू, कुलफा, तुरई, पालक आदि बकरी के मांस के साथ पकाकर चपाती के साथ सेवन करायें या मूंग की खिचड़ी खिलायें।

टिप्पणी—यह रोग बालकों को ही प्रायः हुआ करता है। अतएव औषधि की मात्रा उक्त वर्णन में आधी लिखी गई है जो सयाने बालक अर्थात् ९-१० वर्ष की आयु के बालकों के लिये है। वयानुसार मात्रा घटा-बढ़ा कर उपर्युक्त योग प्रयुक्त कराने चाहिये।

१४—हुमरा

नाम--(अ०) हुम्रः सुर्खबादः; (उ०) सुर्खबादा; (सं०) विसर्प; (अं०) इरिसिपेलस (Erysipelas)।

वर्णन—यह एक उष्ण पैत्तिक रोग है जो त्वचा पर प्रगट होता है और कभी एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानान्तरित होता है।

हेतु और भेद—इसके केवल निम्न दो भेद होते हैं:—प्रथम वह जिसका उत्पादक दोष केवल शुद्ध पित्त होता है। इसको हुमरः ख़ालिस और द्वितीय वह जिसका उत्पादक दोष रक्त एवं पित्तमिश्रित होता है। इसको हुमरः ग़ैर ख़ालिस कहते हैं। यद्यपि यह शोथ शरीर के प्रत्येक भाग पर हो सकता है तथापि प्रायः यह चेहरा पर हुआ करता है। यूनानी वैद्यक में इस प्रकार के शोथ को माशिरा, आयुर्वेद में मुखगत विसर्प और पाश्चात्य वैद्यक में फेशियल इरिसिपेलस (Facial Erysipelas) कहते हैं। बालकों को होनेवाले विसर्प अर्थात् बाल विसर्प को यूनानी वैद्यक में सुर्खबाद अत्फ़ाल कहते हैं।

शैखुर्रईस के मत से प्रायः यूनानी हकीम केवल पित्तज शोथ को 'हुम्रः' और केवल रक्तज को 'फलामूनी' और रक्त एवं पित्त दोनों से मिले हुये शोथ को 'मुरक्कब (संसर्गज)' कहते हैं। नामकरण में प्रगल्भ

दोषवाले रोग के नाम को प्रथम रखते हैं, जैसे यदि पित्त प्रगल्भ हो तो हुम्रः फलामूनी और रक्त प्रगल्भ हो तो फलगमूनी हुम्रः कहते हैं। हुम्रः फलामूनी को पाश्चात्य वैद्यक में इरिसिपेलस फ्लेग्मोनस (Erysipelas) कहते हैं। इसमें पूय पड़ जाता है।

लक्षण--रुग्ण स्थान में ललाई, चमक एवं स्वच्छता होती है। इसे ऊँगली से दबाने से ललाई दूर हो जाती है और ऊँगली हटा लेने पर वह तुरन्त लौट आती है। हलका दर्द, सूजन वा दाह, तृषा एवं ज्वर भी होता है। साधारणतः यह रोग कपोलों पर प्रगट हुआ करता है। हुम्रा गैर खालिस में ललाई तीव्र और सूजन कम होती है। नाड़ी स्थूल (अजीम) और मूत्र गाढ़ा होता है और शोथ का आयतन भी अपेक्षाकृत बड़ा होता है।

चिकित्सासूत्र--सिद्धान्ततः हुम्रा खालिस की चिकित्सा सर्वथा फल्गमूनी के समान की जाती है। भेद केवल यह है कि उसमें शिरावेध अविहित है और सदैव शीतल औषधियों का लेप लगाया जाता है तथा शोथ विलयन औषधियों की अपेक्षा नहीं होती। किन्तु हुम्रा खालिस में शिरावेध द्वारा पित्त का शोधन करना चाहिये और लेप के विषय में फल्गमूनी के विधि-विधान को दृष्टिगत रखना आवश्यक है। यदि शिशु को विसर्प (बालविसर्प) हो जाय तो प्रथम स्तन्य-धात्री (दाई) की शुद्धि करें तथा दुष्ट दोष का सुधार करें और रक्तशोधक औषधियाँ पिलायें, जैसे अर्क मुरक्कब मुसफ्फी खून १२ तोला शर्बत उन्नाब ४ तोला मिलाकर सवेरे-शाम पिलायें। यदि व्रण हो जाय तो किसी उपयुक्त मलहर का उपयोग करें। यदि विरेचन या रक्तमोक्षण अपेक्षित हो तो आवश्यकतानुसार विरेचन देवें और शिरावेध करायें तथा रक्त के प्रकोप को शान्त करनेवाली औषधियाँ काम में लेवें।

चिकित्सा—शिशु को हब्ब सुर्खवादये अतफाल १-१ वटी खिलायें और शोथ के स्थान पर सफेद और लालचंदन, गेरू, रसवत प्रत्येक ३ माशा यथावश्यक अर्क गुलाब में घिसकर लगायें। यदि फुंसियाँ हों तो केवल रसवत अर्क गुलाब में घिसकर लगायें। व्रण उत्पन्न हो गया हो तो मरहम सफेदा लगायें। ये गोलियाँ बालकों के लिये गुणकारी हैं--रसवत, नरकचूर, चाकसू, मुरदासंग, धमासा, लाल चंदन, काली हड़, बर्ग शाहतरा, चिरायता, सरफोका, मुंडी, ब्रह्मदण्डी प्रत्येक ३ माशा, नीलकण्ठी, नीम के पत्र, बकायन के पत्र प्रत्येक २० नग--सबको हरी मेंहदी के पत्र-स्वरस में पीसकर मुद्ग-प्रमाण की गोलियाँ बनायें। इसमें से २-२ गोली सबेरे-शाम माता के दूध में घोलकर पिलायें।

अहिफेनाभ्यासी बालोपयोगी बटीयोग--रसवत, लाल चंदन, चाकसू, नरकचूर प्रत्येक ३ माशा, अफीम १ माशा, मुरदासंग ४ रत्ती, हलदी और मेंहदी

के पत्र १-१ माशा, बकायन और नीम के पत्र १५-१५ नग कूट-छानकर मुद्ग-प्रमाण की गोलियाँ बनायें और १-१ गोली माता के दूध में घोलकर देवें। लेप का निम्न योग लाभकारी है--

लाल चंदन ६ माशा, सुपारी ६ माशा, सफेदा काश्गरी ६ माशा, गिल अरमनी ६ माशा यथावश्यक हरे धनिये के रस में पीसकर लेप करें।

अपथ्य--बालक की माता या स्तन्यधात्री को उष्ण एवं मधुर पदार्थ तथा अग्निसेवा से और अधिक चलने-फिरने से परहेज करना चाहिये।

पथ्य--बालक की माता को साधारण लघु आहार, हरे शाकों का शूरबा चपाती के साथ देवें या मूँग की दाल या मूँग की नरम खिचड़ी या डबल रोटी दूध के साथ देवें। यदि बालक कुछ खाता हो तो मधुर पदार्थ से परहेज करायें। साबूदाना या मुरमुरों की खीर चटा दिया करें।

१५--वरम सलिब

नाम--(अ०) वरम सलिब; (उ०) सख्त वरम; (सं०) अत्यन्त कठिन (अश्मोपम) घातक अर्बुद; (अं०) स्क्लीरोमा (Scleroma)।

यह तीन प्रकार का होता है--मिरंए सौदा जन्य, कफज और मिलित सौदाकफज। साधारणतया यह उष्ण शोथ के पश्चात् उत्पन्न होता है। इसको यूनानी में सकीरूस (Scirrhus) कहते हैं।

असंसृष्टद्रव्योपचार--(१) कलौंजी को पीसकर सिरका में मिलाकर लेप करने से कठिन शोथ उतर जाता है। (२) साबुन के लगाने से कठिन शोथ का माद्दा पक जाता है। (३) रोगन इजखिर में उशक घोलकर लेप करने से या (४) गोदुग्ध लेप करने से भी कठिन शोथ उतरता है। (५) २।।। माशा सूरंजान के पीने और लेप करने से कठिन संधिशोथ उतर जाता है। (६) खतमी या (७) कुंदुर लेप करने या (८) जायफल के पीने या लेप करने से, इसी प्रकार (९) बाबूना या (१०) एलुआ पानी में पीसकर लेप करने से कठिन सूजन उतर जाती है। इन ओषधियों के साथ पृथक्-पृथक् गुलरोगन और सफेद मोम मिलाया जाय तो ये तीव्र प्रभावकारी हो जाती हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार--दोषपाचन औषधि सेवन कराके सौदा और कफ का शोधन करना तथा सौदा एवं कफ उत्पन्न करनेवाले पदार्थों से परहेज लाभकारी है। कठिन शोथ में (१) जिमाद उशक, (२) जिमाद गूगल, (३) जिमाद महवा और (४) जिमाद तुख्म कत्तान का लगाना और ऐसे ही (५) जिमाद

चर्बी गुर्दए मेश लगाना लाभकारी है। (६) मरहम उशक, (७) मरहम हसल और कैरूती मुर्दारसंग का लगाना भी कठिन शोथ विलयन के लिये लाभकारी है।

१६—वरम रिख्व

नाम—(अ०) वरम रिख्व; (उ०) वरम नर्म; (सं०) वातज शोथ, शोफ; (अं०) एडीमा (Oedema)।

यह एक प्रकार का श्वेत एवं मृदु शोथ है जिसमें उष्णता एवं वेदना नहीं होती, किन्तु गौरव एवं तनाव होता है। औज़ीमा अंगरेजी एडीमा का अरबी रूपांतर है।

हेतु—कफ एवं द्रव इसके उत्पादक हेतु हैं।

लक्षण—इस प्रकार का शोथ उँगली से दबाने से दब जाता है। उँगली उठा लेने के पश्चात् वहाँ देर तक चिह्न (गड्ढा) शेष रहता है। इस प्रकार का शोथ साधारणतया (इस्तिस्काऽ) रोग में हुआ करता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) बूरए अरमनी ६ माशा सिरका और पानी में पीसकर लेप करना तथा (२) नमक और गेहूँ की भूसी प्रत्येक १ तोला और (३) बाजरा एवं कलौंजी प्रत्येक १ तोला को पोटली में बाँधकर गरम करके सेंक करना और (४) बूरए अरमनी ६ माशा या (५) अफसंतीन रूमी ६ माशा पानी और सिरका में पीसकर शोथ के स्थान पर लेप करना लाभकारी है। (६) करफ्स की जड़ को जौ के आटे के साथ लेप करने से शोथ विलीन हो जाता है। (७) ५ माशा केसर पान और लेप करने से कफज शोथ विलीन हो जाता है। (८) उशक को सिरका में घोलकर पतला लेप करने से कफज और कण्ठमाला का शोथ आराम होता है। जैतून के तेल के साथ बनाया गया सोए का तेल दोष को पकाकर विलीन करता है और हर प्रकार के कफज शोथ को नष्ट कर देता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मुसहिल हार्र (उष्ण विरेचन) और (२) हब्ब इयारिज से दोष का शोधन करना और आक्लेद युक्त (मुरत्तिब) पदार्थों से परहेज करना लाभकारी है। सम्यक् शुद्धि के उपरांत (३) दवाउल्कुर्कुम सग़ीर ५ माशा से ७ माशा तक या (४) हब्ब गारीक़ून ५ माशा या (५) दवाउल्कुर्कुम कबीर ५ माशा या (६) सफ़फ खुब्सुल्हदीद ६ माशा से १ तोला तक ६ तोले अर्क़ अजवायन के साथ देने से उपकार होता है।

१७—सल्आ

नाम—(अ०) सल्अः ; (उ०, हिं०) रसौली ; (सं०) अर्बुद ; (अं०) ट्यूमर (Tumour)।

वर्णन—यह एक प्रकार का सांद्र शोथ है जो शरीर के विभिन्न स्थान पर सांद्र कफ के कारण उत्पन्न हो जाता है।

हेतु—अर्बुद (सल्आ) के उत्पत्ति विषयक विभिन्न अनुमान एवं उपपत्तियाँ हैं। किन्तु; प्रबल विचार या मत यह है कि भ्रूणावरण की कतिपय अतिरिक्त कोषायें (सेल्ज) जो भ्रूण की उत्पत्ति विषयक आवश्यकता से अधिक (अतिरिक्त) होती हैं, प्रसवोत्तर किसी समय शरीर की वर्धन शक्ति की प्रेरणा से बढ़कर अर्बुद बन जाते हैं। परंतु कतिपय अर्बुद आनुवंशिक (मौरूसी) होते हैं, जैसे-कर्कटार्बुद वा सरतान (Cancer) और कतिपय स्थानीय क्षोभ या आघात आदि के कारण उत्पन्न होते हैं।

लक्षण—यह शोथ मांस और त्वचा से भिन्न होता है अर्थात् त्वचा के नीचे जिस ओर फिरायें अपने स्थान से उस ओर फिर जाता है और आयतन में चने से खरबूजा के बराबर तक होता है तथा अपने विशिष्ट आवरण में परिवेष्टित होता है।

भेद—रचना एवं भौतिक स्थित्यनुसार उसके निम्न भेद होते हैं—

(१) शहमिय्यः (मेदवत्), (२) असलिय्यः (मधुवत्), (३) अर्दहालिय्यः (हरीरावत्) और (४) शीराजिय्यः (शीराजी सालनवत्)।

रोगी के जीवन की दृष्टि से इसके ये तीन भेद होते हैं—(१) सल्आ मह्मूदा या सल्आ गैरखबीसा (अनात्ययिक), (२) सल्आ खबीसा या मुह्लिका (घातक या आत्ययिक) और (३) सल्आ रदिय्यः।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) करफ्स की जड़ को जौ के आटे के साथ लेप करने, (२) सौसन की जड़ और पत्ते कूटकर मद्य में पकाकर लेप करने, (३) उशक को सिरका में घोलकर लेप करने से अर्बुद का नाश होता है तथा कफज एवं कण्ठमाला के शोथ में भी लाभ होता है। (४) जरावंद तवील और (५) जरावंद मुदह्रज दोनों लेप की भाँति उपयोग करने से अर्बुद नष्ट होता है। (६) ३॥ माशा गारीकून पीने और लेप करने से शोथ नष्ट हो जाता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मरहम दाखिलयून या (२) मरहम रुसल या (३) मरहम जदवार या (४) मरहम उशक या (५) मरहम अक्बर या (६) मरहम शलगम या (७) मरहम मुहल्लिल या (८) मरहम काफूर का उपयोग शोथ विलयन के लिये लाभकारी है। अर्बुद का भेदन कर दोष निर्हरण

करने एवं व्रणरोपण के लिये (९) मरहम शिंगरफ या (१०) मरहम ईसा या (११) मरहम जिन्दगी या (१२) मरहम मुजर्रब या (१३) मरहम मुर्ख या (१४) मरहम राल का उपयोग गुणकारी है।

१८—खुराजात, दुबैलात, दमामील

नाम—(अ०) ख़ुराजात, दुबैलात, दमामील; (उ०, हिं०) फोड़े, बड़े फोड़े, फुंसियाँ; (सं०) विद्रधि, पिडका; (अं०) ॲब्सेस (Abscess), बॉइल (Boil)।

हेतु और लक्षण—खुराज वृहदायताकार (बड़े) उष्ण शोथ को कहते हैं, जो सांद्र दोष से उत्पन्न होता है। दुबैला उस वृहद् एवं वृत्ताकार शोथ का नाम है जिसका रंग साधारणतया त्वचा के वर्ण का हुआ करता है और जब तक उसमें पूय न पड़ जाय तब तक वेदना नहीं होती। दुम्मल (फोड़ा) गोपुच्छाकार लाल या पीले रंग का शोथ हैं जिसमें दोष की तीक्ष्णता के कारण वेदना भी प्रतीत होती है। किसी-किसी के मत से खुराज उष्ण शोथ से हुआ करता है और दुबैला से शीतल शोथ विवक्षित हं। किसी-किसी के मतानुसार आभ्यंतरिक व्रणशोथ को दुबैला और बाह्य को जरांहात कहते हैं। परंतु प्रथमोक्त उष्ण और उत्तरोक्त प्रायः शीतल दोष के कारण प्रगट होता है। हेतु, वर्ण, स्पर्श एवं अन्यान्य विशिष्ट उपद्रवों से इसका निदान संभव हो सकता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—आवश्यकतानुकूल सिरावेध एवं विरेचन के उपरांत (१) इसबगोल की भूसी गुलरोगन के साथ लेप करने से उष्ण विद्रधियाँ आराम होती हैं। इस हेतु समूचा इसबगोल भी पानी में भिगो कर लगाये जाते हैं। (२) खतमी का लेप करने से शोथकारक दोष पक्व हो जाता है। (३) अलस के लेप से भी उक्त लाभ होता है। इसी प्रकार (४) पीले अंजीर को चाबकर इस प्रकार के शोथ पर लगाने से वह पक जाता है। (५) उद्यानज पुदीना को जौ के आटे के साथ पानी में पकाकर दुबैला पर लगाने से वह फूट जाता है। (६) बिनौला का लेप या (७) साबुन का लेप (दुम्मलों) को पकाता है।

सिद्ध योग—(१) व्रणशोथ पाचक एवं वेदना नाशक पुलटिस—अलसी, कनौचा के बीज, इसबगोल, सन के बीज प्रत्येक १ तोला, गेहूँ का आटा ४ तोला सबको दूध में पीसकर पकाकर पुलटिस बाँधें। (२) दुम्मल नाशक (शोथ विलयन) लेप योग—अंबा हलदी, साबुन, रेंडी की गुद्दी गूगल प्रत्येक १ तोला सबको हरे मकोय के रस में पीसकर लेप करें। (३) व्रणशोफ विदारक लेप—मैनफल

का छिलका, गूगल, कुंबः प्रत्येक १ तोला, सबको कूट-छानकर घीकुवार के लुग्राब में मिलाकर इतना पकायें जिसमें किमाम हो जाय, तदुपरांत रेंडी के पत्ते पर फैलाकर व्रणशोथ के ऊपर चिपका देवें। यदि एक रात्रि और दिन में विदीर्ण न हो तो दोबारा उपयोग करायें तथा दोषनिर्हरण होने के उपरांत उपयुक्त मरहम लगायें। (४) व्रणशोफविदारणोत्तर व्रणशोधन-रोपण लेप योग--अलसी, गेहूँ का आटा, नीम के पत्र प्रत्येक ३ तोला पानी में पीसकर पुलटिस के समान पकाकर बाँधे। (५) व्रणशोधन-रोपण मलहर--नीम के पत्र २ तोला पीसकर टिकिया बनाकर ४ तोला तिल के तेल में जलायें। इसके उपरान्त १ तोला मोम उसमें पिघलाकर सिंदूर, सफेदा काशगरी, सफेद राल प्रत्येक ३ माशा पीसकर मिलाकर मलहर प्रस्तुत करें। (६) मरहम सफेदा--सफेदा काशगरी १॥ तोला खूब महीन पीसकर ३॥। तोला गाय के घी में डालकर लोहे की कढाई में अग्नि पर रखें और मृदु अग्नि देवें और नीम के सोंटा से इतना घोटें कि (किवाम) की भाँति हो जाय जिसकी पहिचान यह है कि एक बूँद जल में डालने से तुरत जम जाता है। बस अग्नि पर से उतारकर शीतल होने के पश्चात् कपड़े पर लगाकर (दुम्मल) पर चिपकायें।

मरहम पुंबः, मरहम एजान, मरहम राल, मरहम हफ्त दारू और मरहम मिश्री आदि अन्यान्य उपयोगी सिद्ध योग हैं।

१६—नम्ला

नाम—(अ०) नम्लः (साइय्यः); (उ०) नम्ला; (हिं०) मकड़ी मल जाना, मकड़ी मूतना; (सं०) कक्षा; (अं०) हर्पीज (Herpes)।

वर्णन--इस रोग में संपूर्ण शरीर या शरीर के किसी विशेष भाग पर दाद के समान एक वा अनेक दाने निकल आते हैं जिनमें तीव्र दाह एवं कण्डू होता है। उक्त स्थान पर ऐसा प्रतीत होता है मानो च्यूंटियाँ रेंगती हों। इसीलिये अरबी में इसे 'नम्लः' (च्यूंटी) और अंगरेजी में 'हर्पीज' (रेंगना) कहते हैं।

हेतु एवं लक्षण--ये फुंसियाँ तीक्ष्ण, दाहक एवं पैत्तिक दोष से उत्पन्न होती हैं और एक स्थान से दूसरे स्थान में चलती हुई मालूम होती हैं। इसके निम्न भेद हैं—(१) नमूला वसीत या साज़िज, यह आयुर्वेद का 'जालगर्दभ' (सु०, च०) और पाश्चात्य वैद्यक का हर्पीज सिम्प्लेक्स (Herpes Simplex) है। (२) नमूला मिन्तक़िय्यः जिसे आयुर्वेद में 'कक्षा' (चरक, वाग्भट) और पाश्चात्य वैद्यक में हर्पीज़ जॉस्टर (Herpes Zoster) कहते हैं।

(३) नमूला हल्क़िय्य जिसे अंगरेजी में हर्पीज सिर्सिनेटस (Herpes Circinatus) कहते हैं। यूनानी वैद्य इनमें से दूसरे और तीसरे भेद को नमूला मुत्काह्ला कहते हैं। इसका जख्म गहरा होता है और यह त्वचा एवं मांस को नष्ट कर देता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार––विरेचनोत्तर (१) अकाकिया पानी में घोलकर फुंसियों पर मलने से लाभ होता है। (२) नमक और सिरका के साथ पतला लेप करना उनको फैलने से रोक देता है। इसी प्रकार (३) सिरका में कपड़ा या इस्पंज तर करके, फुंसियों पर रखने से लाभ होता है। (४) जौ के आटे को हरे धनिये के रस या (५) मकोय के पत्र स्वरस में गूंधकर अथवा (६) पुदीना के पत्ती को पानी में पीसकर लेप करने से बड़ा लाभ होता है। (७) रसवत को पानी में घोलकर मलने से भी लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार––(१) ज़िमाद नारुवा या (२) जिमाद माज़ू या (३) मरहम नारुवा इनके बहिर प्रयोग और (४) दवाए नारुवा के आंतरिक उपयोग से इस रोग में लाभ होता है।

२०––याकूत अहमर

नाम––(अ०) याक़ूत अह्‌मर; (फा०) शबे चिराग़; (उ०) हज़ार चश्मा; (सं०) प्रमेह पिडका; (अं०) कारबंकल (Carbuncle)।

वर्णन––इस रोग में त्वचा एवं उसके नीचे की धातु में शोथ (सोज़िश) उत्पन्न होकर एक बड़ी पिड़का (दुम्मल) बन जाती है।

हेतु––अधिकतया यह रोग मधुमेह (जयाबीतुस) के कारण होता है। किन्तु वातरक्त, रक्तदुष्टि एवं सामान्य कायिक दौर्बल्य से भी यह व्याधि हो जाया करती है।

लक्षण––रुग्ण स्थान की त्वचा अत्यंत लाल, वेदना पूर्ण और शोथयुक्त होती है। शोथ उत्तरोत्तर बढ़ता जाता और स्याही मायल होता जाता है। पुनः उस पर एक फफोला (विस्फोट) प्रगट होकर, जब वह फटता है तब उसके नीचे कई एक छिद्र दिखाई देते हैं, जिनमें से पतला पूय निर्हरण होता है। किन्तु उन्हें दबाने से सांद्र एवं पिच्छिल द्रव निकलता है। व्रण बढ़ता जाता है और उससे छिछड़े आदि निर्हरण होते रहते हैं। अन्ततोगत्वा संपूर्ण विकारी धरातल की त्वचा चलनी के सदृश सुषिरपूर्ण हो जाती है। कभी अनेक छिद्र मिलकर एक अत्यंत कुरूप छिद्र बन जाता है जिसके भीतर खाकस्तरी रंग का छिछड़ा

होता है जिसके निकल जाने से वहाँ पर एक बड़ा गुहा बन जाता है। इस प्रकार के फोड़े में जलन, टीस एवं अत्यंत वेदना हुआ करती है। किन्तु छिछड़ा निर्हरण हो जाने के उपरांत कष्ट कम हो जाया करता है।

वक्तव्य—इस प्रकार का फोड़ा साधारणतया ग्रीवा, पृष्ठ या नितम्ब (सुरीन) पर निकला करता है। जब इस प्रकार का फोड़ा शिर या ग्रीवा पर निकले तो दौर्बल्य की अधिकता या रक्तस्राव आदि से रोगी प्रायः नष्ट हो जाया करता है। जब मधुमेह (जयाबी तुस) या लालामेह (बौल जुलाली) भी साथ में हो और रोगी वृद्ध हो, तब भी साधारणतः यह सांघातिक हुआ करता है।

अंसंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) सफेदा कलई और (२) गिल अरमनी समभाग लेकर काहू के स्वरस में पीसकर थोड़ा जैतून का तेल मिलाकर रुग्ण स्थान पर लेप करें या (३) ताजा नहरी केंकड़ा (जो विशेष लाभकारी है) हरे मकोय के रस में पीसकर लेप करें। जब वह व्रणित हो जाय तब (४) समूचा कछुआ जलाकर गाय के घी में मिलाकर उस पर लगायें। (५) सीसे (नाग) को हरे मकोय के रस और किंचित् सिरका में घिसकर रुग्ण स्थान पर पतला लेप करें अथवा उसे जलाकर उस पर लगायें। (६) बिल्ली की हड्डी त्रिफला के पानी में पीसकर पतला लेप करें। (७) सफेदा कलई और (८) तूतिया मग्सूल समभाग पीसकर गुलरोगन में मिलाकर लगाने और ऊपर से नीम की गरम पत्ती बाँधने से भी उपकार होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—रुग्ण स्थान पर पाँच-सात जोंक लगायें या यदि रोगी बलवान् हो तो शिरावेध करें और सौदापाचन औषधि पिलाकर सौदा विरेचन एवं माउज्जुब्न से रोगोत्पादक दोष का शोधन करें। तदुपरान्त (१) अतरीफल की गुद्दी ६ माशा से १।। तोला तक सादे पानी या अन्य उपयुक्त अर्कों के साथ सेवन करायें। बाह्यरूप से (२) मरहम शिंगरफ एक कपड़े पर आवश्यकतानुसार चिपकाकर रुग्ण स्थान पर लगायें या (३) मरहम रस कपूर उक्त विधि से उपयोग करें।

सूचना—जब मधुमेह के परिणामस्वरूप यह रोग हुआ हो तब दोषपाचन, विरेचन और रक्तमोक्षण स्थगित रखें और केवल उपर्युक्त स्थानीय चिकित्सा करें और आंतरिक रूप से मधुमेहनाशक उपचार काम में लेवें।

२१—नासूर

नाम—(अ०, उ०) नासूर; (सं०) नाड़ीव्रण; (अं०) सायनस (Sinus)।

हेतु और लक्षण—सामान्यतया साधारण व्रण पुराना होकर नासूर का रूप ग्रहण कर लेता है और उससे निरंतर पूय या द्रव बहता रहता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) कच्चे अंगूर का रस सिरका में मिलाकर नासूर में पिचकारी करने या उस पर लगाने से लाभ होता है। (२) महीन पिसे हुये हींग या (३) संदरूस की वत्ती बनाकर नासूर के छिद्र में भरने तथा इसकी धूनी देने से नारुवा में लाभ होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मरहम उस्तख्वान या (२) मरहम नासूर या (३) रोगन बर्ग नीम की पिचकारी या वर्ति का उपयोग नहरुवा में उपकारक है।

रोमरोगाधिकार (अम्राज़ुश्शार) १६

१--दाउस्सालब, दाउल्हय्य:

नाम--(अ०) दाउस्सालब, दाउल्हय्य: (उ०) बालचर, बालखोरा; (सं०) इन्द्रलुप्त भेद; (अं०) एलोपेशिया एरिएटा (Alopecia Areata), ए० फर्फ्युरेशिया (A. Furfuracea)।

वर्णन--इस रोग (दाउस्सालब) में शिर के बाल गिरने लग जाते हैं। कभी-कभी जब बालों के साथ त्वचा भी उतरने लग जाती है तब उसे दाउल्हय्य: कहते हैं।

हेतु--इन उभय व्याधियों (दाउस्सालब और दाउल्हय्य:) का हेतु जला हुआ कफ (क्षारीय कफ), तीक्ष्ण पित्त और जला हुआ सौदा हुआ करता है।

लक्षण--शिर की त्वचा पर एक धब्बा-सा प्रगट होता है जिस पर छोटी फुंसियों का एक घेरा होता है जो पीछे सूख जाती हैं। पुनः उनसे छिलका झड़ कर उड़ जाता है। रोग उन्नत होकर कई गोल-गोल चिह्न उत्पन्न हो जाते हैं जिनके ऊपर भूसी लगी होती है और उस स्थान के बाल उखड़कर नष्ट हो जाते हैं। यह रोग बड़ा हठीला होता है। कभी भौं, मूँछ और सारे शिर पर के बाल गिर जाते हैं।

निदान--प्रत्येक दोष के विशिष्ट लक्षण के अनुसार इसका निदान किया जा सकता है। रुग्ण स्थान को खुरदरे कपड़े से रगड़ने से यदि त्वचा लाल हो जाय तो यह रोग के शीघ्र साध्य होने के लक्षण समझें, अन्यथा असाध्य एवं दुश्चिकित्स्य समझें।

चिकित्सा--यदि रोग कफज हो तो कफ-पाचन औषधि पिलाकर कफ का शोधन करें। यदि किसी अन्य दोष के कारण यह रोग हुआ हो तो उसका यथोचित उपचार करें।

ठंढाई (तबरीद) के लिये १२ तोले अर्क शाहतरा में ६-६ माशे मीठे कद्दू के बीज के मग्ज और तरबूज के बीज के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत उन्नाब मिलाकर पिलायें या १२ तोले बकरी के दूध में शर्बत उन्नाब २ तोला मिलाकर पिलायें। निम्नलिखित योगों का बाह्य उपयोग करायें—

रोगन दाउस्सालब—हंसराज, गुलबाबूना, कैसूम प्रत्येक ४ तोला रात्रि में जल में भिगोकर सवेरे उबाल कर मल-छान लेवें। इस काढ़े में ५ तोले

रोगन पान मिलाकर अग्नि पर इतना पकायें कि पानी सूख जाय और केवल तेल मात्र शेष रह जाय। इसे बालखोरा पर लगायें।

अन्य--गंधक, मसीकृत बकरी का सुम, मसीकृत बकरी का ऊन (पश्म), आमला, अनार की छाल, पोस्ते की डोडी, मसीकृत कमीला प्रत्येक १ तोला, काली मिर्च आधा तोला--सब द्रव्यों को पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करें।

अपथ्य--मांस, मिर्च प्रभृति उष्ण पदार्थों से परहेज करें।

पथ्य--शीतल शाक और दूध इत्यादि सेवन करें।

२--तसाक़ुत शार

नाम--(अ०) तसाक़ुतुश्शार, इन्तिशारुश्शार, सलअ ; (उ०) बाल गिरना, बालझड़, चंदला, चँदिया पर के बाल उड़ जाना ; (सं०) इन्द्रलुप्त, खालित्य, (मा. नि.) रुज्या (सु०) रूह्या (मा. नि.) रूढचा (अं० हृ०) चाच; (अं०) एलोपेशिया (Alopecia), बाल्डनेस (Baldness)।

वर्णन--इस रोग में कभी थोड़े और कभी सारे शिर के बाल गिर जाते हैं।

हेतु और लक्षण--भोजन की कमी, स्रोतोविस्फार, रूक्षता एवं सांद्र द्रव आदि इस रोग के हेतु होते हैं। इन्तिशारुश्शार में समस्त शिर के बाल गिरने आरंभ हो जाते हैं। सलअ में केवल चँदिया के बाल गिरते हैं। पर इन उभय दशाओं में शिर की त्वचा विकृत नहीं होती। वृद्धावस्था में हुआ सलअ रोग असाध्य है।

चिकित्सा--यदि आहार की अल्पता से यह रोग हो तो उत्तम पौष्टिक आहार सेवन करायें, स्नान करायें और शिर के ऊपर रोगन बनफ्शा का अभ्यंग करायें। स्रोतोविस्फार जन्य रोग में संग्राही ओषधियाँ, जैसे काबुली हड़, हरा माजू, अकाकिया आदि पानी में काढ़ा करके परिषेक करायें और संग्राही तेलों (जैसे रोगन आमला) का शिरोऽभ्यङ्ग करायें। रूक्षताजन्य रोग में प्रकृति का स्नेहन करें। इस प्रयोजन के लिये स्नान करायें। रोगन बाबूना का शिरोऽभ्यङ्ग करें। स्नेहाक्त एवं तर (स्निग्ध) आहार सेवन करायें। सांद्रदोषजन्य रोग में खूब स्नान करें।

पथ्यापथ्य--लघु, शीघ्रपाकी एवं बल्य आहार देवें। आलू, बैगन, कचालू, गोभी, मसूर की दाल प्रभृति आध्मानकारक एवं सौदावी आहारों से परहेज करें।

३—शैब, शैबुश्शार

नाम—(अ०) शैब, शैबुश्शार ; (उ०) बाल सफेद होना (आना), सफेद बाल ; (सं०) पलित ; (अं०) केनिशीज (Canities), होरिनेस (Hoariness) ।

वर्णन—इस रोग में दाढ़ी, मूँछ और शिर के बाल न्यूनाधिक श्वेत हो जाते हैं। यह रोग दो प्रकार का होता है। एक कालज (वृद्धावस्थाज) पलित, स्वाभाविक जरापलित (बुढ़ापे में होनेवाला पलित), दूसरा अकालज पलित वा वैकृत पलित।

हेतु—साधारणतया यह रोग पैतृक वा आनुवंशिक होता है। परंतु सामान्य दौर्बल्य विशेषकर वातिक दौर्बल्य, भय, चिंता आदि का आधिक्य तथा अन्यान्य मानसिक कष्ट भी इसके हेतु होते हैं।

लक्षण—यद्यपि यह रोग धीरे-धीरे प्रारंभ होकर कुछ वर्षोपरांत दाढ़ी, मूँछ और शिर के समस्त बाल श्वेत कर देता है, तथापि ऐसी घटनायें भी देखने में आई हैं कि थोड़े दिनों में प्रत्युत् एक ही रात्रि में सारे बाल श्वेत हो गये।

चिकित्सा सूत्र—प्रतिदिन सवेरे हड़ का एक मुरब्बा खिलायें और प्रत्येक मास में एक सप्ताह अतरीफल सगीर सेवन करें। दो मास के उपरान्त कफ का विरेचन देवें। अम्ल पदार्थ के सेवन, शिरावेध और स्त्री-समागम से परहेज करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) रोगन जैतून दश्ती का दैनिक शिरोऽभ्यङ्ग बालों को स्थिर रखता है। (२) काली हड़ ७ माशा का चीनी या मधु के साथ निरंतर सेवन से शीघ्र वृद्धावस्था आने नहीं देता। इसी प्रकार (३) काबुली हड़ एवं (४) उस्तूखूदूस का सेवन भी गुणकारी है। (५) रोगन पिस्ता या (६) रोगन कुश्त (कुष्ठ तैल) का शिरोऽभ्यङ्ग बालों की स्याही का रक्षक है। (७) सरो के फल को पानी में रगड़ कर शिर और दाढ़ी धोने अथवा इसके काढ़े से शिर धोने से बालों की स्याही (श्यामता) स्थिर रहती है।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) अतरीफल शाहतरा ७ माशा से १ तोला तक या (२) अतरीफल उस्तूखूदूस ७ माशा से १ तोला तक या (३) अतरीफल कश्नीजी ९ माशा से २ तोला तक १२ तोले अर्क गावजबान के साथ या १२ तोला अर्क सौंफ या ताजा पानी के साथ सेवन करने के समय से पूर्व (असमय) बाल श्वेत नहीं हो पाते। इसी प्रकार (४) अतरीफल सगीर १ तोला या (५) अतरीफल कबीर ७ माशा से १ तोला तक २ तोले अर्क गावजबान के साथ सेवन कराने से उक्त लाभ होता है।

सिद्ध योग—(१) माजून शबाब--काली हड़ ३ तोला, बहेड़ा २० तोला, काली मिर्च, शुद्ध गंधक प्रत्येक १ तोला, सोंठ, गुलाब के फूल, कुंदुर, बच, मण्डूर भस्म प्रत्येक ६ माशा--समस्त द्रव्यों को महीन पीसकर हड़ के मुरब्बा के शीरा में मिलाकर माजून बनायें। मात्रादि--१॥ तोला। यह माजून प्रातः सायंकाल अर्क गावजबान से खिलायें। असमय में बाल श्वेत होने नहीं देता।

(२) रोगन खिज़ाब--यह बालों को काला करता है। आम की केरी ऽ।, माजू, फौलाद का बुरादा प्रत्येक ११ माशा, खट्टा अनार ऽ।, काले तिल का तेल ऽ।।।, समस्त द्रव्यों को कूटकर तेल में मिलाकर मिट्टी के पुराने पात्र में डाल-कर चालीस दिन तक घोड़े की लीद में गाड़ रखें। तदुपरांत निकालकर तेल सुरक्षित रखें। आवश्यकता होने पर बालों पर लगायें।

(३) खिजाब हिंदी--आम की केरी २० तोला, माजू, लोहे का बुरादा, गंधक प्रत्येक ५ तोला, खट्टा अनार २० तोला, तिल का तेल ६० तोला, समस्त द्रव्यों को महीन कूटकर और तेल में मिलाकर मिट्टी के पुराने पात्र में डाल घोड़े की लीद के नीचे गाड़ रखें और चालीस दिन पीछे निकालकर व्यवहार करें।

नखरोगाधिकार (अम्राज़ुफ़्र) १७

१—तअक्कुफ़ुल् अज्फार

नाम—(अ०) तअक्कुफ़ुल् अज्फार ; (उ०) नाखुन का मोटा होना ; (सं०) नखस्थौल्य ; (अं०) ऑनिक्ऑक्सिस (Onychauxis)।

हेतु—साधारणतया यह रोग दाद, चंबल या जलनदार फुंसियों के जनक दोष के नख में असर करने और आतशक प्रभृति रोग के कारण हुआ करता है। पर क्वचित् यह रोग जन्मज (मौलूदी) भी हुआ करता है।

लक्षण—नख स्थूल (मोटे) हो जाते हैं। कभी नख का एक भाग या केवल एक नख और कभी सारे नख इस रोग के आखेट होते हैं। रुग्ण नख के रंग, आकार एव आकृति में भी अंतर आ जाता है। सुतरां नख मोटा होकर उँगली के किनारों में शोथ का कारण भी हुआ करता है।

चिकित्सा—जिस रोग के कारण हो उसकी चिकित्सा करें और नख के विकारी भाग को तीक्ष्ण चाकू या कैंची से काट डालें।

२—तशक़्क़ुल्अज्फार

नाम—(अ०) तशक़्क़ुल् अज़्फ़ार ; (उ०) नाखुन का पतला पड़ जाना ; (सं०) नखक्षय, नखतनुत्व ; (अं०) ऑनिकएट्रोफिया (Onychatrophia)।

हेतु और लक्षण—आतशक, चंबल, दाद या आघात लगना विशेष कर वातनाड़ियों पर तथा वातनाड़ियों के कतिपय रोग इस रोग के हेतु हुआ करते हैं। रुग्ण नख इतना विकृत (कोथयुक्त) एवं मृदु हो जाता है कि सरलता से चिर जाता है। इसका वर्ण सफेदी लिये प्रभाहीन हो जाता है।

चिकित्सा—जिस रोग के कारण यह व्याधि हुई हो उसका उपचार करें। नख को बहुत बढ़ने नहीं देवें जिससे वे चिरकर कष्ट का कारण होवें।

३—दाख़िस

नाम—(अ०) दाख़िस ; (उ०, हिं०) बुसहरी, बिसगाँठ, उँगलबेड़ा ; (सं०) चिप्प (क्षतरोग, उपनख, अक्षतनाम, चाक, अंगुलिवेष्टक) ; (अं०) ऑनीकिया (Onychia)।

वर्णन--दाखस यूनानी शब्द का 'धात्वर्थ नखपाक' है। इस रोग में नखमूल में सांद्र रक्त के संचित होने से शोथ उत्पन्न हो जाता है तथा उसमें अत्यंत पीड़ा होती है।

हेतु---आतशक, कण्ठमाला, चंबल, दाद, स्थानीय आघात एवं व्रण, सामान्य दौर्बल्य या जलनदार फुंसियों के उत्पादक दोष का नखों में लगकर शोथ आदि उत्पन्न करना इस रोग के हेतु हैं। अस्तु, नख की जड़ और उसके आस-पास शोथ एवं दर्द होता है। नख को दबाने से पूय निकलता है। नख उँगली से ऊँचा होकर पृथक् हो जाता है जिसके नीचे एक दुष्ट प्रकार का व्रण होता है जो फैलकर कभी उँगली के पर्व (पोर) को मृत कर देता है।

चिकित्सा---यदि यह रोग दौर्बल्य के कारण हो तो रोगी को पौष्टिक आहार और औषध देवें। यदि आतशक के कारण हो तो उसका यथोचित उपचार करें। यदि कण्ठमाला इस रोग का हेतु हो तो फौलाद के योग सेवन करायें। यदि दाद एवं चंबल आदि इसका हेतु हो तो उसका प्रतीकार करें। प्रारंभिक रोग में यदि इसबगोल सिरका में मिलाकर और बर्फ में शीतल करके रुग्ण स्थान पर बाँधे या हरा माजू सिरका में पीसकर पतला लेप करें अथवा उश्नान का जल में काढ़ा करके उसमें कई बार उँगली रखें तो प्रायः लाभ हुआ करता है। तीव्र वेदना होने पर अफीम और खुरासानी अजवायन सिरका में पीसकर पतला लेप करें। जब पक जाय तब शस्त्र से भेदन करके पूय निकाल देवें और फिर अवसादक मरहम, जैसे मरहम सफेदा आदि लगायें।

सिद्ध योग--(१) मरहम सफेदा जो व्रण-शोष-रोपण है और विसहरी के लिये लाभकारी है--सफेदा कलई, सफेद मोम प्रत्येक ७ माशा और गुलरोगन ११ माशा का यथाविधि मलहर प्रस्तुत करें।

(२) शर्बत चोबचीनी--चोबचीनी २० तोला, शीशम की लकड़ी का बुरादा, निगंद बाबरी, मुंडी प्रत्येक ७ तोला, बर्गशाहतरा, धमासा, चिरायता, लाल चंदन का बुरादा प्रत्येक २ तोला, चीनी ऽ१ सेर--समस्त द्रव्यों को रात्रि में पानी में भिगोयें। प्रातः काढ़ा करके छानकर चीनी मिलाकर शर्बत की चाशनी तैयार करें। इसमें से ३ तोला शर्बत १२ तोले अर्क मुंडी से सेवन करें। यह विसहरी, महा कुष्ठ, आतशक और अन्यान्य सौदावी रोगों में लाभकारी है।

मिश्ररोगाधिकार (अमराज मुतफर्रिकः) १८

१--फर्बही

नाम--(अ०) फर्बही, समन मुफ़्रित ; (उ०, हिं०) मुटापा, मोटापन ; (सं०) मेदस्वी, मेदो रोग ; (अं०) कार्पुलेन्सी (Carpulency), ओबेसिटी (Obesity) ।

वर्णन--इस रोग में शरीर के भीतर त्वचा के नीचे मेद की असाधारण वृद्धि हो जाती है ।

हेतु--अति खान-पान विशेष कर स्नेहाक्त (तेल, घी आदि), मधुर एवं पिष्टमय (श्वेतसारयुक्त) आहार तथा मक्खन, दूध, विशेष कर भैंस के दूध का अतिसेवन, विलासिता एवं सुख और आनन्द का जीवन व्यतीत करना, श्रम और व्यायाम न करना, प्रत्युत् आलस्य युक्त रहना इस रोग के उत्पादक हेतु हैं।

लक्षण--शरीर मेद की अधिकता से भारी एवं बेडौल और स्थूल हो जाता है। फुफ्फुसादि अंग अपने प्राकृतिक कर्म संपादन नहीं कर सकते। शरीर के भारी होने के कारण व्यायाम असंभव होता है जिससे पाचन शक्ति भी दुर्बल हो जाती है। चेहरा भुरभुराया हुआ (शोथयुक्त) हो जाता है। स्त्रियाँ अनार्तव काल में प्रायः इस रोग से आक्रान्त हो जाती हैं ।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) २।। माशा प्रति दिन नीहार मुँह लाख के सेवन, (२) २।।। माशा संदरूस के निरन्तर सेवन और (३) भोजन में कालीमिर्च के पुष्कल व्यवहार से शरीर कृश हो जाता है। राज़ी और मालिकी के कथनानुसार (४) गंदना पका कर खाने से शरीर कृश हो जाता है। (५) शरीर पर जवाखार मलने से भी उक्त कार्य होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--मूत्रक और विरेचन औषधि के द्वारा शरीर का शोधन करें। रोगी को कम खिलायें। क्षुधा के समय स्नान करायें। तिक्त एवं अम्ल पदार्थ सेवन करायें। भूमि पर शयन करने का आदेश करें। प्रति दिन पैदल भ्रमण करने और व्यायाम करने की प्रेरणा करें। और (१) अतरीफल फौलादी ५ माशा से १२ माशा तक १२ तोले अर्क गवजबान के साथ या (२) अतरीफल किम्बीली १ तोला या (३) जुवारिश कमूनी १ तोला १२ तोले के साथ सेवन करायें।

सिद्ध योग--सफ़ूफ़ मुहज़्ज़िल--अजवायन, सौंफ, सुदाब, जीरा किर्मानी प्रत्येक एक तोला, लुक मग़्सूल (धोई हुई लाख) २ तोला, मर्जञ्जोश, बूरए

अरमनी प्रत्येक ३ माशा--सबको कूट-छान कर १४ माशा की मात्रा में अर्क जीरए किर्मानी के साथ सेवन करायें और पानी के स्थान में अर्क जीरा ही पिलायें। इससे शरीर कृश हो जाता है।

पथ्यापथ्य--स्नेहाक्त (रोगनी), मधुर, पिष्टमय और तरल भोजन से यावच्छक्य परहेज करें। आलू, सेम, चीनी आदि, दूध, मक्खन, मलाई और आशदार पदार्थ कदापि सेवन न करें।

२—हुज़ाल

नाम--(अ०) हुजाल, लाग़री ; (उ०, हिं०) दुबलापन ; (सं०) कार्श्य, क्षीणता ; (अं०) इमेसिएशन (Emaciation)

हेतु--अल्पाहार, अल्प पान, अधिक परिश्रम करना, अधिक दुःख, शोक एवं चिंता, मक्खन, दूध और स्नेहाक्त पदार्थ सेवन न करना, शरीर से अधिक रक्त का क्षरण होना आदि इसके हेतु हैं।

लक्षण--शरीर हलका-फुलका एवं कृश होता है। चेहरा सूखा हुआ और हस्त-पाद दुर्बल होते हैं। दौर्बल्य एवं कार्श्य उत्पन्न हो जाता है।

चिकित्सा--जिन आहारों से एक स्थूल व्यक्ति को परहेज करना चाहिये, वे ही आहार कृश व्यक्तियों को अधिक सेवन करने चाहिये। उन आहारों का उल्लेख फर्बही (मोटापा) के प्रकरण में किया गया है। परन्तु इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि एक ही समय आवश्यकता एवं क्षुधा से अधिक भोजन कदापि न करें। क्योंकि इस प्रकार आमाशय, अन्त्र और यकृत् आदि पर व्यर्थ का बोझा पड़ जाता है तथा लाभ के स्थान में हानि होती है। ऐसे लोगों को इस बात की ओर अवश्य अधिक ध्यान देना चाहिये कि उनका आहार यथोचित प्रकार का हो और भोजन खूब चबाकर खायें, अन्यथा अन्त्र और आमाशय उसका सम्यक् पाचन नहीं कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त चित्त को प्रसन्न एवं शोक, चिन्ता आदि से मुक्त रखने का यत्न करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार--(१) गाय, (२) बकरी, (३) नील गाय, (४) भैंस और इन का दूध, (५) ताजा पनीर, (६) फीरीनी तथा (७) दूध-चावल और खाँड ये समस्त द्रव्य पृथक्-पृथक् शरीर को स्थूल बनाते—परिवृंहित करते हैं। इसी प्रकार (८) ३ माशा बूजीदान को हरीरों में मिला कर सेवन करने से भी शरीर मोटा हो जाता है। (९) अंगूर सेवन करने से भी शरीर अति शीघ्र स्थूल (मोटा) हो जाता है। परन्तु यह स्थायी नहीं होता, सत्वर विलीन हो जाता है। (१०) मीठा बादाम २।। तोला,

(११) पिस्ता १ तोला, (१२) फिंदका का मग्ज १। तोला और (१३) अखरोट की गिरी १।। तोला इन सब गिरियों को पृथक्-पृथक् चीनी के साथ सेवन करने से शरीर परिवृंहित होता है। (१४) तर या सूखा अंजीर (१५) युवा एवं मोटी मुर्गी और (१६) चकोर खाने से भी उक्त लाभ होता है। इसके अतिरिक्त (१७) बहमन सफेद ६।। माशा, (१८) सफेद चना और तरंजवीन २।। तोला तथा (१९) लोविया प्रत्येक का पृथक्-पृथक् सेवन भी शरीर को स्थूल बनाता है। (२०) मैदा और निशास्ता दोनों को दूध में पका कर कई बार खाने या (२१) हरीसा से भी उक्त कार्य होता है। (२२) मेथी अकेले या गेहूँ के आटे के साथ पकाकर निरंतर खाने से शरीर का मांस बढ़ता है। (२३) केला अकेले खाने, (२४) चीनी के साथ निरंतर तिल सेवन करने, (२५) निरन्तर बत्तख का मांस सेवन करने, (२६) बबूल का गोंद, (२७) कतीरा ४।। माशा, (२८) रैहाँ के बीज ६ माशा, (२९) भोजनोत्तर मीठे आनार के दाने चूसने या राज़ी के मतानुसार (३०) निरन्तर ३० दाने मुनक्का सेवन करने और (३१) पोस्ते का तेल भोजन के साथ सेवन करने से शरीर परिवृंहित एवं स्थूल होता है।

संसृष्ट द्रव्योपचार--(१) माजून हुजाल, (२) हलवाए गजर मग्ज सरकुंजश्कवाला और माजून गजर आदि का सेवन कार्श्य को दूर कर शरीर को परिवृंहित एवं स्थूल बनाता है।

३—इर्क़ मदनी

नाम--(अ०) इर्क़ मदनी, रिश्त: ; (उ०, हिं०) नारुवा, नहरुवा, (सं०) स्नायुक कृमिरोग ; (अं०) गिनी वर्म (Guinea worm)।

यह एक कृमि है जो मानव शरीर या अन्य प्राणि शरीर से निकलता है।

हेतु--कतिपय स्थान में यह रोग पुष्कल होता है विशेष कर ऐसे स्थानों मे जहाँ तालाब, झील या गंदे सोते आदि का पानी पीना पड़ता है और ऐसे लोगों को जो कीचड़ वा पानी में नग्न पाँव घूमते हैं यह रोग अधिक हुआ करता है। इस रोग का उत्पादक तत्व वे दूषित मल होते हैं जो सौदावी, क्षीण रक्त या विदग्ध कफ से प्राप्त होते हैं। जब ये मांस के भीतर स्रोतों में संचित हो जाते हैं तब असाधारण उष्णता उसको सम्पूरण कर देती है। पुनः विसर्जनी शक्ति छिद्र बनाकर शरीर से उसका निर्हरण कर देती है।

लक्षण--प्रारम्भ में एक दाना के सामान प्रगट होता है। तदुपरान्त वह स्थान शोथयुक्त होकर विस्फोट (आबला) का-सा स्वरूप धारण कर लेता है।

अन्ततोगत्वा उसमें छिद्र होकर एक वस्तु श्वेत एवं सूत के समान बारीक निकलती है और धीरे-धीरे निकल कर निःशेष (संपूर्णतया) निकल जाती है। यदि सम्पूर्णतया निकलने के पूर्व खण्डित हो जाय, तो रोगी को असीम यातना का सामना करना पड़ता है। सुतरां ज्वर हो जाता है और उस स्थान पर व्रणशोफ बन जाता है जिसमें दर्द एवं जलन पाई जाती है। कभी-कभी यह कृमि की भाँति त्वचा के नीचे गति करता है।

चिकित्सासूत्र—जब विस्फोट (छाला) प्रगट हो तब उसको शस्त्र-द्वारा भेदन कर कृमि के सिरे (शीर्ष) को धीरे से उठा कर मोम की बत्ती पर चिपकायें। प्रति दिन कृमि को उस पर लपेटते रहें जिसमें कृमि संपूर्ण निकल जाय। रक्त की प्रगल्भता होने पर विपरीत ओर की बासलीक या साफिन का शिरावेध करें। रुग्ण स्थान पर जोंक लगायें। आवश्यकता हो तो सौदा का विरेचन देकर या माउज्जुब्न के द्वारा उसका शोधन करें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—विस्फोट (छाले) को तोड़ने और कृमि के निर्हरण के लिये (१) तम्बाकू का पत्ता गरम करके और गुलरोगन से स्नेहावत करके रुग्ण स्थल पर रखने या (२) हींग की पुलटिस बाँधने या (३) एलुआ पानी में घिसकर लेप करने या (४) कलौंजी कूट कर और छाछ में पका कर रुग्ण स्थान पर बाँधने से कृमि अति शीघ्र निःशेष निकल जाता है। जब इन ओषधियों से कृमि निकलने लगे तब पूर्वोक्त विधि से मोम की बती पर उसे लपेट कर सम्पूर्ण निर्हरण करें।

संसृष्ट द्रव्योपचार—(१) मरह अफ्यून या (२) मरहम नारुवा या (३) तिला नारुवा रुग्ण स्थान पर लगायें और (४) हब्ब नारुवा एक-एक गोली सवेरे-शाम या (५) अतरीफल मदनी १०॥ माशा खिलायें।
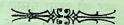
परिशिष्ट—१

ज्वराधिकार (हुम्मयात)

सामान्य विवरण

यूनानी अन्वेषकों का यह मत है कि मनुष्य-शरीर में सर्वाधिक उत्तम एवं महत्त्व का अङ्ग हृदय है। उनका यह कथन है कि उसकी प्रत्येक विकृति तुरन्त सम्पूर्ण शरीर में प्रभाव करती है। क्योंकि इस उत्तम एवं श्रेष्ठ अंग से अनेक चेष्टावती वाहिनियाँ निकलती हैं जो समस्त अंग-प्रत्यङ्ग में जाती हैं। यूनानी वैद्य (हकीम) इन को अपनी परिभाषा में शराईन (आयुर्वेद में धमनियाँ) नाम से अभिहित करते हैं। शरीर में कोई भी छोटे-से छोटा अंग ऐसा नहीं जिसमें इनका अस्तित्व न हो; क्योंकि मानवशरीर को जीवित रखने और गलने-सड़ने (कोथ) एवं अन्यान्य दुष्टियों से बचानेवाली जीवनीय शक्ति (कुव्वते हैवानी) जिस का उद्गम हृदय है, इन्हीं के द्वारा शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्गों में पहुँचती है। सुतरां उक्त अवस्थाओं में अनिवार्यतः हृदय की विप्रकृति से समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग को प्रभावित होना चाहिये। अस्तु, जब उसमें किसी कारणवश ऊष्माधिक्य हो जाता है तब ऊष्मा के समस्त अङ्ग-प्रत्यङ्ग में प्रसारित हो जाने से वे उष्ण होकर अपनी स्वाभाविक क्रिया से शून्य हो जाते हैं। यही वह अवस्था है जिसे हम ज्वर संज्ञा से अभिधानित करते हैं।

हृद्गत ऊष्मा के विविध स्वरूप होते हैं। कभी शरीर में केवल इतनी ऊष्मा प्रादुर्भूत होती हैं जिससे केवल ओज (रूह) में ऊष्मा प्रादुर्भूत हो जाती है और केवल उसी की ऊष्मा से हृदय उष्ण होकर ज्वर प्रगट हो जाता है। यूनानी वैद्य इस प्रकार के ज्वर को हुम्मा यौम* कहते हैं; क्योंकि यह ज्वर साधारणतः एक दिन-रात और किसी-किसी दशा में क्वचित् तीन दिन से अधिक नहीं रहा करता। अतएव इसके उपचार की आवश्यकता नहीं। परंतु बहुधा यह किसी वेदना, कुपचन, अनिद्रा, शोक एवं क्रोध आदि के उपद्रव स्वरूप हुआ करता है। अतएव इनके निदान-कारणों की ओर ध्यान देने से यह दूर हो जाता है। कभी पहले पहल ऊष्मा अभिवर्धित होकर दोषों को उष्णीभूत कर देती है। इस कारण हृयद उष्ण होकर ज्वर हो जाता है। ज्वर का

---

* पाश्चात्य वैद्यक में इसे फेब्रिक्युला फीवर (Febricula fever) और आयुर्वेद में आह्निक वा एकाहिक ज्वर कहते हैं।

यह प्रकार अधिक सामान्य है। बहुधा ऋतु एवं मलेरिया जैसे ज्वरों का संबंध दोषों ही से होता है। शरीर में दोष (अख्लात) चार प्रकार के पाये जाते हैं। अतएव यह ज्वर भी अनिवार्यतः चार प्रकार का होता है। आगे इनमें से प्रत्येक का लक्षण एवं चिकित्सा सहित वर्णन किया जायगा।

कभी यह ऊष्मा शरीरावयव में अपना प्रभाव करती है और हृदय के द्वारा संपूर्ण शरीर में व्यापमान होकर ज्वर का कारण होती है। इस प्रकार के ज्वर को हुम्मा दिक़[1] कहा जाता है। इस प्रकार का ज्वर अधिकतया ज्वरों की नियमित चिकित्सा न होने और शरीरस्थ द्रव (आक्लेद) अल्प हो जाने के पश्चात् हुआ करता है और इसके परिणाम प्रायः भयंकर होते हैं। अब यहाँ ज्वर के केवल कतिपय उन आवश्यक भेदों का विवरण किया जायगा, जो प्रायशः हुआ करते हैं। हुम्मा यौम (एकाहिक ज्वर) के यूनानी वैद्यों ने यद्यपि अनेक भेद लिखे हैं, तथापि विस्तार भय से उनका यहाँ परित्याग किया जाता है। उपरिलिखितानुसार ज्वर के निदान की ओर ध्यान देना तथा उसका परिवर्जन ही पर्याप्त होता है। आधुनिक अन्वेषणानुसार अधुना शरीरोष्मा या ज्वर के ज्ञान के लिये तापमापक यन्त्र (आलए मिक्यासुल् हरारत) या थर्मामीटर का सामान्य प्रचलन हो गया है और वस्तुतः इससे ज्वरावस्था का यथावत् अनुमान हो जाता है। अतएव तापमापक से शरीरोष्मा मालूम करते रहना और चिकित्सा की ओर ध्यान देना अतीव लाभकारी होता है।

हुम्मा यौम

नाम—(अ०) हुम्मा यौम; (सं०) एकाहिक ज्वर, आह्निक ज्वर; (अं०) फेब्रिक्युला (Febricula)।

वर्णन—एक प्रकार का सूक्ष्म ज्वर जो (अरवाह सलासा) ओजत्रय अर्थात् रूह तबई (पोषणौज), रूह हैवानी (प्राणौज) और रूह नफ्सानी (मनोज) में से किसी एक के साथ प्रकृत शरीरोष्मा के संबंध से होता है। इस ज्वर की ऊष्मा रूह (ओज) में होती है और रूह एक सूक्ष्मतत्त्व (जौहर) है। अस्तु, यदि यह ऊष्मा दोषों (अख्लात) या अंग-प्रत्यंगों में स्थानान्तरित न हो जाय, तो शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। प्रायः यह देखा गया है कि एक दिन-रात से यह ज्वर आगे नहीं डँकता। इसी कारण इस ज्वर को हुम्मा यौम (तपे यकरोजा) कहते हैं। इस प्रकार का ज्वर साधारणतः आगन्तुक कारण (अस्बाबे खारिजा),

---

१. आयुर्वेद में इसे 'राजयक्ष्मा' 'क्षय' आदि कहते हैं। विशेष विवरण के लिये पृ० २२५ देखें।

जैसे—दुःख, चिन्ता, परेशानी, दौड़-धूप, आयास आदि से प्रगट हुआ करता है। कभी अजीर्ण और पचन विकार के कारण और कभी वेदना के कारण और त्वगत फोड़े-फुंसी के कारण हो जाता है जो एक दिन रहकर उतर जाता है।

हेतु—इस ज्वर का मर्यादा साधारणतया एक दिन हुआ करती है। इस जाति के ज्वर में ओजत्रय (रूह, हैवानी रूह तबई और रूह नफ्सानी) को सर्व-प्रथम अप्राकृत ऊष्मा उष्ण करती है। यदि ऊष्मा का संबंध रूह तबई से हो तो उसका हेतु पचनविकार, उष्ण आहारौषध का सेवन हैं। यदि रूह हैवानी से हो तो उसके हेतु शोक, प्रसन्नता और स्नानागारकी ऊष्मा प्रभृति हैं; इसी प्रकार यदि वह रूह नफ्सानी से हो तो उसके हेतु मानसिक श्रम, चिंता और अनिद्रा आदि हैं। उक्त अवस्था में इसको विभिन्न संबंधों के अनुसार गजबी (भयज्वर), जूई (क्षुधाज्वर) और अतशी (तृष्णा ज्वर) प्रभृति कई एक संज्ञाओं से अभिधानित किया जाता है।

निदान के लिये प्रथम उपर्युक्त हेतुओं की विद्यमानता आवश्यकीय है।

लक्षण—हुम्मा यौम (एकाहिक-ज्वर) का सामासिक लक्षण यह है कि इसकी उष्णता एक समान और अकष्टदायनी (दाहक नहीं) होती है; नाड़ी और मूत्र में किंचिन्मात्र परिवर्तन नहीं होता तथा बहुधा इस प्रकार का ज्वर एक-दो दिन रहकर उतर जाता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—(१) पोस्ता का दाना ६ माशा, (२) काहू के बीज ६ माशा इनका शीरा पीने या लेप की भाँति लगाने से नींद आती है तथा मानसिक एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम नफ्सानी) में लाभ होता है। (३) आबजन में बैठना, मनोरंजक उपाख्यान या कथा श्रवण करना भयजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम गजबी) में लाभकारी है। इसी प्रकार (४) यवमंड (आश जौ) और अन्यान्य उपयुक्त आहार सेवन से क्षुधाजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम जूई) में उपकार होता है। (५) शीतल फलों के रस और शीतल जल-सेवन से तृष्णाजन्य एकाहिक ज्वर (हुम्मा यौम अतशी) नष्ट हो जाता है।

हुम्मा खिल्ती (उफूनती बुखार)

नाम—(अ०) हुम्मा खिल्ती; (उर्दू) उफूनती बुखार; (सं०) दोषज ज्वर; (अं०) सेप्टिक फीवर (Septic Fever)।

तपे खिल्ती वह ज्वर है जो अख्लात (दोषों) की दुष्टि (उफूनत) या उनके प्रकोप(जोश)से उत्पन्न होता है। इसके विपरीत हुम्मा यौम(एकाहिक ज्वर)

और हुम्मादिक (राजयक्ष्मा) में दोषों की दुष्टि वा प्रकोप अनिवार्य नहीं है अथवा दोषदुष्टि से इनका कोई संबंध नहीं होता।

यूनानी वैद्यक के मत से अख्लात (दोष) चार हैं। अतएव हुम्मा खिल्ती (दोषज ज्वर) भी चार प्रकार के होते हैं। पुनश्च इनके दो उपभेद होते हैं—(१) हुम्मा खिल्ती बसीत (साधारण या स्वतंत्र अथवा असंसृष्ट दोषज ज्वर) और (२) हुम्मा खिल्ती मुरक्कब (संसृष्ट दोषज ज्वर)।

हुम्मा खिल्ती बसीत—अर्थात् तपे खिल्ती मुफरदा वह ज्वर है जो केवल एक दोष के प्रकोप एवं दुष्टि से प्रगट हो। इसके ये दो स्वरूप हैं—(१) दोष प्रकुपित एवं उष्ण होकर ज्वर उत्पन्न करे। यह दशा विशेषतः रक्त के साथ संबंधित है; क्योंकि वह स्वयं उष्ण है तथा अन्यान्य दोषों की अपेक्षया शरीर में प्रचुरता से पाया जाता है। (२) कोई दोष दूषित होकर ज्वर उत्पन्न करे और यह शेष अन्य समस्त दोषों में संभव है। सुतरां यदि रक्त दुष्टि से यह ज्वर हो तो उसे हुम्मा दम्विया या मुत्बिका कहते हैं। यदि पित्तविकृति से हो तो उसको हुम्मा सफराविया कहते हैं। इसी प्रकार यदि श्लेष्म दुष्टि से यह ज्वर हो तो उसे हुम्मा बल्गमिया और सौदाविकृति से हो तो उसको हुम्मा सौदावी कहते हैं। अस्तु, यदि इन दोषों की दुष्टि वाहिनियों के भीतर हो तो ज्वर निरंतर (अविसर्गी—लाजिम) रहा करता है और इसको हुम्मालाजिमा (संतत वा अविसर्गी ज्वर) कहते है। यदि वाहिनियों से बाहर, जैसे—आमाशय, अन्त्र, मस्तिष्क आदि म दोष की दुष्टि हो तो उसको हुम्मा दाइरा या हुम्मा नाइबा यानी बारीका बुखार (नियतकालिक ज्वर) कहते हैं।

वक्तव्य—उपर्युक्त विभागानुसार **हुम्मा खिल्ती बसीत** (असंसृष्ट दोषज ज्वर) के निम्नलिखित भेदोपभेद होते हैं—(क) **हुम्मयात दम्विया** (रक्त ज्वर)। इसके ये दो उपभेद हैं—(१) सूनूखुस अर्थात् रक्त प्रकोपज ज्वर और (२) हुम्मा मुतिबका अर्थात् शोणित ज्वर।

(ख) **हुम्मयात सफराविया** (पित्तज ज्वर)। इसके भी ये दो उपभेद हैं—(१) गिब्ब दाइरा या तिजारी या तैया (तृतीयक ज्वर), जो बीच में एक दिन का अंतर देकर आता है जिस में पित्त की दुष्टि वाहिनी के बाहर होती है। (२) गिब्ब लाजिमा अर्थात् लाजमी सफरावी बुखार जिसमें पित्त की दुष्टि वाहिनी के भीतर होती है।

(ग) **हुम्मा बल्गमिया**। इसके भी दो उपभेद होते हैं—(१) यदि कफ की दुष्टि वाहिनी के बाहर हो तो उसे परिभाषा में **नाइबा** कहते हैं जो प्रतिदिन चढ़ता और उतरता है। (२) यदि यह दुष्टि वाहिनी के भीतर हो तो उसे **लस्का** कहते हैं।

(घ) हुम्मयात सौदाविया। इसके भी ये दो उपभेद होते हैं--(१) यदि सौदा की दुष्टि वाहिनी के बाहर हो तो उसे परिभाषा में 'रिबा दाइरा' (चौथिया बुखार, चातुर्थिक ज्वर) कहते हैं। (२) यदि वह वाहिनी के भीतर हो तो उसे 'रिबा लाजिमा' कहते हैं।

हुम्मा मुरक्कबा अर्थात् तपे मुरक्कबा वह ज्वर है जो एकाधिक (दो या तीन) दोषों की दुष्टि वा विकृति से हो अथवा अदोषज ज्वर (तप सादा) दोषज ज्वर (तप खिल्ती) के साथ संसृष्ट हो जाय।

वक्तव्य--आधुनिक अन्वेषणों से ज्ञात हुआ है कि नियतकालिक ज्वर (हुम्मा दाइरा) विशेषतः दैनिक (रोजाना), तृतीयक या चतुर्थक ज्वर इत्यादि मलेरिया ज्वर (मलेरियल फीवर) होते हैं। अस्तु, रोजाना नौबती बुखार को अरबी में **हुम्मा नाइबा** या **हुम्मा मोवाजिबा** और पाश्चात्य वैद्यक में कोटीडियन फीवर (Quotidian Fever)[1] तथा तिजारी बुखार को अरबी में गिब्ब दाइरा और पाश्चात्य वैद्यक में टर्शियन फीवर (Tertian Fever)[2] तथा चौथिया बुखार को अरबी में रिबा दाइरा और पाश्चात्य वैद्यक में क्वार्टन फीवर (Quartan Fever)[3] कहते हैं। इनमें से प्रत्येक का वर्णन यथास्थान किया जायगा।

हुम्मा दम्विया अर्थात् तपे खूनी वा खूनी बुखार (रक्तज्वर)। इसके ये दो उपभेद हैं--(१) रक्त प्रकोपज ज्वर, इसको यूनानी वैद्यक में 'सूनूखुस' और पाश्चात्य वैद्यक में साइनॉखस (Synochus) कहते हैं। (२) रक्तविकारज ज्वर, इसको यूनानी वैद्यक में 'हुम्मा मुत्बिका' और पाश्चात्य वैद्यक में टायफस (Typhus) और टायफॉयड फीवर (Typhoid fever) कहते हैं।

टि०--सूनूखुस वास्तव में यूनानी भाषा का शब्द है जो यूनानी वैद्यक में तत्सम रूप में और पाश्चात्य वैद्यक में किंचित् परिवर्तित रूप में प्रयुक्त होता है।

हुम्मा मुत्बिका और हुम्मा मुहरिका का अंतर

प्रथमोक्त शोणित ज्वर है जो रक्त विकार से उत्पन्न होता है तथा उसमें रक्तोल्वणता वा रक्त-प्रकोप के लक्षण जैसे--मुखमण्डल एवं नेत्र का लाल होना, निरंतर एक समान ज्वर चढ़ा रहना तथा शरीरगत गौरव अनुभूत होना प्रधान

---

१. आयुर्वेद में इसको 'अन्येद्युष्क ज्वर' कहते हैं।
२. आयुर्वेद में इसको 'तृतीयक ज्वर' कहते हैं।
३. आयुर्वेद में इसको 'चातुर्थिक ज्वर' कहते हैं।

लक्षण होते हैं। विद्वद्वर कर्शी के मतानुसार यह ज्वर बरसाम (महाप्राचीरा-शोथ--(Diaphragmitis), मुहरिका, हुसबा व खसरा (रोमान्तिका) और जुदरी (चेचक, शीतला) इत्यादि में परिणत भी हो जाता है। उत्तरोक्त लाजिमी सफरावी बोखार (संतत पित्तज ज्वर) है जिसका दोष हृदय एवं यकृत् के समीपवर्ती वाहिनियों में दूषित हो जाता है। इसमें तीव्र ऊष्मा होती है। तीव्र पिपासा लगती है, जिह्वाशोष होता तथा व्यग्रता एवं व्याकुलता होती और पित्त के अन्यान्य लक्षण प्रगट होते हैं।

सूनूखुश वा मुत्बिका

नाम--(अ०) सूनूखुस, मुत्बिका ; (उर्दू) खूनी बुखार ; (सं०) रक्तज्वर, शोणित ज्वर ; (अं०) साइनॉखस (Synochus)।

वर्णन--जब चतुर्दोषों में से रक्त दोष के भीतर विकार उत्पन्न होकर ज्वर होता है, तब उसको हुम्मा दम्वी वा दम्वियय: (फसाद खून का बुखार–शोणित ज्वर) या हुम्मा मुत्बिका और सूनूखुस कहते हैं। सूनूखुस में रक्तोल्वणता वा रक्तप्रकोप के लक्षण पाये जाते हैं। इसमें न तो ज्वर उतरता है और न स्वेद आता है। मुत्बिका में सूनूखुस की अपेक्षया अधिक ज्वर होता है तथा उसमें दुष्टि (उफूनत) होती है।

हेतु--कभी पुष्टिकर आहार जैसे, मांस-अण्डे आदि पुष्कल सेवन करने से रक्त प्रचुर प्रमाण में उत्पन्न हो जाता है, विशेषतः युवा पुरुषों में और आतप वा अग्नि के सामने देर तक काम करने के कारण रक्त में अधिक उष्णता उत्पन्न होकर ज्वर उत्पन्न हो जाता है।

लक्षण--मुख की मधुरास्वादता, अङ्गमर्द और जृम्भा का प्राबल्य होता, चेहरे की वाहिनियाँ फूली हुई होतीं, अंग गौरव प्रतीत होता, नेत्र एवं चेहरे लाल होते, ज्वर निरंतर बना रहता, क्षुधा कम हो जाती, मूत्र किंचित् गाढ़ा और नाड़ी स्थूल (अजीम) होती है।

चिकित्सा सूत्र--यदि कोई वाधक (निषेधक) कारण न हो तथा रोगी बलवान् हो तो इसका सर्वोत्तम उपचार रक्तमोक्षण है। पर यदि वाधक कारण इसकी आज्ञा नहीं देवे तो द्रव्य भूत वा औषध द्वारा उपचार करें। सिरावेधन से पूर्व किसी अनुभवी हकीम से परामर्श करें और कुशल शल्य चिकित्सक से रक्त-मोक्षण करायें। जब इस ज्वर को तीन दिन हो जाए तब रक्तमोक्षण उचित नहीं, पर यदि रक्तविस्रावण अपेक्षित हो तो दोनों स्कंधों (शानों) के मध्य प्रच्छान (पछने) लगवायें।

इस प्रकार के ज्वर का दारुणमोक्ष (बोहरान) साधारणतया सातवें दिन हुआ करता है। इसके उपरांत भी दोष शेष रहे तो हरी कासनी का रस फाड़कर ४ तोले की मात्रा में लेकर उसमें २ तोला सादा सिकंजबीन मिलाकर कुछ दिन पिलायें। परंतु कास होने पर अम्ल सेवन उचित नहीं है। इसमें बिहीदाना या इसबगोल का लुआब (पिच्छा) पिलाना चाहिए और शर्बत बनफ्शा चटाना चाहिये। इस रोग में अम्ल के स्थान में कोई ऐसा पदार्थ जो ज्वर में लाभ पहुँचाये और कास में अहितकर न हो, उत्कृष्टतर होता है। इस प्रकार के ज्वर में उन्नाब का फाण्ट वा क्वाथ बनाकर बारंबार निरंतर सेवन करना अतीव गुणकारी है, विशेषकर उस दशा में जबकि दोष (माद्दा) का सांद्रीकरण अभीष्ट हो। क्योंकि उन्नाब दोष वा धातु को सांद्र वा प्रगाढ़ीभूत करता है। रक्त-प्रसादन के लिये केवल इसबगोल पर्याप्त है। आलूबोखारे का पानी भी गुण-कारक है तथा कास में अधिक अहितकर नहीं है।

असंसृष्टद्रव्योपचार--हुम्मा मुत्बिका में (१) १० तोला खट्टे अनार का रस या शर्बत ४ तोला पीने से उपकार होता है। (२) कच्चे खट्टे अंगूर का शर्बत २ तोला और रुब्ब १ तोला भी इस ज्वर को नष्ट करता है। (३) शर्बत उन्नाब ३ तोला और १८ दाने उन्नाब का फांट पीने तथा (४) आलूबोखारा खाने और उसके १८ दाने का फाण्ट चीनी मिला कर पीने से मुत्बिका ज्वर नष्ट होता है। यदि मलावरोध हो तो (५) ६ दाना आलूबोखारा और १॥ तोला (६) इमली फाण्ट चीनी मिलाकर पीने से मलावरोध दूर होता और प्रकृति-मार्दव होता है। इस ज्वर में (७) यवमंड सर्वोत्तम (पथ्यतम) आहार है; क्योंकि इससे सर्दी, तरी और स्रोतोविशोधन के अतिरिक्त अन्यान्य शीतल पदार्थों की भाँति दोष सांद्रीभूत नहीं होते। इस प्रकार के शोणित ज्वर की दशा में (८) छिली हुई मसूर की दाल का सिरका और मीठे बादाम के तेल के साथ पकाकर खाना अनुकूल आहार है। (९) खट्टे अनार के रस में चीनी मिलाकर उसमें रोटी भिगोकर खाने से मुत्बिका ज्वर के रोगियों को लाभ होता है। इस प्रकार के रोगियों को शीतल जल का सेवन लाभकारक है।

जालीनूस और बुकरात के आदेशानुसार यदि इस ज्वर के रोगी को सिरावेध अतिसरण वा किसी पीड़ा के शमनार्थ टकोर (सेक) आदि की अपेक्षा हो तो उक्त क्रियाओं से पूर्व यवमंड (आश जौ) का सेवन कदापि नहीं करना चाहिये।

संसृष्टद्रव्योपचार--जब ज्वर शांत हो जाय तब बलवर्धन के लिये प्रातः काल दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली ५ माशा खिलाकर ऊपर से मिलित अर्क कासनी ६ तोला, अर्क गर्जर ६ तोला और शर्बत नीलूफर २ तोला पिलाने से और सायंकाल १ तोला सेब का मुरब्बा १ नग रजत पत्र में लपेट कर १२ तोला

अर्क गावजबान के साथ सेवन करने से लाभ होता है। यदि मस्तिष्क दुर्बल हो तो सायंकाल ५ माशा खमीरा गावजबान जवाहरवाला में २ चावल कुश्ता मर्जां जवाहरवाला मिलाकर खिलाने से उपकार होता है।

हुम्मा सफरावी

नाम--(अ०) हुम्मा सफरावी (सफराविय्यः); (उ०) तप सफरावी, सफरावी बुखार; (सं०) पित्तज ज्वर, पैत्तिक ज्वर; (अं०) बिलियस फीवर (Bilious fever)।

वक्तव्य—तप सफ़रावी मुफ़रद व मुरक्कब (संसृष्टासंसृष्ट पित्तज ज्वर)– यदि पित्त वाहिनियों के भीतर दूषित हो तो ज्वर लाजमी (अविसर्गी) होता है और एक दिन के बाद तीव्र होता है। इसको **गिब्ब लाजिम** कहते हैं। यदि पित्त आमाशय के आसपास की वाहिनियों (स्रोतों) में दूषित हो तो उपद्रव वा लक्षण अधिक उग्र होंगे। इसको **तप मोहरिका** कहते हैं। यदि पित्त स्रोतों (वाहिनियों) के बाहर दूषित हो तो उसे **गिब्ब दाइरा** संज्ञा से अभिधानित करते हैं। पुनश्च जब दोष शुद्ध पित्त हो तो **गिब्ब खालिस** और जबकि पित्त कफ के साथ इस प्रकार संसृष्ट हो कि दोनों में भेद न किया जा सके तब उसे **गिब्ब गैर खालिस** कहते हैं। पर यदि संगठन सुदृढ़ न हो तो उसे **शतरुल् गिब्ब** कहते हैं।

गिब्ब खालिसा दाइरा का यह स्वभाव है, कि एक दिन ज्वर आता है और दिन नहीं आता। परंतु जब दो गिब्ब एकत्र हो जाते हैं तब उस समय ज्वर प्रतिदिन आता है। गिब्ब गैरखालिसा दाइरा का यह स्वभाव है कि एक दिन ज्वर तीव्र होता है और दूसरे दिन किंचित् परिवर्तित। परंतु शतरुल्गिब्ब जिसके उभय दोष स्रोतों के बाहर दूषित हों उसका स्वभाव यह है कि एक दिन कफ ज्वर के लक्षण प्रगट होते हैं और दूसरे दिन कफ और पित्त दोनों के। कारण, कफज्वर की बारी प्रतिदिन होती है और पित्तज्वर की एक दिन बीच में छोड़कर। यदि शतरुल्गिब्ब के उभय दोष (कफ और पित्त) स्रोतों के भीतर दुष्टभूत हों तो उभय दोषों के लक्षण प्रगट होना अनिवार्य होगा तथा एक दिन बीच में अतिरिक्त प्रगट होगा। यदि पित्त स्रोतों के भीतर और कफ-स्रोतों के बाहर दुष्ट भूत हो तो पित्तज्वर अनिवार्य (लाजमी) होगा तथा कफज्वर भी प्रतिदिन आयेगा। उक्त अवस्था में भी एक दिन बीच में छोड़कर ज्वर का तीव्र होना अनिवार्य है। इन तीनों भेदों को शतरुल्गिब्ब गैर खालिसा कहते हैं। यदि पित्त स्रोतों (रगों) के बाहर और कफ स्रोतों के भीतर दूषित हो तो कफज्वर अनिवार्य होगा

और पित्त ज्वर एक दिन के बाद आयेगा और उस दिन उपद्रव वा लक्षण अति तीव्र होंगे। इस भेद को शतरुल्‌गिब्ब खालिस कहते हैं। यदि चिकित्सक वा रोगी से कोई गड़बड़ी न हो तो गिब्ब खालिस लाजिम एक सप्ताह और गिब्ब खालिस दाइरा दो सप्ताह से अधिक काल तक नहीं रहते।

हेतु—कभी पित्त पुष्कल प्रमाण में उत्पन्न होता और दूषित होकर इस ज्वर का हेतुभूत होता है। कभी उष्ण पदार्थों के प्रचुर सेवन और ग्रीष्म ऋतु में आतप (धूप) आदि से सावधान न रहने से शरीर में पित्त प्रचुर उत्पन्न होकर दूषित हो जाता है तथा उक्त ज्वरोत्पत्ति का कारणीभूत होता है। कभी पित्त कफ में मिलकर दूषित होता और ज्वर उत्पन्न करता है।

लक्षण—मुख का स्वाद सर्वथा कटु (कड़वा) प्रतीत होता है। जिह्वा शुष्क होती और उस पर काँटे पड़ जाते हैं। तृष्णाधिक्य होता। यदि शुद्ध पित्त ही पित्त हो तो तीसरे दिन ज्वर की बारी होती है और ज्वर शीतपूर्वक चढ़ता है। व्यग्रता और व्याकुलता अधिक होती है। कभी कभी वमन होता है जिसमें पीले रंग का पित्त सम्मिलित होता है।

चिकित्सा—ऐसी दशा में १२ तोला अर्क शाहतरा में ३—३ माशा छिले हुये काहू के बीज और मीठे कद्दू के बीजों का मग्ज तथा ५ दाना उन्नाब का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर प्रातःकाल पिलायें। यदि तीन-चार बारियाँ बीत जाएँ तो उक्त योग में ७ माशे खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलायें और सायंकाल ६—६ तोला अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क में २ माशा जरिश्क और ५ दाना आलूबोखारा का शीरा निकाल कर २ तोला शर्बत संदल या ४ तोला शर्बत सेब मिलाकर पिलायें। यदि शिर में पीड़ा हो तो सफेद चंदन अर्क गुलाब में घिसकर मस्तक पर लेप करें। शोष और तृष्णा की अधिकता की दशा में इसबगोल पोटली में बांधकर अर्क गुलाब में तर करके उसका लुआब चूसते रहें और थोड़ी देर बाद थूक दिया करें। यदि इससे लाभ न हो तो यह नुसखा पिलायें—गुलबनफशा ७ माशा, गुलाब के फूल ७ माशा, गुलनीलूफर ७ माशा, गुल खतमी ७ माशा, खीरा-ककड़ी के बीज ७ माशा, आलूबोखारा ५ दाना रात्रि में गरम पानी में भिगोकर प्रातः मल-छानकर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलायें और छठवें दिन उसमें शीरखिश्त, तुरंजबीन, शकर सुर्ख प्रत्येक ४ तोला, सनाय मक्की ७ माशा की योजना पर विरेचन करायें और अगले दिन तबरीद का योग सेवन करायें। इसी प्रकार बीच-बीच में अवकाश देकर यथा-वश्यक तीन विरेचन देवें। विरेचन के दिन १० बजे तक यदि विरेक न आवें तो सहायतार्थ १२ तोला अर्क गावजबान में ४ तोला इमली मल-छानकर ४-४ तोला शर्बत दीनार और शर्बत वर्द मुकर्रर मिलाकर पिलायें।

विरेचनोपरांत यदि कुछ संताप अवशेष रह जाय तो प्रातःकाल ५ माशा कुर्स तबाशीर खिलाकर ऊपर से ५ तोला हरी कासनी के पत्तों का स्वरस फाड़कर ४ तोला शर्बत बजूरी मिलाकर पिला दिया करें और बल वर्धनार्थ मुफर्रेह बारिद ५ माशा या खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाबवाला ५ माशा खिला दिया करें।

पथ्य—तर और शीतल पदार्थ, कद्दू, पालक, तुरई, कुलफा, मूँग की दाल, खियारैन (खीरा-ककड़ी) की खीर, साबूदाना, अंगूर, सेब, नासपाती, संतरा, खश्का, बिस्कुट, नीबू का सोडावाटर, हरे धनिये की चटनी और मूँग की दाल से चपाती देवें।

अपथ्य—समस्त उष्ण पदार्थों से तथा मांस, लाल मिर्च, गुड़, तेल इत्यादि के सेवन से बचें। दूध, अंडे, खजूर, आम, आलू, अरवी, उड़द की दाल तथा चने की दाल आदि का सेवन निषिद्ध है।

वक्तव्य—यदि आवेग की दशा में मस्तिष्क की ओर पित्त के चढ़ने से प्रलाप आदि तथा सान्निपातिक अवस्था (सरसाम की कैफिय्यत) उत्पन्न हो जाय तो नीलूफर का फूल, गुलबनफ्शा, खतमी पुष्प और गेहूँ की भूसी प्रत्येक १ तोला, सेंधानमक ६ माशा जल में उबालकर इससे पाशोया (पादस्नान) करें।

मोहरिका बुखार

नाम—(अ०) मोहरिका सफराविया, हुम्मा मोहरिका ; (उ०) मोहरिका बुखार, तप मोहरिका ; (अं०) बिलियस रेमिटॉन्ट फीवर Bilious remittant fever, आर्डेंट कन्टिन्यूड फीवर (Ardant continued fever)।

वर्णन—इस प्रकार के ज्वर में उष्णता की तीव्रता एवं दाह से मानो शरीर जलता है। अतएव इसे 'मोहरिका' कहते हैं।

हेतु—हृदय, यकृत् और आमाशय के समीपवर्ती स्रोतों में पित्त दूषित होकर इस ज्वर का कारण होता है।

लक्षण—इस ज्वर में रोग की अधिक तीव्रता (वा प्रभाव), हृदय, यकृत् आमाशय और प्लीहा आदि अंगों के ऊपर होता है। अतएव हृदय विचलित होता है। व्याकुलता एवं परेशानी होती है। यकृत् शोथयुक्त हो जाता है। हरे, पीले और काले रंग का वमन एवं मलोत्सर्ग होता है। उदरशूल और कामला होता है। जिह्वा शुष्क होती, तीव्र तृष्णा लगती, जी मिचलाता और अति तीव्र ज्वर होता है।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—मोहरिका सफरावी का उपक्रम भी पित्तज ज्वर (सफरावी बुखार) के प्रकरण में लिखे अनुसार ही हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार--विरेचन और शीतोपयोग (तबरीद) के पश्चात् (१) कुर्स तबाशीर काफूरी ३ माशा या (२) कुर्स तबाशीर काफूरी लूलुवी ३ माशा १२ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करायें और (३) सफूफ हिन्दी २-३ माशा की मात्रा में २ तोला नीलूफर के साथ सेवन कराने से भी इस प्रकार के ज्वर में उपकार होता है। इसी प्रकार (४) कुर्स सरतान काफूरी ७ माशा या (५) कुर्स काफूरी लूलुवी ४ माशा या (६) कुर्सकाफूर ३ माशा १२ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करने से यह ज्वर नष्ट होता है।

बलगमी बुखार

नाम--(अ०) हुम्मा बलगमी; (उ०) बलग़म का बुखार, बलगमी बुखार; (सं०) कफ ज्वर।

यह ज्वर प्रायः बालक, स्त्री और वृद्धों को हुआ करता है। युवावस्था में प्रचुर रक्त उत्पन्न होता है। अतएव इस प्रकार का ज्वर यौवनकाल में क्वचित् ही हुआ करता है।

वक्तव्य--यदि इसका जनक दोष स्रोतों के भीतर दूषित हो तो इसको यूनानी वैद्यक की परिभाषा में 'लस्का' और पाश्चात्य वैद्यक में 'ऐस्थेनिक फीवर' कहते हैं। पर यदि यह दोष क्षारीय कफ हो तथा हृदय एवं आमाशय समीपवर्ती स्रोतों में दूषित हो तो उसको भी 'तप मोहरिका' कहते हैं। कफ और पित्त के विशिष्ट लक्षणों से मोहिरिका बलगमी और मोहरिका सफरावी के लक्षणों में भेद कर सकते हैं।

यदि हुम्मा बलगमी (कफ ज्वर) का दोष स्रोतों के बाहर दूषित हो तो उसको हुम्मा नाइबा और हुम्मामुवाज़िबा कहते हैं। हुम्मा लस्का संतत वा अविसर्गी (लाजमी) होता है तथा बिना शीत वा कम्प के होता है। यद्यपि इसमें उष्णता किसी न किसी समय अवश्य हलकी होती है, किन्तु लाघव प्रतीत नहीं होता। तपे नाइबा प्रतिदिन एक या दो बार कम होता है तथा कफ के अन्य लक्षण पाये जाते हैं। किन्तु क्षारीय कफ की दशा में इसके भीतर अधिक उष्णता उत्पन्न हो जाती है। परंतु चाहे कुछ हो फिर भी एतज्जन्य उष्णता पित्तजन्य उष्णता से कम होती है।

हेतु--शीतल एवं गरिष्ठ आहार का अतिसेवन, शीतल स्थानगत आवास, जल में खड़े होकर काम करना, सुख-चैन वा विलासितापूर्ण जीवन यापन करना तथा श्रम न करना ऐसे हेतु हैं जिनसे प्रचुर कफ उत्पन्न होकर दूषित हो जाता है तथा इस प्रकार का ज्वर उत्पन्न करने का हेतुभूत होता है।

लक्षण—उक्त अवस्था में ज्वर चढ़ते समय शीत आदि की प्रतीति अत्यल्प होती है, जृम्भा और अङ्गमर्द का प्राचुर्य, शरीर में आलस्य की वृद्धि हो जाती है। काम करने में अरुचि होती, मुख वैरस्य, तृष्णाल्पता, प्रचुर मुखास्राव, क्षुधा की अल्पता आदि लक्षण होते तथा मूत्र सांद्र होता है।

निदान—क्षारीय कफ की दशा में ज्वर शीतपूर्वक (फुरेरी से) प्रारंभ होता है। इसके साथ शीत एवं कम्प अल्प होता है तथा सांद्र वा प्रगाढ़ी भूत श्लेष्मा (बलगम जुजाजी) की दशा में तीव्र कम्प होता है। अम्ल कफ की दशा में शीत होता है। मधुर कफ में शीत अल्प होता है और प्रायः कुछ काल पर्यन्त फुरेरी, शीत और कम्प बिल्कुल नहीं होता।

चिकित्सा—६-६ तोला अर्क मकोय और अर्क सौंफ में ५ माशा सौंफ, ३ माशा कुसूस के बीज और ६ दाना गुठली निकाला हुआ मुनक्का का शीरा निकाल कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर प्रातः सायंकाल कोष्ण पिलायें। यदि तीन-दिन के अनन्तर भी ज्वर आता रहे तो उसी में ७ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिला देवें। यदि ५-६ दिन इस योग के सेवन से लाभ न हो तो गुल-बनफ्शा ७ माशा, बीज निष्कासित दाख ६ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, हंसराज ७ माशा, मकोय ५ माशा, सौंफ की जड़ ५ माशा, मुलेठी ५ माशा, वस्त्रपोट्टलिकाबद्ध कुसूस के बीज ५ माशा—सबको रात्रि में उष्ण जल में भिगो दिया करें। प्रातःकाल मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिलाकर आठ दिन तक पिलावें। सायंकाल उपरिलिखित शीराजात (शीरा कल्प) पिलाते रहें। नवें दिन प्रातःकालोपयुक्त योग में ७-७ माशा सनाय मक्की तथा सफेद निशोथ और ५ माशा गुलाब के फूल की योजना कर रात्रि में यथावत् जल में भिगो देवें। प्रातः काल विरेचनार्थ ४-४ तोला तुरंजबीन एवं शकर सुर्ख, अमलतास ५ तोला, ५ दाने बादाम के मग्ज के शीरे की अतिरिक्त योजना कर पिलावें। आगामी दिन तबरीद (शीतजनक) का योग देवें। इसी प्रकार एक-एक दिन के अंतर से यथावश्यक तीन विरेचन देवें। जब यह ज्वर जीर्ण (पुराना) हो जाता है, तब विरेचनोपरांत शुकाई, बादावर्द, बिरंजासिफ ३-३ माशा रात्रि में उष्ण जल में भिगोकर प्रातःकाल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी लेकर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिलाकर कुछ दिन पिलाने से उपकार होता है।

यदि देशी अजवायन एक तोला मिट्टी के कोरे पुरवे (आबखोरे) में डालकर प्रातः काल भिगो दिया करें और समस्त अहोरात्रि अर्थात् आठ पहर भीगते रहने देवें। दूसरे दिन प्रातः काल उसके ऊपर निथरा हुआ पानी (जुलाल) लेकर २ तोला शर्बत बनफ्सा मिलाकर पिलावें तो भी समीचीन एवं उपकारी होता है।

विरेचनोपरान्त भी यदि कुछ संताप अवशेष रह जाय तो प्रातः काल ४ माशा कुर्सगाफिस खिला कर ऊपर से ६-६ तोला मिलित अर्क बिरंजासिफ और अर्क सौंफ २ तोला शर्बत बनफ्सा मिला कर पिला दिया करें और सायंकाल हब्ब तप बल्गमी २-२ गोली या हब्बराहत २-२ गोली कुनकुना गरम या ताजे जल से खिला दिया करें अथवा खाकसी १ तोला, शर्बत बनफ्शा २ तोला मिला कर जलमें प्रथम दिन एक उबाल देकर पिलायें। इसी प्रकार सात दिन तक एक-एक उबाल (जोश) बढ़ाते जायँ और आठवें दिन से एक-एक उबाल (जोश) कम करते जायँ। जब प्रथम मात्रा पर आ जाय तब इसका उपयोग बंद करा देवें। अथवा हरा गुरुच १ तोला, बारीक-बारीक परत करके रात्रि में उष्ण जल में भिगो दिया करें। प्रातः उसके ऊपर निथरा हुआ जल (जुलाल) ले कर २ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर कुछ दिन पिलायें तथा जहरमोहरा, बंशलोचन, समुद्रफल, इलायची के बीज और गुडूची सत्त्व प्रत्येक तीन माशा और सबके बराबर मिश्री मिलाकर कर चूर्ण बनायें। इसमें से ३ माशा चूर्ण ताजे जल के साथ फँका दिया करें।

आराम होने के पश्चात् बलवर्धनार्थ खमीरा गावजबान जवाहर वाला ५ माशा प्रातः काल और मण्डूर भस्म १ टिकिया ७ माशा जुवारिश जालीनूस या ५ माशा दवा उल् मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर सायंकाल खिला दिया करें। १-१ तोला अजवायन खुरासानी और समुद्रफल का चूर्ण बनाकर इसमें से ५ माशा प्रति दिन ताजा जल से देने से भी उपकार होता है।

इस प्रकार का ज्वर साधारणतया अधिक काल तक रहा करता है। अतएव प्रायशः पाण्डु (सूउल् किन्यः), जलोदर, प्लीहावृद्धि प्रभृति पचनावयव की विकृति से उत्पन्न होने की आशंका होती है। अतः इसमें पाचन का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। भोजनोत्तर २-२ गोली हब्ब पपीता या ७ माशा जुवारिश कमूनी खिलाना उपकारक होता है। ४॥-४॥ माशा कुर्स तबासीर या कुर्स जरिश्क ५ तोले हरी काशनी के फाड़े हुए रस में २ तोला सिकञ्जबीन मिला कर और ७ माशा खाकसी का प्रक्षेप देकर पिलाने से उपकार होता है।

अपथ्य—सांद्र, दीर्घपाकी, शीतल, तर एवं गुरु वा गरिष्ठ पदार्थ जिनसे कफ की उत्पत्ति हो, जैसे—आलू, अरवी, टिंडा, पालक, कद्दू, कुलफा, चना और उड़द की दाल, चावल, मछली, दूध, मक्खन, मलाई, अंगूर, सेब, संतरा इत्यादि पदार्थ सेवन न करें।

पथ्य—बकरी और पक्षियों का मांस, जैसे तीतर, मुर्गा और बटेर इत्यादि लघु एवं शीघ्रपाकी पदार्थ, मूँग-अरहर की दाल चपाती से खिलायें। अदरक एवं पुदीना की चटनी भी दे सकते हैं।

वक्तव्य--बुकरात का यह मत है कि प्रतिदिन आनेवाला ज्वर आमाशय के किसी विकार को लक्षित करता है। चातुर्थिक ज्वर प्लीहा रोग का लक्षण है। श्लैष्मिक रोग आमाशयिक द्वार की विकृति के साक्षी हैं। अंगगौरव रूप व्याधि यकृत् की विप्रकृति के प्रमाण हैं। संधिशूल का अस्तित्व वृक्क की विप्रकृति के लक्षण हैं। दोषज व्याधि की दशा में निद्रा अहितकरतम पदार्थों के अंतर्भूत माना गया है। इसी प्रकार ज्वर के प्रारंभिक आवेगों तथा आशय-शोथ की दशा में भी इसका अहितकर प्रभाव सिद्ध है। क्योंकि निद्रावस्था में संताप एवं रक्त भीतर की ओर घिरे चले जाते हैं।

हुम्मा लस्का

नाम--(अ०) हुम्मा लस्का; (उ०) लाजमी बल्गमी बुखार; (सं०) संतत कफ ज्वर; (अं०) एस्थेनिक फीवर (Asthenic fever)

वर्णन--यह एक प्रकार का हल्का अविसर्गी ज्वर (खफीफ लाजमी बुखार) है जो दो सप्ताह पर्यन्त, किंतु प्रायः तीन-चार सप्ताह पर्यन्त और कभी सात-आठ सप्ताह पर्यन्त निरन्तर चढ़ा रहता है।

हेतु--इस प्रकार का ज्वर प्रायः उन लोगों को होता है जिनके आमाशय में मस्तिष्कगत प्रसेक उदीरित होकर दूषित हो जाते हैं।

लक्षण--रोगी को प्रतिक्षण हल्का ज्वर चढ़ा रहता है। नाड़ी आशुगामिनी, किन्तु मृदु (लय्यिन) होती है तथा कफ के अन्यान्य लक्षण व्यक्त होते हैं। इसमें ज्वरावस्था में रोगी को स्वेद बिल्कुल नहीं आता। इस ज्वर का मोक्ष चौदह दिन के उपरान्त, परन्तु प्रायः बीस और तीस दिन के मध्य अतिसरण या स्वेद द्वारा होता है। पर कभी-कभी चालीस से साठ दिन पर्यन्त भी ज्वर रहा करता है। जब यह ज्वर पुराना हो जाता है तब यकृत् आदि के विकार से रोगी के चेहरे और हस्त आदि पर शोथ हो जाता है।

निदान--हुम्मा लस्का का, गिब्ब लजिमा, रिबा लाजिमा, माल्टा ज्वर, हुम्मा मुतिबका और विशेषतः दिक प्रभृति इतर लाजमी बुखारों (अविसर्गी ज्वरों) से निदान करना आवश्यक है।

(१) शतरुल्गिब्ब या सफरावी व बल्गमी बुखार--जिसमें सफराबी (पित्तज) एवं बल्गमी (कफज), बुखार लाजमी (अविसर्गी) या उसके विपरीत होता है। इसमें एक दिन ज्वर हल्का और एक दिन उग्र होता है। किंतु हुम्मा लस्का में यह दशा नहीं होती। इसमें हल्का ज्वर प्रतिक्षण चढ़ा रहता है।

(२) गिब्ब लाजिमा या लाजमी सफरावी बुखार—इसमें प्रतिदिन प्रातः काल ज्वर में किसी प्रकार कमी हो जाती है ; किंतु अपराह्न काल में (तीसरे पहर) ज्वर तीव्र हो जाता है और सायंकाल अति तीव्र हो जाता है तथा रात्रिभर भी ज्वर तीव्र रहता है और अन्यान्य पित्त के लक्षण प्रगट होते हैं। परन्तु लस्का में हर समय हल्का ज्वर चढ़ा रहता है।

(३) रिबआ लाजिमा या लाजमी सौदावी बुखार भी अविसर्गी (लाजमी) ज्वर है जो अवधि पर्यन्त रहता है ; परन्तु यह क्वचित् ही होता है। स ज्वर में प्रति चौथे दिन ज्वर में तीव्रता होती है। किंतु लस्का में यह दशा नहीं होती।

(४) हुम्मा मुत्बिका या लाजमी दम्वी बुखार में ज्वर तीव्र होता है। प्रायः अतिसरण होता है। शरीर के ऊपर लाल-लाल छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं। किंतु हलके प्रकार के ज्वरों को हुम्मा लस्का से निदान करना कठिन होता है। क्योंकि सूक्ष्म प्रकार के इस ज्वर का मोक्ष भी चौदहवें दिन या उससे कुछ पूर्व हो जाता है। साधारणतया हुम्मा मुत्बिका का मोक्ष (बोहरान) भी लस्का की भाँति बीस से तीस दिन के बीच होता है। परन्तु लस्का की भाँति कभी-कभी यह ज्वर भी छः सप्ताह या चालीस दिन पर्यन्त रहता है। सुतरां लस्का और हल्के हुम्मा मुत्बिका में तथा इन उभय ज्वरों के मोक्ष में बड़ा सादृश्य है। अतएव परस्पर एक दूसरे से इनका निदान करना परम आवश्यक है। दोनों की चिकित्सा सर्वथा भिन्न है। अस्तु, यूनानी वैद्य तो हुम्मा लस्का में तीन-चार विरेचन देना आवश्यक ख्याल करते हैं ; परन्तु हुम्मा मुत्बिका में क्षुद्रान्त्रों में क्षत होने के कारण विरेचन का प्रयोग अतीव अहितकर होता है। अतः यथार्थ निदान के लिये रोगी के एक बिंदु रक्त का अणुवीक्ष्य परीक्षा करा लेना परम आवश्यक होता है।

(५) हुम्मा माल्टा—यह भी एक प्रकार का अविसर्गी ज्वर है जो माल्टा द्वीप, रोमसागर के समीपवर्ती प्रदेश, पंजाब और अन्यान्य उष्ण प्रदेशों में पाया जाता है। इस ज्वर का आक्रमण बारंबार अनियमतः होता है और बहुधा दो-दो तीन-तीन मास और कभी इससे भी अधिक काल पर्यन्त इसके आवेग (दौरे) होते रहते हैं। इस ज्वर में प्रचुर स्वेद होता है और शरीर के ऊपर अम्हौरियाँ वा गर्मीदाने (विस्फोट) निकल आते हैं तथा संधियों में पीड़ा होती है। परन्तु लस्का में ये लक्षण नहीं होते।

वक्तव्य—माल्टा ज्वर और हुम्मा मुत्बिका (रक्तज्वर भेद) में रोगी के उरःस्थल पर अम्हौरियां या गर्मी के दाने (विस्फोट) निकल आते हैं। अतएव इन उभय प्रकार के ज्वरों विशेषतः माल्टा ज्वर को पंजाब में 'मुबारकी' और

राजपुताना एवं दिल्ली में 'मोतीझरा' भी कहते हैं। रक्त के अणुवीक्षणयंत्र द्वारा परीक्षा से ही इन ज्वरों का यथार्थ निदान हो सकता है।

(६) हुम्मा दिक—मन्दोष्मा तथा शरीर कार्श्य एवं शरीर दौर्बल्य के कारण हुम्मा लस्का हुम्मादिक (क्षयरोग) से अत्यधिक सादृश्य रखता है। यद्यपि हुम्मा लस्का में मध्याह्नकाल में भोजनोत्तर सन्ताप नहीं बढ़ता, नाड़ी मृदु होती है और शरीर दोषपरिपूर्ण (मुमतली) एवं स्फीत (मुतनफख) होता है। क्षय (हुम्मा दिक) के विपरीत इसमें नाड़ी आशु एवं कठिन होती है। भोजनोपरान्त संताप बढ़ जाता है तथा रोगी नित्य-प्रति दुर्बल एवं कृश होता जाता है।

टि०—इसके विशेष विवरण हेतु इसी ग्रंथ के पृष्ठ २२५ देखें।

असंसृष्ट द्रव्योपचार—हुम्मा लस्का और हुम्मा बलगमी (कफज्वर) में उल्लिखित असंसृष्ट ओषधियाँ लाभकारी हैं।

संसृष्ट द्रव्योपचार—दोषपाचन एवं विरेचनोपरान्त (१) कुर्स गाफिस ७ माशा १२ तोला अर्क गावजबान के साथ सेवन करना लाभकारी है। (२) ७ माशा कुर्स गुल १२ तोला अर्क गावजबान से या (३) ६ माशा कुर्स अफसंतीन १२ तोला अर्क गावजबान से अथवा (४) ६ माशा कुर्सगुल सगीर ४ तोला शर्बत बजूरी से सेवन करने से हुम्मा लस्का में उपकार होता है तथा यह परीक्षित है।

सिद्धयोग—(१) दोषपाचन (मुंजिज) जो हुम्मा लस्का में लाभकारी है। गुलबनफशा, छिली हुई मुलेठी और सौंफ प्रत्येक ४ माशा, उन्नाब ७ दाना, सब को जल में उबाल-छान कर ४ तोला गुलकन्द अथवा ४ तोला शर्बत बनफ्शा मिला कर पिलायें। आठवें दिन विरेचनार्थ निम्नलिखित योग सेवन करायें।

(२) विरेचन—गुलबनफ्शा, सौंफ, सूखा मकोय, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक ९ माशा, हंसराज ६ माशा, उन्नाब १० दाना सबको जल में क्वाथ करके और मल-छान कर अमलतास का गूदा, तुरंजबीन और गुलकन्द प्रत्येक चार तोला योजित कर मल-छान लेवें और ६ माशा बादाम का तेल मिला कर पिलायें।

वक्तव्य—नवें दिन पुनः उपर्युक्त दोषपाचन औषध पिलायें और दसवें दिन पुनः दूसरा विरेचन देवें। सुतरां ग्यारहवें दिन पुनः उल्लिखित दोषपाचन योग सेवन करा के बारहवें दिन पुनः उल्लिखित विरेचन देवें, तीन दिन के बाद अर्थात् तेरहवें-चौदहवें और पन्द्रहवें दिन उपरिलिखित दोषपाचन योग में कासनी के बीज और मकोय प्रत्येक ४ माशा, शुद्ध अर्कगुलाब १५ तोला मिलाकर पिलायें। पर यदि रोगी अधिक दुर्बल हो तो पुनः विरेचन न देवें। प्रत्युत् हड़ का मुरब्बा देकर आगामी दिन कुर्स गुल या कुर्स गाफिस प्रारंभ करा देवें।

सौदावी बुखार

नाम--(अ०) हुम्मा (सौदावियः) सौदावी (रिबा दाइरा); (उ०) सौदावी बुखार, चौथिया बुखार, (सं०) चतुर्थकज्वर; (अं०) क्वार्टन फीवर (Quartan Fever)।

वर्णन--चतुर्दोषों में से जब किसी दोष के सूक्ष्म अंश विलीन हो कर स्थूल अंश अवशिष्ट रह जाते हैं, तब वह गैर तबई सौदा (अप्राकृत सौदा) के नाम से अभिहित होता है। यदि इसमें दुष्टि (कोष्ठ) उत्पन्न हो कर ज्वर आने लगे तो उसको हुम्मा सौदावी (सौदाजन्यज्वर) या चौथिया बुखार (चतुर्थक ज्वर) कहते हैं, इस प्रकार का ज्वर चौथे दिन बारी के साथ आया करता है। इस ज्वर की एक बारी से दूसरी बारी तक ७२ घंटे का अवकाश होता है।

हेतु--कभी उष्ण पदार्थ सेवन तथा कभी गरिष्ठ एवं दीर्घपाकी आहार सेवन या अम्ल के अति सेवन से शरीर में सौदा अधिक उत्पन्न होता है तथा दूषित होकर इस ज्वरोत्पत्ति का हेतुभूत होता है।

लक्षण--उक्त अवस्था में रोगी की रंगत स्याहीमायल हो जाती है। मूत्र प्रसेक अल्प होता है। नेत्र में मलिनता मालूम होती है और साधारणतया प्लीहा विर्बाधित हो जाती है। ज्वर बारीपूर्वक चौथे दिन आता है। नाड़ी मन्द और कठिन होती है।

साध्यासाध्यता--इस ज्वर का अन्त प्रायः कुशलतापूर्वक होता है। पर यदि रोगी दुर्बल वा वृद्ध हो अथवा उसे दीर्घकाल तक ज्वर आता रहे अथवा आभ्यंतरिक अंगों की रचना में विकार उत्पन्न हो जाय अथवा यथावत् चिकित्सा न की जाय तो परिणाम अशुभ होता है।

चिकित्सा--मालीखोलिया के प्रकरण में उल्लिखित दोष पाचन और विरेचन के योग आवश्यकतानुसार उपयोग करायें अथवा छिली हुई मुलेठी, कासनी के बीज, करफ्स के बीज प्रत्येक ५ माशा जल में उबाल-छान कर २ तोला सिकंजबीन मिला कर कुछ दिन पिलायें। यदि प्लीहावृद्धि के कारण ज्वर आता हो तो गुलबनफ्शा ७ माशा, बीज निष्कासित दाख ९ दाना, कासनीमूल ७ माशा, सौंफ ७ माशा, गावजबान ५ माशा, मजीठ ५ माशा, पीला अंजीर ३ दाना रात्रि में उष्ण जल में भिगो कर प्रातः काल मल-छानकर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर कुछ दिन पिलायें और भोजनोत्तर सफूफ तिहाल २-२ माशा खिला दिया करें। रात्रि में दर्दमन्द एक टिकिया ताजा जल के साथ खिलायें। प्लीहा के ऊपर लेप करने के लिये प्लीहावृद्धि (इत्रमुत्तिहाल) के प्रकरण में उल्लिखित योगों का उपयोग करायें। सायंकाल ७ माशा जुवारिश जालीनूस

खिला कर सौंफ ५ माशा, कुसूस के बीज ३ माशा, सूखा मकोय ३ माशा, अर्क बिरंजासिफ १२ तोला में पीस-छान कर ४ तोला खमीरा बनफ्शा मिला कर पिला दिया करें। विरेचनों से खाली होने के पश्चात् हब्बराहत दो टिकिया या कुर्स गाफिस ४।। माशा खिला कर ऊपर से १२ तोला अर्कशीर मुरक्कब में ४ तोला शर्बत उन्नाब मिला कर पिला दिया करें। बलबर्धनार्थ खमीरा अबरेशम शीरए उन्नाबवाला ५ माशा या मुफर्रेह शैखुर्रईस ५ माशा खिलाकर ऊपर से मिलित अर्क माउज्जुब्न और अर्क गजर ६-६ तोले में २ तोला शर्बत केवड़ा मिला कर पिलाना लाभकारी है। यदि पाचन दोष हो तो ५ माशा दवाउल् मिस्क मोतदिल में १ टिकिया खुन्सुल्हदीद मिलाकर कुछ दिन खिलायें।

अपथ्य---बैंगन, लहसुन, प्याज, चना और बादी-गरिष्ठ एवं रूक्षता (खुश्की) उत्पन्न करनेवाले पदार्थ, मसूर और उड़द की दाल, आलू, अरवी, भिंडी, कचालू, गोभी इत्यादि तथा अन्य दीर्घपाकी एवं वाष्पोत्पादक पदार्थों से परहेज करायें।

पथ्य---स्वस्थ पुरुषों जैसा आहार दिया जाय जिसमें रोगी दुर्बल न हो जाय। बकरी का शूरबा, चपाती, चावल, खशका, पुलाव, दूध, मक्खन, मलाई, पावरोटी, बिस्कुट इत्यादि आवश्यकतानुसार देवें।

मौसमी बुखार

नाम---(अ०) हुम्मा अजामिया ; (उ०) तपे लरजा, मौसमी बुखार ; (सं०) ऋतुज्वर, विषमज्वर ; (अं०) मलेरियल फीवर (Malarial fever), इन्टरमिटेन्ट फीवर (Intermittent fever)।

हेतु---मलेरिया वस्तुतः एक प्रकार के विषैले वाष्प होते हैं, जो उद्भिज्जों के कोथ (सड़ने) एवं आर्द्र भूमि, जैसे---झीलों, तालाबों और दलदलों आदि के सूखने से प्रारम्भ होते और जहाँ घास-फूस अधिक एकत्र हों वहाँ के दूषित वाष्प (अब्खरात रदिय्या) वायु में मिलकर विष-प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं।

वक्तव्य---आधुनिक अन्वेषणों से यह प्रमाणित हो चुका है कि मलेरिया का विष एक प्रकार के मच्छड़ के काटने से मानव-शरीर में प्रसारित हो जाता है। सुतरां ये मच्छड़ ऐसे ही स्थानों के समीप पाये जाते हैं। अस्तु, सावन के अंत से लेकर संपूर्ण भादों और क्वार के अंत तक भारतवर्ष में प्रायः यह ज्वर होता है। जब वर्षा के उपरांत भूमि, तालाब और झील सूखना आरंभ हों तथा ग्रीष्म ऋतु में यदि प्रचण्ड उष्णता हो, तो वर्षान्त में यह मच्छड़ प्रचुरता से फैल जाते हैं तथा इनके काटने का प्रभाव अति तीव्र होता है। ऐसे मच्छड़ कुछ फुट अधिक ऊँचाई पर नहीं चढ़ सकते। अस्तु, ऐसे समयों में जो लोग नीचे

के कमरों में रहते हैं अथवा भूमि पर शयन करते हैं उन पर इनका बड़ा प्रभाव पड़ता है।

लक्षण--मलेरिया ज्वर दो प्रकार का होता है--प्रथम वह जो जाड़े से चढ़ता है और बारी से आता है। इसको पश्चात्य वैद्यक में 'इन्टरमिटेन्ट फ़ीवर (नौबती बुखार --नियतकालिक ज्वर)' कहते हैं। इसके पुनः ये तीन उपभेद होते हैं--(१) वह जो प्रातः काल चढ़ता है। इसमें विष-प्रभाव अधिक होता है, इसी कारण तीव्र ज्वर होता है तथा इसका आवेग काल ८-१० घंटा होता है। इसको पाश्चात्य वैद्यक में कोटिडियन फीवर (Quotidian fever) कहते हैं। (२) वह जिसमें प्रथम की अपेक्षया विष-प्रभाव कम होता है। इसमें रोगी को अपेक्षाकृत अधिक शीत एवं कँपकँपी लगती है। साधारणतः यह ज्वर मध्याह्नकाल में शीतपूर्वक चढ़ता है और प्रायः ६ से ८ घंटे तक रहता है। प्रति दिन इसकी एक बारी हुआ करती है। इसको पाश्चात्य वैद्यक में 'टार्शियन फीवर (Tertian fever) कहते हैं। कभी इस ज्वर की दिन में दो बारियाँ (आवेग) भी हो जाती हैं, जैसे--एक बारी प्रातः काल और एक सायंकाल। उक्त अवस्था में दूसरे दिन अवकाश (अनावेग) रहता है और तीसरे दिन पुनश्च इसी प्रकार दो बारियाँ होती हैं। (३) वह जो प्रायः सायंकाल हुआ करता है। यद्यपि ज्वर हल्का होता है, तथापि शीत अधिक लगता है। इसका आवेगकाल ४-६ घंटे तक रहता है। इसको पाश्चात्य वैद्यक में 'क्वार्टन फीवर (Quartan fever)' कहते हैं। इस प्रकार के ज्वर में कुछ कालोपरान्त स्वेद आकर ज्वर सर्वथा (निःशेष) उतर जाता है। परंतु दूसरे प्रकार का मलेरिया ज्वर जो जाड़े से नहीं चढ़ता, उसको 'रेमिटेन्ट फीवर (Remittent fever)' कहते हैं। अरबी में इसे हुम्मा मुतफत्तिरा' कहते हैं। यह ज्वर सदा चढ़ा (अविसर्गी) रहता है तथा बारी से नहीं आता। प्रत्युत अहोरात्रि में किसी समय संताप बढ़ जाता है और किसी समय कम हो जाता है। ज्वर उतरते समय स्वेद नहीं आता अथवा कम आता है।

मलेरिया ज्वरों में प्रथम ज्वर चढ़ने से पूर्व रोगी आलस्ययुक्त हो जाता है। अङ्गमर्द और जृम्भा होती है, साँस शीघ्र चलता, जी मिचालता और कभी वमन भी हो जाता है। आतप वा अग्नि सेवा की अभिकांक्षा होती है। मूत्र का रंग हल्का पीला या श्वेत होता है तथा मूत्रप्रसेक बारंबार होता है। कुछ काल तक यह अवस्था रहकर धीरे-धीरे गरमी प्रतीत होती है। सम्पूर्ण शरीर में वेदना होती है। मुखवैरस्य एवं मुख शोष होता, चेहरा लाल और शरीर में दाह होता, मूत्र लाल एवं अल्प होता तथा शिरः शूल होता है। नाड़ी द्रुत गति से

चलती हैं। भोजन से अरुचि हो जाती तथा मलावरोध होता है। व्यग्रता एवं अविश्रान्ति बढ़ जाती है। कभी-कभी प्रलाप की नौबत पहुँचती हैं। यह अवस्था चार-पाँच घंटे रहती हैं। तदुपरान्त मस्तक पर स्वेदन होता है और धीरे-धीरे स्वेद होकर लगभग १५–२० मिनट में ज्वर उतर जाता है। उक्त अवस्था में रोगी अत्यन्त दुर्बल हो जाता है।

चिकित्सा—ऐसी ऋतु में जब कि इस प्रकार के ज्वर आ रहे हों अनागत बाधाप्रतिषेधस्वरूप हब्ब बुखार ५ गोली प्रति दिन प्रातः काल जल से सेवन कर लेना चाहिये और सप्ताह में दो बार कुर्स मुलय्यिन ५ टिकिया रात्रि में सोते समय कोष्ण दूध से खाकर आमाशय और अन्त्र को शुद्ध कर लेना चाहिये। इस ज्वर से पीड़ित रोगियों को आवेग (बारी) आने से एक घंटा पूर्व हब्ब बुखार सेवन करनी चाहिये और ज्वर उतारने, स्वेद लाने तथा सार्वाङ्गिक वेदना प्रशमनार्थ दर्दमन्द की एक टिकिया ताजे जल से सेवन करना भी लाभकारी है। शेष लक्षण एवं उपद्रव के लिये यथावश्यक उपचार करना चाहिये। अस्तु, तृषा प्रशमनार्थ कागजी नीबू का खारा पानी (सोडा वाटर) पिलाना अथवा नीबू और नारंगी चुसाना अथवा ६ तोले अर्क गावजबान में ५ दाना आलूबोखारा भिगोकर उसका निथरा हुआ पानी (जुलाल) पिलाना भी गुणकारी है। मलावरोध निवारण के लिये अतरीफल मुलय्यिन ५ माशा या ५ टिकिया कुर्स मुलय्यिन रात्रि में सोते समय खिलायें। प्रातः काल निम्न योग सेवन करायें—गुल बनफ्शा ७ माशा, बीज निकाला हुआ मुनक्का (दाख) ६ दाना, कासनीमूल और सौंफ प्रत्येक ७ माशा तथा गावजबान ५ माशा, यदि तृष्णा एवं हृल्लास (मिचली) हो तो आलूबोखारा ५ दाना, कासनी के बीज ५ माशा और गुलनीलूफर ५ माशा योजित कर रात्रि में उष्ण जल में भिगो कर प्रातः मल-छान कर ४ तोला गुलकन्द या तुरंजबीन अथवा खमीरा बनफ्शा में से किसी एक को मिलाकर पिलायें और सायंकाल उन्नाब ५ दाना, कद्दू का मग्ज ३ माशा, १२ तोले अर्क गावजबान में पीसकर शीरा कल्पना करके २ तोला शर्बत नीलूफर मिलाकर पिलाना चाहिये।

शेष उपद्रवों की न्यूनाधिकता को दृष्टि में रख कर यथावश्यक वही उपक्रम करें जिसका खिल्ती बुखार (दोषजज्वर) के प्रत्येक भेद में वर्णन हुआ है। इस ज्वर के उपरान्त प्रायः प्लीहा और यकृत् की वृद्धि हो जाती है। उक्त अवस्था में ज्वर-चिकित्सा के साथ उन ओषधियों का भी उपयोग करायें जिनका उल्लेख यकृत्प्लीहा के प्रकरण में किया जा चुका है। यदि विरेचन की आवश्यकता हो तो प्रत्येक दोष के विरेचन की जिस विधि का प्रथम उल्लेख हो चुका है उनके अनुसार आवश्यकतानुसार विरेचन देवें।

अपथ्य—गुरु एवं दीर्घपाकी पदार्थों के सेवन से और ऐसे स्थानों में जहाँ मलेरिया का विष हो, आवास करने से तथा अधिक धूप में चलने-फिरने से अथवा वर्षा में भीगने, मलिन वस्त्रधारण करने तथा वर्षा के भीगे हुये वस्त्र शरीर पर धारण करने से परहेज करें।

पथ्य—रुचि के अनुसार लघु एवं शीघ्रपाकी आहार देवें। बकरी का शूरबा चपाती और मूँग की दाल, तरकारियों में से कद्दू, तुरई, पालक, टिंडा इत्यादि देवें तथा नीबू, अनार, अंगूर, सेब, संतरा इत्यादि आवश्यकतानुसार देवें।

जर्बतुश्शम्स (लू लगना)

उष्ण देशों में जहाँ गरमी अधिक पड़ती है, प्रायः ग्रीष्म ऋतु में अर्थात् मई, जून और जुलाई के महीने में वायु में एक प्रकार का विष उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार के संताप का विष मानव-शरीर में व्याप्त होता है तो रक्त में एक प्रकार का उद्वेग उत्पन्न होकर कष्ट का कारण बनता है जिसको बोलचाल की भाषा में 'लू लगना' [1] कहते हैं।

हेतु—संताप की प्रखरता एवं सूर्य की प्रचण्डता से और आतप एवं मैदान में चलने-फिरने से, ग्रीष्म ऋतु में काले रंग का वस्त्र धारण करने, अति मद्यसेवन, ग्रीष्म में रेल-यात्रा करने और अतिश्रम करने से यह रोग प्रगट हो जाता है।

लक्षण—साधारणतः प्रथम रोगी के शिर में शूल होता है तत्पश्चात् तीव्र ज्वर चढ़ जाता है। तृष्णाधिक्य होता, बारंबार मूत्र त्याग करता, अतीव व्याकुलता वा बेचैनी होती, चेहरा और नेत्र लाल हो जाते हैं। हृत्स्पन्दन अधिक हो जाता है। रोगी अत्यन्त दुर्बल होकर कभी मूर्च्छित भी हो जाता है। सम्पूर्ण शरीर स्वेद से क्लेदित हो जाता है। नाड़ी बारीक हो जाती है। कभी-कभी उबकाइयाँ आती हैं। कभी-कभी सान्निपातिक अवस्था (सरसामी कैफियत) उत्पन्न हो जाती है।

चिकित्सा—रोगी को शीतल स्थान में ले जावें। शिर पर शीतल जल का तरेडा (परिषेक) देवें। यदि रोगी निःसंज्ञ (अचेत) हो तो संज्ञा लाने के लिये अर्क गुलाब एवं अर्क केवड़ा बर्फ में शीतल करके मुख एवं उरःस्थल के ऊपर छींटे देवें और उन्हीं अर्कों में कपूर एवं सफेद चन्दन मिलाकर आघ्राण करायें।

---

१. आयुर्वेद में इसको 'उष्णवातातपदग्ध', 'सूर्यातपदग्ध', 'अंशुघात' तथा 'आतपमूर्च्छा' और पाश्चात्य वैद्यक में 'हीट अपोप्लेक्सी (Heat apoplexy) तथा 'हीट स्ट्रोक (Heat Stroke) कहते हैं।

हस्त-पाद के तलुवों (तलों) और ग्रीवा में गुद्दी के स्थान में सिंगी लगवायें। शिर के बाल कतरवा देवें। सान्निपातिक (सरसामी) अवस्था हो तो १ तोला गुलरोगन ५ तोले अर्क गुलाब और २ तोले सिरका में मिलाकर कर बर्फ से शीतल करके उस में वस्त्रखंड (कपड़ा) भिगो कर बारंबार शिर एवं मूर्धा पर रखें और आम की केरी (कच्ची) अग्नि में भुलभुला (भून) कर जल में मल-निचोड़ कर ७-७ तोला दिन में दो-तीन बार पिलाने और मुँह धुलवाने तथा पेड़ा तीन तोला जल में घोलकर पिलाने से बड़ा लाभ होता है। मलावरोध होने पर इमली ७ तोला और आलूबोखारा ५ दाना जल में उबाल-छान कर ४ तोला गुलकन्द मिला कर पिलाने से भी बहुत उपकार होता है।

अति तृष्णा होने पर तरबूज का पानी १० तोला, शर्बत अजीब ४ तोला, अर्क केवड़ा ३ तोला, अर्क बेदमुश्क ३ तोला सब को मिला कर बर्फ से शीतल कर पिलाना चाहिये।

आराम होने पर संताप हरण के लिये तथा बलवर्धनार्थ कुछ दिन निम्न योग सेवन कराना चाहिये--

प्रथम सुफर्रह बारिद खिलाकर ऊपर से १२ तोले अर्क गावजबान में ३ माशा बिहीदाना का लुआब, ३-३ माशा मीठे कद्दू के बीज के मग्ज, तरबूज के बीज के मग्ज, कुलफा के बीजों का शीरा निकाल कर ४ तोला शर्बत नीलूफर मिला कर पिला दिया करें।

अपथ्य--उष्ण पदार्थों के खान-पान से, उष्ण स्थान में रहने, धूप (आतप) और खुले मैदान में गर्मी के समय चलने-फिरने से परहेज करें।

पथ्य--लघु एवं शीघ्रपाकी, जैसे--दूध, खशका, या डबलरोटी-दूध या मूँग की खिचड़ी या गेहूँ का दलिया आदि देवें।

टिप्पणी--अनागतबाधा प्रतिषेध स्वरूप ग्रीष्म ऋतु एवं लू के समय आम की केरी (कच्ची) की चटनी पुदीना डालकर और प्याज, दही, छाछ आदि कभी-कभी सेवन करते रहना लू के विषैले प्रभाव से सुरक्षित रखता है।

ताऊन

नाम--(अ०) ताऊन, हुम्मा वबाई; (उ०) ताऊन; (सं०) ग्रन्थिक ज्वर; (अं०) प्लेग (Plague)।

वर्णन--यह एक प्रकार का भयंकर औपसर्गिक ज्वर है जो प्रायः महामारी (मरक) के रूप में प्रसार पाता है। यदि किसी नगर वा कसबा में इसके प्रभाव प्रगट होते हैं तो उसके आस-पास के स्थान वा जनपद भी इससे आक्रांत हो

जाते हैं। यह इतना उग्र एवं घोर व्याधि है कि साधारणतया अत्यल्प काल में मृत्यु हो जाती है।

हेतु--प्रायः वायुदोष तथा वायु में उपसर्ग का प्रभाव उत्पन्न हो जाना इसका हेतु होता है। सुतरां जब भूमिस्थ प्रकुथित (सड़ी-गली) वस्तुओं के दूषित बाष्प वायु में मिश्रीभूत हो जाते हैं अथवा ऋतुव्यापत्ति के कारण वायु स्वयं दूषित हो जाता है तब शरीर एवं ओज (रूह) में अपने प्रकृत गुण प्रगट करने के स्थान में उनमें दूषित गुण उत्पन्न करता है तथा रक्त में एक विशेष प्रकार का असाधारण विकार एवं विष-प्रभाव प्रगट हो जाता है। गृह, भवन, शय्या और वस्त्र तथा अपने शरीर को अस्वच्छ एवं मलिन रखने तथा स्वच्छता एवं शुद्धि का विशेष ध्यान न रखने से इस रोग का आक्रमण होता है। यद्यपि यह रोग हर अवस्था में हो सकता है, तथापि बालक एवं वृद्ध की अपेक्षया युवा इससे अधिक आक्रांत होते हैं। निर्धन व्यक्ति जिनको सड़े-गले एवं अपौष्टिक आहार मिलते हैं तथा आवास भी उत्तम उपलब्ध नहीं होता, इस रोग से अधिक आक्रांत होते हैं।

लक्षण--प्रारंभ में शिर, कटि और संधियों में हलकी पीड़ा होती है। चित्त व्याकुल एवं शोकातुर होता है। क्षुधा कम हो जाती है। मस्तिष्क में क्लांति एवं दौर्बल्य के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। निद्रा भली भाँति नहीं आती। पुनः सहसा शीत लगकर तीव्र ज्वर हो जाता है। कभी-कभी निःसंज्ञता एवं प्रलाप भी हो जाता है जो असाध्यतासूचक लक्षण है। तीव्र पिपासा लगती है। उत्क्लेश होता और बारंबार वमन होता है। दो-तीन दिन में वंक्षण वा कक्ष में या ग्रीवा की ग्रंथियों अथवा कर्णमूल-ग्रंथियों में से किसी स्थान में सूजन होकर गिल्टी निकल आती है जिसमें तीव्र वेदना एवं दाह होता है। एक-दो दिन के उपरांत उसमें पीव पड़ जाती है। रोगी असीम दुर्बल हो जाता है। चेहरा मुझाया-सा हो जाता है। नेत्र भीतर को दब जाते हैं। कभी मूत्रावरोध हो जाता और कभी शरीर के ऊपर नीले-नीले धब्बे (दाग) पड़ जाते हैं। कभी नासिका या मुख अथवा गुदा से रक्तस्राव होने लग जाता है तथा रोगी अत्यंत भयातुर हो जाता है।

साध्यासाध्यता--साधारण ताऊन सांघातिक नहीं होता। परंतु तीव्र ताऊन अत्यंत मारक होता है। इससे ६० से ९० प्रतिशत मृत्यु होती है। यदि ज्वर तीव्र हो, अतीव दौर्बल्य हो, गिल्टियाँ (बद) शीघ्र न पकें, प्रत्युत् दब जायँ अथवा प्रलाप, मूर्च्छा वा आक्षेप हो अथवा अति वमन हो अथवा मूत्रावरोध हो जाय अथवा मुख, नासिका वा गुदा आदि से रक्तस्राव हो, तो उक्त अवस्था में परिणाम प्रायः शुभ नहीं होता। पर यदि गिल्टी (बद) शीघ्र प्रगट होकर

पक जाय तथा रोगी सप्ताह वा पक्ष तक जीवित रहे, तो परिणाम शुभ होने की अधिक आशा होती है।

चिकित्सा——जहरमोहरा, वंशलोचन, मोती, हरा यशब और अनारदाना प्रत्येक १ माशा——सबको महीन पीसकर ५ माशा मुफर्रेह बारिद में मिलाकर प्रथम खिलायें और ऊपर से मिलित ५ तोला अर्क बेदमुश्क और ७ तोला अर्क गुलाब में ३ माशा जरिश्क, ३ माशा कासनी के बीज, ५ दाना आलूबोखारा, ३ माशा सफेद चंदन इनका शीरा निकालकर २ तोला शर्बत गोरा मिलाकर ७ माशा तुख्म रेहाँ का प्रक्षेप देकर पिलायें। अथवा प्रातः-सायं उभय काल मिलित ५ तोला अर्क बेदमुश्क और ७ तोला अर्क गुलाब में ५–५दाना उन्नाब और आलू-बोखारा, ३ माशा सफेद चंदन, ३ माशा कुलफा स्याह बीज, ३ माशा छिला हुआ काहू के बीज इनका शीरा और ३ माशा बिहीदाना तथा ३ माशा गावजबान पत्र इनका लुआब निकालकर २ तोला शर्बत केवड़ा या २ तोला शर्बत संदल मिलाकर पिलायें। और जहरमोहरा २ माशा, जदवार बनफ्शजी २ माशा, कपूर १ माशा यथावश्यक अर्क बेदमुश्क में घिसकर घण्टा-घण्टा भर के उपरान्त पिलायें।

यदि कष्ट की तीव्रता के कारण प्रलाप की अवस्था प्रगट हो तो शुद्ध सिरका २ तोला, गुलरोगन १ तोला और अर्क गुलाब ५ तोला तीनों को मिलाकर इसमें कपड़ा तर करके शिर के ऊपर रखें और ३ माशा सफेद चंदन पीसकर हृत्स्थल के ऊपर लेप करें। तृष्णा होने पर अर्क गुलाब, अर्क कासनी, अर्क नीलूफर, अर्क केवड़ा और अर्क बेदमुश्क इनको शर्बत केवड़ा, शर्बत संदल, शर्बत वर्द, शर्बत अंगूर या शर्बत अनार शीरीं या शर्बत सेब या शर्बत लुकाट से मधुर करके पिलायें। इन अर्कों के सिवाय रोगी को और कुछ न देवें।

गिल्टी (ग्रन्थि) के ऊपर उसे विलीन हो जाने के लिये प्रथम अमलतास का गूदा १ तोला, जदवार ६ माशा, काली जीरी ६ माशा यथावश्यक हरे मकोय के रस में पीसकर कुनकुना गरम करके लेप करें अथवा २ दाना कुचला, ३ माशा नीम की पत्ती, १ माशा काली मिर्च, जदवार ३ माशा, दरूनज अकरबी ३ माशा और संखिया १ माशा सबको नीम की हरी पत्ती के यथावश्यक रस में पीसकर गिल्टी के ऊपर कुनकुना गरम लेप करें। यदि गिल्टी बैठती न हो तो तीसी की पुल्टिस बांधें, नरम हो जाने के पश्चात् यदि यह स्वयमेव फूट जाय तो उत्तम है, वरन् किसी कुशल शल्यविद् (सर्जन-जर्राह) से उसका भेदन करा देवें। पुनः जल से इक्कीस बार धोये हुये शुद्ध उत्तम गोघृत में कपूर ३ माशा और सफेदा काशगरी ६ माशा मिलाकर भलीभाँति मिलाकर व्रण के ऊपर कुछ दिन लगायें अथवा गिल्टी के स्थान पर जोंक लगवा देवें और पीत एलुआ ७ माशा, मुरमकी

(बोल) ३।। माशा, केसर ३।। माशा यथावश्यक अर्क गुलाब में पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनाकर रखें और अनागतबाधा प्रतिषेध स्वरूप महामारी काल में सप्ताह में २। माशा खा लेने से ईश्वर की दया से इस रोग का आक्रमण नहीं होता।

कपूर १ तोला, दरूनज अकरबी १ तोला, जदवार बनफ्शजी ६ माशा यथा प्रमाण अर्क गुलाब में खूब हल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें। महामारी काल में स्वस्थ व्यक्ति इसमें से ३ गोलियाँ अनागतबाधा प्रतिषेध स्वरूप सेवन कर लेवे तो इस रोग के आक्रमण से सुरक्षित रहे। यदि ताऊनाक्रांत रोगी को भी इसमें से १–१ गोली दिन में तीन बार २–२ घण्टा बाद खिला दिया करें और ऊपर से ३–३ तोला अर्क बेदमुश्क और अर्क केवड़ा में ५–५ दाना उन्नाव एवं आलूबोखारा तथा ३ माशा मीठे कद्दू के बीजों के मग्ज का शीरा निकालकर २ तोला शर्बत बेदमुश्क मिलाकर पिलाया जाय तो अतीव लाभकारी सिद्ध होती है।

यदि दौर्बल्य अधिक मालूम हो तो मुफर्रेह बारिद ५ माशा उपरिलिखित अर्कों के साथ खिला दिया करें।

नींद के लिये जिमाद ख्वाब आवर का प्रलेप मस्तक पर करें। हब्ब ताऊन जवाहरवाली २ गोली या हब्ब ताऊन अंबरी २ गोली, ५ माशा मुफर्रेह बारिद या ५ माशा दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में मिलाकर खिलाना भी अतीव गुणकारक है। मरक काल में हब्ब ताऊन खास ३ गोली अनागतबाधा-प्रतिषेधस्वरूप प्रति दिन प्रातः काल खिलाना उपकारक है।

रोगनिवृत्ति के बाद मस्तिष्क एवं हृदय के बलवर्धनार्थ कुछ दिन तक खमीरा गावजवान जवाहरवाला ५ माशा खिलाकर ऊपर से ४–४ तोला अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा और अर्क बेदमुश्क २ तोला शर्बत सेब मिलाकर पिलाना या १ तोला सेब का मुरब्बा एक नग चांदी के वर्क में लपेट–खिलाकर ऊपर से १२ तोला अर्क गावजबान में २ तोला शर्बत अनार शीरीं मिलाकर पिलाना भी लाभकारी है।

अपथ्य—रोगी का आवास गृह तथा उसकी शय्या एवं वस्त्र आदि स्वच्छ एवं शुद्ध रखें। यदि रोगी बलवान् हो तो प्रारंभ में प्रातः-सायंकालीन सेव्य औषध के अतिरिक्त कोई आहार नही देवें। उष्ण वायु, आतप और तीव्र अग्नि (आँच) से रोगी को बचायें। आराम होने के उपरांत कुछ दिन तक गुरु, उष्ण एवं बाष्पोत्पादक (मुबख्खिर) पदार्थ के सेवन से तथा आलू, अरवी, गुड़, तेल, अम्ल, लाल मिर्च, गरम मसाला, उड़द-चने की दाल, गोभी, चुकंदर, मछली, मूली और खमीरी रोटी आदि से परहेज करायें।

पथ्य—यदि रोगी दुर्बल हो और क्षुधा अधिक मालूम हो तो तीन दिन के भीतर केवल यवमंड के अतिरिक्त और कुछ न देवें। इसके पश्चात् रोगनिवृत्त होने तक लघु एवं शीघ्रपाकी आहार जैसे—दूध, खशका, साबूदाना या खियारैन की खीर और फलों में से अनार, अंगूर, सेब, नासपाती आदि का रस देते रहें। आराम होने के पश्चात् शूरबा, यखनी, अंडा आदि क्रमशः आवश्यकतानुसार देवें। तरकारियों में कुलफा का साग, लौआ, टिंडा और तुरई आदि देवें। जरिश्क, आलूबोखारा या नीबू की खटाई या इमली का मुरब्बा यदि रोगी मांगे तो उक्त अवस्था में दे सकते हैं, जब कि उसे खाँसी न हो।

जल के स्थान में अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजबान, अर्क कासनी इत्यादि बर्फ से शीतल करके पिलाना उपयुक्त एवं उपादेय होता है। यदि दौर्बल्य अधिक हो तो बकरी के मांस का शूरबा, मुर्गी के बच्चे का शूरबा या यख्नी पिलायें।

वक्तव्य—यह एक औपसर्गिक रोग है। अतएव रोगी के मल-मूत्र, ष्ठीवन (थूक), वमित-द्रव्य, गिल्टियों के मल प्रभृति समस्त मलों को लकड़ी का बुरादा या मिट्टी का तेल डालकर भूमि के नीचे गाड़ देना चाहिये जिसमें परिचारक एवं स्वस्थ व्यक्ति इसके उपसर्ग से सुरक्षित रह सकें। महामारी काल में विलायती पपीता (Ignatia amara) ४ रत्ती जल में घिसकर प्रातःकाल पी लिया करें। इसका (विलायती पपीते का) बाहु एवं कंठ में लटकाये रखना मरक के प्रभाव से सुरक्षित रखता है।

द्रष्टव्य—काला बुखार (हुम्मा अस्वद, काल ज्वर—Kala-azar), केहतका बुखार (हुम्मा केहतिय्या, अकाल ज्वर, Famine Fever), हड्डी तोड़ बुखार (हुम्मा सालिबा, अस्थिभञ्जक ज्वर—Break bone Fever), चूहा काटे का बुखार (हुम्मा लजउल्फार, मूषिक दंशज ज्वर—Rat bite Fever), माल्टा बुखार (हुम्मा मल्तिय्यः—Malta Fever), प्रसूत का बुखार (हुम्मा नफासिय्यः, सूतिका ज्वर—Puerperal Fever) प्रभृति कुछ आधुनिक ज्वर जिनका वर्णन यद्यपि आधुनिक यूनानी ग्रंथों में किया गया है, तथापि प्राचीन ग्रन्थों में इनका वर्णन न होने अथवा अति संक्षेप में होने से इस ग्रन्थ में उनका वर्णन नहीं किया गया। यदि आवश्यक समझा गया तो इस ग्रन्थ के किसी आगामी संस्करण में इनका वर्णन समाविष्ट कर दिया जायगा।

परिशिष्ट—२

यूनानी चिकित्सा-सार के योगों[1] का वर्णन

अतरीफल अफतीमून

द्रव्य और निर्माण-विधि—

सूर्यपाकी गुलकंद, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) साफ किया हुआ मधु प्रत्येक ५५ तोले ५ माशे, तीनों को अर्क गुलाब, अर्क गावजबान, अर्क दालचीनी और अर्क फरंजमुश्क (राम तुलसी) प्रत्येक आधा सेर में मिलाकर उबालें और मल-छानकर पाक करें। हरड़, बड़ी और काली हड़, आँवला, गुठली निकाला हुआ जरिश्क प्रत्येक २ तोले ११ माशे, गावजबान, पित्तपापड़ा, उस्तूखुदूस, आकाशवेल, अफसंतीन रूमी (Wormwood), फरंजमुश्क (रामतुलसी) सनाय, बिल्ली लोटन (बादरंजबूया) प्रत्येक २ तोले ½ माशा, बुरादा किया हुआ बसफाइज फुस्तुकी, निशोथ (ऊपर से खुरचकर और भीतर की लकड़ी निकालकर), रासन (अभाव में सोंठ), इन्द्रायन के भीतर का गूदा, रेवंदचीनी, जरावंद मुदहरज (गोल), सौंफ रूमी, बालछड़, गिल अरमनी, लाजवर्द प्रत्येक १ तोला ५॥ माशे, नरम और सफेद गारीकून १०॥ माशे, हब्ब बलसाँ, अगर, दालचीनी, नागकेसर, पहाड़ी पुदीना, नहरी पुदीना, तज, मस्तगी प्रत्येक ७ माशे सबको कूट-छानकर ११ तोले ८ माशे मीठे बादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्ब) कर पाक में मिलाकर अतरीफल बनावें, यदि इसको अधिक गुणकारी बनाना हो तो इयारिज फैकरा ३॥ माशे मिला, गोलियाँ बनाकर सेवन करायें। (यहाँ लिखे योगों में प्रयुक्त हुये असंसृष्ट द्रव्यों तथा 'यूनानी चिकित्सा-सार' के असंसृष्ट द्रव्योपचार में लिखित द्रव्यों के परिचय एवं शुद्धि आदि के लिये तथा कल्पों की निर्माण विधि के लिये इस ग्रंथ के लेखक द्वारा लिखित यूनानी निघंटु विषयक यूनानी द्रव्य गुण विज्ञान नामक वृहद् एवं प्रामाणिक ग्रन्थ का अवश्य अवलोकन एवं परिशीलन करें।)

---

१. यूनानी चिकित्सासारगत उन योगों के पाठ आदि यहाँ नहीं दिये गये हैं जिनका उल्लेख **'यूनानी सिद्ध योग संग्रह'** में हो चुका है। उनके लिये पाठकों को वहीं देखना चाहिये।

मात्रा--५ माशे।

गुण तथा उपयोग--सब प्रकार के उन्माद के लिये अतीव गुणकारी है।

अतरीफल कबीर (वृहत्)

द्रव्य और निर्माण विधि--

काली हड़, काबुली हड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका, बीज निकाला हुआ आँवला, काली मिर्च, पीपल १ तोला ७। माशा, सोंठ, जावित्री, बूजीदान, चीता, शकाकुल मिश्री, लाल और पीली तोदरी, मीठा इन्द्र जौ, लाल बहमन, सफेद बहमन, छिले हुये तिल, सफेद खशखाश (पोस्ता), मग्ज हब्ब कुलकुल (अभाव में सफेद तोदरी) प्रत्येक ८।।। माशे-- सबको कूट-छानकर बादाम के तेल (२ तोले) से स्नेहाक्त (चर्ब) करें। पुनः ६ तोले तुरंजबीन (यवासशर्करा) को पानी में घोलकर और छानकर ३ पाव मधु मिलाकर पाक करें और शेष औषधों के बारीक चूर्ण को मिलाकर अतरीफल बनावें।

मात्रा और सेवन विधि--७ माशे, रात्रि में सोते समय १२ तोले अर्क गावजबान या सादे पानी से सेवन करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--आमाशय, मस्तिष्क तथा नेत्र को शक्ति देता तथा प्रतिश्याय एवं अर्श में लाभप्रद है और वाजीकर भी है।

विशेष गुण कर्म--मस्तिष्क संशोधन एवं बलदायक है।

अतरीफल बादियान (मिश्रेया)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

हड़, काबुली हड़, बहेड़ा, आँवला, धनिया, गुलाब के फूल, सातर फारसी, सौंफ प्रत्येक सम भाग--प्रथम पांच द्रव्यों के बारीक चूर्ण को आवश्यकतानुसार बादाम के तेल से स्नेहाक्त करें। पुनः शेष द्रव्यों के चूर्ण को भी मिलाकर, मिलित कुल द्रव्य से तिगुने शहद में मिलाकर अतरीफल बनावें।

मात्रा और सेवन विधि--१ तोला रात्रि में सोते समय खावें अथवा प्रातः काल १२ तोले अर्क सौंफ से सेवन करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--नेत्र के सब रोगों में लाभकारी है। इसके दीर्घकाल पर्यंत सेवन करने से नेत्र के कोई रोग नहीं होते हैं।

अतरीफल मुक़्ल (गुग्गुल)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

हड़, काबुली हड़, काली हड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १ तोला, शुद्ध गूगल ३ तोले, दाख (मुनक्का) और बादाम का तेल प्रत्येक ४ तोले, गंदना का रस १ पाव, सब मिलित द्रव्य के तिगुना मधु--प्रथम गूगल को गंदना के रस में हल करें और शेष द्रव्यों के चूर्ण को बादाम के तेल में मिलावें, मुनक्का को बीज निकालकर पीस लें और हल किये हुये गूगल में मधु एवं मुनक्का मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर शेष द्रव्यों का चूर्ण दें, बस तैयार है।

मात्रा तथा सेवन विधि--७ माशे, अर्क गावजबान के साथ प्रातः सायंकाल खिलावें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--रक्तार्श और वातार्श में यह अतरीफल परम गुणकारी है तथा कोष्ठ बद्धता नाशक है।

अतरीफल सगीर (लघु)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

हड़, काबुली हड़, काली हड़, बहेड़ा, आमला, मीठे बादाम का तेल प्रत्येक ५ तोले, उत्तम मधु १५ छटाँक--समस्त द्रव्यों को पीस-छानकर बादाम के तेल से स्नेहाक्त कर मधु के पाक में भली भाँति मिलाकर अतरीफल बनावें।

मात्रा और सेवन विधि--७ माशे से १ तोला तक अर्क गावजबान वा जल से रात्रि में सेवन करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--मस्तिष्क की क्षीणता और बुद्धिहीनता को नष्ट करता है तथा अर्श के उपद्रवों में भी यह उपयोगी है।

अतरीफल सनाई (मार्कंडीय)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

सनाय पत्र २० तोला, काबुली हड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक १० तोले, गाय का घी आवश्यकतानुसार, मधु ऽ१।।। सेर--इन द्रव्यों का बारीक चूर्णकर गाय के घी में मिलावें। पुनः मधु के पाक (चाशनी) में भली भांति मिलाकर अतरीफल बनायें।

मात्रा और सेवन विधि--३।। माशे, रात्रि में सोते समय १२ तोले अर्क सौंफ वा जल से सेवन करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग—विबन्ध, उन्माद, शिरःशूल तथा अर्धावभेदक में यह अतरीफल उपयोगी है। साली खोलिया में भी लाभकारी है।

अनोशदारू सादा (साधारण)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

गुलाब पुष्प १॥। तोला, नागरमोथा १ तोला ५॥ माशा, लौंग, मस्तगी, तगर, बालछड़ प्रत्येक १०॥ माशा, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, तालीसपत्र, जावित्री, जायफल, तज, केसर प्रत्येक ७ माशा, गुठली निकाला हुआ आमला ऽ॥, चीनी और मधु दोनों समतोल ६७॥ तोले—आमले को एक रात-दिन दूध में भिगो रखें। इसके पश्चात् धोयें और ऽ१॥ जल में इतना उबालें कि गल जायँ। पुनः उनको चलनी में छानकर गूदा पृथक् कर लेवें। तदुपरांत चीनी और मधु को मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर औषध द्रव्य कूट-छानकर उसमें मिलायें।

मात्रा—४॥ माशा से १३॥ माशा तक।

अर्क अंबर (अग्निजार)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

कस्तूरी ४॥ माशा, अंबर, केशर, मस्तगी प्रत्येक ९ माशा, ताजा रेहाँ पत्र, नागरमोथा, कुलफा, सूखा धनिया, गावजवान के फूल, अनीसून, दरूनज, पिस्ता के बाहर का छिलका प्रत्येक १ तोला १० माशा, नरकचूर, ऊदगर्की, नैपाली धनिया (कबाबा खंदाँ), छडीला, दालचीनी, लौंग, बूजीदान, गुलाब के फूल, बालछड़, लाल बहमन, सफेद बहमन, शकाकुल मिश्री, तमालपत्र, वंशलोचन, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, नारंज का छिलका, कतरा हुआ अपक्व अबरेशम सफेद चंदन प्रत्येक २ तोला, सेब का स्वरस ऽ॥, अनार का स्वरस ऽ१, अर्क बेदमुश्क, अर्क गावजबान, अर्क बादरंजबूया प्रत्येक ऽ२॥, अर्क गुलाब ऽ५—इनमें से कूटनेवाले द्रव्यों को कटकर देग में भरकर अर्क भी सम्मिलित कर देवें और एक दिन बाद अनार और सेब का स्वरस डालकर अर्क निकालें, कस्तूरी आदि को पोटली में बाँधकर नलकी के मुख पर बांधे जिसमें अर्क के बिंदु पोटली में से होकर बोतल में गिरे। दो तिहाई अर्क निकालें।

मात्रा—५ से ७ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग—हृदय, मस्तिष्क तथा यकृत् को बल देता है और क्षीणता एवं मूर्च्छा में यह लाभकारी है।

अर्क केवड़ा (केतकी)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--
केवड़ा पुष्प १ पाव लेकर रात्रि में ऽ५ सेर जल में भिगोयें। प्रातःकाल ऽ२ सेर अर्क निकालें।

मात्रा और सेवन विधि--१० तोला अर्क २ तोला शर्बत अनार डाल कर प्रयोग करें।

गुण-कर्म तथा उपयोग--यह उल्लास प्रद है; हृदय को बल देता है और तृषा (एवं संताप) को कम करता है।

अर्क गुलाब

द्रव्य तथा निर्माण विधि--
ताजा सुगंधित गुलाब के फूल ऽ। लेकर ऽ४ जल में भिगोकर प्रातः ऽ२ सेर अर्क निकालें। यदि इसे दो आतशा और त्रि आतशा करना हो तो इसी अर्क में और गुलाब पुष्प डालकर अर्क निकालें।

मात्रा--५ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय और मस्तिष्क को बल देता है तथा उदर-शूल एवं वात नाशक है।

अर्क नीलूफर (कुमुदिनी)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--
नीलूफर पुष्प (सफेद कुईं का फूल) ऽ१। सेर लेकर रात्रि में बीस सेर जल में भिगोकर प्रातः काल अर्क निकालें।

मात्रा--५ से १० तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय एवं मस्तिष्क को बल देता है, तृषा शान्त करता है तथा प्रतिश्याय एवं शिरः शूल में लाभकारी है।

अर्क बादियान (सौंफ)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--
सवा दो सेर सौंफ को रात्रि में एक मन जल में भिगोकर प्रातःकाल ४० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा--१२ तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--शीतजन्य आमाशय, यकृत् और वृक्क के रोगों (वेदनाओं) में लाभकारी है, यकृदवरोधोद्घाटक तथा वात-विलयक है; दोषों को बाहर निकालता है, विशेषतया वातदोष में उत्तम है।

अर्क बेदमुश्क (वेतस)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

बेदमुश्क पत्र (वा पुष्प) ऽ। रात्रि में चार सेर जल में भिगोकर प्रातः-काल ऽ२ सेर अर्क खींचें।

मात्रा--१० तोला।

गुण-कर्म तथा उपयोग--हृदय और मस्तिष्क को बल देता है तथा तृषा एवं दिल की धड़कन (खफकान) को दूर करता है।

अर्क मत्बूख हफ्तरोजा (साप्ताहिक क्वाथार्क)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

नीम की छाल, कचनार की छाल, इन्द्रायन की जड़, कीकर की फली, छोटी कटेरी का पंचांग, पुराना गुड़ प्रत्येक ऽ= आधा पाव--सब को तीन सेर जल में उबालें, तृतीयांश अर्थात् ऽ१ सेर रहने पर उतार कर छान लेवें। इसकी सात मात्रा करें। इसमें से १ मात्रा प्रति दिन प्रातःकाल सेवन करें और सायंकाल खिचड़ी खावें। यदि इससे प्रवाहिका हो जाय तो इसका सेवन बन्द कर ३ माशा बिहीदाना और ५ माशा रेशा खतमी इनका जल में लुआब निकाल कर २ तोला शकर सफेद (चीनी) मिलाकर प्रयोग करें। यदि एक दिन छोड़कर और प्रतिदिन नया अर्क निकाल कर प्रयोग करें तो प्रवाहिका नहीं होगी।

गुणकर्म तथा उपयोग--रक्तविकार, फोड़े-फुंसी, आमवात तथा उपदंश में अतीव उपकारक है।

अर्क माउज्जुब्न (पनीरजल)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

पीली हड़ का बकला, काबुली हड़ का बकला, काली हड़ का बकला, हरी-गिलोय, बकायनपत्र, बकायन की छाल, नीम की छाल, नीम के बीज (निबौली), विजयसार पुष्प, गावजबान, कासनी बीज, कासनीमूल, हिरनखुरी, इमली के बीज की गिरी, आमले के बीज का मग्ज, बहेड़ा का बकला, सूखा धनिया, मौलसरी

की छाल प्रत्येक १० तोला, पित्तपापड़ा (शाहतरा), चिरायता, सरफोका, मेंहदी की पत्ती, अबरेशम, सफेद और लाल चन्दन का बुरादा, शीशम का बुरादा, सूखा मकोय, गुलाब के फूल, झड़बेरी की जड़ की छाल, भाँग की जड़, बहेड़े की जड़ की छाल, चमेली की पत्ती, आबनूस का बुरादा, उन्नाब, ईख की जड़ प्रत्येक ५ तोला, अमलतास की गुद्दी ऽ।।, माउज्जुबन ऽ।, मजीठ ऽ। सबको एक मन १ऽ जल में भिगो कर प्रातः काल चालीस बोतल यथा विधि अर्क खीचें।

मात्रा और सेवन विधि—१० तोले उपयुक्त औषधियों के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—उल्लासप्रद, शामक और रक्तप्रसादक है। सौदावी रोगों में असीम गुणकारी सिद्ध हुआ है।

अर्क माउल्लहम खास (विशिष्ट मांसरसार्क)

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

बालछड़, तेजपत्ता, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, सफेद बहमन, लौंग, दालचीनी, अगर अपक्व (ऊदखाम), बिजौरे (तुरंज) का छिलका, गावजबान, वूजीदान, छडीला, सफेद चन्दन, बिल्लीलोटन, फरंजमुश्क (रामतुलसी) बीज, गावजबान पुष्प, सूखा धनिया, नर कचूर, सौंफ, दरूनज, मस्तगी, नागरमोथा प्रत्येक ४ तोला, शकाकुलमिश्री, सालममिश्री, गुलाब के फूल, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ६ तोला, बैल की इन्द्री ३ तोला, बकरे का मांस (गोश्त हलवान्) १।ऽ४ चौवीस सेर, बटेर २४ नग का मांस, अर्क बेदमुश्क ऽ६ सेर, अर्क गावजबान ऽ६ सेर, अंगूर, सेब, बिही, रेगमाही, झींगा मछली (माही रोबियाँ), प्रत्येक ऽ३ सेर, सूखी या ताजी झिंगवा मछली ऽ६ सेर, अंबर २। तोला, कस्तूरी २। तोला, मुर्गी का बच्चा १४, साँडा १०—समस्त मांसों की यखनी तैयार कर के उपर्युक्त ओषधियाँ सम्मिलित करें और ८० बोतल अर्क खींचें।

मात्रा और सेवन विधि—५ तोला अर्क उपयुक्त औषधियों के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—उत्तमाङ्गों एवं ओजों (अखलाह) के बलवर्धन के लिये महत्व की औषधि है। सार्वदैहिक बल की वृद्धि करता है। वाजीकर, शुक्रस्तम्भक एवं हृद्य है। हृदय को उल्लसित एवं चित्त को प्रफुलित रखता है। शुद्ध रक्त उत्पन्न करता और चेहरे के रंग को निखारता है।

अर्क माउल्लहम जदीद (विशेष वृहत् योग)

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

छाग मांस ।ऽ१२ बारह सेर (या मस्त सिंह का बच्चा), चटक (गौरा वा चिड़ा) १०० नग, कबूतर, लवा, बटेर प्रत्येक ५० नग, मुर्गी के छोटे बच्चे ३० नग, तीतर २० नग --समस्त मांसों को शुद्ध एवं स्वच्छ (अस्थि आदि से साफ) करके यखनी पकायें अर्थात् २ऽ मन जल में पकावें और १।।ऽ रहने पर छान लेवें। तदुपरान्त उसमें मोमियाई (सत शिलाजीत), जुंदबेदस्तर, नागरमोथा, जदवार, केसर, कस्तूरी, अंबर प्रत्येक १ तोला, गावजबान-पुष्प, कबाबचीनी, बालछड़, वंशलोचन, बस्फाइज, दरूनज, सीसालियूस, ऊदसलीब, साबर फारसी, फितरासालियून, चीता, जावित्री, जायफल, फरासियून, जिर्जीर के बीज, मायए शुतुर ऐराबी, रेगमाही, हब्बुल् कुलकुल (कुलथी के बीज) प्रत्येक २ तोला, अजवायन, शुष्क जूफा, वच (वज तुर्की) प्रत्येक तीन ३ तोला ४।।माशा, दालचीनी, तुंदवेला, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ७ तोला १० माशा, इलियून के बीज, मूली के बीज, इस्पिस्त, बालंगू बीज, तुख्म शर्बती, रैहाँ के बीज, रामतुलसी (फरंजमुश्क) के बीज, रामतुलसी पत्र, सोसन की जड़, आसमान जूनी, बाबूना पुष्प, मगास, बूजीदान, दालचीनी, तज, मस्तगी, नागेसर, छड़ीला, तेजपत्ता, लालचन्दन, उस्तूखुदूस, जरावन्द मुदहरज, झींगा मछली, तालीस पत्र, असारून (तगर गठोडा), बेर (कोकनार) प्रत्येक ४। तोला, सफेद और लाल बहमन, सफेद और लाल तोदरी, ऊदगर्की, शकाकुल मिश्री, मीठा सूरंजान, गावजबान, मीठा इंद्र जौ, बादियान खताई, गुलाब के फूल, छोटी और बड़ी इलायची, बिल्ली लोटन, हंसराज, पुदीना, जिंतियाना, कुलंजन, खरबूजा के बीज, गाजर के बीज, सफेद खतमी के बीज, खुब्बाजी बीज, हब्बतुल्खिजरा (बुन बीज), चिरौंजी (हब्बतुस्सम्न:), कड़ का मग्ज (कुसुम के बीज), बिनौले का मग्ज, लिसोढ़ा, झींगा मछली प्रत्येक ८।। तोला ; चोबचीनी, पीला (पक्व) अंजीर, बीज निष्कासित दाख (मुनक्का), किशमिश प्रत्येक ३४ तोला ; गोखरू का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, मीठी बिही का स्वरस, मीठे अनार का स्वरस प्रत्येक ६८ तोला, खांड (नबात सफेद) ऽ२।। अढाई सेर ४ तोला, ताजे रेहाँपत्र ऽ।। सेर, विलायती उन्नाब १०० नग, केसर, कस्तूरी, अंबर के अतिरिक्त जो औषधद्रव्य कूटने के हैं उनको कूटकर मांसों में डालकर एक अहोरात्रि रहने देवें। दूसरे दिन अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क प्रत्येक २ बोतल, अर्क गावजबान और अर्क खियारशंबर (अमलतास) प्रत्येक ऽ३ सेर,

ताजे गाजर का स्वरस, ईख का रस प्रत्येक ।।ऽ बीस सेर मिलाकर प्रथम बार १२–१४ सेर अर्क प्राप्त करें और इसको पृथक् रखें। पुनः इतना ही और अर्क खींचें। यह द्वितीय श्रेणी का होगा। अर्क निकालते समय अंबर, कस्तूरी और केसर की पोटली अर्क की नाली के मुख पर बाँधे। अंत में सब बोतलों के अर्क को एक मटके में डालकर पुनः बोतलों में भरें। ऐसा करने से सब अर्क एक समान गुणकारी होगा।

मात्रा और सेवन विधि—५ तोला अर्क २ तोला मिश्री, मिश्री या शर्बत अनार मिलाकर सेवन करें। कोई विशेष परहेज नहीं, केवल अम्ल सेवन से बचें।

गुणकर्म तथा उपयोग—पुंस्त्वशक्तिवर्धक (वाजीकर) है तथा क्षीणता एवं दुर्बलता को नष्टकर शरीर को बलवान् एवं मोटा बनाता है। वृक्क को शक्ति देता, वायु को विलीन करता, संधिशूल एवं प्रसेक का निवारण करता और शीतल व्याधियों के लिये रामबाण का काम करता है।

अर्क माउल्लहम कासनी मकोवाला

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

विरंजासिफ, शुकाई, बादावर्द, बिल्ली लोटन, कूटकर छाना हुआ सौंफ, बीज निकाला हुआ मुनक्का, कबर की जड़, इजखिर मूल, मुलेठी, हरा गिलोय, मकोय प्रत्येक १० तोला, गावजबान, गावजबान-पुष्प प्रत्येक ५ तोला—समस्त द्रव्यों को रात्रि में उष्ण जल में भिगोयें। प्रातः हरी कासनी का स्वरस और मकोय का स्वरस जिनमें हर दो द्रव्य ऽ२ सेर पड़े हों डालकर ऽ४ सेर युवा बकरे के मांस की यखनी बनायें और उपर्युक्त औषध-द्रव्य डालकर यथा विधि २० बीस बोतल अर्क खीचें।

मात्रा और सेवन विधि—५ तोला अर्क उपयुक्त औषधि के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—शरीर को बल देनेवाला तथा श्वयथुविलयक है और आमाशय एवं यकृत् की दशा सुधारनेवाला है।

अर्क मुरक्कब मुसफ्फा(फ्फी)खून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शाहतरा (पित्तपापड़ा) पत्र, शाहतरा बीज, चिरायता, सरफोंका, मुंडी, नीलकंठी, ब्रह्मदण्डी, आबनूस का बुरादा, शीशम का बुरादा, सफेद और लाल

चंदन का बुरादा, अफ्तीमून (पोटली में बांधकर) बस्फाइज, उश्बा प्रत्येक ५ तोला, मेंहदी के पत्र, मेंहदी का फूल, नीमपत्र, नीमपुष्प प्रत्येक ७ तोला, नीम की छाल, बकायन की छाल, शीशम की छाल, कचनार की छाल प्रत्येक ऽ। ; उन्नाब, धमासा प्रत्येक ऽ= छटाँक--सबको ।।।ऽ तीस सेर जल में इतना पकायें कि केवल ऽ७ सेर जल शेष रह जाय। तब उसे उतार-छानकर अर्क खीचें (अथवा सबको १६ गुना जल में दो दिन तक भिगोकर, जल से आधा अर्क निकालें)।

मात्रा और सेवन विधि--५-५ तोले अर्क प्रातः-सायंकाल २ तोले शर्बत उन्नाब मिलाकर सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--रक्तशोधन के लिये अनुपम औषधि (परम रक्त-शोधक) है। फोड़े-फुंसी और खुजली को दूर कर देता है। फिरंग (आतशक) और अन्यान्य सौदावी रोगों में गुणकारक है।

अर्क मुसफ्फीखून बनुस्खा कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

नीमपत्र, नीम की छाल, बकायन की छाल, कचनार की छाल, मौलसिरी की छाल, पीत दुद्धी, काला भाँगरा के पत्र, जवासा की पत्र शाखा, गूलर की छाल, मेंहदी के पत्र, मुंडी, शाहतरा (पित्तपापड़ा), सरफोंका, धमासा, विजयसार काष्ठ, नीलूफर पुष्प, गुलाब पुष्प, सूखा धनिया, सफेद चंदन, कासनी बीज, कासनी मूल, मजीठ, बेद सादा के पत्र, शीशम की लकड़ी का बुरादा प्रत्येक १० तोला--समस्त द्रव्यों को ।।ऽ४ चौबीस सेर जल में एक अहोरात्रि भिगोयें। तदुपरांत ।ऽ२ बारह सेर अर्क खीचें। कभी-कभी निबौली, बकायन के बीज, शाहतरा के बीज, तगर, अफ्तीमून, तेजपत्ता, हरा गिलोय, उन्नाब, खस और चिरायता प्रत्येक १० तोला और मिलाते हैं।

मात्रा और सेवन विधि--१२ तोले अर्क २ तोले शर्बत उन्नाब मिलाकर पियें।

गुणकर्म तथा उपयोग--इससे रक्त की शुद्धि होती है, फोड़े-फुंसियों का नाश होता है और चेहरे का रंग लाल एवं स्वच्छ हो जाता है। सूजाक और आतशक (फिरंग) में भी यह अर्क उपकारक सिद्ध हुआ है।

अर्क शीर मुरक्कब (जदीद)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कासनी बीज, गावजवान पुष्प, खीरा-ककड़ी के बीज, वंशलोचन, जहरमोहरा प्रत्येक १ तोला, मकोय, गावजबान, कद्दू का मग्ज, काहू बीज प्रत्येक २ तोला, कुलफा के बीज ३ तोला, सूखा धनिया, लाल और सफेद चंदन प्रत्येक ४ तोला, हरी कासनी के पत्र, हरा कद्दू, काहू पत्र प्रत्येक ४ तोला ८ माशा, कमल पुष्प ५ तोला, कसेरू, बेद पुष्प, कूईं के फूल (नीलूफर पुष्प) प्रत्येक १० तोला, अर्क बेदमुश्क, अर्क शाहतरा, अर्क इनबुस्सालब (मकोय) प्रत्येक ऽ१ सेर, अर्क गुलाब ऽ२ सेर, अर्क बेदसादा ऽ४ सेर, बकरी का दूध ।ऽ दस सेर आवश्यकतानुसार जल मिलाकर ८० बोतल अर्क निकालें। पुनः उक्त अर्क में उतनी ही औषधियाँ और मिलाकर दोबारा अर्क खीचें।

मात्रा और सेवन विधि--५ तोले अर्क प्रातः-सायं और मध्याह्नकाल सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--रक्त शोधक, बल्य, संतापहर और स्निग्धता-संपादक (मुरत्तिब) है। सौदावी रोगों एवं राजयक्ष्मा के लिये रामवाण सिद्ध हुआ है।

इयारिज लूगाजिया

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

इन्द्रायन का गूदा १७।। माशा, भुलभुला हुआ प्याजे अंसल, गारीकून, सकमूनिया, खर्बक स्याह, उशक, एकपोथिया लहसुन (उस्कूर्दियून) प्रत्येक १ तोला ३।।। माशा, अफ्तीमून, कमाजरियूस, एलुआ, गूगल प्रत्येक १०।। माशा, हाशा, हुफारीकून, अनीसून, तेजपात, फरासियून, जोअदा, तज, सफेद मिर्च, बोल (मुरमकी), जावशीर, जुंदबेदस्तर, बालछड़, फितरासालियून, जरावंद तवील, फरफियून, हमामा, सोंठ, उसारए अफसंतीन, प्रत्येक ७ माशा, जिंतियाना, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक ५। माशा--सबको कूट-छानकर यथा प्रमाण श्वेत मधु में गूँधें।

मात्रा--१४ माशा उष्ण जल और मधु से प्रयोग करें। निर्माण के छः मास उपरांत सेवन करें।

टि०--'लूगाजिया' एक यूनानी हकीम का नाम है।

गुण तथा उपयोग--शिरःशूल, अर्धावभेदक, पक्षवध, कम्पवात, व्यंग, किलास और कुष्ठ तथा अन्यान्य शीतल व्याधियों के लिये लाभकारी है।

ए(अ)न्कर्दियाए कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अकरकरा, कलौंजी, मीठा कुट, काली मिर्च, पीपल, बच (वज्ज तुर्की) प्रत्येक ३ तोले, सुदाबपत्र, हिबजत्याना, जरावंद मुदहरज (गोल), हींग, गार का फल (हब्बुल्गार), जुंदबेदस्तर (गन्धमार्जारवीर्य), चीता, राई प्रत्येक १।। तोले, भिलावे का फल-रस (भल्लातक मधु) १६ तोले, अखरोट का तेल वा गाय का घी २ तोले, मधु ५० तोले--सब द्रव्यों को पीस-छानकर घी से स्नेहाक्त करें। पुनः मधु का पाक कर सब द्रव्यों का चूर्ण भल्लातक मधु सहित मिलाकर भलीभाँति घोटें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशे, प्रातःकाल अर्क सौंफ से सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--अर्धांग, अर्दित, स्मृति विकार, तथा मस्तिष्क के अन्य कफज विकार के लिये उत्तम औषध है। पाचक और वाजीकर है।

कुर्स अकाकिया

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अकाकिया (बबूल की छाल तथा पत्र का घनसार), जलाया हुआ कागज प्रत्येक ६ माशा, पीला हड़ताल, लाल हड़ताल प्रत्येक १३।। माशा--सबको ‌ऽ१। सेर बारतंग के स्वरस में खरल करके टिकिया बनावें। यदि थोड़ी मात्रा में पूय (पीप) आ रही हो तो दो-तीन रत्ती खाकर चावलों की पीच (माँड) पी लेवें। यदि अधिक मात्रा में पीप आ रही हो तो जल में घोल कर बस्ति करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--पुरानी प्रवाहिका तथा पीप आने में लाभप्रद है।

कुर्स अफसंतीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मजीठ १४ माशा, बालछड़, इजखिर, रेवंद चीनी, तज, चिरायता प्रत्येक १०।। माशा, मुरमकी (बोल), अनीसून, मस्तगी, जरावंद मुदहरज (गोल), तगर, अफसन्तीन, सोआ के बीज, करफ्स के बीज प्रत्येक ७ माशा--सबको कूट-छानकर सिकंजबीन के साथ टिकिया बनावें।

मात्रा--४।। माशा।

गुणकर्म तथा उपयोग--उदरशूल में अतीव गुणकारी है।

कुर्स गाफिस

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

उसारा गाफिस ५ तोले १० माशा, जटामांसी २ तोला ११ माशा, वंशलोचन १ तोला २ माशा कूट-छानकर गोंद-जल के साथ टिकियाँ बनायें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा कुर्स ७ माशा जुवारिश जरऊनी के साथ उपयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--कामला, यकृत्प्लीहा शूल में तथा जीर्ण चतुर्थक ज्वर में लाभकारी है। आशयगत अवरोध का उद्घाटक है और यह वस्ति-वृक्क गत व्रण का पूरण करता है।

कुर्स गुल

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

गुलाब पुष्प, छिली हुई मुलेठी प्रत्येक १ तोला २ माशा, वंशलोचन, जटामांसी, अफसंतीन प्रत्येक ७ माशा, तुरंजबीन (यवास शर्करा) १०॥ माशा कूट-छानकर अर्क गुलाब के साथ टिकिया बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--१२ तोला अर्क गावजबान या शर्बत कासनी आदि अन्य उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--जीर्ण कफ ज्वरों में उपकारक है।

कुर्स जरिश्क

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

जरिश्क ७॥ तोला, गुलाव पुष्प २॥ तोला, कासनी बीज, कुलफा बीज, खीरा-ककड़ी के बीज का मग्ज १॥ तोला, रेवन्द चीनी, बालछड़ प्रत्येक ६ माशा--सबको कूट-छानकर इसबगोल के लुआब में गूँधकर टिकिया बनावें।

मात्रा--५ माशा।

गुणकर्म तथा उपयोग--संतत पित्तज ज्वर में गुणकारी है तथा यकृत् की उष्णता को नष्ट करता ह।

कुर्स तबाशीर (वंशलोचन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कुलफाबीज, गुलाबपुष्प, गिल अरमनी, गुलनार, वंशलोचन, काहू-बीज प्रत्येक १ तोला--सबको कूट छानकर जल से टिकिया बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--५ तोला अर्क गावजबान १२ तोले के साथ देवें।

गुणकर्म तथा उपयोग--मधुमेह में गुणकारी है।

कुर्स तबाशीर काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कपूर ३।। माशा (या ३ माशा), सफेद बंशलोचन, गुलाब पुष्प, सफेद चंदन खीरा के बीज का मग्ज, ककड़ी के बीज का मग्ज, कासनी-बीज, काहू बीज, तोरक बीज प्रत्येक १।। तोला--सबको कूट-छानकर यथावश्यक इसबगोल के लुग्राब में गूँधकर टिकिया बनायें।

मात्रा--४।। माशा।

गुण तथा उपयोग--उष्ण कास, राजयक्ष्मा, आन्त्रिक सन्निपात ज्वर (तप मोहरिका) में लाभदायक है और तृषा को शान्त करता है।

टि०--छः मास तक इसमें वीर्य रहता है।

कुर्स मुलय्यिन (मृदुसारक)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

काबुली हड़, काली हड़, बहेड़ा, आमला, निशोथ प्रत्येक १।। तोला, सौंफ, मस्तगी, उस्तूखुद्दूस, रेवंद चीनी, प्रत्येक ३।।। तोला, सकमूनिया ७।। तोला--सबको बारीक करके १-१ माशा की टिकिया बना लेवें।

मात्रा--२ से ४ टिकिया जल से।

गुणकर्म तथा उपयोग--कोष्ठबद्धता नाशक और उदर शोधक है।

कुर्स सरतान काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कपूर कैसूरी १ माशा, सफेद, पीला और लाल चंदन प्रत्येक २ माशा, काहू-बीज ३ माशा, बबूल का गोंद, कतीरा-गोंद, बंशलोचन, गुलाब पुष्प प्रत्येक ४ माशा, मुलेठी, रुब्बुस्सूस (सत मुलेठी) प्रत्येक ५ माशा, निशास्ता (गोधूम सत्व), काला कुलफा प्रत्येक ७ माशा, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज, खरबूजा के बीज का मग्ज, पोस्ते का दाना, प्रत्येक ९ माशा, केकड़े की मसी १ तोला--सबको कूट-छानकर इसबगोल के लुग्राब से टिकिया बनावें।

मात्रा--७ माशा प्रातः काल अर्क गावजबान से देवें।

गुणकर्म तथा उपयोग--यक्ष्मा, रक्तपित्त, खाँसी और जीर्ण ज्वर में गुणकारक है।

कुहल काफूर(री)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कालीमिर्च, पीपल, केसर, बालछड़ प्रत्येक १४ माशा, रसवत ७ माशा (पाठभेद से ७ तोला), कपूर ३ माशा--समस्त द्रव्यों को महीन खरल करके नेत्रांजन (सुर्मा) बनायें।

मात्रा और सेवनविधि--प्रातः सायंकाल सलाई से नेत्र में लगायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--नेत्र की गर्मी और ललाई को दूर कर ठंढक उत्पन्न करता है।

कुहल बयाज (शुक्लहर नेत्रांजन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

जलाया हुआ ताँबा (मिस सोख्ता), धोया हुआ शादनज (शादनज मग्सूल) प्रत्येक ५ माशा, रूपामक्खी (अक्लीमियाए फिज्ज) २ माशा, जंगार, एलुआ, बूरए अरमनी प्रत्येक १ माशा, काली मिर्च, पीपल, केशर प्रत्येक ४ रत्ती--सबको कूट-छानकर सुर्मा बनायें।

मात्रा और सेवनविधि--प्रातः और रात्रि में सलाई से नेत्र के भीतर लगायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--नेत्र के जाले, फूले और नाखूना (अर्म) को काटता और धुंध का नाश करता है।

कुहल बासलीकून

देखें-'बासलीकून'।

कुहल रोशनाई

देखें-यूनानी सिद्धयोग संग्रह में 'रोशनाई' का योग।

कुहल सद्फ (शुक्ति)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

जली हुई सीप ४ माशा, भुना हुआ और धुला हुआ नीला थोथा (तूतिया किरमानी) ८ माशा, मिश्री ६ माशा--सबको सुरमें की भाँति खरलकर सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा सेवन विधि--प्रातः सायंकाल सुरमे की भाँति नेत्र में लगाया जाता है।

गुणकर्म तथा उपयोग--नेत्र की ज्योति को तीव्र एवं पुष्ट करता है। नेत्र की लाली को काटता है और नेत्र को शीतल करता है। समस्त रोगों से नेत्र की रक्षा करता है।

कुहलुल् (कुहल) जवाहर (रत्नाञ्जन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सुरमा अस्फहानी, संगबसरी (तूतियाए हिंदी), केशर, सूर्ख याकूत (मानिक), धोया हुआ लाज़वर्द, जलाये हुए ताँबे की मैल (तोबाल मिस सोख्ता) प्रत्येक ७ माशा, सोना, सोनामक्खी (मारक शीशा), रक्त मूँगा, दहनाफिरंग, लाल अकीक, चाँदी, चीनी ममीरा, सफेद मिर्च, पीपल, रूपा मक्खी (अक्लीमियाए नुकरा), जलाया हुआ ताँबा (रूय सोख्ता) प्रत्येक १४ माशा, नहरी केकड़ा, अनविध मोती, तेजपत्ता प्रत्येक १ तोला ९ माशा, समस्त द्रव्यों को अर्क केवड़ा में खरल करके सुरमा तैयार कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--रात्रि में सोते समय एक सलाई नेत्र में लगायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--ज्योति को तीव्र एवं बलवान् करता है। इसके उपयोग से ऐनक की आवश्यकता नहीं रहती। नेत्र को समस्त रोगों से सुरक्षित रखता है और ज्योति (दृष्टि) को स्थिर रखता है। नेत्र के लिये परमोपयोगी सुरमा (अंजन) है।

खमीरा अबरेशम शीरा उन्नाब वाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कैंची से कतर कर कीट आदि निकालकर जल से धोया हुआ अबरेशम खाम (अपक्व) १५ तोला ऽ१।।। सेर वर्षा के पानी में रात्रि में भिगो रखें और प्रातः

काल अग्नि के ऊपर उबालें तथा १।। पाव रहने पर छान लेवें। पुनः इसमें मीठे सेब का स्वरस, खट्टे सेब का स्वरस, मीठे और खट्टे अनार का स्वरस, मीठे अंगूर का स्वरस, बिही के फल का स्वरस, उन्नाब का स्वरस (उन्नाब को जल में पीस-छानकर प्राप्त करें) प्रत्येक ३ तोला, गावजबान का स्वरस ६ माशा (इसे भी जल में पीस-छानकर प्राप्त करें), सफेद चंदन का स्वरस ३ तोला (इसे गुलाब में पीसकर छान लेवें)--इन समस्त स्वरसों को मिलावें। पुनः उसमें अर्क गुलाब और मिश्री प्रत्येक १५ तोले, तथा मधु १० तोले मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर उसमें ३ माशे केसर, २-२ माशे कस्तूरी और अंबर, आवश्यकतानुसार वंशलोचन में खरल कर अंत में मिलावें तथा घोंटने से घोंटें। कुछ हकीम शीतलता के विचार से इसमें अर्कबेदमुश्क १४ तोले और तरबूज का पानी ३ तोला और मिलाते हैं।

मात्रा--५ माशे खमीरा १२ तोले अर्क गावजबान के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--यह खमीरा उन्माद, हृदय डूबना, राजयक्ष्मा, रक्तपित्त और शुष्क कास में लाभकारी है। यह पाचन शक्ति एवं दृष्टि को बल देता है।

खमीरा अबरेशम हकीम इर्शादवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कैंची से कतरकर भीतर का कीड़ा निकाला हुआ अबरेशम खाम (अपक्व) ४२ तोले, अगर (ऊद गर्की), बालछड़, नारंज के ऊपर का सूखा छिलका, मस्तगी, लौंग, छोटी इलायची, तेजपत्ता, सफेद चंदन प्रत्येक ५ माशा--समस्त द्रव्यों के महीन चूर्ण को अबरेशम सहित एक पोटली में बाँध लेवें। पुनः अर्क गावजबान बेदमुश्क और गुलाब तथा सेब का स्वरस, अनार का स्वरस और बिही के फल का स्वरस प्रत्येक १४ तोला और वर्षा-जल (या सादा पानी) ऽ२ सेर मिलाकर स मिश्रित जल में उक्त पोटली डालकर इतना उबालें कि दोनों सेर वर्षा-जल जल जाय। तदुपरांत पोटली निकाल लेवें। अब इस क्वाथ जल में ऽ। मधु और ऽ।।। मिश्री मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर इसमें अंबर अशहब, सोने और चाँदी के वर्क ६-६ माशा, मोती, मानिक (याकूत), हरा संगयशब, कहरुवा शमई और प्रवाल ९-९ माशा, कस्तूरी, केसर प्रत्येक ५ माशा खूब भली प्रकार खरल करके मिश्रित करें और इतना घोंटें कि रंग श्वेत आ जाय। पुनः उसे चीनी वा शीशे के मर्तबान में रखें।

मात्रा—३ माशे खमीरा ७ तोले अर्क गावजबान, ५ तोले अर्क गाजर से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग–शरीर के विशिष्ट अंगों को बल देता है, दिल डूबना, उन्माद तथा वातिक रोगों में अतीव गुणकारी है। पित्तजनित जीर्ण प्रतिश्याय में भी लाभप्रद है। यूनानी वैद्यक की एक विशेष एवं महत्वपूर्ण औषधि है।

खमीरा गावजबान अंबरीजदवार ऊदसलीबवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

खमीरा गावजबान अंबरी के पाक में जदवार और ऊदसलीब १-१ तोला अंबर के साथ खरल करके मिलायें।

मात्रा—३ माशे।

गुणकर्म तथा उपयोग—शरीर को दृढ़ (बलवान्) बनाता है तथा अर्दित, अर्धाङ्ग, वातकम्प, अपस्मार, अपतन्त्रक, बालग्रह में अति उपयोगी है और हृदय एवं मस्तिष्क को बलवान् बनाता है।

खमीरा गावजबान अंबरी जवाहरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि —

'खमीरा गावजबान अंबरी वर्क तिला वाले (खमीरा गावजबान अंबरी में ६ माशे सोने के वर्क मिला खमीरा) में मोती, मानिक (याकूत), पन्ना (जमुरंद), और जहरमोहरा प्रत्येक ४।। माशे खरल करके मिश्रित करें।

मात्रा और सेवनविधि—५ माशे खमीरा अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—उपर्युक्त।

खमीरा संदल (चन्दन)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेद चंदन का बुरादा ७।। तोला ʃ।। अर्क गुलाब में एक दिन-रात भिगो रखें। तपुपरांत क्वाथ कर छान लेवें और ʃ१ सेर चीनी मिलाकर अग्नि के ऊपर रखें और खमीरा की विधि से पाक करें। पाक सिद्ध होने पर घोंटने से घोट लेवें।

मात्रा और सेवनविधि–७ माशा से १ तोला तक खमीरा १२ तोले अर्क गावजबान से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—हृदय डूबना, हृदय की अति धड़कन और तृषा आदि में परम उपयोगी है।

खमीरा संदल तुर्श

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

घिसा हुआ सफेद चंदन ८।।। तोला, छिला हुआ सफेद धनिया १ तोला ५।। माशा—दोनों को कच्चे अंगूर के स्वरस २६ तोला २ माशा, अंगूरी सिरका २ तोला ११ माशा, वर्षा-जल ऽ१ सेर, अर्क गुलाब ऽ।।, अर्क बेदमुश्क ऽ।। में एक दिन-रात भिगोये रखें। इसके बाद इतना उबालें कि आधा शेष रह जाय। तदुपरांत हाथ से मलकर क्षौम वस्त्र (अलसी के बारीक कपड़े) में छान लेवें। पुनः चीनी ऽ१ सेर मिलाकर चाशनी बनायें। पुनः घिसा हुआ चंदन और वंश-लोचन प्रत्येक २ तोला ११ माशा, अविध मोती, हरा यशब (दोनों खरल किये हुये) केसर प्रत्येक ३।। माशा, कैसूरी कपूर २। माशा कूट-छानकर सोने के वर्क, चाँदी के वर्क प्रत्येक १।।। माशा, सबको उसमें गूँधें।

मात्रा—१ १०।। तोला माशा।

गुण तथा उपयोग—हृदय की उष्ण विप्रकृति, हृदयदौर्बल्य, हृदय की धड़कन, पित्तज ज्वर, पित्तज अतिसार, उत्क्लेश और पित्तज वमन के लिये गुणकारक है।

जरूर अब्यज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अंजरुत, चाकसू प्रत्येक १ भाग, कलौंजी, निशास्ता प्रत्येक आधा भाग, सफेदा वंग चौथाई भाग—सबको खरल करके अवचूर्णन करें।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यंद को दूर करता, नेत्रगत क्लेद को सुखाता और बालकों के नेत्ररोगों के लिये लाभप्रद है।

जरूर अस्फर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गदही के दूध में परिपालित अंजरूत १ तोला ५।। माशा, शियाफ मामीसा ७ माशा, एलुआ, केसर, गुलाब-बीज प्रत्येक १।।। माशा, अफीम १ माशा—सबको बारीक पीसकर रेशमी कपड़े में छानकर उपयोग करें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रशूल के लिये गुणकारक है।

जिमाद किबरीत (गन्धकादि लेप)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गंधक २।। तोला, गूगल, उशक, सकबीनज, तुर्मुस, मेथी, हरमल, अलसी, सुदाबपत्र, इक्लीलुल् मलिक (नाखूना) ३-३ तोला, अंजीर जर्द १० दाना-- प्रथम गोंददार औषध द्रव्य को तथा अंजीर को अंगूरी सिरका में एक दिन रात भिगोंये। पुनः भली भाँति खरलकर शेष समस्त द्रव्यों का चूर्ण कर मिला देवें और सुरक्षित रखें। अर्ध उष्ण करके प्लीहा के ऊपर इसका लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--प्लीहावृद्धि में उत्तम लेप है।

जिमाद खद्र (सुन्नताहर लेप)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सोंठ १ तोला १० माशा, काली मिर्च, अकरकरा प्रत्येक १ तोला १।। माशा, लौंग, फरफियून प्रत्येक १ तोला, कलौंजी ६ माशा, गुलरोगन आवश्यकतानुसार-- सबको कूट-पीसकर गुलरोगन में अग्नि पर लेप तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि--सुन्न (खद्र) स्थान के ऊपर यथावश्यक लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--सुन्नता निवारण के लिये परीक्षित है।

कण्ठमालाहर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

एलुआ, बोल (मुरमकी), नाखूना (इकलीलुल्मलिक) अलसी, ईरसा प्रत्येक २ माशा, उशक, चिरायता, कड़वा कुट, हींग, मेथी, काली मिर्च, पीपरामूल, जरावंद मुदहरज (गोल), फरफियून, विरोजा प्रत्येक १ माशा-- सबको कूट-पीसकर यथावश्यक सिरका और गुलरोगन में लेप तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि--हरे गिलोय के स्वरस में घिसकर ग्रन्थियों (गिल्टियों) के ऊपर लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--कण्ठमाला में लाभकारी है।

निद्राकर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

हरे धनिये का स्वरस २ तोला, शुद्ध सिरका, गुलरोगन, सफेद चंदन, काहू-बीज, नीलूफर-बीज (बेरा), कुलफा के बीज प्रत्येक ३ माशा, कपूर १ माशा, अफीम ४ रत्ती, केसर ४ रत्ती--सबको पीसकर मिला लेवें, अग्नि के ऊपर नहीं रखें। केवल खरल करके लेप प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवनविधि--आवश्यकतानुसार मस्तक के ऊपर धीरे-धीरे मर्दन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--नींद लाने के लिये सर्वोत्तम वस्तु है।

वृषणशोथहर लेप

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बाबूना, इक्लीलुल्मलिक (नाखूना), कैसूम प्रत्येक २ तोला, बनफशा पुष्प, खतमी पुष्प प्रत्येक १।। तोला, गुलाब पुष्प ६ माशा--सबको कूट-छानकर चूर्ण करें और अलसी के जलीय स्वरस में मिलाकर लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--वृषणशोथ के लिये गुणकारक एवं शोथनाशक है।

जवारिश अनारैन (दाडिमद्वय)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मीठे और खट्टे अनार का स्वरस प्रत्येक ऽ२ सेर, हरे पुदीना का रस, अर्क गुलाब प्रत्येक ८ तोले २ माशा, बालछड़, मस्तगी प्रत्येक ७ माशा, चीनी (कंद सफ़ेद) ऽ१ सेर--उपर्युक्त रसों और अर्क में खाँड़ मिलाकर चाशनी करें और शेष द्रव्यों को कूट-छानकर उसमें मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशे जुवारिश ५-५ तोले अर्क गावजबान और अर्क गाजर के साथ खिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--यकृत् और आमाशय को बल देती है, भूख लगाती है, बढ़ी हुई गर्मी और पित्त को शमन करती है तथा वमन और मिचली को रोकती है।

जुवारिश कमूनी कबीर (वृहत् जीरकादि खाण्डव)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

दालचीनी, कालीमिर्च, सफेद मिर्च, बूरा अरमनी, प्रत्येक ७ माशा, सुदाब-पत्र १ तोला, शुद्ध स्याहजीरा ४। तोला, सोंठ का मुरब्बा ३ तोला, हड़ का मुरब्बा ५ तोला, सूर्यतापी गुलकंद ८ तोला, चीनी (खांड) २० तोला, मधु १० तोला—प्रथम गुलकंद और मुरब्बों को जल में बारीक पीस लेवें और खांड मिलाकर अग्नि के ऊपर रखें। पाक सिद्ध होने पर शेष द्रव्यों का चूर्ण डालकर जुवारिश तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे अर्क सौंफ से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—उदरस्थ वातविकार, वातिकशूल, आध्मान, हिक्का अजीर्ण तथा वातोदर का नाश करती है और रेचक भी है।

जुवारिश कमूनी मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कृष्ण जीरा १५ तोले, सफेद निसोथ ७।। तोले, विलायती आकाशबेल ५ तोले, काली मिर्च, सोंठ, पीपल प्रत्येक २।। तोले, पुदीना, सुदाब-पत्र, सातर फारसी, बूरा अरमनी प्रत्येक १५ माशे, समस्त द्रव्यों से तिगुना मधु, यथाविधि पाक करें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ प्रयोग करें। विरेचन गुण की वृद्धि के लिये इसे १ तोला की मात्रा में देवें और ऊपर से ६ तोले अर्क सौंफ, ६ तोले अर्क मकोय ४ तोले शर्बत दीनार मिलाकर पिलावें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह आमाशय और अन्त्र के मल एवं दोषों का शोधन करती है, मुख की विरसता, लालास्राव एवं कफज रोगों में लाभकारी है, आमाशय को बल देती है तथा वायु विकारों के लिये उपकारक है।

जुवारिश जंजबील

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जायफल १ नग, केसर २।। माशा, लौंग, दालचीनी प्रत्येक १ तोला ५।। माशा, बबूल का गोंद, छोटी इलायचीं, प्रत्येक २ तोला ११ माशा,

निशास्ता, सोंठ प्रत्येक ११ तोला ८ माशा, (कंद सफेद) ३४ तोला—सब द्रव्यों को बारीक पीस कर खाँड़ की चाशनी करके मिलायें और जुवारिश तैयार करके रख लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—४ माशा, यह जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ या अन्य उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—वायु को विलीन करती है, भोजन को पचाती एवं अग्नि को दीपन करती (आमाशय बलप्रद) है। आमाशयदौर्बल्य (अग्निमान्द्य) और अजीर्ण में भी लाभप्रद है।

जुवारिश जरऊनी अंबरी

द्रव्य और निर्माणविधि—

सालममिश्री, बैल के शिश्न का शुष्क चूर्ण, चिडा (चटक) के शिरका मग्ज, मीठा चिरायता, छुहारा, गोखरू—प्रत्येक ९ माशा, करफ्स-बीज, गाजर-बीज, शलगम के बीज, सोआ के बीज, खरबूजा के बीज, खीरा-ककड़ी के बीज, हब्बुल् कुलकुल-बीज, हब्बुल्जल्म, अजवायन, सौंफ, खोपरा, चिलगोजा के बीज, करफ्स की जड़—प्रत्येक २२ माशे, अम्बर अशहब ९ माशे, कस्तूरी २। माशे, जावित्री, लौंग, पिपरामूल, अकरकरा, कबाबचीनी, सोंठ, पान की जड़, जायफल, गुलाब-पुष्प, तज, पीपल, शालगम-बीज, जिर्जीर-बीज, प्याज-बीज, गन्दना-बीज, हालों (हब्बुर्रशाद), अंजुरा-बीज—प्रत्येक १० माशे, केशर, कुंदुर, मस्तगी रूमी, अगर—प्रत्येक १४ माशे, हालों के बीज, बूजीदान, लाल बहमन, सफेद बहमन, शकाकुलमिश्री, मीठा इन्द्र जौ—प्रत्येक १।। तोला, खांड़ ५२ तोले, मधु ऽ१ सेर—प्रथम खाँड और मधु का पाक करें और औषध द्रव्य का चूर्ण कर, कस्तूरी अम्बर, केशर को भी बारीक करके चूर्ण में मिलाकर खरल करें। पुनः इस चूर्ण को पाक सिद्ध होने पर उसमें मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि—५ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह जुवारिश विशेष कर के वृक्क एवं मूत्राशय को बल देती है; कटि को बलवान् बनाती है; यकृत् तथा मस्तक के लिये बलप्रद है। मूत्राधिक्य, वातरक्त, कफज कास वा अन्य कफज एवं वातज उपद्रवों को शान्त करती है; वीर्य को बढ़ाती है; तथा वाजीकरण है।

जुवारिश तमरहिन्दी (अम्लिका)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बीजों तथा छिलकों से शुद्ध की हुई इमली ७४ तोले, बीज निकाली हुई द्राक्षा (मुनक्का) ३७ तोले (उभय अंगूरी सिरका में डाली हुई), अनारदाना ३७ तोले-सब को पृथक्-पृथक् कूट कर बारीक करें। अनारदाना को कपड़े में छान लेवें। तदुपरान्त ꠰१ सेर खाँड (कंद सफेद) की चाशनी करके शेष औषधि सम्मिलित करके चलाते रहें और उसी के बीच कागजी नीबू का रस या अंगूरी सिरका और खट्टे अनार का रस थोड़ा-थोड़ा डालते रहें। अन्त में काली मिर्च, लौंग, तज, सोंठ, जायफल, छोटी इलायची का दाना, बड़ी इलायची का दाना, सूखा पुदीना प्रत्येक ६ माशा कूट-छान कर मिलायें और जुवारिश तैयार करके सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा यह जुवारिश १२ तोले अर्क गावजबान या १२ तोले अर्क सौंफ से खिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--हृदय, यकृत और मस्तिष्क को बल प्रदान करती है। पित्तज वमन एवं अतिसार को नष्ट करती है और खूब क्षुधा उत्पन्न करती है।

जुवारिश दारचीनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

छोटी (सफेद) इलायची, तज प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, अनीसून, सौंफ, दालचीनी प्रत्येक १०।।माशा, लौंग, काली मिर्च, पीपल, बालछड़, तगर (असारून) प्रत्येक १७।। माशा, दालचीनी ४२ माशा, अगर, रासन (अभाव में सोंठ) प्रत्येक २१ माशे, पुदीना २८ माशे, सोंठ ३५ माशे—सब को पीस कर तिगुने शुद्ध मधु की चाशनी में जुवारिश तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि--५ से ७ माशे, यह जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ या अर्क गावजबान के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--वृक्क, मूत्राशय और आमाशय की दुर्बलता को दूर करती है। सांद्र एवं दूषित वायु और सान्द्र दोषों को निकालती है।

जुवारिश बस्बासा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

तज, छोटी इलायची का दाना, सोंठ, पीपल, दालचीनी प्रत्येक ३।। माशा, जावित्री ७ माशा, लौंग ८। माशा, काली मिर्च ७ माशा, बड़ी इलायची का दाना १।। तोला, खाँड़ (कंद सफेद) ६ तोला, शुद्ध मधु ३ तोला—खाँड़ वा चीनी और मधु की चाशनी बनाकर शेष द्रव्यों को बारीक पीस कर मिलावें और जुवारिश बनाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि—४ माशा यह जुवारिश अर्क सौंफ से खिला दिया करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—बादी बवासीर के लिये गुणकारी है। आमाशयस्थ शीतका निवारण करती है, वायु को विलीन (नष्ट) करती है और भोजन को भली-भाँति पचाती है।

जुवारिश मस्तगी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मस्तगी रूमी २। तोला, अर्क गुलाब १७।। तोला, मिश्री (नबात सफेद) ऽ१ सेर—अर्क गुलाब में मिश्री की चाशनी करें। जब शीत हो जाय, तब मस्तगी पीस कर मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—लालास्राव को नष्ट करती है, आमाशय के दूषित स्राव को शुष्क करती है। मूत्र की अधिकता एवं अतिसार को रोकती है; आमाशय और अन्त्र को बल देती और कफज रोगों में अतीव गुणकारी है।

जुवारिश मस्तगी बनुस्खा कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मस्तगी रूमी, गोलमिर्च, देशी अजवायन, कबाबचीनी, अजमोद, सिरका में शुद्ध किया हुआ कृष्ण जीरा, गुलाब-पुष्प, शोधित सफेद जीरा, बिजौरे का छिलका, कासनी बीज, सौंफ, कुंदुर, सूखा धनिया, बिल्लीलोटन, गावजबान-पुष्प, नरकचूर, बालछड़, केसर प्रत्येक २१ माशा, दालचीनी, सोंठ,

छोटी इलायची प्रत्येक ६ माशा—सब औषध के बराबर मिश्री (नबात सफेद) मिला, यथाविधि जुवारिश बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—कफजनित आमाशय और यकृत् की दुर्बलता को दूर करती है, मूत्र एवं लालास्राव की अधिकता को रोकती है और कफज अतिसार के लिये लाभकारी है।

विशिष्ट गुण—बाष्पावरोधक है।

जुवारिश संदलैन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कस्तूरी १।।। माशा, मस्तगी, केशर, प्रत्येक ३।। माशा, अनविध मोती, गहरे लालरंग का मूँगा, भुने और छिले हुए कुलफा के बीज, सूखा और भुना हुआ धनिया, पिस्ता के बाहर का छिलका प्रत्येक ७ माशा, लाल चन्दन ३५ माशा, अर्क गुलाब में घिसा हुआ सफेद चन्दन ७० माशे, अर्क गुलाब ८ तोला ६ माशा, बिजौरे (तुरंग) का स्वरस १४ तोले ७ माशे, खाँड़ (कंद सफेद) ऽ१ सेर—अर्क गुलाब में खाँड को हल करके पाक करें और पाक के पश्चात् तुरंज का स्वरस तथा मधु मिलाकर गाढ़ा करें। अब सब औषध-द्रव्य का महीन चूर्ण कर पाक में मिला कर जुवारिश तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि–५ माशे से ६ माशे तक,यह जुवारिश ३ तोले अर्क अंबर अथवा अर्क गावजबान या अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ६ तोले के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—आमाशय दिल-दिमाग तथा यकृत् को बल देती है। दिल की धड़कन को दूर करती, पैत्तिक अतिसार को नष्ट करती और हृदयगत ऊष्मा को शान्त करती है।

जुवारिश सफरजली मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिलका एवं बीज रहित ऽ।। सेर बिही को ऽ।।। उत्तम सिरका में उबालें। जब बिही भली भाँति मृदु हो जाय तब पीसकर मलीदा करें। पुनः इसमें ऽ।।। मधु मिलाकर पाक करें। अब छोटी व बड़ी इलायची प्रत्येक २२ माशे, सोंठ, मस्तगीरूमी प्रत्येक १।। तोला, पीपल, दालचीनी, केसर प्रत्येक १०।। माशा,

भुलभुलाया हुआ सकमूनिया ३ तोले, निशोथ ८।। तोले का चूर्ण कर पाक में मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशे जुवारिश १२ तोले अर्क सौंफ के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह जुवारिश रेचक है, अन्त्र को मल तथा दोषों से शुद्ध करती है। उदरशूल और अन्त्रशूल को भी नष्ट करती है तथा आमाशय-बलदायक एवं पाचक है।

जौहरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

संखिया, रसकपूर, दार चिकना प्रत्येक समानभाग, उत्तम ब्रांडी (सुरा) छः गुना में इसे भली भाँति खरल करके प्रसिद्ध विधि से सत्व उड़ायें।

मात्रा और सेवनविधि—१ चावल कैपशूल के भीतर रखकर निगलवायें। अम्ल पदार्थों से परहेज करायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—फिरंग (आतशक) के लिये रामबाण है और समस्त सौदावी रोगों में लाभ करती है।

तिला आला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सिंहवसा, शूकरवसा प्रत्येक १।। तोला, लौंग, जावित्री, केशर, मालकँगनी, अजवायन खुरासानी, लहसुन, हीराहींग, कपूर, सुहागा (सौभाग्य) मनुष्य के कान की मैल, हिंगुल, कनेर की जड़ की छाल प्रत्येक १।।। तोला, बीरबहूटी, जायफल, केचुआ, बछनाग, सफेद घुंघची, अकरकरा, दालचीनी, जुंद बेदस्तर प्रत्येक १४ माशा, सूखी जोंक ७ नग, छः घरेलू चिड़े का मग्ज, मेंढक का मग्ज, भिलावाँ प्रत्येक ४ नग, प्याज नरगिस, साँडा की चर्बी तथा मग्ज, नेवले की चर्बी तथा मग्ज प्रत्येक २ नग—सब को १२ प्रहर तक खरल कर एक जीव करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यह तिला शिश्न का टेढ़ापन तथा दुर्बलता को दूर करता है और उसे लंबा, मोटा एवं दृढ़ करता है।

तिला जदीद

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सफेद संखिया २।। तोला को आक के ५ तोला दूध में खरल करें। तत्पश्चात् बीरबहूटी, जावित्री, लौंग, अकरकरा, जायफल प्रत्येक ६ तोला इसमें खरल करें। पुनः केशर, कस्तूरी, प्रत्येक १ तोला ८ माशा मिलाकर खरल करें। अन्त में ऽ१ सेर गाय के घी में खरल करके रखें।

मात्रा तथा उपयोग विधि--चार चावल वा १ रत्ती मुण्ड और सीवन छोड़ कर केवल ऊपर के भाग में लगाकर मर्दन करें। ऊपर से बंगलापान गरम करके लपेट देवें और पान पर कच्चा सूत लपेट देवें। प्रातः काल उष्ण जल से धो डालें। यदि सेवनकाल में फुंसियाँ निकल आवें तो तिला न लगाकर चमेली का तेल कुछ दिन लगावें। फुन्सियाँ अच्छी होने पर पुनः तिला लगावें।

गुण तथा उपयोग--ध्वज भंग को नष्ट करता; शिश्न में उत्तेजना तथा दृढ़ता उत्पन्न करता है।

तिला सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

शिंगरफ (हिंगुल), जमालगोटा प्रत्येक २ तोला, संखिया ३ माशा, मोम ४ तोला, गाय का मक्खन १२ तोला--प्रथम औषध-द्रव्य को बारीक खरल कर मोम को मक्खन में पिघलाकर औषधचूर्ण मिला देवें और सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--२ रत्ती तिला लेकर मुण्ड (सुपारी) और सीवन बचाकर केवल ऊपर के भाग पर मर्दन करें।

गुण तथा उपयोग--शिश्नेन्द्रिय के साधारण दोष को दूर करता है और कुछ दिनों के सेवन से शक्ति उत्पन्न करता है।

तूतियाए कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

संगबसरी २ तोला, सोने का वर्क ३ माशा, लौग, अनविध मोती, गोलमिर्च प्रत्येक एक माशा--प्रथम संगबसरी को गरम करके गोमूत्र में एक सौ एक बार बुझावें; पुनः कोयले की अग्नि पर लाल करके जल में बुझा कर उसका वाहरी आवरण (छिलका) दूर कर देवें। पुनः समस्त द्रव्यों को अर्क गुलाब में खरल करें और आवश्यकतानुसार मक्खन मिला कर कागजी नीबू के रस में इतना खरल करें कि चिकनाहट दूर हो जाय। इसको सुखा कर सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा उपयोगविधि—दो चावल से ४ चावल तक ७ माशे जुवारिश बस्बासा या माजून संगदानामुर्ग में मिला कर सेवन करें। उष्ण, वादी एवं गरिष्ठ भोजन से परहेज करें। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में कर सकते हैं।

गुण तथा उपयोग—आमाशय तथा अन्त्र को बल देती है और अतिसार को बन्द करती है।

दवाउल् कुर्कुम सगीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

केसर असली, तज, बालछड़ प्रत्येक ७ माशा, फुक्काअ (गोया) इजखिर, बोल, कुट, दालचीनी प्रत्येक ३।। माशा—सब द्रव्यों को कूट-छानकर एक दिन-रात अंगूरी मदिरा में भिगो रखें,। पुनः तिगुने शहद में मिला लेवें।

मात्रा तथा गुण—'दवाउल् कुर्कुम कबीरवत्'।

दवाउल्मिस्क मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि

कपूर ३ रत्ती, अम्बर ७ रत्ती, कस्तूरी १।।। माशा, चाँदी के वर्क (पत्र), केशर प्रत्येक ३।। माशा, काहू के बीज ५। माशा, प्रवाल मूल, कतरा हुआ अबरेशम प्रत्येक ७ माशा, मोती, गावजबान पुष्प, निशास्ता, कुलफा बीज, सफेद चंदन प्रत्येक ८।।। माशा, आमला, अर्क गुलाब में जीरिश्क कास्वरस निकाला हुआ प्रत्येक २१ माशा, दालचीनी ४।। माशा, मधु समस्त द्रव्यों के समान, खाँड दुगुनी, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, गावजबान प्रत्येक २८ तोले १।। माशा—प्रथम अर्कों में खाँड़ तथा मधु मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर औषध-द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर अवलेह बनावें।

मात्रा—५ माशा।

दवाउल्मिस्क मोतदिल सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुलाब-पुष्प, कतरा हुआ अबरेशम, दालचीनी, सफेद और लाल बहमन, केशर, दरूनज अकरबी प्रत्येक ७ माशा, अगर, बिल्ली लोटन प्रत्येक ५। माशा,

मस्तगी, छड़ीला, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक ३।। माशा, सूखा धनिया, गावजबान-पुष्प, गुठली निकाला हुआ आमला, छिले हुये कुलफे के बीज प्रत्येक १०।। माशे, तिब्बती कस्तूरी १ माशा ७ रत्ती, मीठे सेब का रुब्ब (गाढ़ा शर्बत), खाँड़ (कंद सफेद), सफेद शहद प्रत्येक औषध द्रव्य के समतोल, चाँदी के वर्क १०।। माशा—यथाविधि माजूनवत् किंचित् पतली चाशनी कर लेवें।

मात्रा और सेवन विधि—७ माशा, अर्क गावजबान ६ तोले अथवा अर्क सौंफ ६ तोले, शर्बत बनफ्शा २ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—भोजन को पचाती है, आमाशय, यकृत् और उत्तमाङ्गों को बल देती है।

वक्तव्य—दवाउल्मिस्क मोतदिल जवाहरवाली में इससे निम्न द्रव्य अधिक पड़ते हैं—अनविध मोती, कहरुवा समई प्रत्येक ४ माशा, अंबर अशहब १ माशा ७ रत्ती। विशेष दे० 'यूनानी सिद्धयोग संग्रह पृ० ६७'।

दवाउल्मिस्क हार्र (सादा)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कचूर, दरूनज अकरबी, कहरुबा, प्रवालमूल (बुसद) प्रत्येक ३ तोले, कतरा हुआ अबरेशम, दोनों बहमन (सफेद व लाल) बालछड़, तेजपात, छोटी इलायची, लौंग प्रत्येक १।। तोला, पीपल, सोंठ, छड़ीला प्रत्येक १ तोला, कस्तूरी ७ माशा—सब द्रव्यों को कूट-छानकर तिगुना मधु का पाक कर उसमें भलीभाँति मिश्रित करें।

मात्रा तथा उपयोग विधि—५ माशा, अर्क गाजर, अर्क अंबर में मीठा मिलाकर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—दिल-दिमाग को बल देनेवाली विशेष ओषधि है। खफकान (दिल की धड़कन), उन्माद, चित्तविभ्रम, अर्दित, अर्धाङ्ग, वातकम्प, ढीलापन और अपतन्त्रक में लाभप्रद है तथा दीपन-पाचन है।

दवाउल्मिस्क हार्र जवाहरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उपरिलिखित योग में मोती, कहरुबा शमई, प्रवालमूल (बुसद) प्रत्येक ३ तोले खरल करके मिश्रित करें।

मात्रा तथा गुण—उपरिलिखितानुसार।

दवाए नुज़ूलुल्माऽ

इसका योग यूनानी सिद्ध योग संग्रह में पृ० ४५ पर 'सुरमे नुज़ूलुल्माऽ' नाम से दिया है। वहीं देखें।

दवाए जरयान (दवाए डिप्टीसाहबवाली)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध पारा ६ माशा, शुद्ध वंग १ तोला, शुद्ध बछनाग ३ माशा, दक्षिणी सफेद मिर्च २ तोला—वंग को पिघलाकर पारे में मिलावें और खूब खरल करें। तत्पश्चात् बछनाग का चूर्ण मिलाकर १-१ सफेद मिर्च डालकर खूब खरल करें। बस तैयार है।

मात्रा—दो चावल मक्खन में मिलाकर सेवन करें।

गुण—प्रमेह के लिये उत्कृष्ट योग है।

दवाए नारुवा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफीम, प्याज, साबुन—साबुन और प्याज को टुकड़े-टुकड़े करके तेल में पकायें जिसमें मरहम के समान हो जाय। तदुपरांत नहरुवे के मुँह पर और उसके चतुर्दिक् लेप करें। प्रथम औषधि को तैयार करते समय जो बाष्प उठें उनको नारुवे पर पहुँचावें; तत्पश्चात् लेप करें।

गुण—स्नायुक कृमि (नारुवे-इर्क़ मदनी) के लिये गुणकारक है।

दवाए सूजाक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध गंधक, कलमी शोरा १-१ तोला—दोनों को लोहे की कड़ाही में डालकर उसके ऊपर दूसरी कड़ाही देकर ढक देवें। तदुपरांत कपरौटी करके चूल्हे पर चढ़ाकर मृदु अग्नि देवें। एक घण्टा पश्चात् दोनों पिघल जायँगे। पुनः उतारकर उसमें १ तोला भुनी हुई फिटकिरी डालकर सबका बारीक चूर्ण करें।

मात्रा और सेवनविधि—१।। माशा, बकरी के दूध में शर्बत बजूरी मिलाकर प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—नये तथा पुराने सूजाक में लाभप्रद है।

दवाए स्याह मुसहिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक आमलासार १-१ तोला लेकर खरल करके सुर्मे की भाँति कज्जली बनावें। पुनः ४ तोले शुद्ध जमालगोटा मिलाकर खरल करें। जब खूब बारीक हो जाय तब संग बसरी १ तोला मिलाकर खरल करें। अब इस औषधि को खरल से निकालकर मिट्टी के कोरे बरतन में लेप की भाँति लगा देवें और खरल को धोकर उसका पानी भी इसी बरतन में डाल देवें। यदि पानी का प्रमाण औषध के ऊपर दो ऊँगली हो तो उत्तम वरन् और पानी डालें और अग्नि पर पकावें जिसमें पानी सूख जाय। जब बरतन में किंचित् जल रह जाय, तब अग्नि से नीचे उतारकर औषध को ऊपर-नीचे करके छाँह में सुखा कर रख लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--दो रत्ती दवाएस्याह में १ रत्ती कपूर मिलाकर दूध की लस्सी से सेवन करायें। तीसरे पहर लवण एवं शर्करा रहित दूध, चावल खिलायें। उष्ण और अम्ल पदार्थों से परहेज करायें।

गुणकर्म तथा उपयोग--सौदावी एवं श्लैष्मिक दोष का निर्हरण करता है।

विशिष्ट गुण--फिरंगदोष का निवारण करता है।

टि०--इस औषधि से वमन होता है, परंतु विरेक कभी नहीं होता।

बरूद काफूरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

संगबसरी १ तोला, कपूर ४ माशा मिलाकर खरल करें और रेशमी कपड़े में छानकर किसी शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--दो-तीन सलाई प्रातः-मध्याह्न और सायंकाल नेत्र में लगाया करें।

गुण तथा उपयोग--नेत्र की लाली तथा गर्मी को दूर करता है और शीतलता उत्पन्न करता है।

विशेष्ट गुण प्रयोग--उष्ण नेत्राभिष्यन्द के लिये विशेष गुणकारी है।

बासलीकून कबीर (कुहल बासलीकून)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

समुद्रझाग, रूपामक्खी प्रत्येक ५ तोले, एलुआ, मामीसा बूटी का घन सत्त्व, दग्ध ताँबा प्रत्येक २।। तोले, हरड़ चीनी ममीरा, बोल (मुरमकी), नौसादर, हलदी प्रत्येक १।। तोला, लवपुरी नमक, तमालपत्र, राँग का सफेदा, काली मिर्च, पीपर, बालछड़, सुरमा असफहानी प्रत्येक १-१ तोला, सेंधा नमक, लौंग, छड़ीला प्रत्येक ६ माशे--सबका बारीक चूर्ण कर रेशमी वस्त्र में छानकर रख देवें, बस तैयार है। रात्रि में सोते समय नेत्र में लगावें।

गुण तथा उपयोग--प्रारंभिक मोतियाबिन्दु, नेत्र की दुर्बलता, तिमिर, नेत्रकण्डु, अर्म आदि नेत्र के समस्त कठिन रोगों में सिद्ध प्रभावशाली औषध है।

मरहम ईसा

वक्तव्य—'मरहम रुसल' का दूसरा नाम 'मरहम ईसा' वा 'मरहम सलीखा' है। मरहम रुसल के पाठ के लिये यूनानी सिद्धयोगसंग्रह देखें।

मरहम उशक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

राई, समुद्रझाग, जरावंद तवील (लंबा), गुग्गुल, उशक, आसलासार गंधक, अंजुरा बीज प्रत्येक २ तोला, पुराना जैतून का तेल १२ तोले—प्रथम उशक और गुग्गुल को जैतून के तेल में हल करें। फिर मोम डालकर अग्नि पर पिघलावें और इसमें शेष द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर खूब घोंट देवें।

मात्रा और उपयोगविधि--आवश्यकतानुसार लेकर गुलरोगन और जैतुन के तेल में मिलाकर शोथ के ऊपर लेप करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--प्लीहा-शोथ के लिये विशेष गुणकारी है। कण्ठमाला में भी उपयोगी है।

मरहम जदवार

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जदवार ४।। माशा, गन्धावेहरोजा, कंद (चीनी) प्रत्येक ६ माशा, हलदी, देवदारू, मुलेठी, मेंहदी के पत्र, भड़भूंजे की छत का धुआं प्रत्येक ३ तोला, कीकर

की छाल, नीम की पत्ती, रतनजोत प्रत्येक ६ तोला—कंद (चीनी) के सिवाय शेष समस्त द्रव्यों का चूर्ण बना लेवें और ऽ२।। सेर जल में इतना पकायें कि दो-तिहाई जल शेष रह जाय। पुनः छानकर ६० तोले तिल का तेल मिलाकर दोबारा उबालें। जल शुष्क होने पर और केवल तेल मात्र शेष रह जाने पर ६ तोला मोम डालकर पकावें और सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि—कुनकुना गरम करके ग्रन्थि के ऊपर लेप करें।

गुण तथा उपयोग—व्रण और घाव को भरता है। आघात (चोट) के लिये लाभकारी है। ग्रन्थि को विलीन करता है। प्लेग की गिल्टी के लिये भी उत्तम है।

मरहम बासलीकून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

राल, गाय की चर्बी, जिफ्त प्रत्येक समभाग लेकर परस्पर गूंधें और आवश्यकतानुसार दिब्क (मवीजजअसली) की योजना करके उपयोग करें। कतिपय योग पाठों में दिब्क के स्थान में बिरोजा चतुर्थांश और कतिपय में गाय की चर्बी के स्थान में मोम देखा गया है। इस योग को मरहम अरब आ भी कहते हैं।

गुण तथा उपयोग—यह अर्बुद (रसौली) को मृदु एवं विलीन करता है। हर प्रकार के व्रण एवं घाव और समस्त शीतल शोथों के लिये गुणदायक है।

मरहम मिश्री

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सिरका और मधु प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती को परस्पर पकायें और पाक करें। पुनः जंगार ३।। माशा, अंजरूत ७ माशा दोनों को पीसकर इसके ऊपर छिड़कें और मरहम बनावें।

गुण तथा उपयोग—पुरातन व्रण के लिये उपयोगी है।

मरहम मुहल्लिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बाबूनापुष्प, नाखूना, सूखा मकोय, विरंजासफ प्रत्येक ५ तोला, कपूर १।। तोला, अफीम ३ माशा, सफेद मोम और तिल का तेल १-१ पाव—प्रथम

मोम को तेल में पिघलाकर शेष द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर घोटें और अंत में कपूर तथा अफीम मिलाकर एकजीव कर लेवें।

गुण—परम श्वयथुनाशक है।

मरहम शलगम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुलरोगन १० तोला, सिंदूर ३।। तोला, कपूर ३ माशा—प्रथम आवश्यकतानुसार शलगम के टुकड़े-टुकड़े करके गुलरोगन में खूब भूनकर निकाल लेवें। तदुपरांत अग्नि से नीचे उतारकर सिंदूर मिलावें और नीम के दस्ता से घोटें। इसके बाद कपूर मिलाकर और नीम के दस्ता से हल करके सुरक्षित रखें। कुछ योगों के पाठ में कपूर नहीं लिखा है।

गुण तथा उपयोग—व्रणपूरण एवं शोथविलयन के लिये अनुपम एवं परीक्षित है।

मरहम शिंगरफ (जिंजफर)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मुर्दारसंग, विरोजा प्रत्येक १ तोला ५।। माशा, इलकुल्बुत्म, शिंगरफ प्रत्येक १।।। तोला, लोबान, उशक प्रत्येक २ तोला ११ माशा, कीकर का गोंद ३।।। तोला, जैतून का तेल आवश्यकतानुसार—यथाविधि मलहर तैयार करें।

गुण तथा उपयोग—वृषणगतव्रण तथा कण्ठमाला एवं कर्कटार्बुद (सरतान) के लिये उपयोगी है।

मरहम साहंदा चोबनीम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

प्याज के ऊपर का पतला छिलका और मक्खन काँसे के बरतन में नीम के डंडे से जिस पर ताँबे का पैसा लगा हुआ हो रगड़ें। जब मरहम की भांति बन जाय, तब मस्सों (अर्शांकुरों) पर लगावें।

माउज्जहब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शोरे का तेजाब ३ भाग, नमक का तेजाब ४ भाग—दोनों को एक बड़ी शीशी में डाल देवें और शीशी का मुख किंचित् खुला रखें। अब इस तेजाब

में से १ तोला लेकर १ माशा सोना डाल देवें। कुछ कालोपरांत सोना विद्रुत हो जायगा। पुनः इसमें ३ तोला और जल मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि--३ से ५ बूँद, माउल्लहम अंबरी ५ तोला में मिलाकर प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--शारीरिक क्षीणता तथा दुर्बलता को दूर करता है। यक्ष्मा में भी लाभप्रद है।

माउल्लहम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

युवा मुर्गा ५ नग, जर्दक (गाजर, एक पक्षी) ।)५ पद्रंह सेर, घरेलू नर चिड़ा (चटक) १०० नग, शकाकुल मिश्री ॽ।, सेब समरकंदी ५ नग, दालचीनी ॽ१ सेर--यथाविधि अर्क खींचे।

मात्रा और सेवनविधि--प्रतिदिन ७ तोला माउल्लहम पान करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--दिल, दिमाग, आमाशय और यकृत् को बल देता है। प्रकृत शरीरोष्मा को उभाड़ता है तथा शरीर में शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है।

विशिष्ट गुण--सरल एवं उत्तम वाजीकरण योग है।

माजून अलकली

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिला हुआ मीठे बादाम का मग्ज, फिंदक का मग्ज, पीपल, चिलगोजे का मग्ज, चिरौंजी ,सफेद तिल, पोस्ते का दाना, कुलथी (कुल्कुल) के बीज का मग्ज, हब्बुल्खिजरा का मग्ज, कुलंजन, मोचरस प्रत्येक ३ तोला, खोपरा (नारियल की गिरी), सफेद और लाल बहमन, सफेद और लाल तोदरी, छोटी और बड़ी इलायची का दाना प्रत्येक ४ माशा, किशमिश, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) प्रत्येक ६ माशा, छुहारा १ तोला, शकाकुल, करफ्स-बीज, मीठा इन्द्र जौ, दरूनज अकरबी, सूखा पुदीना, मस्तगी, बंशलोचन, ताल मखाना, कबावचीनी, जावित्री, बिजौरे (तुरंज) का छिलका, सोंठ, गोखरू (तीन बार दूध में तर और शुष्क किया हुआ), लौंग, गाजर के बीज, शलगम के बीज, हलियून के बीज, कौंच के बीज, नरकचूर, मैदा लकड़ी प्रत्येक २ माशा, बालछड़, अंबर अशहब, प्रत्येक १ माशा, चोबचीनी २ तोला ४ माशा, मजीठ २ माशा, चीनी १६ तोला ४ माशा,

सफेद तुरंजबीन (यवासशर्करा) ऽ=, शुद्ध श्वेत मधु १६ तोला ४ माशा, केसर १ माशा—प्रथम तुरंजबीन को जल में उबाल कर छान लेवें तथा चीनी और मधु मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर उसमें शेष समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर सम्मिलित करें। केशर और अंबर को अर्क बेदमुश्क में हल करके पीछे योजित करें।

मात्रा और सेवनविधि—१ तोला, दूध के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—बस्ति और वृक्क की दुर्बलता को दूर करता है और वाजीकारक भी है।

माजून इजाराकी (कुचला)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला २। तोला, गावजबान १॥ तोला, उस्तूखुद्दूस, कतीरा, नारियल, चिलगोजे की गिरी प्रत्येक १३॥ माशा, छोटी इलायची का दाना, नरकचूर, शकाकुल मिश्री, सफेद चंदन, गुठली निकाला हुआ आमला, काली हड़ प्रत्येक ९ माशा, अगर ,लौंग प्रत्येक ४॥ माशा—तीन गुना मधु की चाशनी में समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर मिलायें और माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—१ माशा से ५ माशा तक १२ तोले अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—संधिवात तथा समस्त वात-कफ के रोग, जैसे-पक्षवध, अर्दित, कम्पवात, अपस्मार, अजीर्णदोष इत्यादि को नष्ट करता है। आतशक (फिरंग) के लिये भी गुणकारी है। दुर्बल एवं वृद्ध जनों का शीत से बचाव करती है तथा वाजीकर भी है।

माजून कलकलानज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काली मिर्च, पीपल, पीपरामूल, सोंठ, लाल और काला नमक हिंदी, नमक इन्दरानी, नमक तबरजद, साँभर नमक, मीठा इन्द्र जौ, चीता, नागरमोथा, छोटी इलायची, तज, लौंग, सातर, बायबिड़ग काबुली, कलौंजी, कालादाना, जीरा किरमानी, तेजपत्ता, करफस-बीज, सखा धनिया प्रत्येक १॥ तोला, हड़ का बकला, काली हड़, बीज निकाला हुआ आमला प्रत्येक २ तोला, अमलतास का गूदा ३ तोला, बीज निकाली हुई दाख (मुनक्का) ऽ॥ आध सेर, सफेद

निशोथ ८ तोला, ग्रामले का रस (शीरा) ﬡ१ सेर--मुनक्का और ग्रामाला को ﬡ६ सेर जल में पकायें। जब ﬡ२ सेर जल शेष रह जाय तब मल-छानकर उसमें ग्रमलतास का गूदा हल करें। उसके हल हो जाने पर उसमें ﬡ३ सेर मिश्री हल करें और ﬡ।। आध सेर तिल का तेल मिलाकर पकायें। जब पाक सिद्ध हो जाय तब शेष समस्त द्रव्यों का चूर्ण उसमें मिला देवें। बस माजून तैयार है।

मात्रा और सेवनविधि--७ माशा से १ तोला तक जल या उपयुक्त अर्क से प्रातःकाल सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--कफ प्रकृति के लिये विशेष गुणकारी है। यह आमाशयस्थ क्लेद का निवारण करताहै और जीर्ण ज्वर, कफज कास तथा श्वासके लिये भी लाभकारी है और शूल (कुलंज), अपस्मार, प्लीहारोग, व्यंग (बह्क) एवं अपतन्त्रक इत्यादि में भी उपयोगी है।

माजून कुर्तुम

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कड़ का मग्ज (मग्ज तुख्म कुर्तुम), मीठे बादाम का मग्ज, गुलाब-पुष्प, सनायपत्र प्रत्येक ६ तोला, सौंफ, सोंठ प्रत्येक २ तोला, दालचीनी, छोटी बड़ी दोनों इलायची १-१ तोला, विलायती अंजीर, बीजरहित दाख (मुनक्का) प्रत्येक ४० नग--प्रथम दोनों मग्जों (कड़ और बादाम) को पृथक् पीसें तथा अंजीर और मुनक्का को धोकर पृथक् पीसें। शेष द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण करें। तिगुने मधु के पाक में प्रथम गिरियों (मग्जों) और अंजीर तथा मुनक्का का शीरा मिलाकर पाक करें। पुनः शेष द्रव्यों का चूर्ण पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा--१ तोला।

गुणकर्म तथा उपयोग--दीपन-पाचन, एवं अजीर्णनाशक और मूत्रल है।

माजून खद्र

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऊद गर्की १ माशा, लौंग, कचूर, केशर प्रत्येक १।। तोला, मस्तगी, बूजीदान प्रत्येक २ माशा, शकाकुल मिश्री, पान की जड़, दोनों बहमन, गावजबान, बिल्ली लोटन, बालछड़, छड़ीला, जावित्री, कुट, छोटी इलायची बीज, फरंजमुश्कपत्र, नागरमोथा प्रत्येक २ माशा, ऊदसलीब, दालचीनी, सालम मिश्री प्रत्येक

३-३ माशा, मीठा सूरंजान, हड़ काबुली, पोस्ते का दाना ४-४ माशा, पीपल, काली मिर्च, दरूनज, इन्द्र जौ, पुदीना, तगर, उस्तूखुदूस, तेजपात, तज प्रत्येक ७ माशा, कस्तूरी २। माशा—कस्तूरी, केसर, मस्तगी को पृथक्-पृथक् खरल करें और शेष द्रव्यों का बारीक चूर्ण करें। पुनः मधु का पाक कर सबको मिलाकर एक जीव करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—मस्तिष्क को बल देती है और शरीर के सुन्न होने में उपयोगी है।

माजून चोबचीनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लौंग, जायफल, जावित्री, गुलाबपुष्प, केशर, नरकचूर, कुलंजन, नागरमोथा प्रत्येक ४।। माशा, सोंठ, पीपल, अकरकरा, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, बड़ी इलायची, काली मिर्च, मस्तगी, सूरंजान, बूजीदान, सनायमक्की, इन्द्र जौ प्रत्येक १।।। तोला, चोबचीनी ११। तोला।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—आतशक (फिरंग), वातरक्त तथा फिरंगजनित पीड़ा में उपयोगी है।

माजून चोबचीनी बनुस्खये खास (विशेष योग)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छोटी और बड़ी इलायची का दाना, कुलंजन, लौंग, कबाबचीनी, कस्तूरी, बूजीदान, सोंठ, बालछड़, नरकचूर, असारून (तगर), तमालपत्र (साजिज, हिंदी), पीपल, अंबर, जदवार खताई प्रत्येक ९ माशा, दालचीनी, मीठा सूरंजान शकाकुल मिश्री, सालम मिश्री, रूमी मस्तगी, अगर, मीठा इन्द्रजौ, केसर प्रत्येक १४ माशा, चिरौंजी, मग्ज हब्बुल कुलकुल (कुलथी के बीज की गिरी), मग्ज अञ्जलक, मग्ज बुन प्रत्येक १।।। माशा, चिलगोजा की गिरी, खोपरा की गिरी प्रत्येक ९ माशा, उत्तम चोबचीनी १८।।। तोला—चोबचीनी के बारीक-बारीक टुकड़े कर लेवें और ऽ४ सेर जल में एक दिन तर करें। पुनः इतना उबालें कि ऽ१ एक सेर जल शेष रह जाय। अब मधु और तुरंजबीन प्रत्येक ५६ तोला मिलाकर पाक करें और शेष द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—७ माशा ताजा जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—अंग वेदना को दूर करती है ; आमाशय को बल देती एवं वाजीकरण करती है। रक्त शोधक भी है।

माजून जोगराज गूगल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीपल, काली मिर्च, भांगरा प्रत्येक ९ माशा, सोंठ, कुट, देवदारु, हाऊबेर, अकरकरा, पिपरामूल, नरकचूर प्रत्येक ६ माशा, बेख बल (बला-मूल), जुंदबेदस्तर प्रत्येक २ माशा, कवाबचीनी, चीता, कासनी प्रत्येक ३ माशा, पुदीना ५ माशा, गूगल समस्त द्रव्यों के समतोल लेकर कूटकर बादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्ब) करें और फिर कूटकर नरम करें। पुनः शेष समस्त द्रव्यों का चूर्ण मिलाते जायं और कूटते जायं। सब एक जीवन होने पर सुरक्षित रखें।

मात्रा—३ से ५ माशा उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—समस्त वात-कफ के रोग, संधिवात, पक्षवध (अर्धाङ्ग) अर्दित, कम्पवात (राअशा) और वातनाड़ी दौर्बल्य में लाभकारी है, वाजीकरण है ; आशतक (फिरंग) को भी दूर करती है।

माजून तुर्बुद (तृवृत्)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऊपर से छीली हुई और भीतर की लकड़ी निकाली हुई निशोथ ऽ।। सेर, सोंठ, रूमी मस्तगी प्रत्येक २।। तोला, काली मिर्च १०।। माशा—निशोथ को बादाम के तेल से स्नेहाक्त (चर्ब) करें और समस्त द्रव्यों के साथ कूट-छानकर दुगुने साफ किये हुए शहद खाम में माजून बनावें।

मात्रा—७ माशा से १ तोला ५।। माशा तक उष्ण जल में विलीन करके पियें। इसे किंचित् उबाल लेना भी उचित है। हकीम अली गीलानी का आविष्कृत है।

गुण तथा उपयोग—कफ़ज दोषों का नाश करता है।

माजून नजाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हड़, बहेड़ा, आमला प्रत्येक ३।। माशा, बस्फाइज फुस्तुकी, अफ्तीमून विलायती, उस्तूखुदूस, सफेद निसोथ प्रत्येक १।। तोला, समस्त द्रव्यों से तिगुना मधु—मधु का पाक करें और द्रव्यों को कूट-छानकर उसमें मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—५ माशा ताजा जल से प्रातः काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—सौदावी रोगों में उपयोगी है।

माजून बि (ब)लाद्रुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिले हुये तिल ४ तोला, भिलावे का शीरा (स्याही), बादाम का मग्ज, चिलगोजा का मग्ज, असगंध, अकरकरा, कुलंजन, जावित्री ३-३ तोला, जायफल सोंठ, सालम मिश्री २-२ तोला, पीपल, मस्तगी, हालों-बीज प्रत्येक १।। तोला, गाजर-बीज, अंजुरा-बीज, कौंच-बीज, केशर १-१ तोला, समुद्र सोख, कस्तूरी ६-६ माशा, खांड समस्त द्रव्यों के समतोल, मधु दुगुना लेकर यथाविधि पाक कर उसमें द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर माजून बनावें।

मात्रा—६ माशा से १ तोला।

गुण तथा उपयोग—पुंस्त्व-शक्ति एवं शरीर को बल देती है।

माजून मुक़्ल (गुग्गुल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुठली निकाला हुआ आमला, काबुली हड़, बहेड़ा, हरमल-बीज (तुख्म इस्पंद), गंदना-बीज, शाहतरा-बीज प्रत्येक १।। तोला, गुग्गुल ३ तोला—प्रथम गुग्गुल को गंदना के रस में हल करें। पुनः समस्त द्रव्यों के तौल से तीन गुना चीनी (कंद सफेद) या मधु की चाशनी बनाकर गुग्गुल सहित शेष समस्त द्रव्यों को उसमें मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा—७ माशा प्रातः काल जल से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—वातिक तथा रक्तज उभय प्रकार के अर्श में उपयोगी है और विशेषतः बादी बवासीर (वातार्श) के लिये रामबाण का काम करती है और विबन्धनाशक भी है।

माजून मुम्सिक व (मुकव्वी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कस्तूरी १ माशा, अंबर अश्हब ४।। माशा, दालचीनी, मस्तगी, जायफल, बालछड़, ऊद खाम (अगर), अजवायन, खुरासानी सफेद, कबाब चीनी, असली केसर, सालम मिश्री, चिड़के शिर का मग्ज तथा उसकी जिह्वा, भाँग प्रत्येक ६ माशा, मायए शुतुर ऐराबी १।। तोला, कालादाना ४०० नग (दाना), मिश्री ११। तोला, समस्त द्रव्यों की तौल से तिगुना मधु, कालादाने को मीठे बादाम के

तेल में एक दिन तर रखें। तदुपरांत समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर मिश्री और मधु की चाशनी में मिलावें।

मात्रा और सेवनविधि—स्तम्भनार्थ १ माशा, प्रमेह में चना प्रमाण प्रातः काल दूध से सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—शीघ्रपतन और शुक्र प्रमेह को सदैव के लिये दूर करती है और स्तम्भन करती है।

माजून मुगल्लिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मस्तगी २ माशा, इलकुल्बुत्म (बुत्म की गोंद) ३ माशा, कतीरा, वंशलोचन, दालचीनी, छोटी इलायची प्रत्येक ४ माशा, बबूल का गोंद, निशास्ता, सालममिश्री प्रत्येक ६ माशा, चिलगोजे का मग्ज १ तोला, नारियल १।। तोला, छिला हुआ बादाम का मग्ज २ तोला, समस्त द्रव्यों से तिगुना मिश्री और मधु की चाशनी करें और द्रव्यों को कूट-छानकर चाशनी में मिलावें।

मात्रा—१ तोला।

गुण तथा उपयोग—वीर्य को गाढ़ा करती है और पुंस्त्वशक्तिवर्धक है।

माजून मोचरस

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मोचरस, सुपारी, वंशलोचन, निशास्ता, हरा माजू, गुलाब-पुष्प, हब्बुल् आस, हड़, बहेड़ा, आमला, गिल मख्तूम, सफेद और काली मूसली प्रत्येक ६ माशा, अनार का छिलका ९ माशा, बिही का स्वरस, खट्टे अनार का स्वरस प्रत्येक २। तोला, मिश्री और शुद्ध मधु समस्त द्रव्यों से तिगुना—उल्लिखित द्रव्यों को कूट-छानकर चाशनी में मिलावें।

मात्रा और सेवनविधि—१ तोला माजून १२ तोले अर्क गावजबान से प्रातःकाल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—स्त्रियों के गर्भाशय से नाना प्रकार के द्रवोत्सर्ग को बंद करती है।

माजून मोमियाई

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध मोमियाई ५ तोला, अबीध मोती १।। तोला, अंबर अश्हब ६ माशा,

मायए शुतुर ऐराबी ३॥ तोला, स्वर्ण पत्र (सोने का वर्क) ५० नग, बैल की इन्द्री (रेती हुई) ६ नग, मिश्री समस्त द्रव्यों की तौल से दुगुनी—द्रव्यों का महीन चूर्ण बनाकर मिश्री की चाशनी में मिलावें और चाशनी के अंत में अंबर अश्हब और सोने के वर्क डालकर भली भांति मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—१ माशा से २ माशा तक पाव भर गोदुग्ध के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह माजून समस्त अंगों को बल देती है। यदि मैथुनोत्तर सेवन किया जाय, तो मैथुनजन्य दौर्बल्य से सुरक्षित रखती है और मैथुन शक्ति का पुनरावर्त्तन करती है।

माजून राअ्शा (बारिद)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उस्तूखुदुस, कन्तूरियून, लौंग प्रत्येक २ तोला ११ माशा, काबुली हड़ का बकला सातर, दालचीनी प्रत्येक २ तोला, निसोथ, गारीकून, हींग, जुंदबेदस्तर प्रत्येक १४ माशा, केशर, अकरकरा प्रत्येक १०॥ माशा—सबको कूट पीसकर तिगुने शुद्ध मधु में मिलाकर माजून तैयार कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—९ माशा उष्ण माउल्अस्ल के साथ हर तीसरे दिन प्रयोग करायें।

गुण तथा उपयोग—शीतल कम्पवात के लिये हकीम अंताकी का परीक्षित है।

माजून लना

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काली मिर्च, सफेद मिर्च, दालचीनी, पीपल, जायफल, जावित्री, मस्तगी, नागरमोथा, सोंठ, लौंग, आमला, बालछड़, छोटी इलायची, अजवायन, सौंफ, केसर, सफेद चंदन, ऊद बलसाँ, अगर प्रत्येक ६ माशा, शुद्ध कुचिला का बुरादा १ तोला—सबको कूट-छानकर तिगुने मधु की चाशनी में मिलाकर माजून बनावें और चालीस दिन बाद प्रयोग करें।

मात्रा—३ से ५ माशा तक अर्क सौंफ से प्रयोग करें। फिरंगरोग में अर्क उश्बा से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—समस्त कफज रोगों विशेषतः पक्षवध, अर्दित, कम्पवात,

अपस्मार, आमाशय विकार (इख्तिलाज मेदा) तथा आमवात में बहुत ही गुण-कारक है। वृद्धावस्था में शीत से बचाती और वाजीकरण करती है।

माजून सनाय

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गावजबान-पत्र, बिल्ली लोटन, गुलाब-पुष्प, गुलबनफ्शा, मुलेठी प्रत्येक १ तोला, अंजीर जर्द (पक्व) १० तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का, उन्नाव प्रत्येक २० दाना, लिसोड़ा (सपिस्ताँ) १०० दाना—रात्रि में समस्त द्रव्यों को जल में भिगों कर प्रातः उबालकर और छान कर खाँड (कंद सफेद) ऽ। मिलाकर चाशनी करें और चाशनी के अन्तमें सनायमक्की-पत्र ७ तोला, काली हरड़ ५ तोला पीली हरड़ ३ तोला इन तीनों का चूर्ण बनाकर मिलायें, किंतु चूर्ण को बादाम के तेल में स्नेहाक्त (चर्ब) कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—१ माशे से ३ माशा तक १२ तोले अर्क सौंफ या ताजा पानी से सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग—हर प्रकार के शिरःशूल में लाभकारी है तथा मलवद्धता निवारण करने के लिये अतीव गुणकारी है। पाचन को सुधारती हैं और आमाशय विकार को नष्ट करती है।

माजून सरख्स

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सरख्स ३।। माशा, बायविडंग ३।। माशा, निशोथ और गुग्गुल ७–७ माशा—सब को कूट-छान कर दुगुने मधु के पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा और उपयोगविधि—१ तोला

प्रयोग करने से पूर्व १–२ घंटा पूर्व दूध पिये और तीन दिन पूर्व भी दूध के सिवाय और कुछ न खावें।

गुणकर्म तथा उपयोग—गोल तथा लम्बे कृमियों के लिये उत्कृष्ट ओषधि है।

माजून सालब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कस्तूरी १।।। माशा, जुन्दबेदस्तर, दरूनज अक़रबी, चाँदी के वर्क, अंबर प्रत्येक ३।। माशा, बालछड़, बड़ी इलायची, ऊदखाम, झाऊ (कजमाजज), बबूल

का गोंद प्रत्येक ५। माशा, पनीर, माया शुतुरऐराबी, गावजवानपत्र, बिल्लीलोटन फरञ्जमुश्क (रामतुलसी), रेगमाही, चिड़े के सिर का मग्ज, चिलगोजे का मग्ज, खोपड़े की गिरी, मीठे बादाम का मग्ज, पिस्ते का मग्ज, फिंदक का मग्ज प्रत्येक ७ माशा, बूजीदान, सूरंजान, लाल और पीली तोदरी, लाल और सफेद बहमन, छिले हुए तिल, गाजर के बीज, सोंठ, सूखा पुदीना, गोखरू, (दूध में भिगो कर शुष्क किया हुआ), सफेद पोस्ते का दाना, पीपल, नरकचूर, मस्तगी, जायफल जावित्री, केशर, मीठा कुट, खरबूजे के बीज की गिरी प्रत्येक १०।। माशा, मीठा इन्द्र जौ, दालचीनी, लौंग, छोटी इलायची प्रत्येक १४ माशा, कुलंजन, शकाकुल-मिश्री, सालम मिश्री, अजवायन खुरसानी बीज प्रत्येक १।। तोला--सब को कूट-छान कर तिगुने मधु के पाक में मिलाकर माजून तैयार करें।

मात्रा--७ माशा से १ तोला तक दूध के साथ प्रातः काल सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--शुक्र प्रमेह तथा नपुंसकत्व को दूर करती और वातनाड़ी को बल प्रदान करती है।

माजून सूरंजान (शीरीं)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सफेद सूरंजान १ तोला ६ माशा, बूजीदान, माहीजहरज, चीता, कबरमूल, सफेद जीरा प्रत्येक ७ माशा, पीली हड़ २ तोला ४ रत्ती, करफ्सबीज, सौंफ, सफेद मिर्च, एलुआ, सातर, सेंधानमक, मेंहदी पत्र, समुद्रझाग, प्रत्येक ५। माशा, गुलाब-पुष्प, सोंठ, सकमूनिया, तिल प्रत्येक १०।। माशा, सफेद निशोथ ४ तोला ४।। माशा, मधु ४३ तोला ६ माशा, बादाम का तेल १।। तोला--निशोथ को बादाम के तेल में स्नेहाक्त करें और शेष द्रव्यों को कूट-छान कर मधु के साथ माजून बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--७ माशा माजून जल या अर्क उश्बा के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--पित्तज और कफज गृध्रसी (इर्कुन्नसाऽ) के लिये गुणकारी है तथा गठिया और वातरक्त में भी लाभकारी है।

माजून हमल अंबरी उलवीखाँनी (खाँ वाली)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अंबर १। तोला, मोती, तृणकान्त (कहरुवा), दग्ध प्रवालमूल, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, वंशलोचन, माजू, दरूनज अकरबी, ऊदसलीब, कैंची से कतरा हुआ

अबरेशम अपक्व (खाम), बेख अंजबार मूल, गिल अरमनी प्रत्येक ६ माशा, पेठे के बीज की गिरी, कुलफा के बीज प्रत्येक १।।। तोला, चाँदी और सोने के वर्क प्रत्येक २० नग, शुद्ध मधु १५ तोला, शर्बत अंगूर २८ तोला, मिश्री ११ छटाँक १ तोला—सब द्रव्यों को कूट-छान कर मधु और मिश्री की चाशनी में मिलायें।

मात्रा और निर्माणविधि–५ माशा, प्रातः काल–ताजा जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—बालापस्मार (उम्मुस्सिब्यान) को नष्ट करती है। गर्भपात को रोकती है। यदि गर्भावस्था में इसका उपयोग किया जावे तो बालक स्वस्थ एवं पूरे समय पर उत्पन्न होगा।

मालती बसंत

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सोने के वर्क १ माशा, अबीध मोती २ माशा, शिगरफ ३ माशा, कालीमिर्च ४ माशा, संगबसरी ८ माशा—प्रथम समस्त द्रव्यों को बारीक करें। पुनः गाय के मक्खन में स्नेहाक्त करके खरल करें। फिर कागजी नीबू के रस में इतना खरल करें कि चिकनाहट जाती रहे। पुनः टिकिया बनाकर शुष्क करें।

मात्रा और सेवनविधि–१ रत्ती चूर्ण गुडूची सत्त्व से जीर्ण ज्वर और राजयक्ष्मा में लाभकारी है और जीरा के अनुपान से संग्रहणी और अतिसार में दिया जाता है तथा मधु के साथ कफज एवं वातिक (रियाही) रोगों में, रसवत से पैत्तिक रोगों एवं रक्त विकार में गुणकारक है।

गुणकर्म तथा उपयोग—रक्तशोधक और ज्वरघ्न है तथा अतिसार एवं संग्रहणी में लाभकारी है। उत्तम एवं उत्कृष्ट अंगों को बल देता है तथा प्रकृत शरीरोष्मा की वृद्धि करता है।

विशेष गुण—यकृतीय अतिसार को नष्ट करता है।

मुफर्रेह कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

याकूत सुर्ख के टुकड़े ४।। माशा, संग यशब, अकीक प्रत्येक ३।। माशा, गारीकून, अफतीमून, कालीमिर्च, सोंठ, मर्जंजोश, लौंग प्रत्येक ६ माशा ७ रत्ती, हज्र अरमनी, हज्र लाजवर्द, काँच नमक (मिल्हनिफती), नरकचूर, हाथीदाँत का बुरादा, दरूनज अकरबी, लाल बहमन, गावजबान प्रत्येक ४।। माशा, ३ रत्ती, सुंबुल रूमी, हमामा, बच (वज), तमालपत्र (साजिज हिंदी), दालचीनी, सातर, हूशा, जूफा, जीरा, प्रत्येक ३ माशा ३।। रत्ती, मुश्कतरामसीअ, फितरासालियून

(करफ्सकोही), हलियून, हज्रुल्यहूद (बेरपत्थर), करफ्स बीज, बोल (मुरमक्की) केशर, कुंदुर, सफेद मिर्च प्रत्येक ६ माशा २ रत्ती, सोने के वर्क १ माशा, चाँदी के वर्क १ माशा--रत्नों को खूब खरल करें। फिर वर्कों (पत्रों) को मिलाकर हल करें तथा शेष द्रव्यों को कूट-छानकर दुगुना हड़ के मुरब्बा का शीरा लेकर चाशनी बनाकर इसमें औषध द्रव्यों का उक्त चूर्ण मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि--५ माशा, अर्क बेदमुश्क ५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--पुराने रोगों, हृत्स्पंदन (धड़कन), हृदयदौर्बल्य, उन्माद वा वातिक अन्यथाज्ञान (वसवास), मस्तिष्क-विकृति, मन्दाग्नि प्लीहादौर्बल्य, यकृद्दौर्बल्य और शूल में लाभप्रद है तथा आमवातघ्न एवं जीर्णज्वर नाशक है।

मुफर्रेह बारिद

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अंबर अश्हब, हल किये हुए सोने के वर्क, हल किये हुये चाँदी के वर्क प्रत्येक १ माशा, मोती, कहरुवा शमई (तृणकान्त) प्रत्येक ४।। माशा, गावजबान पुष्प, सफेद वंशलोचन, सफेद चन्दन का बुरादा, गुलाब के फूल की कली, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, कुलफा के बीज प्रत्येक ९ माशा, मीठे सेब का रुब्ब (गाढ़ा शर्बत), मीठी बिही का रुब्ब प्रत्येक ७।। तोला, अर्क गुलाब और अर्क बेदमुश्क प्रत्येक ९।। तोला, मिश्री ४० तोला--उपरिलिखित अर्कों में मिश्री की चाशनी बनाकर शेष औषधद्रव्यों का चूर्ण योजित करें।

मात्रा और सेवनविधि--५ माशा, अर्क गावजबान १० तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--हृदयदौर्बल्य, दिल की धड़कन और हृत्स्फुरण को नष्ट करता है तथा संताप शमन करता है।

मुफ़र्रेह मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कस्तूरी, अंबर प्रत्येक १ माशा, गुलाब पुष्प, नागर मोथा, दरूनज अकरबी, बालछड़, दालचीनी, केशर, मस्तगी, लौंग, जायफल, कबाबचीनी, बड़ी इलायची पीपल, छोटी इलायची (खैर बवा), बिजौरे (उतरूज) का छिलका, पान की जड़, अगर प्रत्येक २।। तोला ६ रत्ती, मोती, प्रवालमूल, तृणकान्त प्रत्येक

३।। माशा, नरकचूर १।।। माशा, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम, बादरूज (तुलसी) बीज प्रत्येक १।।। माशा, समस्त द्रव्यों के समतोल मिश्री लेकर चाशनी बनाकर इसमें द्रव्यों का चूर्ण मिलायें।

मात्रा और सेवनविधि--६ माशा, अर्क बेदमुश्क ५ तोले के साथ प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--उत्तमाङ्गों के लिये बलप्रद है, प्रकृत देहोष्मा को स्थिर रखती है, वाजीकरण करती है, भूख लगाती है और अतिसार एवं गर्भाशय के रोग में लाभ करती है।

मुफर्रेह याकूती मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कस्तूरी, इजखिर प्रत्येक २। माशा, याकूत रुम्मानी, लाल सफ्फाफ, बिल्ली लोटन प्रत्येक ४।। माशा, अंबर अश्हब, बड़ी इलायची, सोने के वर्क, चाँदी के वर्क, कपूर, गिलमख्तूम, सूखा धनिया, लाजवर्द, गिल अरमनी, बालछड़, नादमुश्क प्रत्येक ३।। माशा, मोती, प्रवालमूल, कहरुबाए शमई (तृणकान्त), केशर, गावजबान, रूमी मस्तगी, दालचीनी, सफेद बहमन, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम जर्द खाम (पीला अपक्व), बिजौरे का पीला छिलका, नरकचूर, छडीला, कद्दू के बीज की गिरी, नख, जरिश्क, छिले हुए कुलफा के बीज, रामतुलसी (फरंज मुश्क) के बीज, सफेद वंशलोचन, गावजबान बीज, खीरा-ककडी के बीज की गिरी प्रत्येक ७ माशा, सफेद चन्दन, अगर, दरूनज अकरबी, गुलाब-पुष्प प्रत्येक १०।। माशा, शर्बत हुम्माज २५ तोला, समस्त द्रव्यों की तौल से दूना मधु लेकर शर्बत मिलायें और चाशनी बनाकर शेष द्रव्यों को कूट-छान कर उसमें मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि--६ माशा ताजे जल से प्रातः काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--गर्भाशय के रोगों और अतिसार में उपकारक है। समस्त उत्तमाङ्गों के लिये बलप्रद है। भूख लगाती और दुर्बलता का नाश करती है।

मुफर्रेह शैखुर्रईस

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अबींध मोती, कहरुबाए शमई (तृणकान्त), जलाया हुआ केकड़ा, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम, प्रवालमूल प्रत्येक ३ माशा, सफेद चन्दन, वंशलोचन, छोटी

इलायची का दाना प्रत्येक ६ माशा, ऊद गर्की, दरूनज अकरबी, नरकचूर और सफेद बह्मन प्रत्येक ५ माशा, गुलाब-पुष्प १। तोला, छिले हुए काहू के बीज, कुलफा के बीज, खरबूजा के बीज का मग्ज, मीठे कद्दू के बीज की गिरी, खीरा-ककड़ी के बीज की गिरी, गावजबान पुष्प प्रत्येक ६ माशा, केशर १।। माशा, शुद्ध कस्तूरी, अंबर अश्हब प्रत्येक १ माशा, शर्बत सेब, शर्बत अनार मिष्ट, शर्बत बिही प्रत्येक १४ तोला, चाँदी के वर्क ७ माशा—यथाविधि मुफर्रेह् कल्प प्रस्तुत करें।

मात्रा और सेवनविधि—३ से ६ माशा तक अर्क बेदमुश्क और अर्क केवड़ा आदि में हल करके प्रयोग करायें।

गुण तथा उपयोग—दिल की धड़कन और मूर्छा में अतीव गुणकारी है।

मुफर्रेह् सू सब्जी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

नरकचूर, दरूनज अकरबी, सफेद और लाल बह्मन, बिल्ली लोटन प्रत्येक ३।।। माशा, फरंजमुश्क (रामतुलसी) २।।। तोला, वज्ज (बच), ऊद कमारी प्रत्येक १।।। तोला, सूखा पुदीना, सोआ सब्ज (सूसब्ज) ? , दालचीनी, छँटे हुए तिल, जायफल, चाँदी के वर्क, तृणकान्त, केशर प्रत्येक ६ माशा, जावित्री, याकूत प्रत्येक ३।। माशा, मीठे सेब का स्वरस, मर्जञ्जोश का स्वरस, गावजबान का स्वरस प्रत्येक ६ तोला—रत्नों, वर्को और केशर को अर्क गुलाब में खूब खरल करें। शेष द्रव्यों को सेब के स्वरस आदि में दिन-रात भिगों देवें। इसके पश्चात् छान कर २७ तोले शुद्ध मधु मिलाकर २७ तोले गाय का दूध डालें और इतना पकायें कि दूध जल जाय और शहद मात्र शेष रह जाय। पुनः रोगन बनफ्शा और रोगन बादाम प्रत्येक ६।। तोला मधु में डालकर इतना पकायें कि पाक (चाशनी) सिद्ध हो जाय। तत्पश्चात् खरलीकृत रत्न इत्यादिक मिला देवें।

मात्रा और सेवनविधि—६ माशा, ताजे जल से प्रातः काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—हृदय के लिये बलप्रद एवं उल्लासप्रद है। यदि किसी रोग या अतिसार वा विष भक्षण के कारण बल (कुवाए) और ओज (अखाह) क्षीण हो चुके हों तो इसके उपयोग से अति शीघ्र शक्ति उत्पन्न होकर स्वास्थ्य लाभ हो जाता है। यह वाजीकरण करती है। अंगवेदना में लाभप्रद और दिल की धड़कन, कम्पवात, जलोदर, कामला तथा अजीर्ण को नष्ट करती है।

मुरब्बा गजर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ताजे गाजर को लेकर जल म उबालें। जब वे कुछ नरम हो जायँ, तब

थोड़ा शुष्क करके खाँड़ के पाक में डालें। दूसरे दिन पाक को गाजरों समेत पकावें जिसमें पाक ठीक हो जाय।

गुण--दिल दिमाग को बल देता है।

मुरब्बा जञ्जबील (सोंठ)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रेशारहित ताजा एवं मोटा अद्रक लेकर ऊपर से छिलका उतार कर लवण जल में उबालें। मृदु होने पर निकाल कर खाँड़ के पाक (चाशनी) में डालें। दूसरे दिन यदि पाक पतला पड़ जाय, तो दुबारा पाक कर लेवें।

मात्रा--१ तोला

गुण तथा उपयोग--कफदोष नाशक, वात दोष एवं वातशूल में उपकारक है और वृक्कों को बल प्रदान करता है।

याकूती मुफर्रेह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लाल याकूती, सफेद चन्दन प्रत्येक ६ माशा, मोती, तृणकान्त, केशर प्रत्येक १३।। माशा, ऊद कमारी, दरूनज, गुलाब-पुष्प प्रत्येक १८ माशा, सोने के वर्क, चाँदी के वर्क, अंबर अश्हब, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, कपूर, गिल मख्तूम, केसर-पुष्प, धुला हुआ लाजवर्द, गिल अरमनी, बालछड़, नागकेशर, बिल्ली-लोटन-बीज प्रत्येक ४।। तोला, गावजबान, मस्तगी, दालचीनी, कतरा हुआ अबरेशम, बिजौरे का छिलका, सफेद बहमन, छड़ीला, नरकचूर, कद्दू के बीज की गिरी, नाखूना, जरिश्क, छिले हुए कुलफा के बीज, बन तुलसी, वंशलोचन, काहू के बीज, खीरा के बीज प्रत्येक १०।। तोला, शर्बत हुम्माज ऽ१ सेर २५ तोला, कुर्स अंबर प्रत्येक ५२।। तोला, मधु ऽ२ सेर ५० तोला—शर्बत तथा मधु का पाक करके यथाविधि मुफर्रेह तैयार करें।

मात्रा--६ माशा।

गुण तथा उपयोग—शरीर तथा हृदय के लिये परम बलदायक है।

रुब्ब जामुन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे जामुन को किसी बरतन में हाथ से खूब मलकर स्वरस निकालें और इसे कपड़े में छान कर आधा भाग खाँड़ मिला कर घन शर्बत तैयार करें।

मात्रा तथा सेवनविधि--६ माशा से १ तोला तक योग्य अनुपान से देवें।

गुण तथा उपयोग--अतिसारनाशक है। आमाशय और यकृत् को बल देता है तथा पित्त का नाश करता है।

रुब्ब बिही शीरीं (मधुर)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बिही को छील कर छोटे-छोटे टुकड़े कर लेवें और बीज निकाल कर खूब कूट-पीस कर स्वरस निकालें तथा आधा भाग खाँड़ डालकर घन शर्बत तैयार करें।

गुण तथा उपयोग--हृदय, आमाशय और अन्त्र को बल देता है। वमन तथा अतिसार में भी लाभप्रद है।

रोगन अजीब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मालकँगनी ७ तोला, शुद्ध आमलासार गंधक ५ तोला, कलौंजी ७ माशा, कुचिला १० माशा, शुद्ध बछनाग २।। माशा, सफेद घुँघची, कनेर की जड़ प्रत्येक ७ तोला--सबको अधकुटाकर गाय के दूध में सात दिन तक भिगोवें। आठवें दिन निकाल कर आतशी शीशी में भरकर पाताल यन्त्र द्वारा तेल निकालें।

मात्रा और सेवनविधि--२-३ बूँद किसी योग्य अनुपान से खिलावें।

गुण--दीपन-पाचन और बाजीकरण है।

रोगन कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कड़वे बादाम का मग्ज ६ तोला, कलौंजी, एरण्डबीज (रेंडी), गुग्गुल-प्रत्येक ४ माशा, कडवा कुट, फरफियून, जुन्दबेदस्तर, मीठा चिरायता, अफसन्तीन, नकछिकनी, सौंफ की जड़, पित्तपापड़ा, मेहदी ३-३ माशा, अकरकरा काली मिर्च, कस्तूरी, बालछड़, सोसन की जड़, तज, छडीला, सोंठ,द ालचीनी, बोल (मुरमक्की), लौंग, जायफल, सकबीनज, सातर, अजवायन, करपसमूल, करपसबीज, अनीसून, तगर, जावशीर, नरकचूर, सोंठ, जावित्री, कबाबचीनी, पीपल, कुन्दुर प्रत्येक २ माशा, अम्बर १ माशा, फरफियून, अम्बर, जायफल, कस्तूरी, जुन्दबेदस्तर के सिवाय शेष समस्त द्रव्यों को अधकुटा कर ५ सेर जल में रात्रि भर भिगोवें और प्रातः क्वाथ करें। तीसरा भाग रहने पर छानकर गुलाब-पुष्प, बाबूने का तेल, सोसन का तेल तथा रेंडी का तेल प्रत्येक १० तोला मिलाकर पाक करें। तेल

मात्र शेष रह जाने पर छानकर फरफियून आदि को हल करके शीशी में भर देवें। इसमें से आवश्यकतानुसार लेकर कुनकुना गरम मालिश करके गरम रूई बाँध देवें।

गुण तथा उपयोग--वातरोगों के लिये अनुभूत एवं सद्यः फलप्रद है।

रोगन कुचला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अहिफेन २ तोला, तिलका तेल ३० तोला, गाय का दूध ६० तोला, कुचिला १० तोला--कुचले को बारीक टुकड़े कर दूध और तेल में इतना पकावें कि दूध जल कर तेल मात्र शेष रह जावे। अब इसमें अफीम हलकर शीशी में रखें। आवश्यकतानुसार कुनकुना गरम करके मर्दन करें।

गुण--संधिशूल में अतिशय गुणकारी है।

रोगनकुश्त (कुष्ठ)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कडवा कुट, बालछड़ प्रत्येक ६ तोला--सब को कूट कर जैतून वा तिल के तेल और अर्क बहार[1] आधा सेर में मिलाकर पाक करें। अर्क के जल जाने पर औषध-द्रव्यों को तेल में खूब घोंटे। दो-तीन बार आध सेर अर्कबहार डालकर पकावें। तीसरी बार अर्क हो जाने पर उतारकर तेल को छान कर जुंदबेदस्तर, कालीमिर्च, फरफियून, सिलारस प्रत्येक ३।। तोला भली भाँति हल करके शीशी में भरकर सुरक्षित रखें।

गुण तथा उपयोग—कुनकुना गरम मालिश करके गरम रूई बाँधें। यह अर्दित, पक्षवध, कम्पवात, अपतन्त्रक, सुप्तिवात तथा वातशूल में परम गुणकारक है।

रोगन खफाश (चमगादड़)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जुन्दबेदस्तर, कड़वा कुट प्रत्येक १०।। माशा, जरावंद १४ माशा, उसारा मर्जंञ्जोश, जैतून का तेल प्रत्येक ५।। सेर, वध किये हुए चमगादड़ १२ नग—सबको एक में मिलाकर तैलपाक विधि से इतना पकायें कि पानी जल जाय और तेल

१—इसके योग के लिये दे० 'यूनानी सिद्धयोगसंग्रह पृ० ८९'।

मात्र शेष रह जाय। फिर उतार-छानकर सुरक्षित रखें और सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--गठिया, वातरक्त और गृध्रसी वात में लाभप्रद है।

रोगन दाद

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कारबोलिक एसिड ६ माशा, कपूर १ तोला, तारपीन का तेल २ तोला--प्रथम दोनों द्रव्यों को मिलाकर धूप में रखें। जब हल हो जाय, तब तारपीन का तेल मिला कर भली भाँति सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--दिन में दो-तीन बार दाह के ऊपर लगावें।

गुण तथा उपयोग--हर प्रकार के दाद में उपकारक है।

रोगन सीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लहसुन एकपोथिया ४ तोला, फरफियून, अकरकरा प्रत्येक ३ तोला, काली मिर्च, सुदाब १-१ तोला--सब को आध पाव जैतून के तेल में डालकर पाक करें और पाक सिद्ध होने पर उतारकर छान लेवें।

उपयोग विधि--शिश्न पर कुनकुना गरम तेल की मालिश करके ऊपर पान का पत्ता बाँध देवें।

गुण तथा उपयोग--शिश्न को दृढ़ करता है। जोड़ों की पीड़ा तथा आमवात में भी लाभप्रद है।

लऊक आबनैशकरवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

इसबगोल का लुआब, बिहीदाना का लआब, खतमी-बीज का लुआब, मीठे अनार का स्वरस, खीरे का स्वरस, कद्दू का स्वरस, कुल्फापत्र-स्वरस, ईख का रस प्रत्येक ६ तोला, बबूल का गोंद, कतीरा, मीठे बादाम का मग्ज, संदारशर्करा, पोस्ते का दाना प्रत्येक ७। तोला, चीनी आधा सेर--शुष्क औषधद्रव्यों को कूट-छानकर लुआब तथा स्वरसों में चीनी मिलाकर पाक करके मिलायें और लऊक तैयार करें।

मात्रा--७ माशा, अर्क गावजबान में मिलाकर दें।

गुण तथा उपयोग--यक्ष्मा, रक्तपित्त तथा शुष्क कास में उपयोगी है।

लऊक कताँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अलसी का लुआब ऽ।। सेर में खाँड और उत्तम मधु प्रत्येक ऽ।। सेर मिलाकर पाक करें।

मात्रा और सेवनविधि--१ तोला अर्क गावजवान के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--कफज कास और श्वास में उपकारक है।

लऊक मोतदिल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे बादाम का मग्ज, मीठे कद्दू का मग्ज प्रत्येक १०।। माशा, बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता, सतमुलेठी प्रत्येक १।। तोला--सब को कूट-छान कर ६ तोला खाँड़ (कंद सफेदी) की चाशनी में मिलाकर लऊक (अवलेह) तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि-१ तोला अर्क गावजबान १२ तोला के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--कास, उष्ण प्रसेक और प्रतिश्याय में लाभकारक है।

लऊक सपिस्ताँ खियारशंबरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उन्नाब, लिसोड़ा प्रत्येक १५ नग, बनफ्शा ६ माशा, खतमी ५ माशा, सनाय १।। तोला, शीरखिश्त २।। तोला, अमलतास की गुद्दी ४।। तोला, खमीरा बनफ्शा ३ तोला, तुरंजबीन ६ तोला, मीठे बादाम का तेल ५ माशा, मिश्री १।। तोला--प्रथम सनाय तक के सब द्रव्यों को ऽ।।। जल में उबालें और आधा जल रहने पर छान लेवें। उसमें शीरखिस्त, अमलतास का गूदा, तुरंजबीन, खमीरा और मिश्री मिला कर छान कर मध्य अग्नि पर पाक करें। गाढ़ा होने पर बादाम का तेल मिला कर सुरक्षित रखें।

मात्रा--१-१ तोला प्रातः सायं अर्क गावजबान से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--श्वसनकज्वर (निमोनिया) और कास में उपयोगी है तथा विबन्धनाशक भी है।

लबूब कबीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सालममिश्री, ताजा नारियल, घरेलू चिड़े (चटक) के सिर का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना प्रत्येक ३ तोला, पिस्ते का मग्ज, बादाम का मग्ज, फिंदक का मग्ज, हब्बतुल् खिजरा (बुत्म का फलबुन) का मग्ज, अखरोट का मग्ज, चिलगोजा का मग्ज, हब्बुल्जल्म का मग्ज, झींगा मछली, कुलंजन, शकाकुल मिश्री, लाल और सफेद बहमन, लाल और सफेद तोदरी, सोंठ, छिले हुए तिल, दालचीनी प्रत्येक १।। तोला, सूरंजान, बूजीदान, सूखा पुदीना प्रत्येक १ तोला २ माशा, बालछड़, नागरमोथा, लौङ्ग, कबाबचीनी, इन्द्र जौ, दरूनज अकरबी, कचूर, हब्बुल्कुल्कुल गाजर-बीज, प्याज-बीज, मूली के बीज, शलगम के बीज, इस्पस्त, हालों-बीज प्रत्येक १०।। माशा, जायफल, जावित्री, छडीला, पीपल प्रत्येक ७ माशा, केशर, मस्तगी, मायए शुतुर ऐराबी प्रत्येक १३।। माशा, ऊदखाम (अगर अपक्व) ६ माशा, अम्बर, अश्हब ४।। माशा, कस्तूरी २। माशा, सोने का वर्क ३० नग, चाँदी के वर्क ५० नग, समस्त द्रव्यों को कूट-छान कर तिगुने मधु की चाशनी में मिला कर लुबूब तैयार करें।

मात्रा—६ माशा दूध से।

गुण तथा उपयोग—यह अत्यन्त उत्तम बलप्रद, अतीव वाजीकर, वृष्य, उत्तेजक, स्तम्भक तथा शरीर पोषक औषध है।

लबूब सगीर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

मीठे बादाम का मग्ज, अखरोट का मग्ज, हब्बुल्खिजरा, चिलगोजे का मग्ज, हब्बुल् जल्म का मग्ज, फिंदक, पिस्ता, ताजा नारियल, हब्बुल्कुल्कुल का मग्ज, सफेद पोस्ते का दाना, लाल और सफेद तोदरी, छिलके रहित तिल, लाल और सफेद बहमन, तज, सोंठ, पीपल, अकरकरा, कबाबचीनी, शकाकुल, कुलंजन, जिरजीर के बीज, प्याज के बीज, शलगम के बीज, इस्पस्त के बीज, हालों के बीज, प्रत्येक सम भाग लेकर बारीक चूर्ण कर तिगुने मधु के साथ पाक में डालकर लुबूब तैयार करें।

मात्रा—७ माशा।

गुण तथा उपयोग—यह वृक्क तथा मूत्राशय को बल देता और वृष्य एवं वाजीकर है।

विद्रुत गन्धक (किबरीत संय्याल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

आमलासार गंधक ५ तोला, सीपश्स्म १० तोला—दोनों को बारीक करें और ς२ सेर जल में हल करके आतशी शीशी में भरकर मृदु अग्नि देवें तथा ς। जल शेष रहने पर निथार कर फिल्टर करें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकता पर २ बूँद जल में डालकर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—भूख बढ़ाती तथा रक्त दोष को निवृत्त करती है।

विद्रुत मुक्ता (मरवारीद सय्याल)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

१ माशा मोती में नीबू का रस थोड़ा-थोड़ा मिलाकर खरल करें। जब मोती हल हो जाय, तब भलीभाँति छान लेवें।

मात्रा तथा सेवनविधि—५ बूँद, १ तोला अर्क-गुलाब में मिलाकर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—हृदय तथा मस्तिष्क को बल देता तथा शारीरिक दौर्बल्य को नष्ट करता है और मोतीझरा ज्वर में उपयोगी है।

विद्रुत स्वर्ण

देखें "माउज्जहब"

शराबुस्सालहीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ईख का रस, गाजर का स्वरस, मीठे सेब का स्वरस, शलगम का स्वरस, गुड़हल का स्वरस, देशी अंगूर का स्वरस प्रत्येक दो सेर, छहारे का स्वरस ς१, हरा किशमिश ς१ सेर—इन सबको एक जगह मिलाकर रख लेवें। जब इनमें किंचित् संधान उत्पन्न हो जाय तब एक कलईदार देगची में रखकर १ माशा शुद्ध अफीम और १ तोला शुद्ध केशर पोटली में बाँधकर नैचा में रख कर यथाविधि अर्क खींचे।

मात्रा और सेवनविधि—५ तोले की मात्रा में प्रातः-सायंकाल उपयोग करायें। आवश्यकतानुसार बढ़ा भी सकते हैं।

गुणकर्म तथा उपयोग--यह शराब शरीर में शुद्ध रक्त उत्पन्न करती है तथा ओज एवं देहोष्मा को बल देती है।

विशिष्ट गुण--हृदय के बलवर्द्धन की प्रधान वस्तु है।

शर्बत अंगूर अम्ल व मधुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अंगूर स्वरस ऽ१ सेर में ऽ३ सेर खाँड़ मिलाकर पाक करें।

मात्रा--२ तोला।

गुण तथा उपयोग-आमाशय और हृदय को बल देता तथा पाचन है।

शर्बत अफसंतीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफसंतीनरूमी १७॥ माशा, निशोथ ३५ माशा, गुलाब-पुष्प १७ माशा-सबको ऽ२ सेर जल में उबाल-छानकर ऽ१ सेर खाँड़ मिलाकर पाक करें।

मात्रा--२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग--आमाशय तथा यकृत् को दूषित दोषों से निवृत्त करता है।

शर्बतजूफा मुरक्कब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अंजीर १० नग, खतमी बीज, मुलेठी, ईरसा प्रत्येक १०॥ माशा, मेथी १४ माशा, सौंफ, करफ्सबीज प्रत्येक १॥ तोला, हंसराज १ तोला ४ माशा, सूखा जूफा २ तोला, बीजरहित दाख (मुनक्का) ४ तोले--समस्त द्रव्यों का यथाविधि क्वाथ करें, तीसरा भाग रहने पर दुगुनी खाँड़ और एक भाग गुलकन्द मिलाकर पाक करें। पाक सिद्ध होने पर छान कर बोतलों में भरें।

मात्रा--२ तोला।

गुण तथा उपयोग--कफज कास में उत्तम है और श्वास में कफ का स्राव करता है।

शर्बत तूत स्याह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

काले शहतूत को जल में भलीभाँति मल कर छान लेवें। इस छने हुए ऽ१ पानी में तीन सेर खाँड़ मिला कर पाक करें।

मात्रा—२ तोला अवलेह की भाँति चाटें।

गुणकर्म तथा उपयोग—गले की पीड़ा, शोथ और जलन को हटाता है।

शर्बत फर्यादिरस

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गावजबान, सफेद चन्दन, हंसराज, सफेद पोस्ते का दाना, ऊदसलीब, मुलेठी प्रत्येक २ तोला, सौंफ, खतमी-बीज, गुलाब-पुष्प प्रत्येक १ तोला, गुठली निकाला हुआ मुनक्का (दाख) २५ दाना—समस्त द्रव्यों को यथाविधि उबाल कर छान लें और ऽ१ सेर खाँड़ मिला कर शर्बत की चाशनी करें।

मात्रा और सेवनविधि—२ तोला, अर्क गावजबान १२ तोले के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—प्रसेक, प्रतिश्याय और कास में लाभकारी है।

शर्बत रंगतरा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रंगतरा (संतरा) का स्वरस ऽ।= में ऽ१।। सेर चीनी मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग—यह पित्त की उग्रता को नष्ट करता और तृष्णा को मिटाता है।

शर्बत लोकाट

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लोकाट का पानी ऽ।। सेर में ऽ१।। चीनी मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ से ४ तोला।

गुण तथा उपयोग—पित्त की उग्रता को शान्त करता है।

शर्बत वर्द सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ताजे गुलाबपुष्प ऽ१ सेर बीज तथा हरी पंखड़ी आदि रहित करके ऽ१ सेर जल में खूब पकाकर छान लेवें और इस क्वाथ-जल के प्रति आध सेर में ऽ१ सेर के हिसाब से चीनी मिलाकर पाक करें और झाग उतारें। कोई-कोई क्वाथ-जल के बराबर चीनी मिलाते हैं।

गुण तथा उपयोग—हृदय और आमाशय को बल देता है, तृषा को शांत करता है, कोष्ठगत दाह तथा मलबद्धता का निवारण करता है। ज्वर में भी लाभकारी है। यह शर्बत निचोड़कर (बिल्‌अस्र) विरेक कराता है, अतएव अन्त में मलावरोध उत्पन्न करता है अथवा शीतल जल विरेक कराने में सहायक होता है।

शर्बत वर्दमुकर्रर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

ऽ६ सेर जल में ऽ२। सेर गुलाब का क्वाथ करें। जब ऽ१ सेर पानी जल जाय तब मलकर ऽ१ सेर गुलाब का फूल और मिलाकर पकायें। जब ऽ।।। पानी जल जाय तब मल-छानकर ऽ१।। मिश्री मिलाकर पाक करें।

मात्रा—२ तोला, अर्क सौंफ ८ तोला के साथ पिलायें।

गुणकर्म तथा उपयोग—यकृत्, वस्ति और वृक्क के उष्ण व्याधियों में लाभकारी है तथा यह मूत्र-दाह को मिटाता है।

शियाफ अख्जर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध जंगार १० माशा, रूपामक्खी, सफेदा वंग, बबूल का गोंद, उशक प्रत्येक ७ माशा—सुदाब के स्वरस में सब खरल की हुई ओषधियाँ मिलाकर वर्ति (शियाफ) तैयार करें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकता के समय जल वा अर्क गुलाब में घिसकर नेत्र में लगायें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रकण्ड, नेत्रस्राव और शुक्ल (फूली) में लाभकारी है।

शियाफ अब्यज

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

निशास्ता ३।। माशा, सफेदा काशगरी, बबूल का गोंद, कतीरा प्रत्येक १०।। माशे—समस्त द्रव्यों को महीन करके मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिलायें और वर्ति बनायें।

मात्रा और सेवनविधि—आवश्यकतानुसार पपोटों पर लगायें।

गुण तथा उपयोग—नेत्राभिष्यंद और अन्यान्य नेत्र-रोगों में (जो उष्णताजनित हों) लाभप्रद है।

शियाफ अब्यज अफ्यूनी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेदा काशगरी २८ माशा, बबूल का गोंद १७।। माशा, कतीरा, अफीम प्रत्येक ३।। माशा—सबको बारीक पीसकर अंडे की सफेदी में गूँधकर वर्ति बनावें।

गुण—पीड़ाशामक है तथा नेत्राभिष्यंद (आँख दुखने) में गुणकारी है।

शियाफ अब्यज कुंदुरी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सफेदा वंग २ तोला ४ माशा, कीकर का गोंद १४ माशा, अफीम, अञ्जरूत (परिपालित), कतीरा प्रत्येक ३।। माशा, कुंदुर १।।। माशा—सबको कूट-छानकर वर्षा-जल में गूँधकर वर्ति बनायें।

गुण तथा उपयोग—नेत्रव्रण एवं सांद्रपूय के लिये उपयोगी है।

शियाफ अबार (सीसकवर्ति)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अफीम ३।। माशा, सोनामक्खी, सफेदा वंग, दग्ध ताँबा, सुर्मा असफहानी, बबूल का गोंद, कतीरा, दग्ध सीसा प्रत्येक २ तोला ४ माशा—सबको कूट-छानकर वर्षाजल में गूँधकर वर्ति बनायें। नूरुलऐन में इसी योग में अफीम, बोल प्रत्येक ३।। माशा और कुंदुर १०।। माशा भी लिखा है।

गुण तथा उपयोग—नेत्रक्षत एवं तारकाभ्रंश में लाभकारी है, यह व्रण को पूरण और संताप को शमन करती है।

शियाफ कुंदुर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

एलुआ, कुंदुर, गुलनार, अञ्जरूत, दम्मुल्अख्वैन, सुरमा, फिटकिरी प्रत्येक ३॥ माशा, जंगार ६ रत्ती, कूट-छानकर वर्ति बनावें।

गुण तथा उपयोग--नासूर को शुद्ध करके इसे लगावें। आँख के नासूर (नेत्र नाड़ी) के लिए उत्तम है।

शियाफ गोटा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीली हड़ का बकला, बबूल का गोंद, धोया हुआ तूतिया प्रत्येक २ तोला ११ माशा, सोंठ १ तोला ५॥ माशा, रसवत १ तोला २ माशा, हलदी, केसर प्रत्येक ७ माशा--सबको खरल करके यथावश्यक कच्चे अंगूर के स्वरस में गूँध कर वर्ति बनावें।

गुण तथा उपयोग--पोथकी, नेत्रकण्डू और दृष्टिदौर्बल्य (कुम्नः)के लिये गुणकारक है।

शियाफ जरब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हरा तूतिया, शिब्ब यमानी (फिटकिरी), सुहागा, सोनामक्खी, जंगार, विलायती हरा हीराकसीस प्रत्येक ६ माशा, देशी जस्ता का फूल, बबूल का गोंद प्रत्येक ३ माशा--समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें और गोंद में मिलाकर वर्ति तैयार कर लेवें।

गुण तथा उपयोग--पलकों को उलटकर यह वर्ति कुकरों (पोथकी) पर घिस दिया करें। यह पोथकी के लिये अति लाभप्रद है।

शियाफ तुफाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

धोया हुआ सफेदा वंग ५ तोला १० माशा, माक्षीक (जलाकर गदही या कन्या प्रसूता स्त्री के दूध में शुद्ध किया गया अक्लीमिया) ४ तोला ८ माशा, केशर १४ माशा, कतीरा ७ माशा--सबको महीन पीसकर खुमी के स्वरस में गूँधकर वर्ति बनावें और अंडे की सफेदी के साथ प्रयुक्त करें।

गुण तथा उपयोग--यह वर्ति अत्यन्त (लतीफ) है। नेत्र में बिल्कुल नहीं लगती। नेत्रव्रण, नेत्र-शूल, नेत्रजालक, पर्वणी और तारकाभ्रंश (का भेद तुफाही) के लिये लाभप्रद है।

शियाफ दीनारजून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रूपामक्खी, सफेदा वंग प्रत्येक २ तोला ११ माशा, अफीम, निशास्ता प्रत्येक ३।। माशा और कतीरा ५। माशे का प्रसिद्ध विधि से वर्ति बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--आवश्यकतानुसार जल वा अर्क गुलाब में घिसकर नेत्र में लगावें।

गुण तथा उपयोग--सौदावी नेत्राभिष्यंद में गुणकारक है।

शियाफ मरारात

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

दग्ध माक्षीक (अक्लीमिया) ४ तोला ४।। माशा, कीकर का गोंद २ तोला ४ माशा, रोहू का पित्ता, चकोर का पित्ता प्रत्येक २ तोला ४ रत्ती, भारतीय स्याही (जो लेखन के काम आती है), सफेद मिर्च १ तोला ५।। माशा, सफेदा वंग ४ माशा, उशक, सकबीनज, रोगन बलसाँ, जावशीर प्रत्येक ७ माशा, प्रसिद्ध प्राणि-विशेष (कफतार) का पित्ता, अफीम प्रत्येक ३।। माशा, प्रसिद्ध शिकारी पक्षी (बाश का पित्ता), उकाब का पित्ता, गाय का पित्ता, रीछ का पित्ता, भेड़िये का पित्ता, कौए का पित्ता, बाज का पित्ता प्रत्येक १।।। माशा, (रोगन बलसाँ के अभाव में रोगन आजुर (इष्टि का तैल) सम्मिलित करें। 'शैख' के मतानुसार रोहू मछली और भेड़िये का पित्ता आवश्यक है, शेष पित्ते अतिरिक्त वा अनावश्यक हैं) --शुष्क द्रव्यों को पीस-छानकर पित्तों में गूँध कर वर्ति बनावें और सौंफ के स्वरस में घिसकर नेत्र में लगाना चाहिये।

गुण तथा उपयोग--मोतियाबिन्द, नेत्रव्रण, नेत्रजालक और नेत्रगत क्लेद के लिये गुणकारक है। पटलों में शीघ्र प्रवेश कर जाने के कारण यह अपना प्रभाव करती है। इसमें दो वर्ष तक वीर्य शेष रहता है।

शियाफ सुमाक

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

११।। तोले सुमाक को वर्षा-जल में पकाकर छान लेवें और पुनः पकायें जिसमें वह गाढ़ा हो जाय। फिर शीतल होने के लिये रख छोड़ें। तदुपरान्त सफेदा

वंग २ तोला ११ माशा को उसमें गूँधें और वर्ति बनावें। कोई-कोई सुमाक के पानी को इतना पकाते हैं कि वह गाढ़ा हो जाता है और उसमें गर्दसुमाक को गूँधकर वर्ति बनाते हैं।

गुण तथा उपयोग--पोथकी, नेत्रकण्डू, नेत्रपाक तथा नेत्र के बाहर की ओर निकल आने में लाभकारी है।

सफूफ इस्लाह

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

खार भंग, खार नकछिकनी, खार मूली, खार पुदीनापत्र, खार कटेरीपत्र प्रत्येक २ तोला, सत्व अजवायन १तोला--सबको बारीक कूट-छानकर अजवायन सत्व मिलाकर खरल करें।

मात्रा--४ रत्ती ७ माशे जुवारिश कमूनी में मिलाकर प्रयोग करें अथवा भोजनोत्तर ४ रत्ती चूर्ण जल से लें।

गुण तथा उपयोग--दीपन-पाचन तथा अन्त्रस्थ वायुनाशक है और भूख लगाता है।

सफूफ खद्र

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बिल्लीलोटन-बीज, मस्तगी, नरकचूर, गावजबान, छोटी इलायची का दाना मीठा सूरंजान, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम, बूजीदान प्रत्येक ३ माशा, ऊदसलीब, ऊब गर्की, जदवार, दरूनज अकरबी प्रत्येक १ माशा, दोनों बहमन, दालचीनी, तज, बालछड़, राम तुलसी-पत्र प्रत्येक २ माशा--प्रत्येक द्रव्य को पृथक्-पृथक् कूट-छानकर मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--४ माशा, यह चूर्ण ताजा जल से खावें।

गुणकर्म तथा उपयोग--सुप्तिवात (खद्र, सुन्नता) के लिये गुणकारक है।

सफूफ तिहाल

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

राई ३ तोला, भुना हुआ सुहागा १ तोला कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--२ माशा ताजा जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--आमाशय में शक्ति उत्पन्न करता (दीपन) है तथा प्लीहा के शोथ एवं काठिन्य को दूर करता है।

सफूफ तीन

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

रैहाँबीज, कनौचा-बीज, भुने हुये तुख्म हुम्माज, इसबगोल, बबूल का गोंद, गिल अरमनी, वंशलोचन प्रत्येक समतोल--रैहाँ, कनौचा और इसबगोल को छोड़कर शेष समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर इनके साथ मिलाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा तथा सेवनविधि--७ माशा चूर्ण गाय के घी में स्नेहाक्त करके ७ माशा रेशाखतमी के लुआब के साथ उपयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--रक्तज और पित्तज अतिसार को बन्द करता है तथा पेचिश में लाभकारक है।

सफूफ दमा हल्दीवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

गेहूँ को मिट्टी के प्याले में डालकर अग्नि पर रखकर कोयला (मसीकृत) कर लेवें, राख न होने पावे। पुनः इससे आधी हलदी जला लेवें। (गेहूँ से कम जलायें)। फिर दोनों को मिलाकर चूर्ण करें।

मात्रा--५ माशा प्रातः जल से देवें और प्रति दिन १ रत्ती बढ़ायें जिससे २५ दिन में ३० माशा तक पहुँच जाय। पुनः १-१ माशा कम करके प्रथम मात्रा पर आ जायें। यह प्रयोग ५१ दिन तक करें।

गुण तथा उपयोग--कफज कास और श्वास में उपयोगी है।

सफूफ दमुआ (नेत्रस्रावहर चूर्ण)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

मुण्डीपुष्प ऽ॥ सूर्योदय से पूर्व उसके पौधे से तोड़कर छाँह में सुखायें और काली हड़, सूखा धनियाँ प्रत्येक ५ तोला--सबको कूट-छानकर ऽ। चीनी मिलाकर चूर्ण बनायें।

मात्रा, गुण तथा उपयोग--प्रति दिन प्रातः-सायंकाल ४ माशा से १ तोला तक सेवन करें। बादी और अम्ल पदार्थों से परहेज करें। यह नेत्रस्राव के लिये अतीव गुणकारी है।

सफूफ दीदान

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

लाल हींग ४ रत्ती, चिरायते का चूर्ण १० रत्ती--ऐसी एक पुड़िया रात्रि में सोते समय सेवन करायें।

गुण तथा उपयोग--आन्त्रकृमि विशेषकर कद्दू दाने और गण्डूपद कृमि (गोल कीड़ों--केंचुवों) के निकालने के लिये उपयोगी एवं कृतप्रयोग है।

सफूफ नमक शैखुर्रईस

द्रव्य तथा निर्माणविधि --

साँभर नमक, सफेद मिर्च प्रत्येक ७।। तोला, नवसादर, सोंठ, सूखा पुदीना, कालीमिर्च प्रत्येक ५ तोला ४ माशा, करफसबीज ३।।। तोला, अनीसून, जिरजीर बीज, अजवायन, बालछड़ प्रत्येक २।। तोला---सबको कूट-छानकर चूर्ण बनावें।

मात्रा---५ माशा, भोजनोत्तर।

गुण तथा उपयोग---आमाशय तथा यकृत को बल देता और वायुनाशक तथा दीपन-पाचन है एवं संधिशूल में उपकारक है।

सफूफ नाना

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

सूखा पुदीना ३ माशा, सुमाक १।। तोला, काला नमक १।। तोला, काली मिर्च ७ माशा---सबको कूट-छानकर चूर्ण तैयार करें।

मात्रा---३ माशा जल से देवें।

गुण तथा उपयोग---वायुनाशक, आध्मानहर, शूलनाशक तथा दीपन-पाचन है।

सफूफ बिरंगी

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

बड़ी हरड़, आमला, वायविडंग (छिली हुई) प्रत्येक ३५ माशा, सफेद निशोथ ८ तोला ६ माशा, समस्त द्रव्यों से दुगुनी चीनी --प्रथम शेष द्रव्यों का चूर्ण करें और फिर चीनी मिला देवें।

मात्रा---७ माशा।

गुण तथा उपयोग---उदर के लम्बे तथा छोटे कृमियों को नष्ट करता है।

सफूफ मुगल्लिज

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

कोंपल बर्गद, भिंडी की जड़, लिटोरा, कच्चा केला, शकरकन्द प्रत्येक २ तोला, तजकलमी ३ माशा--समस्त द्रव्यों को कूटकर सबके बराबर चीनी मिलाकर चूर्ण बनायें।

मात्रा और सेवनविधि--७-७ माशा, प्रातः-सायंकाल गाय के दूध के साथ सेवन करें।

गुणकर्म तथा उपयोग--शुक्रप्रमेह में लाभकारी है। यह वीर्य को गाढ़ा करता तथा वीर्यस्तम्भक है।

सफूफ मुवल्लिफ

द्रव्य तथा निर्माण विधि---

सूखा सिंघाड़ा, कतीरा प्रत्येक ६ माशा, निशास्ता, तालमखाना, सालममिश्री प्रत्येक ४ माशा, माजू, मस्तगी प्रत्येक ३ माशा, चीनी सबके बराबर कूटछानकर चूर्ण करें।

मात्रा---५ माशा, दूध या जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग-प्रमेह, वीर्यतारल्य तथा शीघ्रपतन में अपूर्व गुणकारी है

सफूफ सूया

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

काली हड़, पोस्ते की डोडी, सौंफ प्रत्येक ६ माशा, गाय के घी में भूनकर सबको कूटकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और उपयोगविधि---७ माशा ताजा जल से प्रयोग करें।

गुणकर्म तथा उपयोग---आमाशय तथा अन्त्र के दौर्बल्य से जो विरेक होते हैं उनके लिये यह उत्कृष्ट ओषधि है।

सफूफ सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

गेरू, भुनी हुई फिटकिरी १-१ तोला बारीक पीस लेवें और २ तोले चीनी मिला लेवें।

मात्रा---३ माशा, शर्बत बजूरी और दूध की लस्सी से लेवें।

गुण तथा उपयोग---सूजाक में मूत्रदाह को मिटाता है तथा पीप को भी रोकता है।

सफूफ सुलेमानी खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

काला नमक, साँभर नमक, इन्द्राणी नमक, नवसादर, प्रत्येक ७ तोला, अजमोद, अजवायन, कालीमिर्च, सोंठ, लौंग, जीरा स्याह, जावित्री प्रत्येक १-१ तोला---सबको कूट-पीसकर सिरका में उबालें, फिर शुष्क करके खरल कर लेवें।

मात्रा---२ माशा, भोजनोत्तर प्रयोग करें।

गुण---दीपन-पाचन है।

सफूफ हिंदी

द्रव्य तथा निर्माण विधि--

नमक पुदीना, नमक कटाई, नमक मदार, नमक मूली, छाँह में सुखाई हुई नकछिकनी---सब बराबर-बराबर लेकर कूट-छानकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि---२ माशा भोजन से पूर्व सेवन करें।

गुण तथा उपयोग---आध्मान तथा बादगोला को नष्ट करता है तथा भोजन को पचाता एवं स्वादिष्ट बनाता है।

सनून कलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

नागरमोथा ४। तोला, पीत कसीस, सूखा धनिया, लाहौरी नमक, प्रत्येक ७ माशा, मस्तगी, सफेद कत्था, कुटकी, सफेद जीरा, भुना हुआ नीलाथोथा प्रत्येक ३।। माशा, कबाबचीनी, सोंठ, कपूरकचरी, वज्रदन्ती प्रत्येक १।।। माशा---यथाविधि सनून (मंजन) बनावें।

मात्रा और सेवनविधि---थोड़ा-सा मंजन रात्रि में सोते समय और प्रातःकाल दाँतों पर मलें।

गुणकर्म तथा उपयोग---दाँतों को चमकदार बनाता और दृढ़ करता तथा रक्तस्राव को बन्द करता है।

सनून जर्द

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

अनार का छिलका, गुलनार, हलदी, सुमाक, भुनी फिटकिरी प्रत्येक १ माशा---सबको महीन पीसकर दाँतों और मसूढ़ों पर मलें।

गुण तथा उपयोग---दाँतों को दृढ़ करता और अभिघातज दंतशूल में विशेष गुणकारी है।

सनून तंबाकू

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

तंबाकू सुरती, कालीमिर्च प्रत्येक १ तोला, साँभर नमक १० माशा कूट-पीसकर चूर्ण बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि---यथाविधि दाँतों पर मलें।

गुण तथा उपयोग---यह मंजन मसूढों की आर्द्रता को सुखाता और दाँतों की जड़ों को दृढ़ करता है। प्रसेकज द्रव के इन्सिबाब को रोकता है।

सनून पोस्त मुगीलाँ वा सनून मुगीलाँ

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

कीकर की जड़ की छाल ४ तोला, कत्था, सुपारी, संगजराहत १-१ तोला, कालीमिर्च, सोंठ १-१ माशा---सबको बारीक पीसें। इसमें मस्तगी १ तोला और नागरमोथा २ तोला कई हकीम मिलाते हैं।

मात्रा और सेवनविधि---रात्रि में दाँतों पर मलकर सो रहें, कुल्ली न करें। प्रातःकाल कुल्ली करके दाँत साफ करें वा प्रातः मलकर दो घंटे पश्चात् कुल्ली करके साफ करें।

गुण तथा उपयोग---हिलते दाँतों के लिये परमोपादेय है। रक्त-स्राव बन्द करता है।

सनून मुजर्रब

द्रव्य तथा निर्माणविधि---

कत्था, सोंठ, छोटी इलायची, सफेदमिर्च, मस्तगी, काला नमक, भुनी फिटकिरी, हरा तूतिया---सबको समान भाग में लेकर पीसकर मंजन बनावें।

मात्रा तथा सेवनविधि---दाँतों पर चुटकी भर मलें।

गुण तथा उपयोग---दाँतों और मसूढों के रोगों में अतीव गुणकारी है।

सुनून मुजल्ला

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

दग्ध सीप, दग्ध बारहसिंगा, समुद्रझाग, रूमी मस्तगी, सेंधा नमक समान भाग लेकर मंजन तैयार करें।

उपयोगविधि--दाँतों पर मलें।

गुण तथा उपयोग--दाँतों को निर्मल (लेखन) करने के अतिरिक्त सुगंधित एवं आर्द्रतारहित करता है।

सुर्मानूरुल्ऐन

यूनानी सिद्धयोगसंग्रह में 'नूरुल्ऐन' का योग देखें।

हब्ब अख्खार

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हड़, चीता, सोंठ, सज्जीखार, सुहागे का लावा, सफेद जीरा, लाहौरी नमक--सबको सम भाग लेकर कूट-छान लेवें। तत्पश्चात् दुगुना पुराना गुड़ मिलाकर मूँग के समान गोलियाँ बनावें।

मात्रा--प्रातः ३ माशा, उष्ण जल से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--बढ़ी हुई प्लीहा को शीघ्र ही कम करती है।

हब्ब आसाब

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

घरेलू चिड़े (चटक) के सिर का मग्ज, शकाकुलमिश्री, प्याज का बीज, गंदना का बीज, किशनखुर्मा, सालममिश्री, जिरजीर का बीज, रेगमाही प्रत्येक १-१ तोला, कस्तूरी ३ रत्ती, कैल्सियाई हाइपोफास्फॉस और सोडियाई हाइपोफॉस्फॉस प्रत्येक ६ माशा--सबको पीसकर मधु में मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली प्रातः-सायंकाल ऽ। भर गाय के दूध से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--वातनाड़ी को बल देनेवाला, बल्य, स्फूर्तिदायक और वाजीकर है।

हब्ब कत्थ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कपूर, रसकपूर, पपड़िया कत्था, सफेद मूसली प्रत्येक १ तोला—अर्क पान या जल में पीसकर चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—एक गोली मुनक्का में इस प्रकार बन्द करें कि गोली दाँतों में न लगे। बाद को सेवन करें। इसका सेवन चबाकर कभी भी न करें, प्रत्युत निर्दिष्ट विधि से निगल लेवें।

पथ्य में चने की रोटी, अरहर की दाल खूब घी डालकर या बकरी के मांस की कलिया, फुलके या डबल रोटी से खावें। इसके अतिरिक्त और किसी वस्तु के सेवन की आज्ञा नहीं देवें।

गुण तथा उपयोग—फिरंग और आमवात में बहुत ही गुणकारी है और समस्त सौदावी रोगों में अतीव उपयोगी है।

हब्ब कबिद (दी) जदीद

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रेवंद खताई, नौसादर प्रत्येक ५ तोला, कलमी शोरा १० तोला, फेराई एट क्विनीनी साइट्रास १।। माशा—समस्त द्रव्यों को पीसकर ४-४ रत्ती की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि—१-१ गोली अर्क कासनी ६ तोला, अर्क मकोय ६ तोला के साथ प्रातः-सायंकाल प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—जीर्णज्वर एवं यकृत के रोगों में गुणकारक है।

हब्ब कुचला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध कुचला और केसर १-१ तोला, दालचीनी, जावित्री, सूरंजान प्रत्येक ४-४ तोले, सोंठ १० तोले, बड़ी इलायची-बीज ५ तोले—सबको जल से महीन पीसकर जंगली बेर के समान गोलियाँ बनावें।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः सायंकाल दूध से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—वीर्य पुष्टिकर, बल्य तथा आमवात एवं वातिक शूल में उपयोगी है।

हब्ब खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

सुवर्ण भस्म २ तोला, अल्अहमर भस्म १ तोला, मीठे कद्दू के बीज का मग्ज २ तोला, अम्बर २ तोला, कस्तूरी १ तोला—अर्क बेदमुश्क में मिलाकर मूँग के बराबर गोलियाँ बनावें।

मात्रा—१-१ गोली भोजनोत्तर प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—यह दीपन-पाचन, पुंस्त्वशक्तिवर्द्धक, वाजीकरण और शरीर के सब अंगों को बल देती है।

हब्ब खब्सुल्हदीद (मण्डूरवटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

हब्बुर्रशाद (हालों) ८। तोला, गंदना के रस से शुद्ध किया हुआ मंडूर ३७।। तोला, गंदना के बीज, जिरजीर-बीज, करफस-बीज, गाजर-बीज, मूली-बीज, मेथी-बीज, प्याज-बीज, छोटी इलायची-बीज प्रत्येक ७। तोला—समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर गंदना के रस में घोंटकर चने के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा—३-३ गोली प्रातः-सायंकाल ताजे जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—यह आमाशय को बल देकर शुद्ध रक्त उत्पन्न करता है। रक्तज और वातज अर्श में गुणकारी है और पुराने सूजाक के लिये लाभप्रद है।

मण्डूर शोधनविधि—मण्डूर को बारीक पीसकर सात दिन तक गंदना-बूटी के रस में भावना देवें और प्रतिदिन रस बदलते रहें। पुनः सुखाकर लोहे के तवे पर भून लेवें, तो बस मण्डूर शुद्ध हो जाता है। इसे ही उपर्युक्त योग में डालें।

हब्ब गारीकून

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

उसारा गाफिस, और रेवंदचीनी ७-७ माशे, गारीकून ३५ माशे, चीनी ५२।। माशे—सब द्रव्यों को कूट-छानकर जल से गोलियाँ बनावें।

मात्रा—रात्रि में ३।। माशा प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—विबन्धहर और यकृच्छोधक है।

हब्ब गुलपिस्ता वा बस्तज

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

गुलपिस्ता और बहेड़ा दोनों को समतोल लेकर आदी के रस में घोंटकर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—एक वा दो गोली मुख में रखकर उसका लुआब निगलें, अम्ल और बादी पदार्थ से परहेज करें।

गुण तथा उपयोग—कफज कास में लाभकारी है और छाती से कफ को निकालती है।

हब्ब जदवार

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जदवार (निर्विसी), दरूनज अकरबी, दालचीनी, लौंग, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत प्रत्येक ७ माशा, केशर, जावित्री, रूमी मस्तगी, अगर, अफीम, खुरासानी अजवायन प्रत्येक ३।। माशा, कस्तूरी, जुंदबेदस्तर प्रत्येक १।।। माशा—सबको कूट-पीसकर चने के बराबर गोलियाँ बनायें।

मात्रा—१-२ गोली उपयुक्त अनुपान से देवें।

गुण तथा उपयोग—कास, प्रतिश्याय, श्वास (साँस फूलना) के लिये लाभप्रद तथा शरीर को बल देनेवाली है।

हब्ब जुंदबेदस्तर

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

जुंदबेदस्तर, कस्तूरी (खताई), ऊदसलीब प्रत्येक २ माशा, अर्क दालचीनी या जौजबूया (जायफल) या बादियान (सौंफ) के साथ बारीक पीसकर काली मिर्च के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा तथा सेवनविधि—बालकों को आधी गोली माता के दूध में घिसकर पिलायें। युवा मनुष्य को १-३ गोली तक उपयुक्त अनुपान से खिलायें और पतला लेप के रूप में भी प्रयुक्त करें।

गुण तथा उपयोग—बालापस्मार, मृगी और पक्षवध में लाभकारी है। प्रसवोत्तर स्त्री या शिशु को सर्दी लग जाने से जो कष्ट उत्पन्न होते हैं उनके लिए भी लाभदायक है।

हब्ब तप वल्गमी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

पीपल, करंजुवा की गिरी प्रत्येक १ तोला, सफेद जीरा, बबूल का पत्र प्रत्येक ६ माशा—कूट-छानकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—१-१ गोली प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल गरम जल से सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—कफज्वर में बड़ा गुणकारी है।

हब्ब ताऊन खास

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

केसर, एलुआ प्रत्येक १ तोला, बोल (मुरमकी) ६ माशा—ताजे पानी में घोंटकर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—१ गोली प्रातःकाल ताजा जल से तीन दिन नित्य सेवन करें। बीच-बीच में तीन दिन छोड़कर इसी प्रकार एक-एक मास पर्यंत सेवन करें।

गुण तथा उपयोग—जिस समय ग्रंथिकज्वर (प्लेग) फैल रहा हो, उस समय रक्षा के लिये इन गोलियों का सेवन अतीव गुणकारी एवं परीक्षित सिद्ध हुआ है।

टि०—रोगावस्था में इनका उपयोग निषिद्ध है।

हब्ब ताऊन अंबरी जवाहरवाली

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

दरूनज अकरबी, जदवार (निर्विसी), कचूर, लाल बहमन, सफेद बहमन प्रत्येक ६ माशा, सफेद चन्दन, गिल मख्तूम, गिल अरमनी, दालचीनी, पाषाणभेद, वंशलोचन, जरावंद मुदहरज (गोल), वलसाँ-बीज प्रत्येक ४ माशा, केसर, जहरमोहरा, मोती, याकूत प्रत्येक ३ माशा, अम्बर, चाँदी के वर्क, सोने के वर्क प्रत्येक १॥ माशा, अर्क गुलाब, अर्क बेदमुश्क, अर्क केवड़ा प्रत्येक ५ तोला—रत्नों को अर्क में खरल करें। अम्बर और केशर को औषध-द्रव्यों के चूर्ण में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियाँ बनावें और ऊपर से चाँदी तथा सोने के वर्क लपेट देवें।

मात्रा और सेवनविधि—रोगावस्था में दिन में तीन बार दो-दो गोली मुफर्रह बारिद में मिलाकर वा अर्क गुलाब ५ तोले के साथ प्रयोग करें। रोग प्रतिबन्धक स्वरूप में प्रति दिन दो गोली जल से खावें।

गुण तथा उपयोग--प्लेग की रोगावस्था में अथवा उसके प्रतिबन्धक रूप में प्रयोग करने की सर्वोत्तम औषधि है।

हब्ब पपीता

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

विलायती पपीता ६ माशा, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, सूखा पुदीना, मदार का फूल, सेंधा नमक, काला नमक प्रत्येक १-१ तोला--समस्त द्रव्यों को कूट-छान कर नीबू के रस की भावना देकर, चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा--१-१ गोली भोजनोत्तर सेवन करें।

आमाशय के रोगों में दो गोली जल से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--यह पाचक है तथा उदरशूल, वातशूल, विसूचिका और आध्मान में लाभकारी है।

हब्ब बवासीर सुर्ख

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध रसवत २ तोले, गेरू ४ तोले--दोनों को कुकरौंधा के रस में खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--३-४ गोली अर्क गावजवान १० तोले और शर्बत अंजबार २ तोले के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--रक्तार्श में रक्त को शीघ्र बन्द करती है।

हब्ब मरवारीद

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

अबीध मोती ४ रत्ती, जहरमोहरा खताई, हज्रुलयहूद (बेर-पत्थर) दरियाई नारियल, पीली हड़ का बकला, कँवलगट्टे की गिरी, वंशलोचन, छोटी इलायची का दाना, गुलाबपुष्प का जीरा (केशर) प्रत्येक ६ माशा--सबको महीन पीसकर खरल में भली-भाँति हल करके अर्क गुलाब के साथ मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ तैयार कर लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--एक वर्ष के बालक को १-१ गोली प्रातः सायंकाल माता के दूध में हल करके पिलायें।

गुण तथा उपयोग--बालज्वर, बालातिसार और बालकों के अजीर्ण, मलबद्धता, दौर्बल्य एवं कृशता तथा सूखा (बालशोष) रोग में यह गोली बहुत गुण करती हैं। इसके सेवन से दाँत भी सरलतापूर्वक निकल आते हैं।

हब्ब मरवारीदी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

अर्धभृष्ट सुहागा, जलाया हुआ माजू प्रत्येक १-१ तोला, रूमीमस्तगी २ तोला, शुद्ध कुचला १ तोला, मोती, अम्बर अशहब प्रत्येक १। तोला—यथावश्यक अर्क गुलाब में खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि——१ या २ गोली प्रातःसायंकाल ५ तोले अर्क अम्बर के साथ प्रयोग करें। उष्ण, बादी एवं गरिष्ट पदार्थ के सेवन से परहेज करें।

गुण तथा उपयोग——यह गोली स्त्रियों के लिये भी उपयोगी है। स्त्रियों के उस विशेष एवं गुप्त रोग को दूर करती है, जो उनके स्वास्थ्य एवं बल को धीरे-धीरे सर्वथा नष्ट करती हैं और यौवनकाल में ही वृद्धावस्था उत्पन्न कर देती हैं। गर्भाशय से श्वेत वर्ण का द्रव स्रावित होना, पुरुषों में मजी और वदी का स्राव (अष्ठीला वा शिश्नमूलादि ग्रंथि का स्राव) होना, उक्त गुप्त रोग के स्वरूप हैं। यह गोली उनके लिये बहुत ही गुणकारी हैं। विशिष्ट स्त्री-रोगों की सर्वोत्तम ओषधि है।

विशिष्ट गुण——गर्भाशयबलदायक है।

हब्ब मुमसिक

द्रव्य तथा निर्माणविधि——

जायफल, शिंगरफ रूमी, अकरकरा, अफीम प्रत्येक ३।। माशा——सबको बारीक कूट-छानकर मधु मिलाकर २० गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि——रात्रि में सम्भोग से १ घण्टा पूर्व १ गोली दूध से सेवन करें अथवा गोली खाकर ऊपर से एक पान का बीड़ा खावें।

गुण——बहुत ही वीर्यस्तम्भक है।

हब्ब मोमियाई सादा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

बोल (मुरमकी), रूमी मस्तगी, कुलंजन प्रत्येक ३ माशा, सफेद और लाल बहमन, लौंग, दालचीनी, लोबान, बबूल का गोंद, अगर, सतमुलेठी, कैंची से कतरा हुआ अबरेशम (शुद्ध वा सत शिलाजीत) प्रत्येक ६ माशा, मोमियाई, शिलारस प्रत्येक ४ माशा——सबको बारीक पीसकर बादाम के तेल से स्नेहाक्त करें। पश्चात् पोस्ते की डोडी के स्वरस में खरल कर चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--एक वा दो गोली सम्भोग के पश्चात् गरम दूध से प्रयोग करें। अम्ल से परहेज रखें।

गुण तथा उपयोग--सम्भोग के पश्चात् जो शरीर में क्षीणता एवं आलस्य आ जाता है, उसे दूर करके बल एवं शक्ति का उदय करती है।

हब्ब राहत

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

शुद्ध बछनाग, पीपल, कालीमिर्च, सुहागा खील, शिंगरफ प्रत्येक १ तोला--यथावश्यक नीबू के रस में ज्वार के दाना के बराबर गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--१ गोली १२ तोले अर्क बादियान से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--कफज एवं सौदावी रोगों को दूर करती है। जीर्ण कास तथा न्युमोनिया में लाभप्रद है। विसूचिका में भी गुणकारक है।

हब्ब लुब्बुल् खशखाश

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

केशर २। माशा, लुफाह (बेलाडोना) की जड़ की छाल ४।। माशा (अभाव में भाँग की पत्ती), अजवायन खुरासानी, रूमी मस्तगी, कहरुवा (तृणकान्त), कतीरा, निशास्ता, कीकर, गोंद, काहू-बीज, गावजबान पुष्प, पोस्ते का दाना, खीरा-ककड़ी के बीज का मग्ज, अफीम प्रत्येक ९ माशा, सत मुलेठी १० माशा, गिल अरमनी १।। तोला, रेवंदचीनी ७ माशा--सबको कूट-छानकर चूर्ण करें और पोस्ते की डोडी के क्वाथ में खरल करके काली मिर्च प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा--जीर्ण प्रतिश्याय में १ गोली अर्क गावजबान के साथ स्तम्भनार्थ १ गोली दूध से देवें।

गुण तथा उपयोग--जीर्ण प्रतिश्याय (नजला), कंठ की खराश और खाँसी के लिये अत्यंत लाभप्रद और वीर्यस्तम्भक है।

हब्ब शबयार

द्रव्य तथा निर्माण विधि—

पीली हड़ का बकला, बहेड़ा का बकला, सनायमक्की प्रत्येक ५ तोला, गुलाब पुष्प, कालादाना प्रत्येक ३।। तोला, एलुआ, कुंदुर प्रत्येक २ तोला, शुद्ध गुग्गुल, उसारेरेवंद, मस्तगी प्रत्येक ३।। माशा, कतीरा १०।। माशा—समस्त द्रव्यों

को कूट-छानकर जल में घोटकर मुद्ग प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--२ से ७ माशा तक चार घड़ी रात्रि रहे तब उठ कर १२ तोले अर्क गावजबान के साथ प्रयोग करें और प्रातः काल विरेचन लेवें।

गुण और उपयोग--प्लीहा, आमाशय और यकृत के शोथ को विलीन करती है; आमाशय तथा मस्तिष्क का शोधन करती है; जीर्ण ज्वर तथा कास में लाभकारी है। बादाम के तेल में घिसकर अर्शांकुरों पर लगाने से वे (मस्से) झड़ जाते हैं।

हब्ब सरअ

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

कपूर, हींग, जुंदबेदस्तर, अफीम प्रत्येक १ माशा--सबको बारीक पीसकर १-१ रत्ती की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--१ या २ गोली प्रति दिन उपयुक्त अनुपान से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग--मृगी के लिये अतीव गुणकारी है।

टि०--कभी इसमें जदवार १ माशा की भी योजना कर देते हैं।

हब्ब सुर्खबादए अतफाल

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

रसवत, चाकसू, नरकचूर, धमासा, लाल चंदन, काली हड़, पित्तपापड़ा, चिरायता, सरफोका, मुंडी, ब्रह्मदंडी, नीलकंठी प्रत्येक ३ माशा, नीम की पत्ती ५ नग, बकायन पत्र १५ नग—सबको मेंहदी के पत्रस्वरस में पीसकर मुद्ग-प्रमाण की गोलियाँ बनाएँ।

मात्रा और सेवनविधि--१-१ गोली माता के दूध में हल करके प्रातः सायंकाल शिशु को पिलायें।

टि०—कभी इसमें मुर्दासंग ३ माशा की योजना करते हैं, विशेषतः जब कि शिशु के माता-पिता में फिरंग का दोष हो।

गुण तथा उपयोग—शिशु के शरीर पर जो लाल रंग के दाने निकल आते हैं, उनके लिये ये गोलियाँ बहुत ही गुणकारी हैं।

हब्ब सुर्फा

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कद्दू, तरबूज, खरबूजा, पेठा, काहू, खीरा, सफेद पोस्ता, काला पोस्ता, इनके बीजों की गिरियाँ (मग्ज), छिले हुये बाकला के बीज, कश्मीरी गुलबनपशा, गावजबान-पुष्प, बबूल का गोंद, कतीरा, निशास्ता, शकरतीगाल, सत मुलेठी, मीठे बादाम का मग्ज--इनको बारीक पीसकर शिलारस में मिलाकर इतना खरल करें कि सब एक जान हो जाएँ। पुनः चना प्रमाण की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित रखें।

मात्रा और सेवनविधि--एक-एक गोली मुख में रखकर लुआब चूसें।

गुण तथा उपयोग--शुष्क एवं आर्द्र कास में बहुत गुणकारी एवं परीक्षित है। कफ को सरलता पूर्वक निकालती है। छाती में मृदुता एवं तरी उत्पन्न करती और प्रसेक को रोकती है।

हब्ब सूरंजान

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

एलुआ, हड़, मीठा सूरंजान प्रत्येक १-१ तोला—सबको बारीक पीसकर जल के साथ चना प्रमाण की गोलियाँ बनावें।

मात्रा--३-३ माशा, प्रातः-सायंकाल जल से देवें।

गुण तथा उपयोग--आमवात, वातरक्त और गृध्रसी में लाभप्रद है।

हब्ब हमल (गर्भदावटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि--

कस्तूरी २ रत्ती, अफीम, जायफल, केशर प्रत्येक १-१ माशा, भाँग १।।। माशा, सुपारी ३ नग, लौंग ४ नग, गुड़ ५। माशा—समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर गुड़ में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--१ गोली ७ माशा माजून मोचरस के साथ प्रातः काल सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--समस्त गर्भाशय के दोषों को सुधारकर स्त्रियों के वन्ध्यत्व को मिटाती है और गर्भधारण के योग्य बनाती है।

हब्ब हिंदी

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

एलुआ, चिरायता प्रत्येक २ माशा, जायफल ४ माशा, जीरा, अजमोद प्रत्येक ६ माशा—सबको कूट-छानकर नकछिकनी के स्वरस में गूँधकर २८ गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि—१-१ गोली प्रातः-सायंकाल जल से प्रयोग करें।

गुण तथा उपयोग—शिरःशूल, अर्धावभेदक और शिरःशूल विशेष (बैजा) के लिये लाभदायक है।

हब्ब हिल्तीत (हिंगुवटी)

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

असली हींग ४ तोला, सोंठ ३ तोला, लाहौरी नमक, काला नमक प्रत्येक २ तोला, लौंग, कुलंजन, काली मिर्च, पीपल, छोटी इलायची, कबावचीनी, मस्तगी, पिपरामूल, अजवायन, हड़, बहेड़ा, आमला, कलौंजी प्रत्येक १-१ तोला—समस्त द्रव्यों को कूट-छानकर और हींग को घी में भूनकर चूर्ण में मिलावें। तत्पश्चात् सब द्रव्यों के चूर्ण के सम भाग घीकुआर का रस, अदरक का स्वरस और नीबू का रस इतना डालें कि औषध द्रव्य से चार अंगुल ऊपर रहे। शुष्क होने पर दो-तीन बार इतना ही रस और डाल-डालकर सुखायें। अन्त में सबको खरल करके चना प्रमाण की गोलियाँ बना लेवें।

मात्रा—१ या २ गोली भोजनोपरांत देवें।

गुण तथा उपयोग—यह अजीर्णनाशक है। उदरशूल, वमन तथा वात रोग में लाभकारी और दीपन-पाचन है।

हलवाए गजर मग्ज सर कुंजश्कवाला

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

छिलका तथा भीतरी कठिन भाग निष्कासित लाल रंग के गाजर ऽ१ सेर, गुठली रहित छुहारे ऽ।। सेर—गाजरों को कद्दूकश कर लेवें और छुहारों समेत ऽ५ सेर गोदुग्ध में पकावें। जब पक जायँ और दूध शोषित हो जाय, तब इमाम-दस्ता (हावन दस्ता) में कूटकर मलहम की भांति बनावें। पुनः चना का आटा और गेहूँ का आटा प्रत्येक ४ तोला ४।। माशा को आवश्यकतानुसार गोघृत में भूनकर उसमें मिलायें। पुनः चीनी ऽ१ सेर और शुद्ध झाग दूर किया हुआ मधु ऽ।। सेर की चाशनी करें और जब चाशनी तैयार हो जाय तब गाजर और छुहारों

को उसमें मिला देवें। तदुपरांत ४० नग घरेलू चिड़े (चटक) के शिर का मग्ज (भेजा), फिंदक का मग्ज, मीठे बादाम का मग्ज, पिस्ते का मग्ज, चिलगोजे का मग्ज, नारियल की गिरी प्रत्येक २ तोला ११ माशा, सालम मिश्री, सोंठ, शुद्ध गोखरू, दालचीनी, कुलंजन प्रत्येक १०।। माशा, केशर, शुद्ध कस्तूरी, प्रत्येक ३।। माशा--प्रत्येक को यथाविधि हल और चूर्ण करके हलवे में मिला लेवें।

मात्रा और सेवनविधि--३ तोले प्रातः सायंकाल ऽ। भर गोदुग्ध के साथ सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--यह वृष्य एवं वाजीकरण करता है। शरीर को परिवृंहित करता तथा वस्तिशूल एवं वृक्कशूल का निवारण करता है।

हबूब राअ्शा

द्रव्य तथा निर्माणविधि—

लौंग, बालछड़, उस्तूखुद्दूस प्रत्येक १०।। माशा, दालचीनी, सूखा पुदीना, काबुली हड़ प्रत्येक ७ माशा, हींग, गारीकून, निशोथ, जुंदबेदस्तर प्रत्येक ४ माशा, अकरकरा, केशर प्रत्येक ३ माशा, संखिया २ रत्ती--समस्त द्रव्यों को बारीक पीसकर मधु के साथ काली मिर्च के बराबर गोलियाँ बनावें।

मात्रा और सेवनविधि--२ से ४ गोली तक प्रातःसायंकाल भोजनोत्तर सेवन करें।

गुण तथा उपयोग--कम्पवात और नाड़ी दौर्बल्य में उपयोगी है।

परिशिष्ट समाप्त

यूनानी चिकित्सा-सार की
वर्णानुक्रमणिका

झ

ENGLISH INDEX

A

B

C

स्थापन-काल—हमारे देव-स्थानों में सिद्धपीठ नाम से सुप्रसिद्ध तीर्थ-स्थान, श्री वैद्यनाथधाम (देवघर) में बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड की स्थापना, आज से ३६ वर्ष पूर्व हुई थी। आधि-व्याधि-नाशक श्री बाबा बैद्यनाथ के सम्मुख की गई मानव-कल्याण की कामना कभी विफल नहीं होती। आयुर्वेद के इष्टदेव भगवान शंकर के शुभाशीर्वाद तथा हमारे अथक परिश्रम, श्रेष्ठ अध्यवसाय तथा विशुद्ध लगन के कारण, श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का काम बड़ी तेजी से आगे बढ़ा।

संघर्ष-काल—राज्य की उपेक्षा, हमारे शिक्षित-समाज पर विदेशी आचार-विचार का प्रभाव एवं अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति उनकी उदासीनता के साथ जबर्दस्त सङ्घर्ष, श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के इतिहास की प्रारम्भिक विशेषता है। करीब-करीब यही वक्त था, जब कि हमारे देश में राष्ट्रिय चेतना का आना और आजादी की लहर का उठना प्रारम्भ हुआ। हमारे समाज के प्रत्येक अङ्ग पर, विदेशी आचार-विचार और सत्ता का जो प्रभुत्व था, एक अन्धकार का आवरण था, उसके खिलाफ एक सुरसुराहट-सी होने लगी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, धीरे-धीरे, हमारे समाज के मृतप्राय शरीर में प्राणवायु का संचार हुआ। इसके बाद हमारा राष्ट्रिय कारवां जिन-जिन बाधाओं, कठिनाइयों और तूफानों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता रहा, वह हमारे देश के इतिहास का सबसे गौरवपूर्ण अध्याय है।

राष्ट्रिय ह्रास या समृद्धि, केवल राजनीतिक ही नहीं होती; बल्कि, व्यक्तिगत और समष्टिगत रूप में वह समाज की संस्कृति, साहित्य, कला, उद्योग, व्यापार, कृषि आदि-सभी अङ्गों के सार्वभौमिक ह्रास और विकास पर निर्भर करती है। और चूंकि आयुर्वेद—हमारा राष्ट्रिय चिकित्सा-विज्ञान—हमारी संस्कृति, साहित्य और कला का एक सर्वोच्च ज्ञान-भाण्डार है; अतएव राष्ट्र के जीवन के साथ इसका अविच्छिन्न सम्बन्ध कोई नयी और आश्चर्यजनक बात नहीं।

इसीलिये, जब हम श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के पिछले ३५ साल के सङ्घर्षमय जीवन और उसके फलस्वरूप प्राप्त उत्तरोत्तर उन्नति की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो हमें गर्व और प्रसन्नता, दोनों ही होती है। गर्व इसलिये कि एक कर्त्तव्य-परायण सिपाही की तरह राष्ट्रीय पुनरुद्धार का एक जबर्दस्त मोर्चा—राष्ट्रीय चिकित्सा-विज्ञान—आयुर्वेद के प्रति अपने कर्त्तव्य का हमने हरेक कठिनाई और बाधा में भी, खूबी के साथ पालन किया है ; और प्रसन्नता इसलिये कि हमारे राष्ट्रीय-संग्राम के नेताओं और सेनानियों ने हमारे इस काम की सराहना की, सहयोगियों ने प्रशंसा की और सर्वसाधारण ने स्वागत किया। आज नवराष्ट्र-निर्माण के प्रारम्भ में, जब कि प्रकाश की दो-एक किरणें अन्तरिक्ष पर दिखायी पड़ने लगी हैं ; हमारे उत्साह और आनन्द का सर्वोच्च कारण, एकमात्र वही अनुभूति है, जो राष्ट्रीय संघर्ष के हर आघात और उसकी आग की प्रत्येक लपट का अपना हिस्सा प्राप्त करने का सौभाग्य हमें मिला है।

उत्कर्ष-काल—अपनी जिन तीन विशेषताओं के कारण, श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० बराबर संङ्घर्ष में विजयी होता आया, वे हैं—(१) शुद्ध ओषधियों के निर्माण, (२) आयुर्वेदोन्नति के लिये ठोस कार्य और (३) वैज्ञानिक ढङ्ग से इनका प्रचार।

आज श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का जो स्वरूप है, उसे विस्तृत रूप से बतलाने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है। भारतवर्ष भर में औषधि-निर्माण के चार बड़े-बड़े कारखाने, बड़े-बड़े शहरों में वैद्यनाथ-दवाओं के ८० बिक्री-केन्द्र (डिपो) तथा १५ हजार से ऊपर एजेन्सी (एजेण्ट) आदि इसकी विशालता को प्रकट करने के लिये पर्याप्त हैं। आज नगर-नगर और गाँव-गाँव में श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का जो साइन बोर्ड आप देखते हैं, तथा घर-घर में वैद्यनाथ ओषधियाँ देखी जाती हैं, उनके मूल में जो तथ्य है, वे नीचे लिखे विवरण से आपकी समझ में अच्छी तरह आ जायँगे।

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के भिन्न-भिन्न विभाग

१—अनुसन्धान (रिसर्च) विभाग

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० ने अपने स्थापन काल से ही इस कार्य की ओर विशेष ध्यान दिया है। काशी विश्वविद्यालय आदि संस्थाओं को आर्थिक सहायता देकर वह शोध (रिसर्च) का कार्य कराता रहा है। किन्तु, अब वह इस स्थिति में है कि इस महत्वपूर्ण काम को स्वयं अपने निरीक्षण में भी सम्पादित करे। इसलिये गत वर्ष से इस कार्य के लिये ५००००) (पचास हजार)

रुपये प्रति वर्ष खर्च करने का उसने निश्चय किया है। चालू वर्ष के ५००००) रुपये मिला कर, करीब १०००००) (एक लाख) की लागत से इस वर्ष आयुर्वेद विज्ञानशाला तैयार हो जायगी। इसमें प्रयोगशाला (Research Laboratory) और रुग्णालय (Indoor Hospital) होंगे। इस वर्ष मकान बनवाकर आवश्यक उपकरण संग्रहीत कर लिये जायँगे तथा आगामी वर्ष से उनमें नीचे लिखे अनुसार कार्यारम्भ होगा।

(क) वनस्पति—वनस्पतियों के शोध का कार्य गत वर्ष से ही विशद रूप में, चल रहा है और वह भविष्य में भी चालू रहेगा। इस विभाग में, आयुर्वेदिक औषधियों में काम आनेवाली वनस्पतियों का स्वरूप-निर्णय नई चमत्कारिक औषधियों को प्राप्त करने और उसके द्वारा समग्र भारतीय वैद्यों को लाभ पहुँचाने के कार्य होते हैं।

(ख) विश्लेषण—औषधियों के काम में आनेवाले मूलद्रव्यों की असलियत को मालूम करना तथा तैयार औषधि की यथार्थ गुणकारिता की विश्लेषण (Analysis) द्वारा जाँच करना, इस विभाग का कार्य है।

(ग) गुण-धर्म-निर्णय—आयुर्वेद-वर्णित वनस्पतियों के एवं सिद्धौषधियों के गुण-धर्म के निर्णय करने के लिये यह विभाग होगा। इसके लिये रुग्णालय (Indoor Hospital) स्थापित किया जायगा, जिसमें २० शय्या (Beds) रहेगी। इस रुग्णालय-द्वारा रोगियों पर शतशः अनुभूत की गई वनस्पतियों तथा योगों का गुण-धर्म-निश्चय होगा। आयुर्वेद में मानव-शरीर पर होनेवाले सफल औषध-परीक्षण को ही यथार्थ असंदिग्ध गुण-धर्म माना गया है। वह कार्य चार्ट एवं रिपोर्ट के आधार पर इस रुग्णालय-द्वारा सम्पादित होगा।

(घ) शास्त्र-निर्माण-विभाग—उल्लिखित विभागों का शास्त्रीय निरूपण, आयुर्वेदीय सिद्धान्त से किया जायगा। त्रिदोष, पंचमहाभूत, रस, विपाक, वीर्य-प्रभाव पर ही इन ग्रन्थों का निर्माण होगा। वर्तमान विज्ञान (Modern Science) को भी, इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर आत्मसात् करके, समन्वयात्मक रूप में प्रकाशित किया जायगा।

इन विभागों के कार्य का विवरण, समय-समय पर, हमारे मासिक पत्र 'सचित्र आयुर्वेद' में प्रकाशित होता रहता है। स्वतन्त्र रिपोर्ट अगले साल प्रकाशित हो जायगी—ऐसी आशा है।

(ङ) रिसर्च कार्य की प्रगति—आयुर्वेदीय सिद्धान्तके अनुसार, आयुर्वेद का संशोधन और परिवर्द्धन कोई सामान्य कार्य नहीं है। प्रायः भारत भर में स्वयं भ्रमण करके हमने देखा कि इस कार्य को कहीं भी क्रियात्मक रूप नहीं दिया गया है। अभी अपनी राष्ट्रीय सरकार की योजनाएँ भी बन ही रही हैं। इस

पर कोई रचनात्मक उद्योग वहाँ भी नहीं हुआ। क्रियात्मक रूप के अभाव एवं द्रव्य और समय के अपव्यय की शंका से हमने आयुर्वेदीय शोध-कार्य की समस्या को अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-शास्त्र-चर्चा के समक्ष उपस्थित किया। अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-शास्त्र-चर्चा का अधिवेशन, विगत वर्ष, श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के व्यय से पटना-स्थित बैद्यनाथ-निर्माणशाला में लगातार दस दिनों तक होता रहा। इस परिषद में देश भर के प्रधान वैद्यों ने भाग लिया था और आयुर्वेद-हितैषी डॉक्टर और वैज्ञानिक भी इसमें सम्मिलित हुए थे। परिषद् में भाग लेनेवाले कतिपय प्रमुख वैद्यों और डॉक्टरों के नाम ये हैं :—

१—आयुर्वेद-वाचस्पति श्री यादव जी त्रिकमजी आचार्य, वर्तमान सभापति अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल, बम्बई।
२—आचार्य श्री मणिराम जी, वर्तमान सभापति, अ० भा० सा० विद्यापीठ।
३—आयुर्वेद-पंचानन श्री जगन्नाथ प्रसादजी जी शुक्ल, इलाहाबाद।
४—भिषक्-केशरी श्री गोवर्धन शर्मा छांगांणी, नागपुर।
५—आचार्य श्री रामरक्ष पाठक, बेगूसराय (बिहार)।
६—डॉ० डी० एन० मुखर्जी, एफ० आर० सी० एस०, कलकत्ता।
७—स्व० डॉ० नृसिंहहरि परांजपे।

उपर्युक्त विद्वानों के बीच भी इस आयुर्वेदीय रिसर्च की रूप-रेखा पूर्ण रूप से निश्चित नहीं हो सकी। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० के व्यय पर, इसी वर्ष (मई' ५३ में) हरिद्वार में पूर्व निर्धारित विषय 'द्रव्य के रस गुण-वीर्य-विपाक-प्रभाव के निर्णय का स्वरूप क्या है ? पर विवेचनार्थ परिषद् की दूसरी बैठक भी निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

विशेष सूचना—इस कार्य में गत वर्ष जो प्रगति हुई, उसे पत्र लिखकर जाना जा सकता है।

२—औषधि-निर्माण-विभाग

आयुर्वेदीय औषधि-निर्माण पर ही उसकी चिकित्सा-पद्धति की उत्तमता और लोक-प्रियता निर्भर करती है। आयुर्वेदीय औषधियों का निर्माण कठिन, अनुभवगम्य और प्रभूत उपकरण साध्य कार्य है। प्राचीन समय से केवल चिकित्सक ही इस कार्य को करते आये हैं। अब भी हजारों वैद्यबन्धु ऐसा ही कर रहे हैं। पर वर्तमान युग में, इससे सर्वाङ्गपूर्ण औषधि तैयार नहीं हो पाती। औषधियों के मूल द्रव्यों को उत्पत्तिस्थानों से प्राप्त करना, पंसारियों पर निर्भर न रहना, जो लोग निरन्तर औषधियों का निर्माण करते हैं, उन्हीं अनुभवी आयुर्वेद के आचार्यों द्वारा स्वयं अपनी देख-रेख में अत्यन्त कुशलता और स्वच्छता-

पूर्वक औषधि-निर्माण करना, अत्यन्त कठिन और उत्तरदायित्वपूर्ण काम है। केवल बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० ही, औषधि-निर्माता होने के कारण, इस कार्य को पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ कर रहा है; और इसी आधार पर बैद्यनाथ औषधियों को प्रसिद्धि और लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है।

बैद्यनाथ-औषधियों की उत्कृष्टता के तीन कारण हैं:—(१) मूल द्रव्यों का उत्कृष्ट होना और जाँचकर उनको व्यवहार में लाना (२) कुशल और अनुभवी आयुर्वेदाचार्यों द्वारा शास्त्रीय रीति से औषधि तैयार करना, और (३) बैद्यनाथ-आयुर्वेद भवन लि० के मैनेजिंग डायरेक्टरों का सतत् निरीक्षण करना एवं उनका औषधि-निर्माण-शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता और अनुभवी होना।

निर्माण की इस विशुद्धता और उत्कृष्टता के कारण, बैद्यनाथ-दवाओं की इतनी व्यापक माँग बढ़ी कि हमें क्रमशः झाँसी, पटना और नागपुर में भी औषधि-निर्माण केन्द्र खोलने पड़े। आज इन चारों निर्माण-केन्द्रों द्वारा निरन्तर औषधियाँ तैयार होती रहती हैं; फिर भी जनता की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति करने में हमें कठिनाई होती है। बैद्यनाथ-औषधि-विक्रेताओं को नम्बरवार और क्रमशः दवाएँ भेजी जाती हैं तथा हर साल कार्यकर्त्ताओं की संख्या बढ़ानी पड़ती है। कार्यकर्त्ताओं में करीब २० हजार रुपये प्रतिमास, वेतन के रूप में वितरित होते हैं।

३—बिक्रय-विभाग

४ निर्माण-केन्द्र, ८० बिक्री-केन्द्र और १५ हजार से ऊपर एजेन्सियों (एजेंटों) द्वारा बैद्यनाथ-दवाओं की निरन्तर बिक्री होती है। देश भर में सर्वत्र एक ही (आगे लिखे) मूल्य पर बिक्री होती है। बैद्यनाथ-दवाओं के अधिकार-प्राप्त औषधि-बिक्रेताओं को उचित कमीशन दिया जाता है। जनता के लाभ के लिये हिन्दुस्तान के प्रमुख शहरों में, एजेण्टों के अतिरिक्त ८० से ऊपर स्वतन्त्र बिक्री-केन्द्र भी हैं, जहाँ केवल बैद्यनाथ-दवाएँ ही बिकती हैं। जैसे देहली, आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, काशी, गोरखपुर, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, गया, रायपुर, जब्बलपुर, अकोला, अमरावती, इन्दौर, उज्जैन आदि। प्रत्येक निर्माण-केन्द्र में एजेंसी-विभाग के मैनेजर अलग हैं, जिनके पास एजेंट बनने की इच्छावाले लोगों के पत्र (और स्वयं भी) बराबर आते रहते हैं। एजेंसी के लिए स्वयं कार्यालय में आनेवाले महाशय पहले पत्र-व्यवहार करके दर्यापत कर लेंगे, तो उत्तम होगा। दवाओं के साथ-साथ वनस्पति की भी थोक बिक्री होती है। खुदरा वनस्पति की बिक्री नहीं होती।

४--आयुर्वेद-सेवा-विभाग

इस विभाग में आयुर्वेद की समुन्नति के कार्य सेवा-भाव से होते हैं।

(क) आयुर्वेद विद्यालय--श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का, विगत ६ वर्षों से, एक स्वतन्त्र आयुर्वेद-विद्यालय, सफलता के साथ चल रहा है, जिसमें निखिल भारतीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य और राजस्थान की आयुर्वेद-शास्त्री तक की शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त भारत के अन्य विभिन्न आयुर्वेद-विद्यालयों को भी आर्थिक सहायता दी जाती है।

(ख) छात्रवृत्तियाँ—जो छात्र आर्थिक अभाव के कारण आयुर्वेद पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करते हैं, वैसे १५ योग्य छात्रों को प्रति वर्ष छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

(ग) धर्मार्थ औषधालय--हमारे सभी धर्मार्थ औषधालयों में सुयोग्य आयुर्वेदाचार्य पास वैद्यों द्वारा मुफ्त निदान होता है और रोगी को अच्छी-से-अच्छी औषधियाँ दी जाती हैं। और भी बहुत से अन्य आयुर्वेदीय धर्मार्थ औषधालयों को औषध मुफ्त दी जाती हैं तथा बहुतों को रियायती मूल्य पर दी जाती है।

(घ) स्वास्थ्य-प्रचार--भारतीय जनता को आयुर्वेदीय शिक्षा द्वारा स्वस्थ और सबल बनाना हमारा प्रधान लक्ष्य रहा है। इसके लिये छोटे-छोटे ट्रैक्ट, पुस्तिका, हैण्डबिल आदि प्रकाशित कर समय-समय पर प्रचारित किये जाते हैं।

(ङ) धन्वन्तरि-जयन्ती--यह जयन्ती, वैद्यों में भ्रातृभाव और जनसेवाभाव की वृद्धि के लिये हमारे निर्माण-केन्द्रों, बिक्री-केन्द्रों तथा एजेन्सियों में प्रति वर्ष मनाई जाती है। इसमें लगभग १० हजार रुपया प्रति वर्ष खर्च होता है।

५--प्रकाशन-विभाग

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन का आरम्भ से ही यह सत्प्रयत्न रहा है, और रहेगा, कि आयुर्वेद के मूल सिद्धान्तों के आधार पर सुयोग्य विद्वानों द्वारा निर्मित तथा अनुवादित प्रामाणिक ग्रन्थ सरल भाषा और सुलभ मूल्य में जनता को प्राप्त हों, जिससे आयुर्वेद का प्रचार और प्रसार बढ़े। हमारे यहाँ से अबतक दर्जनों ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जो आज आयुर्वेद-ग्रन्थ-भाण्डार के अमूल्य रत्न समझे जाते हैं। 'सचित्र आयुर्वेद, नामक एक मासिक पत्र भी गत पाँच वर्षों से प्रकाशित हो रहा है।

६—दातव्य-विभाग

आयुर्वेदीय सेवा के अतिरिक्त श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड और भी बहुत से जन-हितकारी कार्य कर रहा है। पाठशाला खोल कर निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध, आश्रमों को सहायता देकर धार्मिक, नैतिक और चारित्रिक भावना तथा साहित्य का प्रचार, देवालय, कूप आदि का निर्माण, सार्वजनिक पुस्तकालय, चक्षुदान यज्ञ आदि ऐसे अनेकों लोकोपकारी कार्य हैं, जो केवल हमारे ही खर्च से चल रहे हैं तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों में मुक्तहस्त से निरन्तर सहायता की जाती है।

हमारा कारखाना केवल ग्रौषधि-निर्माता ही नहीं है। यह शुद्ध ग्रर्थ में ग्रायुर्वेदीय संस्था है। इसका प्रथम उद्देश्य है भारतीय चिकित्सा-पद्धति ग्रायुर्वेद को प्रतिसंस्कार कर उसके स्वाभाविक मानव-कल्याणकारी गुणों, उसकी विशेषताग्रों ग्रौर चिकित्सकों की जानकारी जनता को करा देना। ग्रौषधि ग्रौर ग्रन्थ, दोनों इसके साधन हैं। इसलिये एक ग्रोर जहाँ हम उत्तमोत्तम ग्रौषधि निर्माण-द्वारा ग्रायुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा करते हैं, वहाँ दूसरी ग्रोर इसके उत्तमोत्तम ग्रौर प्रामाणिक ग्रन्थों के प्रकाशन का भी समुचित प्रवन्ध करते हैं। जिन ग्रन्थों का प्रकाशन कर हम ग्रायुर्वेद का भाण्डार भर रहे हैं उनकी प्रशंसा मुक्तकण्ठ से समस्त देश की विद्वन्मण्डली ने की है। राजकीय शिक्षा-संस्थाग्रों तथा विश्वविद्यालयों ने हमारे ग्रायुर्वेदीय-प्रकाशन को पाठ्यक्रम-पुस्तकों में श्रेष्ठ स्थान दिया है। साथ-ही-साथ (कम-से-कम)—यानी लागत-मात्र, मूल्य पर ऊँचे दर्जे के ग्रायुर्वेदीय साहित्य का प्रचार-प्रसार करना बैद्यनाथ ग्रायुर्वेदीय-प्रकाशन का मूल सिद्धान्त रहा है। यही कारण है कि वैद्यनाथ-प्रकाशन से निकली हुई उत्तम ग्रायुर्वेदीय पुस्तकों का ग्राज घर-घर में प्रचार है। हमारे "ग्रारोग्यप्रकाश" को तो जनता ने इतना पसन्द किया है कि इसके नौ संस्करणों में ८३००० प्रतियाँ छप कर बिक चुकी हैं ग्रौर दसवाँ संस्करण में १५००० फिर छापा गया है। इसी प्रकार ग्रन्य ग्रन्थों के भी कई-कई संस्करण छप चुके हैं।

आरोग्य प्रकाश—(**ग्रारोग्य, स्वच्छता ग्रौर चिकित्सा पर सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ**) भारत-प्रसिद्ध श्री वैद्यनाथ ग्रायुर्वेद भवन लिमिटेड के मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर वैद्यराज पं० रामनारायण शर्मा, वैद्यशास्त्री ने ५-६ वर्ष में बड़ी मेहनत से स्वयं इस ग्रन्थ को लिखा है। ग्रन्थ का एक-एक वाक्य हजारों रुपयों का काम करता है। व्यायाम, ब्रह्मचर्य, भोजन, सदाचार, उत्तम विचार ग्रादि पूर्वार्द्ध के विषयों को पढ़ कर ग्रौर तदनुसार चलकर सदा बीमार रहने वाला रोगी भी बिना दवा के नीरोग (तन्दुरुस्त) हो जाता है। ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में शरीर में पैदा होनेवाले सभी रोगों की उत्पत्ति, कारण, निदान, रोग के लक्षण, चिकित्सा, पथ्यापथ्य ग्रादि बड़ी ही सरल भाषा में लिखे हैं; जिनको पढ़कर विद्वान् से लेकर साधारण पढ़े-लिखे, दोनों, समानरूप से लाभ उठा सकते हैं। इसमें दवाग्रों के जो

नुस्खे लिखे गये हैं, वे बहुत बार के परीक्षित, कभी भी फेल न होनेवाले और शास्त्रानुमोदित हैं। शहर हो या देहात--सब जगह, इस पुस्तक के घर में रहने से रोगी को तत्काल लाभ पहुंचाया जा सकता है। औषध तैयार करने का विधान तो इस पुस्तक में बहुत ही श्रेष्ठ है; क्योंकि लेखक इस विषय के निर्णयात्मक ज्ञाता हैं। इसके नौ संस्करणों में ८३००० प्रतियाँ छप कर बिक चुकी हैं और दसवाँ संस्करण १५ हजार का फिर छापा गया है। इससे इसकी लोक-प्रियता और उपयोगिता स्पष्ट मालूम होती है। हिन्दी में ऐसी पुस्तक दूसरी नहीं है, यह कहा जाय तो अनुचित न होगा। प्रचार की दृष्टि से मूल्य भी बहुत कम रखा गया है। ४८० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य सिर्फ २), डाक खर्च ।।=), हमारी चार निर्माणशालाओं, १०१ बिक्री-केन्द्रों एवं १५००० एजेंसियों से प्रत्यक्ष खरीदने पर या एक साथ तीन प्रति लेने से डाक खर्च नहीं लगेगा।

आयुर्वेदीय क्रियाशारीर--(सचित्र रॉयल अठपेजी, बिलायती पेपर) लेखक--वैद्य रणजितराय, वाइस प्रिन्सिपल, आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० द्वारा प्रकाशित "शरीर-क्रिया-विज्ञान" का देश में सर्वत्र ही समादर हुआ था और प्रायः समस्त हिन्दुस्तान के आयुर्वेदिक कॉलेजों के पाठ्य-क्रम में पुस्तक नियत हो गयी थी। उसी ग्रन्थ का यह संशोधित और परिवर्द्धित तृतीय संस्करण है।

आयुर्वेद की इस पुनरुत्थान-बेला में वैद्य रणजितराय, जो स्तुत्य और ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य कर रहे हैं, उसे आज हिन्दुस्तान में कौन नहीं जानता? आयुर्वेद के संशोधन को दृष्टि में रख कर उन्होंने जो अनेक ग्रन्थ लिखे हैं, उन्हीं में से एक ग्रन्थ **आयुर्वेदीय क्रिया-शारीर** है।

प्रस्तुत संस्करण में पाठ्य विषय में तो पहले संस्करण की अपेक्षा बहुत परिवर्तन किये ही गये हैं, अनेक एकरंगे चित्रों की भी संख्या में वृद्धि कर विषय को अधिक सुबोध बनाकर पुस्तक की उपयोगिता में और भी अधिक वृद्धि कर दी गयी है। मूल्य--११)

आयुर्वेद-सार-संग्रह--(दूसरा संस्करण) हिन्दी में ऐसी आयुर्वेदीय पुस्तकों की बहुत कमी थी जिनमें एकत्र-रोग-विचार के साथ चिकित्सा, औषध-निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य आदि का विवरण समझा कर, सरल भाषा में, दिया गया हो। इससे सर्वसाधारण पाठकों के सामने बहुत दिक्कतें आती रहती थीं। प्रस्तुत पुस्तक में आयुर्वेदीय साहित्य की इसी कमी को दूर करने का सफल प्रयत्न किया गया है। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० द्वारा बनायी जानेवाली सभी दवाओं की निर्माण-विधि तथा उनके गुण-धर्म और प्रयोग-विधि

के साथ सभी वैद्योपयोगी बातों का सविस्तार वर्णन सरल हिन्दी भाषा में किया गया है। रस-रसायन, अर्क आदि बनाने के यन्त्रों के चित्र भी दिये गये हैं जिनके देखने से औषध-निर्माताओं को काफी सुविधा होगी। डिमाई साइज के ११०० पेज के ग्रन्थ का मूल्य–७) रु० मात्र है।

आयुर्वेदीय-पदार्थविज्ञान—लेखक : वैद्य रणजितराय, वाइस प्रिन्सिपल, आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान में अन्य दर्शन ग्रन्थों से क्या विशेषता है और क्यों है, इस पर प्रकाश डालते हुए आयुर्वेदीय-पदार्थ-विज्ञान के सभी विषय सरल भाषा में समझाये गये हैं।

आधुनिक अन्वेषित मूल तत्त्वों के साथ आयुर्वेदोक्त तत्त्वों का समन्वय करने के लिए किस दृष्टि से प्रयास होना चाहिये, का यथास्थान विद्वान् लेखक ने स्वमत-प्रकाशित किया है। आयुर्वेदीय-पदार्थ विज्ञान अन्य सभी आयुर्वेदीय विषयों का आधारभूत है, अतः उसका अध्यापन किस शैली से होना चाहिए, इस बात का विशद विवेचन करते हुए विषय को नया ही रूप देने का सफल प्रयास किया गया है। मूल्य—६)

उपचार-पद्धति—(पंचम संस्करण) सर्व-साधारण गृहस्थ के सैंकड़ों रुपये प्रति वर्ष बच सकते हैं, यदि उन्हें उपचार और पथ्य का साधारण ज्ञान भी हो जाय ; इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर इस पुस्तक का प्रकाशन हमने किया है। इसमें रोगियों की परिचर्या का विवेचन दिया गया है। मूल्य—।=)

किशोर-रक्षा और ब्रह्मचर्य—किशोर बालकों को हस्तमैथुन-रूपी सर्वस्व नाशकारी व्याधि से बचाने के लिये सफल उद्योग किया गया है। पृष्ठ संख्या ११० ; मूल्य—।≡)

त्रिदोष-तत्त्व-विमर्श—लेखक-आयुर्वेद-वृहस्पति वैद्य रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य। इस ग्रन्थ में आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोष-सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन विधिवत् किया गया है। मानव-शरीर के अनेकानेक द्रव्यों में वात-पित्त-कफ प्रधान हैं, इसी तथ्य को केन्द्रित कर विद्वान् लेखक ने त्रिदोष-तत्त्व के विभिन्न स्वरूपों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है, जिससे ग्रन्थ की शास्त्रीयता निखर गयी है। प्रस्तुत ग्रन्थ के अध्ययन के बाद त्रिदोषतत्त्व और पंचमहाभूत का ज्ञान सरलता से हो जाता है। आयुर्वेद के जिज्ञासुओं के लिए यह पुस्तक उपादेय है। मूल्य—२।।=)

पदार्थ-विज्ञान—(देश भर की आयुर्वेदीय संस्थाओं एवं परीक्षा-समिति के पाठ्यक्रम में स्वीकृत) लेखक—आयुर्वेद-वृहस्पति पं० रामरक्ष पाठक, प्रिन्सिपल अ० शि० आयुर्वेदिक कॉलेज, बेगूसराय। इस ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में पदार्थ का तुलनात्मक विवेचन किया गया है और द्वितीय अध्याय में

स्वास्थ्य-संरक्षण तथा रोग के प्रतीकारार्थ उपयोग में आनेवाले पदार्थों का विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय में आयुर्वेद के मूल-भूत त्रिदोष-सिद्धान्त की जननी प्रकृति तथा उससे उद्भूत-तत्त्वों की छानबीन की गयी है। चतुर्थ अध्याय में आत्मतत्त्व का विवेचन किया गया है और यह दर्शाया गया है कि पूर्व जन्मकृत पापों का परिणाम भोगने के लिये किस प्रकार आत्मा भिन्न-भिन्न योनि में प्रवेश कर अपने कर्मों का भोग करती है। मूल्य—३॥)

मानस-रोग-विज्ञान—इस ग्रन्थ के विद्वान् लेखक स्वर्गीय डा० बालकृष्ण-अमर जी पाठक ने बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय के आयुर्वेदिक कॉलेज के अध्यक्ष एवं प्रधानाध्यापक के रूप में काफी कीर्ति प्राप्त की थी और एक उच्च कोटि के विचारक और उद्भट मनीषी के रूप में आप सम्पूर्ण भारत में सुप्रसिद्ध हो गये थे।

इस ग्रन्थ की रूप रेखा पूज्यपाद यादवजी ने तैयार की थी और इस विषय पर आयुर्वेदीय साहित्य में खटकनेवाली जबर्दस्त कमी को पूरा करने के लिए डॉ० पाठक जैसे अनुभवी विद्वान् वैद्य को यह ग्रन्थ लिखने के लिए उत्साहित किया था।

आज के युग में, जब कि काम, क्रोध आदि तथा मिरगी (अपस्मार), उन्माद, न्यूरेस्थीनिया, मानसिक अस्थिरता, पागलपन, हिस्टीरिया आदि मानसिक-रोग मनुष्य-जाति को बुरी तरह त्रस्त कर रहे हैं, यह पुस्तक एक नवीन सन्देश देनेवाली है। अंग्रेजी-भाषा के ज्ञाताओं का कहना है कि मानस-शास्त्र जैसा अंग्रेजी में है वैसा अन्यत्र नहीं है। किन्तु इस पुस्तक से उनके भ्रम का निवारण होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। मूल्य—५॥) मात्र।

यूनानी-सिद्धयोग-संग्रह—यूनानी चिकित्सा-पद्धति का महत्त्व सभी जानते हैं। यह आयुर्वेद के बहुत समीप है। इसके नुस्खे, आयुर्वेदीय नुस्खों की भाँति ही लाभदायक और तुरन्त फायदा करनेवाले तथा सस्ते होते हैं। एक अनुभवी चिकित्सक से आयुर्वेदीय ढंग से संस्कृत के विद्वान् वैद्यों के लिए हिन्दी में यह ग्रन्थ लिखवाया गया है। चिकित्सकों तथा सर्वसाधारण दोनों के लिये बहुत उपयोगी पुस्तक है। कीमत—२॥)

सिद्धयोग-संग्रह—(तीसरा संस्करण) आयुर्वेदोद्धारक वैद्यवाचस्पति श्री यादव जी त्रिकम जी आचार्य के कर-कमलों से लिखा हुआ यह ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ-रत्न के पढ़ने से प्रत्येक वैद्य को लाभ होगा, इसमें रत्ती भर भी सन्देह नहीं है। डिमाई ८ पेजी २०० पेज के ग्रन्थ का मूल्य—२॥)

वैद्यनाथ की विशेषता

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० अपने स्थापन काल से ही जो अपनी विशेषता रखता आया है, वह विशेषता, जनता-जनार्दन की सेवा का उसका अधिकाधिक सत्प्रयत्न है। संस्था की वृद्धि के साथ-साथ, इसके सेवा-क्षेत्र भी बढ़ते गये और भविष्य में भी बढ़ते रहेंगे—इसमें रंचक सन्देह नहीं। इस संस्था का प्रधान उद्देश्य—असली दवा तैयार करके सुलभ मूल्य में जनता को देकर देशी दवाओं का महत्त्व प्रगट करना है। इस व्यापार से जो लाभ हो, वह व्यक्तिगत भोग-विलास के कार्य में खर्च न होकर सर्वसाधारण के लाभ में खर्च हो, इससे आयुर्वेद की उन्नति हो, देश सुखी, सम्पन्न और आरोग्ययुक्त हो—हमारा स्थापन-कालीय वह पवित्र उद्देश्य आज भी बना हुआ है।

देश स्वतन्त्र हो गया है। अब हमलोगों को अपने आचरण से यह सिद्ध करना होगा कि हम वास्तव में स्वतन्त्रता के योग्य हैं। विदेशी लोगों ने व्यापारिक ईमानदारी द्वारा जो प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, वह अब हम भारतवासियों को भी अवश्य प्राप्त करनी होगी। नहीं तो फिर गुलामी में पड़ना होगा। ईमानदारी के बिना हम स्वतन्त्र नहीं रह सकते। हमारा उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है।

जनतन्त्र में जनता की इच्छा ही सर्वोपरि रहती है। हम राज्य को 'कर' देते हैं तो कोई कारण नहीं कि राज्य हमारी इच्छा (आयुर्वेदीय चिकित्सा की माँग) को पूरी न करे। हमलोगों को बहुत शीघ्र, दृढ़तापूर्वक, आयुर्वेद को अग्रसर करना है। प्राचीन-विज्ञान-राशि को वर्तमान विज्ञान-द्वारा अधिक उपयोगी बनाना है। हम भारतीयों की स्वास्थ्य-रक्षा तो आयुर्वेद द्वारा ही हुई है और आगे भी होगी। हमको यह सिद्ध करना है कि आयुर्वेद के बिना किसी का समूल नीरोग रहना नामुमकिन है। श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि० का प्रयत्न, आयुर्वेद को समुन्नत करके, भारतीयों को स्वस्थ्य और सबल बनाना है। आज तक भारतीय जनता ने हमारे प्रयत्नों को प्रोत्साहन दिया है। जब तक हमारा पवित्र उद्देश्य बना रहेगा, तब तक आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि सभी भारतवासी हमें प्रोत्साहन देते रहेंगे। परम पिता से प्रार्थना है कि वह हमें आयुर्वेद-द्वारा जनता की सेवा करने का और अधिक सुअवसर दें।

सर्वे च सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः।

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

देश के औषध-निर्माण-कार्य में सतत प्रयत्नशील है।

वह

आयुर्वेदशास्त्र की सभी दवाएँ

जैसे--आसव, अरिष्ट, चूर्ण, बटी, गोलियाँ, अवलेह, मोदक, पाक, तैल, घृत, लौह, मण्डूर, गुग्गुलु, पर्पटी, रस-रसायन, कूपीपक्व-रसायन, धातु-भस्म, शर्बत, अर्क आदि-आदि के साथ

सुप्रसिद्ध अचूक पेटेण्ट दवाएँ

जैसे—बैद्यनाथ प्राणदा, बालामृत, दादूरीन, सालसा, कफ-मिक्स्चर, कासबटी, श्वासकल्प, हीलर मलहम, हिमालय सुरमा, नेत्र-रक्षक, दन्तमंजन, क्षुधाकारीबटी, अर्क-कपूर, अर्कपुदीना, आदि-आदि सब शुद्धता, निपुणता एवं विशेषताओं के साथ

निर्माण करता है

और ये अमोघ-गुणकारी दवाएँ सर्वसाधारण को सारे हिन्दुस्तान में बैद्यनाथ की ४ निर्माणशालाओं, १०१ बिक्री-केन्द्रों, तथा १५००० से ऊपर एजेन्सियों द्वारा सब जगह एक ही मूल्य में एक ही नियम के अधीन प्राप्त होती हैं।